विषय-सूची

विषय — पृष्ठ

विशेष सूचना

३००० से लेकर ३०१० तक पृष्ठ संख्या भूल से छप गई है। पाठकों से प्रार्थना है कि उसे सुधार कर २१०० से क्रमशः २११० पढ़ें।

—व्यवस्थापक।

रंगीन चित्रों की सूची

विषय-सूची

द्रोणपर्व

(द्रोणाभिषेकपर्व)

विषय-सूची।

रंगीन चित्रों की सूची

विशेष सूचना कुछ विशेष कारणवश इस अङ्क में हम दश चित्रों की जगह नव ही चित्र दे सके हैं। आगामी अङ्क में इस कमी की पूर्ति के लिए ग्यारह चित्र दिये जायँगे।

—व्यवस्थापक

विषय-सूची

रङ्गीन चित्रों की सूची

विषय-सूची

—:०:—

रङ्गीन चित्रों की सूची

विषय-सूची

रङ्गीन चित्रों की सूची

इकसठवाँ अध्याय

शल के पुत्र का वध

सञ्जय ने कहा—महाराज! अश्वत्थामा, भूरिश्रवा, शल्य, चित्रसेन और शल के पुत्र, ये सब मिलकर एक साथ अभिमन्यु से युद्ध करने लगे। सबने देखा कि तेजस्वी बालक अभिमन्यु इन पाँचों योद्धाओं के सामने, पाँच गजराजों के सामने एक सिंह-बालक के समान, निर्भय भाव से खड़ा युद्ध कर रहा था। लक्ष्यवेध, पराक्रम, अस्त्रप्रयोग, फुर्ती आदि किसी बात में कोई योद्धा अभिमन्यु की बराबरी नहीं कर पाता था। अर्जुन अपने शत्रुतापन पुत्र को युद्ध में ऐसा पराक्रम प्रकट करते देखकर आनन्द से सिंहनाद करने लगे। राजन्, आपके पक्ष के योद्धाओं ने अभिमन्यु को इस तरह कौरवसेना को मथते देखकर चारों ओर से उन पर आक्रमण किया। तब शत्रुनाशन अभिमन्यु ने निर्भय भाव से, तेज और बल के साथ, उन लोगों के सामने आकर अत्यन्त घोर संग्राम करना शुरू किया। शत्रुओं के साथ युद्ध करते समय अभिमन्यु का श्रेष्ठ धनुष सूर्यमण्डल के समान प्रभासम्पन्न और घूमता हुआ देख पड़ने लगा। अभिमन्यु ने अश्वत्थामा को एक और शल्य को पाँच बाण मारकर आठ बाणों से शल के पुत्र की ध्वजा के कई टुकड़े कर डाले। तब सोमदत्त के पुत्र ने सुवर्ण-दण्डयुक्त, नागसदृश एक महाशक्ति अभिमन्यु के ऊपर चलाई। अभिमन्यु ने एक ही बाण से वह शक्ति काटकर गिरा दी। तब शल्य उन पर सैकड़ों बाण बरसाने लगे। अभिमन्यु ने फुर्ती के साथ चार बाणों से शल्य के रथ के चारों घोड़ों को मार डाला। उस समय भूरिश्रवा, शल्य, अश्वत्थामा और शल कोई भी अभिमन्यु के सामने ठहरकर युद्ध नहीं कर सका। १०

महाराज! इसके बाद युद्ध में अजेय, प्रधान-प्रधान धनुर्वेद के विद्वान्, रण-निपुण योद्धा लोग आपके पुत्र की आज्ञा से अभिमन्यु और अर्जुन से लड़ने चले। ऐसे पचीस हज़ार मुख्य योद्धाओं ने त्रिगर्त, मद्र और केकय देशों की सेना के साथ जाकर चारों ओर से अर्जुन और अभिमन्यु को घेर लिया। शत्रुविजयी सेनापति धृष्टद्युम्न ने अर्जुन और अभिमन्यु के रथ को इस तरह शत्रुसेना से घिरते देखकर सब सेना को उनकी सहायता के लिए बढ़ने की आज्ञा दी। क्रुद्ध धृष्टद्युम्न कई हज़ार गजों, रथों और घोड़ों के सवारों को तथा पैदल सेना को साथ ले धनुष चढ़ाकर मद्र, केकय आदि देशों की सेना से लड़ने चले। रथों, हाथियों, घोड़ों और पैदलों से परिपूर्ण वह पाण्डव-सेना दृढ़ धनुषवाले धृष्टद्युम्न के द्वारा सुरक्षित और सञ्चालित होकर उधर चली। उस समय वह सेना बहुत ही शोभा को प्राप्त हुई। धृष्टद्युम्न ने अर्जुन के पास जाकर कृपाचार्य के कन्धे में तीन बाण मारे। फिर मद्रराज शल्य को दस बाणों से व्याकुल करके शीघ्रतापूर्वक एक भल्ल बाण से कृतवर्मा के पृष्ठरक्षक को मार डाला। इसके बाद एक भारी नाराच बाण से पौरवपुत्र दमन को मार डाला। २०

तब शल के पुत्र ने युद्धदुर्मद धृष्टद्युम्न और उनके सारथी को दस बाण मारे। श्रेष्ठ योद्धा धृष्टद्युम्न उन बाणों से अत्यन्त घायल होकर क्रोध के मारे दाँत पीसने लगे। उन्होंने एक तीक्ष्ण भल्ल बाण से शत्रु का धनुष काटकर पचीस बाण और मारे। अब धृष्टद्युम्न ने शल के पुत्र के सारथी, घोड़े और पार्श्वरक्षकों को मार डाला। हे भारत, शल के पुत्र इस तरह बिना घोड़े और सारथी के रथ पर अपने को असहाय निरुपाय देखकर क्रोध के मारे धृष्टद्युम्न को मारने के लिए एक श्रेष्ठ खड्ग लेकर रथ से कूदकर पैदल ही दौड़े। पाण्डवों और धृष्टद्युम्न ने देखा कि वह वीर आकाश से गिरे हुए बड़े साँप या कालप्रेरित मृत्यु के समान आ रहा है। महावीर शल-पुत्र बाण-वेग के मार्ग को लाँघकर ज्योंही फुर्ती से धृष्टद्युम्न के रथ के पास पहुँचे त्योंही धृष्टद्युम्न ने मौक़ा पाकर गदा से उनका सिर चूर्ण कर दिया। महाराज, गदा के प्रहार से मरकर शल-पुत्र गिर पड़े; उनके हाथ से चमकीली तलवार और ढाल पृथ्वी पर गिर पड़ी। अपने शत्रु को गदा की चोट से मारकर पाञ्चाल-पुत्र धृष्टद्युम्न बहुत प्रसन्न हुए। ३०

धनुर्द्धरश्रेष्ठ महारथी शल-पुत्र के मरने पर आपकी सेना में हाहाकार मच गया। इसके बाद महावीर शल अपने पुत्र की मृत्यु देखकर क्रोध के मारे वेग से दौड़ते हुए युद्धप्रिय धृष्टद्युम्न के पास पहुँचे। कौरवों और पाण्डवों की सेना के सामने वे घोर युद्ध करने लगे। हाथी को जैसे कोई अंकुश मारे, वैसे महावीर शल ने धृष्टद्युम्न को तीन बाण मारे। उधर शल्य ने भी क्रुद्ध होकर धृष्टद्युम्न के हृदय में प्रहार किया। इस तरह उनका घोर युद्ध होने लगा। ३६

बासठवाँ अध्याय

भीमसेन आदि का युद्ध

धृतराष्ट्र ने कहा—हे सञ्जय, मैं पौरुष की अपेक्षा दैव को ही श्रेष्ठ समझता हूँ; क्योंकि पाण्डवपक्ष के वीर ही लगातार मेरे पक्ष के वीरों को मारते चले आते हैं। हे सञ्जय, तुम हर

बार मेरे पक्ष की सेना के विनाश का वर्णन करते हो। मेरे पक्षवालों को पौरुष से हीन और निहत बताकर पाण्डवों की बड़ाई करते हो और उन्हें अव्यग्र, प्रसन्न और उत्साही बतलाते हो। मेरे पक्ष के योद्धा यथाशक्ति जय की चेष्टा करते हुए युद्ध करते हैं, फिर भी पाण्डव लोग जीतते हैं और कौरव हारते हैं। सो मैं दुर्योधन के कारण मिलनेवाले असह्य तीव्र अनेक दुःखदायक समाचार सुनूँगा। हे सञ्जय, मुझे ऐसा कोई उपाय नहीं देख पड़ता जिससे मेरे पक्ष के लोग जय पावें और पाण्डवों का क्षय हो।

सञ्जय ने कहा—महाराज, आपका ही बड़ा अन्याय है। इस कारण स्थिर होकर अपने पक्ष के हाथी, रथ, मनुष्य और घोड़े आदि के घोर विनाश का वृत्तान्त सुनिए। राजन्, महावीर धृष्टद्युम्न ने मद्रराज शल्य के नव बाणों से पीड़ित होकर, क्रोध से अधीर हो, उन पर असंख्य लोहमय बाण बरसाये। पराक्रमी शल्य को धृष्टद्युम्न ने शीघ्रता के साथ रोका। हम लोग उनके इस अद्भुत पराक्रम को आश्चर्य के साथ देखने लगे। थोड़ी देर तक दोनों वीर इसी तरह परस्पर विजय की इच्छा से दारुण युद्ध करते रहे। उन्होंने ऐसा युद्ध किया कि किसी ने दम भर भी उन्हें रुकते नहीं देखा। महाराज, शल्य ने पीले रङ्ग के तीक्ष्ण भल्ल बाण से धृष्टद्युम्न का धनुष काट डाला। इसके बाद पहाड़ पर वर्षाऋतु की जलवर्षा के समान बाणों की वर्षा करके धृष्टद्युम्न को ढक दिया। उस बाण-वर्षा से धृष्टद्युम्न को बहुत व्यथित देखकर वीर अभिमन्यु शल्य के रथ के पास गये। अभिमन्यु ने क्रोध के आवेश में आकर शल्य को तीन बेढब बाणों से घायल किया। यह देखकर आपके पक्ष के योद्धा लोग अभिमन्यु पर आक्रमण करने के लिए शल्य के चारों ओर आ गये। दुर्योधन, दुःशासन, विकर्ण, विविंशति, दुर्मर्षण, दुःसह, चित्रसेन, दुर्मुख, सत्यव्रत और पुरुमित्र, ये दस योद्धा शल्य के रथ की रक्षा करने लगे। हे भारत! उधर भीमसेन, धृष्टद्युम्न, द्रौपदी के पाँचों पुत्र, अभिमन्यु, नकुल और सहदेव, ये दस योद्धा मिलकर असंख्य अस्त्र-शस्त्रों के द्वारा शत्रुसेना के उक्त दसों योद्धाओं को रोकने की चेष्टा करने लगे। १०

राजन्, आपकी बुरी सलाह के कारण ही ये सब क्रोधवश होकर परस्पर वध की इच्छा से युद्ध करने लगे। इस समय अन्य रथी और योद्धा युद्ध बन्द करके इन लोगों का घोर संग्राम देखने लगे। उस समय वे महारथी योद्धा, परस्पर वध की इच्छा से, क्रोध से आँखें लाल करके, सिंहनादपूर्वक, स्पर्धा के साथ अस्त्र-प्रहार करने लगे। क्रुद्ध होकर दुर्योधन ने चार, दुर्मर्षण ने बीस, चित्रसेन ने पाँच, दुर्मुख ने नव, दुःसह ने सात, विविंशति ने पाँच और दुःशासन ने तीन बाण धृष्टद्युम्न को मारे। राजन्, शत्रुतापन धृष्टद्युम्न ने हाथ की फुर्ती दिखाकर हर एक को पचीस-पचीस बाण मारे। अभिमन्यु ने सत्यव्रत और पुरुमित्र को दस-दस बाण मारे। नकुल और सहदेव ने मामा शल्य को तीक्ष्ण असंख्य बाणों से छा लिया। श्रेष्ठ रथी २०

शल्य ने भी नकुल और सहदेव के ऊपर असंख्य बाण बरसाये। वे दोनों वीर शल्य के बेशुमार बाण लगने से तनिक भी विचलित नहीं हुए। ३९

हे भारत, महाबली भीमसेन ने दुर्योधन को देखा तो उन्हें मारकर पुराना झगड़ा मिटाने के लिए हाथ में गदा ली। आपके अन्य पुत्र गदापाणि भीमसेन को शिखरयुक्त कैलास पर्वत के समान देखकर डर से भाग खड़े हुए। सुयोधन क्रुद्ध होकर, मगधराज को आगे करके, दस हज़ार मगध देश की सेना और दस हज़ार हाथियों का दल लेकर भीमसेन से लड़ने के लिए उनके सामने आये। उस हाथियों के दल को आते देखकर भीमसेन सिंहनाद करते हुए रथ पर से उतर पड़े। वे मुँह फैलाये हुए काल के समान पहाड़ सी भारी गदा हाथ में लेकर दौड़े। जैसे वृत्र को मारनेवाले इन्द्र दानवों को मारते हुए युद्ध में विचरे थे, वैसे ही महापराक्रमी भीमसेन गदा हाथ में लेकर हाथियों को मारते हुए युद्धभूमि में विचरने लगे। हृदय को हिला देनेवाले उनके गरजने से हाथियों के झुण्ड डरकर अचेत से हो गये। उधर द्रौपदी के पाँचों पुत्र, अभिमन्यु, नकुल, सहदेव और धृष्टद्युम्न—भीमसेन की पृष्ठरक्षा करते हुए—हाथियों के दल पर बाण बरसाने लगे। ४० वे लोग पैने क्षुर, क्षुरप्र, भल्ल, अञ्जलिक आदि बाणों से हाथियों पर सवार योद्धाओं के सिर काटने लगे। उन वीरों के मस्तक और हाथ कट-कटकर गिरने से ऐसा जान पड़ता था मानो पत्थर बरस रहे हैं। हाथियों के हौदों पर ही सवारों के सिर कटने से वे पर्वत पर के उन शालवृक्षों के समान देख पड़ने लगे जिनके ऊपर के हिस्से कट गये हों। उस समय महावीर धृष्टद्युम्न ने असंख्य हाथियों को मार गिराया। ऐरावत सदृश एक बड़े हाथी पर सवार मगधराज अभिमन्यु के रथ की ओर चले। शत्रुनाशन अभिमन्यु ने मगधराज के महागज को, आते देखकर, एक ही बाण से मार डाला। इसके बाद एक चाँदी के समान चमकीले भल्ल बाण से मगधराज का सिर काट गिराया। इधर गजसेना के भीतर घुसकर भीमसेन हाथियों को छिन्न-भिन्न कर वज्रपाणि इन्द्र के समान समर-

भूमि में विचरने लगे। वे एक ही एक प्रहार से हरएक हाथी को पृथ्वी पर गिरा देते थे। युद्धभूमि में पड़े हुए वे हाथी वज्र से फटे हुए पहाड़ों के शिखर से जान पड़ते थे। कुछ हाथियों ५० के दाँत, कुछ हाथियों के मस्तक, कुछ हाथियों की पीठ टूट फूट गई और वे पृथ्वी पर गिर पड़े। कुछ हाथी समर से भाग खड़े हुए। कुछ हाथियों ने डरकर मल-मूत्र कर दिया। कोई-कोई पहाड़ सा हाथी भीमसेन के वेग से ही गिरकर मर गया। कोई हाथी चोट खाकर चीत्कार करता हुआ आर्तनाद करने लगा। किसी-किसी हाथी का मस्तक फट गया और वह लगातार रक्त बहने से दुर्बल होकर पृथ्वी पर गिर पड़ा। भीमसेन के सब अङ्ग मेदा, रक्त, वसा, मज्जा आदि में सन गये और वे दण्डपाणि यमराज की तरह गदा हाथ में लिये विचरते देख पड़ने लगे। भीमसेन के हाथों से मर्दित हाथियों का दल उलटे लौटकर आपकी ही सेना को कुचलने लगा। देवता जैसे इन्द्र की रक्षा करें वैसे ही अभिमन्यु आदि महाधनुर्द्धर वीर भीमसेन की रक्षा करने लगे। हाथियों के रक्त से भीगी हुई गदा को लिये भीमसेन यमराज की तरह भयङ्कर देख पड़ते थे। गदा घुमाते हुए भीमसेन नृत्य करते हुए शङ्कर की तरह जान पड़ते थे। यमदण्ड की सी भीमसेन की गदा बहुत भारी थी और वज्र की तरह उससे शब्द ६० होता था। उस भयङ्कर गदा में खून, चर्बी, केश आदि लिपटे हुए थे। वह गदा पशु को मारनेवाले रुद्र के 'पिनाक' धनुष की तरह थी। जैसे पशुपाल डण्डे से पशुओं को मारता है वैसे ही भीमसेन गदा के द्वारा हाथियों के सवारों की सेना को मारने लगे। भीमसेन की गदा और चारों ओर से आ रहे तीरों की चोट से घायल होकर भागे हुए हाथी अपने ही पक्ष की सेना को मथने और कुचलने लगे। आँधी से छिन्न-भिन्न मेघों के समान हाथियों के दल को नष्ट-भ्रष्ट करके भीमकर्मा भीमसेन श्मशानवासी भूतनाथ शङ्कर के समान शोभित हुए। ६५

तिरसठवाँ अध्याय

सात्यकि और भूरिश्रवा की भिड़न्त

सञ्जय ने कहा—राजन्, हाथियों की सेना के यों मारे जाने पर आपके पुत्र दुर्योधन ने अपनी सेना को भीमसेन के वध की आज्ञा दी। उस समय आपके पक्ष की सेना भयानक शब्द करके भीमसेन पर हमला करने के लिए दौड़ी। समुद्र के वेग को जैसे तटभूमि रोकती है वैसे ही भीमसेन उस असंख्य रथ-हाथी-घोड़े-पैदल आदि से पूर्ण, उड़ी हुई धूल से व्याप्त, देवताओं के लिए भी दु:सह कौरव-सेना के वेग को रोकने लगे। राजन्, इस युद्ध में हमने भीमसेन का अद्भुत पराक्रम और अलौकिक काम देखे। वे अनायास उन सब राजाओं को

और चतुरङ्गिणी सेना को केवल गदा की मार से रोकने लगे। महापराक्रमी भीमसेन ने गदा के द्वारा उस सेना का वेग रोक लिया। वे पर्वतराज सुमेरु की तरह अचल बने रहे। उस भयानक युद्ध के समय भीमसेन के पुत्र, भाई, धृष्टद्युम्न, द्रौपदी के पाँचों पुत्र, अभिमन्यु और शिखण्डी ने भीमसेन का साथ नहीं छोड़ा। भीमसेन लोहे की गदा हाथ में लेकर साक्षात् काल की तरह आपके योद्धाओं को मारने दौड़े, और प्रलयकाल के अग्नि की तरह आसपास के शत्रुओं को भस्म करते हुए युद्धभूमि में घूमने लगे। वे घोड़ों को खदेड़कर और घुटनों के वेग से रथों को खींचकर उन पर के योद्धाओं को मारने लगे। हाथी जैसे नरकुल के जङ्गल को मथ डालता है वैसे ही वे रथों, घोड़ों, हाथियों के सवारों और पैदलों को गदा के प्रहार से नष्ट करने लगे। प्रबल आँधी से उखड़े वृक्षों की तरह काँपते हुए योद्धा गिरने लगे। उस समय भीमसेन की गदा में रक्त, मांस, मेदा, मज्जा और वसा लिपी हुई थी, इसी कारण वह बहुत भयङ्कर देख पड़ती थी। चारों ओर पड़ी मनुष्यों, हाथियों, घोड़ों आदि की लाशों से वह समरभूमि काल की वध्यभूमि के समान जान पड़ने लगी। सब लोगों को महावीर भीमसेन की वह प्रचण्ड गदा यमराज के दण्ड सी, इन्द्र के वज्र सी, और संहारकर्ता शङ्कर के पिनाक धनुष सी जान पड़ती थी। उस गदा को लिये घूमते हुए भीमसेन उस समय प्रलयकाल में यमराज के समान शोभा को प्राप्त हुए। सब वीरों को मारते और भगाते हुए भीमसेन को आते देखकर कौरव पक्ष के सब लोग बहुत ही उदास हुए। महावीर भीमसेन गदा तानकर जिधर देखते थे उधर ही सेना डरकर भागने लगती थी।

महाराज! इस तरह सैन्य-संहारकर्ता, मुँह फैलाये हुए काल के समान भयङ्कर, भीमसेन भयावनी गदा के प्रहार से सेना को छिन्न-भिन्न कर रहे थे। यह देखकर महावीर भीष्म मेघ के समान गरजनेवाले और सूर्यमण्डल के समान प्रकाश-पूर्ण रथ पर बैठकर वर्षा के मेघ की तरह बाण बरसाते हुए भीमसेन के सामने दौड़े। साक्षात् काल के समान भीष्म को आते देखकर भीमसेन और भी क्रुद्ध हो उठे और एकाएक दौड़कर उनके समीप पहुँचे। तब सत्य-परायण सात्यकि भी दृढ़ धनुष हाथ में लेकर बाण-वर्षा से दुर्योधन की सेना को कम्पित और नष्ट करते हुए भीष्म की ओर दौड़ पड़े। हे राजेन्द्र! आपके पक्ष का कोई भी वीर सफ़ेद घोड़ों से युक्त रथ पर बैठे हुए, तीक्ष्ण बाण बरसा रहे, शिनिवीर सात्यकि को रोक नहीं सका। केवल राक्षस अलम्बुष ने सामने जाकर उनको दस बाण मारे। महावीर सात्यकि ने रथ पर से चार बाण मारकर उसे शिथिल कर दिया और अपना रथ आगे बढ़ाया।

राजन्! आपके पक्ष के योद्धा लोग, उन वृष्णिवंशावतंस सात्यकि को शत्रुसेना के बीच विचरकर कौरवों को विमुख करके बारम्बार सिंहनाद करते देख, पर्वत के ऊपर जलवर्षा के समान बाणों की वर्षा करने लगे; किन्तु वे किसी तरह सात्यकि के वेग को या रथ को रोक नहीं

सके। उस समय सोमदत्त के पुत्र भूरिश्रवा के सिवा और सभी घबरा गये। वीर भूरिश्रवा ने जब अपने पक्ष के वीरों को सात्यकि के युद्ध-कौशल और पराक्रम से पीड़ित देखा तब वे सात्यकि का सामना करने की इच्छा से, बड़े वेग से, धनुष हाथ में लेकर उनके सामने पहुँचे। ३३

चौंसठवाँ अध्याय

दुर्योधन के भाइयों का मारा जाना और चौथे दिन के युद्ध की समाप्ति

सञ्जय ने कहा—महाराज, भूरिश्रवा ने क्रोध से अधीर होकर सात्यकि को नव बाण मारे। उदारहृदय सात्यकि ने भी सबके सामने झुके हुए तीक्ष्ण असंख्य बाण मारकर भूरिश्रवा को लौटा दिया। अब राजा दुर्योधन अपने भाइयों को साथ लेकर भूरिश्रवा की रक्षा के लिए पहुँचे। दुर्योधन जिस तरह चारों ओर से घेरकर भूरिश्रवा की रक्षा करने लगे उसी प्रकार अन्यान्य महाबली पराक्रमी पाण्डव पक्ष के वीर सात्यकि को घेरकर उनकी रक्षा करने लगे। भीमसेन क्रोध के आवेश में जब गदा हाथ में लेकर आपके पुत्रों पर प्रहार करने लगे तब आपके पुत्र नन्दक ने, बहुत से रथी योद्धाओं के साथ मिलकर, क्रोधपूर्वक पैने कङ्कपत्रभूषित बाण उनको मारे। दुर्योधन ने भी क्रुद्ध होकर भीमसेन की छाती में नव बाण मारे।

अमितपराक्रमी भीमसेन ने अपने रथ पर बैठकर सारथी अशोक से कहा—"हे सारथी, ये धृतराष्ट्र के पुत्र बहुत ही क्रोधित होकर मुझे मारने को तैयार हैं; इन्हें मारने का मेरा बहुत पुराना सङ्कल्प है, सो आज उसे सफल समझो; क्योंकि भाइयों समेत दुर्योधन मेरे सामने है। अन्तरिक्ष में बाण ही बाण और रथ के पहियों से उड़ी हुई धूल ही धूल देख पड़ेगी। सुयोधन तैयार खड़ा है और उसके मतवाले भाई भी साथ देने को तुले हुए हैं। मैं आज तुम्हारे सामने ही इन्हें यमपुरी भेज दूँगा। इसलिए तुम इस युद्ध में होशियारी के साथ मेरा रथ चलाओ।" महाराज, भीमसेन ने यों कहकर बहुत से स्वर्णमण्डित १०

तीक्ष्ण बाण दुर्योधन को मारे। नन्दक की छाती में भी तीन बाण मारे। दुर्योधन ने भी महाबली भीमसेन को साठ बाण मारकर सारथी को तीन बाणों से घायल किया। इसके बाद हँसकर तीन बाणों से भीमसेन का धनुष काट डाला। सारथी को घायल देखकर भीमसेन को क्रोध चढ़ आया। उन्होंने आपके पुत्र को मारने के लिए दिव्य धनुष और क्षुरप्र बाण हाथ २० में लेकर दुर्योधन का धनुष काट डाला। तब दुर्योधन ने क्रोध के मारे तलमलाकर कटा धनुष फेंककर दूसरा धनुष हाथ में लिया और कालान्तक तुल्य एक बाण भीमसेन की छाती में मारा। उस प्रहार से मूर्च्छित होकर भीमसेन रथ पर बैठ गये। यह देखकर अभिमन्यु आदि महारथी क्रोध से अधीर हो उठे। वे दुर्योधन के मस्तक पर लगातार बाण-वर्षा करने लगे। महाबली भीमसेन ने भी क्षण भर में सचेत होकर दुर्योधन को पहले तीन बाण और फिर पाँच बाण मारे। इसके बाद शल्य को सुवर्णपुङ्ख पचीस बाण मारे। भीमसेन के बाणों से बहुत घायल और पीड़ित होकर शल्य समरभूमि से हट गये।
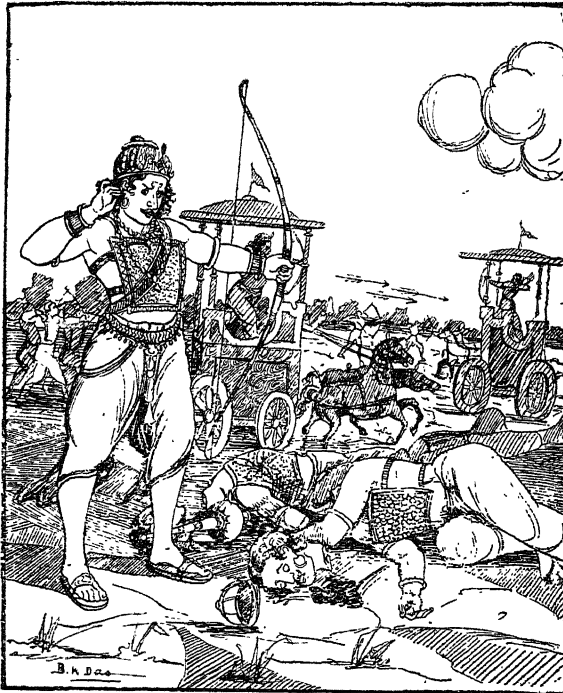
महाराज! इसके बाद सेनापति, सुषेण, जलसन्ध, सुलोचन, उग्र, भीमरथ, भीम, वीरबाहु, अलोलुप, दुर्मुख, दुष्प्रधर्ष, विवित्सु, विकट और सम, ये आपके चौदहों पुत्र मिलकर क्रोध से आँखें लाल करके भीमसेन के सामने जाकर लगातार बाण बरसाने ३० लगे। महाबाहु भीमसेन ने उन्हें यों बाण बरसाते देखकर, पशुओं के झुण्ड में खड़े भेड़िये की तरह ओठ चबाते हुए, गरुड़ के से वेग से उनके सामने जाकर एक क्षुरप्र बाण से सेनापति का सिर काट डाला। फिर तीन बाणों से जलसन्ध और सुषेण को यमराज के घर भेज दिया। इसके बाद भल्ल बाण से उग्र का शिरस्त्राणसहित कुण्डलशोभित मस्तक काट गिराया। घोड़े, ध्वजा और सारथी को नष्ट कर उन्होंने वीरबाहु को सत्तर बाणों से मारा तथा वेगशाली भीमरथ और भीम को भी मारकर यमलोक पहुँचा दिया। फिर सब सेना के सामने क्षुरप्र बाण से सुलोचन को भी मार डाला। इनके सिवा

जो आपके पुत्र वहाँ उपस्थित थे वे भी, भीमसेन के पराक्रम और प्रहार से, डरकर इधर-उधर भाग खड़े हुए और कुछ मार डाले गये।

महाराज, तब पितामह भीष्म ने कौरवपक्ष के महारथियों से कहा—हे वीरो, उग्रधन्वा भीमसेन क्रोधवश होकर प्रधान-प्रधान वीरों को मार रहे हैं, इसलिए तुम लोग शीघ्र उन पर हमला करो। यह आज्ञा पाकर दुर्योधन के सैनिक क्रोधविह्वल हो भीमसेन पर आक्रमण करने चले। मस्त महागजराज पर सवार भगदत्त भीमसेन के पास पहुँचे। उन्होंने असंख्य बाणों की वर्षा से भीमसेन को उसी तरह छा लिया जैसे मेघ सूर्य को छिपा लेते हैं। यह अभिमन्यु आदि वीर न सह सके। उन्होंने क्रोध करके बाणों से राजा भगदत्त और उनके हाथी को ढक दिया। महारथियों के प्रहार से प्राग्ज्योतिषेश्वर भगदत्त का हाथी ख़ून से तर हो गया। वह उस समय सूर्यकिरण-मण्डित मेघ सा जान पड़ने लगा। ४१

महाबली भगदत्त ने क्रुद्ध होकर हाथी को आगे बढ़ाया। गजराज पहले की अपेक्षा दूने वेग से बढ़ा। उसके पैरों के भार से पृथ्वी काँपने लगी। वह हाथी कालप्रेरित मृत्यु की तरह योद्धाओं के ऊपर दौड़ा। उस हाथी का भयानक आकार देखकर सब योद्धा बड़े उद्विग्न और उदास हुए। राजा भगदत्त ने क्रोध में आकर भीमसेन की छाती में तीक्ष्ण बाण मारा। मर्मस्थल में भगदत्त के बाण की चोट खाकर भीमसेन अत्यन्त व्यथित हो ध्वजा के डण्डे का सहारा लेकर बैठ गये। शत्रुपक्ष के योद्धाओं को डरे हुए और भीमसेन को मूर्च्छित देखकर प्रभावशाली भगदत्त गम्भीर शब्द से गरजने लगे। राजन्, भीमसेन की यह दशा देख-कर राक्षस घटोत्कच बहुत क्रुद्ध हुआ। वह तुरन्त माया-बल से अन्तर्द्धान होकर, कायरों को दहला देनेवाली माया उत्पन्न कर, मायामय ऐरावत हाथी पर चढ़कर लोगों के सामने भयङ्कर रूप से प्रकट हुआ। उसके मायाबल से अञ्जन, वामन और महापद्म नाम के तीनों दिग्गज सामने देख पड़े। वे भी ऐरावत के पीछे चले। उन तीनों दिग्गजों के मद बह रहा था। वे बड़े डील-डौलवाले चार-चार दाँतों से शोभित और तेज-वीर्य-बल-वेग-पराक्रम-सम्पन्न थे। उन पर विकराल राक्षस बैठे हुए थे। घटोत्कच ने हाथी से हाथी को नष्ट करने के लिए भगदत्त के हाथी के सामने अपना हाथी बढ़ाया। अन्य तीन हाथी भी उसी के साथ राक्षसों द्वारा सञ्चालित होकर क्रुद्ध भाव से भगदत्त के हाथी को दाँतों से मारने लगे। भगदत्त का हाथी योंही अभिमन्यु आदि के प्रहारों से विकल हो रहा था, उस पर वे मायामय दिग्गज जब प्रहार करने लगे तब वह अत्यन्त पीड़ित होकर बेतरह चिल्लाने लगा। ५० ६१

हे भारत, भीष्म ने भगदत्त के हाथी का आर्तनाद सुनकर द्रोणाचार्य से कहा—हे आचार्य, हे वीरो, देखो महाधनुर्द्धर भगदत्त घटोत्कच से भिड़कर कष्ट पा रहे हैं। उस राक्षस से पार पाना साधारण काम नहीं है। घटोत्कच का शरीर बहुत बड़ा है। राजा भगदत्त भी

क्रोधी और बली हैं। दोनों ही मृत्यु और अन्तक के समान हैं। मुझे जान पड़ता है, घटोत्कच प्रबल पड़कर भगदत्त को सता रहा है। क्योंकि पाण्डवों की आनन्द-ध्वनि और भय-पीड़ित भगदत्त के हाथी का आर्तनाद सुन पड़ता है। चलो, हम लोग राजा भगदत्त की रक्षा करें। यदि इस समय उनकी रक्षा न की जायगी तो वे शीघ्र ही मारे जायँगे। तुम लोग अब तनिक भी विलम्ब मत करो। वे भयङ्कर युद्ध कर रहे हैं। राजा भगदत्त हमारे अनुगत, कुलीन और सेनापति हैं। इसलिए उनकी रक्षा करना हमारा सब तरह कर्तव्य है।

द्रोण आदि वीर और सब राजा लोग भीष्म के ये वचन सुनकर भगदत्त की रक्षा करने ७० के लिए शीघ्र उनके पास पहुँचे। इधर युधिष्ठिर आदि पाण्डव और पाञ्चालगण शत्रुओं को आते देखकर उनके पीछे दौड़े। प्रतापी घटोत्कच ने उन सबको आते देखकर घोर सिंहनाद किया। उस महाशब्द को सुनकर और दिग्गजों को युद्ध करते देखकर भीष्म ने द्रोणाचार्य से कहा—हे आचार्य, दुरात्मा घटोत्कच के साथ युद्ध करने को मेरा जी नहीं चाहता। इस समय यह वीर्यशाली और सहायसम्पन्न हो रहा है। इस समय इन्द्र भी इसे जीत नहीं सकते। ख़ासकर हमारे वाहन बहुत थक गये हैं। पाञ्चालों और पाण्डवों ने हमें घायल भी कर दिया है। आज पाण्डवों की जय हुई है। इस कारण, मेरी समझ में, आज उनसे युद्ध करना ठीक नहीं है। आज का युद्ध समाप्त कर दीजिए, कल शत्रुओं से युद्ध किया जायगा।

घटोत्कच से डरे हुए कौरवों ने भीष्म के ये वचन सुनकर, उनके बताये उपाय के अनुसार, सेना को युद्ध से रोक दिया। कौरवों के युद्ध बन्द करने पर विजयी पाण्डवगण शङ्ख, वेणु आदि बाजे बजाते हुए सिंहनाद करने लगे।

हे भारत, उस दिन कौरवों के साथ घटोत्कच और पाण्डवों का युद्ध इस तरह हुआ। ८१ पाण्डवों से पराजित और लज्जित होकर कौरव अपने-अपने शिविर को गये। घायल पाण्डवगण भी घटोत्कच और भीमसेन की बड़ाई करते हुए प्रसन्न मन से अपने शिविरों को गये। वे आनन्दित होकर दुर्योधन के मर्मस्थल को पीड़ा पहुँचानेवाले बाजे और शङ्ख के शब्द के साथ सिंहनाद करते तथा पृथ्वी को कँपाते हुए रात को अपने शिविरों में पहुँचे। भाइयों के मारे जाने के शोक से राजा दुर्योधन बहुत ही चिन्तित और अधमरे से हो गये। शिविर के यथायोग्य ८७ काम पूरे करके वे फिर अपने भाइयों का शोक मनाने लगे।

पैंसठवाँ अध्याय

विश्व के उपाख्यान का वर्णन

धृतराष्ट्र ने कहा—हे सञ्जय, पाण्डवों के अद्भुत कर्म सुन-सुनकर मेरे जी में बहुत ही डर और आश्चर्य उत्पन्न हो रहा है। सञ्जय, पुत्रों की हार सुनकर मैं इसी चिन्ता से

व्याकुल हो रहा हूँ कि आगे चलकर और क्या होगा। दैवाधीन घटनाओं को देखकर मुझे जान पड़ता है कि विदुर की बात न मानने के कारण मुझे पीछे पछताना पड़ेगा। उन महात्मा ने जो कहा है वह उसी तरह हो रहा है।

हे वत्स, सब समय वे प्रधान योद्धा लोग महाबली भीष्म के साथ युद्ध करके उन पर प्रहार करते हैं और आकाशमण्डल के तारागण के समान अक्षय बने हुए हैं। जान पड़ता है, उन्हें किसी ने वरदान दे दिया है, अथवा वे कुछ प्रहार-मन्त्र जानते हैं। यह मुझे असह्य हो रहा है कि बारम्बार पाण्डव मेरी सेना और योद्धाओं को नष्ट करते जा रहे हैं। दैवकोप से मुझ पर ही दारुण दण्ड पड़ रहा है! हे सञ्जय! तुम मुझे बताओ, पाण्डव क्यों नहीं मरते और मेरे पुत्र ही क्यों मरते हैं? जैसे मनुष्य बाहुबल से तैरकर समुद्र के पार नहीं जा सकता वैसे ही मैं भी इस दुःखसागर के पार जाने का उपाय नहीं देखता। मेरे पुत्रों के लिए दारुण सङ्कट उपस्थित है। मुझे जान पड़ता है कि अकेला ही भीमसेन मेरे सब पुत्रों को मार डालेगा। युद्ध में मेरे पुत्रों की रक्षा कर सकनेवाला कोई वीर नहीं देख पड़ता। इस कारण मेरे पुत्र अवश्य मारे जायँगे। हे सञ्जय, पाण्डवों की जय और मेरे पुत्रों के नाश का कारण तुम विशेष रूप से मुझसे कहो। अपने पक्ष की सेना जब युद्ध-स्थल से हट गई तब दुर्योधन, भीष्म, द्रोण, शकुनि, जयद्रथ, कृपाचार्य, अश्वत्थामा और विकर्ण आदि महाबली वीरों ने क्या किया? मेरे पुत्रों को रण से विमुख देखकर उन शूरों के हृदय में क्या भाव उत्पन्न हुआ? १०

सञ्जय ने कहा—राजन्, मेरी बातों को मन लगाकर सुनिए। पाण्डव कुछ मन्त्रप्रयोग, मायाजाल या विभीषिका दिखाकर जय प्राप्त नहीं करते। वे शक्ति और धर्मन्याय के अनुसार ही युद्ध करते हैं। राजन्, पाण्डव लोग यश पाने की इच्छा से धर्मपूर्वक ही जीविका-निर्वाह आदि सब कार्यों का आरम्भ करते हैं। श्रीयुक्त पाण्डव अपने धर्म के अनुवर्ती होकर ही युद्ध कर रहे हैं। जहाँ धर्म है, वहीं जय है। इसी कारण धर्मनिरत पाण्डव समर में अवध्य और विजयी हो रहे हैं। आपके पुत्र दुरात्मा, निष्ठुर, ओछे काम करनेवाले और पापी हैं। इसी से हार रहे हैं। आपके पुत्र अब तक बराबर पाण्डवों के साथ नीचों का सा, नृशंस, निन्दित व्यवहार करते आये हैं; किन्तु पाण्डवों ने आपके पुत्रों के छल और अपराधों की कुछ परवा नहीं की। पाण्डव सदा धर्म के सहारे रहे हैं। आपके पुत्र उन्हें तुच्छ समझकर उनसे बुरा ही व्यवहार करते रहे हैं। उसी पाप का यह घोर फल मिल रहा है। उसे आप अपने सुहृदों और पुत्रों आदि के साथ भोगिए। महात्मा विदुर, भीष्म और द्रोणाचार्य ने आपको लाख बार मना किया परन्तु आपने उधर ध्यान नहीं दिया। मैंने भी बार-बार आपको मना किया, पर आप नहीं समझे। हित और पथ्य के वचन आपको वैसे ही नहीं रुचते जैसे रोगी को पथ्य और ओषधि नहीं अच्छी लगती। पुत्रों के मत को ठीक समझकर आप समझते हैं कि पाण्डव हार जायँगे। २०

हे भारत ! पाण्डवों के जयलाभ का कारण जो आप मुझसे पूछते हैं सो मैं, जैसा सुना है वैसा ही, कहता हूँ। यही बात पहले दुर्योधन ने भीष्म पितामह से पूछी थी। उन्होंने इसके उत्तर में जो कहा, सो मैं आपको सुनाता हूँ। हे नराधिप, महाबली भाइयों को पराजित देखकर शोकाकुल दुर्योधन रात को पितामह के पास जाकर बोले—पितामह! आप, महावीर आचार्य द्रोण, शल्य, कृप, अश्वत्थामा, कृतवर्मा हार्दिक्य, काम्बोजाधिप सुदक्षिण, भूरिश्रवा, विकर्ण और भगदत्त ये सभी महारथी, कुलीन और जमकर युद्ध करनेवाले योद्धा हैं। मेरी समझ में आपके समान योद्धा तीनों लोकों में दूसरा नहीं है। पाण्डव पक्ष के सब योद्धा मिलकर भी आपके पराक्रम को नहीं सह सकते। मुझे बड़ा संशय है कि पाण्डव और किसी के आश्रय से क्षण-क्षण हम लोगों को जीत रहे हैं। बताइए, वह कौन महापुरुष हैं ?

३०

भीष्म ने कहा—हे दुर्योधन, मैं तुमसे जो कहता हूँ उसे ध्यान देकर सुनो। मैं तुमसे कई बार कह चुका हूँ, पर तुमने उसे माना नहीं। दुर्योधन, मैं तुमसे अब भी कहता हूँ कि पाण्डवों से सन्धि कर लो। सन्धि करने से तुम्हारा और सब पृथ्वी का भला होगा। पाण्डवों से सुलह करके तुम मित्रों और भाई-बन्धुओं को आनन्दित करते हुए भाइयों के साथ बड़े सुख से राज्य करो। हे वत्स, तुमने पहले पाण्डवों का अपमान किया; मैंने मना किया, पर तुमने नहीं सुना। अब उसका फल भोग रहे हो। हे कुरुराज, हर एक काम को सहज ही कर सकनेवाले पाण्डव जिस कारण अवध्य हैं, वह भी सुनो। हे जनाधिप, भगवान् कृष्ण स्वयं जिन पाण्डवों की रक्षा कर रहे हैं उन्हें हरा सकनेवाला या मार सकनेवाला प्राणी त्रिभुवन में नहीं देख पड़ता। ऐसा प्राणी न कभी हुआ है और न होगा। हे वत्स! पूर्व समय में आत्मज्ञानी मुनियों से जो पुराणगाथा मैंने सुन रक्खी है वही मैं कहता हूँ, मन लगाकर सुनो।

४०

पूर्व समय में सब देवता और ऋषि गन्धमादन पहाड़ पर कमलासन ब्रह्माजी के पास गये। उन सबके बीच में स्थित ब्रह्माजी ने अन्तरिक्ष में एक परम प्रकाशमान श्रेष्ठ विमान देखा। इसके बाद ध्यान के द्वारा परमपुरुष परमेश्वर को जानकर, प्रसन्नतापूर्वक उठकर,

शोकाकुल दुर्योधन रात को पितामह के पास जाकर बोले। पृ० २०३६

पवित्र हृदय से हाथ जोड़कर ब्रह्माजी ने उनको प्रणाम किया। ऋषि और देवता भी यह अद्भुत घटना देखकर और ब्रह्माजी को उस तरह अभ्यर्थना करते देख हाथ जोड़कर खड़े हो गये। जगत् के रक्षक ब्रह्माजी उन परमदेव विष्णु नारायण को देखकर उनकी पूजा करके इस प्रकार स्तुति करने लगे—हे देव! तुम विश्वावसु, विश्वमूर्ति, विश्वेश, विश्वक्सेन, विश्वकर्मा, नियामक, वासुदेव और योगी हो। प्रभो, मैं तुम्हारी शरण में हूँ। हे महादेव, तुम्हारी जय हो। हे लोक-हितैषी! तुम योगीश्वर, योगपारावार, पद्मनाभ और विशालाक्ष हो। तुम लोकेश्वरों के ईश्वर, त्रिलोकनाथ, सौम्य, आत्मजात्मज, सब गुणों के आधार, नारायण, अनन्त और अनन्त महिमा-वाले हो। हे शार्ङ्गधनुष धारण करनेवाले, हे सर्व-गुण-सम्पन्न! तुम विश्वमूर्ति, निरामय, ५० महाबाहु, वराहमूर्ति, आदिकारण, पिङ्गलकेश, व्यापक, पीताम्बरधारी, दिक्पाल और विश्व के आधार हो। तुम अमित हो, अव्यय हो, तुम व्यक्त और अव्यक्त हो। तुम अमिताधार हो, तुम जितेन्द्रिय हो, तुम सत्कर्म करनेवाले हो, तुम असंख्य हो, तुम आत्मरूप के ज्ञाता हो। तुम गम्भीर हो, तुम सब कामनाओं का फल देनेवाले हो। हे अविदित! तुम ब्रह्म हो, तुम नित्य हो, तुम भूतभावन हो। तुम कृतकार्य और कृतज्ञ हो। तुम धर्मज्ञ और जय-पराजय से अतीत हो। तुम गुह्यरूप, सर्व-योगस्वरूप, लोकेश, भूतभावन, आत्मयोनि, महा-भाग, कल्पान्त में संहार-निरत, ब्रह्म और जनप्रिय हो। तुम नैसर्गिक-सृष्टि-निरत, कामेश, परमेश्वर, अमृतसम्भूत, सत्स्वभावसम्पन्न, मुक्तात्मा, विजयप्रद, प्रजापति-पति, देव, पद्मनाभ, महाबली, आत्मभूत, महाभूत, कर्मरूप और सर्वप्रद हो। तुम्हारी जय हो। पृथ्वी तुम्हारे दोनों चरण हैं। दिशाएँ तुम्हारे हाथ हैं। अन्तरिक्ष तुम्हारा मस्तक है। मैं तुम्हारी मूर्ति हूँ। देवगण तुम्हारा शरीर हैं। चन्द्र-सूर्य तुम्हारे नेत्र हैं। सङ्कल्प, तप और सत्य तुम्हारा बल हैं। धर्म-कर्म तुम्हारी आत्मा हैं। अग्नि तुम्हारा तेज है। वायु तुम्हारी साँस है। जल तुम्हारा पसीना है। अश्विनीकुमार तुम्हारे कान हैं। सरस्वती देवी तुम्हारी जिह्वा हैं। ६० वेद तुम्हारी संस्कारनिष्ठा हैं। यह सब जगत् तुम्हारे ही आश्रित है। हे योगीश! हम तुम्हारी संख्या, परिमाण, तेज, बल और जन्म कुछ नहीं जानते। हे देव! तुम महेश्वर और परमेश्वर हो। हम तुम्हारे आश्रित होकर भक्ति के साथ नियमपूर्वक तुम्हारी पूजा करते हैं। हे विशाललोचन, हे कृष्ण, हे दुःखनाशन! मैंने ऋषि, देवता, गन्धर्व, राक्षस, नाग, पिशाच, मनुष्य, मृग, पक्षी और कीट-सरीसृप आदि को तुम्हारे प्रसाद से उत्पन्न किया है। हे देवेश! तुम सब प्राणियों की गति हो। तुम्हीं सबका आदि हो। देवगण तुम्हारे ही प्रसाद से सब सुख भोगते हैं। तुम्हारे ही प्रसाद से यह पृथ्वी निर्भय भाव से स्थित है। इस समय तुम धर्म की स्थापना, दैत्यों के विनाश और पृथ्वी का भार उतारने के लिए पृथ्वी पर यदुवंश में अव-तार लो। हे प्रभो, इस मेरी प्रार्थना के अनुसार कार्य करो। मैंने तुम्हारी ही कृपा से वेद

में सब गुह्य विषयों का कीर्तन किया है। तुम्हीं ने आत्मा के द्वारा आत्मस्वरूप सङ्कर्षण की ७० सृष्टि की है। तुमने आत्मा से आत्मज-स्वरूप प्रद्युम्न की सृष्टि की है। प्रद्युम्न से अव्यय अनिरुद्ध की सृष्टि की है और अनिरुद्ध ने ही सृष्टिकर्ता-रूप से मुझे उत्पन्न किया है। अतएव मैं तुम्हारी आत्मा से ही उत्पन्न हुआ हूँ। अब तुम अपने अंश से मनुष्यशरीर ग्रहण करो। मनुष्यों को सुखी बनाने के लिए तुम असुरों को मारकर धर्म की स्थापना करो। फिर यश प्राप्त करके अपने लोक को चले आओ। हे विष्णु! देवर्षिगण और ब्रह्मर्षिगण अलग-अलग तुम्हारे उन नामों को गाकर, तुम्हें परम अद्भुत कहकर, तुम्हारी स्तुति करते हैं। सब प्राणी तुम्हीं में स्थित हैं। ब्राह्मण लोग तुम्हारा आश्रय पाकर तुम्हीं को अनादि, मध्यहीन, ७५ अनन्त, असीम और संसार का कारण कहते हैं।

छाछठवाँ अध्याय

विश्वोपाख्यान का वर्णन

भीष्म कहते हैं कि हे दुर्योधन, तब देवाधिदेव भगवान् विष्णु ने स्निग्ध गम्भीर स्वर से ब्रह्मा से कहा—"वत्स, मैंने योगबल से तुम्हारे मन की बात जान ली है। ब्रह्मा, मैं तुम्हारी प्रार्थना पूरी करूँगा।" यह कहकर नारायण वहाँ से अन्तर्द्धान हो गये। तब देवता, ऋषि, गन्धर्व आदि सब अत्यन्त आश्चर्य के साथ ब्रह्माजी से बोले—हे विभु, आपने जिनको प्रणाम किया और जिनकी नम्रभाव से स्तुति की, वे कौन हैं? हम जानने के लिए उत्सुक हैं। देवताओं, गन्धर्वों और ऋषियों के यों पूछने पर ब्रह्माजी ने मधुर स्वर में कहा—हे महात्मा पुरुषो! तत्-पद-वाच्य, सबसे श्रेष्ठ, भूत-भविष्य-वर्तमान तीनों कालों में नित्य, सब प्राणियों के आत्मा और प्रभु, परब्रह्म यह हैं। उन्होंने प्रसन्न होकर मुझसे वार्तालाप किया है। मैंने जगत् के हित के लिए उनसे प्रार्थना की है। मैंने उनसे प्रार्थना की है कि हे प्रभो, तुम वसुदेव के पुत्र-रूप से मनुष्य-लोक में अवतार लो। संग्राम में मारे गये सब महाबली दैत्य, दानव और राक्षस पृथ्वी पर उत्पन्न हुए हैं। १० उनके वध के लिए तुम नर के साथ पृथ्वी पर जन्म लो। सब देवता भी मिलकर उन्हें जीत नहीं सकते। वे महातेजस्वी प्राचीन ऋषि नर-नारायण पृथ्वी पर अवतार लेंगे। मूढ़ लोग उन्हें नहीं जानते। मैं उनका बड़ा आत्मज होकर सब जगत् का स्वामी हुआ हूँ। सब लोकों के महेश्वर वासुदेव तुम सबके पूजनीय हैं। उन महाबली वीर्यशाली शङ्ख-चक्र-गदा-पद्मधारी वासुदेव को मनुष्य समझकर कभी उनकी अवज्ञा न करना। वे परमगुह्य, परमपद, परब्रह्म, परमयश, अव्यक्त और शाश्वत हैं। उन तेजस्वी को सब लोग पुरुष कहते और जानते हैं। विश्वकर्मा ने उन्हीं को परमतेज, परमसुख और परमसत्य कहा है। देवता, इन्द्र, असुर या

भगवान् विष्णु ने स्निग्ध गम्भीर स्वर से ब्रह्मा से कहा। पृ० २०२८

मनुष्य, किसी को उन पराक्रमी वासुदेव का अनादर न करना चाहिए। जो मूढ़मति मनुष्य उनको मनुष्य समझते हैं, उन्हें पण्डितजन पुरुषाधम कहते हैं। जो व्यक्ति उन महायोगी महात्मा को मनुष्यदेहधारी समझकर उनका अनादर करता है, अथवा जो व्यक्ति उन चराचरात्मा पद्मनाभ को जान नहीं सकता, उसे श्रेष्ठ लोग पापी कहते हैं। जो व्यक्ति उन कौस्तुभ-किरीटधारी और मित्रों को अभय देनेवाले योगी ईश्वर का अपमान करता है वह घोर पाप का भागी होता है। हे देवताओ, उन लोकमहेश्वर भगवान् वासुदेव को इस तरह जानकर सब लोगों को प्रणाम करना चाहिए। २१

भीष्म कहते हैं—देवताओं और ऋषियों से इस तरह नारायण की महिमा कहकर ब्रह्माजी अपने लोक को चले गये। हे दुर्योधन, उन ऋषियों से ही मैंने वासुदेव की यह पुरानी कथा सुनी है। परशुराम, मार्कण्डेय, व्यास और नारद ने भी मुझसे यही बात कही है। हे वत्स, जगत्पिता ब्रह्मा जिनसे उत्पन्न हैं, उन सब लोकों के ईश्वर महात्मा वासुदेव की यह महिमा जानकर कौन आदमी उनकी पूजा और सत्कार नहीं करेगा? हे दुर्योधन, पूर्व समय में मैंने और शुद्धहृदय योगी मुनियों ने आकर तुम्हें रोका था और कहा था कि वासुदेव और पाण्डवों से युद्ध मत करो। ३० तुमने मोहवश होकर किसी का कहना नहीं माना और अब तक नहीं समझते हो। तुम ऐसे तमोगुणी हो रहे हो कि मैं तुमको क्रूर राक्षस समझता हूँ। तुम उन्हीं वासुदेव और पाण्डवों-सहित अर्जुन से द्वेषभाव रखते हो। तुम्हारे सिवा और कौन मनुष्य नर-नारायण के अवतार अर्जुन और श्रीकृष्ण से द्रोह करेगा? हे दुर्योधन! तुमसे मैं फिर कहता हूँ, ये श्रीकृष्ण शाश्वत, अव्यय, सर्वलोकमय, नित्य, शासक, विधाता, विश्वाधार और ध्रुव हैं। यही त्रिलोक को धारण करनेवाले धर्म, चराचर के गुरु, प्रभु, योद्धा, विजेता, सबकी प्रकृति और ईश्वर हैं। ये सत्त्वगुणमय हैं; तमोगुण और रजोगुण से इनका कुछ सम्बन्ध नहीं। ये परम से परम भगवान् वासुदेव जिस पक्ष में हैं उसी पक्ष में धर्म है, और उसी पक्ष को जय प्राप्त होगी। इन्हीं के आत्मयोगबल से पाण्डव सुरक्षित हैं। इसलिए वही विजयी होंगे। जो पाण्डवों को सदा उत्तम सलाह देते और सहायता करते हैं, वे श्रीकृष्ण ही सदा सब प्रकार के भय से उनकी रक्षा करते हैं। हे भारत! तुमने जो मुझसे पूछा था, वह सब मैंने तुम्हारे आगे वर्णन कर दिया। वे सर्वमय, पाण्डवों के सहायक, महात्मा वासुदेव कहलाते हैं। ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र नित्य एकाग्र होकर उनकी सेवा और पूजा करते हैं। सङ्कर्षण बलदेव द्वापर युग के अन्त में, कलियुग के आरम्भ में, सात्वत विधि से, जिनकी उपासना और गुणगान करते हैं, वही विश्वकर्मा वासुदेव हर एक युग में देवलोक, सत्यलोक, समुद्र के भीतर की पुरी और मनुष्यों के निवासस्थान आदि की सृष्टि करते हैं। ४१

सड़सठवाँ अध्याय

वासुदेव के आविर्भाव और अवस्थिति का वर्णन

दुर्योधन ने कहा—पितामह, जो वासुदेव सब लोकों में महान् प्राणी या परम पुरुष माने जाते हैं उनका आविर्भाव और स्थिति जानने की मेरी बड़ी इच्छा है। कृपा करके कहिए।

भीष्म ने कहा—हे कुरुकुलश्रेष्ठ, वासुदेव महासत्त्वसम्पन्न और देवताओं के भी देवता हैं। उनसे श्रेष्ठ और कोई नहीं है। चिरजीवी महर्षि मार्कण्डेय उनको महत् और अद्भुत कहते हैं। वे सब प्राणियों के आत्मा अव्यय पुरुष ही जल, वायु, तेज आदि तत्त्वों को और चराचर जगत् को उत्पन्न करते हैं। उन सर्वदेवमय देव पुरुषोत्तम ने योगबल से पृथ्वी को प्रकट कर सागर-जल की शय्या पर शयन करके मुख से अग्नि को, प्राण से वायु को और मन से सरस्वती तथा वेद को प्रकट किया। इस प्रकार पहले उन्होंने देवता, ऋषि और उनके सब लोक उत्पन्न करके फिर अमृत, मृत्यु, प्रजा की उत्पत्ति और प्रलय के कारण आदि की सृष्टि की। वे धर्मज्ञ, धर्म, वरद, सब कामना देनेवाले, कर्ता, कार्य, आदि के आदि और स्वयंप्रभु हैं। पहले उन्हीं ने भूत, भविष्य, वर्तमान, दोनों सन्ध्याकाल, दिशाएँ, आकाश और सब नियम रचे हैं। महात्मा प्रभु अव्यय ने फिर ऋषिगण, तप और जगत् की सृष्टि करनेवाले प्रजापति को उत्पन्न
१० किया। फिर सब प्राणियों के अग्रज सङ्कर्षण को उत्पन्न किया। सङ्कर्षण से देवदेव सनातन नारायण उत्पन्न हुए। इनकी नाभि से कमल निकला, कमल से ब्रह्मा उत्पन्न हुए और ब्रह्मा से सारी प्रजा की उत्पत्ति हुई है। लोग जिन्हें अनन्त कहते हैं, जिन्होंने पर्वतों सहित इस पृथ्वी को धारण कर रक्खा है, उन शेषनाग को भी उन्हीं प्रभु ने उत्पन्न किया है। ब्राह्मण लोग ध्यानयोग के द्वारा उन वासुदेव को जान सकते हैं। उग्रकर्मा मधु नाम के असुर ने प्रजापति के कान से पैदा होकर उन्हें मारना चाहा था। उस उग्रमति असुर को मारने के कारण देवता, दानव और मानव उन्हें मधुसूदन कहते हैं। ऋषिगण उन्हीं को जनार्दन कहते हैं। वही वाराह, नृसिंह, और वामन का रूप रखकर समय-समय पर प्रकट हुए हैं। वे पुण्डरीकाक्ष हरि सबके माता और पिता हैं। उनसे श्रेष्ठ कोई भी नहीं हो सकता। उनके मुख से ब्राह्मण, हाथों से क्षत्रिय, ऊरुओं से वैश्य और पैरों से शूद्र पैदा हुए हैं। अमावस और पूर्णिमा को तप में तत्पर होकर उनकी आराधना करने से मनुष्य उन सर्वयोगात्मा परमात्मा वासुदेव को प्राप्त कर सकता
२० है। वही तेज और चराचर जगत् के स्वामी हैं। मुनिगण उन्हें हृषीकेश कहते हैं। वही आचार्य, पिता और गुरु हैं। वे जिस पर प्रसन्न होते हैं उसको अक्षयलोक प्राप्त होते हैं। जो भयपीड़ित होकर उन वासुदेव के शरणागत होता है और सदा इस उपाख्यान को पढ़ता है, वह परममङ्गल और परमसुख प्राप्त करता है। उसे किसी प्रकार का मोह नहीं होता। वह

पितामह भीष्म इतना कहकर चुप हो रहे। दुर्योधन उनके पास से उठकर, उनको प्रणाम करके, अपने शिविर में गये और पलँग पर लेट रहे।

उनहत्तरवाँ अध्याय

पाण्डवों का श्येनव्यूह और कौरवों का मकरव्यूह बनाकर लड़ना

सञ्जय कहते हैं—महाराज! रात बीतने पर दोनों ओर की सेनाएँ युद्ध के लिए लड़ाई के मैदान को चलीं। पाण्डव और कौरव जयप्राप्ति के लिए उत्सुक और क्रोध से अधीर होकर परस्पर युद्ध करने को सामने आये। राजन्, यह सब आपकी ही बुरी सलाह का फल है। कौरवपक्ष के प्रसन्नहृदय योद्धा कवच और शस्त्र धारणकर मकरव्यूह की रचना करके भीष्म के चारों ओर स्थित हुए। महाबाहु भीष्म चारों ओर से मकरव्यूह की रक्षा करने लगे। पितामह जब ध्वजाओं से शोभित असंख्य रथों के साथ निकले तब असंख्य रथी, पैदल, हाथियों और घोड़ों के सवार यथास्थान स्थित होकर उनके पीछे-पीछे चले। उधर पाण्डवों ने कौरवों को युद्ध के लिए तैयार देखकर श्येनव्यूह की रचना की। महाबली भीमसेन उस व्यूह के मुखभाग में, शिखण्डी और धृष्टद्युम्न नेत्रों के स्थान पर, सत्यपराक्रमी सात्यकि सिर की जगह पर और गम्भीर गाण्डीव धनुष का शब्द करते हुए अर्जुन गर्दन की जगह पर स्थित हुए। महात्मा द्रुपद अपने पुत्रों के साथ एक अक्षौहिणी सेना लेकर व्यूह के वामभाग की रक्षा करने लगे। अक्षौहिणीपति कैकेय-राजकुमार [पाँचों भाई] दक्षिण भाग की रक्षा करने लगे। द्रौपदी के पाँचों पुत्र, अभिमन्यु, धर्मराज युधिष्ठिर, नकुल और सहदेव उस व्यूह के पृष्ठभाग की रक्षा करने लगे। इसके बाद भीमसेन शत्रुओं के मकरव्यूह में घुस गये। उन्होंने भीष्म के पास पहुँचकर उन्हें बाणों की वर्षा से ढक दिया। महाबली भीष्म भी पाण्डवों की, व्यूह के बीच खड़ी हुई, सेना को मोहित करते हुए अस्त्रों का प्रयोग करके असंख्य तीक्ष्ण बाण बरसाने लगे। अपनी सेना को भीष्म के बाणों से

मोहित और उत्साहहीन देखकर वीर अर्जुन शीघ्र वहाँ पहुँच गये। उन्होंने दृढ़ और तीक्ष्ण हज़ार बाण भीष्म के ऊपर छोड़े। भीष्म ने भी अपने बाणों से फुर्ती के साथ उन बाणों को व्यर्थ कर दिया। अपने पक्ष की सेना को प्रसन्न तथा उत्साहित करते हुए वे घोर युद्ध करने लगे।

पहले दिन बहुत सी सेना और कई भाइयों के मारे जाने से राजा दुर्योधन योंही अत्यन्त क्रुद्ध थे। इस समय युद्ध की हालत देखकर उन्होंने द्रोणाचार्य से कहा—हे आचार्य, आप लगातार नित्य मेरी भलाई सोचा करते हैं। हम आपके और पितामह के आश्रय से देवताओं को भी परास्त कर सकते हैं। पराक्रम और वीर्य से हीन पाण्डवों को आप लोगों की सहायता से जीत लेना तो कोई आश्चर्य की बात ही नहीं है। इसलिए वह उपाय शीघ्र कीजिए जिससे पाण्डव मारे जा सकें। सञ्जय कहते हैं—महाराज, युद्धभूमि में दुर्योधन ने आचार्य से २० जब यह प्रार्थना की तब द्रोणाचार्य सात्यकि के सामने ही पाण्डव-सेना का संहार करने लगे। उधर सात्यकि भी द्रोणाचार्य को रोकने की चेष्टा करने लगे। द्रोणाचार्य और सात्यकि से दारुण युद्ध होने लगा। प्रतापशाली आचार्य ने क्रोध से कुछ मुसकाकर सात्यकि के जत्रुस्थान पर दस बाण मारे। उधर महाबली भीमसेन कुपित होकर प्रधान अस्त्रविद्याविशारद द्रोणाचार्य के हाथ से सात्यकि की रक्षा करने के लिए उन पर लगातार असह्य बाण बरसाने लगे। तब द्रोण, भीष्म और शल्य कुपित होकर भीमसेन को बाण मारने लगे। द्रोण और भीष्म को मिलकर युद्ध करते देख अभिमन्यु और द्रौपदी के पाँचों पुत्र शस्त्रधारी द्रोण के मर्मस्थलों में तीक्ष्ण बाण मारने लगे। इसी बीच शिखण्डी भी वहाँ आ गये। मेघ के समान गरजनेवाले धनुष को चढ़ाकर फुर्ती के साथ उन्होंने इतने बाण बरसाये कि सूर्य-नारायण उनसे छिप गये। पितामह भीष्म ने शिखण्डी को युद्ध के लिए सामने देखकर भी, उनके पहले के स्त्रीभाव का ख़याल करके, उन पर बाण नहीं चलाया। उधर दुर्योधन की आज्ञा से आचार्य द्रोण, भीष्म की रक्षा के लिए, शिखण्डी के सामने आये। प्रलयकाल के प्रचण्ड ३० अग्नि की तरह प्रज्वलित प्रधान योद्धा आचार्य को सामने देखकर शिखण्डी डर के मारे उन्हें

बराकर अन्यत्र चले गये। इसी बीच में बहुत सी सेना साथ लिये दुर्योधन वहाँ आकर भीष्म की रक्षा करने लगे। पाण्डवगण भी अर्जुन को आगे करके, जयलाभ के लिए, भीष्म के समीप पहुँचने की चेष्टा करने लगे। तब परस्पर यश और विजय की कामना से दोनों पक्ष के वीर
३४ योद्धा भिड़कर देवताओं और दानवों का सा घोर संग्राम करने लगे।

सत्तरवाँ अध्याय

युद्ध-वर्णन

सञ्जय ने कहा—महाराज, भीमसेन से आपके पुत्रों की रक्षा करने के लिए भीष्म घोरतर संग्राम करने लगे। दिन के पूर्वभाग में कौरवों, पाण्डवों और दोनों पक्षों के राजाओं का भयङ्कर युद्ध हुआ। उस युद्ध में अनेक प्रधान वीर मृत्यु के मुँह का कौर बनने लगे। युद्धभूमि में ऐसा कोलाहल उठा कि आकाशमण्डल तक छा गया। हाथियों की चिंघार, घोड़ों की हिनहिनाहट, भेरी और शङ्ख आदि का शब्द चारों ओर गूँज उठा। युद्धार्थी वीरगण परस्पर विजय की इच्छा से गोशाला में स्थित साँड़ों की तरह तर्जन-गर्जन करने लगे। तीक्ष्ण बाणों से कट-कटकर योद्धाओं के सिर पृथ्वी पर गिर रहे थे; जान पड़ता था मानों आकाश से शिलाओं की वर्षा हो रही है। कुण्डल और पगड़ी आदि से शोभित, सुवर्ण के आभूषणों से चमकते हुए, मनुष्यों के सिर ढेर के ढेर पड़े देख पड़ते थे। कुण्डल-भूषित मस्तकों, आभूषणयुक्त हाथों और आभूषण-भूषित शरीरों से पृथ्वी पट गई। कवचयुक्त देहों, अलङ्कारयुक्त हाथों, लाल आँखों से विकट रक्तरञ्जित मुण्डों, हाथियों घोड़ों और मनुष्यों के छिन्न-भिन्न अङ्ग-प्रत्यङ्गों का दम
१० भर में युद्धभूमि में ढेर लग गया। उस समय उड़ी हुई धूल घनघटा के समान, शस्त्र-अस्त्र बिजली के समान, अस्त्र-शस्त्रों का शब्द मेघगर्जन के समान और रक्त का प्रवाह वर्षा की जलधारा के समान जान पड़ता था। राजन्, युद्धनिपुण क्षत्रियगण उस भयङ्कर सङ्ग्राम में लगातार बाण-वर्षा करने लगे। दोनों सेनाओं के हाथी बाणप्रहार से पीड़ित होकर चिल्लाने लगे। उनके चिल्लाने और वीरों के सिंहनाद तथा ताल ठोंकने के शब्द में और कुछ नहीं सुन पड़ता था। सर्वत्र रक्त-प्रवाह के बीच से वीरों के कबन्ध उठ-उठकर घोर युद्ध करने लगे। राजा लोग और सैनिक क्षत्रियगण शत्रुओं को मारने के लिए चारों ओर दौड़ रहे थे। मोटी-मोटी भुजाओं-वाले महाबली क्षत्रियगण बाण, शक्ति, गदा और खड्ग आदि शस्त्रों से एक दूसरे को मारने लगे। बाणों की चोट से विह्वल होकर हाथी और घोड़े अपने सवारों को गिराकर युद्धभूमि से दूर भागने लगे। बहुत लोग बाणों के प्रहार से पीड़ित होकर उछल-उछलकर पृथ्वी पर गिर पड़ते थे। इस युद्ध में सब जगह भुजा, सिर, धनुष, गदा, बेलन और हाथों के केयूर आदि

युद्ध-निपुण क्षत्रियगण उस भयङ्कर सङ्ग्राम में लगातार बाण-वर्षा करने लगे। २०१४
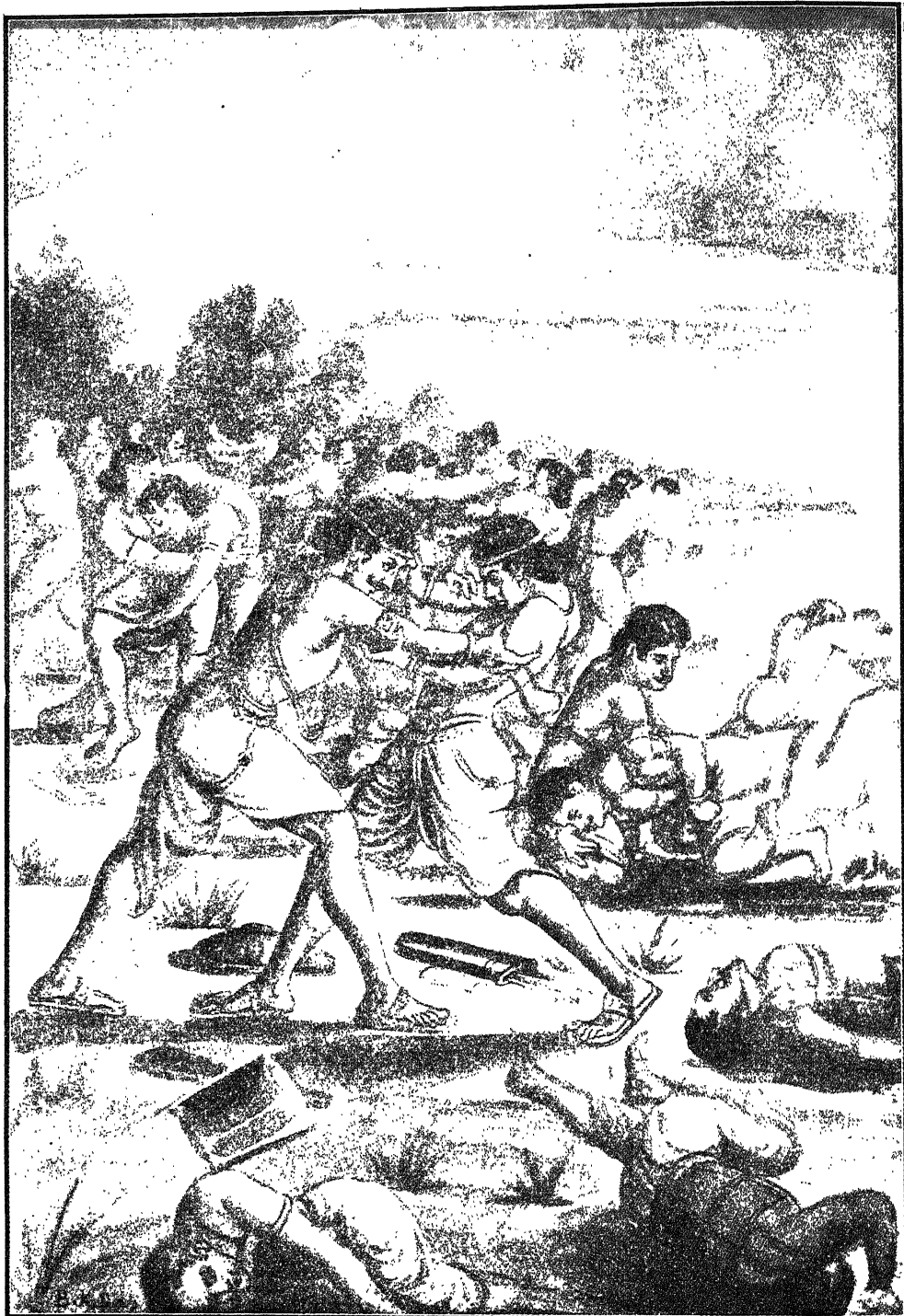
शस्त्र और धनुष न रहने पर वे कौरव-सेना के साथ बाहुयुद्ध करने लगे। २०४०

आभूषण बिखरे हुए देख पड़ते थे। जगह-जगह पर हाथियों, घोड़ों और रथों के झुण्ड भिड़े हुए नज़र आते थे। क्षत्रियगण मानों कालप्रेरित होकर परस्पर गदा, खड्ग, प्रास, बाण आदि के प्रहार कर रहे थे। बाहु-युद्धनिपुण बली वीरगण लोहे के बेलन ऐसे हाथों से भिड़कर कुश्ती के दाँव-पेच दिखा रहे थे। अनेक वीर शस्त्र न रहने के कारण शत्रुओं को घूँसे, घुटने, थप्पड़ आदि से मारने लगे। बहुत से वीर पृथ्वी पर गिरकर तड़पते रहने पर भी घोर युद्ध कर रहे थे। रथ टूट जाने पर अनेक रथी एक दूसरे को मारने के लिए दौड़ रहे थे। इतने में राजा दुर्योधन बहुत सी कलिङ्गदेश की सेना साथ लेकर, भीष्म को आगे करके, पाण्डवों पर आक्रमण करने चले। तब पाण्डव लोग भी भीमसेन को आगे करके पितामह भीष्म के सामने आये। २० २९

इकहत्तरवाँ अध्याय

घोर युद्ध का वर्णन

सञ्जय कहते हैं—महाराज, भाइयों और अन्य राजाओं को भीष्म से युद्ध करते देखकर अर्जुन भी शस्त्र लेकर उधर ही दौड़े। पाञ्चजन्य शङ्ख का शब्द और गाण्डीव धनुष का गर्जन सुनकर तथा अर्जुन के रथ की ध्वजा देखकर कौरव पक्ष के वीर बहुत ही डर गये। हम लोगों ने अर्जुन की सिंहपुच्छशोभित, चित्र विचित्र, वानरचिह्नयुक्त, उठे हुए धूमकेतु के समान, आकाश को छूती हुई दिव्य ध्वजा देखी। उस तुमुल संग्राम में योद्धाओं ने अर्जुन के सुवर्णमण्डित पीठवाले गाण्डीव धनुष को घनघटा के बीच बिजली के समान देखा। राजन्, आपकी सेना का संहार करते समय अर्जुन इन्द्र के समान गम्भीर शब्द से गरजने लगे। उनके ताल ठोकने का कठोर शब्द लगातार सुन पड़ने लगा। जैसे प्रचण्ड हवा और बिजली के साथ गरजता हुआ बादल सब जगह पानी बरसाता है, वैसे ही अर्जुन भी सर्वत्र बाण बरसा रहे थे। वे भयङ्कर अस्त्र-शस्त्र बरसाते हुए भीष्म की ओर दौड़े। उनके अस्त्र-प्रहार से हमारी ओर के लोग अत्यन्त मोहित होकर यह निश्चय नहीं कर सकते थे कि कौन दिशा पूर्व है और कौन दिशा पश्चिम है। कौरव पक्ष के योद्धाओं में से किसी के वाहन थक गये थे, किसी के वाहन मर गये थे और कोई अचेत हो गया था। वे भागकर, हताहत होकर, दिशा-विदिशा का ज्ञान खोकर आपके पुत्रों के साथ भीष्म के शरणागत हुए। तब पितामह उनकी रक्षा करने लगे। १० भयविह्वल रथी रथों पर से, घुड़सवार घोड़ों पर से और हाथियों के सवार हाथियों पर से पृथ्वी पर गिरने लगे। बिजली की कड़क जैसा गाण्डीव धनुष का शब्द सुनकर सैनिकगण डर के मारे प्राण लेकर भागने लगे। राजन्! उस समय कलिङ्गराज ने मद्र, सौवीर, गान्धार, त्रिगर्त आदि देशों की सेना, प्रधान-प्रधान कलिङ्ग देश के वीर, काम्बोज देश के शीघ्रगामी घोड़े और

असंख्य गोपसेना साथ लेकर युद्ध के लिए प्रस्थान किया। असंख्य सेना और राजाओं के साथ राजा जयद्रथ, दुःशासन के अनुगामी होकर, युद्ध के लिए बढ़े। आपके पुत्र दुर्योधन की आज्ञा से चौदह हज़ार घुड़सवार शकुनि के साथ चले।

महाराज, कुरुपक्ष के योद्धा एकत्र होकर अलग-अलग रथों और वाहनों पर चढ़कर अर्जुन से भिड़ गये। उस युद्धभूमि में रथों, हाथियों, घोड़ों और मनुष्यों के चलने से इतनी धूल उड़ी कि आकाशमण्डल महामेघ से घिरा हुआ सा जान पड़ने लगा। महारथी भीष्म के साथ बहुत सी चतुरङ्गिणी सेना थी। वे सैनिक तोमर, प्रास, नाराच आदि शस्त्रों के द्वारा अर्जुन से युद्ध करने लगे। अवन्तिराज काशिराज के साथ, जयद्रथ भीमसेन के साथ, पुत्र और मन्त्री आदि सहित २० अजातशत्रु राजा युधिष्ठिर शल्य के साथ, विकर्ण सहदेव के साथ और चित्रसेन शिखण्डी के साथ युद्ध करने लगे। हे कुरुश्रेष्ठ, दुर्योधन और शकुनि के साथ मत्स्य देश के वीरगण लड़ने लगे।

द्रुपद, चेकितान और सात्यकि मिलकर अश्वत्थामा और द्रोणाचार्य से युद्ध करने लगे। कृपाचार्य और कृतवर्मा दोनों धृष्टकेतु से भिड़ गये। इस तरह रथ, हाथी और घोड़े चारों ओर फिरने लगे और उन पर सवार योद्धा लोग परस्पर प्रहार करते हुए लड़ने लगे। उस समय मेघहीन आकाश-मण्डल में बिजली चमकने लगी और घोर शब्द के साथ भयानक उल्कापात होता दिखाई दिया। चारों ओर और नीचे-ऊपर धूल छा गई। आँधी चलकर कङ्कड़ बरसाने लगी। सेना की धूल से आकाशमण्डल में सूर्य छिप गये। उस धूल और अँधेरे में सब प्राणी घबराने लगे। वीर पुरुषों के हाथ से छूटे हुए बाण विकट शब्द के साथ सर्वत्र गिरने लगे। योद्धाओं के चलाये हुए बाण हाथ से छूटकर और उद्यत शस्त्र आकाश में चम-३० कते दिखाई पड़ने लगे। विचित्र सुवर्णजालमण्डित ढालें पृथ्वी पर टूट-टूटकर गिर रही थीं। योद्धाओं के सूर्यसदृश चमकीले खड्गों से छिन्न-भिन्न सिर और शरीर सर्वत्र पड़े हुए नज़र आने लगे। महारथियों के रथों के पहिये टूट गये, ध्वजाएँ कट गईं, घोड़े और सारथी मर गये और वे महारथी स्वयं पृथ्वी पर गिरने लगे। बहुत से योद्धाओं के मर जाने पर सारथिहीन घोड़े,

बाणों से घायल होकर, युगकाष्ठ को खींचते हुए इधर-उधर दौड़ते देख पड़े। कहीं पर देख पड़ा कि किसी पराक्रमी योद्धा के हाथी ने पैरों से रथी, सारथी और घोड़ों को मार डाला। कहीं किसी मस्त हाथी के मद की गन्ध पाकर बहुत से हाथी डर से भाग खड़े हुए और उनके पैरों से अनेक हाथी कुचल गये। नाराच बाणों के प्रहार से मरकर गिरे हुए हाथियों से वह युद्धभूमि भर गई। हाथियों की पीठ से तोमर-अंकुश आदि हाथ में लिये महावत भी मर-मरकर गिरने लगे। उस घोर संग्राम में हाथियों के आक्रमण से योद्धा और झण्डेसहित हाथी गिरने लगे। श्रेष्ठ हाथी सूँड़ से रथों को खींचकर तोड़ डालते थे। कहीं पर किसी हाथी ने सूँड़ से किसी योद्धा के केश पकड़कर उसे खींच लिया और वृक्ष की शाखा की तरह रौंद डाला। कहीं पर रथ से भिड़े हुए रथ को खींचते हुए हाथी इधर-उधर फिर रहे थे। उस ४० समय वे हाथी सरोवर में परस्पर लिपटे हुए कमलों को खींचते से जान पड़ते थे। इस तरह वह रणभूमि घुड़सवारों, पैदलों और ध्वजाओं से शोभित महारथियों से परिपूर्ण हो रही थी। ४३

बहत्तरवाँ अध्याय

युद्ध का वर्णन

सञ्जय ने कहा—राजन्, राजा विराट और शिखण्डी शीघ्रता के साथ महाधनुर्द्धर भीष्म के सामने आये। महाबली पराक्रमी द्रोण, कृप, विकर्ण और अन्य बहुत से राजाओं से अकेले अर्जुन युद्ध करने लगे। अमात्य और बन्धुओं सहित जयद्रथ, पूर्व और दक्षिण दिशा के नर-पतियों तथा आपके पुत्र महाधनुर्द्धर दुर्योधन और दुःसह से अकेले भीमसेन लड़ने गये। महा-रथी शकुनि और उनके पुत्र उलूक से सहदेव युद्ध करने लगे। महारथी युधिष्ठिर हाथियों की सेना से लड़ने के लिए गये। समर में इन्द्रतुल्य पराक्रमी नकुल त्रिगर्त देश के वीरों से युद्ध करने लगे। सात्यकि, चेकितान और अभिमन्यु, तीनों वीर कुपित होकर शाल्व और केकय देश की सेना से लड़ने लगे। राक्षस घटोत्कच और धृष्टकेतु कौरवों की रथ-सेना से युद्ध करने लगे। महाबली सेनापति धृष्टद्युम्न उग्रकर्मा द्रोणाचार्य से लड़ने गये। इस प्रकार दोनों ओर के महारथी १० योद्धा परस्पर भिड़कर प्रहार करने लगे। उस समय ठीक दोपहरी थी, आकाशमण्डल सूर्य की प्रचण्ड किरणों से परिपूर्ण था। कौरव और पाण्डव परस्पर प्रचण्ड प्रहार कर रहे थे। सुवर्ण-चित्रित पताकायुक्त, व्याघ्रों की खालों से मढ़े हुए, सुन्दर रथ रण-भूमि में दौड़ने लगे। जय-लाभ के लिए उत्सुक वीरगण परस्पर भिड़कर सिंहों की तरह गरजने लगे। हम लोग वह कौरवों और सृञ्जयों का अद्भुत युद्ध देखने लगे। दिशा, विदिशा, आकाश या सूर्य कुछ नहीं देख पड़ता

था; चारों ओर बाण ही बाण छाये हुए थे। शक्ति, तोमर, खड्ग, विचित्र कवच और तरह-तरह के मणिजटित स्वर्णमय आभूषणों की चमक से सब दिशाएँ और आकाशमण्डल जगमगा उठा। रणभूमि में हर जगह राजा लोग चन्द्रमा और सूर्य के समान प्रकाशमान हो रहे थे। रथों पर
२० बैठे हुए वीर आकाश में इधर-उधर चलते हुए ग्रहों के समान जान पड़ने लगे।

हे भारत! इधर महारथी भीष्म ने क्रुद्ध होकर सब सेना के सामने ही सुवर्णपुङ्ख, शिलाओं पर रगड़े हुए, तैल-धौत बाण बरसाकर बली भीमसेन को आगे बढ़ने से रोका। तब भीमसेन को क्रोध चढ़ आया। उन्होंने कुपित नाग के समान एक शक्ति बड़े वेग से भीष्म के ऊपर फेंकी। भीष्म ने उस सुवर्ण-दण्डमयी शक्ति को, अपने ऊपर गिरते देखकर, तीक्ष्ण बाणों से काट डाला; इसके बाद एक तीक्ष्ण भल्ल बाण से भीमसेन का धनुष भी काट डाला। इतने में सात्यकि ने शीघ्रता के साथ भीष्म के पास जाकर उनको बड़े पैने-पैने बाण मारे। भीष्म ने एक तीक्ष्ण भयानक बाण मारकर सात्यकि के सारथी को रथ से गिरा दिया। सारथी के मर जाने पर वे तेज़ घोड़े अस्त-व्यस्त भाव से सात्यकि का रथ लिये फिरने लगे। तब युद्धभूमि में कौरवपक्ष के लोग आनन्द-कोलाहल और पाण्डवपक्ष के लोग हाहाकार करने लगे। पाण्डव लोग अपने आदमियों से कहने लगे—दौड़ो, घोड़ों को पकड़ो,

३० रोक लो। इसी अवसर में भीष्म पितामह उसी तरह पाण्डवसेना का संहार करने लगे जिस तरह इन्द्र दानवों की सेना को नष्ट करते हैं। भीष्म के हाथों मारे जाते हुए सोमकों और पाञ्चालों ने युद्ध में मरने या मारने का दृढ़ निश्चय करके भीष्म के ऊपर प्रचण्ड आक्रमण किया। पाण्डवों ने और धृष्टद्युम्न ने भी आक्रमण कर दिया। भीष्म, द्रोण आदि कौरव-वीर
३५ उन्हें रोकने की चेष्टा करने लगे। दोनों ओर घमासान युद्ध होने लगा।

तिहत्तरवाँ अध्याय

युद्ध-वर्णन

सञ्जय ने कहा—महाराज, तब राजा विराट ने महारथी भीष्म को तीन बाण और घोड़ों सहित सारथी को भी तीन ही बाण मारे। भीष्म ने उनको दस बाण मारे। भयानक धनुर्धारी महारथी अश्वत्थामा ने गाण्डीव धनुष धारण करनेवाले अर्जुन की छाती में छः सुवर्णपुङ्ख बाण मारे। शत्रुदमन अर्जुन ने उनका धनुष काट डाला और तीक्ष्ण पाँच बाण मारे। तब अश्वत्थामा ने शत्रु के विक्रम को न सह सकने के कारण क्रोध करके दूसरा धनुष हाथ में लिया, और नब्बे बाण अर्जुन को तथा सत्तर बाण वासुदेव को मारे। क्रोध से अर्जुन की आँखें लाल हो गईं। उन्होंने लम्बी साँस छोड़कर बायें हाथ में गाण्डीव धनुष लेकर प्राणनाशक तीक्ष्ण भयङ्कर बाणों से अश्वत्थामा को लगातार घायल करना शुरू किया। अर्जुन के बाण कवच तोड़कर अश्वत्थामा का रक्त पीने लगे। किन्तु अश्वत्थामा इससे तनिक भी विचलित नहीं हुए और अर्जुन पर बाण बरसाते हुए अपनी सेना की रक्षा करने के लिए अटल खड़े रहे। अश्वत्थामा को श्रीकृष्ण और अर्जुन के साथ घोर युद्ध करते देख कौरवगण खूब बड़ाई करके उन्हें उत्साहित करने लगे। अश्वत्थामा ने प्रयोग और उपसंहार की विधि के साथ पिता द्रोणाचार्य से सब दुर्लभ दिव्य अस्त्र प्राप्त किये थे। इस समय वे शत्रुपक्ष के मन में भय का सञ्चार करते हुए, स्वयं निर्भय रहकर, नित्य युद्ध करते थे। महावीर अर्जुन यह समझकर, कि ये मेरे गुरु के प्रिय पुत्र और विशेषकर ब्राह्मण होने के कारण परम माननीय हैं, कृपापूर्वक अश्वत्थामा को छोड़कर कौरवसेना के और वीरों को मारने चले गये। ११

महाराज, दुर्योधन ने सुवर्णपुङ्ख दस पैने बाण भीमसेन को मारे। भीमसेन ने भी कुपित होकर जीवनहारी विचित्र बाण निकाले और महावेग से कान तक धनुष खींचकर दुर्योधन की छाती में वे बाण मारे। उनकी छाती में काञ्चनसूत्र-ग्रथित मणि शोभायमान थी। वह मणि बाणों से आच्छादित होने पर ग्रहों से घिरे हुए सूर्य के समान जान पड़ने लगी। २०

जैसे मदमत्त गजराज तल-शब्द को सुनकर नहीं सह सकता, वैसे ही मानी दुर्योधन भीमसेन के बाणों की चोट खाकर उनके तल-शब्द और सिंहनाद को नहीं सह सके। उन्होंने क्रोध से अधीर होकर अपनी सेना की रक्षा करने के लिए भीमसेन पर विकट बाण बरसाये। इस तरह घायल होकर भी देवतुल्य भीमसेन और दुर्योधन परस्पर युद्ध करने लगे।

उधर देवराज-सदृश अभिमन्यु ने चित्रसेन को दस और पुरुमित्र को सात बाण मारकर फुर्ती के साथ सत्तर बाणों से भीष्म को घायल किया। वे आनन्द से नृत्य सा करने लगे। यह देखकर हमारे पक्ष के लोगों को बड़ा खेद और क्लेश हुआ। तब चित्रसेन ने दस बाण, भीष्म ने नव बाण और पुरुमित्र ने सात बाण अभिमन्यु को मारे। अभिमन्यु के शरीर से रुधिर की धारा बहने लगी। अभिमन्यु ने चित्रसेन का बढ़िया धनुष और उत्तम कवच काटकर एक घोर बाण उनकी छाती में मारा। आपके पक्ष के वीर और महारथी राजपुत्र मिलकर क्रोधपूर्वक तीक्ष्ण बाणों से अभिमन्यु पर आक्रमण करने लगे। दिव्य अस्त्रों के ज्ञाता अभिमन्यु ने भी तीक्ष्ण बाणों से सबके प्रहारों को व्यर्थ करके सबको बाण मारे।

महाराज, आपके पुत्रों ने अभिमन्यु की यह अद्‌भुत फुर्ती देखकर चारों ओर से उन्हें ३० घेर लिया। शिशिर के अन्त में प्रज्वलित आग जैसे सूखी लकड़ियों के ढेर को जलाती है, वैसे ही अभिमन्यु श्रेष्ठ बाणों से आपके पक्ष के योद्धाओं को नष्ट करने लगे। उनकी फुर्ती देखकर आपके पौत्र लक्ष्मण शीघ्रता के साथ उनके सामने आये। महारथी अभिमन्यु ने क्रोध से विह्वल होकर छः बाण लक्ष्मण को और तीन बाण उनके सारथी को मारे। उधर लक्ष्मण ने भी पैने बाणों से अभिमन्यु का शरीर छिन्न-भिन्न करना शुरू किया। दोनों की फुर्ती अद्‌भुत थी। महारथी अभिमन्यु ने कई बाणों से लक्ष्मण के सारथी और रथ के चारों घोड़ों को मार डाला। लक्ष्मण ने अभिमन्यु को अपनी ओर आते देख क्रुद्ध होकर उस बिना घोड़े और सारथी के रथ पर से उनके ऊपर एक तीक्ष्ण शक्ति फेंकी। अभिमन्यु ने फुर्ती से उस घोररूपिणी नागिन सी शक्ति को सामने से आते देखकर तीक्ष्ण बाणों से काट डाला। तब कृपाचार्य ने जाकर लक्ष्मण को अपने रथ पर बिठा लिया। सारी सेना के सामने ही वे लक्ष्मण के प्राण बचाने के लिए वहाँ से हट गये। उस महाभयानक युद्ध में महाधनुर्द्धर कौरव और पाण्डव लोग ४० परस्पर प्रहार करने के लिए एक दूसरे की ओर दौड़ने लगे। इस समर में सृञ्जयों के केश खुल गये, कवच कट गये और रथ टूट गये। शस्त्र और धनुष न रहने पर वे कौरवसेना के साथ बाहुयुद्ध करने लगे। उधर महा पराक्रमी महाबाहु भीष्म क्रोधपूर्वक पाण्डवपक्ष की सेना को नष्ट करने लगे। उनके बाणों से असंख्य हाथी, हाथियों के सवार, घोड़े और सवार, रथ, रथों ४३ के सवार और पैदल इतने गिरे कि समरभूमि उनसे व्याप्त हो गई।

चौहत्तरवाँ अध्याय

पाँचवें दिन के युद्ध की समाप्ति

सञ्जय ने कहा—महाराज, युद्धप्रिय महावीर सात्यकि ने बोझ को सह सकनेवाला उत्तम धनुष खींचकर शत्रुपक्ष की सेना के ऊपर विषैले साँप-सदृश सुवर्णपुङ्खयुक्त बाण बरसाना शुरू किया। उस समय वे अर्जुन से सीखा हुआ प्रगाढ़, लघु, चित्र हस्तलाघव (हाथ की फुर्ती) दिखाने लगे। धनुष चढ़ाकर बाण छोड़ते हुए, फिर तरकस से बाण निकालकर धनुष पर चढ़ाते हुए और उन्हें छोड़कर शत्रुओं को मारते हुए सात्यकि, बरसते हुए मेघ के समान, देख पड़ते थे। सात्यकि को पराक्रमपूर्वक शत्रुसेना का नाश करते देखकर राजा दुर्योधन ने उनका सामना करने के लिए दस हज़ार रथी योद्धा भेजे। धनुर्द्धरों में श्रेष्ठ वीर्यशाली सात्यकि ने दिव्य अस्त्र से उन सब वीरों को मार डाला।

महावीर सात्यकि इस प्रकार दारुण कर्म करके धनुष हाथ में लिये भूरिश्रवा से युद्ध करने लगे। कुरुकुल की कीर्ति बढ़ानेवाले महाबाहु भूरिश्रवा ने सात्यकि के हाथों कौरव-सेना का संहार होते देखकर, क्रोध से आँखें लाल करके, उन पर आक्रमण किया। इन्द्रधनुष के समान बहुत बड़ा धनुष चढ़ाकर वे फुर्ती के साथ, विषैले साँप और वज्र के समान, असंख्य बाण सात्यकि के ऊपर बरसाने लगे। उन मृत्युतुल्य बाणों की चोट असह्य होने के कारण साथ की सेना सात्यकि को छोड़कर इधर-उधर भागने लगी। तब विचित्र कवच, शस्त्र और ध्वजा आदि से शोभित महाबली सात्यकि के दस महारथी पुत्र उन्हें असहाय देखकर, भूरिश्रवा के समीप आकर, कहने लगे—हे कौरव! आओ, हममें से एक के साथ या दसों के साथ युद्ध करो। आज या तो तुम हमको मारकर यश प्राप्त करोगे, और या हमी तुमको हराकर अपने पिताजी को प्रसन्न करेंगे। ११

सात्यकि के पुत्रों के ये वचन सुनकर प्रशंसनीय वीर भूरिश्रवा उनके सामने जाकर कहने लगे—हे वीरो, तुम्हारे वचन सुनकर मैं बहुत प्रसन्न हुआ। तुमको साधुवाद है। तुम सब मिलकर ही युद्ध करो। मैं तुम सबको युद्ध में मारूँगा। अब सात्यकि के दसों धनुर्द्धर-श्रेष्ठ फुर्तीले पुत्र प्रबल वेग से आक्रमण करके भूरिश्रवा पर बाण बरसाने लगे। महाराज, तीसरे पहर अकेले भूरिश्रवा उन दसों वीरों से घोर युद्ध करने लगे। वर्षाऋतु में मेघ जैसे पहाड़ पर पानी बरसाते हैं वैसे ही वे वीर योद्धा भूरिश्रवा पर चारों ओर से बाणों की वर्षा करने लगे। २० महारथी भूरिश्रवा ने भी उन वीरों के चलाये हुए, यमदण्ड और वज्र के समान, भयङ्कर बाणों को पास तक नहीं आने दिया, बीच में ही काट डाला। इसके बाद वे वीर भूरिश्रवा को चारों ओर से घेरकर मार डालने की चेष्टा करने लगे। महावीर भूरिश्रवा ने कुपित होकर विविध

बाणों से उनके धनुष काटकर उनके सिर काट डाले। वे भूरिश्रवा के बाणों से मरकर, वज्रपात से टूटे हुए वृक्षों की तरह, पृथ्वी पर गिर पड़े।

वृष्णिवंशी महावीर सात्यकि युद्ध में अपने महाबली पुत्रों का मरना देखकर क्रोध से गरजते हुए भूरिश्रवा के पास आये। अब उन दोनों वीरों ने परस्पर आक्रमण करके घोर युद्ध किया। दोनों के रथ चूर्ण हो गये, घोड़े और सारथी नष्ट हो गये। तब वे तीक्ष्ण तलवार और ढाल लेकर पृथ्वी पर कूद पड़े और एक दूसरे पर आक्रमण करने लगे। उस समय युद्ध-भूमि में दोनों की अपूर्व शोभा हुई। इसी समय भीमपराक्रमी भीमसेन ने जल्दी से ढाल-तलवार हाथ में लिये हुए सात्यकि को अपने रथ पर चढ़ा लिया। उधर दुर्योधन ने भी शीघ्रता के साथ आकर सब योद्धाओं के सामने भूरिश्रवा को अपने रथ पर बिठा लिया।

३०

महाराज, पाण्डव लोग क्रोधपूर्वक आक्रमण करके महारथी भीष्म के साथ दारुण युद्ध करने लगे। क्रमशः भगवान् सूर्य का बिंब लाल हो उठा; क्योंकि सन्ध्याकाल निकट था। महावीर अर्जुन ने फुर्ती के साथ उतने ही समय में पचीस हज़ार रथियों का संहार कर डाला। दुर्योधन की आज्ञा से वे महारथी वीर, अर्जुन पर आक्रमण करके, उसी तरह नष्ट हो गये जिस तरह पतङ्ग आग में गिरकर भस्म हो जाते हैं। तब युद्धचतुर मत्स्य और केकयदेश के वीरों ने अभिमन्युसहित अर्जुन पर आक्रमण किया। इसी समय सूर्यदेव अस्ताचल पर पहुँच गये। अन्धकार होने के कारण सब सैनिक भ्रान्त होने लगे। सन्ध्याकाल देखकर भीष्म ने युद्ध रोकने की आज्ञा दी। कौरवों और पाण्डवों की सारी सेना और वाहन बहुत थक गये थे। सब लोग अपने-अपने डेरों को लौट चले।

३६ सृञ्जय, पाण्डव और कौरवगण अपनी-अपनी सेना के साथ डेरों पर आकर विश्राम करने लगे।

पचहत्तरवाँ अध्याय

क्रौञ्चव्यूह और मकरव्यूह की रचना

सञ्जय कहते हैं—महाराज, सबेरा होने पर विश्राम के बाद उठकर सुसज्जित होकर पाण्डव और कौरव फिर युद्धभूमि में उपस्थित हुए। चारों ओर शङ्ख, नगाड़े आदि का शब्द होने लगा। दोनों सेनाओं के उत्तम जुते हुए रथ, सजे हुए हाथी, सवारों सहित घोड़े और कवचधारी पैदल चारों ओर देख पड़ने लगे। उनका घोर कोलाहल दूर-दूर तक सुनाई पड़ने लगा।

तब राजा युधिष्ठिर ने धृष्टद्युम्न को, शत्रुपक्ष के लिए भयङ्कर, मकरव्यूह रचने की आज्ञा दी। आज्ञा पाकर रथी लोग मोर्चेबन्दी से खड़े होने लगे। महाराज द्रुपद और महावीर अर्जुन उस व्यूह के मस्तक भाग में स्थित हुए। महारथी नकुल और सहदेव उसके दोनों नेत्रों की जगह पर नियुक्त हुए। भीमसेन मुखभाग में स्थित हुए। अभिमन्यु, द्रौपदी के पाँचों पुत्र, राक्षस घटोत्कच, सात्यकि और धर्मराज गर्दन की जगह पर खड़े हुए। महाराज विराट और धृष्टद्युम्न असंख्य सेना साथ लेकर उसके पृष्ठभाग की रक्षा करने लगे। केकयदेश के पाँचों भाई राजकुमार वामभाग की ओर राजा धृष्टकेतु तथा वीर्यशाली चेकितान दक्षिण भाग की रक्षा करने लगे। महारथी श्रीमान् कुन्तिभोज और शतानीक बहुत सी सेना साथ लेकर १० उसके दोनों चरणों की रक्षा करने लगे। सोमकगण सहित वीर शिखण्डी और [नागकन्या से उत्पन्न] महाबली इरावान् उसके पुच्छभाग की रक्षा करने लगे। पाण्डवगण सूर्योदय के समय इस तरह मकराकार महाव्यूह रचकर फिर संग्राम के लिए कौरवों के आगे आये। वह चतुरङ्गिणी सेना असंख्य हाथी, घोड़े, रथ, पैदल, ऊँची फहराती हुई ध्वजा, छत्र, तीक्ष्ण उज्ज्वल अस्त्र-शस्त्र आदि से बहुत शोभा को प्राप्त हुई।

राजन्, महावीर भीष्म ने पाण्डव-सेना की व्यूह-रचना देखकर कौरव-सेना में क्रौञ्चव्यूह की रचना की। श्रेष्ठ धनुर्द्धर द्रोणाचार्य उस व्यूह के मुखभाग की रक्षा करने लगे। अश्वत्थामा और कृपाचार्य दोनों नेत्रों की जगह स्थित हुए। काम्बोज, वाह्लीकगण और कृतवर्मा उसके मस्तकस्थान में नियुक्त हुए। शूरसेन और असंख्य शूर राजाओं के साथ महाराज दुर्योधन उसकी गर्दन की जगह स्थित हुए। प्राग्ज्योतिषपुर के राजा भगदत्त, मद्रराज शल्य और सिन्धुदेश के राजा जयद्रथ, सौवीर और केकयदेश की असंख्य सेना साथ लेकर, उसके वक्षःस्थल की रक्षा करने लगे। राजा सुशर्मा अपनी सेना साथ लेकर वामपक्ष की रक्षा करने लगे। तुषार, यवन, शक और चूचुपगण दक्षिणपक्ष की रक्षा करने लगे। श्रुतायु, शतायु २० और भूरिश्रवा एक दूसरे की सहायता के लिए जाँघों की जगह स्थित हुए।

इसके बाद कौरव और पाण्डव परस्पर युद्ध करने लगे। दोनों ओर के वीर प्राणों का मोह छोड़कर भिड़ गये। उस संकुल युद्ध में हाथियों के सवार रथों के ऊपर, रथी लोग

हाथियों के ऊपर, घुड़सवार घुड़सवारों पर, घुड़सवार लोग रथों-घोड़ों और हाथियों के ऊपर, रथी लोग हाथियों के सवारों पर और हाथियों के सवार घुड़सवारों के ऊपर आक्रमण करके प्रहार करने लगे। पैदल, रथी और घुड़सवार परस्पर घोर आक्रमण करने लगे। भीमसेन, अर्जुन, नकुल, सहदेव और अन्य महारथी वीर राजाओं से सुरक्षित पाण्डव-सेना नक्षत्रमण्डली-मण्डित रात्रि के समान शोभित हुई। महाराज! आपके पक्ष की सेना भी भीष्म, द्रोण, कृपाचार्य, शल्य और दुर्योधन आदि अनेक वीरों के द्वारा सुरक्षित होकर ग्रहगणशोभित आकाश-मण्डल के समान जान पड़ती थी। इसके बाद वेगशाली महारथ पर स्थित महापराक्रमी भीमसेन ने युद्ध-भूमि में आचार्य द्रोण को देखकर उनकी सेना पर आक्रमण किया। तब आचार्य द्रोण ने क्रोध करके भीमसेन के मर्मस्थलों में नव बाण मारे। ३० भीमसेन ने उस प्रहार से विह्वल और क्रुद्ध होकर उनके सारथी को मार डाला। अब महावीर द्रोणाचार्य खुद घोड़ों की रास पकड़कर रथ चलाते हुए, आग जैसे रुई को जलाती है वैसे, पाण्डवों की सेना को भस्म करने लगे। राजन्, इस तरह भीष्म और द्रोण के प्रहारों से पीड़ित और उद्विग्न होकर सृञ्जय और केकयगण उनके सामने से भागने लगे। इसी प्रकार भीमसेन और अर्जुन के बाणों से पीड़ित आपकी सेना भी, मद पिये हुए वेश्या के समान, विमूढ़ हो गई। दोनों ओर की सेना मरकर नष्ट होने लगी। परस्पर भिड़ी हुई दोनों सेनाओं का घोर युद्ध देखकर हम लोग विस्मित हो गये। हे भारत, शस्त्र धारण किये कौरव और पाण्डव शत्रु-सेना का विनाश करते हुए भयानक संग्राम करने लगे। ३७

छिहत्तरवाँ अध्याय

धृतराष्ट्र का खिन्न होना

धृतराष्ट्र ने कहा—हे सञ्जय, हमारी सेना असंख्य है। व्यूह-रचना भी शास्त्रोक्त विधि के अनुसार की जाती है। हमारे योद्धा युद्ध में ढीठ, हम पर अनुरक्त, उत्साही, प्रसन्नचित्त,

मद्यपान आदि व्यसनों से अछूते और अनेक युद्धों में पराक्रम दिखा चुके हैं। हमारी सेना में कोई अत्यन्त वृद्ध, बालक, दुर्बल या बहुत मोटा नहीं है। सब सैनिक फुर्तीले, नम्र और लम्बे हैं; वे चौड़े छातीवाले हैं। उनकी भुजाएँ मोटी और दृढ़ हैं। हमारी सेना अपार है और शस्त्र तथा कवच आदि से सुसज्जित है। सब योद्धा खड्गयुद्ध, मल्लयुद्ध, गदायुद्ध और प्रास, ऋष्टि, तोमर, परिघ, भिन्दिपाल, शक्ति, मुशल आदि शस्त्रों के युद्ध में सुशिक्षित हैं। वे कम्पनयुद्ध, चापयुद्ध, कणपयुद्ध, चित्रयुद्ध, क्षेपणीययुद्ध और मुष्टियुद्ध आदि में सर्वथा समर्थ हैं। उनका निशाना नहीं चूकता। सब लोग सब तरह की कसरतों का और सब तरह की युद्धविद्या का प्रत्यक्ष अभ्यास किये हुए हैं। सब तरह के शस्त्र चलाना उन्हें अच्छी तरह मालूम है। वे हाथी आदि पर चढ़ने, उतरने, दूर पर कूदने, अच्छी तरह दृढ़ प्रहार और हमला करने तथा हटने आदि में निपुण हैं। हमने सबको हाथी, घोड़े, रथ आदि की सवारियों में बहुत बार परीक्षा लेकर अच्छे उचित वेतन पर नौकर रक्खा है। हमारी सेना में जो लोग रक्खे गये हैं वे गोष्ठी, उपकार, बन्धुओं की सिफ़ारिश, सम्बन्ध या सौहार्द आदि के कारण नहीं रक्खे गये हैं। सभी योद्धा कुलीन, आर्य, समृद्धिशाली, यशस्वी और मनस्वी हैं। उनके सम्बन्धी तथा भाई-बन्धु सदा संतुष्ट रक्खे जाते हैं और उनके भी उपकार करने में कमी नहीं होती। हमारी सेना जगत् में प्रसिद्ध है। अनेक बार जिनके काम देखे जा चुके हैं ऐसे मुख्य, लोकपाल-तुल्य, स्वजन हमारी सेना के सञ्चालक हैं। पृथ्वी भर में प्रसिद्ध, अपनी इच्छा से हमारे अनुगत, अनेक क्षत्रिय वीर अपनी सेना और अनुचर आदि के साथ हमारी सेना की रक्षा करते हैं। समुद्र जैसे अनेक नदियों से पूर्ण होता है, वैसे ही हमारी सेना में अनेक राजाओं की सेनाएँ आकर शामिल हुई हैं। हमारी सेना के हाथी, घोड़े आदि वाहन पक्ष-हीन होने पर भी पक्षियों के समान तेज़ हैं। हमारी सेना समुद्रतुल्य है। अनेक योद्धा उसमें जल की तरह भरे पड़े हैं। बहुतेरे वाहन उसमें लहरों के समान हैं। क्षेपणी, खड्ग, गदा, शक्ति, शर, प्रास आदि शस्त्र जलजीवों के समान हैं। ध्वजा, गहने, रत्नपट्ट आदि उसकी शोभा बढ़ा रहे हैं। दौड़ते हुए घोड़ों का वेग देखकर ऐसा जान पड़ता है कि वह सैन्यसागर हवा के वेग से क्षोभ को प्राप्त हो रहा है। उस अपार सेना में सिंहनाद, शङ्खनाद आदि का शब्द उसके गरजने का निर्घोष सा सुन पड़ता है। द्रोण, भीष्म, कृतवर्मा, कृपाचार्य, दुःशासन, जयद्रथ, भगदत्त, विकर्ण, अश्वत्थामा, शकुनि, बाह्लीक आदि अनेक लोकप्रसिद्ध पराक्रमी महारथी उस सेना की रक्षा कर रहे हैं। इतने पर भी जब वह सेना पाण्डवों के हाथ से मारी जा रही है तब मैं इसे अपने दुर्भाग्य अथवा दैव-कोप के सिवा और क्या कहूँ? मेरे पक्ष के समान सेना और युद्ध का उद्योग प्राचीन ऋषियों और मनुष्यों ने भी आज तक न देखा होगा। ऐसी भारी सशस्त्र सेना युद्ध में अनायास मारी जा रही है! यह भाग्य का ही दोष है! हे सञ्जय, मुझे यह सब विपरीत ही जान पड़ता

है। अहो, ऐसी दुर्जय सेना भी युद्ध में पाण्डवों को नहीं मार सकी! अवश्य ही पाण्डवों की ओर से देवता आकर लड़ रहे हैं और मेरी सेना को नष्ट कर रहे हैं। सञ्जय! महात्मा विदुर ने नित्य मुझसे हित की बातें कहीं, मुझे समझाया, परन्तु मेरे पुत्र मन्दमति दुर्योधन ने एक नहीं सुनी। महात्मा विदुर सर्वज्ञ हैं। उन्होंने इस विरोध का फल पहले ही दिव्य ज्ञान-शक्ति से देख लिया था। उन्होंने जो कुछ कहा था, वही हो रहा है; अथवा विधाता ने ही यह लिख रक्खा था। यह होनी ही थी। होनी को कौन टाल सकता है! विधाता २६ ने जो पहले लिख रक्खा है वह अवश्य होगा।

सतहत्तरवाँ अध्याय

भीमसेन और द्रोणाचार्य के पराक्रम का वर्णन

सञ्जय ने कहा—महाराज, आप अपने ही दोष से ऐसे दुःख और सङ्कट में पड़े हैं। आप धर्मसङ्कट की जिन बातों को जानते थे उनका ज्ञान दुर्योधन को नहीं था। इस कारण दुर्योधन की अपेक्षा आप ही इसमें अधिक दोषी हैं। पहले आपके ही दोष से जुए का खेल हुआ और आपके ही दोष से युद्ध हुआ। इसलिए अब अपनी भूल का फल भोगिए। लोग अपने किये का फल इस लोक या परलोक में अवश्य भोगते हैं। सो आपको यह फल ठीक ही मिला है। अब आप इस सङ्कट का, भीमसेन आदि से अपने पक्ष के युद्ध का, हाल सुनिए।

महापराक्रमी भीमसेन ने तीक्ष्ण बाणों से भीष्म के द्वारा सुरक्षित सेना के व्यूह को तोड़ डाला। उन्होंने उसके भीतर घुसकर दुःशासन, दुर्विषह, दुःसह, दुर्मद, जय, जयत्सेन, विकर्ण, चित्रसेन, सुदर्शन, चारुमित्र, सुवर्मा, दुष्कर्ण, कर्ण आदि दुर्योधन के भाइयों और बहुत से महारथियों को देखा। भीमसेन सिंहनाद करते हुए उनके पास पहुँचे। भीमसेन को देखकर दुःशासन आदि वीर आपस में कहने लगे कि भाइयो, इस

समय हम सब मिलकर भीमसेन को जीवित ही पकड़ लेंगे। दुर्योधन के भाइयों ने यह निश्चय करके भीमसेन को चारों ओर से घेर लिया। उस समय महावीर भीमसेन प्रलयकाल में क्रूर महाग्रहों से घिरे हुए सूर्य के समान जान पड़े। भीमसेन व्यूह के भीतर जा करके, देवासुर-संग्राम में दानवों के सामने महेन्द्र के समान, निर्भय भाव से खड़े हो गये। १०

अब शस्त्रों के युद्ध में निपुण हज़ारों रथी श्रेष्ठ अस्त्र-शस्त्र उठाकर भीमसेन को, चारों ओर से घेरकर, मारने को उद्यत हुए। भीमसेन भी आपके पुत्रों की कुछ परवा न करके कौरव-सेना के हाथियों, घोड़ों, रथों और उनके सवारों को मारने तथा तोड़ने लगे। भीमसेन उधर कौरव-सेना के प्रधान-प्रधान पुरुषों को मार रहे थे, इधर आपके पुत्र उन्हें घेरकर जीता ही पकड़ने की चेष्टा करने लगे। उनके इरादे को जानकर बली भीमसेन ने उनको मारने का विचार किया। तब वे रथ से उतरकर गदा हाथ में लेकर अकेले ही दुर्योधन की अपार सेना को चौपट करने लगे।

इस प्रकार जब महावीर भीमसेन कौरव-सेना में घुस गये तब धृष्टद्युम्न, द्रोणाचार्य से लड़ना छोड़कर, भीमसेन के पास पहुँचने की चेष्टा करने लगे। आपकी महती सेना को छिन्न-भिन्न करके राह साफ़ करते हुए धृष्टद्युम्न भीमसेन के ख़ाली रथ के पास जा पहुँचे। उदास और अचेत-से धृष्टद्युम्न की आँखों में आँसू भर आये। वे साँसें लेते हुए बेचैनी के साथ दुःखित भाव से सारथी से पूछने लगे—मेरे प्राणों से भी प्यारे भीमसेन कहाँ हैं? भीमसेन के सारथी विशोक ने हाथ जोड़कर धृष्टद्युम्न से कहा—महाबली भीमसेन मुझे यहाँ छोड़कर अकेले ही कौरव-सेना के भीतर घुस गये हैं। हे पुरुषसिंह, वे जाते समय मुझसे कह गये हैं कि हे सूत, 'कौरवगण मुझे मारने या पकड़ने को तैयार हैं। जब तक मैं उन्हें मारकर यहाँ लौट न आऊँ तब तक घोड़ों को रोककर तुम यहाँ ठहरो।' हे राजकुमार, वे मुझसे यों कहकर गदा लेकर शत्रुसेना में घुस पड़े। उन्हें देखकर शत्रुसेना प्रसन्नता से कोलाहल करने लगी। भयानक युद्ध करते हुए आपके सखा भीमसेन महाव्यूह को तोड़कर भीतर घुस गये हैं। २०

भीमसेन के सारथी विशोक के ये वचन सुनकर धृष्टद्युम्न ने फिर कहा—हे सूत! रण में भीमसेन को अकेले छोड़कर, पाण्डवों का स्नेह त्यागकर, मैं किसी तरह जीवित नहीं रह सकता। यदि मैं भीमसेन को यों शत्रुओं के बीच अकेला छोड़कर चला जाऊँगा तो सब क्षत्रिय मुझे क्या कहेंगे! जो व्यक्ति अपने सहायक को छोड़कर आप निर्विघ्न अपने घर चला जाता है उसका इन्द्र आदि देवता अनिष्ट करते हैं। भीमसेन मेरे सखा, सम्बन्धी और भक्त हैं। मैं भी शत्रुनाशन भीमसेन का अत्यन्त अनुगत भक्त हूँ। चाहे जो हो, मैं इस समय वहीं जाऊँगा जहाँ भीमसेन गये हैं। हे सूत, जैसे इन्द्र दानवों को मारते हैं वैसे ही मैं शत्रुओं को नष्ट करूँगा। ३०

महाराज, जिस राह से भीमसेन गदाप्रहार के द्वारा गजसेना को नष्ट करते हुए गये थे उसी राह से महावीर धृष्टद्युम्न शत्रुसेना में घुसकर भीमसेन के पास पहुँचे। वहाँ जाकर

उन्होंने देखा कि महावीर भीमसेन शत्रुसेना को और सब राजाओं को गदा के प्रहार से मार-मारकर वृक्षों की तरह गिरा रहे हैं। रथी, घुड़सवार, हाथियों के सवार, पैदल, घोड़े और हाथी सभी चित्रयुद्ध करनेवाले भीमसेन की गदा के भयङ्कर प्रहार से अत्यन्त पीड़ित होकर आर्त-शब्द कर रहे हैं। कौरवसेना में हाहाकार मच गया। उधर अस्त्रविद्याविशारद वीरगण भीमसेन को चारों ओर से घेरकर, निर्भय भाव से, उन पर बाण बरसा रहे थे।

इस प्रकार सारी सेना एकत्र होकर युद्धनिपुण भीमसेन के ऊपर हमला कर रही थी। यह देखकर महाबली धृष्टद्युम्न ने बाणों से क्षत-विक्षत, पैदल, अकेले, क्रोध-विष उगलते हुए, प्रलयकाल में दण्डपाणि यमराज के समान, गदा हाथ में लिये भीमसेन को आश्वास दिया। धृष्टद्युम्न ने पास जाकर भीमसेन को अपने रथ पर चढ़ा लिया और अच्छी तरह गले से लगा-कर उनके घावों की पीड़ा दूर की। उसी समय एकाएक राजा दुर्योधन ने वहाँ आकर अपने भाइयों से कहा—हे कौरवो, यह दुरात्मा धृष्टद्युम्न भीमसेन के पास सहायता करने को पहुँच गया है। आओ, हम सब बहुत सी सेना साथ लेकर इन दोनों को मारने का यत्न करें। ऐसा यत्न करना चाहिए जिसमें तुम्हारे दोनों शत्रु अपनी सेना की सहायता न पा सकें।

४०

राजन्! आपके पुत्रगण बड़े भाई की यह आज्ञा पाकर उसी समय, तनिक भी देर न करके, धृष्टद्युम्न को मारने के लिए, धनुष के शब्द से पृथ्वी को कँपाते हुए, प्रलयकाल के धूम-केतुओं के समान भयङ्कर वेग से भीमसेन और धृष्टद्युम्न के पास पहुँचे। मेघ जैसे पहाड़ पर जल बरसाते हैं, वैसे ही वे लोग धृष्टद्युम्न के ऊपर बाण बरसाने लगे। चित्रयुद्ध में निपुण महावीर धृष्टद्युम्न तीक्ष्ण बाणों से पीड़ित होने पर भी विचलित नहीं हुए। कौरवों को मारने के लिए उन्होंने सम्मोहन-अस्त्र का प्रयोग किया; और इन्द्र जैसे दानवों पर बाण-वर्षा करें वैसे ही वे बाण बरसाने लगे। धृष्टद्युम्न के सम्मोहन-अस्त्र के प्रभाव से आपके सब पुत्र कालग्रस्त पुरुष की तरह मोह के वश होकर अचेत हो गये। यह देखकर कौरव-सेना रथों, घोड़ों और हाथियों को लेकर इधर-उधर भागने लगी।

महाराज, उधर शस्त्रविशारद द्रोणाचार्य ने द्रुपद राजा को अत्यन्त दारुण तीन तीक्ष्ण बाण मारे। द्रोणाचार्य के बाणों से अत्यन्त पीड़ित होकर, पुराने वैर को याद कर, वे उनके सामने से हट गये। महाप्रतापी द्रोणाचार्य ने द्रुपद को परास्त देखकर अपना शङ्ख बजाया। उस शङ्ख-नाद को सुनकर सब सोमकगण बहुत ही डर गये। [श्रेष्ठ योद्धा भीमसेन अमृत-तुल्य जल पीकर, विश्राम करके, स्वस्थ हुए। वे फिर तैयार होकर धृष्टद्युम्न के पास युद्धभूमि में आये और शत्रुसेना को नष्ट करने लगे।] उधर द्रोणाचार्य ने जब सुना कि धृष्टद्युम्न ने सम्मो-हन-अस्त्र के द्वारा दुर्योधन आदि आपके पुत्रों को मोहित और अचेत कर दिया है, तब वे शीघ्रता के साथ उनके पास पहुँचे। वहाँ पहुँचकर द्रोणाचार्य ने देखा कि धृष्टद्युम्न और भीम-

५८

वे उनके सामने से हट गये। पृ० २०४८

सेन युद्धभूमि में सेना का संहार कर रहे हैं और आपके सब पुत्र मूर्च्छित हो रहे हैं। तब आचार्य ने प्रज्ञास्त्र का प्रयोग करके सम्मोहनास्त्र को शान्त कर दिया। अब दुर्योधन आदि महारथी फिर सचेत होकर जय की इच्छा से भीमसेन और धृष्टद्युम्न के साथ युद्ध करने लगे।

हे भारत! धर्मराज युधिष्ठिर ने अपने सैनिकों को बुलाकर कहा—हे वीरो, तुम लोग शीघ्र धृष्टद्युम्न और भीमसेन के पास जाओ। अभिमन्यु आदि बारह वीर रथी जाकर शीघ्र धृष्टद्युम्न और भीमसेन की ख़बर लावें। उनकी कुछ ख़बर न पाने से मेरा चित्त व्याकुल हो रहा है। धर्मराज की यह आज्ञा पाकर, अपने पौरुष का अभिमान रखनेवाले, वे सब योद्धा ठीक दोपहर के समय भीमसेन और धृष्टद्युम्न के पास चले। अभिमन्यु को आगे करके, बहुत सी सेना साथ लेकर, केकयराज, धृष्टकेतु और द्रौपदी के पाँचों पुत्र शत्रुसेना की ओर चले। सूचीव्यूह के आकार से सेना ले चलकर उन वीरों ने कौरवों की रथ-सेना को छिन्न-भिन्न करना शुरू किया। भीमसेन के भय से व्याकुल और धृष्टद्युम्न के बाणों से पीड़ित आपकी सेना अभिमन्यु आदि महारथियों की राह को नहीं रोक सकी। नशा पिये हुए बेहोश स्त्री की तरह कुरुपक्ष के सैनिक राह में खड़े थे। सुवर्णमण्डित ध्वजाओं से शोभायमान ६१ रथों पर सवार महाधनुर्द्धर अभिमन्यु आदि वीरगण, शत्रुसेना को नष्ट करते हुए, भीमसेन और धृष्टद्युम्न की ओर शीघ्रता से बढ़ने लगे। अभिमन्यु आदि वीरों को आते देखकर भीमसेन और धृष्टद्युम्न भी बहुत प्रसन्न हुए।

धृष्टद्युम्न ने जब द्रोणाचार्य को आते देखा तब आपके पुत्रों को मारने की इच्छा छोड़ दी। इसके बाद भीमसेन को शीघ्र केकयराज के रथ पर बिठाकर वे अपने गुरु, धनुर्विद्या-विशारद, द्रोणाचार्य से लड़ने चले। प्रतापी द्रोणाचार्य ने धृष्टद्युम्न को क्रोध से व्याकुल होकर अपनी ओर आते देख एक बाण से उनका धनुष काट डाला। दुर्योधन के हित के लिए, प्रभु के ऋण से छुटकारा पाने के लिए, द्रोणाचार्यजी धृष्टद्युम्न के ऊपर सैकड़ों बाण बरसाने लगे। शत्रुवीरनाशन धृष्टद्युम्न ने दूसरा धनुष लेकर बीस तीक्ष्ण सुवर्णपुङ्ख बाण द्रोणाचार्य को

मारे। द्रोणाचार्य ने फिर सेनापति धृष्टद्युम्न का धनुष काट डाला। इसके बाद चार बाण मारकर उन्होंने धृष्टद्युम्न के रथ के चारों घोड़ों को मार डाला। साथ ही एक भल्ल
७० बाण से धृष्टद्युम्न के सारथी को भी मार गिराया। अब महावीर धृष्टद्युम्न फुर्ती के साथ उस रथ से उतरकर अभिमन्यु के उत्तम रथ पर सवार हो गये।

हे कौरव, उस समय द्रोणाचार्य के विकट बाणों के प्रहार से पाण्डव-सेना भाग खड़ी हुई। भीमसेन, धृष्टद्युम्न आदि देखते रहे; किन्तु सैनिकों को रोक नहीं सके। महातेजस्वी द्रोणाचार्य के तीक्ष्ण बाणों से मरती हुई वह सारी सेना, क्षोभ को प्राप्त समुद्र के समान, विचलित और भ्रान्त हो उठी। शत्रुसेना की यह दशा देखकर आपके पक्ष के लोग बहुत प्रसन्न हुए। आचार्य द्रोण को क्रुद्ध होकर शत्रुसेना का संहार करते देख कौरव-पक्ष के योद्धा
७५ लोग उन्हें साधुवाद देते हुए उनकी प्रशंसा करने लगे।

अठहत्तरवाँ अध्याय

युद्ध-वर्णन

सञ्जय कहते हैं—महाराज, मोह दूर होने पर राजा दुर्योधन सचेत होकर फिर भीमसेन पर बाण बरसाने लगे। आपके सब पुत्र मिलकर भीमसेन से युद्ध करने लगे। महाबली भीमसेन फिर अपने रथ पर बैठकर दुर्योधन के पास आये। शत्रुओं को मारनेवाला विचित्र दृढ़ धनुष लेकर, उस पर डोरी चढ़ाकर, भीमसेन वेग के साथ दुर्योधन के अङ्गों में तीक्ष्ण बाण मारने लगे। वीर दुर्योधन ने भी भीमसेन के मर्मस्थल में नाराच बाण मारा। दुर्योधन के प्रहार से अत्यन्त पीड़ित होने पर महाबाहु भीमसेन ने क्रोध से आँखें लाल करके दो बाण दुर्योधन की भुजाओं में और एक बाण छाती में मारा। भीम के भयानक बाणों की गहरी चोट खाकर भी दुर्योधन विचलित नहीं हुए, अचल पर्वत की तरह अपने स्थान पर स्थित रहे।

भीमसेन और दुर्योधन को इस तरह परस्पर प्रहार करते देखकर दुर्योधन के सब छोटे भाई, पहले की सलाह याद करके, भीमसेन को जीते ही पकड़ने के लिए चारों ओर से घेरने चले। वे लोग प्राणों की परवा छोड़कर चारों ओर से भीम पर बाण बरसाने लगे। उन वीरों को अपनी ओर आते देख भीमसेन भी, हाथियों के सामने गजराज की तरह, उन सबकी ओर
१० दौड़े। यशस्वी भीमसेन ने कुपित होकर आपके पुत्र चित्रसेन को एक दारुण नाराच बाण मारा। हे भारत, इसके बाद आपके अन्यान्य पुत्रों को भी अनेक प्रकार के सुवर्णपुङ्ख तीक्ष्ण बाण मारे। उस समय युधिष्ठिर के भेजे हुए अभिमन्यु आदि बारहों महारथी वहाँ पहुँच

अभिमन्यु उन्हें तीक्ष्ण बाणों के प्रहार से पीड़ित करने लगे। पृ० २०५१
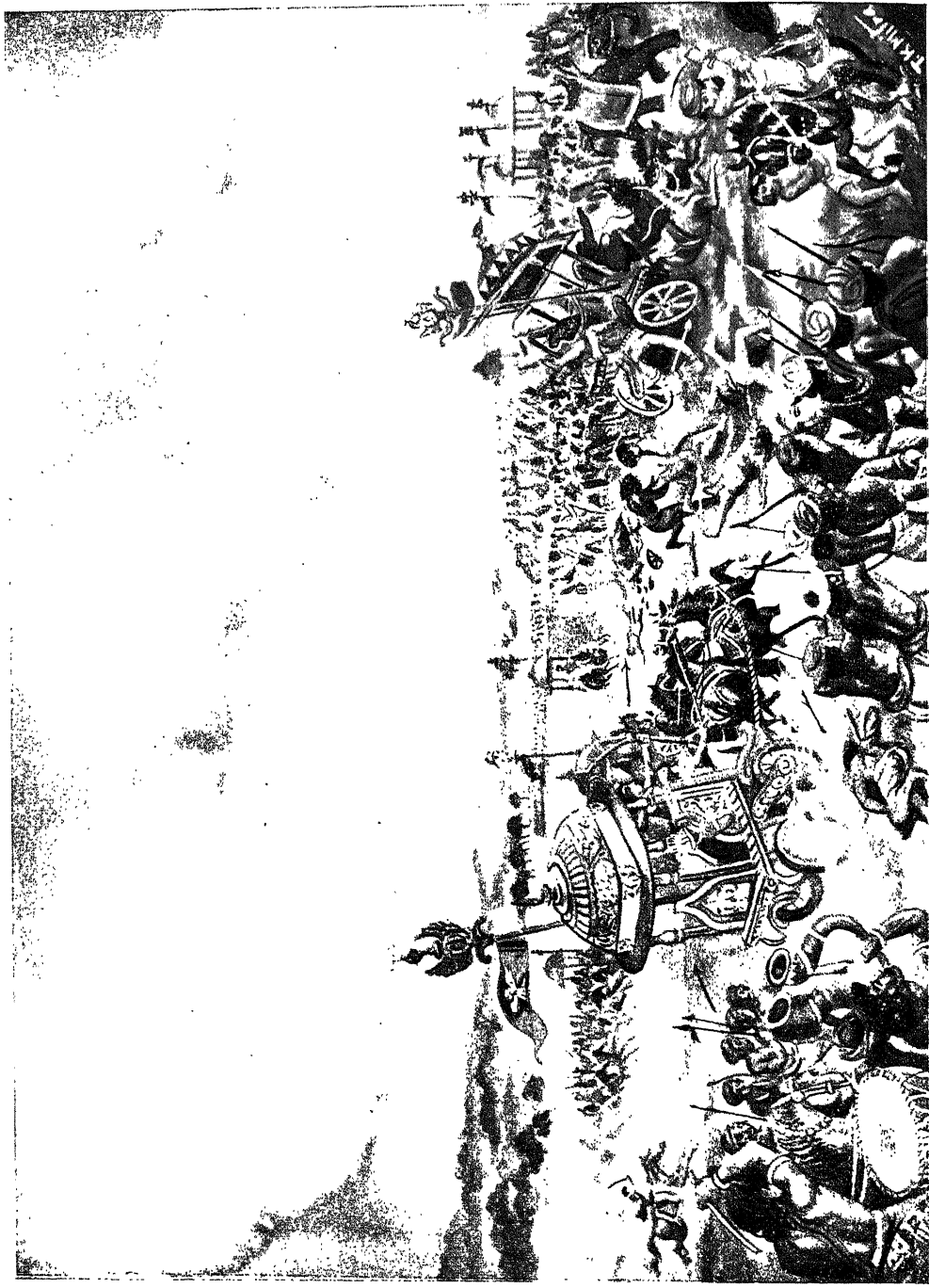
गये। भीमसेन को इस तरह दुर्योधन के भाइयों के बीच घिरते देखकर वे लोग आपके पुत्रों को रोकने और भीमसेन को सहायता पहुँचाने के लिए दौड़े।

राजन्! आपके पुत्रों ने रथों पर स्थित, सूर्य और अग्नि के तुल्य तेजस्वी, शूर, महाधनुर्द्धर, श्रीसम्पन्न, सुवर्ण के मुकुट धारण किये उन वीरों को देखकर भीमसेन को पकड़ने का इरादा छोड़ दिया। महाबली भीमसेन को छोड़कर आपके पुत्र भाग गये। भीमसेन के लिए यह असह्य हुआ कि आपके पुत्र जान लेकर भाग जा सके। भीमसेन पीछा करके तीक्ष्ण बाणों से उन्हें पीड़ित करने लगे। वीर धृष्टद्युम्न और भीमसेन के साथ महापराक्रमी अभिमन्यु आपके पुत्रों का पीछा करते हुए उन्हें तीक्ष्ण बाणों के प्रहार से पीड़ित करने लगे। दुर्योधन आदि वीरगण धनुष लेकर, फुर्तीले घोड़ों से युक्त रथों पर चढ़कर, उन महारथियों के पास पहुँचे। राजन्, जिस समय कौरवों और पाण्डवों से यह महाघोर युद्ध होने लगा, उस समय दिन का तीसरा पहर था। महावीर अभिमन्यु ने विकर्ण के चारों घोड़े मार डाले और पचीस क्षुद्रक बाणों से उन्हें घायल किया। विकर्ण पहले रथ को छोड़कर चित्रसेन के विचित्र रथ पर सवार हुए। एक ही रथ पर उन दोनों भाइयों को देखकर अभिमन्यु ने असंख्य बाणों से उन्हें ढक दिया। तब दुर्जय और विकर्ण ने लोहमय पाँच बाण अभिमन्यु की छाती में मारे, किन्तु महावीर अभिमन्यु सुमेरु पर्वत के समान तनिक भी व्यथित नहीं हुए।   २०

इधर केकय देश के पाँचों राजकुमारों से दुःशासन अद्भुत युद्ध करने लगे। द्रौपदी के पुत्रों ने क्रुद्ध होकर दुर्योधन को भयङ्कर बाण मारे। दुर्योधन भी तीक्ष्ण बाणों से उनमें से हर एक को भयानक रूप से घायल करने लगे। द्रौपदी के पुत्रों के बाणों से छिन्न-भिन्न और रुधिर से तर होकर दुर्योधन गेरू के झरनों से शोभित पर्वत के समान देख पड़ने लगे।
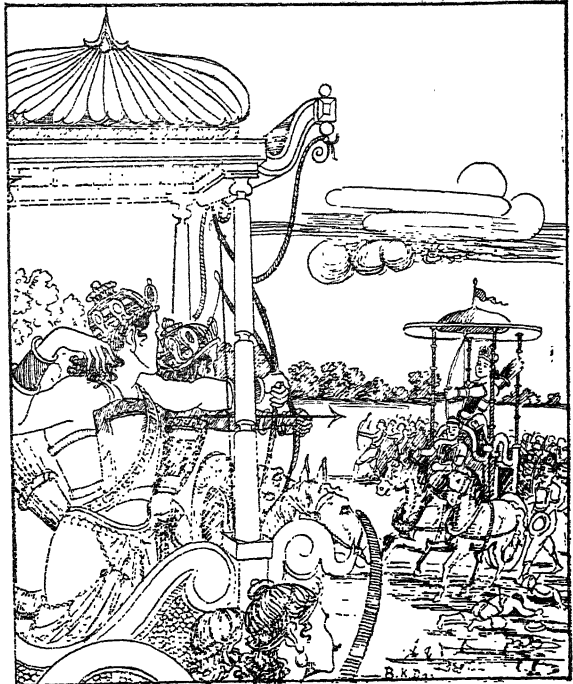
उधर प्रतापी भीष्म पितामह, पशुओं को पशुपाल की तरह, पाण्डवसेना को मारने और भगाने लगे। उस समय सेना के दक्षिण भाग में शत्रुमर्दन अर्जुन के गाण्डीव धनुष का शब्द

३० सुन पड़ने लगा। युद्धभूमि के बीच कौरवों और पाण्डवों की सेना में हज़ारों शूरवीर पुरुषों के कबन्ध उठ-उठकर युद्ध करने लगे। योद्धा लोग रथरूप नौकाओं पर चढ़कर उस अपार सैन्य-सागर के पार जाने की चेष्टा कर रहे थे। संग्राम में मारे गये मनुष्य, हाथी, घोड़े आदि का रक्त उसमें जल के समान भरा हुआ था। असंख्य बाण भँवर के समान देख पड़ते थे। घोड़ों की गति लहरों की समता कर रही थी। हाथियों के शरीर टापू ऐसे उतरा रहे थे। युद्धभूमि में हज़ारों वीरों के कटे हुए सिर, हाथ आदि अङ्ग और कवचशून्य शरीर इधर-उधर पड़े हुए थे। रक्त से तर हज़ारों मस्त हाथियों के शरीरों के ढेर लगे हुए थे, जिनसे समरभूमि पर्वतमयी सी जान पड़ती थी। यह अद्भुत दृश्य दिखाई पड़ रहा था कि दोनों ओर कोई भी सैनिक युद्ध से विमुख होना नहीं चाहता था। महाराज, आपके पक्ष के योद्धा लोग जय
३६ और यश पाने की इच्छा से, जीवन का मोह छोड़कर, पाण्डवों से युद्ध कर रहे थे।

उन्नासीवाँ अध्याय

छठे दिन के युद्ध की समाप्ति

सञ्जय ने कहा कि राजन्, सूर्यदेव का बिम्ब अस्ताचल के पास पहुँचकर लाल रङ्ग का हो चला। उसी समय राजा दुर्योधन ने घोर युद्ध करके भीमसेन को मार डालने के लिए भयानक आक्रमण किया। जन्मवैरी दुर्योधन को आते देखकर कुपित भीमसेन ने कहा—हे दुर्योधन, अगर तुम युद्ध छोड़कर भाग न जाओगे तो आज मैं तुमको जीता न छोड़ूँगा। मैं बहुत दिनों से जिस समय की राह देख रहा था, वही समय आ पहुँचा है। आज तुमको मार-कर मैं जननी कुन्ती के क्लेशों को, वनवास के क्लेशों को और द्रौपदी के मन की व्यथा को दूर करूँगा। हे गान्धारी के पुत्र! पहले ईर्ष्या के वश होकर तुमने पाण्डवों का अपमान किया था, उसी पाप का फल यह प्राणसङ्कट उपस्थित है। कर्ण और शकुनि की सलाह मानकर, पाण्डवों को तुच्छ समझकर, तुम मनमाना अन्याय कर चुके हो। श्रीकृष्ण जब सन्धि के लिए गये तब तुमने मोहवश होकर उनका अपमान किया और फिर अपने दूत उलूक के द्वारा अनेक कटु वचन कहला भेजे। जान बूझकर तुमने जो ये पाप किये हैं उन्हें शान्त करने के लिए मैं यहाँ तुमको, तुम्हारे बन्धु-बान्धवों को और अनुचरों को भी मारूँगा।

महाराज, अब भीमसेन ने प्रचण्ड धनुष चढ़ाया। उस धनुष को बारम्बार घुमाते हुए
१० भीमसेन ने वज्रतुल्य, चमकीले, अग्निशिखा के समान छब्बीस बाण दुर्योधन को मारे। फिर दो बाणों से दुर्योधन का धनुष काटकर दो बाण उनके सारथी को मारे। चार बाणों से बढ़िया घोड़ों को मार डाला, दो बाणों से ऊपर का छत्र काट डाला और छः बाणों से ऊँची ध्वजा

काट गिराई। अद्भुत फुर्ती के साथ ये काम करके भीमसेन ऊँचे स्वर से गरजने लगे। जैसे मेघ में बिजली चमकती है, वैसे ही दुर्योधन के विविध रत्न-भूषित रथ से सुन्दर ध्वजा गिर पड़ी। सब राजाओं ने आश्चर्य के साथ देखा कि कुरुराज की वह सूर्य के समान प्रभा-पूर्ण, मणिमय, समुज्ज्वल नागचिह्नयुक्त ध्वजा गिर पड़ी। अब भीमसेन ने हँसकर, गजराज के मस्तक पर अंकुश-प्रहार की तरह, कुरुराज को दस बाण मारे। तब महारथी सिन्धुराज जयद्रथ, प्रधान-प्रधान वीरों के साथ, आकर दुर्योधन के पार्श्वदेश की रक्षा करने लगे। इसी समय महारथी कृपाचार्य ने क्रोधी राजा दुर्योधन को, भीमसेन के बाणों से अत्यन्त आहत और पीड़ित देखकर, अपने रथ पर बिठा लिया। राजा दुर्योधन रथ के ऊपर अचेत-से होकर बैठ गये। सिन्धुराज जयद्रथ ने भीमसेन को जीतने के लिए हज़ारों रथों के बीच में घेर लिया। उधर धृष्टकेतु, २० पराक्रमी अभिमन्यु, कैकेयगण और द्रौपदी के पाँचों पुत्रों ने आपके पुत्रों से युद्ध शुरू किया। तब चित्रसेन, सुचित्र, चित्राङ्ग, चित्रदर्शन, चारुचित्र, सुचारु, नन्द और उपनन्द, ये आपके आठों यशस्वी पुत्र अभिमन्यु से लड़ने लगे। वीर अभिमन्यु ने विचित्र धनुष से निकले हुए वज्र या मृत्यु के समान सन्नतपर्व तीक्ष्ण पाँच-पाँच बाण हर एक योद्धा को मारे। वे लोग अभिमन्यु के इस पराक्रम को न सह सकने के कारण, पर्वत पर जैसे मेघ जल बरसाते हैं वैसे ही, अभिमन्यु के ऊपर तीक्ष्ण बाण बरसाने लगे। युद्धनिपुण अभिमन्यु उनके बाणप्रहार से अत्यन्त पीड़ित होकर बहुत क्रुद्ध हो उठे। देवासुर-संग्राम में इन्द्र ने जैसे असुरों को पीड़ित किया था वैसे ही वे उन लोगों को पीड़ित करने लगे। प्रधान रथी अभिमन्यु ने फुर्ती के साथ विकर्ण के ऊपर सर्प-सदृश चौदह भल्ल बाण चलाकर उनके रथ की ध्वजा काट डाली और सारथी तथा घोड़ों को भी मार गिराया। इसके बाद वे फिर विकर्ण पर पैने बाणों की वर्षा करने लगे। वे कंकपत्र-युक्त बाण क्रुद्ध नाग की तरह विकर्ण के शरीर को फोड़कर पृथ्वी में घुस गये। ३० वे सुवर्णपुंख बाण विकर्ण के रक्त में सनकर रक्त वमन करते हुए-से जान पड़ने लगे। विकर्ण के अन्य भाई उन्हें साङ्घातिक रूप से घायल देखकर, उनकी रक्षा करने के लिए, अभिमन्यु आदि बारहों महारथियों की ओर दौड़े। इस तरह उन लोगों का परस्पर घोर समर होने लगा। युद्धपरायण दोनों ओर के वीर एक दूसरे पर प्रहार करने लगे। दुर्मुख ने श्रुतकर्मा को सात बाण मारे। फिर एक बाण से रथ की ध्वजा काटकर सात बाणों से सारथी को मार डाला। इसके बाद सोने की जाली से ढके हुए, वायु के समान वेग से जानेवाले, घोड़ों को भी छः बाणों से मार डाला। महारथी श्रुतकर्मा ने बिना सारथी और बिना घोड़ों के रथ पर से उल्का के समान प्रज्वलित एक भयानक शक्ति दुर्मुख के ऊपर फेंकी। वह विकट शक्ति दुर्मुख के कवच को तोड़कर पृथ्वी में घुस गई। श्रुतकर्मा को रथ-हीन देखकर महाबली सुतसोम ने सब सेना के सामने अपने रथ पर बिठा लिया।

४० अब महावीर श्रुतकीर्ति आपके पुत्र यशस्वी जयत्सेन को मारने के लिए उनकी ओर चले। महावीर श्रुतकीर्ति धनुष चढ़ाकर उन पर बाण बरसाने लगे। इसी समय आपके पुत्र जयत्सेन ने तीक्ष्ण क्षुरप्र बाण से उनका धनुष काट डाला। शतानीक ने अपने भाई का धनुष कटते देखकर जयत्सेन पर आक्रमण किया। शतानीक ने दृढ़ धनुष चढ़ाकर जयत्सेन को दस बाण मारे। फिर महावीर शतानीक ने गजराज की तरह गरजकर सब प्रकार के आवरणों को तोड़नेवाले तीक्ष्ण बाण जयत्सेन की छाती में मारे। इस प्रकार नकुल के पुत्र शतानीक ने जब जयत्सेन को पीड़ित किया तब दुष्कर्ण ने क्रोध करके जयत्सेन के सामने ही शतानीक का बाणसहित धनुष काट डाला। अब महाबली शतानीक ने बोझ को सँभालनेवाला अन्य श्रेष्ठ धनुष लेकर दुष्कर्ण से "ठहरो, ठहरो" कहकर क्रुद्ध साँप के समान भयङ्कर बाण बरसाना शुरू किया। उन्होंने एक बाण से दुष्कर्ण का धनुष काटकर दो बाणों से सारथी को मार डाला। इसके बाद फुर्ती के साथ सात बाण दुष्कर्ण को मारे। इसी बीच में बारह तीक्ष्ण बाणों से उनके वायु-
५० गामी घोड़ों को मार डाला। शतानीक ने एक भल्ल बाण ऐसा मारा, जिससे दुष्कर्ण का हृदय फट गया। उस प्रहार से वज्राहत वृक्ष की तरह मरकर दुष्कर्ण पृथ्वी पर गिर पड़े।

राजन्! दुष्कर्ण की मृत्यु देखकर दुर्मुख, दुर्जय, दुर्मर्षण, शत्रुञ्जय और शत्रुसह, ये आपके पाँचों पुत्र शतानीक को मारने के लिए बाणों की वर्षा करते हुए उनकी ओर दौड़े। उधर केकय देश के राजकुमार पाँचों भाई उन पाँचों महावीरों से युद्ध करने दौड़े। यह देखकर अत्यन्त क्रुद्ध आपके पाँचों पुत्र विचित्र कवच धारणकर, धनुष हाथ में लेकर, विचित्र भूषणों से भूषित घोड़ों से युक्त और पताकाओं से अलंकृत रथों पर बैठकर, केकय देश के राजकुमारों पर आक्रमण करने चले। महागज जैसे महागजों पर आक्रमण करने के लिए दौड़ते हैं, वैसे ही आपके पाँचों राजकुमार चले। सिंह जैसे वन में घुसते हैं वैसे ही वे लोग शत्रुसेना के भीतर घुसे। दोनों ओर के सैनिक यमराज की नगरी को मृतकों से परिपूर्ण करनेवाला घोर युद्ध करने लगे। वीर योद्धा एक दूसरे को मारने और प्रहार करने लगे। रथों से रथों की, हाथियों से हाथियों की और घोड़ों से घोड़ों की मुठभेड़ होने लगी। उसी समय सूर्यनारायण अस्ताचल पर पहुँच
६० गये। रथी और घुड़सवार लोग कट-कटकर गिर रहे थे। तब पितामह भीष्म ने क्रोध से अधीर होकर तीक्ष्ण बाणों से केकय और पाञ्चाल देश की सेना को मारकर अपनी सेना को लौटा लिया। सब लोग अपने शिविरों को लौट चले। इधर धृष्टद्युम्न और भीमसेन भी कौरवों की सेना को नष्ट करके युधिष्ठिर के पास पहुँचे। धर्मराज युधिष्ठिर भी धृष्टद्युम्न और
६४ भीमसेन से मिलकर, प्रेमपूर्वक उनका मस्तक सूँघकर, अपने शिविर को लौट चले।

———

अस्सी अध्याय

भीष्म और दुर्योधन का संवाद

सञ्जय ने कहा—राजन्, रक्त से भीगे हुए क्षत्रियगण अपने शिविरों को गये। परस्पर द्रोह रखनेवाले कौरवों और पाण्डवों ने रात को विश्राम किया। सबेरा होने पर परस्पर यथोचित पूजा और सत्कार करके सबने फिर कवच आदि पहनकर युद्ध की तैयारी की। महाराज, आपके पुत्र दुर्योधन के शरीर में अनेक घाव थे और उनसे निकला हुआ रक्त शरीर में लाल चन्दन सा शोभित हो रहा था। चिन्ता से व्याकुल दुर्योधन ने भीष्म पितामह के पास आकर कहा—पाण्डव पक्ष के योद्धा लोगों ने और पाण्डवों ने हमारी भयानक, रौद्र, व्यूह-रचना से सुरक्षित, अनेक ध्वजाओं से शोभित सेना को छिन्न-भिन्न, पीड़ित, निहत और मोहित करके भारी कीर्ति प्राप्त की है। हमारे दुर्भेद्य, मृत्युद्वार-तुल्य मकरव्यूह में घुसकर भीमसेन ने यमदण्ड-सदृश घोर बाणों से मुझे अधमरा कर दिया है। भीमसेन को कुपित देखकर डर के मारे मैं मूर्च्छित सा हो रहा हूँ। मुझे शान्ति नहीं मिलती। हे सत्यसन्ध, मैं आपके प्रसाद से पाण्डवों को मारकर विजय प्राप्त करना चाहता हूँ।

शस्त्र-धारियों में श्रेष्ठ, अविचलित, मनस्वी भीष्म पितामह दुर्योधन को कुपित और दीन देखकर मुसकाते हुए कहने लगे—राजन्! मैं शत्रुसेना में प्रवेश करके बड़े यत्न के साथ, यथाशक्ति पराक्रम करके, तुमको विजय और सुख का भागी बनाना चाहता हूँ। मैं तुम्हारे लिए पराक्रम करने में तनिक भी कसर नहीं रखता; किन्तु ये रौद्ररूप, यशस्वी, अस्त्र-निपुण, महाशूर अनेक महारथी राजा समर में पाण्डवों की सहायता कर रहे हैं। वे युद्ध में न थकनेवाले वीर तुम्हारी सेना के ऊपर क्रोध का विष उगलते हैं। तुमने उनसे वैर बढ़ा रक्खा है। उन वीर्यशाली वीरों को समर में इस समय कौन एकाएक जीत सकता है? परन्तु हे वीर, मैं जीवन का मोह

१० छोड़कर तुम्हारे हित के लिए पूरी चेष्टा के साथ युद्ध करूँगा। मैं अपने जीवन की रक्षा न करके तुम्हारे शत्रुओं से लड़ूँगा। तुम्हारे लिए मैं शत्रुसेना की कौन कहे, सम्पूर्ण देवताओं और दैत्यों को भस्म कर सकता हूँ। मैं पाण्डवों से घोर युद्ध करके तुम्हारा प्रिय करूँगा।

यह सुनकर दुर्योधन बहुत प्रसन्न हुए। उन्हें प्रतीति हो गई कि पितामह ने जो कुछ कहा है, वही करेंगे। अब उन्होंने सब राजाओं को और सारी सेना को युद्ध के लिए युद्धभूमि में चलने की आज्ञा दी। दुर्योधन की आज्ञा पाकर हज़ारों हाथी, घोड़े, रथ, पैदल और प्रसन्नचित्त सब राजा लोग शीघ्रतापूर्वक शिविरों से निकले। अनेक शस्त्रों से शोभित आपकी अपार चतुरङ्गिणी सेना युद्धभूमि में पहुँचकर बहुत ही शोभायमान हुई। शस्त्र-अस्त्र चलाने में चतुर वीर क्षत्रियों के द्वारा सञ्चालित आपकी सेना रथ, हाथी, घोड़े आदि के झुण्डों से शोभित हो रही थी। सेना के चलने से इतनी धूल उड़ी कि उससे सूर्य का प्रकाश छिप गया। रथों और हाथियों के ऊपर बड़े-बड़े झण्डे हवा से फहरा रहे थे। उस युद्धभूमि में, अनेक चिह्नों से युक्त, श्रेणीबद्ध हाथियों के झुण्ड चारों ओर आकाश में बिजलीसहित मेघों के समान शोभायमान हो रहे थे। सत्ययुग में देवता और दैत्य जब समुद्र को मथ रहे थे तब समुद्र में जैसा घोर गम्भीर शब्द हुआ था, वैसा ही शब्द वीरों के धनुष चढ़ाने पर सुनाई पड़ रहा था। उग्र हाथियों से युक्त, विविध रूपों और वर्णों से शोभित, क्रुद्ध, शत्रुसेना को मारनेवाली वह आपकी सेना उस
१९ समय प्रलयकाल के मेघों के समान जान पड़ने लगी।

इक्यासी अध्याय

द्वन्द्वयुद्ध। अर्जुन के पराक्रम का वर्णन

सञ्जय ने कहा कि महाराज, उस दिन चिन्ता में मग्न आपके पुत्र दुर्योधन से भीष्म ने ये उत्साह बढ़ानेवाले वचन कहे—राजन्! मेरी समझ में यह आता है कि मैं, द्रोण, शल्य, कृतवर्मा, अश्वत्थामा, विकर्ण, भगदत्त, शकुनि, विन्द, अनुविन्द, वाह्लीक देश के वीरों सहित वाह्लीक, सोमदत्त, जयद्रथ, त्रिगर्तराज, बलवान् और दुर्जय मगधनरेश, कोसलनरेश बृहद्बल, चित्रसेन, विविंशति, कृपाचार्य, अनेक देशों की सशस्त्र पैदल सेना, महाध्वजाओं से शोभित रथों के हज़ारों योद्धा, घोड़ों के सवार, हाथियों के सवार और तुम्हारे लिए युद्ध करने को आये अनेक देशों के असंख्य योद्धा अगर जीवन का मोह छोड़कर युद्ध करें तो वे देवताओं को भी हरा सकते हैं। राजन्, यह अवश्य है कि मुझे सदा तुम्हारे हित की ही बात कहनी चाहिए; पर सच तो यह है कि श्रीकृष्ण जिनके सहायक हैं उन इन्द्र के समान पराक्रमी पाण्डवों को देवताओं सहित इन्द्र भी युद्ध में नहीं जीत सकते; तो भी मैं सर्वथा तुम्हारा कहा करूँगा।

अत्यन्त क्रुद्ध होकर महावीर अर्जुन ने श्रीकृष्ण से कहा। पृ० २०५७
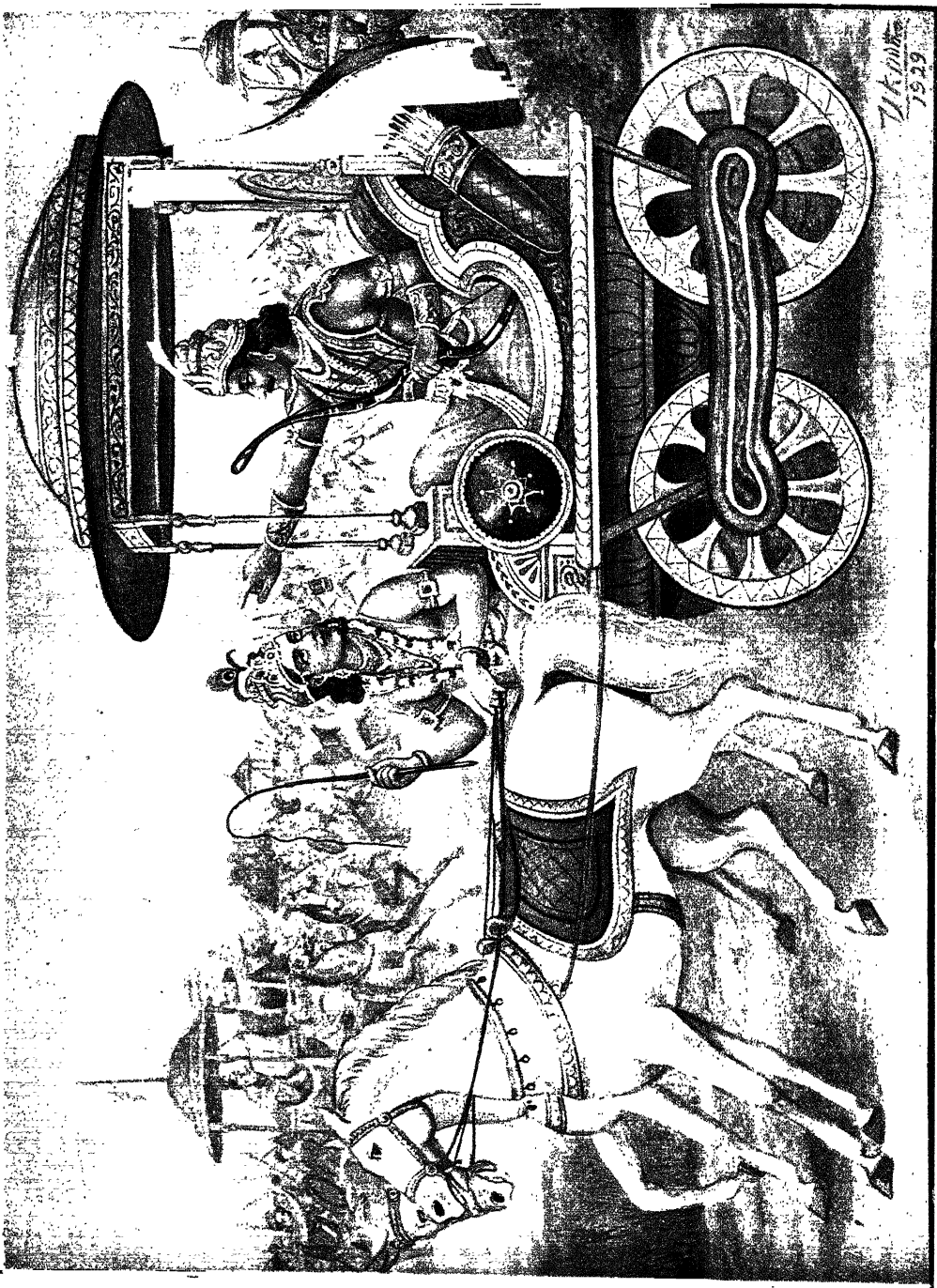
या तो पाण्डवों को मैं जीत लूँगा, अथवा पाण्डव ही मुझे जीत लेंगे। यही मेरी प्रतिज्ञा है। अब भीष्म ने वीर्य बढ़ानेवाली विशल्यकरणी नाम की श्रेष्ठ ओषधि दुर्योधन को दी। उसके सेवन से दुर्योधन के घाव अच्छे हो गये और पीड़ा जाती रही।

दूसरे दिन सबेरे व्यूह-रचना में निपुण भीष्म ने कई हज़ार रथों से घिरे हुए अस्त्र-शस्त्र-सम्पन्न मण्डल-व्यूह की रचना की। यह व्यूह हाथियों और घोड़ों से दुर्गम, असंख्य पैदल योद्धाओं से परिपूर्ण और ऋष्टि तोमर आदि शस्त्र धारण करनेवाले लोगों से चारों ओर सुरक्षित था। व्यूह इस क्रम से बनाया गया कि एक हाथी के साथ सात रथ थे, एक रथ के साथ सात घुड़सवार थे, एक घोड़े के साथ दस धनुर्द्धर वीर थे, और एक धनुर्द्धर के साथ सात पैदल थे। महावीर भीष्म इस तरह व्यूह बनाकर उसकी रक्षा करने लगे। दस हज़ार घोड़े, दस हज़ार हाथी, दस हज़ार रथ और चित्रसेन आदि पराक्रमी महारथी भी कवच आदि पहनकर भीष्म की रक्षा करने लगे। सभी महाबली राजा जब कवच आदि पहनकर तैयार हो गये तब राजा दुर्योधन कवच पहनकर रथ पर सवार हुए। उस समय वे स्वर्ग में स्थित इन्द्र के समान शोभायमान हुए। आपके पुत्र घोर सिंहनाद करने लगे। लगातार रथों की घरघराहट और बाजों का शब्द बढ़ने लगा। शत्रुओं के लिए अभेद्य, महावीर भीष्मरचित, कौरवों की सेना का मण्डलाकार व्यूह बहुत ही शोभित हुआ। उसका मुख पश्चिम की ओर था।

धर्मराज युधिष्ठिर ने मण्डल-व्यूह देखकर वज्र-व्यूह की रचना की। उनकी ओर के रथ, हाथी और घोड़े यथास्थान स्थित हो गये। योद्धा लोग सिंहनाद करने लगे। दोनों ओर के वीर पुरुष तरह-तरह के अस्त्र-शस्त्र लेकर युद्ध करने और व्यूह तोड़ने के सङ्कल्प से आगे बढ़े। महावीर द्रोण मत्स्यराज से, अश्वत्थामा शिखण्डी से, महाराज दुर्योधन द्रुपद से, नकुल और सहदेव मद्रराज शल्य से तथा अवन्ति देश के विन्द और अनुविन्द इरावान् से द्वन्द्वयुद्ध करने लगे। अन्य राजा लोग मिलकर महावीर अर्जुन से भिड़ गये। महाबली भीमसेन ने बड़े यत्न के साथ वेग से हार्दिक्य पर आक्रमण किया। अभिमन्यु ने चित्रसेन, विकर्ण और दुर्मर्षण पर आक्रमण किया। जैसे मदमत्त हाथी परस्पर भिड़ते हैं वैसे ही राक्षस घटोत्कच राजा भगदत्त से युद्ध करने लगा। उधर राक्षस अलम्बुष क्रोध से अधीर होकर वीरता का दावा रखनेवाले सात्यकि के सामने आया। भूरिश्रवा का धृष्टकेतु से, धर्मराज युधिष्ठिर का श्रुतायुष् से और चेकितान का कृपाचार्य से घोर युद्ध छिड़ गया। अन्यान्य वीरगण तत्परता के साथ भीमसेन के सामने उपस्थित हुए। उस समय हज़ारों क्षत्रिय राजा शक्ति, तोमर, नाराच, गदा, परिघ आदि शस्त्र लेकर चारों ओर से अर्जुन पर वार करने लगे। उनके बीच में घिर जाने पर, अत्यन्त क्रुद्ध होकर, महावीर अर्जुन ने श्रीकृष्ण से कहा—हे श्रीकृष्ण! देखो, महानुभाव भीष्म ने दुर्योधन के लिए व्यूह-रचना की है; बहुत से वीर समर के लिए सामने खड़े हैं। भाइयों सहित त्रिगर्त देश के

राजा भी युद्ध करने आये हैं। इस समय युद्ध की इच्छा से जो लोग मेरे सामने आये हैं, उनको मैं तुम्हारे सामने ही मार डालूँगा। अब धनुष की डोरी बजाकर वीर अर्जुन सब वीरों पर बाण-वर्षा करने लगे। वर्षाकाल में जैसे बादलों की जलधारा से तालाब भर जाते हैं, वैसे ही राजाओं के बाणजाल से श्रीकृष्ण और अर्जुन ढक गये। यह देखकर आपकी सेना अत्यन्त आनन्द कोलाहल करने लगी। ४० देवता, ऋषि, गन्धर्व और नाग-गण अत्यन्त विस्मित हुए।

तब अर्जुन ने क्रोध से अधीर होकर शत्रुसेना पर ऐन्द्र अस्त्र छोड़ा। हम लोग अर्जुन का अद्भुत पराक्रम देखने लगे। वे अपने अस्त्रों से शत्रुओं के अस्त्रों को रोककर सबको घायल करने लगे। कौरवों की सेना के हज़ारों राजाओं में ऐसा कोई न था जिसे दो, तीन या एक बाण से अर्जुन ने घायल न किया हो। उन्होंने अस्त्र के प्रभाव से सेनाभर के हाथियों, घोड़ों, रथों के सवारों और पैदलों को दो-दो तीन-तीन बाणों से घायल कर दिया। अर्जुन के बाणों से पीड़ित सब लोग रक्षा के लिए पितामह भीष्म के पास पहुँचे। अथाह सङ्कट-सागर में पड़े सैनिकों के लिए भीष्म पितामह उबारनेवाली नाव हुए। तूफ़ान उठने से महासागर की तरह, अर्जुन के प्रहारों से आप की सारी सेना क्षोभ को प्राप्त हो गई। ४६

बयासी अध्याय

द्रोणाचार्य के हाथों विराट के पुत्र शंख का मारा जाना

सञ्जय ने कहा—महाराज, इस प्रकार युद्ध आरम्भ होने के बाद त्रिगर्तराज सुशर्मा युद्ध छोड़कर हट गये और सारी सेना भाग चली। अर्जुन के बाणों से कौरव-सेना जब घबरा गई तब भीष्म पितामह शीघ्रता के साथ अर्जुन को रोकने के लिए चले। भीष्म को अर्जुन के सामने जाते देखकर अर्जुन के पराक्रम से विस्मित दुर्योधन शीघ्रता के साथ सब राजाओं के पास

जाकर, महाबली सुशर्मा को प्रसन्न और उत्साहित करते हुए, कहने लगे—हे महानुभाव, ये जीवन का मोह न रखनेवाले कुरुश्रेष्ठ भीष्म पितामह अर्जुन के साथ संग्राम करने को अपनी सेना साथ लिये शत्रुसेना में जा रहे हैं। तुम लोग यत्नपूर्वक इनकी रक्षा करो। राजा लोग और उनकी सेना के योद्धा 'जो आज्ञा' कहकर पितामह भीष्म के पीछे-पीछे चले।
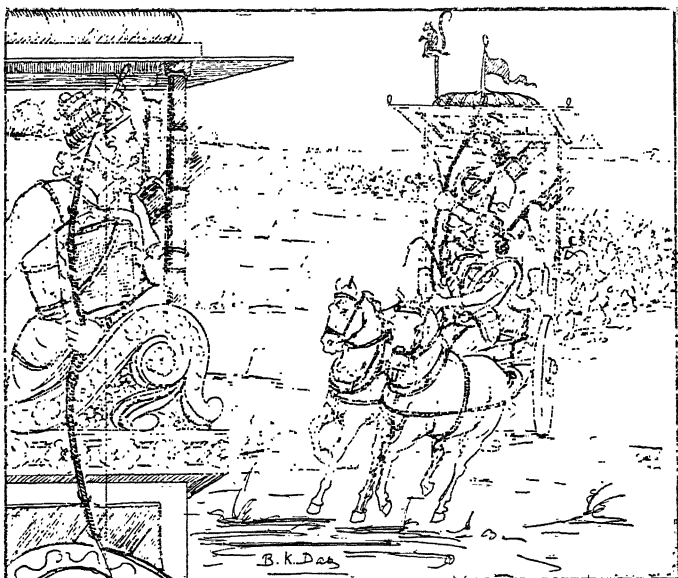
अर्जुन को आते देखकर पितामह उनके सामने आये। सफ़ेद घोड़ों से शोभित, वानर-चिह्नयुक्त ध्वजा से अलङ्कृत और महामेघ के समान शब्द के साथ चलनेवाले रथ पर चढ़े अर्जुन को आते देखकर आपके पक्ष के सैनिकगण डर के मारे आर्तनाद करने लगे। दोपहर के सूर्य के समान तेजस्वी श्रीकृष्ण, घोड़ों की रास हाथ में लिये, रथ पर विराजमान थे। उनकी ओर कोई आँख उठाकर देख नहीं सकता था। वैसे ही सफ़ेद घोड़ोंवाले रथ पर, सफ़ेद धनुष धारण किये, आकाश में स्थित श्वेत शुक्र ग्रह के समान भीष्म पितामह की ओर पाण्डव लोग भी अच्छी तरह देख नहीं सकते थे। त्रिगर्तदेश के राजा, राजपुत्र, राजा के भाई और अन्य महारथी लोग भीष्म के चारों ओर रहकर उनकी रक्षा कर रहे थे। १०

द्रोणाचार्य ने एक विकट बाण विराट के हृदय में मारकर कई बाणों से उनका धनुष और ध्वजा काट डाली। विराट ने उसी दम वह कटा हुआ धनुष फेंककर और एक बहुत ही दृढ़ धनुष हाथ में लिया। उस पर ज्वलित-मुख सर्प के समान बहुत से बाण चढ़ाकर उन्होंने तीन बाण द्रोण को मारे, चार बाणों से उनके घोड़े मार डाले, एक बाण से उनकी ध्वजा काट डाली, एक बाण से उनका धनुष काट डाला और पाँच बाणों से उनके सारथी को मार गिराया। द्रोणाचार्य ने भी क्रोध से अधीर होकर आठ बाणों से उनके घोड़े और सारथी को मार डाला। तब विराट अपने रथ से उतरकर कुँअर शङ्ख के रथ पर चढ़ गये और अपने कुमार के साथ उन्होंने द्रोणाचार्य के ऊपर इतने बाण बरसाये कि वे प्रहार नहीं कर सके। द्रोणाचार्य ने क्रोध करके शङ्ख को एक कठिन बाण मारा। वह बाण शङ्ख का हृदय फाड़कर, रक्त पीकर, रुधिररञ्जित हो पृथ्वी में २०

घुस गया। द्रोण के बाण से पीड़ित राजकुमार शङ्ख पिता के सामने पृथ्वी पर गिर पड़े। उनके हाथ से धनुष-बाण छूटकर गिर गया। विराट ने जब अपने पुत्र की मृत्यु देखी, तब वे मुँह फैलाये हुए काल के समान द्रोणाचार्य को छोड़कर भयभीत हो युद्ध से हट गये।

अब महारथी द्रोणाचार्य पाण्डवपक्ष की सेना का, सैकड़ों-हज़ारों की संख्या में, संहार करने लगे। शिखण्डी ने अश्वत्थामा के पास जाकर उनकी भौंहों के बीच में तीन बाण मारे। मस्तक में लगे हुए तीन बाणों से अश्वत्थामा तीन उन्नत शिखरों से शोभित सुवर्णमय सुमेरु पर्वत के समान जान पड़ने लगे। उन्होंने क्रुद्ध होकर शिखण्डी के सारथी, ध्वजा और घोड़े आदि को कई बाणों से नष्ट कर दिया। अब शिखण्डी रथ से उतरकर तीक्ष्ण तलवार और ढाल लेकर क्रोध-
३० पूर्वक बाज़ पक्षी की तरह झपटते हुए शत्रुसेना को नष्ट करने लगे। अश्वत्थामा को उन पर प्रहार करने का अवकाश ही न मिला। यह सबको बड़े आश्चर्य की बात जान पड़ी। इसके बाद वे क्रोध से अधीर होकर शिखण्डी के ऊपर हज़ारों बाण बरसाने लगे। बलशाली शिखण्डी ने तीक्ष्ण तलवार से उन दारुण बाणों को टुकड़े-टुकड़े कर डाला। तब अश्वत्थामा ने फुर्ती दिखाकर कई बाणों से शतचन्द्र-शोभित ढाल-तलवार और कवच काटकर शिखण्डी के शरीर को छिन्न भिन्न करना शुरू किया। शिखण्डी ने वह चमकीला खण्डित खड्ग अश्वत्थामा पर खींच-कर मारा; परन्तु अश्वत्थामा ने उस प्रलयकाल के अग्नि के समान चमकते हुए खड्ग को तत्काल काट डाला। फिर फुर्ती से शिखण्डी को कई बाण मारे। उन बाणों से शिखण्डी का शरीर छिन्न-भिन्न हो गया; वे जल्दी से सात्यकि के रथ पर चले गये।

इसके बाद सात्यकि ने क्रोधान्ध होकर क्रूरकर्मा राक्षस अलम्बुष को बहुत ही पैने बाण मारे। राक्षस अलम्बुष ने एक अर्धचन्द्र बाण से सात्यकि का धनुष काटकर वैसे ही अनेक बाणों
४० से उनको पीड़ित किया। उसने राक्षसी माया का आश्रय लेकर बाणवर्षा से अँधेरा-सा कर दिया। उस समय वीर सात्यकि ने अद्भुत पराक्रम दिखाया। वे उस माया और बाणवर्षा से तनिक भी नहीं घबराये। यशस्वी सात्यकि ने अर्जुन से प्राप्त ऐन्द्र-अस्त्र छोड़ा; उस अस्त्र के प्रभाव से सब माया दूर हो गई। वर्षाकाल का बादल जैसे पहाड़ पर पानी बरसाता है, वैसे ही सात्यकि भी राक्षस अलम्बुष पर बाणों की वर्षा करने लगे। उनके प्रहार से व्याकुल और भीत होकर राक्षस अलम्बुष दूसरी जगह चला गया। इन्द्र के लिए भी दुर्जय उस राक्षस को हराकर वीर सात्यकि सिंह की तरह गरजने लगे। कुरुपक्ष के वीर बाण-वर्षा से पीड़ित और भीत होकर युद्धभूमि से भाग खड़े हुए।

इसी समय महाबली धृष्टद्युम्न ने राजा दुर्योधन को विकट बाणों से विह्वल कर दिया;
५० किन्तु दुर्योधन ने भी फुर्ती के साथ धृष्टद्युम्न के मर्मस्थलों में नब्बे बाण मारे। तब सेनापति धृष्टद्युम्न ने क्रुद्ध होकर दुर्योधन का धनुष काट डाला, चारों घोड़ों को मार गिराया और उन्हें

तीक्ष्ण सात बाणों से पीड़ित किया। राजा दुर्योधन रथ से उतरकर, खड्ग लेकर, पैदल ही धृष्ट-द्युम्न की ओर दौड़े। महाबली शकुनि ने शीघ्रता से आकर दुर्योधन को अपने रथ पर चढ़ा लिया। शत्रुदमन धृष्टद्युम्न राजा दुर्योधन को हराकर उनकी सेना को नष्ट करने लगे।

मेघ जैसे सूर्य पर आक्रमण करें वैसे ही कृतवर्मा ने भीमकर्मा भीम पर आक्रमण करके उन्हें बाणों से ढक दिया। भीमसेन भी क्रोधपूर्वक हँसते हुए कृतवर्मा पर बाण बरसाने लगे; किन्तु वे उससे विचलित नहीं हुए। वे तीक्ष्ण बाणों से भीमसेन को व्यथित करने लगे। भीमसेन ने उनके चारों घोड़े मारकर ध्वजा काट डाली, सारथी को मार डाला और उन्हें भी अनेक बाणों से घायल किया। इस प्रकार व्यथित और घायल कृतवर्मा दुर्योधन के सामने ही, ६० बिना घोड़ों के रथ से उतरकर, अपने साले वृषक के रथ पर चले गये। भीमसेन क्रोध करके कौरव-सेना के पीछे दौड़कर दण्डपाणि यमराज की तरह उसे नष्ट करने लगे। ६२

तिरासी अध्याय

द्वन्द्व-युद्ध का वर्णन

धृतराष्ट्र ने कहा—हे सञ्जय, मैंने तुम्हारे मुँह से अपने पक्ष के बहुत से वीरों के साथ पाण्डवपक्ष के वीरों के द्वन्द्वयुद्ध का हाल सुना। तुम तो नित्य पाण्डवों को ही प्रसन्न और विजयी बतलाते हो; मेरी ओर के किसी वीर की विजय-वार्ता, प्रसन्नता या प्रशंसा नहीं सुनाते। तुम जो युद्ध में मेरे पुत्रों और वीरों को सदा परास्त, उदास और पराक्रम-हीन बताते हो, सो इसका कारण दैव ही है, इसमें सन्देह नहीं।

सञ्जय ने कहा—राजन्, हमारे सभी योद्धा श्रेष्ठ हैं। वे यथाशक्ति समय-समय पर पौरुष दिखाने में कुछ कसर नहीं रखते। किन्तु जैसे खारी समुद्र से मिलने पर गङ्गा आदि महानदियों का मीठा जल खारी हो जाता है, वैसे ही हमारे पक्ष के वीरों का पराक्रम पाण्डवों के सामने निष्फल हो जाता है। आपके पक्ष के वीर भरसक दुष्कर कर्म करके जय की चेष्टा करते हैं, इसलिए आप उनको दोष न दीजिए। महाराज, आपके ही दोष से यह लोक-नाशक संग्राम छिड़ा है। आप अपने ही दोष पर इस तरह शोक न करें। पुण्यात्माओं के लोकों को पाने की इच्छा से क्षत्रियगण युद्ध में जीवन का मोह छोड़कर लड़ते हैं; नित्य स्वर्ग की इच्छा से शत्रुसेना में घुसकर वे आगे ही बढ़कर वार करते हैं। दिन के पूर्व १० भाग में देवासुर-संग्राम के समान जो भयानक युद्ध हुआ उसका ब्योरा आप मन लगाकर सुनिए। उस युद्ध में असंख्य योद्धा वीरगति को प्राप्त हुए।

राजन्, अवन्ती देश के राजा रणदुर्मद महाधनुर्धर विन्द और अनुविन्द इरावान् को देखकर उनके सामने आये। वे वीर घोर युद्ध करने लगे। इरावान् ने कुपित होकर उन देवरूपी दोनों भाइयों को तीक्ष्ण बाणों से घायल किया। चित्र-युद्ध में निपुण उन दोनों भाइयों ने भी इरावान् को अनेक बाण मारकर घायल कर डाला। शत्रु-वध की इच्छा से यत्नपूर्वक उन लोगों ने ऐसा युद्ध किया कि देखनेवाले दङ्ग रह गये। जो काम एक वीर करता था वही, उसके जवाब में, दूसरा भी करता था। किसी के पराक्रम में कुछ भी विशेषता नहीं देख पड़ती थी। युधामन्यु ने चार बाणों से अनुविन्द के
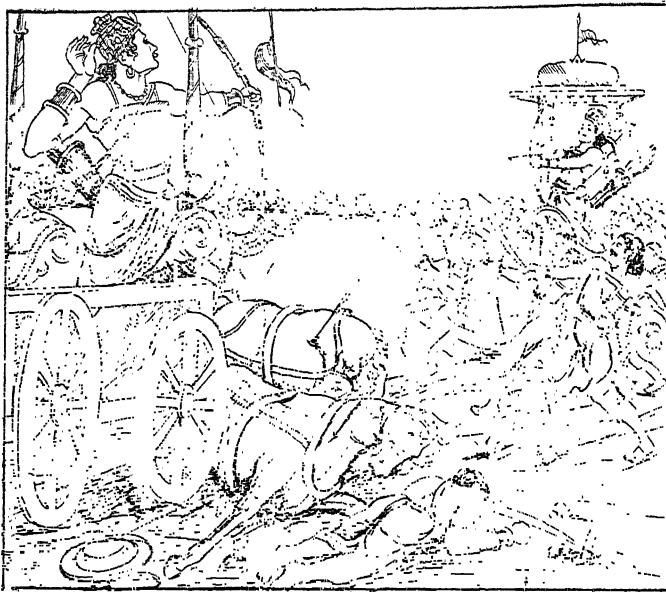
चारों घोड़े मारकर दो भल्ल बाणों से उनका ध्वज और धनुष काट डाला। यह अद्भुत कर्म जान पड़ा। तब अनुविन्द अपना रथ छोड़कर विन्द के रथ पर चले गये। उन्होंने दूसरा दृढ़ धनुष हाथ में लिया। एक ही रथ पर स्थित दोनों भाई वीर इरावान् के ऊपर शीघ्रगामी और तीक्ष्ण बाण बरसाने लगे। उनके चलाये हुए सुवर्णभूषित बाणों ने आकाश में जाकर सूर्यमण्डल को २० छिपा लिया। इरावान् ने भी कुपित होकर उन दोनों भाइयों पर बाण बरसाये और उनके सारथी को मार डाला। जब सारथी मर गया तब घोड़े रथ को लेकर इधर-उधर भागने लगे। उन दोनों भाइयों को विमुख करके इरावान् अपना पौरुष दिखाते हुए आपकी सेना को नष्ट करने लगे। युधामन्यु के प्रहारों से पीड़ित होकर दुर्योधन की महासेना, विष पिये हुए मनुष्य की तरह, उद्भ्रान्त होकर इधर-उधर फिरने लगी।

इधर महापराक्रमी घटोत्कच सूर्यवर्ण ध्वजा से शोभित रथ पर बैठकर भगदत्त से लड़ने के लिए दौड़ा। जैसे पहले तारकामय-युद्ध में वज्रपाणि इन्द्र ऐरावत पर चढ़कर शोभित हुए थे, वैसे ही भगदत्त गजराज पर चढ़कर घटोत्कच के सामने आये। समर देखने आये हुए देवताओं, गन्धर्वों और ऋषियों ने देखा कि घटोत्कच और भगदत्त में कोई किसी से कम पराक्रम नहीं प्रकट कर रहा था। जैसे इन्द्र ने दानवों को भयभीत कर दिया था वैसे ही राजा भगदत्त

भीमसेन गदाप्रहार के द्वारा गजसेना को नष्ट करते हुए गये थे। २०४७
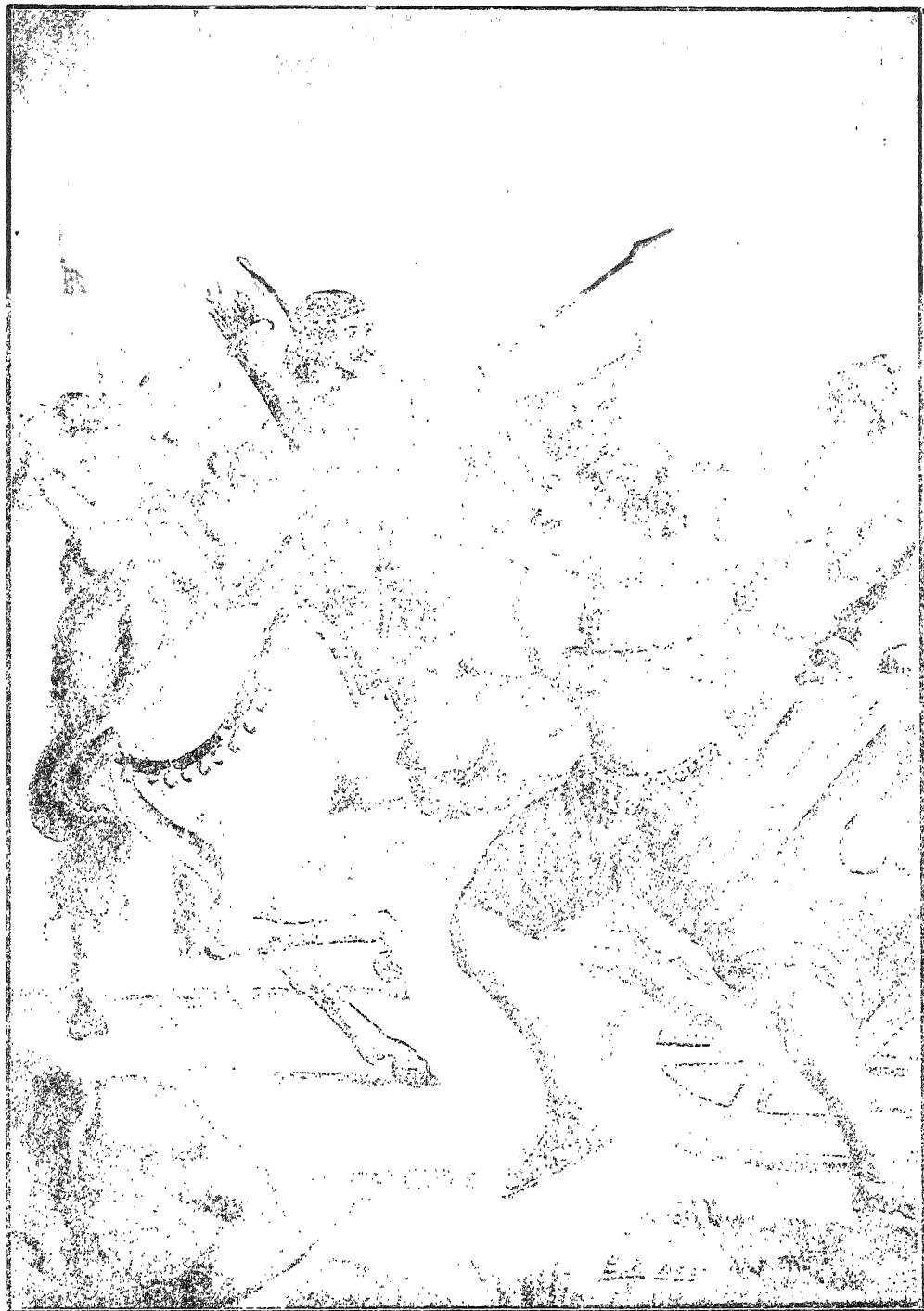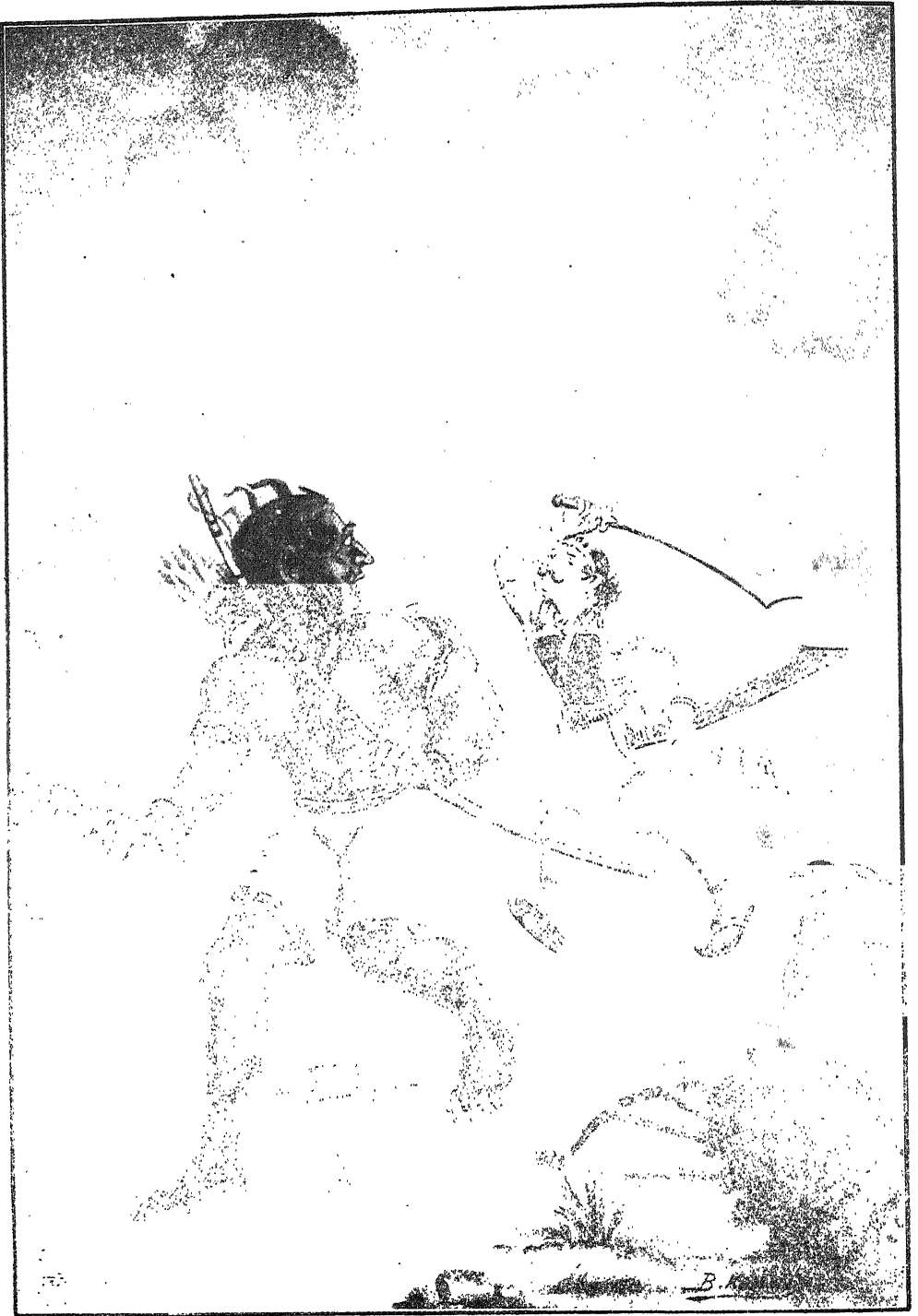
दानवराज नमुचि जैसे युद्ध से भाग खड़ा हुआ था वैसे ही शक्ति को व्यर्थ देखकर घटोत्कच डर के मारे भाग खड़ा हुआ। २०६२

ने पाण्डवसेना को भयभीत करके खदेड़ दिया। पाण्डवों की सेना इस तरह डरकर, अपनी रक्षा करनेवाला कोई न देख, भागने लगी। राजन्, उस समय हमने भगदत्त के सामने केवल घटोत्कच को ही देख पाया। बाक़ी महारथी उत्साहहीन होकर भाग खड़े हुए थे। पाण्डवों की सेना घटोत्कच को देखकर फिर लौट पड़ी। आपकी सेना में घोर कोलाहल मच गया। पर्वत के ऊपर बरस रहे मेघ की तरह घटोत्कच भगदत्त के ऊपर तीक्ष्ण बाण बरसाने लगा। भगदत्त ने घटोत्कच के बाणों को काटकर उसके मर्मस्थल में कई बाण मारे। जैसे तोड़े जाने पर भी पर्वत विचलित नहीं होता वैसे ही घटोत्कच अनेक बाणों की चोट खाकर भी विचलित नहीं हुआ। भगदत्त ने क्रुद्ध होकर घटोत्कच को चौदह तोमर मारे। उसने बात की बात में उन तोमरों को काट डाला और कङ्कपत्रयुक्त सत्तर बाण भगदत्त को मारे। उन्होंने हँसते-हँसते बाणों से घटोत्कच के चारों घोड़ों को मार डाला। बिना घोड़ों के रथ पर से घटोत्कच ने भगदत्त के हाथी को एक दारुण शक्ति मारी। भगदत्त ने उस सुवर्ण-दण्ड-शोभित शक्ति को आते देखकर उसके तीन टुकड़े कर डाले। वह शक्ति कट-कुटकर पृथ्वी पर गिर पड़ी। पहले दानवराज नमुचि जैसे युद्ध से भाग खड़ा हुआ था वैसे ही शक्ति को व्यर्थ देखकर घटोत्कच डर के मारे भाग खड़ा हुआ। दुर्जय महाबली घटोत्कच को हराकर, जङ्गली हाथी जैसे कमलवन को रौंदता फिरे वैसे ही, भगदत्त हाथी से और बाण-प्रहार से पाण्डवसेना को नष्ट करते हुए विचरने लगे।

३०

४०

महाराज, इधर मद्रराज शल्य अपने भानजे नकुल-सहदेव से युद्ध करने लगे। उन्होंने बाणवर्षा करके उनको ढक दिया। मामा शल्य को युद्ध करते देखकर सहदेव ने अपने बाणों से वैसे ही उन्हें छा लिया जैसे बादल सूर्य को छिपा लेते हैं। बाणजाल में छिपे हुए शल्य अपने भानजों का पराक्रम देखकर बहुत प्रसन्न हुए, और माता के सम्बन्ध का ख़याल करके नकुल-सहदेव को भी हर्ष हुआ। फिर महारथी शल्य ने हँसकर नकुल के रथ के चारों घोड़ों को मार डाला। महारथी नकुल उस बिना घोड़ों के रथ से कूदकर सहदेव के रथ पर चले गये। तब वे दोनों भाई एक ही रथ पर सवार होकर, धनुष चढ़ाकर, क्रोधपूर्वक शल्य के रथ पर असंख्य बाण बरसाने लगे। भानजों के बाणों से आच्छन्न होकर भी पुरुषसिंह शल्य पर्वत की तरह अटल खड़े रहे और हँस-हँसकर उन बाणों को काटने लगे। सहदेव ने क्रुद्ध होकर एक चमकीला उग्र बाण निकालकर शल्य की छाती में मारा। वह तीक्ष्ण बाण शल्य का हृदय फाड़कर पृथ्वीतल में घुस गया। उस प्रहार से बहुत घायल और व्यथित होने के कारण शल्य मूर्च्छित होकर गिर पड़े। उनका सारथी उनके रथ को समरभूमि से ले भागा। हे भारत, आपके पक्ष की सेना इस तरह शल्य को समर से हटते देखकर समझी कि अब शल्य जीवित नहीं हैं। महारथी नकुल-सहदेव इस तरह मामा को युद्ध में हराकर प्रसन्नता-

५०

पूर्वक शङ्खध्वनि और सिंहनाद करने लगे। राजन्, जैसे इन्द्र और उपेन्द्र ने दैत्य-सेना को
५७ भगा दिया था वैसे ही नकुल-सहदेव आपकी सेना को नष्ट करने लगे।

चौरासी अध्याय

युधिष्ठिर आदि के युद्ध का वर्णन

सञ्जय ने कहा—महाराज! सूर्यदेव जब आकाश के बीच में आये, दोपहरी हो गई, तब धर्मराज युधिष्ठिर श्रुतायुष् के पास अपना रथ ले गये। युधिष्ठिर ने श्रुतायुष् को नव बाण मारे। उन बाणों से बचकर श्रुतायुष् ने सात बाण युधिष्ठिर को मारे। वे बाण कवच तोड़कर युधिष्ठिर के शरीर में घुसकर उनका रक्त पीने लगे। ऐसा जान पड़ा, मानों वे उनके प्राणों को खोज रहे हैं। धर्मराज ने श्रुतायुष् के प्रहार से व्यथित होकर एक वराहकर्ण बाण उनके हृदय में मारा, और एक भल्ल बाण से उनकी ध्वजा काटकर गिरा दी। श्रुतायुष् ने फिर युधिष्ठिर को बहुत तीक्ष्ण सात बाण मारे। युगान्तकाल में अग्नि जैसे प्राणियों को जलाने के लिए प्रज्वलित हो उठता है वैसे ही राजा युधिष्ठिर क्रोध की आग से जल उठे। उनको कुपित देखकर प्रलय की आशङ्का से देवता, गन्धर्व, राक्षस आदि उद्विग्न हो उठे; सारा जगत् व्याकुल हो गया। सबने यही
१० समझा कि आज राजा युधिष्ठिर कुपित होकर तीनों लोकों को भस्म कर डालेंगे। सब लोकों की कल्याण-कामना और युधिष्ठिर के कोप की शान्ति के लिए देवता और ऋषि-मुनि स्वस्त्ययन-पाठ करने लगे। धार्मिक-श्रेष्ठ युधिष्ठिर प्रलयकाल के सूर्य की सी भयङ्कर मूर्ति धारण करके, क्रोध से आँखें लाल करके, ओंठ चबाने लगे। यह देखकर कौरवपक्षवालों ने जीवन की आशा छोड़ दी। किन्तु इसके उपरान्त धर्मराज युधिष्ठिर ने धैर्य का आश्रय लेकर क्रोध को शान्त किया। उन्होंने श्रुतायुष् का धनुष काट डाला, सारथी और घोड़ों को मार डाला और सब सेना के सामने उनकी छाती में एक नाराच बाण मारा। युधिष्ठिर का ऐसा पौरुष देखकर रथ से उतरकर श्रुतायुष् भाग खड़े हुए। उनकी यह दशा देखकर राजा दुर्योधन की सेना शीघ्रता के साथ इधर-उधर भागने लगी। मुँह फैलाये हुए काल के समान युधिष्ठिर को आते देखकर सेना भागी और वे चुन-चुनकर प्रधान वीरों को मारने लगे।

उधर यादवश्रेष्ठ महारथी चेकितान अपनी सेना-सहित कृपाचार्य से युद्ध करने लगे।
२० उन्होंने कृपाचार्य के ऊपर असंख्य बाण बरसाये। कृपाचार्य ने भी उन बाणों को काटकर अपने बाणों से चेकितान को घायल कर दिया। वीर कृपाचार्य ने एक भल्ल बाण से चेकितान का धनुष काट डाला, दूसरे से सारथी को मार डाला और अन्य बाणों से उनके घोड़ों को और

पार्श्वरक्षक तथा सारथी को मार डाला। तब चेकितान ने फुर्ती के साथ रथ पर से उतर-कर, वीर-घातिनी गदा लेकर, कृपाचार्य के घोड़ों सहित रथ और सारथी को चूर कर दिया। अब कृपाचार्य ने पृथ्वी पर खड़े-खड़े सोलह बाण चेकितान को मारे। वे बाण चेकितान के शरीर को भेदते हुए पृथ्वी में घुस गये। इन्द्र जैसे वृत्रासुर को मारने के लिए उद्यत हुए थे वैसे चेकितान ने क्रोधपूर्वक कृपाचार्य को मारने के लिए गदा चलाई। कृपाचार्य ने कई हज़ार बाण मारकर उस भारी गदा को निष्फल कर दिया। तब क्रोध करके चेकितान ने म्यान से तलवार निकाल ली, और वे कृपाचार्य की ओर झपटे। कृपाचार्य भी धनुष छोड़कर गदा हाथ में लेकर यत्न-पूर्वक बड़े वेग से चेकितान की ओर दौड़े। दोनों वीर परस्पर पैंतरे बदलकर खड्गयुद्ध करने लगे। अन्त को लड़ते-लड़ते थककर

प्रहारों से घायल और अचेत होकर, दोनों ही पृथ्वी पर गिर पड़े। युद्धप्रिय भीमसेन अपने ३१ मित्र चेकितान की यह दशा देखकर सब सेना के आगे ही उन्हें अपने रथ पर उठा ले गये। उधर आपके साले शूर शकुनि ने भी श्रेष्ठ रथी कृपाचार्य को अपने रथ पर बिठा लिया।

अब महावीर धृष्टकेतु ने क्रुद्ध होकर भूरिश्रवा के हृदय में नब्बे उग्र बाण मारे। जैसे दो-पहर के समय सूर्य का मण्डल अपनी तेज़ किरणों से शोभा को प्राप्त होता है वैसे ही भूरिश्रवा की, धृष्टकेतु के बाण लगने से, अपूर्व शोभा हुई। इसके बाद बहुत से बाण बरसाकर उन्होंने धृष्टकेतु के सारथी और घोड़ों को मार डाला तथा रथ को तोड़ डाला। फिर असंख्य बाणों से उन्हें भी छिपा दिया। धृष्टकेतु वह रथ छोड़कर शतानीक के रथ पर सवार हुए। सोने का कवच पहने हुए रथी चित्रसेन, विकर्ण और दुर्मर्षण, अभिमन्यु से युद्ध करने लगे। जैसे शरीर में वात, पित्त ४० और कफ का परस्पर युद्ध हो वैसे ही ये तीनों वीर अभिमन्यु से लड़ने लगे। अभिमन्यु ने उनके रथ तो नष्ट कर दिये, किन्तु भीमसेन की प्रतिज्ञा का स्मरण करके उन्हें जान से नहीं मारा।

इसी समय अलौकिक तेजस्वी भीष्म पितामह, राजा दुर्योधन आदि सब वीरों की रक्षा के लिए, बालक अभिमन्यु से लड़ने चले। यह देखकर अर्जुन ने कहा—हे श्रीकृष्ण, जहाँ पर वे

बहुत से रथ हैं वहीं पर शीघ्र मेरा रथ ले चलो। वह देखो, युद्धचतुर सब वीर पुरुष मेरी सेना को मार रहे हैं। तब कृष्ण भगवान् सफ़ेद घोड़ों से शोभित रथ को उधर ही ले चले। क्रुद्ध होकर महावीर अर्जुन कौरवों का सामना करने पहुँच गये। उन्हें आते देखकर कौरव पक्ष के वीरगण घोर भयसूचक शब्द से चीत्कार करने लगे। भीष्म पितामह के बाहुबल से सुरक्षित राजाओं के पास पहुँचकर अर्जुन ने सुशर्मा से कहा—सुशर्मा, तुम मेरे पहले के शत्रु और इस ५० संग्राम में एक प्रधान योद्धा हो। आज तुम अपनी दुर्नीति का फल भोगोगे। मैं तुमको मृत पुरखों से मिलने के लिए यमराज के यहाँ भेज दूँगा। ये कठोर वचन सुनकर सुशर्मा ने कुछ उत्तर नहीं दिया। उन्होंने आगे-पीछे और आसपास स्थित राजमण्डली के साथ सम्मुख जाकर, धनुष चढ़ाकर, तीक्ष्ण बाणों से—मेघ से सूर्य के समान—अर्जुन को आच्छन्न कर ५५ दिया। इसी तरह कौरवों और पाण्डवों का परस्पर युद्ध होने लगा।

पचासी अध्याय

युद्ध का वर्णन

सञ्जय कहते हैं—राजन्, राजाओं के बाणों से अत्यन्त पीड़ित अर्जुन छेड़े हुए साँप की तरह लम्बी साँसें लेते हुए अद्भुत कर्म करने लगे। उन्होंने सभी महारथियों के बाण काटने के बाद बलपूर्वक सबके धनुष काट डाले। उन सबको एकदम नष्ट कर डालने के लिए एक साथ अर्जुन ने सबको बाण मारे। इससे उन सबके कवच कट गये, वे घायल हो गये और उन घावों से रक्त बहने लगा। अनेकों के सिर कट गये। उनकी लाशें पृथ्वी पर गिरने लगीं। राजकुमारों की मृत्यु देखकर सुशर्मा खुद अर्जुन के सामने पहुँचे। उनके पृष्ठरक्षक बत्तीस योद्धा अर्जुन के पास पहुँचकर, उन्हें घेरकर, धनुष चढ़ाकर पर्वत पर मेघों की जलवर्षा की तरह उन पर बाण बरसाने लगे। उन बाणों से व्यथा और क्षोभ को प्राप्त होकर क्रुद्ध अर्जुन ने तीक्ष्ण साठ बाणों से उन्हें मार डाला। प्रसन्नचित्त यशस्वी मनस्वी अर्जुन इस तरह सब रथियों को जीतकर और बहुत सी सेना को मारकर भीष्म को मारने के लिए शीघ्रता के साथ आगे बढ़े। त्रिगर्तराज सुशर्मा अपने भाइयों और भाई-बन्धुओं की मृत्यु देखकर, अपने साथी अन्य राजाओं को साथ लेकर, अर्जुन को मारने की इच्छा से उनकी ओर चले। सुशर्मा आदि को श्रेष्ठ अस्त्रधारी अर्जुन का पीछा करते देखकर उनके रथ की रक्षा के लिए शिखण्डी आदि वीरगण अस्त्र-शस्त्र लेकर चले। सुशर्मा आदि को, अपनी ओर आते देखकर, अर्जुन ने गाण्डीव धनुष चढ़ाकर तीक्ष्ण बाण बरसाकर भगा दिया। फिर वे भीष्म से लड़ने चले। राह में उन्हें रोकने के लिए दुर्योधन और ११ जयद्रथ आदि राजा आते देख पड़े। वीर अर्जुन दमभर बलपूर्वक उनसे युद्ध करके, उन्हें पीछे

छोड़कर, भीष्म के सामने जाने के लिए आगे बढ़े। उधर प्रबल राजा युधिष्ठिर भी कुपित होकर शल्य से लड़ना छोड़ नकुल, सहदेव और भीमसेन के साथ भीष्म से लड़ने के लिए आ गये। शल्य को मारना युधिष्ठिर के ही हिस्से में था, पर उस समय शल्य को छोड़कर वे अर्जुन की सहायता के लिए भीष्म के सामने आ गये। श्रेष्ठ महारथी पाँचों पाण्डव मिलकर एक साथ भीष्म से लड़ने आये; किन्तु चित्रयुद्ध में निपुण भीष्म तनिक भी व्यथित नहीं हुए।

इतने में सत्यसन्ध पराक्रमी राजा जयद्रथ ने वहाँ आकर, श्रेष्ठ धनुष से कई बाण चलाकर, सब पाण्डवों के धनुष काट डाले। क्रोध से अधीर वीर दुर्योधन ने अग्नि के समान बहुत से बाण युधिष्ठिर, भीमसेन, अर्जुन, नकुल, सहदेव और वासुदेव को मारे। दानव जैसे देवताओं के ऊपर प्रहार करें वैसे कृपाचार्य, शल्य, शल और चित्रसेन आदि ने भी श्रीकृष्ण और पाण्डवों को चारों ओर से तीक्ष्ण बाण मारे। पाण्डव और श्रीकृष्ण क्रोध से अधीर हो उठे। भीष्म ने शिखण्डी का धनुष काट डाला, इससे डरकर वे रणभूमि से हटने लगे। उस समय कुपित

होकर युधिष्ठिर ने शिखण्डी से कहा—हे वीर, तुम अपने पिता के आगे मुझसे यह प्रतिज्ञा कर चुके हो कि "मैं सूर्यवर्ण तीक्ष्ण बाणों से भीष्म पितामह को मारूँगा। यह मैं सत्य कहता हूँ।" २० फिर इस समय युद्ध में अपनी प्रतिज्ञा क्यों नहीं पूरी करते? देवव्रत को क्यों नहीं मारते? झूठी प्रतिज्ञा करनेवाले मत बनो। प्रतिज्ञा, धर्म, कुलकीर्ति और अपने यश की रक्षा करो। देखो, काल जैसे क्षण भर में जगत् का संहार करता है वैसे ही भयानक वेग से तीक्ष्ण बाण बरसाकर पितामह मेरी सेना का संहार कर रहे हैं। इस समय धनुष कट जाने पर समर से हटकर, भीष्म से हारकर, बन्धुओं और भाइयों को छोड़कर तुम कहाँ जा रहे हो? यह काम तुम्हारे योग्य नहीं है। हे द्रुपदपुत्र, तुम अनन्तपराक्रमी भीष्म का पराक्रम और अपनी सेना का भागना देखकर डर गये हो। तुम्हारा चेहरा उदास देख पड़ता है। घोर युद्ध छिड़ा हुआ है, अर्जुन कहीं पीछे हैं। ऐसे समय प्रसिद्ध वीर होकर तुम भीष्म से क्यों डर रहे हो?

धर्मराज के ऐसे रूखे और तिरस्कार-पूर्ण वचन सुनकर वीर शिखण्डी भीष्म-वध के लिए, पूरी शक्ति लगाकर, चेष्टा करने लगे। शिखण्डी बड़े वेग के साथ भीष्म पर आक्रमण करने के लिए आगे बढ़े। उधर शल्य ने दुर्जय अमोघ अस्त्र का प्रयोग करके उन्हें बीच में ही रोक लिया। प्रलयकाल की आग के समान प्रकाशपूर्ण अस्त्र को देखकर इन्द्रतुल्य पराक्रमी शिखण्डी तनिक भी विचलित नहीं हुए। शिखण्डी ने वहीं खड़े रहकर अनेक बाणों से उस अस्त्र को व्यर्थ कर दिया। उन्होंने शल्य के अस्त्र को व्यर्थ करने के लिए वारुण-अस्त्र का प्रयोग किया। आकाश में स्थित देवगण और पृथ्वी पर राजा लोग वह अस्त्र के द्वारा अस्त्र का रोका जाना देखने लगे। उधर पितामह भीष्म ने राजा युधिष्ठिर का धनुष और विचित्र ध्वजा ३० काटकर सिंहनाद किया। भीमसेन ने जब युधिष्ठिर को भयपीड़ित देखा तब वे धनुष-बाण छोड़कर, गदा हाथ में लेकर, पैदल ही जयद्रथ के ऊपर झपटे। गदा लिये भीमसेन को झपटकर आते देखकर जयद्रथ ने यमदण्ड-तुल्य तीक्ष्ण पाँच सौ बाण मारे। उन बाणों का कुछ ख़याल न करके कुपित भीमसेन ने जयद्रथ के बढ़िया घोड़ों को गदा से मार डाला। तब इन्द्रतुल्य राजकुमार चित्रसेन भीमसेन को मारने के लिए शस्त्र उठाकर वेग से दौड़े। भीमसेन भी एकाएक सिंहनाद करके गदा घुमाते हुए चित्रसेन पर झपटे। कौरवपक्ष के वीर उस यम-दण्डतुल्य गदा को देखकर उसके उग्र प्रहार से बचने के लिए, आपके पुत्र चित्रसेन को छोड़कर, भाग खड़े हुए। वह गदा गिरने के पहले ही चित्रसेन ढाल-तलवार लेकर, पर्वत-शिखर से कूदते हुए सिंह की तरह, निर्भय भाव से रथ से कूद पड़े। महाराज, दुर्योधन आदि वीरगण चित्रसेन की इस विचित्र चातुरी को देखकर बहुत प्रसन्न हुए। वे सिंहनाद करने और आपके पुत्र की शूरता को सराहने लगे। वह गदा उस विचित्र रथ पर गिरकर घोड़े, सारथी और रथ को चूर-चूर ४० करके, आकाश से गिरी हुई भारी उल्का की तरह, वेग से पृथ्वी में धँस गई।

छियासी अध्याय

सातवें दिन के युद्ध की समाप्ति

सञ्जय ने कहा—महाराज! आपके पुत्र विकर्ण ने मनस्वी चित्रसेन का रथ टूटा देखकर, शीघ्र वहाँ जाकर, उन्हें अपने रथ पर बिठा लिया। उस भयानक संग्राम में भीष्म शीघ्रता-पूर्वक युधिष्ठिर की ओर बढ़े। यह देखकर सृञ्जयगण और उनके वाहन हाथी, घोड़े आदि डर से काँप उठे। उन्होंने समझ लिया कि युधिष्ठिर मृत्यु के मुख में पड़ गये। तब नकुल और सहदेव के साथ स्वयं धर्मराज युधिष्ठिर महाधनुर्द्धर नरश्रेष्ठ भीष्म के सामने जाकर बाण

भीमसेन भी एकाएक सिंहनाद करके गदा घुमाते हुए चित्रसेन पर झपटे। पृ० २०६८

बरसाने लगे। उनके बाणजाल से भीष्म का रथ वैसे ही छिप गया जैसे घनघटा से सूर्य का बिम्ब छिप जाता है। भीष्म ने युधिष्ठिर आदि के उन असंख्य बाणों का कुछ ख़याल नहीं किया। वे युधिष्ठिर आदि पर असंख्य बाण छोड़ने लगे। वे बाण आकाश में उड़ते हुए पक्षियों के झुण्डों की तरह जान पड़ते थे। भीष्म ने पल भर में युधिष्ठिर को बाणों से अदृश्य सा कर दिया।

तब राजा युधिष्ठिर ने क्रोध से अधीर होकर भीष्म को विषैले साँप के समान एक नाराच बाण मारा। महारथी भीष्म ने युधिष्ठिर के उस कालतुल्य बाण को राह में ही काट डाला; १० और उनके सुवर्णभूषणभूषित घोड़ों को भी मार डाला। अब धर्मात्मा राजा युधिष्ठिर फुर्ती से वह रथ छोड़कर नकुल के रथ पर चढ़ गये। शत्रुनाशन भीष्म क्रोध से विह्वल होकर, नकुल-सहदेव के आगे जाकर, उन पर बाणवर्षा करने लगे। नकुल और सहदेव को भीष्म के बाणों से अत्यन्त पीड़ित देखकर राजा युधिष्ठिर, पितामह के वध के लिए, अत्यन्त चिन्तित हो उठे। उन्होंने अपने पक्ष के मित्र राजाओं को आज्ञा दी कि सब लोग मिलकर पितामह को मार डालो।

यह आज्ञा पाकर सब राजाओं ने असंख्य रथों के द्वारा चारों ओर से भीष्म को घेर लिया। महावीर भीष्म अत्यन्त क्रुद्ध होकर, मण्डलाकार धनुष घुमाकर, बाण बरसाते और पाण्डवपक्ष के वीरों को मार-मारकर गिराते हुए विचरने लगे। उस समय पाण्डवसेना के वीर योद्धा लोग भीष्म को मृगों के बीच सिंह के समान देखकर डर से अचेत-से हो गये। मृगों को सिंह के समान पाण्डव-सेना को मारते और डराते हुए भीष्म पितामह सिंहनाद करने लगे। उनके तर्जन-गर्जन से शत्रुसेना भागने लगी। क्षत्रियों ने देखा कि सूखी घास के ढेर को या वन को हवा की सहायता से प्रचण्ड आग जैसे जलाती है वैसे ही भीष्म पितामह सेना को नष्ट करते हुए फिर रहे हैं। सुनिपुण पुरुष जैसे ताड़ के पके फलों को पेड़ से तोड़-तोड़कर गिराता है, वैसे ही भीष्म २० रथियों के सिरों को अपने बाणों से काट-काटकर गिरा रहे थे। भीष्म के बाणों से कटे वीरों के सिर पृथ्वी पर, शिलापात के समान, शब्द के साथ गिर रहे थे।

राजन्, इस तरह वह युद्ध क्रमशः अत्यन्त घोर हो उठा। सैनिक लोग इधर-उधर हट गये और व्यूह-रचना नष्ट हो गई। हर एक वीर दूसरे वीर को बुला-बुलाकर उससे युद्ध करने लगा। द्रुपद के पुत्र शिखण्डी भीष्म से "ठहरो-ठहरो" कहकर उनकी ओर दौड़े। महावीर भीष्म शिखण्डी के स्त्रीभाव का ख़याल करके उन्हें छोड़कर सृञ्जयगण की ओर युद्ध करने चले गये। सृञ्जयगण प्रसन्नतापूर्वक शङ्खनाद और सिंहनाद करने लगे। उस समय सूर्यदेव पश्चिम दिशा में पहुँच चुके थे। प्राणों की ममता छोड़कर कौरव और पाण्डव दारुण युद्ध करने लगे। महाबली धृष्टद्युम्न और पराक्रमी सात्यकि असंख्य तोमर, शक्ति, बाण आदि शस्त्रों से कौरवपक्ष की सेना को पीड़ित करने लगे। उनके बाणों से अत्यन्त व्यथित होने पर भी सैनिक लोग बहादुरी के साथ लड़ते रहे। वीरगण और भी उत्साह के साथ शत्रुओं की सेना का संहार करने लगे। ३०

धृष्टद्युम्न के बाणों से अत्यन्त पीड़ित होकर बहुत से सैनिक ऊँचे स्वर से चिल्लाने लगे। उनका घोर चीत्कार सुनकर अवन्ति देश के राजा विन्द और अनुविन्द धृष्टद्युम्न के पास पहुँचे। उन्होंने धृष्टद्युम्न के घोड़े मारकर उनको भी बाणों से छिपा दिया। धृष्टद्युम्न शीघ्रता के साथ बिना घोड़ों के रथ से उतरकर सात्यकि के रथ पर चले गये। धर्मराज युधिष्ठिर क्रुद्ध होकर, बहुत सी सेना साथ लेकर, विन्द और अनुविन्द के सामने आये। यह देखकर राजा दुर्योधन भी बहुत सी सेना साथ ले विन्द और अनुविन्द की रक्षा के लिए उनके पास पहुँचे।

इधर पराक्रमी अर्जुन, क्रुद्ध होकर, दानवों को मारने के लिए उद्यत इन्द्र की तरह कौरवसेना का संहार करने लगे। दुर्योधन का हित चाहनेवाले द्रोणाचार्य भी क्रुद्ध होकर, आग जैसे रुई के ढेर को जलाती है वैसे, पाञ्चालसेना को नष्ट करने लगे। दुर्योधन आदि आपके पुत्र, भीष्म के आसपास रहकर, पाण्डवों से युद्ध करने लगे। ४०

सूर्य भगवान् क्रमशः लाल रङ्ग के होकर जब अस्ताचल पर पहुँच गये तब दुर्योधन ने अपने पक्ष की सेना से कहा—तुम लोग शीघ्रता के साथ शत्रुसेना का संहार करो। यह आज्ञा सुनकर सब योद्धा लोग युद्धभूमि में असाधारण पराक्रम दिखाते हुए दुष्कर काम करने लगे। उस समय रणभूमि में भयङ्कर रक्त की नदी बह चली। अत्यन्त भयानक शब्द करते हुए सियारों के झुण्ड उसके किनारे विचरने लगे। राक्षस, पिशाच आदि मांसाहारी जीव चारों ओर दिखाई पड़ने लगे। इस तरह वह रणभूमि सैकड़ों-हज़ारों भूतों से परिपूर्ण होकर अत्यन्त भयानक हो उठी।

सन्ध्या होने पर असंख्य सेना सहित सुशर्मा आदि राजाओं को हराकर पराक्रमी अर्जुन अपने शिविर को लौटे। नकुल, सहदेव और असंख्य सेना को साथ लेकर युधिष्ठिर भी शिविर में लौट आये। भीमसेन भी राजा दुर्योधन आदि प्रधान रथियों को हराकर अपने शिविर को लौटे। भीष्म पितामह के साथ महारथी लोग और दुर्योधन आदि अपने शिविर को लौट पड़े।

द्रोण, कृपाचार्य, अश्वत्थामा, शल्य और कृतवर्मा भी सैनिकों के साथ अपने डेरों को लौटे। ५० सात्यकि और धृष्टद्युम्न भी योद्धाओं के साथ अपने शिविरों में गये। इस प्रकार कौरव और पाण्डव पक्ष के वीर रात्रि के समय लौट गये। अपने-अपने डेरे में जाकर उन्होंने परस्पर यथोचित सत्कार दिखलाया तथा रक्षा का प्रबन्ध, गुल्म की स्थापना आदि काम किये। घायलों के अङ्गों से शल्य आदि निकाले गये, मरहम-पट्टी हुई। स्नान करके, कपड़े बदलकर, सब लोग आनन्द के साथ आमोद-प्रमोद करने लगे। ब्राह्मण लोग स्वस्त्ययन-पाठ और वन्दीजन प्रशंसा करने लगे। कौरवों और पाण्डवों के डेरे स्वर्ग के विमान-से जान पड़ते थे। उस समय वहाँ युद्ध की चर्चा भी नहीं थी। योद्धा लोग इस तरह आमोद-प्रमोद करके सो रहे। हाथी, घोड़े आदि भी विश्राम करने लगे। शान्ति हो जाने से उस स्थान की परम शोभा हुई। ५७

सत्तासी अध्याय

दोनों पक्षों की व्यूह-रचना

सञ्जय ने कहा—राजन्, इस प्रकार कौरव और पाण्डव पक्ष के वीरगण रात भर सुख की नींद सोकर सबेरे फिर युद्ध के लिए तैयार हो अपने शिविरों से निकले। दोनों ओर की सेना में युद्धयात्रा के समय समुद्र के उमड़ पड़ने का सा घोर कोलाहल होने लगा। उस समय राजा दुर्योधन, चित्रसेन, विविंशति, महारथी भीष्म और महाबली द्रोणाचार्य आदि वीरों ने जमा होकर व्यूह की रचना की। भीष्म ने समुद्र-सा अपार गम्भीर महाव्यूह बनाया। मालव, अवन्ती और दक्षिण के देशों की सेना तथा राजा लोग भीष्म के साथ सारी सेना के आगे चले। उनके पीछे पराक्रमी द्रोणाचार्य चले। उनके साथ कुलिन्द, पारद और क्षुद्रक-मालव आदि देशों के राजा अपनी-अपनी सेना साथ लेकर चले। द्रोणाचार्य के पीछे मगध, कलिङ्ग और पिशाच आदि देशों की सेना साथ लिये प्राग्ज्योतिषपुर के राजा प्रतापी भगदत्त का दल चला। उनके पीछे मेकल, कुरुविन्द और त्रिपुरा आदि देशों की सेना साथ लिये कोशलेश्वर बृहद्बल चले। उनके पीछे त्रिगर्त और प्रस्थल देश के राजा सुशर्मा बहुत सी, काम्बोज और यवन देश की, सेना साथ लेकर चले। उनके पीछे द्रोण के पुत्र प्रतापी अश्वत्थामा सिंहनाद से पृथ्वीमण्डल को १० कँपाते हुए चले। उनके पीछे राजा दुर्योधन सब भाइयों और सैन्य-सामन्तों को साथ लिये हुए चले। उनके पीछे अद्वितीय रणकुशल कृपाचार्य चले। इस तरह वह समुद्र-तुल्य सेना महाव्यूह की रचना करके युद्ध के लिए आगे बढ़ी। पताका, सफ़ेद छत्र, विचित्र अङ्गद आदि गहने, बहुमूल्य कपड़े और धनुष आदि अस्त्र-शस्त्र उस सेना की अपूर्व शोभा बढ़ा रहे थे।

महाराज, उधर महारथी युधिष्ठिर ने कौरवों का महाव्यूह देखकर उसके जवाब में दूसरा व्यूह रचने के लिए अपने प्रधान सेनापति धृष्टद्युम्न से तत्काल कहा कि हे वीरश्रेष्ठ, कौरवों ने समुद्र-तुल्य व्यूह की रचना की है। तुम भी इसके जवाब में कोई दुर्भेद्य श्रेष्ठ व्यूह झटपट बनाओ। "जो आज्ञा" कहकर महाबली धृष्टद्युम्न ने उसी दम शत्रु के व्यूह को तोड़नेवाला शृङ्गाटक (सिंघाड़े के आकार का) व्यूह बनाया। उस व्यूह के शृङ्गद्वारों में कई हज़ार रथ, हाथी, घोड़े और पैदल सेना साथ लेकर वीर भीमसेन और सात्यकि स्थित हुए। नाभिदेश में कपिध्वज अर्जुन, मध्यदेश में धर्मराज युधिष्ठिर, नकुल और सहदेव विराजमान हुए। व्यूह-रचना की कला में निपुण और-और धनुर्द्धर राजा लोग अपनी-अपनी सेना के साथ जगह-जगह उस व्यूह की रक्षा

२० करने लगे। उनके पीछे प्रधान रथी अभिमन्यु, राजा विराट, द्रौपदी के पाँचों पुत्र और राक्षस घटोत्कच आदि रक्खे गये। पाण्डवगण इस तरह महाव्यूह सुसज्जित करके जय की इच्छा से युद्ध में प्रवृत्त हुए। उस समय चारों ओर तुमुल शङ्खध्वनि, भेरी आदि बाजों का शब्द, सिंहनाद, आस्फोटन (ताल ठोकना) और आह्वान आदि का शब्द सेना के कोलाहल से मिलकर आकाश तक गूँज उठा।

तब शूर-वीर योद्धा लोग एक दूसरे से भिड़कर परस्पर टकटकी लगाकर देखने लगे। फिर अपने-अपने समकक्ष को ललकारकर, नाम ले-लेकर, युद्ध के लिए बुलाने और प्रहार करने लगे। दोनों ओर के योद्धा लोग घोर संग्राम करने लगे। मुँह फैलाये हुए विषैले साँप के समान भयङ्कर नाराच बाण—मेघ में चमकती हुई बिजली के समान—तेल से साफ़ की हुई शक्तियाँ और साफ़ कपड़ों से ढकी हुई पर्वत-शिखर-तुल्य स्वर्णमण्डित गदाएँ युद्धभूमि में इधर-उधर वीरों पर गिरने लगीं। निर्मल आकाश के समान नीली चमकीली तलवारें [खाँड़े, कटारी], शत-

२१ चन्द्रशोभित सुदृढ़ ढालें चारों ओर युद्धभूमि की शोभा बढ़ाती हुई चमकती देख पड़ने लगीं। दोनों ओर के वीर परस्पर घोरतर युद्ध के लिए उद्यत देवताओं और दैत्यों के समान जान पड़ते

थे। श्रेष्ठ क्षत्रिय रथी, रथयुग से शत्रुपक्ष के रथयुगों को खींचते हुए, भिड़कर युद्ध करने लगे। सर्वत्र भिड़कर युद्ध करते हुए हाथियों के दाँत दाँतों से टकराने लगे और उनसे धुएँ सहित आग की चिनगारियाँ निकलने लगीं। कोई-कोई हाथी के सवार प्रास नामक शस्त्र के प्रहार से मरकर पर्वत के शिखर पर से टूटकर गिरे हुए बड़े वृक्ष के समान जान पड़े। पैदल योद्धा लोग नखर और प्रास आदि शस्त्रों से शत्रुपक्ष के पैदलों को मारने और गिराने लगे। इस तरह कौरवों और पाण्डवों की सेना के योद्धा परस्पर भिड़कर एक दूसरे को मारने और मरने लगे।

उस समय महावीर भीष्म रथ की घरघराहट से युद्धभूमि को कँपाते और धनुष की ध्वनि से पाण्डवों को तथा उनकी सेना को मोहित करते आ पहुँचे। धृष्टद्युम्न आदि पाण्डवपक्ष के महारथी भी भयानक शब्द और सिंहनाद करते हुए आगे बढ़े। इस तरह दोनों ओर के मनुष्य, रथ, हाथी और घोड़े परस्पर भिड़ गये और घोर कोलाहल के साथ दारुण युद्ध होने लगा। ४०

अट्ठासी अध्याय

भीमसेन के हाथों दुर्योधन के आठ छोटे भाइयों का वध

सञ्जय ने कहा—राजन्! पाण्डव लोग महापराक्रमी, सूर्य के समान तेजस्वी, महावीर भीष्म की क्रुद्ध भयानक मूर्ति को युद्धभूमि में अच्छी तरह देख नहीं सकते थे। पाण्डवपक्ष के योद्धा लोग राजा युधिष्ठिर की आज्ञा से भीष्म के ऊपर बाण बरसाते हुए युद्ध करने के लिए आगे बढ़े। तब युद्धप्रिय वीर भीष्म पितामह असंख्य तीक्ष्ण बाण चलाकर सोमक, सृञ्जय और पाञ्चाल वीरों को मारने और गिराने लगे। युद्ध में उत्साह रखनेवाले पाञ्चालगण और सोमकगण भीष्म के बाणों से अत्यन्त पीड़ित होकर भी हटे नहीं। वे जीवन की आशा छोड़कर लड़ते हुए उन पर आक्रमण करने लगे। पराक्रमी भीष्म ने किसी का हाथ काट डाला, किसी का सिर काट डाला। उन्होंने रथी योद्धाओं के रथों के टुकड़े-टुकड़े कर डाले। युद्धभूमि में भीष्म के बाणों के प्रभाव से घोड़ों से गिरे—मरे—हुए घुड़सवारों के सिर, सवारों से ख़ाली पृथ्वी पर पड़े हुए पर्वतशिखर सदृश गजराज और रथ आदि जगह-जगह हज़ारों की संख्या में देख पड़ने लगे।

हे नर-नाथ, उस समय पाण्डवपक्ष से एकमात्र महारथी साहसी भीमसेन बल-पराक्रम प्रकट करते हुए महावीर भीष्म पर आक्रमण करके उन्हें रोकने की चेष्टा करने लगे। भीमसेन और भीष्म से भयानक संग्राम होने लगा। पाण्डव लोग उत्साह और प्रसन्नता प्रकट करते हुए सिंहनाद करने लगे। अपने भाइयों सहित राजा दुर्योधन भीष्म की रक्षा करते देख पड़ते थे। १० श्रेष्ठ रथी भीमसेन ने भीष्म के सारथी को मार डाला। तब उनके रथ को लेकर घोड़े इधर-उधर अस्त-व्यस्त गति से भागने लगे।

इसी अवसर में बली भीमसेन ने तीक्ष्ण क्षुरप्र बाण से राजकुमार सुनाभ का सिर काट डाला। महाराज ! आपके पुत्र महारथी सुनाभ के मरने पर सगे भाई की हत्या से अत्यन्त क्रुद्ध होकर अतुल-पराक्रमी आदित्यकेतु, बह्वाशी, कुण्डधार, महोदर, अपराजित, पण्डितक और दुर्जय विशालाक्ष, ये सातों राजकुमार भीमसेन से लड़ने के लिए दौड़े। ये सब विचित्र कवच, ध्वजा और अस्त्र-शस्त्रों से शोभित थे। वज्रपाणि इन्द्र ने जैसे वृत्रासुर को पीड़ित किया था वैसे ही वीर महोदर ने भीमसेन को वज्रतुल्य नव बाण मारे। इसी तरह आदित्यकेतु ने सत्तर बाण, बह्वाशी ने पाँच बाण, कुण्डधार ने नब्बे बाण, विशालाक्ष ने पाँच बाण, पण्डितक ने तीन बाण और भीमसेन को परास्त करने की इच्छा रखनेवाले अपराजित ने बहुत से बाण मारे।

२० पराक्रमी भीमसेन शत्रुओं के बाण-प्रहार को न सह सके, क्रोध से अधीर हो उठे। उन्होंने बाँयें हाथ से धनुष चढ़ाकर शीघ्रगामी तीक्ष्ण-धार बाण से अपराजित का, सुन्दर नासिका से मनोहर, मुण्ड काट डाला। फिर सब सेना के सामने एक भल्ल बाण से कुण्डधार को मार गिराया। पण्डितक पर भी एक तीक्ष्ण बाण छोड़ा। कालप्रेरित विषैले साँप के समान वह बाण पण्डितक के प्राण लेकर पृथ्वी में घुस गया। पहले के शत्रुकृत प्रहार का क्लेश स्मरण करके उन्होंने तीन बाणों से विशालाक्ष का सिर काट डाला। एक नाराच बाण महोदर की छाती में मारा। उस प्रहार से वे मरकर पृथ्वी पर गिर पड़े। वीर भीमसेन ने फिर फुर्ती के साथ एक बाण से आदित्यकेतु के रथ की ध्वजा काटकर दूसरे तीक्ष्ण भल्ल बाण से उनका सिर भी काट डाला। ऐसे ही एक बाण से क्रुद्ध भीमसेन ने बह्वाशी को मार डाला। इस प्रकार आठ राजकुमारों की मृत्यु देखकर आपके और पुत्र भाग खड़े हुए। उन्होंने समझ लिया कि भीम ने द्रौपदी के अपमान के समय दुर्योधन

३० के सब भाइयों को मारने की जो प्रतिज्ञा की थी, उसे वे अवश्य पूर्ण करेंगे। भाइयों की मृत्यु के शोक से अत्यन्त व्याकुल राजा दुर्योधन ने अपने योद्धाओं को आज्ञा दी कि इस दुरात्मा भीमसेन को सब लोग मिलकर शीघ्र मार डालो।

राजन्, इस प्रकार भाइयों की मृत्यु देखकर आपके अन्य पुत्र विदुरजी की बातों को स्मरण करने लगे। महाप्राज्ञ विदुर ने जो हितकारी कल्याणप्रद बातें कही थीं उन्हें न मानने का यह फल अब आपको मिल रहा है। [उन्होंने जो परिणाम बताया था वही होता देख पड़ रहा है। उनकी भविष्यवाणी अक्षर-अक्षर ठीक उतर रही है।] आपने उस समय लोभ, मोह और पुत्रस्नेह के वश होकर सत्यवादी विदुर के सत्य और हित-वचनों पर ध्यान नहीं दिया। महाबाहु भीमसेन जिस तरह कौरवों को मार रहे हैं उसे देखकर यही मालूम होता है कि वे आपके पुत्रों को मारने के लिए ही पैदा हुए हैं।

भाइयों की मृत्यु से बहुत विह्वल होकर महाबाहु दुर्योधन भीष्म के पास जाकर अत्यन्त दुःख के साथ विलाप करने लगे—पितामह, भीमसेन ने युद्ध में मेरे शूर भाइयों को मार डाला। हमारी सेना शत्रुओं को मारने के लिए यद्यपि बहुत यत्न कर रही है, फिर भी हमारे ही सैनिक मारे जा रहे हैं। आप उदासीन भाव से युद्ध कर रहे हैं, नित्य हम लोगों के प्रति उपेक्षा का भाव दिखा रहे हैं। भाग्य के दोष से मैं कुमार्ग पर चला [और युद्ध ठान दिया], इसके सिवा और क्या कहा जा सकता है!

दुर्योधन के ये क्रूर वचन सुनकर, आँखों में आँसू भरकर, आपके चाचा भीष्म ने कहा—देखो दुर्योधन! पहले ही मैंने, द्रोण ने, विदुर ने और यशस्विनी गान्धारी ने तुमसे युद्ध न करने के लिए कहा था, किन्तु तुम नहीं समझे। हे शत्रुदमन, मैं पहले ही तुमसे शर्त कर चुका हूँ कि ४० मुझको और द्रोण को तुम कभी युद्ध के बारे में उलाहना न देना; हम अपनी इच्छा के अनुसार यथाशक्ति युद्ध करेंगे। मैं तुमसे फिर कहे देता हूँ कि भीमसेन युद्ध में धृतराष्ट्र के जिस पुत्र को पावेंगे उसे नित्य अवश्य मारेंगे। यह सच समझो। इसलिए हे राजन्! तुम युद्ध के लिए दृढ़ मति करके, स्वर्गलाभ को परम फल समझकर, पाण्डवों से युद्ध करो। इन्द्र सहित देवता और दैत्य मिलकर भी पाण्डवों को नहीं जीत सकते। इसलिए युद्ध में स्थिर मति करके पाण्डवों से लड़ो। ४४

नवासी अध्याय

युद्ध का वर्णन

धृतराष्ट्र ने कहा—हे सञ्जय! एक भीमसेन के हाथों मेरे अनेक पुत्रों की मृत्यु देखकर भीष्म, द्रोणाचार्य और कृपाचार्य ने क्या किया? दिन-दिन मेरे पुत्र मारे जा रहे हैं, इससे मुझे यह निश्चय होता है कि मेरे पुत्रों पर दैव का ही कोप है। महात्मा द्रोण, भीष्म, महात्मा कृपाचार्य, भूरिश्रवा, भगदत्त, अश्वत्थामा तथा और-और शूर और संग्राम में पीठ न दिखानेवाले क्षत्रियों की सहायता पाकर भी मेरे पुत्र विजयी नहीं होते, बल्कि हारते ही जाते हैं; इसे दुर्भाग्य के सिवा और क्या कहा जा सकता है! पहले मैं, भीष्म, विदुर, गान्धारी आदि ने हित-कामना से दुर्बुद्धि दुर्योधन को बहुत समझाया-बुझाया, युद्ध न करने के लिए कहा, किन्तु मोह-वश उसने किसी का कहना नहीं सुना। उसी का यह घोर फल मिल रहा है—कुपित भीम-सेन नित्य मेरे मूढ़ पुत्रों को मार रहे हैं, यह विदुर की बात न मानने का ही फल है।

सञ्जय ने कहा—स्वामी! पहले विदुर ने आपसे कहा था कि राजन्, आप पुत्रों को द्यूत-क्रीड़ा से रोकिए; पाण्डवों के साथ द्रोह या दुर्व्यवहार न कीजिए। किन्तु महाराज! रोगी जैसे दवा नहीं पीता, दवा पीना उसे नहीं रुचता, वैसे ही आपने अपने हितचिन्तक विदुर, भीष्म, द्रोण, गान्धारी और अन्य सुहृदों की बातें नहीं मानीं। इसी कारण इस समय कौरवों १२ का नाश हो रहा है। ख़ैर, जो होना था सो तो हो ही गया, अब आप युद्ध का वर्णन सुनिए। उस दिन दोपहर के समय ऐसा घोर युद्ध हुआ कि उसमें असंख्य क्षत्रिय मारे गये। धर्मपुत्र युधिष्ठिर की आज्ञा से पाण्डवों की सब सेना भीष्म को मार डालने के लिए सुसज्जित होकर आगे बढ़ी। धृष्टद्युम्न, शिखण्डी, सेना सहित महारथी सात्यकि, सोमकगण सहित राजा विराट, राजा द्रुपद, केकयदेश की सेना साथ लिये धृष्टकेतु और कुन्तिभोज आदि महारथी चारों ओर से भीष्म पर हमला करने के लिए चले। दुर्योधन की आज्ञा से जो महारथी लोग भीमसेन पर आक्रमण करने आ रहे थे उनसे लड़ने के लिए महाबली अर्जुन, द्रौपदी के पाँचों पुत्र और चेकितान चले। क्रोध से अधीर हो रहे भीमसेन, घटोत्कच और अभिमन्यु कौरवों के सामने २० आये। पाण्डवों और कौरवों के तीन-तीन दल, अलग होकर, परस्पर लड़ने और मारने-मरने लगे। महारथी द्रोण कुपित होकर सोमकों और सृञ्जयों को यमपुर भेजने के इरादे से उनसे लड़ने लगे। महाधनुर्द्धर द्रोणाचार्य के बाणों से पीड़ित होकर सृञ्जयगण घोर आर्तनाद करने लगे। द्रोण के बाणों से पीड़ित होकर बहुत से क्षत्रिय व्याधि-पीड़ित मनुष्यों की तरह युद्धभूमि में गिरकर तड़पने लगे। युद्धभूमि में कुछ लोग अस्पष्ट शब्द से कराह रहे थे, कुछ ज़ोर से चिल्ला रहे थे, कुछ विलाप कर रहे थे और कुछ लोग वैसे ही हाय-हाय कर रहे थे जैसे भूख-प्यास से व्याकुल मनुष्य किया करते हैं। वहाँ तरह-तरह के आर्तनाद लगातार सुनाई पड़ते थे।

इधर क्रोधान्ध भीमसेन दूसरे काल की तरह कौरव-सेना को नष्ट करने लगे। परस्पर प्रहार करते हुए सैनिकों के रक्त से लहराती हुई नदी बह चली। राजन्, वह कौरव-पाण्डवों का युद्ध ऐसा घोर हुआ कि उसमें मरे हुए मनुष्यों से यमपुरी भर गई होगी। भीमसेन क्रोध-पूर्ण स्वर से सिंहनाद करते हुए दुर्योधन के हाथियों की सेना में घुसकर उसे छिन्न-भिन्न करने लगे। भीमसेन के नाराच बाणों की चोट खाकर बड़े-बड़े हाथी बैठ जाते थे। अनेकों हाथी गिर रहे थे, अनेकों डरकर चिल्लाते और आर्तनाद करते भाग रहे थे। बड़े-बड़े हाथियों की सूँड़ें कट गईं, शरीर फट गये और वे क्रौञ्च पक्षी की तरह आर्तनाद करते हुए पृथ्वी पर गिरने लगे। उधर नकुल और सहदेव घोड़ों के दल में घुस पड़े और सुवर्ण के गहनों से भूषित सैकड़ों-हज़ारों घोड़ों को काट-काटकर गिराने लगे। घोड़ों के कटे-फटे अङ्गों और शरीरों से पृथ्वी भर गई। राजन्! किसी घोड़े की जीभ कट गई, कोई घोड़ा थककर ज़ोर-ज़ोर से हाँफने लगा, कोई घोड़ा घायल पक्षी का सा आर्तनाद करने लगा और कोई घोड़ा मर गया। इस तरह अनेक चेष्टाएँ करते हुए पीड़ित घोड़ों का दल नष्ट-भ्रष्ट हो गया। हे भारत, महावीर अर्जुन सैकड़ों राजाओं को अपने बाणों से मार-मारकर गिराने लगे। उस समय युद्धभूमि बहुत ही भयानक देख पड़ने लगी। टूटे हुए रथ, कटी हुई ध्वजा, कटे हुए श्रेष्ठ शस्त्र, चामर, व्यजन, चमकीले छत्र, हार, निष्क, केयूर, कुण्डल-शोभित सिर, पगड़ियाँ, पताका, घोड़ों के जोत, लगामें, रासें और अनेक प्रकार के अन्य सामान सारी युद्धभूमि में जहाँ-तहाँ बिखरे पड़े थे। उनसे वह भूमि वैसे ही शोभित हो रही थी जैसे वसन्त-ऋतु में तरह-तरह के फूलों से किसी बड़े बाग़ की शोभा होती है। महाराज! भीष्म, महारथी द्रोणाचार्य, अश्वत्थामा, कृपाचार्य, कृतवर्मा आदि क्रुद्ध होकर पाण्डवसेना को नष्ट कर रहे थे, और पाण्डवपक्ष के भीम, अर्जुन, अभिमन्यु आदि योद्धा क्रुद्ध होकर कौरव-सेना का संहार कर रहे थे।   ३०   ४०

नब्बे अध्याय

शकुनि के भाइयों का और इरावान् का वध

सञ्जय ने कहा—राजन्, इस प्रकार लोकनाशक महासंग्राम आरम्भ होने पर सुबल के पुत्र शकुनि पाण्डवों पर आक्रमण करने चले। यदुवंशी शत्रुदमन हार्दिक्य (कृतवर्मा) भी पाण्डवों की सेना से लड़ने के लिए आगे बढ़े। काम्बोज देश के, नदी-तट के देश के, आरट्ट देश के, सिन्धु देश के, वनायु देश के, स्थलज और पहाड़ी देश के असंख्य घोड़ों पर सवार वीरों ने पाण्डवसेना पर आक्रमण किया। तीतर के रङ्ग के, फुर्तीले, सुवर्ण के साज से अलङ्कृत और सुवर्ण के जालों से सुरक्षित बढ़िया घोड़ों से युक्त रथ पर अर्जुन के पुत्र इरावान् उधर से कौरवसेना का वेग रोकने के लिए आगे बढ़े। पराक्रमी इरावान् नागराज ऐरावत की कन्या के गर्भ में अर्जुन

के वीर्य से उत्पन्न हुए थे। गरुड़ ने उस कन्या के पहले पति को मार डाला था। तब उस दुःखित कन्या को ऐरावत ने सन्तान-हीन देखकर अर्जुन के अर्पण कर दिया। काम के वश और अनुगत उस स्त्री को अर्जुन ने, सन्तान उत्पन्न करने के लिए, स्त्री-रूप से स्वीकार कर लिया। इस प्रकार दूसरे के क्षेत्र में अर्जुन के वीर्य से इरावान् का जन्म हुआ। इरावान् नागलोक में ही माता के पास रहे और उसी ने उन्हें पाल-पोसकर बड़ा किया। इरावान् का चाचा अश्वसेन
१० अर्जुन से द्रोह रखता था, उसने इरावान् को उसी विद्वेष के कारण त्याग दिया। सत्यविक्रमी नागराज इरावान् ने उस समय सुना कि अर्जुन इन्द्रलोक को गये हैं। तब वे आकाश-मार्ग से इन्द्रलोक में पिता के पास गये। वहाँ पहुँचकर इरावान् ने नम्रतापूर्वक हाथ जोड़कर, अपना परिचय देकर, अर्जुन से कहा—प्रभो! आपका कल्याण हो, मैं आपका पुत्र हूँ। फिर इरावान् ने अपनी माता के साथ अर्जुन के समागम का हाल कहा। अर्जुन को भी पहले का सब वृत्तान्त स्मरण हो आया। उन्होंने अपने ही समान सब गुणों से युक्त पुत्र को गले से लगाकर प्रसन्नता-पूर्वक कहा—पुत्र, तुम प्रीतिपूर्वक यहीं इन्द्रलोक में रहो। जब युद्ध होगा तब तुम हमारी सहायता करना। पिता की आज्ञा स्वीकार करके इरावान् वहीं रहने लगे। इस समय युद्ध उपस्थित होने पर वही इरावान् यथेष्ट वेग और वर्णवाले, सुवर्णभूषित, विचित्र घोड़े लेकर युद्धभूमि में आ गये। वे घोड़े समुद्र के बीच में उड़ते हुए हंसों के समान शोभा दे रहे थे। वे दिव्य घोड़े आपके घोड़ों के बीच घुसकर थूथन से थूथन में और छाती से छाती में प्रहार करते हुए आगे बढ़े। उनके वेग से और चलने से उड़ते हुए गरुड़ के पङ्खों का सा घोर शब्द
२१ होने लगा। राजन्, आपके पक्ष के घोड़े और घुड़सवार भी भिड़कर प्रहार करने लगे। उस घोर युद्ध में दोनों ओर के घोड़े थक गये। शूरों के बाण चुक गये। घोड़े मारे गये और वे ख़ुद भी अधिक परिश्रम करने के कारण सुस्त हो गये। वे वीर परस्पर प्रहार करके मरने लगे। वीरगण और घोड़े मर-मरकर पृथ्वी पर गिरने लगे।

वह घुड़सवार सेना थोड़ी ही रह गई। उसी समय युद्धनिपुण शकुनि अपने महाबली गज, गवाक्ष, वृषभ, चर्मवान्, आर्जव और शुक नाम के छः भाइयों के साथ युद्ध के लिए उपस्थित हुए। उनके साथ महापराक्रमी योद्धाओं की सेना चली। शकुनि और उनके भाई वायुवेगगामी बढ़िया घोड़ों पर सवार होकर सेना के अगले भाग में स्थित हुए। राजन्, गान्धार देश के राजा और उनके छहों भाई स्वर्ग की गति अथवा विजय की इच्छा से उत्साह-पूर्वक अपने युद्धकुशल रौद्ररूप बली सैनिकों के साथ शत्रुओं की सेना में घुसे। इरावान्
३० ने उनको अपनी सेना में घुसते देखकर, विचित्र अलङ्कारों और शस्त्रों से सुशोभित और श्रेष्ठ घोड़ों पर सवार, अपने सैनिकों से कहा—हे वीरो! ऐसा उपाय करो जिसमें ये शत्रुपक्ष के योद्धा अनुचरों और वाहनों सहित मारे जायँ।

अब इरावान् के सब योद्धा शत्रुओं की दुर्जय सेना पर आक्रमण करके उसे नष्ट करने लगे। शकुनि और उनके भाई अपनी सेना को शत्रुसेना के हाथों नष्ट होते देख क्रोध से अधीर होकर इरावान् पर आक्रमण करने के लिए दौड़े। उन्होंने इरावान् को चारों ओर से घेर लिया। तब दोनों ओर घोर युद्ध होने लगा। वे वीर परस्पर दारुण प्रहार करने लगे। महाराज, शकुनि के भाइयों ने इरावान् को तीक्ष्ण प्रास नाम के शस्त्र मारे। इससे इरावान् के शरीर से रक्त बहने लगा। वे अंकुश से आहत गजराज के समान क्रोध से विह्वल हो गये। बहुत लोगों के प्रहार करने पर भी धीर इरावान् विचलित नहीं हुए। शत्रुदमन इरावान् ने क्रोधान्ध होकर सबको अत्यन्त तीक्ष्ण बाण मारे। उन बाणों के लगने से शकुनि के भाई अचेत-से हो गये। इरावान् ने उन्हीं प्रासों से, जो उनके शरीर में घुस गये थे, शकुनि के भाइयों को घायल किया। इसके बाद वीर इरावान् शकुनि के भाइयों को मारने के लिए तीक्ष्ण तलवार और सुदृढ़ ढाल लेकर पैदल ही उनकी ओर दौड़े। ४०

उधर शकुनि के भाइयों की मूर्च्छा दूर हुई और वे क्रुद्ध होकर इरावान् पर आक्रमण करने को दौड़े। महाबली इरावान् भी तलवार के हाथ फेंकते, फुर्ती दिखाते उनकी ओर बढ़ने लगे। शकुनि के छहों भाई तेज़ घोड़ों पर सवार थे, और शीघ्रता के साथ घोड़ों को घुमा रहे थे; किन्तु किसी तरह वे इरावान् के ऊपर आक्रमण न कर पाये। इरावान् को पैदल देख चारों ओर से घेरकर शकुनि के भाइयों ने पकड़ लेना चाहा। वे जब पास पहुँच गये तब इरावान् ने तीक्ष्ण तलवार से उनके शरीरों, अङ्गों और आयुधों तथा अलङ्कारों से युक्त हाथों को काटना शुरू किया। एक वृषभ को छोड़कर शेष पाँचों भाई छिन्न-भिन्न होकर मर गये। वृषभ भी बहुत घायल हो गये, किन्तु उस भयङ्कर संग्राम से किसी तरह उनके प्राण बच गये।

महाराज! ऋष्यशृङ्ग का पुत्र राक्षस अलम्बुष बड़ा मायावी था। वह आपकी ओर से युद्ध करता था। भीमसेन पहले उसके मित्र बक दैत्य को मारकर उसके वैरी बन चुके थे।

शकुनि के भाइयों की मृत्यु देखकर दुर्योधन मन ही मन बहुत डरे। उन्होंने क्रुद्ध होकर अलम्बुष के पास जाकर कहा—हे वीर! वह देखो, अर्जुन का पुत्र इरावान् बड़ा मायावी होने के
५० कारण मेरे योद्धाओं को मार रहा है। इसने मेरा बड़ा अप्रिय किया है। तुम भी मायायुद्ध में बड़े चतुर हो। तुम जहाँ चाहो, जा सकते हो। भीमसेन से तुम्हारी घोर शत्रुता है। इसलिए तुम तुरन्त जाकर इरावान् को मार डालो। दुर्योधन के यों कहने पर घोररूप राक्षस अलम्बुष सिंहनाद करता हुआ अर्जुन के पुत्र इरावान् के पास जाने के लिए आगे बढ़ा। उसके साथ ऐसे युद्धनिपुण योद्धाओं की सेना भी चली जो निर्मल प्रास नाम के शस्त्रों से युद्ध करते थे। उधर महाबली इरावान् क्रुद्ध होकर शीघ्रता के साथ उस राक्षस को रोकने चले। इरावान् को आते देखकर महाबली राक्षस अलम्बुष शीघ्रता के साथ माया का प्रयोग करने लगा। इरावान् के साथ जितने घोड़े और सेना थी, उतने ही घोड़े और उन पर सवार शूल-पट्टिश-धारी घोर राक्षस उसने प्रकट किये। दोनों ओर के सवार और घोड़े परस्पर लड़कर मर गये। सब सेना नष्ट हो जाने पर, वृत्रासुर और इन्द्र के समान, युद्ध में अजेय दोनों वीर आमने-सामने आये। राक्षस को अपनी ओर आते देखकर महाबली इरावान् भी क्रुद्ध होकर उसकी ओर
६० दौड़े। राक्षस जब पास पहुँचा तब इरावान् ने तीक्ष्ण खड्ग से उसका धनुष और तर्कस काट डाला। धनुष कट जाने पर वह कामरूपी राक्षस अत्यन्त क्रुद्ध इरावान् को माया से मोहित-सा करता हुआ आकाश में वेग से चला गया। दुर्द्धर्ष इरावान् भी आकाश में पहुँच गये और बाणों से राक्षस के मर्मस्थलों को काटने लगे। राक्षसश्रेष्ठ अलम्बुष बारम्बार बाणों से अङ्ग काटे जाने पर भी नहीं मरा। वह माया से फिर-फिर जवान और साङ्गोपाङ्ग बन जाता था। राजन्, राक्षसों में मायाबल पैदाइशी होता है; वे अपनी अवस्था और रूप को इच्छा के अनुसार बदल सकते हैं। इसी कारण उस राक्षस के अङ्ग बारम्बार काटे जाने पर भी वैसे ही हो जाते थे।

इरावान् भी अत्यन्त क्रुद्ध होकर परश्वध शस्त्र से बारम्बार उस बली राक्षस के अङ्गों को काटने लगे। जैसे कोई वृक्ष काटा जा रहा हो, वैसे काटा जा रहा वह राक्षस गरजने लगा। उसके शरीर से रक्त की धाराएँ बह चलीं। उस राक्षस ने संग्राम में अपने शत्रु यशस्वी इरावान् को प्रबल और वेगशाली देख, महाभयङ्कर रूप रखकर, फिर माया का प्रयोग किया।
७० क्रुद्ध होकर उसने सबके सामने मायाबल से इरावान् को पकड़ लेना चाहा। तब दुरात्मा राक्षस की वैसी माया देखकर इरावान् भी क्रुद्ध होकर माया का प्रयोग करने लगे। संग्राम से न हटनेवाले कुपित इरावान् ने अपनी माता के वंश का आश्रय ग्रहण किया। असंख्य नागों ने आकर इरावान् का साथ दिया। शेषनाग का सा भारी रूप रखकर इरावान् ने और अन्य अनेक नागों ने अलम्बुष को घेर लिया। उसने अपने को घिरा हुआ देखकर, दम भर सोचकर, मायाबल से गरुड़ का रूप रख लिया और सब नागों को भक्षण कर लिया। मातृवंश

नष्ट होने पर इरावान् माया से मोहित हो गये। उसी अवसर में अलम्बुष ने तलवार से उनका सिर काट डाला। मुकुट और कुण्डलों से शोभित, कमल और चन्द्रमा के समान, इरावान् का सिर काटकर उस राक्षस ने पृथ्वी पर गिरा दिया। उस राक्षस ने जब अर्जुन के पुत्र को मार डाला तब दुर्योधन, उनके भाई और सब राजा प्रसन्न होकर आनन्द मनाने लगे।

उस समय फिर दोनों सेनाओं में घोर युद्ध होने लगा। उस युद्ध में हाथियों, घोड़ों और पैदलों को हाथी नष्ट करने लगे; रथों, घोड़ों और हाथियों को पैदल सेना ने मारना शुरू किया; पैदलों, रथों और घोड़ों को रथी लोग बाणवर्षा से छिन्न-भिन्न करने लगे। दूर होने ८० के कारण अर्जुन को अपने पुत्र इरावान् के मरने की ख़बर नहीं मिली। वे उधर भीष्म की रक्षा करनेवाले शूर राजाओं के दल को मारने लगे। राजन्, हज़ारों सृञ्जयगण और आपके पक्ष के योद्धा परस्पर प्रहार करके युद्ध की आग में प्राणों की आहुति देने लगे। बहुत से वीरों के धनुष कटने और रथ टूटने पर केश खुल गये। वे उसी दशा में परस्पर भिड़कर बाहुयुद्ध करने लगे। शत्रुओं को पीड़ा पहुँचानेवाले पितामह भीष्म भी पाण्डवसेना को विचलित करते हुए मर्मभेदी बाणों से महारथी वीरों को मारने लगे। उन्होंने युधिष्ठिर की बहुत सी सेना—हाथियों, घोड़ों, घुड़सवारों, रथियों और पैदलों—को मारा। महाराज, उस समय वे इन्द्र के समान पराक्रमी जान पड़ने लगे। भीमसेन, धृष्टद्युम्न और सात्यकि भी अत्यन्त पराक्रम के साथ भयानक युद्ध कर रहे थे। ख़ासकर द्रोणाचार्य का पराक्रम देखकर पाण्डव बहुत ही डर गये। वे द्रोणाचार्य के प्रहारों से पीड़ित होकर कहने लगे—आचार्य द्रोण अकेले ही हम सबको और हमारी सेना को नष्ट कर सकते हैं। फिर इस समय तो पृथ्वी के सभी श्रेष्ठ योद्धा उनके साथ हैं। अब वे क्या नहीं कर सकते? ९०

राजन्, उस भयानक संग्राम में कोई भी शत्रु के प्रहार को चुपचाप नहीं सह सकता था। सभी भूतग्रस्त-से होकर प्रबल वेग से युद्ध कर रहे थे। देवासुर-संग्राम के समान भयानक उस युद्ध में कोई भी प्राणों का मोह रखकर युद्ध करता नहीं दिखाई देता था। ९३

इक्यानबे अध्याय

दुर्योधन और घटोत्कच का युद्ध

धृतराष्ट्र ने पूछा—हे सञ्जय, इरावान् को युद्ध में मरा देखकर पाण्डवों ने क्या किया? सञ्जय ने कहा—महाराज, समर में इरावान् की मृत्यु देखकर घटोत्कच ने क्रोध से घोर सिंहनाद किया। उसके गरजने के शब्द से पर्वत, वन, समुद्र आदि सहित पृथ्वी, अन्तरिक्ष, दिशा, विदिशा आदि सब काँपने लगे। वह महाशब्द सुनकर आपके सैनिक काँपने लगे; उनके

शरीर से पसीना बहने लगा और पैर जकड़-से गये। राजन्, उस समय आपके पक्ष के सब सैनिक सिंह से डरे हुए हाथी की तरह दीन भाव से इधर-उधर छिपने लगे। राक्षस घटोत्कच वह भयङ्कर शब्द करके, घोर रूप रखकर, शूल हाथ में लिये काल की तरह दौड़ा। उसके साथ विविध अस्त्र-शस्त्र धारण किये अनेक भयावने राक्षस भी चले।

इसके बाद भयानक राक्षस घटोत्कच को आते और उसके डर से अपनी सेना को युद्ध से हटते देखकर राजा दुर्योधन धनुष हाथ में लेकर सिंहनाद करते हुए घटोत्कच की ओर चले। वङ्गदेश के राजा दस हज़ार मस्त हाथियों का दल लेकर दुर्योधन के साथ चले। दुर्योधन को आते देखकर राक्षस घटोत्कच अत्यन्त क्रुद्ध होकर उनकी ओर चला। तब राक्षससेना के साथ दुर्योधन की सेना का घोर युद्ध होने लगा। शस्त्र धारण किये हुए राक्षसगण घनघटा के समान हाथियों की सेना को आते देख, क्रुद्ध होकर, बादल में बिजली कड़कने का सा शब्द करते हुए दौड़े। वे हाथियों के योद्धाओं को बाण, शक्ति, नाराच, भिन्दिपाल, शूल, मुद्गर, परश्वध आदि से और बड़े-बड़े हाथियों को पर्वतों के शिखरों और वृक्षों से मारने लगे। राजन्! उस समय देख पड़ा कि राक्षसों के प्रहार से कुछ हाथियों के मस्तक फट गये, कुछ के शरीर कट-फट गये और कुछ के शरीर से रक्त की धारा बहने लगी।
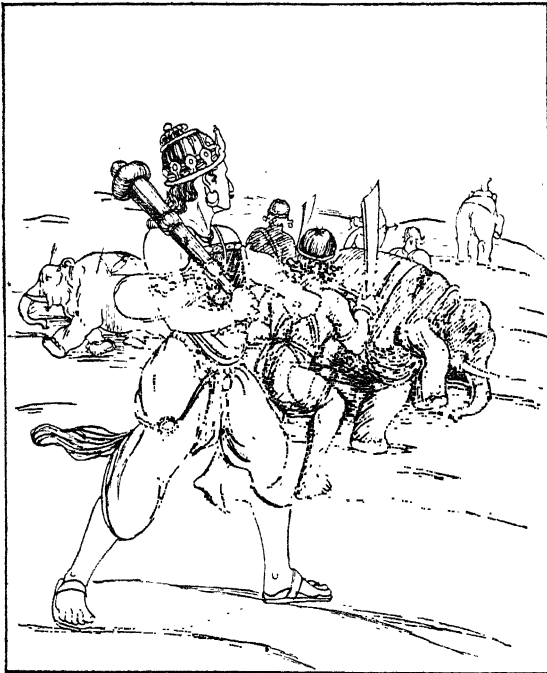
इस प्रकार गजसेना जब नष्ट हो गई और शेष हाथी भाग खड़े हुए तब महाराज दुर्योधन क्रोध के आवेश से जीवन की ममता छोड़कर राक्षसों पर हमला करने और तीक्ष्ण बाण बरसाने लगे। वे अत्यन्त कुपित होकर मुख्य-मुख्य राक्षसों को मारने लगे। दुर्योधन ने महावीर वेगवान्, महारौद्र, विद्युज्जिह्व और प्रमाथी इन चार प्रधान राक्षसों को चार ही बाणों से मार डाला। इसके बाद वे सारी राक्षससेना के ऊपर कठोर बाण बरसाने लगे।

महाराज, दुर्योधन का यह अद्भुत कार्य देखकर घटोत्कच बहुत कुपित हुआ। वह वज्रपात के समान घोर शब्द करनेवाला सुदृढ़ धनुष चढ़ाकर दुर्योधन की ओर चला। राजन्, उस काल-सदृश

राक्षस को अपनी ओर आते देखकर वीर धीर दुर्योधन तनिक भी विचलित नहीं हुए। घटोत्कच ने अत्यन्त क्रोध से दुर्योधन को ललकारकर कहा—"रे दुर्मति क्षत्रिय! तूने मेरे पिता और उनके भाइयों को कपट के पाँसों से हराकर बहुत दिन तक प्रवास में रहने के लिए विवश किया; एक धोती पहने हुए रजस्वला द्रौपदी को सभा में बुलवाकर क्लेश दिया और उनका अपमान किया; मेरे पिता और चाचा जब वनवास में थे तब तेरे आज्ञाकारी बहनोई नीच सिन्धुराज जयद्रथ ने तेरा प्रिय करने की इच्छा से पाण्डवों का कुछ भी ख़याल न करके, उनकी अनुपस्थिति में, द्रौपदी को ज़बरदस्ती ले जाकर कष्ट पहुँचाया। तेरे इन सब दुष्कर्मों का फल आज मैं तुझको दूँगा। जो तू प्राण बचाकर युद्ध से भाग नहीं गया तो अवश्य मैं तेरे प्राण लेकर माता-पिता का ऋण चुकाऊँगा।" वीर घटोत्कच इस तरह तीव्र वचन कहकर क्रोध के मारे दाँतों से ओठ चबाने और ओठ चाटने लगा। उसने धनुष चढ़ाकर, मेघ जैसे पर्वत पर पानी बरसाते हैं वैसे, दुर्योधन पर बाण-वर्षा करके उनके रथ को छिपा दिया। ३१

बानबे अध्याय

घटोत्कच का युद्ध

सञ्जय ने कहा—महाराज, गजराज जैसे बादल की बूँदों को सहज ही सह लेता है वैसे ही दुर्योधन ने घटोत्कच के प्रहार अनायास सह लिये। अत्यन्त क्रुद्ध होकर, नाग की तरह लम्बी साँसें लेकर, दुर्योधन दम भर के लिए सोच में पड़ गये। इसके बाद उन्होंने उस राक्षस को तीक्ष्ण पचीस नाराच बाण मारे। गन्धमादन पहाड़ पर कुपित साँप जैसे गिरें वैसे ही वे बाण सहसा घटोत्कच के ऊपर गिरे। हाथी के जैसे मद बहता है वैसे ही घटोत्कच के शरीर से रक्त बहने लगा। उन बाणों से व्यथित और घायल घटोत्कच ने अत्यन्त क्रोधान्ध

होकर दुर्योधन को मारने के इरादे से एक बड़ी उल्का के समान प्रज्वलित और पहाड़ों को तोड़ डालनेवाली महाशक्ति अपने हाथ में ली। घटोत्कच को वह शक्ति तानते देखकर पर्वत सदृश ऊँचे हाथी पर सवार वङ्गदेश के राजा ने अकस्मात् दुर्योधन के रथ के आगे आकर उनको हाथी की आड़ में कर लिया। राजन्, महावीर घटोत्कच ने जब देखा कि वङ्गाधिप ने दुर्योधन के रथ को छिपा लिया तब उसने वह महाशक्ति वङ्गराज के हाथी पर ही खींचकर मारी। उस शक्ति की चोट खाकर वह हाथी मुँह से रक्त उगलता हुआ गिर पड़ा और मर गया। वङ्गनरेश फुर्ती के साथ हाथी पर से पृथ्वी पर कूद पड़े। उस श्रेष्ठ हाथी की मृत्यु और अपनी सेना का भागना देखकर राजा दुर्योधन को बड़ा दुःख हुआ। अपनी सेना को भागते और पराभव स्वीकार करते देखकर, अभिमान और क्षत्रिय-धर्म के ख़याल से, दुर्योधन पर्वत की तरह अटल होकर वहीं खड़े रहे। इसके बाद क्रुद्ध होकर उन्होंने एक कालाग्नि के समान चमकीला भयङ्कर तीक्ष्ण बाण धनुष पर चढ़ाकर उस रौद्र राक्षस को मारा। मायावी राक्षस ने उस बाण के प्रहार को सहज ही निष्फल कर दिया। वह क्रोधान्ध होकर सारी सेना को डराता हुआ प्रलयकाल के मेघ के समान घोर सिंहनाद करने लगा।

पितामह भीष्म उस राक्षस का भयानक शब्द सुनकर द्रोणाचार्य के पास जाकर कहने लगे—हे आचार्य! यह राक्षस जैसा घोर शब्द करके गरज रहा है, उससे जान पड़ता है कि दुर्योधन से इसका विकट युद्ध हो रहा है। आपका कल्याण हो, आप जाकर राजा दुर्योधन की इससे रक्षा करें; क्योंकि संग्राम में कोई प्राणी इसे हरा नहीं सकता। यह राक्षस महाबाहु दुर्योधन पर आक्रमण करके उनको सता रहा है। इस समय दुर्योधन की इससे रक्षा करना हम सबका सर्वोपरि कर्तव्य है।

तब सब महारथी लोग फुर्ती से दुर्योधन के पास जाकर उनकी रक्षा करने लगे। द्रोणाचार्य, सोमदत्त, वाह्लीक, जयद्रथ, कृपाचार्य, भूरिश्रवा, शल्य, विन्द, अनुविन्द, बृहद्बल, अश्वत्थामा, विकर्ण, चित्रसेन और विविंशति आदि सब महारथी और उनके अनुगत कई हज़ार रथी

योद्धा चटपट दुर्योधन के पास पहुँचने का उद्योग करने लगे। शूल, मुद्गर आदि विविध शस्त्र धारण करनेवाले सजातीय राक्षसों से रक्षित घटोत्कच ने उन महारथियों द्वारा सुरक्षित दुर्दमनीय सेना को आते देखकर बड़ा और श्रेष्ठ धनुष चढ़ाकर बाण बरसाना शुरू किया। वह उतनी सेना देखकर भी विचलित नहीं हुआ, मैनाक पर्वत की तरह अटल खड़ा रहा।

दुर्योधन की सब सेना के साथ घटोत्कच घोर युद्ध करने लगा। योद्धाओं के धनुष की टङ्कार जलकर चिटकनेवाले बाँस के शब्द के समान सुन पड़ती थी। कवचों पर बाणों के टकराने का शब्द फटते हुए पर्वत का सा शब्द जान पड़ता था। वीरों के चलाये हुए तोमर आकाश में उड़नेवाले साँप-से देख पड़ते थे। राक्षस घटोत्कच ने क्रुद्ध होकर भयानक सिंह-नाद किया और फिर धनुष चढ़ाकर अर्धचन्द्र बाण से द्रोणाचार्य का धनुष और तीक्ष्ण भल्ल बाण से सोमदत्त की ध्वजा काट डाली। अब वह फिर गरजने लगा। फिर कान तक धनुष की डोरी खींचकर उसने वाह्लीक के हृदय में तीन बाण, कृपाचार्य को एक बाण, चित्रसेन को तीन बाण और विकर्ण के जत्रुदेश में कई बाण मारे। महाबली विकर्ण का शरीर घटोत्कच के बाणों से छिन्न-भिन्न और रक्त से तर हो गया। वे अचेत होकर रथ पर बैठ गये। ३०

इसके बाद प्रभावशाली घटोत्कच ने कुपित होकर भूरिश्रवा को पन्द्रह बाण मारे। वे नाराच वेग से भूरिश्रवा के कवच को फाड़कर पृथ्वी में घुस गये। घटोत्कच ने विविंशति और अश्वत्थामा के सारथियों को कई बाण मारकर घायल कर दिया। दोनों सारथी बाणों की चोट से अत्यन्त व्यथित होकर घोड़ों की रास छोड़कर रथों पर गिर पड़े। महाबली घटोत्कच ने अर्धचन्द्र बाण से सिन्धुराज जयद्रथ की सुवर्णभूषित वराहचिह्नयुक्त ध्वजा काट गिराई। अन्य कई बाणों से उनका धनुष भी काट डाला। क्रोध से लाल आँखें करके घटोत्कच ने चार नाराच बाणों से अवन्तिराज के रथ के चारों घोड़े मार डाले। फिर कई तीक्ष्ण बाण राजकुमार बृहद्बल को मारे। घटोत्कच के बाणों से अत्यन्त व्यथित होकर पराक्रमी बृहद्बल रथ पर गिर पड़े। इसके बाद रथ पर सवार राक्षसराज घटोत्कच ने क्रोध से विह्वल होकर विषैले साँप-सदृश भयङ्कर तीक्ष्ण बाण मारकर युद्धनिपुण शल्य को भी घायल कर दिया। ४० ४३

तिरानबे अध्याय

घटोत्कच का युद्ध

सञ्जय ने कहा—महाराज, राक्षस घटोत्कच इस तरह कौरवपक्ष के सब वीरों को युद्ध-क्षेत्र से हटा करके दुर्योधन को मारने के इरादे से उनकी ओर बढ़ा। आपके पक्ष के सब योद्धा

घटोत्कच को महारथी दुर्योधन की ओर जाते देखकर, ऊँचे दृढ़ धनुष खींचते और सिंहनाद करते हुए उसी तरह घटोत्कच के ऊपर बाण बरसाने लगे, जिस तरह शरत्काल के मेघ पर्वत पर पानी बरसाते हैं। महापराक्रमी घटोत्कच, अंकुश-पीड़ित गजराज की तरह, सैनिकों के बाणों से पीड़ित होकर सहसा गरुड़ की तरह आकाश में चला गया और वहाँ जाकर शरद् ऋतु के मेघ के समान ज़ोर से गरजने लगा। उसके सिंहनाद से आकाश, पृथ्वी, दिशा और विदिशा आदि स्थान गूँज उठे।

धर्मराज युधिष्ठिर ने राक्षस घटोत्कच का विकट सिंहनाद सुनकर भीमसेन से कहा—भाई, वह घटोत्कच का भीषण सिंहनाद सुन पड़ता है। इसलिए वह वीर अवश्य ही महारथी धृतराष्ट्र के पुत्रों से युद्ध कर रहा है। जान पड़ता है, यह युद्ध घटोत्कच के लिए अत्यन्त भयावह हो रहा है। वह इस समय सङ्कट में जान पड़ता है। उधर पितामह भीष्म क्रुद्ध होकर पाञ्चालसेना का संहार करने गये हैं। वीर अर्जुन शत्रुओं से युद्ध करके पाञ्चालों की रक्षा कर रहे हैं। भाई भीम, इस समय ये दो कार्य हैं। तुम शीघ्र जाकर प्राणसङ्कट में पड़े
११ हुए घटोत्कच की रक्षा और अर्जुन की सहायता करो।

बड़े भाई की आज्ञा पाकर महाबली भीमसेन अपने सिंहनाद से शत्रुपक्ष के राजाओं को भीत और उद्विग्न करते हुए, पर्वकाल में उमड़ रहे समुद्र की तरह, बड़े वेग से दौड़े। भीमसेन के साथ युद्धदुर्मद सत्यधृति, सौचित्ति, श्रेणिमान्, वसुदान, काशिराज-तनय अभिभू, द्रौपदी के पाँचों पुत्र, अभिमन्यु, क्षत्रदेव, क्षत्रधर्मा और अपनी सेना सहित अनूपाधिपति राजा नील आदि वीर चले। इन लोगों ने घटोत्कच के पास जाकर उसे, लड़नेवाले और सदा मस्त रहनेवाले, छः हज़ार हाथियों के बीच में कर लिया। इस प्रकार सब लोग घटोत्कच की रक्षा करने लगे। रथों के पहियों की घरघराहट, सिंहनाद और घोड़ों की टापों के शब्द से पृथ्वी काँपने लगी। कौरवपक्ष की सब सेना पाण्डवसेना का कोलाहल सुनकर भीमसेन के डर से घबरा उठी। सब सैनिक उत्साहहीन उदास भाव से घटोत्कच को छोड़कर लौट पड़े।

इस समय दोनों ओर से घोर युद्ध होने लगा। उस भयङ्कर समर में सब महारथी परस्पर आक्रमण करते हुए विविध शस्त्रों से प्रहार करने लगे। दोनों ओर के घुड़सवार, हाथियों के सवारों से और पैदल योद्धा रथियों से ललकारकर प्राणपण से युद्ध करने लगे। उस समय रथों के पहियों से तथा पैदलों, हाथियों और घोड़ों के दौड़ने से धुएँ के रङ्ग की गहरी धूल उड़कर आकाश तक छा गई। नहीं जान पड़ता था कि कौन अपना है और कौन पराया है। पुत्र पिता को और पिता पुत्र को नहीं पहचान पाता था। मनुष्यों के गरजने का शब्द और अस्त्रों की झनकार प्रेतों के शब्द के समान जान पड़ती थी। हाथियों, घोड़ों और मनुष्यों के रक्त की नदी बह चली। मृत मनुष्यों के केश उसमें सेवार और घास के समान देख पड़ते थे। मनुष्यों के मस्तक कट-कटकर पृथ्वी पर गिरते थे, उससे शिलापात का सा शब्द होता था। राजन्! उस समय धड़, छिन्न-भिन्न हाथी और घोड़े युद्धभूमि में सब जगह पड़े हुए देख पड़ते थे। महारथी लोग तरह-तरह के शस्त्र चलाकर एक दूसरे को मारने के लिए झपट रहे थे। २१

सवारों के द्वारा सञ्चालित घोड़े शत्रुपक्ष के घोड़ों से भिड़ते और अन्त को एक दूसरे के प्रहार से दोनों मरकर गिर पड़ते थे। क्रोध से लाल आँखें किये हुए मनुष्य परस्पर आक्रमण करके गिर पड़ते और एक में गुँथे हुए ही मर जाते थे। महावत के चलाये हुए हाथी, शत्रुपक्ष के पताकाओं से शोभित हाथियों के सामने जाकर, उन पर दाँतों की चोट करते थे। घायल और ख़ून से तर हाथी बिजली सहित बादलों के समान देख पड़ते थे। दाँतों के वार से कुछ हाथियों की सूँड़ फट गई थी और कुछ हाथियों के मस्तक तोमर के प्रहार से कट गये थे। वे इधर-उधर चिल्लाते हुए दौड़ते फिरते थे और आकाश में गरजते हुए बादलों के समान जान पड़ते थे। कुछ हाथियों की सूँड़ें कट गईं और कुछ के शरीर घायल हो गये। जिनके पक्ष कट गये हों उन पर्वतों के समान वे हाथी पृथ्वी पर गिरने लगे। हाथियों ने बड़े-बड़े हाथियों की कोखें दाँतों से फाड़ डालीं। उनके शरीरों से वैसे ही रक्त की धारा बह चली जैसे पहाड़ों से गेरू आदि धातुएँ बह चलें। नाराच बाणों से निहत और तोमरों से घायल गरजते हुए हाथी [सवार मरकर गिर जाने से] शिखरशून्य पर्वत-से देख पड़ने लगे। कुछ मदान्ध हाथी अङ्कुशहीन होने पर क्रुद्ध होकर इधर-उधर रथों, घोड़ों और पैदलों को रौंदने लगे। शत्रुपक्ष के घुड़सवारों के प्रास, तोमर आदि शस्त्रों की चोट खाकर घोड़ों के दल इधर-उधर भागने और सब सेना को उद्विग्न करने लगे। वीरवंशों में उत्पन्न क्षत्रिय रथी योद्धा, मरने का दृढ़ निश्चय करके, अपनी शक्ति की पराकाष्ठा दिखाते हुए निर्भय होकर रथी योद्धाओं से लड़ने लगे। योद्धाओं के लिए वह रणभूमि स्वयंवर की सभा-सी हो रही थी। वे विजयकीर्ति या स्वर्गगति पाने की इच्छा से [उन्मत्त-से होकर] परस्पर प्रहार करने लगे। महाराज, इस संग्राम में दुर्योधन की अधिकांश सेना परास्त होकर भाग खड़ी हुई। ३० ४० ४३

चौरानबे अध्याय

घटोत्कच का युद्ध

सञ्जय ने कहा—महाराज, इसके बाद राजा दुर्योधन ने अपनी सेना को विमुख देखकर क्रोध करके भीमसेन की ओर रथ दौड़ाया। वे भीमसेन के ऊपर बाण बरसाने लगे। लोम-युक्त, सान पर तीक्ष्ण किये गये, एक अर्धचन्द्र बाण से उन्होंने भीमसेन का धनुष काट डाला और एक पर्वतभेदी तीक्ष्ण बाण उनकी छाती में मारा। दुर्योधन का बाण इस वेग से लगा कि भीमसेन को ओठ दबाकर ध्वजा का सहारा लेना पड़ा। उनको व्यथित और शिथिल देखकर राक्षस घटोत्कच प्रज्वलित अग्नि के समान क्रोध से उत्तेजित हो उठा।

अभिमन्यु आदि श्रेष्ठ वीर भी गरजते और ललकारते हुए दुर्योधन के पास पहुँचे। उन्हें क्रोध करके दुर्योधन की ओर बढ़ते देखकर द्रोणाचार्य ने अपने महारथियों से कहा—तुम लोग शीघ्र राजा दुर्योधन के पास जाकर उनकी सहायता और रक्षा करो। वे इस समय विपत्ति के सागर में पड़ गये हैं। देखो पाण्डवसेना के महारथी लोग भीमसेन के अनुगामी होकर, जय की इच्छा से, अस्त्र-शस्त्र बरसाकर, सिंह-नाद से राजाओं को उद्विग्न करते हुए, दुर्योधन के समीप आ रहे हैं। द्रोण के ये वचन सुनकर महावीर कृप, भूरिश्रवा, अश्वत्थामा, विविंशति, चित्रसेन, विकर्ण, जयद्रथ, बृहद्बल और अवन्तिदेश के विन्द-अनुविन्द आदि योद्धा फुर्ती के साथ महाराज दुर्योधन को अपने बीच में करके उनकी रक्षा करने लगे। पाण्डवपक्ष और कौरवपक्ष के वे वीर बीस पग आगे बढ़कर परस्पर प्रहार करने लगे। महात्मा द्रोण ने धनुष चढ़ाकर भीमसेन को छब्बीस बाण मारे। पानी की धारा जैसे पहाड़ को ढक लेती है वैसे ही द्रोणाचार्य ने बाणों से भीमसेन को ढक दिया।

भीमसेन ने फुर्ती से द्रोणाचार्य के वाम पार्श्व में दस बाण मारे। उन बाणों से द्रोणाचार्य बहुत व्यथित और अचेत होकर रथ के ऊपर बैठ गये। यह देखकर महाराज दुर्योधन और अश्वत्थामा

दोनों भीमसेन की ओर चले। काल की तरह उन दोनों वीरों को आते देखकर वीर भीमसेन रथ से उतर पड़े। वे एक भारी गदा लेकर पहाड़ की तरह अचल भाव से खड़े हो गये। गदा हाथ में लिये भीमसेन ऊँचे शिखरवाले कैलास पर्वत के समान शोभायमान थे। दुर्योधन और अश्वत्थामा भीमसेन की ओर झपटे, और उधर से भीमसेन भी उनकी ओर झपटे। उस समय द्रोणाचार्य आदि कौरवपक्ष के वीर, श्रेष्ठ रथी भीमसेन को मार डालने के लिए, उनके पास पहुँचकर हृदय में विविध शस्त्र मारकर उन्हें पीड़ा पहुँचाने लगे। २०

महाबली भीमसेन जब कौरवपक्ष के वीरों के बाणों से अत्यन्त व्यथित होकर प्राण-सङ्कट की अवस्था में पड़ गये तब पाण्डवपक्ष के अभिमन्यु आदि महारथी, प्राणों की ममता छोड़कर, उनकी सहायता के लिए दौड़ पड़े। भीमसेन के प्रिय मित्र अनूपेश्वर राजा नील क्रुद्ध होकर अश्वत्थामा के सामने आये। महाराज नील सदा अश्वत्थामा से स्पर्धा रखते थे। इन्द्र ने जैसे दुर्धर्ष, तेजस्वी, त्रिभुवन को त्रास पहुँचानेवाले विप्रचित्ति को मारा था वैसे ही महावीर नील धनुष चढ़ाकर बाण बरसाकर अश्वत्थामा को पीड़ा पहुँचाने लगे। नील के बाणों से अश्वत्थामा का शरीर ख़ून से तर हो गया। वे क्रुद्ध होकर नील को मार डालने का यत्न करने लगे। अश्वत्थामा ने वज्रसदृश शब्द से पूर्ण धनुष पर विचित्र सात भल्ल बाण चढ़ाये। उन्होंने छः भल्ल बाणों से नील के चारों घोड़े मार डाले और ध्वजा काट डाली। सातवाँ बाण नील की छाती में मारा। उस प्रहार से अचेत-से होकर नील रथ पर बैठ गये। ३१

राजा नील को अचेत देख क्रोध से विह्वल राक्षस घटोत्कच, अपने साथी राक्षसों को लेकर, बड़े वेग से अश्वत्थामा का सामना करने आया। और राक्षस भी आक्रमण करने चले। महाबली अश्वत्थामा ने घटोत्कच को देखते ही झपटकर बाणों से भयानक राक्षसों को मारना और गिराना शुरू किया। घटोत्कच ने अपने आगे के राक्षसों को अश्वत्थामा के बाणों से भागते देखकर क्रुद्ध हो, अश्वत्थामा को मोहित करने के लिए, अपनी भयङ्कर माया प्रकट की। ४०

राक्षस की माया से मोहित होकर कौरवपक्ष के वीर पुरुष युद्ध से हट गये। राक्षस के बाणों ने उनके अङ्ग छिन्न-भिन्न कर दिये। असंख्य सैनिक ख़ून से तर होकर, धरती पर गिरकर, कातर दृष्टि से एक दूसरे को देख रहे थे। द्रोण, दुर्योधन, शल्य, अश्वत्थामा आदि कौरव-पक्ष के वीर युद्ध छोड़-छोड़कर हट गये। रथीगण मरने और राजा लोग मर-मरकर गिरने लगे। सैकड़ों-हज़ारों घोड़ों और सवारों के शरीर छिन्न-भिन्न हो गये। मरे और अधमरे लोगों से वहाँ की पृथ्वी भर गई। आपकी सेना को शिविर की ओर भागते देखकर मैं और भीष्म दोनों पुकार-पुकारकर उनसे कहने लगे—"हे सैनिको! भागो नहीं, युद्ध करो। यह सब मायावी घटोत्कच की माया है। इससे मत डरो।" परन्तु राक्षस की माया के प्रभाव से अत्यन्त मोहित होने के कारण वे लोग नहीं ठहरे। हमारी बातों का ख़याल न करके वे भागने लगे।

महाराज, इस तरह जय प्राप्त करके घटोत्कच और पाण्डवगण सिंहनाद करने लगे। पाण्डवसेना में शङ्ख और नगाड़े बजने लगे। उनका शब्द सब ओर छा गया। सूर्यास्त का समय ५० हो आया। घटोत्कच के बाणों से छिन्न-भिन्न होकर आपकी सेना इधर-उधर भागने लगी।

पञ्चानबे अध्याय

भगदत्त का पराक्रम

सञ्जय ने कहा—हे नरनाथ, महाराज दुर्योधन ने पितामह भीष्म के पास जाकर विनीत भाव से प्रणाम किया। फिर लम्बी साँसें ले-लेकर अपनी हार और घटोत्कच की जीत का हाल विस्तार के साथ कहा कि हे पितामह, पाण्डवगण जैसे कृष्ण का आश्रय पाकर उन्हीं के भरोसे युद्ध कर रहे हैं वैसे ही मैंने आपके और गुरु के भरोसे पर पाण्डवों से युद्ध ठाना है। हे शत्रुदमन, मैं और मेरी ग्यारह अक्षौहिणी सेना आपके अधीन है; फिर भी घटोत्कच की सहायता से भीमसेन आदि पाण्डवों ने युद्ध में मुझे जीत लिया! सूखा पेड़ जैसे आग से जलता है वैसे ही मेरा शरीर क्रोध से जल रहा है। इसलिए अब वही उपाय कीजिए जिससे मैं आपका आश्रय लेकर दुष्ट राक्षस को मार सकूँ।

राजा दुर्योधन के ये वचन सुनकर भीष्म ने कहा—राजन्, इस कार्य के लिए तुमको १० जो करना होगा सो मैं कहता हूँ, सुनो। तुम सदा, सब अवस्थाओं में, अपनी रक्षा करते रहो। और देखो, राजा या तो राजा से युद्ध करता है, [या राजकुमार से] इसलिए तुम धर्मराज, भीमसेन, अर्जुन, नकुल या सहदेव से ही युद्ध करना। मैं, द्रोणाचार्य, कृपाचार्य, अश्वत्थामा, कृतवर्मा, शल्य, सौमदत्ति, विकर्ण और दुःशासन आदि तुम्हारे भाई, सब लोग तुम्हारे लिए महाबली राक्षस घटोत्कच से युद्ध करेंगे। अथवा यदि तुमको उस राक्षस से ऐसा ही सन्ताप पहुँचा है तो ये इन्द्र के समान प्रतापी महाराज भगदत्त उस राक्षस के साथ युद्ध करने जायँ। महावीर भीष्म ने दुर्योधन से यह कहकर सबके सामने भगदत्त से कहा—महाराज, तुम शीघ्र जाकर सब योद्धाओं के सामने यत्नपूर्वक युद्ध में प्रचण्ड अधम राक्षस को रोको। जैसे इन्द्र ने तारकासुर को मारा था वैसे इस राक्षस को जीतो। तुम्हारा पराक्रम अद्भुत है और अस्त्र भी दिव्य हैं। तुम पहले असुरों के साथ युद्ध कर चुके हो। अतएव इस समय अपने २० से स्पर्धा रखनेवाले दुरात्मा घटोत्कच को शीघ्र मारो।

पराक्रमी सेनापति भीष्म की आज्ञा पाकर राजा भगदत्त, सुप्रतीक नाम के हाथी पर चढ़कर, सिंहनाद करते हुए शत्रुओं की ओर चले। पाण्डवपक्ष के महारथी भीमसेन, अभिमन्यु, राक्षस घटोत्कच, द्रौपदी के पाँचों पुत्र, सत्यधृति, क्षत्रदेव, चेदिराज, वसुदान और दशार्णदेश के राजा आदि वीर लोग भी प्रलयकाल के मेघ के समान गरजते हुए भगदत्त को आते देखकर,

क्रुद्ध होकर, उनकी ओर चले। इसके बाद भगदत्त के साथ पाण्डवों का घोर संग्राम होने लगा। रथी लोग हाथियों और रथों के ऊपर बड़े वेग से बाण बरसाने लगे। सवारों के द्वारा सुशिक्षित मस्त हाथी स्वयं घायल होकर भी दूसरे हाथियों से निर्भय भाव से भिड़ने लगे। मदान्ध और क्रोधान्ध गजराज परस्पर भिड़कर दाँतों का प्रहार करने लगे। चामरभूषित घोड़े, प्रास हाथ में लिये हुए सवारों के द्वारा चलाये जाकर, वेग के साथ परस्पर आक्रमण और प्रहार करने लगे। सैकड़ों-हज़ारों पैदल सेना के दल परस्पर शक्ति, तोमर आदि शस्त्रों के प्रहार करके पृथ्वी पर गिरने लगे। रथों पर बैठकर रथी लोग कर्णी, नालीक और तोमर आदि बाणों से वीरों को मारकर सिंहनाद करने लगे। ३०

राजन्! इस तरह रोंगटे खड़े कर देनेवाला संग्राम मच जाने पर महाधनुर्द्धर भगदत्त, झरनों से शोभित पहाड़ के समान बहते हुए मदजल से सुशोभित, हाथी पर चढ़कर चारों ओर बाण बरसाते हुए भीमसेन की ओर दौड़े। वर्षाकाल का मेघ जैसे जलधारा से पर्वत को ढक देता है वैसे ही उन्होंने भीमसेन को बाणों से छिपा दिया। महावीर भीम ने क्रोध से अधीर होकर सौ से अधिक हाथी के चरणरक्षकों को बाणों से मार डाला। महा-तेजस्वी राजा भगदत्त ने उनको मरा हुआ देख क्रुद्ध होकर अपने हाथी को भीमसेन के रथ की ओर बढ़ाया। भगदत्त के द्वारा सञ्चालित वह हाथी धनुष से छूटे हुए तीर की तरह भीमसेन के ऊपर झपटा। इसी समय पाण्डवपक्ष के सब महारथी भीमसेन के पीछे-पीछे वेग से आगे बढ़े। अभिमन्यु, द्रौपदी के पाँचों पुत्र, दशार्णराज, क्षत्रदेव, चेदिराज, चित्रकेतु और केकय-गण क्रोध के मारे महाधनुष चढ़ाकर, चारों ओर से घेरकर, उस हाथी पर दिव्य अस्त्र छोड़ने लगे। वह गजराज बाणों के प्रहार से बहुत ही घायल हो गया। उसके शरीर से रक्त बहने लगा। वह गेरू से रँगे हुए गिरिराज की तरह शोभायमान हुआ। ३९

दशार्ण देश के राजा पर्वततुल्य ऊँचे हाथी पर चढ़कर भगदत्त के हाथी की ओर बढ़े। तटभूमि जैसे महासागर के जल को रोकती है वैसे ही सुप्रतीक ने उस हाथी के वेग को रोका और उस हाथी ने भगदत्त के सुप्रतीक हाथी का वेग रोका। यह देखकर पाण्डवगण और उनकी सेना "वाह वाह" करने लगी। तब राजा भगदत्त ने क्रुद्ध होकर शत्रु के हाथी को चौदह तोमर मारे। साँप जैसे बाँबी में घुसता है वैसे ही वे तोमर, हाथी पर पड़े हुए सुवर्ण-मय कवच को तोड़कर, उसके शरीर में घुस गये। दशार्णाधिपति का हाथी इससे बहुत घायल होकर भयानक शब्द से चिल्लाने लगा और वेग से चलनेवाली आँधी जैसे पेड़ों को तोड़ती है वैसे अपने ही पक्ष की सेना को रौंदता हुआ बड़े वेग से भागा।

इस तरह दशार्णराज का हाथी भाग जाने पर पाण्डवपक्ष के सब महारथी युद्ध के लिए उद्यत होकर, भीमसेन को आगे करके, सिंह की तरह गरजते और तीक्ष्ण अस्त्र-शस्त्र बरसाते

५१ हुए भगदत्त पर आक्रमण करने चले। महाधनुर्द्धर भगदत्त ने उन कुपित वीरों का सिंहनाद सुनकर, बहुत ही क्रुद्ध होकर, निर्भय भाव से अपने हाथी को उनकी ओर बढ़ाया। अङ्कुश का इशारा पाते ही गजराज सुप्रतीक प्रलयकाल के संवर्तक अग्नि के समान क्रोध से प्रज्वलित हो उठा। वह सामने पड़नेवाले हाथियों, घोड़ों, सवारों और सैकड़ों-हज़ारों पैदलों तथा रथों को रौंदता हुआ तेज़ी से दौड़ा। पाण्डवों की सेना आग में पड़े चमड़े की तरह डर से सङ्कुचित हो उठी।

उधर प्रदीप्त-मुख और प्रदीप्त-नयन महाबली घटोत्कच बड़ा भयानक रूप धारण करके, क्रोध से प्रज्वलित होकर, पर्वत को भी तोड़ सकनेवाला एक भयङ्कर शूल हाथ में लेकर राजा ६० भगदत्त की ओर दौड़ा। उसने हाथी को, मारने के लिए, वह शूल मारा। यह देखकर कुपित महाराज भगदत्त ने एक तीक्ष्ण अर्धचन्द्र बाण मारकर उस शूल के दो टुकड़े कर डाले। इन्द्र के चलाये वज्र के समान वह शूल दो टुकड़े होकर पृथ्वी पर गिर पड़ा। अब भगदत्त ने "ठहर जा, ठहर जा" कहकर एक अग्निशिखातुल्य घोर शक्ति राक्षस को मारी। उस सुवर्ण-दण्ड-भूषित शक्ति को आकाश में आते हुए वज्र की तरह देखकर घटोत्कच ने उछलकर पकड़ लिया और सिंहनाद करके भगदत्त के सामने ही घुटनों से उसके दो टुकड़े कर डाले। उसका यह कार्य अत्यन्त अद्भुत जान पड़ा। देवलोक में देवता, गन्धर्व और मुनिगण उस राक्षस के इस अद्भुत कर्म को देखकर बहुत विस्मित हुए। भीमसेन और उनके साथी वीरगण 'वाह वाह' के शब्द से पृथ्वी-मण्डल को प्रतिध्वनित करने लगे। परम-प्रसन्न पाण्डवों का सिंहनाद सुनकर महा-धनुर्द्धर भगदत्त अत्यन्त अधीर हुए। दृढ़ धनुष चढ़ाकर वे पाण्डवों के महा-७० रथियों को डरवाने लगे। वे शत्रुपक्ष के वीरों पर भयानक अग्नितुल्य बाण बरसाने लगे। उन्होंने भीमसेन को एक बाण, घटोत्कच को नव बाण, अभिमन्यु को तीन बाण और केकयकुमारों को पाँच बाण मारे। इसके बाद धनुष पर एक बाण चढ़ाकर क्षत्रदेव के दाहने हाथ में मारा। इससे क्षत्रदेव के हाथ से धनुष और बाण गिर पड़ा। भगदत्त ने फिर

पाँच तीक्ष्ण बाण द्रौपदी के पुत्रों को मारे। फिर महावीर भीमसेन के घोड़ों को मारकर तीन बाणों से ध्वजा काट डाली और अन्य तीन बाणों से सारथी को घायल कर दिया। उनका सारथी विशोक उस प्रहार से अत्यन्त पीड़ित होकर रथ पर गिर पड़ा।

अब श्रेष्ठ रथी भीमसेन गदा लेकर रथ से उतर पड़े, और बड़े वेग से शत्रु की ओर दौड़े। उन्हें शृङ्गयुक्त पर्वत की तरह आते देखकर कौरवपक्ष के वीर डर से विह्वल हो उठे। उधर अर्जुन चारों ओर शत्रुओं की सेना को मारते हुए उस स्थान पर आये जहाँ भीम और घटोत्कच के साथ भगदत्त का युद्ध हो रहा था। महारथी भाइयों को युद्ध करते देखकर वे भी शत्रुसेना के ऊपर तीक्ष्ण बाण बरसाने लगे। राजा दुर्योधन ने हाथी, घोड़े, रथ आदि से परिपूर्ण और भी बहुत सी सेना युद्ध के लिए भेजी। अर्जुन उस नई आती हुई कौरव-सेना को मारने के लिए उसकी ओर चले। राजा भगदत्त अपने हाथी से पाण्डवसेना को रौंदवाते हुए बड़े वेग से युधिष्ठिर की ओर चले। उस समय शस्त्र उठाये हुए पाञ्चाल, सृञ्जय, केकय आदि के साथ भगदत्त का घोर संग्राम होने लगा। उसी समय भीमसेन ने श्रीकृष्ण और अर्जुन से इरावान् की मृत्यु का हाल कहा। ८० ८९

छियानवे अध्याय

आठवें दिन के युद्ध की समाप्ति

सञ्जय ने कहा—महाराज, अपने पुत्र इरावान् की मृत्यु का हाल सुनकर अर्जुन को बड़ा दुःख हुआ। क्रोध से विह्वल होकर नाग की तरह साँसें लेते हुए वे श्रीकृष्ण से कहने लगे—हे केशव, पहले ही महामति विदुर ने कौरवों और पाण्डवों के प्रियजन-वियोगरूप अति घोर भय का हाल जानकर हमको और दुर्योधन आदि को युद्ध न करने का उपदेश दिया था। देखो, हमने कौरवपक्ष के बहुत से वीरों को और कौरवों ने हमारे बहुत से वीरों को मार डाला है। मित्र! लोग धन के लिए ही बुरे और निन्दित काम करते हैं। हम भी उसी धन के लिए जातिवधरूप पाप कर रहे हैं। धन को धिक्कार है! जाति-भाइयों को मारकर धनी बनने की अपेक्षा मर जाना ही निर्धन मनुष्य के लिए अच्छा है। हे वासुदेव, इन भाइयों और जाति-वालों को मारकर हमें क्या लाभ होगा? दुष्ट दुर्योधन और शकुनि के अपराध तथा कर्ण की कुमन्त्रणा से ये सब वीर क्षत्रिय मारे जा रहे हैं। अब मेरी समझ में आया है कि पहले राजा युधिष्ठिर दुर्योधन से आधा राज्य या केवल पाँच गाँव माँगकर अच्छा ही काम कर रहे थे; किन्तु दुष्ट दुर्योधन उस समझौते पर राज़ी नहीं हुआ। हे केशव, इस समय इन वीर क्षत्रियों की मृत्यु देखकर मैं आप अपनी निन्दा कर रहा हूँ! क्षत्रियवृत्ति को धिक्कार है! जाति-

भाइयों से लड़ने की इच्छा मुझे बिल्कुल नहीं है; किन्तु मैं युद्ध न करूँगा तो वीर क्षत्रिय-
१० गण मुझे कायर समझेंगे। इसी से मैं युद्ध कर रहा हूँ। हे मधुसूदन, दुर्योधन की सेना के बीच शीघ्र मेरा रथ ले चलो। मैं अपने बाहुबल से इस अ-पार समर-सागर के पार जाऊँगा। नामर्द की तरह वृथा पछतावे में पड़ना और समय गँवाना उचित नहीं है।

शत्रुपक्ष के वीरों को मारनेवाले अर्जुन के ये वचन सुनकर कृष्णचन्द्र, पवन के वेग से चलनेवाले घोड़ों को हाँककर, उधर ही रथ ले चले। पर्वकाल में उमड़ते हुए समुद्र में जैसा शब्द होता है वैसा ही कोलाहल उस समय कौरवों की सेना में होने लगा। तीसरे पहर भीष्म के साथ पाण्डवों का घोर युद्ध होने लगा। जिस तरह वसुगण इन्द्र को चारों ओर से घेरे रहते हैं उसी तरह धृतराष्ट्र के पुत्र द्रोणाचार्य को अपने बीच में करके भीमसेन की ओर बढ़े। अब महारथी भीष्म, कृपाचार्य, भगदत्त और सुशर्मा अर्जुन से लड़ने चले। कृतवर्मा और वाह्लीक सात्यकि से लड़ने चले। राजा अम्बष्ठक अभिमन्यु से लड़ने चले। अन्य महारथी लोग अपने समान महारथियों से लड़ने लगे। इसके बाद दोनों पक्षों में महाभयानक युद्ध होने लगा।
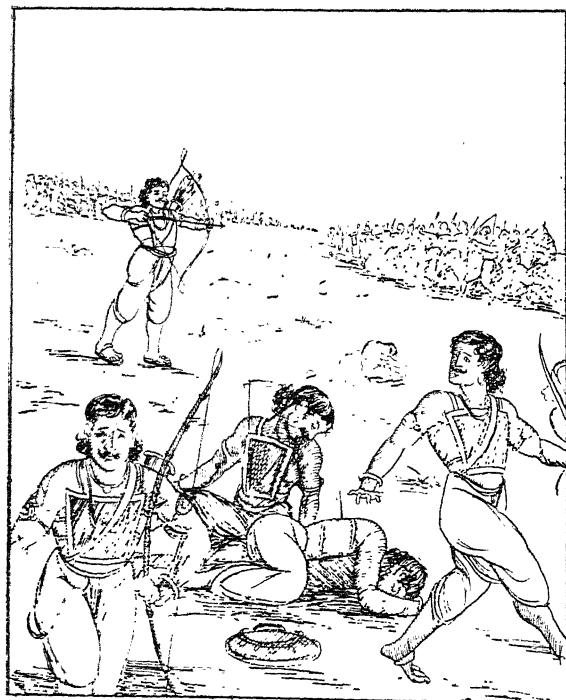
आपके पुत्रों को देखकर महावीर भीमसेन आहुति पड़ने से प्रज्वलित अग्नि के समान क्रोध से प्रज्वलित हो
२० उठे। आपके पुत्र वैसे ही भीमसेन पर बाण बरसाने लगे जैसे बादल पहाड़ पर पानी बरसाते हैं। पराक्रमी भीमसेन क्रोध से ओठ चाटते हुए आपके पुत्रों पर बाण बरसा रहे थे। उन्होंने तीक्ष्ण क्षुरप्र बाण से व्यूढोरस्क नाम के राजकुमार का सिर काट डाला। फिर एक तीक्ष्ण भल्ल बाण मारकर कुण्डली नाम के राजकुमार को वैसे ही मार डाला जैसे सिंह मृग को मार डालता है। अब वे फुर्ती के साथ आपके अन्य पुत्रों पर बाण बरसाने लगे। राजन्! भीमसेन के अव्यर्थ बाणों के प्रहार से अनाधृष्य, कुण्डभेदी, वैराट, दीर्घलोचन, दीर्घबाहु, सुबाहु और कनकध्वज नामक आपके पुत्र मरकर रथ पर से गिर पड़े। पृथ्वी पर पड़े हुए वे वीर राजकुमार उखड़कर गिरे हुए

पुष्प-पूर्ण आम के वृक्षों की तरह देख पड़े। महाबाहु भीमसेन को साक्षात् काल के समान सामने देखकर आपके अन्य पुत्र डर के मारे इधर-उधर भागने लगे।

महाराज, महावीर द्रोणाचार्य भीमसेन के हाथों आपके पुत्रों की मृत्यु देखकर उन पर तीक्ष्ण बाणों की वर्षा करने लगे। द्रोण के बाणों से पीड़ित होकर भी भीमसेन ने आपके पुत्रों को मारकर अपने अद्भुत पौरुष का परिचय दिया। बली साँड़ जैसे आकाश से गिरती हुई बूँदों के वेग को सहज ही सह लेता है, वैसे ही भीमसेन भी द्रोणाचार्य के बाणों को सहने लगे। भीमसेन ने एक साथ द्रोणाचार्य का सामना किया और आपके पुत्रों को भी मारा, यह देखकर सबको बड़ा आश्चर्य हुआ। महाराज, बाघ जैसे मृगों के झुण्ड में घूमता और क्रीड़ा करता है वैसे ही महाबली भीमसेन भी आपके पुत्रों के बीच में विचरते हुए युद्ध की क्रीड़ा करने लगे। एक भेड़िया जैसे हज़ारों पशुओं को मार डालता है वैसे ही भीमसेन आपके पुत्रों के बीच में जाकर उन्हें भगाने लगे। ३०

इधर महारथी भीष्म, भगदत्त और कृपाचार्य अतुलबलधारी अर्जुन को बड़े वेग से आते देखकर फुर्ती के साथ उन्हें रोकने लगे। अतिरथी योद्धा अर्जुन ने अपने दिव्य अस्त्रों से उनके अस्त्रों को निष्फल कर दिया। वे चुन-चुनकर कौरवसेना के मुख्य वीरों को मारने लगे। अभिमन्यु ने असंख्य बाण मारकर राजा अम्बष्ठ के रथ के टुकड़े-टुकड़े कर डाले। अभिमन्यु के बाणों से रथ टूटते देखकर राजा अम्बष्ठ रथ से उतर पड़े और अभिमन्यु पर तलवार का वार करके हार्दिक्य के रथ पर चढ़ गये। युद्धनिपुण शत्रुदमन अभिमन्यु ने अम्बष्ठ के उस खड्ग को टुकड़े-टुकड़े कर डाला। यह देखकर सब सैनिक "वाह वाह" करने लगे। ४०

महाराज, धृष्टद्युम्न आदि पाण्डवपक्ष के योद्धा आपकी सेना से और आपके योद्धा उनकी सेना से भिड़कर घोर युद्ध करने लगे। दोनों पक्ष के सैनिक परस्पर भिड़कर एक दूसरे के केश पकड़कर खींचते और नख, दाँत, घूँसे, घुटने, थप्पड़, खड्ग, कुहनी आदि के प्रहारों से मरते और मारते थे। युद्ध के आवेश में आकर पिता पुत्रों को और पुत्र पिता आदि को मार रहे थे। शत्रुपक्ष के बाणों से योद्धाओं के अङ्ग कट-फट जाते थे। मरे हुए लोगों के सुवर्णमण्डित पीठ और मूठ-वाले मनोहर धनुष और बहुमूल्य अलङ्कार युद्धभूमि में इधर-उधर दिखाई दे रहे थे। सोने-चाँदी से शोभित, पैने बाण केंचुल से निकले हुए नागों की तरह रणभूमि में गिरते थे। हाथीदाँत की मूठों से शोभित सुवर्णमण्डित खड्ग, ढालें, प्रास, पट्टिश, सुवर्णमण्डित ऋष्टि, शक्ति, बढ़िया कवच, भारी मूसल, भिन्दिपाल, विचित्र स्वर्णभूषित धनुष, तरह-तरह के परिघ, चामर, व्यजन और अन्य कई तरह के अस्त्र-शस्त्रों को हाथ में लिये महारथी वीर मर जाने पर भी दूर से जीवित से जान पड़ते थे। बहुतों के शरीर गदा के प्रहार से चिथड़ा हो गये थे, बहुतों के सिर मूसल की चोट से फट गये थे और बहुत से योद्धा हाथी, घोड़े, रथ आदि के नीचे कुचल गये थे। ऐसे ४९

असंख्य मनुष्य जहाँ-तहाँ पड़े हुए थे। हाथियों, घोड़ों और मनुष्यों के शरीरों के ढेरों से वह पृथ्वी पर्वतमयी सी जान पड़ती थी। शस्त्रों से छिन्न-भिन्न नर-शरीरों से और शक्ति, ऋष्टि, तोमर, बाण, खड्ग, पट्टिश, प्रास, बर्छी, परशु, परिघ, भिन्दिपाल और शतघ्नी आदि से पृथ्वी पटी पड़ी थी। महाराज! उनमें से कोई चुपचाप पड़ा था, कोई धीरे-धीरे कराह रहा था, कोई ज़ोर से चिल्ला रहा था और कोई बिलकुल मरा पड़ा था। केयूरभूषित चन्दनचर्चित बाहु, हाथी ६० की सूँड़ के समान जाँघें, चूड़ामणि और कुण्डलों से भूषित सिर सर्वत्र कटे पड़े थे। उनसे रणभूमि की अपूर्व बीभत्स शोभा हो रही थी। खून से सने हुए स्वर्णमय कवच चारों ओर पड़े हुए थे, जिनसे वह युद्धभूमि अग्निशिखामयी-सी प्रतीत होती थी। सुवर्णपुङ्ख बाण, धनुष, तर्कस, किङ्किणीजालभूषित टूटे हुए रथ, खून से तर निकली हुई जीभ, घोड़े, रथ, अनुकर्ष, पताका, मटमैली ध्वजा, महाशङ्ख आदि सर्वत्र पड़े थे। उनसे वह पृथ्वी अलङ्कारों से भूषित स्त्री के समान शोभायमान हो रही थी। हाथियों की सूँड़ें कट गई थीं और वे पृथ्वी पर पड़े थे। प्रास के प्रहार से घायल और गहरी यन्त्रणा से पीड़ित हाथी चीत्कार करते हुए सूँड़े पटक रहे थे। उनसे वह पृथ्वी झरनों से शोभित पहाड़ों से व्याप्त-सी जान पड़ती थी। तरह-तरह के कम्बल. हाथियों की विचित्र झूलें, वैडूर्यमणिमण्डित दण्ड, अङ्कुश, घण्टा, फटे हुए विचित्र ७० आसन, विचित्र कण्ठभूषण, सोने की ज़ञ्जीरें, छिन्न-भिन्न यन्त्र, काञ्चनमण्डित तोमर, धूल से सने हुए छत्र, कवच, सवारों की अङ्गदभूषित कटी हुई भुजाएँ, विमल तीक्ष्ण प्रास, यष्टि, पगड़ी, सुवर्णमय विचित्र बाण, घोड़ों के परिमर्दित विचित्र कम्बल, राङ्कव कम्बल, राजाओं के मस्तक की विचित्र चूड़ामणि, छत्र, चामर, व्यजन और वीरों के मनोहर कुण्डलों से शोभित श्मश्रुयुक्त प्रकाशपूर्ण सिर इधर-उधर पड़े थे। उनसे वह पृथ्वी ग्रह-नक्षत्र-भूषित आकाश के समान शोभा पा रही थी।

हे नरनाथ, दोनों पक्ष के वीर जब अधिकता से मारे जा चुके तब मरने से बचे हुए योद्धा थककर भागने और कुचले जाने लगे। इतने में महाभयङ्कर रात्रि आ गई। उस समय समरभूमि में कुछ नहीं सूझता था। तब कौरवों और पाण्डवों ने युद्ध समाप्त कर दिया। ८० सब लोग अपने-अपने डेरे में जाकर विश्राम करने लगे।

सत्तानबे अध्याय

पाण्डवों को परास्त करने की सलाह

सञ्जय ने कहा—राजन्! इसके बाद राजा दुर्योधन, शकुनि, दुःशासन और कर्ण मिलकर सलाह करने लगे कि किस तरह सेना सहित पाण्डवों को परास्त किया जाय। दुर्योधन ने कर्ण और शकुनि को सम्बोधन करके कहा—हे वीरो! समझ में नहीं आता कि द्रोणाचार्य,

भीष्म, कृपाचार्य, शल्य और भूरिश्रवा, ये लोग पाण्डवों को क्यों नहीं परास्त करते या मारते। पाण्डव लोग जीवित रहकर बिना किसी बाधा के हमारे पक्ष की सेना को नष्ट कर रहे हैं। हे कर्ण, मेरी सेना और अस्त्र-शस्त्र दिन-दिन घटते जा रहे हैं। सुनता हूँ, पाण्डवों को देवता भी नहीं मार सकते। वे ऐसे ही शूर हैं। मैं उन्हें किस तरह मारूँगा या परास्त करूँगा? मुझे बड़ा सन्देह और चिन्ता हो रही है।

कर्ण ने कहा—राजन्, आप शोक न करें। मैं आपका प्रिय करूँगा। केवल पितामह भीष्म को शीघ्र इस रण से अलग हो जाने दो। मैं प्रतिज्ञा करता हूँ कि भीष्म अस्त्र-शस्त्र त्यागकर युद्ध से हट जायँ तो मैं, उनके सामने ही, सोमकों सहित पाण्डवों को मार डालूँगा। भीष्म पितामह पाण्डवों पर बहुत दया रखते हैं। इस कारण वे कभी पाण्डवों को परास्त नहीं कर सकेंगे। भीष्म अत्यन्त समर-प्रिय हैं। वे अभिमानी भीष्म कैसे पाण्डवों को जीतकर युद्ध को समाप्त कर देंगे? राजन्, आप शीघ्र भीष्म के शिविर में जाइए। वे आपके गुरुजन, वृद्ध और मान्य हैं। आप उनसे प्रार्थनापूर्वक अनुरोध कीजिए जिससे शस्त्र रखकर वे युद्ध से अलग हो जायँ। वे शस्त्रत्याग कर देंगे तो आप निश्चय जानिए, मैं अकेला ही बन्धु-बान्धव-सुहृद्गण-सहित पाण्डवों को मार डालूँगा।

१०

राजन्, कर्ण के वचन सुनकर दुर्योधन ने दुःशासन से कहा—भाई, शीघ्र मेरे साथियों को तैयार होने की आज्ञा दो। अब दुर्योधन ने कर्ण से कहा कि हे शत्रुदमन, मैं भीष्म को अस्त्र-शस्त्र त्यागकर युद्ध से अलग होने के लिए राज़ी करके अभी तुम्हारे पास आता हूँ। भीष्म युद्ध करना छोड़ देंगे तो तुम शीघ्र युद्ध करके पाण्डवों को मारना।

महाराज, कर्ण से यों कहकर देवताओं के बीच में इन्द्र के समान अपने भाइयों के साथ राजा दुर्योधन भीष्म के पास जाने को तैयार हुए। दुःशासन ने पराक्रमी दुर्योधन को घोड़े पर सवार कराया। सिंह के समान रोबीले वीर दुर्योधन ने अङ्गद, मुकुट और हाथों के अन्य

आभूषण पहने। वे मजीठ के फूल के समान कान्तिवाले, सुनहरे रङ्ग के, शरीर में सुगन्धित
२१ चन्दन और अङ्गराग लगाये हुए थे। साफ़ कपड़े और गहने पहने सूर्य के समान तेजस्वी राजा दुर्योधन फुर्ती से भीष्म के शिविर को चले। जैसे देवगण देवलोक में इन्द्र की रक्षा करने के लिए उनके पीछे-पीछे चलते हैं वैसे ही दुर्योधन के भाई और अन्य महारथी वीर तथा सुहृद्गण शस्त्र लेकर, दुर्योधन की रक्षा के लिए, उनके पीछे चले। कोई हाथी पर, कोई घोड़े पर और कोई रथ पर चढ़कर चले।

कौरवों के द्वारा पूजित, भाइयों के बीच में स्थित, राजा दुर्योधन सूतमागधगण के मुँह से अपनी स्तुति सुनते हुए भीष्म के शिविर को चले। वे राह में हाथी की सूँड़ के समान सुदृढ़, सब शत्रुओं को पीड़ा पहुँचानेवाला, दाहना हाथ उठाकर अनुगत लोगों के प्रणामों को स्वीकार
३० करते, नाना देश-निवासियों की बातें सुनते और स्तुति करनेवालों को पुरस्कार देते चले। भृत्यगण सुवर्णमय मशालें लेकर उनके चारों ओर दौड़ते चले। सुगन्धित तेल से जलनेवाली मशालों के बीच राजा दुर्योधन चमकीले ग्रहों के मध्य में चन्द्रमा के समान शोभायमान हुए। सुनहरी पगड़ी पहने नौकर लोग बेंत से भीड़ हटाते हुए आगे-आगे चलने लगे।

राजा दुर्योधन धीरे-धीरे भीष्म के शिविर में पहुँचकर सवारी से उतरे और पितामह के पास गये। उन्हें प्रणाम करके, सर्वतोभद्र महामूल्य ग़लीचे के ऊपर सोने के सिंहासन पर बैठकर, हाथ जोड़कर आँखों में आँसू भरे हुए वे गद्‌गद स्वर से कहने लगे—हे शत्रुनाशन! हम आपका सहारा लेकर पाण्डवों की कौन कहे, देवताओं और दानवों को भी युद्ध में परास्त करने का साहस कर सकते हैं। इसलिए हे पितामह, इन्द्र जैसे दानवों को परास्त करते हैं वैसे ही आप पाण्डवों को परास्त कीजिए। हे महामति! आप सब सोमकों, पाञ्चालों, कैकेयों और करूषों को परास्त
४० करने का वादा कर चुके हैं। इस समय वह अपना वचन सत्य कीजिए। अथवा जो आप पाण्डवों पर दया या हम पर विद्वेष की दृष्टि रखने के या हमारे अभाग्य के कारण पाण्डवों को मार डालना न चाहते हों तो फिर युद्धप्रिय कर्ण को युद्ध करने की आज्ञा दे दीजिए। वे समर में बन्धु-बान्धवों-सहित पाण्डवों को परास्त करके मार डालने के लिए तैयार हैं।
४३ कौरवश्रेष्ठ दुर्योधन भीष्म से यह कहकर चुप हो रहे।

अट्ठानबे अध्याय

भीष्म पितामह और दुर्योधन का संवाद

सञ्जय कहते हैं—हे राजन्, वाक्य-बाण द्वारा दुर्योधन ने भीष्म पितामह के मर्मस्थल में चोट पहुँचाई। वे दुःख से अत्यन्त कातर और व्यथित होकर महानाग की तरह साँसें लेते हुए चुप रहे। दूसरे काल के समान भीष्म की आँखें क्रोध से लाल होकर ऊपर चढ़ गईं। वे

इस तरह देखने लगे मानों देवता-दैत्य-गन्धर्व-मनुष्य आदि सहित तीनों लोकों को भस्म कर डालेंगे; किन्तु उन्होंने कोई अप्रिय या रूखी बात नहीं कही। दम भर बाद शान्त-भाव से समझाते हुए पितामह बोले—सुनो दुर्योधन, मैं प्राणों की परवा न करके यथाशक्ति यत्नपूर्वक तुम्हारा प्रिय करने की चेष्टा कर रहा हूँ। तब भी तुम ऐसे वचन-बाणों से क्यों मेरे मर्मस्थल को चोट पहुँचाते हो? अर्जुन ने खाण्डव-दाह के समय इन्द्र आदि देवताओं को जीतकर अग्नि को तृप्त किया था, वही उनके पराक्रम का यथेष्ट प्रमाण है। गन्धर्वगण जब तुमको पकड़कर ले चले थे, तुम्हारे शूर भाई और कर्ण तुमको छोड़कर भाग गये थे तब अर्जुन, तुमको छुड़ाकर, अपने पराक्रम का यथेष्ट परिचय दे चुके हैं। विराट नगर में गायें हरने के समय हम सब योद्धा मिलकर भी अकेले अर्जुन का कुछ नहीं कर सके; बल्कि उन्होंने हम सबको जीत लिया। यही उनके बल का यथेष्ट परिचय है। उस समय अर्जुन कुपित द्रोणाचार्य को, मुझको, महारथी अश्वत्थामा को और कृपाचार्य को जीतकर हम सबके कपड़े उतार ले गये थे; वही उनके बल का श्रेष्ठ निदर्शन है। अपने को शूर और मर्द मानकर सदा अभिमान करनेवाले कर्ण को भी उस समय जीतकर अर्जुन उसके कपड़े ले गये थे और उसके वे कपड़े बालिका उत्तरा को दिये थे; वही उनके पराक्रम का अच्छा नमूना है। इन्द्र भी जिन्हें हरा नहीं सके उन निवात-कवच दानवों को अर्जुन ने सहज में मार डाला; यही उनके बल का श्रेष्ठ प्रमाण है। राजन्! नारद आदि महर्षि जिन्हें महाशक्तिसम्पन्न, सृष्टि-स्थिति-प्रलयकारी, सबके ईश्वर, देवदेव, परमात्मा और सनातन पुरुष कहते हैं, वह शङ्ख-चक्र-गदा-पद्मधारी, विश्व-रक्षक, वासुदेव अर्जुन के सहायक और रक्षक हैं। उन महाप्रतापी यशस्वी अर्जुन को युद्ध में कौन परास्त कर सकता है? १०

हे दुर्योधन, मोह के वश होने से तुम्हें कार्य-अकार्य का ज्ञान नहीं है। मृत्यु के वश मनुष्य जैसे साधारण वृक्षों को सुवर्णमय देखता है वैसे ही तुम सब बातों को विपरीत देख रहे हो। तुमने आप ही पहले अन्याय करके सृञ्जयों और पाण्डवों के साथ वैरभाव उत्पन्न किया है। इस समय हम लोगों के सामने उनको युद्ध में हराकर अपना पौरुष दिखाओ। या तो मैं शिखण्डी के सिवा सब सृञ्जयों और पाञ्चालों को मारकर तुम्हारा प्रिय करूँगा या मैं स्वयं उनके हाथ से मारा जाऊँगा। शिखण्डी अपने पिता के यहाँ पहले स्त्री-रूप में उत्पन्न होकर पीछे यक्ष के वरदान से पुरुष हुआ है। वास्तव में वह स्त्री ही है। हे भारत, मैं प्राण भले दे दूँगा, परन्तु उस पर वार नहीं करूँगा। क्योंकि पहले विधाता ने उसे स्त्री-रूप से उत्पन्न किया है। हे दुर्योधन, अब तुम जाकर आराम करो। मैं कल महाघोर युद्ध करूँगा। जब तक पृथ्वी रहेगी, तब तक मेरे उस युद्ध की चर्चा रहेगी। २०

सञ्जय कहते हैं—हे धृतराष्ट्र, भीष्म ने जब आपके पुत्र दुर्योधन से यह कहा तब उन्होंने सिर झुकाकर उन्हें प्रणाम किया। फिर वे अपने शिविर में आकर सुख से लेटकर विश्राम

करने लगे। रात बीत गई। सबेरा होने पर उठकर दुर्योधन ने सब राजाओं को आज्ञा दी कि हे वीरो, तुम लोग सेना तैयार करो। आज भीष्म कुपित होकर सोमकों को मारेंगे।

राजन्, रात को भीष्म ने दुर्योधन के उन वचनों को अपने लिए तिरस्कार समझा। वे पराधीनता की बहुत निन्दा करके खिन्न होकर अर्जुन से युद्ध करने के बारे में सोचते रहे। उनके ३० इस भाव को समझकर दुर्योधन ने दुःशासन से कहा—हे दुःशासन, तुम भीष्म की रक्षा के लिए असंख्य रथी और सेना के बाईस बड़े-बड़े दल भेजो। मैं बहुत दिनों से सोचता आ रहा हूँ कि सेना सहित पाण्डवों को मारकर राज्य प्राप्त करूँगा। इस घड़ी वही समय उपस्थित है। इस समय युद्ध में सब तरह भीष्म की रक्षा करना ही मुझे श्रेयस्कर जान पड़ता है क्योंकि वे हमारे प्रधान सहायक हैं। वे सुरक्षित रहेंगे तो पाण्डव अवश्य मारे जायँगे। महात्मा भीष्म ने कहा है कि "मैं शिखण्डी पर कभी प्रहार नहीं करूँगा; क्योंकि वह पहले स्त्री था। इसी कारण वह इस युद्ध में मेरे लिए त्याज्य है। मैं पहले, पिता के हित की इच्छा से, विवाह और राज्य का अधिकार छोड़ चुका हूँ। राजन्, तुमसे सत्य कहता हूँ कि मैं स्त्री पर या स्त्रीपूर्व पुरुष पर कभी प्रहार नहीं करूँगा। युद्धारम्भ के पहले ही मैं तुमसे कह चुका हूँ कि शिखण्डी पहले स्त्री था, पीछे पुरुष हुआ है। वह शिखण्डी मुझसे युद्ध करेगा, तो मैं उस पर बाण नहीं चलाऊँगा। शिखण्डी के सिवा और जो कोई पाण्डवों की जय चाहनेवाले क्षत्रिय मेरे सामने आ जायँगे, उनको मैं मारूँगा।" भाई, शस्त्रविद्या में निपुण पितामह मुझसे यह कह चुके हैं। इस कारण सब ४० तरह उनकी रक्षा करना हमारा मुख्य कर्तव्य है। वन में अरक्षित सिंह को भी भेड़िये मार डालते हैं। इसलिए ऐसा यत्न करो जिससे भीष्मरूप सिंह शिखण्डीरूप भेड़िये के हाथ से न मारे जा सकें। मामा शकुनि, शल्य, कृपाचार्य, द्रोणाचार्य और विविंशति आदि सब मुख्य योद्धा यत्न के साथ भीष्म की ही रक्षा करें। उनके सुरक्षित होने से हमारी विजय निश्चित है।

तब शकुनि आदि वीरगण दुर्योधन की आज्ञा के अनुसार, चारों ओर असंख्य रथों से घेरकर, भीष्म की रक्षा करने लगे। राजन्! आपके पुत्रगण आनन्द और उत्साह के साथ सिंहनाद से आकाशमण्डल और पृथ्वीमण्डल को कँपाते हुए, पाण्डवों के हृदय में क्षोभ उत्पन्न करके, भीष्म के आसपास स्थित हुए। जैसे देवासुर-संग्राम में देवताओं ने इन्द्र की रक्षा की थी, वैसे वे सब महारथी लोग भीष्म पितामह की रक्षा करने लगे। अब दुर्योधन ने फिर दुःशासन से कहा—भाई दुःशासन, युधामन्यु और उत्तमौजा नाम के दोनों वीर अर्जुन के रथ के बायें और दाहने पहिये की रक्षा करते हैं। उनके द्वारा सुरक्षित होकर अर्जुन अवश्य शिखण्डी की रक्षा करेंगे। इसलिए जो हम भीष्म की रक्षा नहीं करेंगे तो अर्जुन के द्वारा सुरक्षित शिखण्डी अवश्य उनको मारेगा। अतएव इस समय वही उपाय करना है, जिससे भीष्म को शिखण्डी न मार सके।

दुर्योधन के ये वचन सुनकर, बहुत सी सेना साथ लेकर, दुःशासन भीष्म के पीछे उनकी रक्षा करते हुए युद्ध करने चले। इधर महारथी अर्जुन ने भीष्म को महारथियों के बीच सुरक्षित देखकर सेनापति धृष्टद्युम्न से कहा—हे पाञ्चाल-राजकुमार, शिखण्डी को भीष्म के आगे खड़ा कर दो। आज मैं ख़ुद समर में शिखण्डी की रक्षा करूँगा। ५१

निन्नानवे अध्याय

सर्वतोभद्र व्यूह की रचना और अनेक उत्पात देख पड़ना

सञ्जय ने कहा—हे महाराज, इसके बाद सेना साथ लेकर महात्मा भीष्म युद्ध के लिए शिविर से बाहर निकले और सर्वतोभद्र नाम के व्यूह की रचना करने लगे। महावीर कृपाचार्य, कृतवर्मा, शैव्य, शकुनि, सिन्धुपति जयद्रथ, काम्बोजराज सुदक्षिण और आपके सब पुत्रों को साथ लेकर, सब सेना के आगे, व्यूह के मुख में महारथी प्रतापी भीष्म पितामह खड़े हुए। द्रोणाचार्य, भूरिश्रवा, शल्य और भगदत्त कवच पहनकर व्यूह के दक्षिणभाग की रक्षा करने लगे। महारथी अश्वत्थामा, सोमदत्त और विन्द, अनुविन्द अपनी सेना साथ लेकर वामभाग की रक्षा करने लगे। त्रिगर्त-देश के राजा सुशर्मा के साथ महाराज दुर्योधन व्यूह के मध्यस्थल में स्थित हुए। श्रेष्ठ रथी राक्षस अलम्बुष और महारथी श्रुतायुष् कवच पहनकर व्यूह के पृष्ठभाग की रक्षा में तत्पर हुए। कौरवपक्ष के कवचधारी वीर इस तरह व्यूहरचना करके प्रज्वलित अग्नि के समान देख पड़ने लगे।

इधर धर्मराज युधिष्ठिर, भीमसेन, नकुल और सहदेव अपने व्यूह के अग्रभाग में स्थित होकर उसकी रक्षा करने लगे। महावीर धृष्टद्युम्न, विराट, सात्यकि, शिखण्डी, अर्जुन, राक्षस घटोत्कच, महाबाहु चेकितान, महाबली कुन्तिभोज, श्रेष्ठ धनुर्द्धर योद्धा अभिमन्यु, प्रतापी द्रुपद, युयुधान, युधामन्यु और केकय देश के पाँचों भाई राजकुमार बहुमूल्य दृढ़ कवच पहनकर उस व्यूह की रक्षा करते हुए समरभूमि में शोभायमान हुए। इस प्रकार दुर्भेद्य दारुण महाव्यूह की रचना करके पाण्डव भी युद्ध के लिए उद्यत हुए। ९

कौरवपक्ष के वीर राजा लोग भीष्म को आगे करके युद्ध के लिए पाण्डवों की ओर बढ़े। युद्ध में उत्साह रखनेवाले भीमसेन आदि पाण्डव भी विजय की इच्छा से भीष्म की ओर बढ़े। उस समय युद्ध के मैदान में बारम्बार सिंहनाद, किलकिला-रव, हाथियों की चिंघार, घोड़ों और रथों का शब्द तथा अस्त्रों की झनकार चारों ओर छा गई। पाण्डव भी वीरनाद, सिंहनाद तथा शङ्खनाद करके उत्साह के साथ कौरवों के सामने आ गये। क्रकच, गोविषाण, भेरी, मृदङ्ग, पणव, दुन्दुभि और शङ्ख आदि बाजों का घोर शब्द आकाशमण्डल तक गूँज उठा।

कौरव लोग भी शत्रुपक्ष के जवाब में प्रतिनाद करते हुए पाण्डवों की सेना पर बड़े वेग से आक्रमण करने लगे। इस तरह दोनों ओर की सेना परस्पर भिड़कर घोर युद्ध करने लगी।

राजन्, उस समय रणभूमि में इतना शब्द और कोलाहल होने लगा कि उससे पृथ्वी २१ काँप उठी। मांसाहारी पक्षी भयानक शब्द करते हुए आकाश में मँडलाने लगे। उज्ज्वल प्रभा के साथ उदय हुए सूर्य का मण्डल प्रभाशून्य हो गया। अमङ्गलसूचक सियार-सियारियों के झुण्ड चिल्लाते हुए इधर-उधर फिरने लगे। वे होनेवाले घोर लोकक्षय की सूचना दे रहे थे। आनेवाले घोर भय की सूचना देती हुई विकट आँधी ज़ोर से चलने लगी। दिशाओं में आग लगने का सा लाल प्रकाश (दिग्दाह) दिखाई पड़ने लगा। आकाश से धूल और रुधिरयुक्त हड्डियाँ बरसने लगीं। वाहनों की आँखों से आँसू बहने लगे। वाहन चिन्तित-से देख पड़ने लगे; वे बारम्बार मल-मूत्र-त्याग करने लगे। सहसा अदृश्य पुरुषभोजी राक्षसों के तरह-तरह के भयानक शब्द सुन पड़ने लगे। गीदड़, गिद्ध, कौए और कुत्ते आदि मांसाहारी पशु-पक्षी आकाश से रणभूमि में टूट पड़ते और पृथ्वी पर दौड़ते देख पड़ने लगे। कुत्ते तरह-तरह से विकट कर्णकटु शब्द करते और भूँकते हुए फिरने लगे। सूर्य के चारों ओर से प्रज्वलित उल्काएँ पृथ्वी पर गिरकर महाभय की सूचना देने लगीं। इस तरह आकाश और पृथ्वी में अनेक अनिष्टसूचक उत्पात देख पड़ने लगे।

महाराज, उस घोर युद्ध के समय पाण्डवों और कौरवों की बड़ी बड़ी सेनाएँ—जिनमें हाथी, घोड़े, राजा आदि थे—पवनवेग से कम्पित वनों की तरह शङ्ख, मृदङ्ग आदि बाजे बजाती हुई आगे बढ़ीं। कोलाहलपूर्ण सेनाओं के चलने का दृश्य देखकर ऐसा जान पड़ता ३० था कि दो महासागर क्षोभ को प्राप्त हो रहे हैं।

सौ अध्याय

अभिमन्यु और अलम्बुष का युद्ध

सञ्जय कहते हैं—राजन्! इसके बाद महातेजस्वी वीर अभिमन्यु पिङ्गल रङ्ग के घोड़ों से युक्त रथ पर बैठकर, मेघ जैसे जल बरसाता है वैसे, बाण बरसाते हुए दुर्योधन की सेना की ओर दौड़े। अनन्त सेना के भीतर घुसते हुए अस्त्र-शस्त्रधारी वीर अभिमन्यु को कौरव लोग किसी तरह नहीं रोक सके। अभिमन्यु के धनुष से छूटे हुए शत्रुनाशक तीक्ष्ण बाण कौरवपक्ष के क्षत्रियों को मार-मारकर गिराने लगे। युद्धचतुर अभिमन्यु क्रुद्ध होकर यमदण्ड-सदृश भीषण और काले नाग के समान ज़हरीले बाण बरसाकर रथ सहित रथी, घोड़े सहित घुड़सवार और हाथी सहित हाथी के सवार को मारकर गिराने लगे। राजा लोग उनके अद्भुत कार्य और

पराक्रम को देखकर, प्रसन्न होकर, प्रशंसा करने लगे। हवा जैसे रुई के ढेर को उड़ा देती है वैसे ही वीर अभिमन्यु के बाण कौरवपक्ष की सेना को भगाकर तितर-बितर करने लगे। दल-दल में फँसे हुए हाथी की सी दशा सब सैनिकों की हो गई। अभिमन्यु के प्रहार से पीड़ित होकर भागते हुए सैनिकों की रक्षा कर सकनेवाला कोई योद्धा नहीं देख पड़ता था। महापराक्रमी अभिमन्यु अनायास शत्रुसेना को भगाकर प्रज्वलित अग्नि के समान शोभायमान हुए। १० काल-प्रेरित पतङ्ग जैसे अग्नि के प्रताप को नहीं सह सकते, वैसे ही कौरव-सेना अभिमन्यु के पराक्रम को नहीं सह सकी। शत्रुसेना का संहार करते हुए वीर अभिमन्यु वज्रपाणि इन्द्र के समान देख पड़ते थे। सुवर्ण से मढ़ी हुई पीठवाला उनका धनुष घनघटा में बिजली के समान शोभायमान हो रहा था। फूले हुए वृक्षों के वन से उड़ते हुए भौंरों की तरह अभिमन्यु के धनुष से छूटे, भन्नाते हुए, तीक्ष्ण बाण समरभूमि में चारों ओर जा रहे थे। सुवर्णमय रथ पर सवार वीर अभिमन्यु ने महावीर द्रोणाचार्य, अश्वत्थामा, जयद्रथ, कृपाचार्य और बृहद्बल को अचेत कर दिया। वे फुर्ती और ख़ूबसूरती के साथ बाण बरसाते हुए युद्धभूमि में विचरने लगे। कौरवसेना का संहार करता हुआ अभिमन्यु का धनुष हमेशा खिंचा हुआ ही देख पड़ता था। वह सूर्य की तरह चमक रहा था। शूर क्षत्रियों ने शत्रुसेना का संहार करते हुए फुर्तीले अभिमन्यु के अद्भुत कर्म देखकर समझा कि इस लोक में दो अर्जुन हैं।

राजन्! अभिमन्यु के बाणों से पीड़ित कौरवसेना, मद पिये हुए स्त्री की तरह, भ्रान्त होकर तितर-बितर होने लगी। युद्धप्रिय अभिमन्यु ने शत्रुसेना के प्रधान वीरों को विचलित करके और सारी सेना को भगाकर अपने सुहृदों को उसी तरह प्रसन्न कर दिया, जिस तरह मयासुर को जीतकर इन्द्र ने देवताओं को प्रसन्न किया था। कौरवपक्ष की सब सेना अभिमन्यु के २० प्रहारों से पीड़ित होकर भागती हुई मेघगर्जन के समान ऊँचे स्वर से आर्तनाद करने लगी।

महाराज दुर्योधन ने जब तूफ़ान से उमड़े हुए समुद्र के शब्द के समान भयभीत कौरवसेना की चिल्लाहट सुनी तब राक्षसराज अलम्बुष को बुलाकर कहा—हे वीर राक्षसश्रेष्ठ! महावीर अर्जुन का पुत्र अभिमन्यु दूसरे अर्जुन की तरह, देवसेना को भगानेवाले वृत्रासुर की तरह, अकेला ही अपने पराक्रम से कौरवसेना को पीड़ित करके भगा रहा है। तुम सब प्रकार की युद्धविद्या में निपुण हो। उसे रोकनेवाला तुम्हारे सिवा और कोई नहीं देख पड़ता। इसलिए तुम शीघ्र जाकर युद्ध में उसे मार डालो। हम लोग भीष्म और द्रोण आदि के साथ जाकर अर्जुन को मारेंगे।

दुर्योधन की आज्ञा पाते ही राक्षसश्रेष्ठ अलम्बुष वर्षाकाल के बादलों की तरह गरजता हुआ अभिमन्यु की ओर चला। उसके घोर शब्द को सुनकर पाण्डवों की भारी सेना वायु से लहराते हुए समुद्र के समान विचलित हो उठी। उसके शब्द से ही डरकर बहुत से सैनिक मर गये। महाराज, उस समय रथ पर स्थित महापराक्रमी अभिमन्यु धनुष-बाण हाथ

३० में लेकर उस राक्षस के सामने आये। अलम्बुष ने अभिमन्यु को देखते ही क्रुद्ध होकर उन पर आक्रमण किया। राक्षस को देखकर पाण्डवों की सेना डर गई और भागने लगी। बल नाम का दैत्य जैसे देवसेना के पीछे दौड़ा था, वैसे ही बाण बरसाता हुआ अलम्बुष पाण्डवसेना के पीछे दौड़ा। वह घोररूप राक्षसराज अपना पराक्रम दिखाता और असंख्य बाण बरसाता हुआ पाण्डवसेना को भगाने और नष्ट करने लगा। पाण्डवों की भारी सेना अत्यन्त व्यथित और भय से व्याकुल होकर चारों ओर भागने लगी। महाराज, मस्त हाथी जैसे कमलवन को रौंदता है वैसे ही राक्षसराज अलम्बुष पाण्डवसेना का संहार करता हुआ द्रौपदी के पुत्रों के सामने दौड़ा। द्रौपदी के पाँचों पुत्र उस राक्षस को देखकर, अत्यन्त क्रुद्ध होकर, सूर्य के सामने पाँच ग्रहों की तरह, उसके सामने दौड़े। प्रलयकाल में पाँच ग्रह जैसे चन्द्रमा को पीड़ा पहुँचावें, वैसे ही द्रौपदी के पुत्र उस राक्षस को पीड़ित करने लगे। महाप्रतापी प्रतिविन्ध्य ने उस राक्षसराज को तीक्ष्ण, कुण्ठित न होनेवाले, कई बाण मारे। उन बाणों से अलम्बुष का कवच कट गया और वह सूर्य-किरणरञ्जित काले मेघ के समान शोभाय-
४० मान हुआ। प्रतिविन्ध्य के सुवर्णभूषित ज़हरीले बाण राक्षस के शरीर में घुस गये। इनसे वह प्रज्वलित शिखर-युक्त पर्वत के समान देख पड़ा।

अब द्रौपदी के पाँचों पुत्र एक साथ सुवर्णभूषित बाण मारकर अलम्बुष को पीड़ा पहुँचाने लगे। महावीर्यशाली क्रुद्ध अलम्बुष नाग-तुल्य उन बाणों से घायल होने के कारण घोर व्यथा से अचेत हो गया। दम भर में होश आने पर वह दूने क्रोध से विह्वल हो उठा। उसने फुर्ती के साथ बाणों से द्रौपदी के पुत्रों के धनुष, बाण और ध्वजाएँ काट डालीं। फिर उस महावीर राक्षस ने हर एक को पाँच-पाँच बाण मारे। उसने उनके घोड़ों और सारथियों को भी मार डाला। यह अद्भुत कर्म करके, अन्य अनेक तीक्ष्ण बाण मारकर, उसने सबको घायल कर दिया। महारथी राक्षस इस तरह द्रौपदी के पाँचों पुत्रों को, रथहीन करके, मारने के लिए तेज़ी से आगे बढ़ा।

महापराक्रमी अभिमन्यु ने जब देखा कि बली राक्षस द्रौपदी के पुत्रों को पीड़ित कर
५० रहा है तब वे शीघ्रता के साथ अपना रथ बढ़ाकर उसके पास पहुँचे। राजन्, उस समय महाप्रतापी अभिमन्यु के साथ राक्षसराज अलम्बुष घोर युद्ध करने लगा। कौरवपक्ष और पाण्डवपक्ष के सब योद्धा, युद्ध छोड़कर, उन वृत्रासुर और इन्द्र के समान पराक्रमी दोनों वीरों का घोर अद्भुत संग्राम देखने लगे। कालानल-तुल्य वे दोनों वीर क्रोध से लाल आँखों से परस्पर इस तरह देखते थे मानों दृष्टि से ही भस्म कर डालेंगे। पहले देवासुर-युद्ध में शम्बरा-
५४ सुर और इन्द्र का जैसा भयङ्कर संग्राम हुआ था वैसा ही भयङ्कर समर इस समय होने लगा।

एक सौ एक अध्याय

अभिमन्यु का अलम्बुष को हराना

धृतराष्ट्र ने पूछा—हे सञ्जय, महारथियों और शूरों को समर में मारते हुए अभिमन्यु से अलम्बुष ने किस तरह कैसा युद्ध किया? शत्रुदमन अभिमन्यु ने ही उस राक्षसराज से कैसा युद्ध किया? महाबली भीमसेन, राक्षस घटोत्कच, नकुल, सहदेव, सात्यकि और अर्जुन आदि ने मेरी सेना से कैसा युद्ध किया? युद्ध का सब हाल तुम जानते हो और वर्णन करने में भी निपुण हो। इसलिए यह सब वृत्तान्त कहो।

सञ्जय ने कहा—राजन्! महावीर अभिमन्यु और अलम्बुष ने जैसा युद्ध किया, अर्जुन-भीमसेन-नकुल और सहदेव ने समर में जैसा पराक्रम प्रकट किया और आपके पक्ष के भीष्म, द्रोण आदि महारथी वीरों ने निर्भय होकर जो-जो अद्भुत कर्म किये, सो सब मैं आपके आगे कहता हूँ। राक्षसराज अलम्बुष सिंहनाद के साथ बारम्बार तरज-गरजकर "ठहर, ठहर" कहता हुआ बड़े वेग से अभिमन्यु पर आक्रमण करने चला। अभिमन्यु भी सिंहनाद करते हुए पिता के शत्रु राक्षसराज अलम्बुष की ओर वेग से चले। दिव्य अस्त्र चलाने में निपुण महारथी अभिमन्यु और मायावी श्रेष्ठ रथी अलम्बुष दोनों, देव-दानव के समान, शीघ्र ही आमने-सामने पहुँच गये। महावीर अभिमन्यु ने राक्षस को पहले तीन और फिर पाँच बाण मारे। जैसे ११ महावत गजराज को अङ्कुश मारे वैसे ही फुर्तीले अलम्बुष ने क्रुद्ध होकर अभिमन्यु की छाती में ताककर नव तीक्ष्ण बाण मारे। इसके बाद फुर्ती के साथ और एक हज़ार बाण मारे। मर्मस्थल में उन बाणों के लगने से अभिमन्यु क्रोध से अधीर हो उठे। उन्होंने भी महाभयङ्कर नव बाण राक्षस की छाती में मारे। वे बाण उसके शरीर को फोड़कर मर्मस्थल में पहुँच गये। बाणों से घायल और रक्त से नहाया हुआ वह राक्षस फूले हुए ढाक के पेड़ोंवाले पहाड़ के समान शोभायमान हुआ। वे सुवर्णपुङ्ख बाण राक्षस के शरीर में घुस गये थे, इस कारण वह शिखरों से शोभित पहाड़ सा जान पड़ता था।

क्रोधी अलम्बुष ने भी इन्द्र-सदृश अभिमन्यु को असंख्य बाणों से ढक दिया। राक्षस के धनुष से छूटे हुए यमदण्डतुल्य बाण अभिमन्यु के शरीर को फोड़कर धरती में घुस गये। इसी तरह अभिमन्यु के बाण भी अलम्बुष के शरीर को फोड़कर पृथ्वी में घुस गये। इन्द्र ने २१ जैसे मय दानव को समर से हटा दिया था, वैसे ही महावीर अभिमन्यु ने तीक्ष्ण बाण मारकर राक्षस को व्यथित और युद्ध से विमुख कर दिया। अब उस राक्षस ने शत्रुओं को नष्ट करनेवाली तामसी माया प्रकट की। उससे चारों ओर गहरा अँधेरा छा गया। कोई किसी को नहीं देख सकता था; अभिमन्यु को, अपने को या ग़ैर को देख सकना असम्भव हो गया। महापराक्रमी अभिमन्यु ने वह घोर अन्धकार देखकर प्रकाशमय सौर अस्त्र का प्रयोग किया।

सूर्यास्त्र के प्रभाव से राक्षस की माया का घोर अन्धकार दूर हो गया और सारे जगत् में प्रकाश फैल गया। राक्षस ने और भी बहुतेरी मायाएँ प्रकट कीं, किन्तु वीर अभिमन्यु ने दिव्य अस्त्रों से उन मायाओं को मिटा दिया। इसके बाद अभिमन्यु असंख्य तीक्ष्ण बाण मारकर उस राक्षस को पीड़ा पहुँचाने लगे। सब अस्त्रों के जाननेवाले अमितपराक्रमी अभिमन्यु के द्वारा सब माया नष्ट होने पर प्रहार-पीड़ित और भय से व्याकुल वह राक्षस रथ छोड़कर भाग खड़ा हुआ। कूटयुद्ध करनेवाला वह राक्षस जब इस तरह हारकर भाग गया तब महावीर अभिमन्यु फिर बाण-वर्षा करके कौरवसेना को पीड़ित करने लगे। उस समय ऐसा जान पड़ा कि मदान्ध जङ्गली हाथी कमलों के वन को रौंदकर उजाड़ रहा है।

३०

महारथी भीष्म ने सैनिकों को संग्राम से भागते देख तीक्ष्ण बाण बरसाकर अभिमन्यु का आगे बढ़ना रोका। महारथी दुर्योधन और उनके भाई भी अकेले अभिमन्यु को चारों ओर से घेरकर असंख्य बाण मारने लगे। तब अर्जुन के तुल्य पराक्रमी और बल-वीर्य में श्रीकृष्ण के समान महावीर अभिमन्यु, पिता और मामा के समान, युद्ध में अनेक अद्भुत कार्य और कौशल दिखाने लगे। महावीर्यशाली अर्जुन भी उस समय कौरव-सेना को मारते हुए अभिमन्यु को ढूँढ़ते-ढूँढ़ते भीष्म के पास पहुँच गये। राहु जैसे ग्रसने के लिए सूर्य के पास जाता है वैसे ही भीष्म भी अर्जुन के समीप आये। राजन्! आपके पुत्रगण असंख्य रथ, हाथी, घोड़े आदि साथ लेकर चारों ओर से भीष्म पितामह की रक्षा करने लगे। इधर पाण्डवपक्ष के योद्धा भी चारों ओर से अर्जुन की सहायता करते हुए घोर युद्ध में प्रवृत्त हुए।

इसी समय कृपाचार्य ने, भीष्म के सामने उपस्थित, अर्जुन को पचीस तीक्ष्ण बाण मारे। सिंह जैसे गजराज पर झपटता है वैसे ही सात्यकि भी पाण्डवों के हित के लिए कृपाचार्य के सामने पहुँचे। वे अनेक तीक्ष्ण बाण मारकर कृपाचार्य को पीड़ित करने लगे। इससे क्रुद्ध होकर कृपाचार्य ने फुर्ती के साथ कङ्कपत्रभूषित नव बाण सात्यकि की छाती में मारे। तब सात्यकि

४०

ने अत्यन्त क्रुद्ध होकर बड़े वेग से, धनुष चढ़ाकर, प्राण लेनेवाला एक बाण कृपाचार्य को मारा। अश्वत्थामा ने उस वज्रतुल्य बाण को वेग से आते देखकर एक बाण से काटकर गिरा दिया।

अब महारथी सात्यकि कृपाचार्य को छोड़कर, आकाशमण्डल में राहु जैसे चन्द्रमा की ओर दौड़ता है वैसे, अश्वत्थामा की ओर दौड़े। महावीर अश्वत्थामा ने उनका धनुष काट डाला और उन पर असंख्य बाण बरसाये। सात्यकि ने उसी दम फुर्ती से दूसरा मज़बूत धनुष हाथ में लेकर साठ बाण अश्वत्थामा के हृदय में और दोनों हाथों में मारे। उन बाणों के प्रहार से अश्वत्थामा बहुत व्यथित होकर क्षण भर के लिए अचेत हो गये; वे ध्वजा का डण्डा पकड़कर रथ पर बैठ गये। होश आने पर उन्होंने क्रुद्ध होकर सात्यकि को एक घोर नाराच बाण मारा। वह बाण सात्यकि के शरीर को फोड़कर वैसे ही धरती में घुस गया जैसे वसन्तऋतु में बलवान् साँप का बच्चा बिल में घुस जाता है। फिर एक भल्ल बाण से सात्यकि के रथ की ध्वजा काटकर वे सिंहनाद करने लगे। वर्षाऋतु में मेघ जैसे सूर्य को छिपा लेते हैं वैसे ही अश्वत्थामा ने बाणों से सात्यकि को अदृश्य कर दिया। राजन्! सात्यकि भी उन बाणों को काटकर, अपने बाणों से अश्वत्थामा को अदृश्य करके, मेघों को चीरकर निकले हुए सूर्य की तरह अश्वत्थामा को सताने लगे। इसके बाद फिर हज़ारों बाण बरसाकर उन्होंने अश्वत्थामा को जर्जर कर दिया। ५०

पुत्र अश्वत्थामा को राहुग्रस्त चन्द्रमा के समान पीड़ित देखकर द्रोणाचार्य सात्यकि की ओर दौड़े, और अश्वत्थामा की जान बचाने के लिए उन्होंने सात्यकि को तीक्ष्ण बाण मारा। तब सात्यकि ने भी गुरु-पुत्र अश्वत्थामा को छोड़कर द्रोणाचार्य को लोहमय बीस बाण मारे। उधर महापराक्रमी अर्जुन भी कुपित होकर द्रोणाचार्य की ओर दौड़े। इसके बाद द्रोण और अर्जुन दोनों, आकाश में बृहस्पति और शुक्र की तरह, घोर युद्ध करने लगे। ५६

एक सौ दो अध्याय

द्रोणाचार्य के साथ अर्जुन का युद्ध

धृतराष्ट्र ने कहा—हे सञ्जय, पुरुषश्रेष्ठ द्रोणाचार्य और अर्जुन दोनों ने किस तरह युद्ध किया? बुद्धिमान् द्रोणाचार्य को अर्जुन बहुत ही प्रिय हैं, और अर्जुन भी द्रोणाचार्य का बहुत मान करते हैं। उन दोनों, सिंह के समान उत्साही, वीरों ने किस तरह युद्ध किया?

सञ्जय ने कहा—महाराज, क्षत्रियधर्म के अनुयायी द्रोणाचार्य युद्ध में अर्जुन को अपना प्रिय नहीं समझते, और अर्जुन भी गुरु पर कठोर प्रहार करने में कुछ कसर नहीं रखते। क्षत्रियों का धर्म ही यह है कि वे युद्ध में किसी का ख़याल नहीं करते। वे नाते का ख़याल छोड़कर पिता और भाई आदि से कठिन युद्ध करते हैं। महाराज, अर्जुन ने द्रोणाचार्य को तीन तीक्ष्ण बाण मारे; किन्तु अर्जुन के धनुष से छूटे हुए उन बाणों से द्रोणाचार्य विचलित नहीं

हुए। तब फिर अर्जुन उनके ऊपर बाणों की वर्षा-सी करने लगे। गहन वन में अग्नि के समान आचार्य द्रोण क्रोध से प्रज्वलित हो उठे। उन्होंने फुर्ती के साथ अति तीक्ष्ण असंख्य बाणों से अर्जुन को ढक दिया। तब राजा दुर्योधन ने द्रोणाचार्य के पार्श्वभाग की रक्षा और सहायता के लिए त्रिगर्तदेश के राजा सुशर्मा को भेजा। राजा सुशर्मा कुपित होकर, धनुष चढ़ाकर, तीक्ष्ण
१० बाणों से अर्जुन को पीड़ा पहुँचाने लगे। सुशर्मा का पुत्र भी लोहमय बाण अर्जुन को मारने लगा। उन पिता-पुत्र के चलाये हुए बाण आकाश में, शरद् ऋतु में, उड़ते हुए हंसों के समान जान पड़ने लगे। जैसे पक्षी चारों ओर से आकर स्वादिष्ट फलों से पूर्ण झुके हुए वृक्ष के भीतर प्रवेश करते हैं, वैसे ही वे बाण चारों ओर से आकर अर्जुन के शरीर में घुसने लगे। महारथी अर्जुन ने सिंह-नाद करके पिता और पुत्र दोनों को बहुत से बाण मारे। सुशर्मा और उनका पुत्र दोनों ही कालतुल्य अर्जुन के बाणों से घायल होकर भी, जीवन की ममता छोड़कर, अर्जुन से घोर युद्ध करने लगे। वे अर्जुन के ऊपर लगातार बाणों की वर्षा करने लगे। पर्वत जैसे वर्षा को अपने ऊपर रोकता है वैसे ही वीर अर्जुन अपने बाणों से उनके बाणों को रोकने लगे। उस समय हम लोग अर्जुन के हाथों की फुर्ती देखने लगे। हवा जैसे मेघमाला को दमभर में छिन्न-भिन्न कर डालती है, वैसे ही अकेले

अर्जुन बहुत से योद्धाओं के शस्त्रों की वर्षा को छिन्न-भिन्न करने और रोकने लगे। अर्जुन के उस अद्भुत कर्म और युद्धकौशल को देखकर देवता और दानव बहुत सन्तुष्ट हुए।

महावीर अर्जुन ने कुपित होकर त्रिगर्तसेना के ऊपर वायव्य अस्त्र छोड़ा। उससे प्रबल आँधी उत्पन्न हुई, जिससे आकाशमण्डल क्षोभ को प्राप्त हुआ, वृक्ष उखड़-उखड़कर गिरने लगे, सैनिक लोग नष्ट होने लगे और सारी सेना अस्तव्यस्त तथा नष्टभ्रष्ट होने लगी। द्रोणाचार्य ने उस
२० दारुण वायव्य-अस्त्र का उत्पात देखकर, उसे व्यर्थ करने के लिए, घोर पर्वतास्त्र का प्रयोग किया। उससे आँधी शान्त हो गई, दसों दिशाएँ निर्मल देख पड़ने लगीं। इसके बाद महारथी अर्जुन ने अपने युद्धकौशल से त्रिगर्तराज के असंख्य रथी योद्धाओं को उत्साहहीन और पराक्रम-शून्य करके युद्ध से हटा दिया।
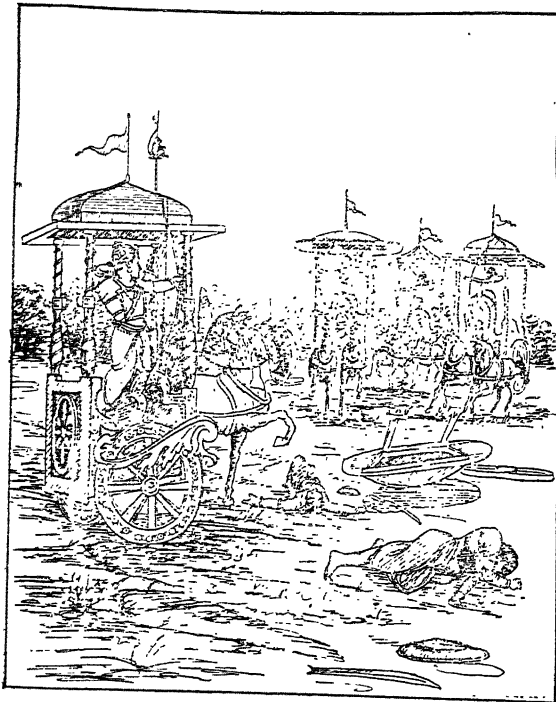
तब राजा दुर्योधन, कृपाचार्य, अश्वत्थामा, शल्य, सुदक्षिण, विन्द, अनुविन्द और वाह्लीक देश की सेना सहित राजा वाह्लीक असंख्य रथों के द्वारा चारों ओर से अर्जुन को घेरकर उन पर प्रहार करने लगे। महाबली श्रुतायुष् और राजा भगदत्त ने बड़े भारी हाथियों के दल से चारों ओर से भीमसेन को घेर लिया। भूरिश्रवा, शल और शकुनि, ये तीनों वीर बहुत सी सेना के द्वारा नकुल और सहदेव को घेरकर उनपर तीक्ष्ण बाण बरसाने लगे। सेना सहित आपके सब पुत्रों को साथ लिये भीष्म पितामह ने धर्मराज युधिष्ठिर पर आक्रमण किया।

महाराज, पराक्रमी भीमसेन ने हाथियों की बड़ी सेना को अपनी ओर आते देखा तो वे रथ से उतर पड़े और गदा हाथ में लेकर उसी ओर दौड़े। वन में विचरनेवाले सिंह की तरह क्रोध से ओठ चाटते हुए भीमसेन का भयानक रूप ही देखकर बहुत से सैनिक डर से व्याकुल हो उठे। हाथियों पर सवार योद्धाओं ने गदा हाथ में लिये भीमसेन को खड़े देखकर चारों ओर से घेर लिया। सूर्य जैसे मेघों के बीच में शोभित होते हैं वैसे ही उस गजदल के बीच भीमसेन की शोभा हुई। हवा ३१ जैसे बादलों को तितर-बितर कर देती है वैसे ही भीमसेन अपनी गदा के विकट प्रहार से उस गजदल को मारने और भगाने लगे। बड़े-बड़े हाथी भीमसेन की गदा की मार खाकर मेघ-गर्जन के समान चिल्लाने और आर्तनाद करने लगे। हाथियों ने भी भीमसेन के शरीर में दाँतों के प्रहार किये। उनके शरीर से रक्त बह चला, जिससे वे फूले हुए अशोकवृक्ष के समान शोभायमान हुए। भीमसेन ने कुपित होकर किसी-किसी हाथी के दाँत उखाड़ लिये, और दण्डपाणि यम-राज की तरह उन्हीं दाँतों के प्रहार से उनके मस्तक फाड़कर वे उन्हें धरती पर गिराने लगे। भीम के शरीर में मेदा और मज्जा लिपी हुई थी, ख़ून से तर गदा उनके कन्धे पर थी; इस वेष में वे शूलपाणि रुद्र के समान देख पड़ते थे। जो बड़े-बड़े हाथी मरने से बचे थे वे अपनी ही सेना को रौंदते हुए चारों ओर भागने लगे। कौरवपक्ष की सेना फिर युद्ध से भागकर अस्तव्यस्त हो गई। ३९

एक सौ तीन अध्याय

भीष्म के पराक्रम का वर्णन

सञ्जय ने कहा—राजन्, इसी दिन दोपहर के समय सोमकों के साथ भीष्म पितामह भयानक युद्ध करने लगे। महारथी भीष्म बाणों की आग में सैकड़ों-हज़ारों क्षत्रियों को भस्म करने लगे। जैसे बैल अन्न के ढेर को रौंदते हैं वैसे ही देवव्रत भीष्म पाण्डवों की सेना का संहार करने लगे। धृष्टद्युम्न, शिखण्डी, विराट और महारथी द्रुपद भीष्म के पास जाकर उनपर असंख्य बाण बरसाने लगे। शत्रुनाशन भीष्म ने तीन-तीन बाण धृष्टद्युम्न और विराट को और एक नाराच बाण द्रुपद को मारा। धृष्टद्युम्न आदि महारथी भीष्म के बाणों से आहत होकर लात से मारे गये साँप की तरह क्रोध से विह्वल हो उठे। यद्यपि शिखण्डी लगातार भीष्म के

मर्मस्थल में बाण मारने लगे, किन्तु महाव्रत भीष्म ने उन्हें पहले की स्त्री समझकर उन पर प्रहार नहीं किया। धृष्टद्युम्न ने क्रोध से अत्यन्त प्रज्वलित होकर भीष्म के हाथों में अग्निसदृश दो बाण मारे, और एक बाण छाती में मारा। महारथी द्रुपद ने भी भीष्म को पचीस बाण मारे। विराट ने पितामह को दस बाण और शिखण्डी ने पचीस बाण मारे। राजन्, उन बाणों से बहुत ही घायल होकर भीष्म खून से तर हो गये। वे उस समय वसन्त में लाल फूलों से शोभित अशोकवृक्ष के समान देख पड़ने लगे। तब उन्होंने कुपित होकर [शिखण्डी को छोड़कर और] सबको तीन-तीन बाण मारे। इसके बाद एक भल्ल बाण से द्रुपद का धनुष काट डाला। राजा द्रुपद ने दूसरा धनुष लेकर पाँच बाण भीष्म को और तीन बाण उनके सारथी को मारे।

तब भीमसेन, द्रौपदी के पाँचों पुत्र, केकयगण, यादवश्रेष्ठ सात्यकि और धृष्टद्युम्न, ये लोग द्रुपद की रक्षा करने के लिए भीष्म की ओर चले। महाराज, आपके पक्ष के सब वीर भी सेना साथ लेकर भीष्म की रक्षा करने के लिए पाण्डवों की ओर दौड़े। उस समय दोनों ओर के रथी, हाथी, घोड़े और पैदल परस्पर भिड़कर घोर युद्ध करने लगे। रथी रथी के साथ, हाथी हाथी के साथ, घोड़े घोड़ों के साथ, सवार सवारों के साथ और पैदल सैनिक पैदल सैनिकों के साथ भिड़कर यमपुरी को जाने लगे। राजन्! स्थान-स्थान पर दारुण बाणों के प्रहार से टूट-फूटकर, सारथी और रथी से शून्य होकर, बड़े-बड़े रथ समरभूमि में इधर-उधर फिरने लगे। मैंने देखा कि गन्धर्व नगर-सदृश, वायुवेगगामी घोड़ों से युक्त, बड़े-बड़े रथ आदमियों और घोड़ों को रौंदते हुए इधर-उधर दौड़ने लगे। हे भूपाल! बृहस्पति के समान नीति में निपुण, कुबेर के समान सम्पत्तिशाली, इन्द्र के समान शूर, कुण्डल-पगड़ी-निष्क-अङ्गद-कवच आदि से अलङ्कृत, देवपुत्र के समान रथी राजा लोग बड़े-बड़े देशों के नरेश होकर भी, रथ नष्ट हो जाने पर, साधारण मनुष्यों की तरह इधर-उधर भागते देख पड़ने लगे। सवारों के न रहने पर बड़े-बड़े हाथी अपनी ही सेना को कुचलते हुए घोर शब्द करके गिरने लगे। जल-भरे मेघ के समान काले हाथी मेघगर्जन के समान शब्द करते बड़े वेग से इधर-उधर भागते और बिगड़ते देख पड़ने लगे। उनके ऊपर से विचित्र चामर, सुवर्ण-दण्ड-शोभित सफ़ेद छत्र, पताका, ढाल, तलवार, तोमर आदि सामान इधर-उधर गिरने लगा। ऐसे ही हाथियों के न रहने पर उनके सवार लोग उस घमासान युद्ध में इधर-उधर दौड़ते देख पड़ने लगे। अनेक देशों के सुवर्ण-भूषण-भूषित हज़ारों बढ़िया घोड़े हवा के वेग से इधर-उधर भागते देख पड़ने लगे। घोड़ों के मर जाने पर बहुत से घुड़सवार ढाल-तलवार हाथ में लिये कहीं औरों को भगा रहे थे और कहीं आप ही भाग रहे थे। कोई हाथी दूसरे हाथी के पीछे भागता हुआ राह में रथ, पैदल, घोड़े आदि को पैरों से रौंदता चला जाता था। बहुत से रथ पृथ्वी पर गिरे हुए घोड़ों को और बहुत से घोड़े पृथ्वी पर गिरे हुए पैदलों को रौंदते चले जाते थे। उस महा-भयानक रण में इस प्रकार एक दूसरे को कुचलता और रौंदता चला जा रहा था।

रक्त की एक बड़ी भारी नदी बह चली। उस लहराती हुई नदी में आँतें लहरों की जगह देख पड़ती थीं। हड्डियों के ढेर उसकी तटभूमि थे। केश उसमें सेवार और घास की जगह थे। टूटे हुए रथ उसके भीतर के गहरे कुण्ड थे। बाण ही भँवर थे; घोड़ों की लाशें मछलियाँ थीं। कटे हुए सिर कमल के फूल थे। हाथियों के शरीर बड़े-बड़े ग्राह थे। कवच और पगड़ियाँ फेने की जगह बह रही थीं। धनुष ही उसका वेगशाली प्रवाह था। तलवारें कच्छप की जगह थीं। पताका और ध्वजाएँ किनारे पर के वृक्षों की जगह थीं। मनुष्यों की लाशें उसके कगारे थे। मांसाहारी पक्षी हंसों के समान उसके आस-पास उड़ रहे थे। वह नदी यम के राज्य को बढ़ा रही थी। बहुत से शूरवीर महारथी क्षत्रिय निर्भय भाव से नौका के समान घोड़े-हाथी-रथ आदि पर चढ़कर उस नदी के पार जा रहे थे। जैसे वैतरणी नदी मरे हुओं को यमपुर में पहुँचाती है वैसे ही वह रक्त की नदी डरपोंक और मूर्च्छित-से पुरुषों को रणभूमि से दूर हटाने लगी।

क्षत्रियगण उस महाघोर हत्याकाण्ड को देखकर चिल्ला-चिल्लाकर कहने लगे—"हे क्षत्रियो, दुर्योधन के अपराध से सब क्षत्रिय नष्ट हो रहे हैं। महाराज धृतराष्ट्र ने ही लोभ और मोह के वश तथा पापपरायण होकर गुणी पाण्डवों से द्वेष क्यों किया?" महाराज, इस प्रकार सब क्षत्रिय ४० पाण्डवों की प्रशंसा और आपके पुत्रों की निन्दा से भरी तरह-तरह की बातें आपस में कर रहे थे। सब योद्धा क्षत्रियों के मुँह से ऐसी बातें सुनकर सबके अपराधी आपके पुत्र राजा दुर्योधन ने भीष्म, द्रोण, कृप और शल्य से कहा—"हे वीरो, तुम लोग अहङ्कार छोड़कर युद्ध करो। देर क्यों कर रहे हो?" राजन्, तब उसी द्यूतक्रीड़ा के कारण फिर कौरवों और पाण्डवों का घोर युद्ध होने लगा। पहले व्यास, विदुर आदि महात्माओं ने बारम्बार आपको मना किया था परन्तु आपने उनकी बात नहीं मानी, उसी का यह दारुण फल अब प्रत्यक्ष देखिए। राजन्! पाण्डव या कौरव और उनके सैनिक अनुगत बन्धु-बान्धव आदि सभी, प्राणों का मोह छोड़कर, घोर युद्ध कर रहे हैं। इस भयङ्कर स्वजन-विनाश का कारण चाहे दैव (होनी) को मानिए, चाहे अपने अनुचित व्यवहार को मानिए और चाहे अपने हितचिन्तकों का कहा न मानने की ग़लती को मानिए। ४७

एक सौ चार अध्याय

सात्यकि के साथ भीष्म का युद्ध

सञ्जय ने कहा—राजन्, पुरुषसिंह अर्जुन तीक्ष्ण बाण बरसाकर त्रिगर्तराज सुशर्मा के साथियों को यमपुर भेजने लगे। सुशर्मा ने पहले सत्तर बाण श्रीकृष्ण को और फिर नव बाण अर्जुन को मारे। महारथी अर्जुन ने अनायास सुशर्मा के बाणों को व्यर्थ करके उसके सहायक कई योद्धाओं को मार डाला। सुशर्मा के बचे हुए साथी योद्धा, प्रलयकाल में काल के समान संहार करनेवाले, अर्जुन के बाणों से पीड़ित होकर डर के मारे प्राण लेकर भाग खड़े हुए। कोई

घोड़े को, कोई हाथी को और कोई रथ को छोड़कर जिधर राह मिली उधर पैदल ही भाग खड़ा हुआ। पैदल सेना के लोग भी उस महारण में शस्त्र-अस्त्र फेंककर, किसी की राह न देखकर, इधर-उधर भागने लगे। त्रिगर्तराज सुशर्मा और अन्य राजा लोग उन्हें बारम्बार उत्साहित करते और ठहरने के लिए कहते थे, परन्तु उनमें से कोई भी नहीं ठहरा।

महाराज! दुर्योधन ने सुशर्मा की सेना को जब भागते देखा तब वे आप सब सेना के आगे हुए, और भीष्म पितामह को अपने आगे करके सुशर्मा के प्राण बचाने के लिए उद्योग करते १० हुए अर्जुन की ओर बढ़ने लगे। अपने भाइयों के साथ केवल दुर्योधन ही बाणवर्षा करते हुए अर्जुन के सामने ठहरे, और सब योद्धा भाग गये। उधर कवचधारी पाण्डव भी पूर्ण उद्योग के साथ अर्जुन की सहायता करने के लिए भीष्म पितामह के सामने आये। युद्ध में अर्जुन का अमित पराक्रम जानकर भी वे लोग उत्साह के साथ कोलाहल और सिंहनाद करते हुए चारों ओर से भीष्म पर आक्रमण करने चले। तालचिह्न-युक्त पताका से शोभित रथ पर बैठे हुए शूर भीष्म पितामह ने तीक्ष्ण बाणों से पाण्डवसेना को ढक दिया।

राजन्, इस तरह दोपहर के समय कौरवों के साथ पाण्डवों का घमासान युद्ध होने लगा। महारथी सात्यकि ने कृतवर्मा को पाँच बाण मारे। इसके बाद उन्होंने और भी हज़ारों बाण बरसाये। राजा द्रुपद ने पहले तीक्ष्ण बाणों से द्रोणाचार्य को घायल करके फिर सत्तर बाण उनको और पाँच बाण उनके सारथी को मारे। भीमसेन ने प्रपितामह राजा वाह्लीक को बाणों से घायल करके घोर सिंहनाद किया। पहले चित्रसेन ने बहुत से तीक्ष्ण बाण अभिमन्यु को मारे। शूर अभिमन्यु शत्रुओं पर हज़ारों बाण बरसा रहे थे। चित्रसेन के प्रहार करने पर उन्होंने भी चित्रसेन को तीन बाण मारे। महाराज, जैसे आकाश में महाघोर ग्रह बुध २० और शनैश्चर शोभायमान हों वैसे ही वे दोनों वीर युद्ध करते समय शोभा को प्राप्त हुए। वीर शत्रुओं का संहार करनेवाले अभिमन्यु ने नव बाणों से चित्रसेन के सारथी और चारों घोड़ों को मारकर सिंहनाद किया। वीर चित्रसेन बिना घोड़ों के रथ से कूदकर फुर्ती के साथ अपने भाई दुर्मुख के रथ पर चले गये। पराक्रमी द्रोणाचार्य ने बहुत से तीक्ष्ण बाण द्रुपद को और उनके सारथी को मारे। राजा द्रुपद सब सेना के सामने द्रोण के बाणों से पीड़ित होकर, उनके साथ अपने पिछले वैर को स्मरण कर, घोड़ों को तेज़ी से हँकवाकर उनके सामने से हट गये। भीमसेन ने दम भर में सब सेना के सामने महाराज वाह्लीक के घोड़ों को और रथ सहित सारथी को नष्ट कर दिया। राजन्, पुरुषश्रेष्ठ वाह्लीक प्राणसङ्कट की अवस्था में पड़कर डर के मारे फुर्ती के साथ टूटे रथ से कूदकर लक्ष्मण कुमार के रथ पर चढ़ गये। सात्यकि ने कई तरह के बाण मारकर कृतवर्मा को युद्ध से हटा दिया। इसके बाद वे भीष्म के पास पहुँचे। वहाँ उन्होंने फुर्ती के साथ भयानक लोमवाही साठ बाण भीष्म को मारे।

वे इतनी फुर्ती के साथ मण्डलाकार धनुष घुमाकर बाण बरसा रहे थे कि देखने से जान पड़ता था मानो रथ पर नृत्य कर रहे हैं।

तब भीष्म पितामह ने हेमचित्रित वेगवती नागिन-सी एक तीक्ष्ण शक्ति हाथ में ली, और वह शक्ति पूरे ज़ोर से सात्यकि को मारी। महायशस्वी सात्यकि उस मृत्युतुल्य अमोघ शक्ति को सहसा आते देखकर बड़ी फुर्ती के साथ उसका वार बचा गये। वह भयङ्कर शक्ति बड़ी उल्का के समान पृथ्वी में घुस गई। अब वीर सात्यकि ने अपनी शक्ति उठाकर बड़े वेग से भीष्म के रथ पर फेकी। सात्यकि के बाहुबल से चलाई गई बड़े वेग से आती हुई वह शक्ति मनुष्यों पर आक्रमण करनेवाली कालरात्रि के समान जान पड़ी। परन्तु भीष्म ने उस शक्ति को सहसा गिरते देख दो तीक्ष्ण क्षुरप्र बाणों से काटकर गिरा दिया। वह शक्ति दो टुकड़े होकर पृथ्वी पर गिर पड़ी। उस शक्ति को काटने के बाद शत्रुदमन भीष्म ने क्रोध की हँसी हँसकर सात्यकि की छाती में नव बाण मारे। तब भीष्म के अतुल पराक्रम से सात्यकि की रक्षा करने के लिए पाण्डवों ने भीष्म को चारों ओर से घेर लिया। जय की इच्छा रखनेवाले कौरव और पाण्डव परस्पर प्रहार करते हुए घोर युद्ध करने लगे। ३० ३८

एक सौ पाँच अध्याय

शल्य और युधिष्ठिर का युद्ध

सञ्जय कहते हैं कि राजन्, पितामह भीष्म को वर्षाकाल के मेघों से घिरे हुए सूर्य की तरह पाण्डवों की सेना के घिराव में देखकर राजा दुर्योधन ने दुःशासन से कहा—भाई! वह देखो, शत्रुदमन भीष्म को पाण्डवों की सेना ने घेर लिया है। इस समय उन महावीर की रक्षा और सहायता करना हमारा परम कर्तव्य है। यदि हम पितामह की रक्षा कर सकेंगे तो वे अकेले ही पाञ्चालों और पाण्डवों को मार डालेंगे। भीष्म समर में अनेक अद्भुत दुष्कर कार्य करनेवाले और हमारे प्रधान रक्षक हैं। इसलिए तुम अपनी सारी सेना के साथ जाकर पितामह की रक्षा करो।

दुर्योधन की आज्ञा पाकर वीर दुःशासन ने भीष्म को अपनी सेना के बीच में कर लिया। सब लोग बड़ी सावधानी से पितामह की रक्षा करने लगे। नकुल, सहदेव और धर्मराज से प्रधान रथी शकुनि लड़ने लगे। निर्मल प्रास, ऋष्टि और तोमर आदि शस्त्र धारण करनेवाले, सुशिक्षित, युद्धनिपुण वीर शकुनि के साथ थे। वे महावेगशाली पताका-शोभित घोड़ों पर सवार थे। ऐसे हज़ारों घुड़सवारों ने शकुनि के साथ जाकर तीनों पाण्डवों को घेर लिया। राजा दुर्योधन ने पाण्डवों की गति रोकने के लिए दस हज़ार घुड़सवार सेना और भेज दी। गरुड़ की तरह तेज़ चलनेवाले घोड़ों के दल आने पर उनकी टापों से समरभूमि मानों काँप उठी और टापों की आवाज़ से गूँज उठी। आग लगने पर जलते हुए बाँसों की पोरें फटने से जैसा १०

शब्द होता है वैसा ही शब्द घोड़ों की टापें पृथ्वी पर पड़ने से हो रहा था। उनकी टापों से उड़ी हुई धूल के बादल आकाश में छा गये और उससे सूर्यमण्डल छिप गया। जैसे हंसों के घुसने से सरोवर का जल क्षोभ को प्राप्त होता है वैसे ही वेगसम्पन्न घुड़सवार सेना आने पर पाण्डवों की सेना में हलचल मच गई। उस समय वहाँ घोड़ों की हिनहिनाहट और अस्त्र-शस्त्रों की झनकार के सिवा और कुछ नहीं सुन पड़ता था।

तटभूमि जैसे वर्षाकाल की पूर्णिमा के दिन क्षोभ को प्राप्त महासागर के प्रचण्ड वेग को रोकती है वैसे ही राजा युधिष्ठिर, नकुल और सहदेव ने उन घुड़सवार वीरों के वेग को रोक दिया। तीनों वीर भाई तीक्ष्ण बाणों और प्रासों से उनके सिर काटने लगे। घुड़सवार लोग पाण्डवों के बाणों से मरकर, पर्वतकन्दरा में स्थित नागों द्वारा निहत महानागों की तरह, गिरने २१ लगे। उनके सिर पेड़ से टपकनेवाले पके हुए ताल-फल के समान पृथ्वी पर गिरते देख पड़ते थे। बहुत से घोड़े भी सवारों के साथ मरकर चारों ओर गिरने लगे। पाण्डवों के बाणों से अत्यन्त व्यथित घोड़े, सिंह के सताये मृगों की तरह, प्राण लेकर भागने लगे। तीनों पाण्डव इस तरह युद्ध में शत्रुपक्ष को हराकर भेरी, शङ्ख आदि बजाने लगे।

राजा दुर्योधन ने अपने घुड़सवारों को हारकर भागते देख मद्रराज शल्य से कहा—राजन्! वह देखो, पाण्डवश्रेष्ठ युधिष्ठिर और नकुल-सहदेव हमारे सामने ही हमारी सेना को मारकर भगा रहे हैं। हे महाभाग, आपका बल-विक्रम पृथ्वी में प्रसिद्ध है। इसलिए तटभूमि जैसे समुद्र के वेग को रोकती है वैसे आप भी ज्येष्ठ पाण्डव को रोकिए।

महाराज, प्रतापी राजा शल्य दुर्योधन के ये वचन सुनकर असंख्य रथों के साथ युधिष्ठिर के समीप चले। राजा युधिष्ठिर ने शल्य को भारी सेना के साथ बड़े वेग से अपनी ओर आते ३० देखकर उन्हें अनायास रोक लिया। युधिष्ठिर ने शल्य की छाती में दस बाण मारे। नकुल और सहदेव ने भी सात बाण मारे। मद्रराज शल्य ने भी तीनों को तीन-तीन बाण मारे। इसके बाद क्रुद्ध होकर फिर युधिष्ठिर को तीक्ष्ण साठ बाण और नकुल-सहदेव को दो-दो बाण मारे।

राजन्, शत्रुवीरनाशक महाबाहु भीमसेन ने जब राजा युधिष्ठिर को मृत्यु के पञ्जे में फँसे और शल्य के वशवर्ती देखा तब वे बड़े वेग से उनके पास दौड़े गये। सूर्य उस समय पश्चिम-३५ आकाश में पहुँच चुके थे। दोनों ओर के वीर प्राणों का मोह छोड़कर घमासान युद्ध करने लगे।

एक सौ छः अध्याय

नवम दिन के युद्ध की समाप्ति

सञ्जय कहते हैं—राजन्, इसके बाद पराक्रमी भीष्म क्रोध से उत्तेजित होकर तीक्ष्ण बाणों से सेना सहित पाण्डवों को पीड़ित करने लगे। उन्होंने भीमसेन को बारह, सात्यकि को

नव, नकुल को तीन, सहदेव को सात और युधिष्ठिर के हृदय तथा हाथों में बारह बाण मारे। इसके बाद कई बाणों से धृष्टद्युम्न को घायल करके वे सिंहनाद करने लगे। तब नकुल ने बारह, सात्यकि ने तीन, धृष्टद्युम्न ने सत्तर, भीमसेन ने सात और युधिष्ठिर ने बारह बाण भीष्म पितामह को मारे। महाबली द्रोणाचार्य ने सात्यकि और भीमसेन को यमदण्डतुल्य पाँच-पाँच उग्र बाण मारे। जैसे कोई गजराज को अंकुश मारे वैसे सात्यकि और भीमसेन ने भी ब्राह्मणश्रेष्ठ द्रोणाचार्य को तीन-तीन तीक्ष्ण बाण मारे। सौवीर, कितव, प्राच्य, प्रतीच्य, उदीच्य, मालव, अभीषाह, शूरसेन, शिवि और वसाति देश के योद्धा लोग तीक्ष्ण बाणों से पीड़ित होकर भी संग्राम में भीष्म को छोड़कर नहीं भागे। अन्य अनेक देशों के योद्धा और राजा भी विविध शस्त्र लेकर पाण्डवों से युद्ध करने लगे। पाण्डवगण भी अपनी सेना के साथ चारों ओर से पितामह भीष्म को घेरकर उन पर प्रहार करने लगे।

उस समय रथों से घिरे हुए भीष्म वन में दावानल की तरह प्रज्वलित होकर शत्रुसेना को बाणों से नष्ट करने लगे। रथसमूह भीष्मरूप अग्नि के कुण्ड थे। धनुष उसकी ज्वाला था। ११ तलवार, गदा, शक्ति आदि शस्त्र ईंधन थे। बाण चिनगारियाँ थे। वे गृध्रपक्षशोभित सुवर्णपुङ्ख तीक्ष्ण इषु, कर्णी, नालीक, नाराच आदि बाणों से पाण्डवसेना को व्याप्त करके ध्वजाओं को काट-काटकर गिराने लगे। ध्वजाएँ कट जाने से सब रथ मुण्डित तालवृक्षों के समान देख पड़ने लगे। इसके बाद वे हाथियों, रथों और घोड़ों पर सवार योद्धाओं को मार-मारकर पृथ्वी पर गिराने लगे। उनके धनुष की डोरी का विकट शब्द सुनकर सब प्राणी डर से काँपने लगे। महाराज, महावीर भीष्म के धनुष से निकले हुए अमोघ बाण शत्रुओं के कवच तोड़कर शरीर के भीतर घुसने लगे। इसके बाद मैंने देखा कि वेग से चलनेवाले घोड़े—रथी और सारथी से शून्य—रथों को खींचते हुए युद्धभूमि में इधर-उधर फिर रहे हैं। उच्चकुल में उत्पन्न, युद्ध में कभी पीठ न दिखानेवाले, सुवर्णनिर्मित ध्वजाओं से शोभित रथों पर बैठे हुए, देहत्याग का निश्चय किये हुए चौदह हज़ार चेदि, काशि और करूष देश के योद्धा महारथी ज्योंही मुँह फैलाये हुए काल के समान भीष्म के सामने आये त्योंही हाथी, घोड़े आदि अपने वाहनों के साथ मर-मरकर यमपुर को सिधारने लगे। सैकड़ों-हज़ारों योद्धाओं में किसी के रथ का युगकाष्ठ और अन्य २० अंश और किसी के रथ के पहिये बाणों से छिन्न-भिन्न होते देख पड़ते थे। टूटे हुए रथ, वरूथ, कटे हुए बाण, कवच, पट्टिश, गदा, भिन्दिपाल, तरकस, चक्र, खड्ग, कटे हुए कुण्डल-शोभित सिर, तलत्राण, अंगुलित्राण और कटकर गिरी हुई ध्वजा-पताका आदि से वह युद्धभूमि परिपूर्ण थी। सैकड़ों-हज़ारों हाथी, घोड़े और उनके सवार मारे गये। सब महारथी भीष्म के बाणों से अत्यन्त व्यथित होकर युद्धभूमि से भागने लगे। पाण्डवगण किसी तरह उन्हें नहीं लौटा सके। हे भारत, उस समय पाण्डवों की सेना महेन्द्रसदृश महावीर भीष्म के बाणों की चोट

से ऐसी अस्तव्यस्त हो गई कि दो आदमी भी एक साथ नहीं भागते थे। सब अपनी-अपनी जान लेकर भाग रहे थे, दूसरे की ओर देखते भी नहीं थे। रथ, हाथी, घोड़े, पैदल और ध्वजाओं से पूर्ण पाण्डवसेना अचेत-सी होकर हाहाकार और आर्तनाद करने लगी। दैवदुर्विपाक में पड़कर पिता पुत्र को, पुत्र पिता को और प्रिय बन्धु प्रिय बन्धु को मारने लगा। युधिष्ठिर ३० की सब सेना कवच फेककर, बाल खोलकर, "त्राहि त्राहि" करती हुई चारों ओर भागी। रथों के अङ्ग-भङ्ग हो गये। अनेक रथ उलट-पुलट गये। सिंह के आक्रमण से घबराई और डरी हुई गउओं के झुण्ड की सी दशा पाण्डवसेना की देख पड़ी। सब लोग आर्तनाद कर रहे थे।

युधिष्ठिर की सेना को यों भागते देखकर वासुदेव ने रथ रोककर अर्जुन से कहा—हे धनञ्जय, यह तुम्हारा अभीष्ट समय उपस्थित है। इस समय तुम मोह को छोड़कर युद्ध करो। हे पुरुषसिंह, वीर भीष्म पर प्रहार करो। तुमने एक समय विराटनगर में सञ्जय के आगे कहा था कि भीष्म, द्रोण आदि कौरवपक्ष के योद्धा मुझसे लड़ने आवेंगे तो मैं उनको मारूँगा; उनके साथी भी जीते नहीं बचेंगे। इस समय अपनी उन बातों को पूर्ण करो। सन्ताप और मोह छोड़कर क्षत्रियधर्म के अनुसार युद्ध करो।

सञ्जय कहते हैं—राजन्! श्रीकृष्ण के ये वचन सुनकर अर्जुन ने तिरछी दृष्टि से देखकर, मुँह लटकाकर, अनिच्छापूर्वक कहा—हे हृषीकेश, अवध्य गुरुजन को मारकर नरक का कारणस्वरूप राज्य प्राप्त करने की अपेक्षा मुझे वनवास के दुःख भोगना ही अच्छा जान पड़ता है। तुम्हारी बात न मानना भी मेरी शक्ति के बाहर है। रथ चलाओ। मैं तुम्हारी आज्ञा से दुर्द्धर्ष कुरुपितामह वृद्ध भीष्म को आज युद्ध में मार गिराऊँगा।

अब भगवान् वासुदेव सूर्य के समान तेजस्वी दुर्निरीक्ष्य भीष्म की ओर सफ़ेद रङ्ग के ४० अर्जुन के घोड़ों को हाँककर ले चले। युधिष्ठिर की सब सेना अर्जुन को भीष्म से लड़ने के लिए उद्यत देखकर आप से ही फिर लौट पड़ी। महावीर भीष्म बारम्बार सिंहनाद करके अर्जुन के रथ पर बाण बरसाने लगे। क्षण भर में ही भीष्म के बाणों से अर्जुन का रथ ऐसा छिप

गया कि घोड़े, सारथी और रथ कुछ भी नहीं सूझ पड़ता था। निडर वासुदेव धैर्य के साथ उन भीष्म के बाणों से व्याकुल घोड़ों को चलाने लगे। तब महावीर अर्जुन ने मेघगर्जन का सा गम्भीर शब्द करनेवाले दिव्य गाण्डीव धनुष को लेकर तीक्ष्ण बाणों से भीष्म का धनुष काट डाला। महावीर भीष्म ने उसी दम और एक बड़ा धनुष उठाकर उस पर प्रत्यञ्चा चढ़ाई। तुरन्त ही कुपित अर्जुन ने फुर्ती से वह धनुष भी काट डाला। भीष्म ने प्रसन्न होकर इस फुर्ती के लिए "शाबाश अर्जुन, शाबाश!" कहकर अर्जुन की प्रशंसा की। भीष्म ने फिर दूसरा धनुष हाथ में लिया। वे फिर अर्जुन के रथ पर बाण छोड़ने लगे। वासुदेव भी तरह-तरह की गतियों से घोड़े चलाकर ५० भीष्म के बाणों को व्यर्थ करते हुए सारथी के काम में निपुणता की पराकाष्ठा दिखाने लगे। मतलब यह कि श्रीकृष्ण इस होशियारी से रथ को घुमाते थे कि भीष्म का लक्ष्य और बाण ख़ाली जाते थे। वासुदेव और अर्जुन शरीर फिर भी भीष्म के बाणों से घायल हो रहे थे और वे दोनों पुरुषसिंह परस्पर सींगों की मार से घायल श्रेष्ठ साँड़ की तरह शोभायमान हो रहे थे।

महाराज, श्रीकृष्ण ने देखा कि इधर अर्जुन मन लगाकर युद्ध नहीं करते और उधर भीष्म लगातार दृढ़ बाण बरसाकर, दोनों ओर की सेना के मध्यस्थल में खड़े होकर, दोपहर के प्रतापपूर्ण सूर्य की तरह तप रहे हैं—पाण्डवपक्ष के प्रधान-प्रधान वीर योद्धाओं को मारकर उन्होंने प्रलय सा मचा रक्खा है। वासुदेव को यह असह्य हुआ। वे क्रोध के मारे अर्जुन के घोड़ों की रास छोड़कर रथ से उतर पड़े और कोड़ा हाथ में लिये बारम्बार सिंहनाद करके भीष्म को मारने के लिए उनकी ओर दौड़े। श्रीकृष्ण की आँखें क्रोध से लाल हो रही थीं। अमित तेजस्वी प्रतापी महायोगी श्रीकृष्ण के दौड़ने के समय पग-पग पर पृथ्वी मानों फटने

लगी। राजन्! यह देखकर आपके पक्ष के सैनिक भय से विह्वल हो उठे, उनके हृदय धड़कने लगे। श्रीकृष्ण जब दौड़े तब सब सैनिक "भीष्म मरे, भीष्म मरे" कहकर चिल्लाने लगे। ६० गजराज पर आक्रमण करने के लिए झपटते हुए सिंह की तरह गरजते हुए श्रीकृष्ण जब भीष्म के

सामने चले तब वे बिजली से शोभित मेघ के समान जान पड़े। क्योंकि उनका शरीर मरकत-मणि के समान साँवला था, और उस पर रेशमी पीताम्बर बहार दिखा रहा था।

पराक्रमी भीष्म महात्मा वासुदेव को अपनी ओर इस तरह झपटते देखकर तनिक भी विचलित नहीं हुए। उन्होंने वैसे ही दिव्य धनुष खींचकर कहा—हे वासुदेव, आपको प्रणाम है। आइए, आज इस महायुद्ध में मुझे मारकर वीरगति दीजिए। हे देव, आप यदि मुझे युद्ध में मारेंगे तो उसको भी मैं अपने लिए श्रेय समझूँगा। हे गोविन्द, आपके इस व्यवहार से आज त्रिभुवन के लोग मुझे और भी सम्मान देंगे। हे निष्पाप, मैं आपका दास हूँ; मुझ पर जी भरकर प्रहार कीजिए।

इधर अर्जुन भी श्रीकृष्ण के पीछे रथ से कूद पड़े। उन्होंने दौड़कर पीछे से श्रीकृष्ण के दोनों हाथ पकड़ लिये। अर्जुन के यों रोकने पर भी कुपित श्रीकृष्ण नहीं रुके, और उसी तरह उनको भी खींचते हुए वेग से आगे बढ़े। दस पग आगे जाने पर, किसी तरह पैर जमाकर, अर्जुन उन्हें रोक सके। क्रोध से आँखें लाल करके साँप की तरह बारम्बार साँसें लेते हुए श्रीकृष्ण से ७१ सखा अर्जुन ने स्नेहपूर्ण नम्र स्वर में कहा—हे महाबाहु, लौट चलिए। हे केशव, आप पहले युद्ध न करने की प्रतिज्ञा कर चुके हैं, उसे झूठ न कीजिए। आप शस्त्र लेकर पितामह से लड़ेंगे तो लोग आपको मिथ्यावादी कहेंगे। यह सब भार तो मेरे ऊपर है। मैं पितामह को मारूँगा। मैं शस्त्र, सत्य और सुकृत की शपथ खाकर कहता हूँ कि संग्राम में सब शत्रुओं को उनके भाई-बन्धुओं-सहित अवश्य मारूँगा। आप अभी देखेंगे कि मैं पूर्णचन्द्र तुल्य पितामह को रथ से गिरा दूँगा।

महानुभाव श्रीकृष्ण अर्जुन के ये वचन सुनकर वैसे ही क्रोधपूर्ण भाव से फिर रथ पर चले गये। अर्जुन और श्रीकृष्ण के रथ पर जाते ही महारथी भीष्म फिर मेघ जैसे पर्वत पर जल बरसावें वैसे उन पर बाण बरसाने लगे। सूर्य जैसे वसन्त ऋतु में अपनी किरणों से सब पदार्थों का तेज हरते हैं वैसे ही पितामह भीष्म बाणों से सबके प्राण हरने लगे। पाण्डवगण जैसे कौरवों की सेना को भगा रहे थे वैसे ही भीष्म पाण्डवों की सेना को भगाने लगे। इस प्रकार भागते हुए, निरुत्साह, उदास सैकड़ों-हज़ारों पाण्डवपक्ष के वीर मर-मरकर गिरने लगे। वे मध्याह्न काल के सूर्य के समान तेज से प्रज्वलित, अलौकिक पराक्रमी, दुष्कर कर्म करनेवाले ८१ भीष्म की ओर आँख उठाकर देख भी नहीं सकते थे। उनकी ओर देखते ही पाण्डवगण डरने लगे।

हे भारत! पाण्डवपक्ष के सब सैनिक भीष्म के प्रहार से भागकर, कीचड़ में फँसी गउओं के झुण्ड के समान, उत्पीड़ित चींटियों के समान और बलवान् व्यक्ति से लड़नेवाले दुर्बल पुरुषों के समान, शरणहीन होकर भीष्म की ओर फिरकर देख भी नहीं सकते थे। महापराक्रमी भीष्म बाण-रूप किरणों के द्वारा, सूर्य के समान, सब राजाओं को सन्ताप पहुँचाने लगे। राजन्, इस तरह पाण्डवों की महासेना भीष्म के बाणों से नष्ट होने लगी। उस समय भगवान् सूर्यदेव अस्ताचल पर ८५ पहुँच गये। सैनिक लोग बहुत थक गये थे। वे युद्ध के विश्राम के लिए व्याकुल हो उठे।

एक सौ सात अध्याय

पाण्डवों का भीष्म के पास जाकर उनसे उनके वध का उपाय पूछना

सञ्जय ने कहा—हे भारत, दिन डूब गया था। युद्धभूमि में कुछ भी नहीं सूझ पड़ता था। सन्ध्या के समय राजा युधिष्ठिर ने अपने पक्ष की सेना को महारथी भीष्म के प्रहार से पीड़ित हो, अस्त्र-शस्त्र फेंककर, भागते और सोमकगण को हारकर निरुत्साह होते देखकर अत्यन्त चिन्तित हो सेनापति को युद्ध रोकने की आज्ञा दी। राजन्, इस प्रकार पाण्डवपक्ष की सेना को युद्ध से लौटते देखकर आपके पक्ष की सेना ने भी युद्ध बन्द कर दिया। शस्त्र-प्रहार से छिन्न-भिन्न महारथी योद्धा लोग अपने-अपने शिविर को लौट चले। भीष्म के बाणों से पीड़ित पाण्डवगण उनके अद्भुत युद्धकौशल को स्मरण करके किसी तरह शान्ति नहीं प्राप्त कर सकते थे। वे बहुत ही बेचैन हो उठे। उधर आपके पुत्र भीष्म की पूजा और प्रशंसा करते हुए उन्हें अपने बीच में करके शिविर को गये।

जीवों को अचेत करके नींद में सुलानेवाली भयङ्कर रात हो आई। दुर्द्धर्ष पाण्डव और सृञ्जय रात के समय श्रीकृष्ण आदि यादवों के साथ डेरे में बैठकर सलाह करने लगे। राजा युधिष्ठिर ने देर तक सोचकर श्रीकृष्ण की ओर देखकर कहा—हे वासुदेव! ये महाबली भीष्म मेरी सेना को वैसे ही नष्ट कर रहे हैं जैसे मस्त हाथी नरकुल के वन को रौंदता है। वे प्रज्वलित आग की तरह मेरी सेना को भस्म कर रहे हैं। तीक्ष्ण अस्त्र-शस्त्र चलाने में चतुर महाप्रतापी पितामह क्रोधपूर्वक धनुष हाथ में लेकर, महानाग तक्षक के समान, अमोघ बाण बरसाते हैं। हम लोगों को उनकी ओर देखने तक का साहस नहीं होता। कुपित यमराज, वज्रपाणि इन्द्र, पाशधारी वरुण और गदापाणि कुवेर को चाहे कोई जीत भी ले, किन्तु शस्त्रधारी कुपित भीष्म को कोई युद्ध में नहीं परास्त कर सकता। इसलिए हे वासुदेव! तुम बताओ, अब मैं क्या करूँ? मैं भीष्म से बहुत डर रहा हूँ। वे नित्य मेरी सेना नष्ट करते जा रहे हैं। मैं फिर वन में जाकर रहना ही अपने लिए अच्छा समझता हूँ। अब युद्ध करने को जी नहीं चाहता। जैसे पतङ्गे मरने के लिए ही जलती हुई आग की ज्योति के ऊपर आक्रमण करते हैं, वैसे ही भीष्म से हमारा लड़ना है। हे यदुकुल-तिलक, राज्य के लोभ से युद्ध ठानकर मैं इस समय विनाश के मुख पर स्थित हूँ। मेरे ये शूर भाई भी भीष्म के बाणों से अत्यन्त पीड़ित हो रहे हैं। मेरे कारण, भ्रातृस्नेह के वश होकर, ये लोग भी राज्य से भ्रष्ट हुए और वन में रहे। हे मधुसूदन, मेरे ही कारण द्रौपदी ने अब तक इतने क्लेश सहे। मैं इस समय जीवन को ही ग़नीमत समझता हूँ; क्योंकि जीवन के ही लाले पड़े हैं। मैं इस समय यह सोच रहा हूँ कि [युद्ध बन्द करके] ज़ीवन बचा लूँ। अब धर्म और तप करने में ही अपना जीवन बिताऊँगा। हे श्रीकृष्ण, अगर

मुझे और मेरे भाइयों को तुम अपने अनुग्रह का पात्र समझते हो तो इस समय हित की बात मुझे बताओ। ऐसा उपदेश दो, जो धर्म का विरोधी न हो और जिससे मेरा हित भी हो।

युधिष्ठिर के ये वचन सुनकर श्रीकृष्ण को दया आ गई। वे उन्हें समझाते हुए बोले—हे सत्यवादी धर्मपुत्र, आप उदास न हों। आपके चारों भाई बल और पराक्रम में श्रेष्ठ हैं। वे शत्रुओं को नष्ट करनेवाले और दुर्जय हैं। अर्जुन और भीमसेन अग्नि तथा वायु के समान तेजस्वी हैं। नकुल और सहदेव ऐसे बलवान् हैं कि इन्द्र के समान देवताओं पर भी प्रभुता कर सकते हैं। इन पर भी आपको विजय का भरोसा न हो तो मुझे अपना सुहृद् और हितचिन्तक समझकर भीष्म से लड़ने की आज्ञा दीजिए। महाराज, आपके कहने से ऐसा कौन काम है जिसे मैं महायुद्ध में नहीं कर सकता? यदि अर्जुन स्वयं भीष्म को मारना नहीं चाहते तो मैं, दुर्योधन आदि के सामने ही, नरश्रेष्ठ भीष्म को मारूँगा। हे पाण्डव, महावीर भीष्म के मरने से ही अगर विजय

३० पा सकोगे तो मैं अकेला ही कुरुवृद्ध भीष्म को मार डालूँगा। राजन्, युद्ध में मेरा इन्द्र के समान पराक्रम देखिएगा। महास्त्र छोड़ते हुए भीष्म को मैं रथ से गिरा दूँगा। जो व्यक्ति पाण्डवों का शत्रु है, वह मेरा भी शत्रु है। मुझे आप किसी बात में अलग न समझिए। आपके पक्ष के लोग मेरे हैं और मेरे पक्ष के लोग आपके अधीन हैं। ख़ासकर अर्जुन के साथ मेरा विशेष सम्बन्ध है। अर्जुन मेरे भाई, सखा, सम्बन्धी और शिष्य हैं। मैं उनके लिए अपने शरीर का मांस भी काटकर दे सकता हूँ। वीर अर्जुन भी मेरे लिए प्राण तक दे सकते हैं। हम दोनों मित्रों की परस्पर यह प्रतिज्ञा है कि एक दूसरे को सङ्कट से उबारेगा। इसलिए हे धर्मराज, मुझे आप आज्ञा दें, मैं समर के लिए तैयार हो जाऊँ। अर्जुन ने उपप्लव्य नगर में, उलूक दूत के आगे, प्रतिज्ञा की थी कि "मैं भीष्म को मारूँगा"। मुझे अर्जुन की यह प्रतिज्ञा सर्वथा पूरी करनी है। अर्जुन की अनुमति पाकर मैं अवश्य उसे पूर्ण कर सकता हूँ। अथवा युद्ध में यह कार्य करना अर्जुन के लिए कठिन नहीं है, इसलिए वही संग्राम में शत्रुदमन भीष्म को मारेंगे। अर्जुन उद्यत होकर रण में और के लिए असाध्य काम भी सहज ही कर सकते हैं। वे युद्ध में दैत्य-दानवों-सहित देवताओं को भी मार सकते हैं। फिर भीष्म को मार लेना कौन बड़ी बात है? भीष्म महावीर होने पर भी इस समय कर्तव्यज्ञान से शून्य हो रहे हैं। वे इस समय क्षुद्र सैनिकों पर अपना पराक्रम दिखाते हैं। उनकी बुद्धि भ्रष्ट-सी हो गई है, इसी से जान पड़ता है

४० कि उनके जीवन की अवधि थोड़ी ही रह गई है।

युधिष्ठिर ने कहा—हे वासुदेव, तुम जो कह रहे हो सो ठीक है। सब कौरव मिलकर भी तुम्हारे वेग को नहीं सह सकते। तुम हमारे पक्ष में हो, इसलिए अवश्य ही हमारी इच्छाएँ पूरी होंगी। हे गोविन्द! तुमको हमने सहायक पाया है इसलिए भीष्म क्या हैं, हम इन्द्र सहित देवताओं को भी हरा सकते हैं। किन्तु हे माधव! तुम युद्ध न करने की प्रतिज्ञा कर

चुके हो इसलिए, आत्मगौरव की रक्षा का ख़याल करके, मैं तुम्हें युद्ध में लिप्त करना और मिथ्यावादी बनाना ठीक नहीं समझता। तुम युद्ध न करके यों ही मुझको उचित सहायता दो। मुझसे युद्ध के पहले भीष्म वादा कर चुके हैं कि वे युद्ध तो दुर्योधन की ओर से करेंगे, परन्तु मुझे विजय की सलाह देंगे। इसलिए हे माधव, वे अवश्य ही विजय की अच्छी सलाह मुझे देंगे और उनकी कृपा से हमें राज्य प्राप्त होगा। हे वासुदेव, इस समय हम सब मिलकर उनके पास चलें। आओ, उन्हीं से चलकर उनके वध का उपाय पूछें। वे अवश्य हमको हमारे हित की बात बतावेंगे। जो तुमको यह सलाह रुचे तो हम लोग उनके पास चलकर सलाह लें। वे जैसा बतावें वैसा ही हम लोग करें। हे मधुसूदन, बचपन में जब हमारे पिता का स्वर्गवास हो गया था तब उन्होंने हमारा लालन-पालन किया था। वे देवव्रत भीष्म इस समय ५० अवश्य हमें अच्छी सलाह देंगे। किन्तु हमारे इस क्षत्रिय-धर्म को धिक्कार है कि हम लोग उन्हीं वृद्ध पितामह, पिता के प्रिय पिता, को मारना चाहते हैं।

सञ्जय कहते हैं कि महाराज, तब श्रीकृष्ण ने युधिष्ठिर से कहा—हे धर्मपुत्र, आपने जो कहा वह मुझे भी पसन्द है। देवव्रत भीष्म समर में शत्रुओं को देखकर ही नष्ट कर सकते हैं। इस कारण उनके वध का उपाय जानने के लिए उन्हीं के पास जाना चाहिए। आप विशेष रूप से पूछेंगे तो वे अपने वध का उपाय बता देंगे। इसलिए आइए, हम सब कुरुपितामह से पूछने चलें। हम लोग उनकी बताई हुई सलाह के माफ़िक़ शत्रुओं से लड़ेंगे और विजय प्राप्त करेंगे।

राजन्! महावीर पाण्डवगण और श्रीकृष्ण यह सलाह करके, धनुष आदि शस्त्र और कवच त्यागकर, सब मिलकर भीष्म के शिविर में पहुँचे। सबने सिर झुकाकर प्रणाम और पूजा की। सब उनके शरणागत हुए। तब कुरुपितामह भीष्म ने हर एक से स्वागत और कुशल पूछकर कहा—हे वीरो! बताओ, तुम्हारी प्रीति के लिए मैं क्या करूँ? वह कार्य दुष्कर ६० होने पर भी मैं उसे सब तरह यत्नपूर्वक करने को तैयार हूँ।

पितामह ने जब प्रसन्नतापूर्वक बारम्बार इस तरह पूछा तब दीन भाव से, स्नेहपूर्ण स्वर से, युधिष्ठिर ने कहा—हे धर्मज्ञ पितामह, हम लोग जय और राज्य किस तरह पावेंगे? किस तरह हम अपने अधीन वीर क्षत्रियों को इस नाश से बचा सकेंगे? आप कृपाकर अपनी मृत्यु का उपाय हमको बता दीजिए। हे वीर, समर में हम किस तरह आपके वेग को सह सकते हैं? युद्ध में आप पर प्रहार करने का, आपको मारने का, साधारण मौक़ा भी हमें नहीं देख पड़ता। आप सदा समर में मण्डलाकार धनुष धारण किये बाण बरसाते देख पड़ते हैं। आप किस समय धनुष हाथ में लेते हैं, कब डोरी खींचते हैं, कब बाण चढ़ाते और कब छोड़ते हैं, यह कुछ भी हम लोगों को नहीं देख पड़ता। रथ के ऊपर आप दूसरे सूर्य के समान देख पड़ते हैं। रथ, घोड़े, हाथी, मनुष्य आदि को आप लगातार अपने बाणों से गिराते ही रहते हैं।

आपको भला कौन पुरुष समर में जीत सकता है ? आपने लगातार बाण-वर्षा करके मेरी इतनी बड़ी सेना नष्ट कर दी है। इसलिए हे पितामह, इस समय आप वही उपाय बताइए जिससे हम युद्ध में आपको जीत सकें, राज्य प्राप्त कर सकें और मेरी सेना का विनाश भी न हो।

राजन्, तब भीष्म ने पाण्डवों से कहा—हे कुन्तीनन्दन, मेरे जीते जी युद्ध में विजय प्राप्त करना तुम्हारे लिए सम्भव नहीं। युद्ध में मुझे मारने पर ही तुम लोग जय प्राप्त कर सकोगे। इसलिए अगर समर में जय प्राप्त करना चाहते हो तो शीघ्र मुझ पर कठोर प्रहार करो। मैं तुमको आज्ञा देता हूँ, तुम जी भरकर मुझ पर बाण चलाओ। इसे मैं तुम्हारा सौभाग्य समझता हूँ कि तुम लोग यह जान गये कि मुझे मारे बिना तुम्हें जय नहीं प्राप्त हो सकती। मेरे मरने से ही सब कौरवों का मरना समझकर मुझे मारने का यत्न झटपट करो।

युधिष्ठिर ने कहा—हे पितामह, आप संग्राम में दण्डपाणि यमराज की तरह देख पड़ते हैं। इसलिए वह उपाय बताइए जिससे हम युद्ध में आपको जीत सकें। हम लोग समर में इन्द्र, वरुण और यमराज को भी जीत सकते हैं; किन्तु आपको तो इन्द्र सहित सब देवता और दैत्य भी नहीं जीत सकते, फिर हम हैं क्या चीज़ !

भीष्म ने कहा—हे पाण्डव, तुम ठीक कह रहे हो। मैं संग्राम में यत्नपूर्वक धनुष-बाण लेकर खड़ा होऊँ तो इन्द्र सहित सब देवता और दैत्य भी मिलकर मुझे नहीं जीत सकते। मैं यदि अस्त्र-शस्त्र त्याग दूँ तभी वे मुझे मार सकते हैं। हे धर्मपुत्र ! शस्त्र का त्याग किये हुए, कवच-हीन, गिरे हुए, ध्वजाहीन, भागते हुए, डरे हुए, शरणागत, स्त्री-जाति, स्त्रियों का नाम रखनेवाले, विकलाङ्ग, अपने पिता के एकमात्र पुत्र, सन्तानहीन और नपुंसक आदि के साथ युद्ध करना मुझे पसन्द नहीं है। राजन्, मेरी पहले की प्रतिज्ञा स्मरण करो। मैं पुरुष-भाव को प्राप्त स्त्री-जाति से या नपुंसक से कभी युद्ध नहीं कर सकता। जो महारथी युद्धनिपुण द्रुपद का पुत्र शिखण्डी तुम्हारी सेना में है वह पहले स्त्री था, पीछे यक्ष के वरदान से पुरुष हो गया है। यह वृत्तान्त तुम लोग भी अच्छी तरह जानते हो। इस समय महारथी अर्जुन उसी शिखण्डी को आगे करके मुझ पर तीक्ष्ण बाण मारें। शिखण्डी अमङ्गलध्वज और पहले का स्त्री है, इसलिए धनुष-बाण हाथ में रहने पर भी मैं उस पर प्रहार नहीं करूँगा। अर्जुन उसी शिखण्डी की आड़ में रहकर बारम्बार बाण मारें। युद्ध के लिए उद्यत मुझको महाभाग श्रीकृष्ण या महारथी अर्जुन के सिवा और कोई नहीं मार सकता। इसलिए वीर अर्जुन यत्नपूर्वक गाण्डीव धनुष हाथ में लेकर, शिखण्डी को आगे करके, मुझ पर प्रहार करें और मुझे गिरा दें। तब तुम अवश्य जय प्राप्त कर सकोगे। हे युधिष्ठिर, मेरी सलाह के अनुसार काम करोगे तो कौरवों को जीत लोगे।

सञ्जय कहते हैं—महाराज ! महात्मा श्रीकृष्ण और पाण्डवगण पितामह भीष्म से उनकी मृत्यु का यह उपाय जानकर, उन्हें प्रणाम करके, अपने शिविर को लौट गये। अब भीष्म को

प्राणत्याग के लिए उद्यत देखकर, दुःख और सन्ताप से खिन्न होकर, लज्जितभाव से अर्जुन ने श्रीकृष्ण से कहा—हे वासुदेव! मैं बचपन में धूल में खेलते-खेलते जिनकी गोद में बैठकर जिन्हें धूल से भर देता था, जिन्हें पिता कहता था तो "मैं तुम्हारा पिता नहीं, तुम्हारे पिता का पिता हूँ" कहकर जो मुझसे स्नेह करते थे, उन्हीं महात्मा वृद्ध पितामह से इस समय मैं कैसे युद्ध करूँगा? किस तरह तीक्ष्ण बाण मारकर उनकी हत्या करूँगा? हे वासुदेव, महात्मा भीष्म मेरी सारी सेना को भले ही नष्ट कर दें, किन्तु मैं उनसे कभी न लड़ूँगा। नाश हो और चाहे जय, मैं उन्हें नहीं मार सकता। हे श्रीकृष्ण! आप ही कहिए, क्या मेरा यह कर्तव्य नहीं है? ९०

श्रीकृष्ण ने कहा—सुनो अर्जुन, तुम पहले युद्ध में भीष्म को मारने की प्रतिज्ञा कर चुके हो। क्षत्रिय होकर अब उस प्रतिज्ञा को असत्य कैसे करोगे? हे पार्थ, युद्धदुर्मद क्षत्रिय भीष्म को क्षत्रियधर्म के अनुसार मार गिराओ। उन्हें मारे बिना तुमको जय नहीं मिल सकती। यह बात, अर्थात् तुम्हारे हाथ से भीष्म की मौत, पहले ही देवता निश्चित कर चुके हैं। तुम्हें विवश होकर वही करना होगा। देवताओं का निश्चय कभी टल नहीं सकता। मुँह फैलाये हुए काल के समान दुर्द्धर्ष भीष्म का सामना तुम्हारे सिवा कोई नहीं कर सकता। यहाँ तक कि इन्द्र भी युद्ध में भीष्म को नहीं मार सकते। इसलिए मेरी बात सुनो, चित्त को स्थिर करके भीष्म को मारो। महामति बृहस्पति ने एक समय इन्द्र से कहा था कि अपना बड़ा, वृद्ध और गुणी पुरुष—गुरुजन होकर भी—अगर आततायी की तरह अपने को मारने आवे तो उसे मार डालना चाहिए। इसमें कोई दोष नहीं है। हे पार्थ! क्षत्रियों का यही सनातन-धर्म है कि वे ईर्ष्या छोड़कर यज्ञ करें, शत्रुओं से युद्ध करें और प्रजा की रक्षा करें। १००

अर्जुन ने कहा—हे श्रीकृष्ण, शिखण्डी के ही हाथ से भीष्म की मृत्यु होना निश्चित है; क्योंकि शिखण्डी को सामने देखकर ही भीष्म युद्ध से विमुख हो जाते हैं। मैंने यही उपाय पसन्द किया है कि मैं शिखण्डी को अपने आगे करके भीष्म को मारूँगा। केवल शिखण्डी भीष्म से युद्ध करेंगे, और मैं अन्य महारथियों को अपने बाणों से रोकूँगा। मैंने भीष्म के मुँह से सुना है कि शिखण्डी पहले स्त्री थे। इसी कारण पितामह भीष्म उनसे युद्ध नहीं करेंगे।

महाराज, पाण्डवगण श्रीकृष्ण के साथ इस तरह भीष्म-वध का निश्चय करके प्रसन्नता-पूर्वक अपने डेरों में आये और बिछौने पर लेटकर विश्राम करने लगे। १०७

एक सौ आठ अध्याय

शिखण्डी और भीष्म का संवाद

धृतराष्ट्र ने पूछा—हे सञ्जय, शिखण्डी ने भीष्म के साथ किस तरह संग्राम किया? पितामह भीष्म ने पाण्डवों के साथ दसवें दिन कैसा युद्ध किया?

सञ्जय ने कहा—राजन् ! सूर्योदय होने पर चारों ओर भेरी, मृदङ्ग, तूर्य, शङ्ख आदि बाजे बजने लगे। पाण्डवगण उस दिन शिखण्डी को आगे करके युद्ध के लिए चले। शत्रुओं के लिए दुर्भेद्य महाव्यूह की रचना करके शिखण्डी उसके अग्र भाग में स्थित हुए। महावीर भीमसेन और अर्जुन उनके रथ के दोनों पहियों की रक्षा में नियुक्त हुए। द्रौपदी के पाँचों पुत्र और अभिमन्यु शिखण्डी के पृष्ठरक्षक हुए। भीमसेन आदि पूर्वोक्त योद्धाओं की रक्षा का कार्य सात्यकि, चेकितान और महारथी धृष्टद्युम्न करने लगे। धृष्टद्युम्न की रक्षा के लिए पाञ्चाल नियुक्त हुए। हे भारत! उनके पीछे राजा युधिष्ठिर, नकुल और सहदेव एकत्र होकर सिंहनाद करते हुए चले। उनके पीछे अपनी सारी सेना लेकर राजा विराट चले। विराट के पीछे राजा द्रुपद चले। पाँचों भाई केकय-कुमारों और महाबली धृष्टकेतु को उस व्यूह के जघनस्थल की रक्षा का भार सौंपा गया। महाराज, पाण्डवगण इस तरह अपनी सेना का व्यूह बनाकर, १० प्राणों की ममता छोड़कर, कौरव-सेना के सामने चले।

इधर कौरवगण भी महारथी भीष्म को सब सेना के आगे करके पाण्डवों की सेना की ओर अग्रसर हुए। आपके महाबली पराक्रमी पुत्रगण चारों ओर से दुर्द्धर्ष वीर भीष्म की रक्षा करने लगे। भीष्म के पीछे क्रमशः महाधनुर्द्धर द्रोणाचार्य, गुरुपुत्र अश्वत्थामा, हाथियों की सेना साथ लिये राजा भगदत्त, कृपाचार्य, कृतवर्मा आदि महारथी चले। काम्बोजपति सुदक्षिण, मगधराज जयत्सेन, शकुनि, बृहद्बल और सुशर्मा आदि अन्य वीरगण कौरवसेना के जघनभाग की रक्षा करने लगे। हे भारत! महारथी भीष्म नित्य ऐसे ही असुर, राक्षस या पिशाचों के दुर्भेद्य व्यूह रचकर युद्ध करते थे।

इसके बाद दोनों पक्ष के वीर योद्धा यम-राज्य की आबादी बढ़ानेवाला संग्राम करने लगे। वीरगण उत्साह के साथ परस्पर प्रहार करने लगे। अर्जुन आदि पाण्डव शिखण्डी को आगे करके तरह-तरह के बाण बरसाते हुए संग्राम के लिए भीष्म के पास चले। महाराज, आपकी सब सेना भीमसेन के बाणों की चोट खाकर रक्त से तर हो-होकर मरने लगी। नकुल, सहदेव २० और सात्यकि, तीनों वीर कौरवपक्ष की सेना में घुसकर बलपूर्वक उसे पीड़ित करने लगे। पाण्डवों और सृञ्जयों के बाणों से मारे जाते हुए कौरवपक्ष के सैनिक, पाण्डवपक्ष की सेना को रोकने में असमर्थ और निराश्रय होकर, इधर-उधर भागने लगे।

धृतराष्ट्र ने कहा—हे सञ्जय, महापराक्रमी भीष्म ने हमारी सेना को पाण्डवों के द्वारा पीड़ित होते देखकर क्रुद्ध होकर क्या किया? वे सोमकों पर प्रहार करते-करते किस तरह युद्ध के लिए पाण्डवों के पास पहुँचे? यह सब मुझसे कहो।

सञ्जय ने कहा—हे राजेन्द्र! कौरवसेना को पाण्डवों और सृञ्जयों के प्रहार तथा युद्ध-कौशल से पीड़ित देखकर महाबाहु भीष्म ने जो कुछ किया, सो मैं कहता हूँ, ध्यान देकर सुनिए।

महाबली पाण्डवगण प्रसन्नतापूर्वक कौरवपक्ष की सेना को मारते हुए भीष्म के सामने जाने लगे। महाधनुर्द्धर भीष्म अपने पक्ष के घोड़े, हाथी, मनुष्य आदि को शत्रुओं के बाणों से मरते देखकर क्रोध से अधीर हो उठे। वे जीवन की आशा छोड़कर नाराच, वत्सदन्त और अञ्जलिक बाणों से पाञ्चाल, सृञ्जय, पाण्डव आदि पर प्रहार करने लगे। उन्होंने लगातार बाण-वर्षा करके पाँचों पाण्डवों का आगे बढ़ना रोक दिया। वे क्रोध के आवेश से विविध अस्त्र-शस्त्र बरसाकर, ३० असंख्य हाथियों और घोड़ों को गिराकर, भयानक रूप से शत्रुपक्ष पर आक्रमण करने लगे। उन्होंने घोड़े के सवार को घोड़े से, हाथी के सवार को हाथी से, रथ के सवार को रथ से और पैदल सैनिक को बाण मारकर भूमि पर गिरा दिया। असुरगण जैसे इन्द्र के सामने लड़ने को उपस्थित हों, वैसे ही पाण्डवगण महारथी भीष्म को संग्राम-भूमि में आते देखकर उनके सामने आये। महावीर भीष्म इन्द्र के वज्र ऐसे बाण छोड़ने लगे। उस समय उनका भयानक रूप और मण्डलाकार घूमता हुआ बड़ा धनुष ही चारों ओर सैनिकों को देख पड़ने लगा। हे भारत, आपके पुत्रगण महावीर भीष्म का ऐसा अद्भुत विक्रम और पुरुषार्थ देखकर आश्चर्य के साथ उनकी बड़ाई करने लगे। देवताओं ने जैसे अपने शत्रु विप्रचित्ति राक्षस को देखा था, वैसे ही पाण्डवगण उदास दृष्टि से भीष्म की ओर देखने लगे। मुँह फैलाये हुए यमराज के समान भयङ्कर भीष्म को देखकर सबके छक्के छूट गये। कोई उन्हें रोक नहीं सका। राजन्, दसवें दिन के युद्ध में महावीर भीष्म वन जलानेवाले दावानल के समान प्रज्वलित होकर शिखण्डी के साथ की रथ-सेना को भस्म करने लगे। ४०

कुपित साँप और यमराज के समान भीष्म की छाती में शिखण्डी ने तीन तीक्ष्ण बाण मारे। महापराक्रमी भीष्म ने शिखण्डी की ओर देखकर, क्रोध की हँसी हँसकर, अनिच्छा के साथ कहा—हे शिखण्डी, तुम मुझे बाण भले मारो; परन्तु मैं किसी तरह तुमसे युद्ध नहीं करूँगा; क्योंकि विधाता ने तुमको शिखण्डिनी के रूप में उत्पन्न किया है।

भीष्म के ये वचन सुनकर, क्रोध से अत्यन्त अधीर होकर, ओठ चाटते हुए शिखण्डी ने कहा—हे क्षत्रियकुल के काल भीष्म, मैं तुमको अच्छी तरह जानता हूँ। तुमने परशुराम के साथ युद्ध किया था, यह भी मैं जानता हूँ। तुम्हारा दिव्य प्रभाव भी मुझे मालूम है। तो भी मैं अपने और पाण्डवों के हित के लिए तुमसे संग्राम करूँगा। मैं शपथ करके कहता हूँ कि तुमको अवश्य मारूँगा। हे भीष्म, मेरी प्रतिज्ञा तुमने सुन ली। अब जो चाहे सो करो। यदि तुम मुझको बाण न मारोगे तो भी जब तक जीते रहोगे तब तक किसी तरह छुटकारा न पाओगे। इसलिए इस संसार को एक बार अच्छी तरह देख लो।

सञ्जय कहते हैं—अब शिखण्डी ने भीष्म को अत्यन्त कठोर पाँच बाण मारे। महारथी ५० अर्जुन ने शिखण्डी के वचन सुनकर, वही ठीक मौक़ा समझकर, शिखण्डी से कहा—हे वीर

शिखण्डी ! मैं तुम्हारी सहायता करूँगा, तुम बाण-वर्षा से शत्रुओं को मारकर क्रोधपूर्वक वेग से महावीर भीष्म पर आक्रमण करो। महारथी भीष्म तुमको पीड़ित नहीं करेंगे, मैं तुम्हारे साथ हूँ। आज तुम यत्नपूर्वक भीष्म से समर करने के लिए तैयार हो जाओ। जो तुम भीष्म को मारे बिना समर से लौटोगे तो लोग झूठी प्रतिज्ञा करनेवाला कहकर तुम्हारा उपहास करेंगे। इसलिए ऐसा उपाय करो जिससे समाज में हमारा उपहास न हो। तटभूमि जैसे समुद्र के वेग को रोकती है वैसे मैं द्रोणाचार्य, अश्वत्थामा, कृपाचार्य, दुर्योधन, चित्रसेन, विकर्ण, जयद्रथ, विन्द, अनुविन्द, काम्बोजराज सुदक्षिण, शूर भगदत्त, महारथी मगधराज जयत्सेन, वीर्यशाली भूरिश्रवा, राक्षस अलम्बुष, त्रिगर्तराज सुशर्मा और अन्य महारथी कौरवों को रोककर ६० उनसे तुम्हारी रक्षा करूँगा। तुम पितामह भीष्म को मारने की चेष्टा करो।

एक सौ नव अध्याय

भीष्म और दुर्योधन की बातचीत

धृतराष्ट्र ने कहा—हे सञ्जय, पाञ्चालपुत्र शिखण्डी ने क्रुद्ध होकर पितामह भीष्म के साथ कैसे युद्ध किया ? किस तरह उन पर आक्रमण किया ? पाण्डव-सेना के किस-किस महारथी ने जय प्राप्त करने की इच्छा से अस्त्र-शस्त्र लेकर शिखण्डी की रक्षा की ? उस दसवें दिन महावीर भीष्म ने पाण्डवों और सृञ्जयों से किस तरह युद्ध किया ? हे सञ्जय, मुझे यह समाचार असह्य हो रहा है कि शिखण्डी ने भीष्म पर आक्रमण किया। जिस समय युद्ध से विमुख भीष्म पर आक्रमण किया गया उस समय उससे भीष्म का रथ तो नहीं टूटा ? उनका धनुष तो नहीं कट गया ?

सञ्जय ने कहा—महाराज, संग्राम के समय महारथी भीष्म का न तो रथ ही टूटा और न धनुष ही कटा। वे सन्नतपर्व तीक्ष्ण विचित्र बाणों से शत्रुसेना को नष्ट करने लगे। राजन् ! आपके पक्ष के बहुत से महारथी योद्धा हाथियों और घुड़सवार सेना को साथ लेकर, भीष्म को आगे करके, युद्ध करने लगे। समरविजयी भीष्म, अपनी प्रतिज्ञा के अनुसार, समर में लगातार शत्रुसेना का संहार करने लगे। वे महावीर दसवें दिन के युद्ध में जब शत्रुसेना का संहार करने लगे तब क्या पाञ्चालगण और क्या पाण्डवगण, कोई भी उनके प्रबल वेग और विक्रम को रोकने १० या सहने में समर्थ नहीं हुआ। वे सम्पूर्ण शत्रुदल पर सैकड़ों-हज़ारों तीक्ष्ण बाण बरसाते जाते थे। सारी शत्रुसेना एक साथ मिलकर भी पाशपाणि यमराज के समान भीष्म को समर में परास्त नहीं कर सकी—उनके वेग के आगे ठहर नहीं सकी।

राजन् ! उधर अजेय अर्जुन भी सब रथी लोगों के मन में भय उत्पन्न करके, युद्धभूमि में जाकर, ज़ोर से सिंहनाद करने लगे। वे बारम्बार धनुष घुमाकर बाणों की वर्षा करते हुए साक्षात् काल की तरह विचरने लगे। उनके भयानक शब्द से आपके पक्ष के सैनिक घबरा उठे। सिंह के खदेड़े हुए मृगों की तरह डरकर वे लोग अर्जुन के आगे से भागने लगे।

तब राजा दुर्योधन ने विजयी अर्जुन को विजय प्राप्त करके सिंहनाद करते और अपनी सेना को घबराकर भागते देखकर, दुःखित हो, पितामह के पास जाकर कहा—हे पितामह, दावानल जैसे जङ्गल को भस्म करता है वैसे ही अर्जुन हमारी सेना को बाणों की वर्षा से भस्म कर रहे हैं। वह देखिए, मेरी सेना हर बार हर जगह अर्जुन के प्रहार से पीड़ित होकर भाग रही है। हे शत्रुतापन, पशुपाल जैसे वन में पशुओं को पीटता है वैसे ही अर्जुन मेरी सेना को पीड़ा पहुँचा रहे हैं। एक तो अर्जुन ही उनको मारकर भगा रहे हैं, उस पर भीमसेन, सात्यकि, चेकितान, नकुल, सहदेव, महारथी अभिमन्यु, महाबली धृष्टद्युम्न और राक्षस घटोत्कच भी उन्हें मार रहे हैं। हे महारथी, आप देवतुल्य पराक्रमी हैं। आपके सिवा इस भागती हुई सेना को और कोई नहीं फेर सकता। न तो कोई इन्हें युद्ध में ठहरा सकता है, और न पाण्डवसेना के इन महारथियों से युद्ध ही कर सकता है। इसलिए आप शीघ्रता के साथ मेरी सेना की रक्षा कीजिए। २१

राजन्! देवव्रत भीष्म दुर्योधन के ये वचन सुनकर, पलभर सोचकर, उन्हें समझाते और धीरज देते हुए बोले—हे दुर्योधन, तुम ध्यान से मेरी बात सुनो। मैंने पहले तुम्हारे आगे प्रतिज्ञा की थी कि मैं प्रतिदिन दस हज़ार योद्धा मारकर युद्ध से लौटूँगा। पुत्र, मैंने जो प्रतिज्ञा की थी, उसे पूर्ण करता रहा हूँ। मैं आज भी युद्ध में बहुत बड़ा काम करूँगा। आज या तो मुझे पाण्डवगण मारेंगे और या मैं उनको मारूँगा। दो में एक बात होगी। आज मैं युद्धभूमि की वीरशय्या पर सोकर, अथवा पाण्डवों को ही सुलाकर, प्रभु का ऋण चुकाऊँगा।

महाबली भीष्म दुर्योधन से इतना कहकर क्षत्रियों पर बाण बरसाते हुए पाण्डवों की सेना पर वेग से आक्रमण करने चले। पाण्डवों की सेना उनके आक्रमण से तितर-बितर होने लगी। ३० तब पाण्डवगण भी अपनी सेना के बीच घुसते हुए, क्रुद्ध नागराज के समान, भीष्म को घेरकर रोकने की चेष्टा करने लगे। हे कौरव, दसवें दिन भीष्म ने अपने पराक्रम के अनुसार देखते ही देखते शत-सहस्र सेना का नाश कर डाला। जैसे सूर्य अपनी किरणों से पृथ्वी का रस (जल) खींचते हैं वैसे ही भीष्म अपने बाणों से पाञ्चालों के तेज, उत्साह और प्राणों को हरने लगे। राजन्! वे सवारों सहित दस हज़ार घोड़ों, इतने ही वेगशाली हाथियों और दो लाख पैदलों को मारकर युद्धभूमि में जलती हुई आग के समान देख पड़ने लगे। पाण्डवों में से कोई भी उन उत्तरायण में तप रहे सूर्य के समान तेजस्वी प्रतापी भीष्म की ओर अच्छी तरह आँख उठाकर देख तक नहीं सकता था। महाधनुर्द्धर भीष्म के द्वारा इस तरह पीड़ित होने पर सब पाञ्चाल और

पाण्डव मिलकर उन्हें मारने के लिए उन पर आक्रमण करने दौड़े। उस समय योद्धाओं से घिरे हुए भीष्म काले मेघों से घिरे हुए स्वर्ण-गिरि सुमेरु के समान शोभायमान हुए। आपके पुत्र-गण भी भारी सेना के साथ एकत्र होकर भीष्म के चारों ओर आकर उनकी रक्षा करने लगे।
३९ इसके बाद फिर घोर संग्राम होने लगा।

एक सौ दस अध्याय

अर्जुन और दुःशासन का युद्ध

सञ्जय ने कहा कि महाराज़, अर्जुन ने संग्राम में भीष्म का पराक्रम देखकर शिखण्डी से कहा—हे शिखण्डी, तुम भीष्म के साथ युद्ध करो। आज उनसे बिलकुल मत डरो। मैं तीक्ष्ण बाण मारकर आज उन्हें श्रेष्ठ रथ से गिरा दूँगा। हे धृतराष्ट्र, तब शिखण्डी अर्जुन के ये वचन सुनकर भीष्म की ओर रथ बढ़ाकर शीघ्रता के साथ चले। सेनापति धृष्टद्युम्न और अभिमन्यु भी आगे बढ़े। वृद्ध राजा विराट, द्रुपद और कुन्तिभोज कवच पहनकर आपके पुत्र के सामने ही पितामह भीष्म पर आक्रमण करने के लिए आगे बढ़े। नकुल, सहदेव, महावीर्यशाली धर्मराज और अन्य सब योद्धाओं ने मिलकर भीष्म पर आक्रमण किया। राजन्! आपके पक्ष के सब योद्धाओं ने शत्रुपक्ष के वीरों को जिस तरह रोका, जिस तरह उन पर यथाशक्ति उत्साह के साथ आक्रमण किया, सो सब मैं कहता हूँ, सुनिए।

भीष्म से लड़ने के लिए जानेवाले चेकितान को, बैल को व्याघ्र-बालक के समान, चित्रसेन ने रोका। भीष्म के पास शीघ्रता से जानेवाले और उन पर प्रहार करने का यत्न कर रहे धृष्टद्युम्न को कृतवर्मा ने रोका। भीष्म के वध की इच्छा से आगे जानेवाले क्रुद्ध भीमसेन
१० को भूरिश्रवा ने फुर्ती के साथ रोका। अनेक बाण बरसाते हुए शूर नकुल को भीष्म का जीवन चाहनेवाले विकर्ण ने रोका। भीष्म के रथ के पास जाते हुए सहदेव को कुपित कृपाचार्य ने रोका। क्रूरकर्मा महाबली घटोत्कच को भीष्म के मारने के लिए उद्यत देखकर बली राजकुमार दुर्मुख ने आगे बढ़कर रोक लिया। क्रुद्ध सात्यकि को दुर्योधन ने रोका। भीष्म के रथ के पास जानेवाले अभिमन्यु को काम्बोजनरेश सुदक्षिण ने रोका। शत्रुदमन विराट और वृद्ध द्रुपद को अश्वत्थामा ने रोका। भीष्म का वध चाहनेवाले ज्येष्ठ पाण्डव युधिष्ठिर को द्रोणाचार्य ने रोका। अपने तेज से दसों दिशाओं को प्रकाशित कर रहे और शिखण्डी को आगे करके वेग से भीष्म के सामने जाते हुए अर्जुन को महाधनुर्धर दुःशासन ने रोका। इसी तरह भीष्म के सामने जानेवाले पाण्डव पक्ष के अन्य महारथियों को भी आपके पक्ष के अन्य योद्धाओं ने रोका।

महाराज, धृष्टद्युम्न सब सैनिकों से यह पुकारकर कहते हुए अकेले महारथी भीष्म की ओर दौड़े कि "हे वीरो, देखो ये अर्जुन भीष्म से लड़ने जा रहे हैं; तुम लोग निर्भय होकर चलो और आक्रमण करो। भीष्म के बाण तुम्हारे अङ्ग को छू भी न सकेंगे। समर में अर्जुन से लड़ने का साहस इन्द्र भी नहीं कर सकते, फिर भ्रष्टबुद्धि, क्षीणबल, अल्प जीवनवाले भीष्म क्या उनका सामना कर सकेंगे ?" पाण्डव पक्ष के महारथी लोग धृष्टद्युम्न के ये वचन सुनकर प्रसन्नतापूर्वक भीष्म के रथ की ओर दौड़े। आपके पक्ष के पुरुषश्रेष्ठ वीर भी प्रसन्नता के साथ प्रवाह की तरह आते हुए शत्रुओं के वेग को रोकने लगे। २१

राजन्, भीष्म के जीवन की रक्षा करने के लिए महारथी दु:शासन निर्भय होकर अर्जुन के सामने आये। शूर पाण्डव भी उधर से भीष्म के रथ के पास पहुँचने के लिए आपके पुत्रों पर आक्रमण करने को बढ़े। उस समय वहाँ पर हमने यह एक विचित्र बात देखी कि दु:शासन के रथ के पास पहुँचकर अर्जुन फिर आगे नहीं बढ़ सके। जैसे तटभूमि क्षोभ को प्राप्त समुद्र के वेग को रोक लेती है, वैसे ही वीर दु:शासन ने क्रुद्ध अर्जुन को रोक लिया। वे दोनों ही श्रेष्ठ रथी, दुर्जय, चन्द्र के समान सुन्दर और सूर्य के समान तेजस्वी थे। दोनों ही कुपित होकर परस्पर मार डालने की इच्छा से मयासुर और इन्द्र के समान आक्रमण करने लगे। महाराज, दु:शासन ने अर्जुन को तीन और श्रीकृष्ण को बीस तीक्ष्ण बाण मारे। अर्जुन ने श्रीकृष्ण को पीड़ित देखकर क्रोध करके दु:शासन को एक सौ नाराच बाण मारे। वे नाराच दु:शासन के सुदृढ़ कवच को तोड़-कर उनके शरीर का रक्त पीने लगे। तब दु:शासन ने अत्यन्त कुपित होकर तीक्ष्ण तीन बाण अर्जुन के मस्तक में मारे। मस्तक में घुसे हुए उन तीन बाणों से वीर अर्जुन उन्नत शिखरवाले सुमेरु पर्वत, अथवा फूले हुए ढाक के पेड़ के समान बहुत ही शोभायमान हुए। राहु जैसे पर्व के समय चन्द्रमा को सताता है, वैसे ही अर्जुन भी दु:शासन को बाणवर्षा में छिपाकर पीड़ा पहुँचाने लगे। उन बाणों से पीड़ित होकर दु:शासन ने बहुत से कङ्कपत्रयुक्त, शिला पर रगड़कर तीक्ष्ण किये गये, बाणों से अर्जुन को घायल किया। अर्जुन ने तीन बाणों से दु:शासन का धनुष काटकर रथ भी काट डाला। तब दु:शासन ने दूसरा धनुष लेकर पच्चीस बाण अर्जुन के हाथों और वक्ष:स्थल में मारे। इसके बाद अर्जुन क्रुद्ध होकर यमदण्डतुल्य असंख्य असह्य बाण दु:शासन को मारने लगे। किन्तु वे बाण पास तक नहीं पहुँचने पाये और दु:शासन ने उन्हें काट डाला। इस तरह अर्जुन को विस्मित करके वे तीक्ष्ण बाणों से उनको पीड़ा पहुँचाने लगे। तब अर्जुन ने क्रोध से अधीर होकर असंख्य सुवर्णपुङ्ख तीक्ष्ण बाण बरसाना शुरू किया। अर्जुन के छोड़े हुए वे बाण तालाब में घुस रहे हंसों की तरह दु:शासन के दृढ़ शरीर में घुस गये। दु:शासन बहुत ही पीड़ित और अचेत से होकर शीघ्रता के साथ, अर्जुन को छोड़कर, भीष्म के रथ के पास चले गये। उस अथाह विपत्ति में डूब रहे दु:शासन के लिए भीष्म पितामह आश्रय- ३० ४०

स्वरूप द्वीप हो गये। महापराक्रमी दुःशासन दम भर में सचेत होकर उसी तरह तीक्ष्ण बाण बरसाकर अर्जुन को रोकने लगे, जैसे इन्द्र ने वृत्रासुर को रोका था। किन्तु इससे अर्जुन न तो
४८ तनिक भी व्यथित हुए और न संग्राम से ही विमुख हुए।

एक सौ ग्यारह अध्याय

द्वन्द्वयुद्ध का वर्णन

सञ्जय कहते हैं—महाराज, कवचधारी वीर सात्यकि को भीष्म पर आक्रमण करने के लिए उद्यत देखकर महा धनुर्द्धर राक्षस अलम्बुष उन्हें रोकने लगा। सात्यकि ने अत्यन्त क्रुद्ध होकर नव बाण अलम्बुष को मारे। तब राक्षस ने भी अत्यन्त कुपित होकर सात्यकि को नव बाण मारे। सात्यकि ने क्रुद्ध होकर राक्षस के ऊपर असंख्य बाण छोड़े। महाराज, अलम्बुष भी तीक्ष्ण बाणों से सात्यकि को पीड़ित करके सिंहनाद करने लगा। राक्षस के बाणों से अत्यन्त पीड़ित होकर भी तेजस्वी सात्यकि धैर्य धारण करके हँसते हुए सिंहनाद करने लगे।

जैसे गजराज को कोई बारम्बार अङ्कुश का प्रहार करे वैसे ही क्रुद्ध भगदत्त आकर सात्यकि को अनेक तीक्ष्ण बाण मारने लगे। तब श्रेष्ठ रथी सात्यकि उस राक्षस को छोड़कर प्राग्ज्योतिष-पति भगदत्त के ऊपर सुतीक्ष्ण शीघ्रगामी बाण बरसाने लगे। भगदत्त ने हाथ की फुर्ती दिखाकर तीक्ष्ण भल्ल बाण से सात्यकि का बड़ा भारी धनुष काट डाला। शत्रुनाशन सात्यकि उसी दम
१० दूसरा धनुष लेकर भगदत्त को अति तीक्ष्ण बाणों से घायल करने लगे। महाधनुर्द्धर भगदत्त का शरीर सात्यकि के बाणों से जर्जर हो गया। वे क्रोध के मारे ओठ चाटने लगे। सुवर्ण और वैदूर्य-मणि से शोभित, यमदण्डसदृश भयङ्कर एक लोहमयी शक्ति उन्होंने ताककर सात्यकि को मारी। महावीर सात्यकि ने उसी दम एक तीक्ष्ण बाण से उसके दो टुकड़े कर डाले। वह कटी हुई शक्ति प्रभाहीन महाउल्का की तरह पृथ्वी पर गिर पड़ी।

महाराज दुर्योधन ने भगदत्त की शक्ति को व्यर्थ होते देखकर असंख्य रथसेना से सात्यकि को घेरकर भाइयों से कहा—भाइयो, ऐसा यत्न करो कि सात्यकि जीते-जी इस रथ के घेरे से बाहर न निकलने पावे। मैं समझता हूँ, सात्यकि के मरने पर पाण्डवों के बल का बहुत बड़ा हिस्सा नष्ट हो जायगा। राजन्! यह सुनकर आपके सब महारथी कुमार, बड़े भाई की आज्ञा के अनुसार, भीष्म से लड़ने के लिए उद्यत सात्यकि के साथ युद्ध करने लगे।

काम्बोजराज महावीर सुदक्षिण पितामह भीष्म के सामने जाते हुए अभिमन्यु को रोकने लगे। अमित पराक्रमी अभिमन्यु ने पहले बहुत से बाण मारकर पीछे चौंसठ तीक्ष्ण बाण सुदक्षिण को मारे। वीर सुदक्षिण ने भी, भीष्म के प्राणों की रक्षा के मतलब से, अभिमन्यु को

रोकने के लिए पाँच बाण उनको और नव बाण सारथी को मारे। राजन्, वे दोनों वीर इसी तरह भयङ्कर संग्राम करने लगे। २०

जब भीष्म पर हमला करने को शिखण्डी आगे बढ़े तब महारथी विराट और द्रुपद क्रोध से अधीर होकर कौरवों की भारी सेना को छिन्न-भिन्न करते हुए भीष्म की ओर चले। उधर से महावीर अश्वत्थामा कुपित होकर उनके सामने आये। उक्त दोनों वीर राजाओं के साथ अश्वत्थामा घोर संग्राम करने लगे। विराट ने दस भल्ल बाण और द्रुपद ने तीन तीक्ष्ण बाण अश्वत्थामा को मारे। अश्वत्थामा भी दोनों वीर राजाओं को लगातार असंख्य बाणों से घायल कर रहे थे। परन्तु आश्चर्य की बात है कि दोनों वीर राजा, वृद्ध होने पर भी, अनायास अश्वत्थामा के शीघ्रगामी दारुण बाणों को काटते जाते थे।

मदोन्मत्त जङ्गली हाथी जैसे दूसरे जङ्गली हाथी पर हमला करता है, वैसे ही वीर कृपाचार्य ने महारथी सहदेव के पास जाकर उनको सुवर्णभूषित सत्तर बाण मारे। सहदेव ने बाणों से कृपाचार्य का धनुष काट डाला और नव बाण मारे। महावीर कृपाचार्य ने भीष्म का ३० जीवन बचाने के लिए उसी दम दूसरा दृढ़ धनुष लेकर सहदेव की छाती में दस बाण मारे। सहदेव ने भी भीष्मवध की इच्छा से, आगे बढ़ने के लिए, कृपाचार्य की छाती में कई बाण मारे। हे भारत, इस तरह वे दोनों वीर परस्पर कठिन युद्ध करने लगे।

शत्रुनाशन विकर्ण ने क्रोध से उन्मत्त होकर नकुल को साठ बाण मारे। महाबली नकुल ने उस प्रहार से अत्यन्त व्यथित होकर विकर्ण को बड़े वेग से सतत्तर बाण मारे। इस तरह दोनों वीर भीष्म की रक्षा और वध के लिए, मैदान में लड़ते हुए दो साँड़ों के समान, परस्पर प्रहार करने लगे।

घटोत्कच भी कौरवसेना को मारकर भीष्म की तरफ़ बढ़ रहा था, इसी समय पराक्रमी दुर्मुख राजकुमार उसके सामने पहुँचे। घटोत्कच ने क्रोधवश होकर दुर्मुख की छाती में एक तेज़ बाण मारा। उसके बदले में दुर्मुख ने साठ बाण घटोत्कच की छाती में मारे।

महारथी धृष्टद्युम्न भी वेग के साथ भीष्म की ओर बढ़ते जा रहे थे। महारथी कृतवर्मा ने
४० सामने आकर उनको रोका। धृष्टद्युम्न को कृतवर्मा ने पहले लोहमय पाँच बाण मारे, फिर पचास बाण उनकी छाती में ललकारकर मारे। अब धृष्टद्युम्न ने कृतवर्मा को कङ्कपत्रयुक्त नव बाण मारे। इस प्रकार भीष्म की रक्षा और वध के लिए वे दोनों वीर परस्पर युद्ध करने लगे। महाबली भीमसेन भी तेज़ी के साथ पितामह की ओर जा रहे थे। इसी समय "ठहरो, ठहरो" कहते हुए भूरिश्रवा फुर्ती के साथ उनके सामने आये। उन्होंने आते ही तीक्ष्ण सुवर्णपुङ्ख नाराच बाण उनकी छाती में मारा। महाप्रतापी भीमसेन उस बाण से अत्यन्त पीड़ित होकर स्कन्द की शक्ति से विदीर्ण क्रौञ्च पर्वत के समान देख पड़े। इसके बाद भीष्मवध के लिए उद्योग करनेवाले भीमसेन कुपित होकर सूर्य-सदृश चमकीले पैने बाण भूरिश्रवा को और भूरिश्रवा, भीष्म की रक्षा की इच्छा से, वैसे ही बाण भीमसेन को मारने लगे। इसी तरह यत्न के साथ दोनों वीर परस्पर युद्ध करने लगे।

उधर राजा युधिष्ठिर भी सेना साथ लिये हुए भीष्म के सामने जा रहे थे। उन्हें द्रोणा-
५० चार्य ने आकर रोका। प्रभद्रकगण द्रोणाचार्य के रथ का मेघगर्जन-सम शब्द सुनकर काँपने लगे। वह भारी सेना द्रोणाचार्य के बाणों से पीड़ित होकर पग भर भी आगे न बढ़ सकी। राजन्, आपके पुत्र चित्रसेन ने चेकितान का मार्ग रोका। दोनों वीर अपनी-अपनी शक्ति की पराकाष्ठा दिखाते हुए भयङ्कर युद्ध करने लगे। इधर दुःशासन भी यह चिन्ता करते हुए, कि किस तरह भीष्म के जीवन की रक्षा होगी, अर्जुन को रोकने की जी-जान से चेष्टा करने लगे। किन्तु बार-बार रोके जाने पर भी अन्त में दुःशासन को हटाकर अर्जुन आगे बढ़ ही गये और कौरवसेना को नष्ट-भ्रष्ट करने लगे। दुर्योधन की सेना इसी तरह जगह-जगह पर पराक्रम
५८ दिखाकर भी पाण्डव पक्ष की सेना के हाथों सताई जाने लगी।

एक सौ बारह अध्याय

द्रोणाचार्य्य और अश्वत्थामा का संवाद

सञ्जय कहते हैं—महाराज, महायोद्धा महारथी मस्त हाथी के समान पराक्रमी द्रोणाचार्य महाधनुष घुमाते हुए पाण्डवसेना के भीतर घुसकर महारथियों को मारते हुए सेना को भगा रहे थे। शकुन-शास्त्र के ज्ञाता द्रोण ने अनेक उत्पात और असगुन देखकर शत्रुसेना के संहार में प्रवृत्त अपने पुत्र अश्वत्थामा से कहा—बेटा, यह वही दिन जान पड़ता है जिस दिन भीष्म को मारने के लिए महाबली अर्जुन परम यत्न करेंगे। क्योंकि आज मेरे बाण तरकस के भीतर से स्वयं बाहर निकले पड़ते हैं, धनुष फड़क रहा है। सब अस्त्र-शस्त्र प्रयोग करने पर

भी प्रयुक्त नहीं होते और मेरी बुद्धि क्रूर कर्म में अनुरक्त हो रही है। सब दिशाओं में मृग और पक्षी अशान्त होकर घोर शब्द कर रहे हैं। गिद्ध नीचे होकर कौरवसेना के ऊपर मँडलाते हैं। सूर्यमण्डल की प्रभा फीकी सी पड़ गई है। दिशाओं का रङ्ग लाल देख पड़ता है। पृथ्वी सब ओर शब्दायमान, व्यथित और कम्पित सी हो रही है। कङ्क, गिद्ध, बगले आदि पक्षी बारम्बार बोल रहे हैं। अशुभरूप गिदड़ियाँ और गीदड़ों के दल महाभय की सूचना देते हुए घोर शब्द कर रहे हैं। सूर्यमण्डल के बीच से बड़ी-बड़ी उल्काएँ गिर रही हैं। कबन्ध-चिह्नयुक्त मण्डल सूर्यबिम्ब के चारों ओर देख पड़ता है। यह उत्पात घोर भय की सूचना देता हुआ यह जता रहा है कि आज असंख्य राजा मारे जायँगे। चन्द्र और सूर्य के बिम्ब में मण्डल पड़ा हुआ है। धृतराष्ट्र के देव-मन्दिरों की देवमूर्तियाँ काँपती, हँसती, नाचती और रोती सी हैं। प्रचण्ड लक्षणयुक्त सूर्य के बायें सब ग्रह स्थित हैं। चन्द्रमा औंधे उदित हुए हैं। सब राजाओं के शरीर तेज और कान्ति से हीन देख पड़ते हैं। दुर्योधन की सेना में कवच-धारी वीर शोभा को नहीं प्राप्त होते। दोनों सेनाओं में चारों ओर पाञ्चजन्य शङ्ख और गाण्डीव धनुष का भारी शब्द सुन पड़ता है। यह निश्चय है कि आज अर्जुन युद्ध में दिव्य अस्त्रों के बल से सब राजाओं को हराकर भीष्म के ऊपर आक्रमण करेंगे। १०

हे वत्स, महावीर भीष्म और अर्जुन के युद्ध का ख़याल करने से मेरे रोंगटे खड़े हो रहे हैं और मन में खेद की गहरी छाया पड़ रही है। इस पाप विचारवाले, कपट में प्रवीण शिखण्डी को आगे करके अर्जुन भीष्म से लड़ने गये हैं। भीष्म की प्रतिज्ञा है कि वे अमङ्गल-ध्वज शिखण्डी पर प्रहार नहीं करेंगे। क्योंकि शिखण्डी को विधाता ने स्त्री-रूप में पैदा किया था, पीछे दैवयोग से वह पुरुष हो गया। इसी से भीष्म उस पर प्रहार नहीं करेंगे। [किन्तु वही शिखण्डी आज क्रुद्ध होकर भीष्म पर आक्रमण कर रहा है।] यही सोचने से मैं मूढ़ सा हो रहा हूँ। अर्जुन भीष्म से युद्ध करने को चढ़ दौड़े हैं। युधिष्ठिर का कुपित होना, २० भीष्म और अर्जुन का युद्ध होना और अस्त्रों के प्रयोग के लिए मेरा उद्यम मात्र करना, किन्तु पहले की तरह अस्त्रों का उपस्थित न होना, सूचित करता है कि प्रजा का अमङ्गल अवश्य होगा। वीर अर्जुन उत्साही, बलवान्, शूर, अस्त्रविद्या में निपुण, महापराक्रमी, फुर्तीले, दूर तक निशाना मारने में प्रवीण और दृढ़ धनुष-बाण धारण करनेवाले हैं; वे बल-बुद्धि से युक्त, निमित्तज्ञ, इन्द्र सहित सब देवताओं के लिए भी अजेय, क्लेश को जीते हुए, श्रेष्ठ योद्धा, सदा रण में विजय पानेवाले और भयानक अस्त्रों के ज्ञाता हैं। तुम शीघ्र जाकर उन्हें रोकने का यत्न करो। देखो, आज के इस घोर संग्राम में भयानक हत्याकाण्ड होगा। अर्जुन क्रोध से विह्वल होकर सन्नतपर्व सुवर्णभूषित विचित्र बाणों से वीरों के सुवर्णचित्रित सुदृढ़ कवच, ध्वजाएँ, तोमर, धनुष, उज्ज्वल प्रास, तीक्ष्ण शक्तियाँ और हाथियों के ऊपर के झण्डे काट-काटकर गिरा

रहे हैं। पुत्र! हम लोग राजा दुर्योधन के अधीन हैं, वही हमें जीविका देते हैं। इस समय हमें अपने प्राणों की रक्षा का ख़याल छोड़कर लड़ना चाहिए। बेटा, स्वर्गप्राप्ति की ओर लक्ष्य रखकर यश और विजय प्राप्त करने जाओ। वह देखो, वीर अर्जुन रथ की नौका पर बैठकर रथ-हाथी-घोड़ों की चाल के आवर्त से पूर्ण, महाघोर, अत्यन्त दुर्गम युद्ध-नदी के पार जा रहे हैं। युधिष्ठिर के ब्राह्मणभक्ति, इन्द्रियदमन, दान (त्याग), तप और श्रेष्ठ उच्च चरित्र आदि सद्गुणों का फल इसी लोक में दिखाई दे रहा है। जिनके भाई बलवान् भीमसेन, अर्जुन, ३१ नकुल और सहदेव हैं; जिनके सहायक और सुहृद् साक्षात् वासुदेव हैं उन्हीं तपस्वी युधिष्ठिर का कष्ट-शोकजनित कोप दुर्मति दुर्योधन की सेना को भस्म कर रहा है। श्रीकृष्ण की सहायता से सब ओर दुर्योधन की सेना को छिन्न-भिन्न और नष्ट-भ्रष्ट करते हुए अर्जुन देख पड़ रहे हैं। तिमि और घड़ियाल आदि जल-जन्तुओं से भयानक और बड़ी-बड़ी लहरों से पूर्ण महासागर के समान क्षोभ को प्राप्त कौरवसेना में अर्जुन ने हलचल डाल दी है। सर्वत्र हाहाकार और किल-किलारव सुन पड़ता है। बेटा, तुम पाञ्चालराज धृष्टद्युम्न को रोकने के लिए जाओ और मैं राजा युधिष्ठिर पर, सामने जाकर, आक्रमण करता हूँ। अमित तेजस्वी युधिष्ठिर की सेना का भीतरी भाग, समुद्र के भीतरी भाग की तरह, सुरक्षित और सब ओर से दुर्गम है। चारों ओर से अति-रथी, श्रेष्ठ, योद्धा उसकी रक्षा कर रहे हैं। सात्यकि, अभिमन्यु, धृष्टद्युम्न, भीमसेन, नकुल और सहदेव राजा युधिष्ठिर की रक्षा कर रहे हैं। वह देखो, श्रीकृष्ण के समान लम्बे-चौड़े, महाशाल वृक्ष के तुल्य ऊँचे, श्यामवर्ण, महाबली अभिमन्यु दूसरे अर्जुन के समान सेना के आगे आ रहे हैं। तुम शीघ्र श्रेष्ठ धनुष और उत्तम अस्त्र-शस्त्रों से सुसज्जित होकर धृष्टद्युम्न और भीमसेन से जाकर युद्ध करो। हे पुत्र, इस संसार में कौन नहीं चाहता कि मेरा प्रिय पुत्र बहुत दिनों तक जीवित रहे? किन्तु मैं क्षत्रिय-धर्म के अनुसार तुम्हें ऐसे भयानक युद्ध में मरने-मारने के लिए भेजने को विवश हूँ। वह देखो, यमराज और वरुण के समान पराक्रमी ४१ योद्धा भीष्म भारी सेना का संहार कर रहे हैं।

एक सौ तेरह अध्याय

भीमसेन और अर्जुन का पराक्रम

सञ्जय ने कहा—महाराज! भगदत्त, कृपाचार्य, शल्य, कृतवर्मा, विन्द, अनुविन्द, जय-द्रथ, चित्रसेन, विकर्ण और दुर्मर्षण, ये आपके पक्ष के दस योद्धा अनेक देशों की भारी सेना साथ लेकर उस युद्ध में भीष्म के लिए यश की प्रत्याशा से भीमसेन के साथ युद्ध करने लगे। शल्य ने नव, कृतवर्मा ने तीन और कृपाचार्य ने नव बाण कसकर भीमसेन को मारे। चित्रसेन, विकर्ण और भगदत्त ने दस-दस बाण भीमसेन को मारे। जयद्रथ ने तीन, विन्द और

अनुविन्द ने पाँच-पाँच और दुर्मर्षण ने बीस बाण भीमसेन को मारे। राजन्, तब महाबली भीमसेन ने भी सबके सामने धृतराष्ट्रपक्ष के इन महारथियों में से हर एक को अलग-अलग बाण मारे। उन्होंने शल्य को सात और कृतवर्मा को आठ बाण मारकर कृपाचार्य का बाणयुक्त धनुष भी बीच से काट डाला। इसके बाद धनुष न रहने पर खाली हाथ खड़े हुए कृपाचार्य को सात बाणों से घायल किया। फिर विन्द और अनुविन्द को तीन-तीन बाणों से पीड़ित करके दुर्मर्षण को बीस, चित्रसेन को पाँच, विकर्ण को दस और जयद्रथ को पहले पाँच और फिर तीन बाण मारे। महाबली भीमसेन इस तरह सबको घायल करके आनन्द के साथ सिंहनाद करने लगे। १०

महारथी कृपाचार्य ने दूसरा धनुष लेकर भीमसेन को सुतीक्ष्ण दस बाणों से पीड़ित किया। अंकुश की चोट खाये हुए मस्त गजराज की तरह उन बाणों की चोट खाकर महाबाहु भीमसेन अत्यन्त कुपित हो उठे। उन्होंने कृपाचार्य को एक साथ बहुत से बाण मारे। इसके बाद साक्षात् काल के समान भीमसेन ने जयद्रथ के चारों घोड़े मारकर तीन बाणों से सारथी को भी मार डाला। महारथी जयद्रथ बिना घोड़े और सारथी के रथ पर से पर नीचे कूदकर भीमसेन के ऊपर तीक्ष्ण बाण बरसाने लगे। उन्होंने दो भल्ल बाणों से जयद्रथ का धनुष काट डाला। सारथी और घोड़ों को मरा और धनुष तथा रथ को कटा देखकर जयद्रथ जल्दी से चित्रसेन के रथ पर चढ़ गये। इस तरह महावीर भीमसेन अकेले ही अपने बाणों से सब महारथियों को पीड़ित और जयद्रथ को रथहीन करके सबके सामने ही अद्भुत कार्य करने लगे।

राजन्, भीमसेन के इस पराक्रम को शल्य न सह सके। वे "ठहरो, ठहरो" कहकर, तीक्ष्ण धारवाले चमकीले बाण धनुष पर चढ़ाकर, भीमसेन को पीड़ित करने लगे। तब शल्य की सहायता के लिए कृपाचार्य, कृतवर्मा, महावीर राजा भगदत्त, विन्द, अनुविन्द, चित्रसेन, दुर्मर्षण, विकर्ण, पराक्रमी जयद्रथ, ये सब मिलकर फुर्ती के साथ भीमसेन को बाण मारने लगे। भीमसेन ने उनमें से हर एक को पाँच-पाँच बाण मारे। इसके बाद शल्य को पहले सत्तर और फिर दस बाण मारे। शल्य ने भी भीमसेन को पहले नव और फिर पाँच बाण मारे। फिर एक भल्ल बाण उनके सारथी को मारा। महारथी प्रतापी भीमसेन अपने सारथी विशोक को बाण की चोट से विह्वल देखकर क्रोध से अधीर हो उठे। उन्होंने शल्य के दोनों हाथों में और छाती में तीन बाण मारे। उसके बाद अन्य धनुर्द्धरों को तीन-तीन बाणों से घायल करके वे सिंहनाद करने लगे। तब वे सब महारथी मिलकर यत्नपूर्वक महाबली भीमसेन से लड़ने लगे। सबने भीमसेन के मर्मस्थलों में एक साथ तीन-तीन बाण मारे। जैसे पर्वत मेघों की जलवर्षा से व्यथित नहीं होता, वैसे ही महारथी भीम उन वीरों के बाणों से अत्यन्त घायल होकर रत्ती भर भी व्यथित नहीं हुए। उन्होंने क्रुद्ध होकर फिर शल्य को तीन, कृपाचार्य को नव और भगदत्त को सैकड़ों बाण मारकर एक तीक्ष्ण क्षुरप्र बाण से वीर कृतवर्मा का बाण- २० ३१

युक्त धनुष काट डाला। शत्रुओं को पीड़ा पहुँचानेवाले कृतवर्मा ने दूसरा धनुष लेकर एक नाराच बाण भीमसेन की भौहों के बीच में मारा। तब भीमसेन ने फिर शल्य को नव, भगदत्त को तीन, कृतवर्मा को आठ और कृपाचार्य आदि महारथियों को दो-दो बाण मारे। वे लोग भी सुतीक्ष्ण दृढ़ बाणों से भीमसेन को पीड़ा पहुँचाने लगे। उन महारथियों के द्वारा अत्यन्त पीड़ित होकर भी भीमसेन विचलित नहीं हुए। वे उन लोगों को और उनके प्रहारों को तृण-तुल्य तुच्छ समझकर युद्धभूमि में विचरने लगे। वे सब महारथी भी एकलक्ष्य होकर भीमसेन के ऊपर सैकड़ों-हज़ारों बाण बरसाने लगे। राजन्, महावीर भगदत्त ने सुवर्णदण्डयुक्त भयङ्कर महा-शक्ति भीमसेन को मारी। महाबाहु जयद्रथ ने तोमर और पट्टिश, कृपाचार्य ने शतघ्नी, शल्य ने बाण और अन्य धनुर्द्धरों में से हर एक ने पाँच-पाँच शिलीमुख नाम के उग्र बाण भीमसेन
४० को मारे। पराक्रमी भीमसेन ने क्षुरप्र बाण से तोमर, तीन बाणों से पट्टिश और कङ्कपत्रयुक्त नव बाणों से शतघ्नी को तिल के पेड़ की तरह काटकर टुकड़े-टुकड़े कर दिया। राजा भगदत्त की चलाई हुई शक्ति को भी उन्होंने काट गिराया। उनकी ओर जो अन्य भयानक बाण आ रहे थे, उन्हें अपने शीघ्रगामी बाणों से काटकर उन्होंने व्यर्थ कर दिया। यह सब अद्भुत कर्म करके हरएक महारथी को उन्होंने तीन-तीन बाण मारे।

उधर महारथी अर्जुन भीमसेन को अकेले कई महारथियों से लड़ते और उनके प्रहारों को व्यर्थ करके उन्हें पीड़ित करते देखकर शीघ्रता के साथ अपना रथ उनके पास ले आये। उन दोनों महारथियों को एकत्र होते देखकर दुर्योधन आदि को जय प्राप्त करने की आशा छोड़ देनी पड़ी। भीष्म को मारने और भीमसेन को सहायता पहुँचाने के लिए महारथी अर्जुन उन दसों महारथियों को, जिनसे भीमसेन युद्ध कर रहे थे, विविध बाणों से पीड़ित करने लगे। इसके बाद वे शिखण्डी को आगे करके भीष्म के पास जाने को तैयार हुए।

तब राजा दुर्योधन ने अर्जुन और भीमसेन को मार डालने के लिए राजा सुशर्मा से
५० कहा—हे त्रिगर्तराज, तुम शीघ्र अपनी सारी सेना साथ लेकर अर्जुन और भीमसेन के पास पहुँचो और उन्हें मार डालने की चेष्टा करो। राजा दुर्योधन की आज्ञा के अनुसार त्रिगर्तराज सुशर्मा हज़ारों रथों की सेना साथ लेकर आगे बढ़े। उन्होंने भीमसेन और अर्जुन को चारों
५३ ओर से घेर लिया। अब कौरवों के साथ अर्जुन का घोर संग्राम होने लगा।

एक सौ चौदह अध्याय

भीमसेन और अर्जुन का पराक्रम

सञ्जय ने कहा—महाराज, अतिरथी अर्जुन आपके पक्ष की सेना को पीड़ा पहुँचाते हुए शल्य के पास पहुँचे। उन्होंने असंख्य सुवर्णपुङ्ख तीक्ष्ण बाणों से अपना मार्ग रोकने की चेष्टा
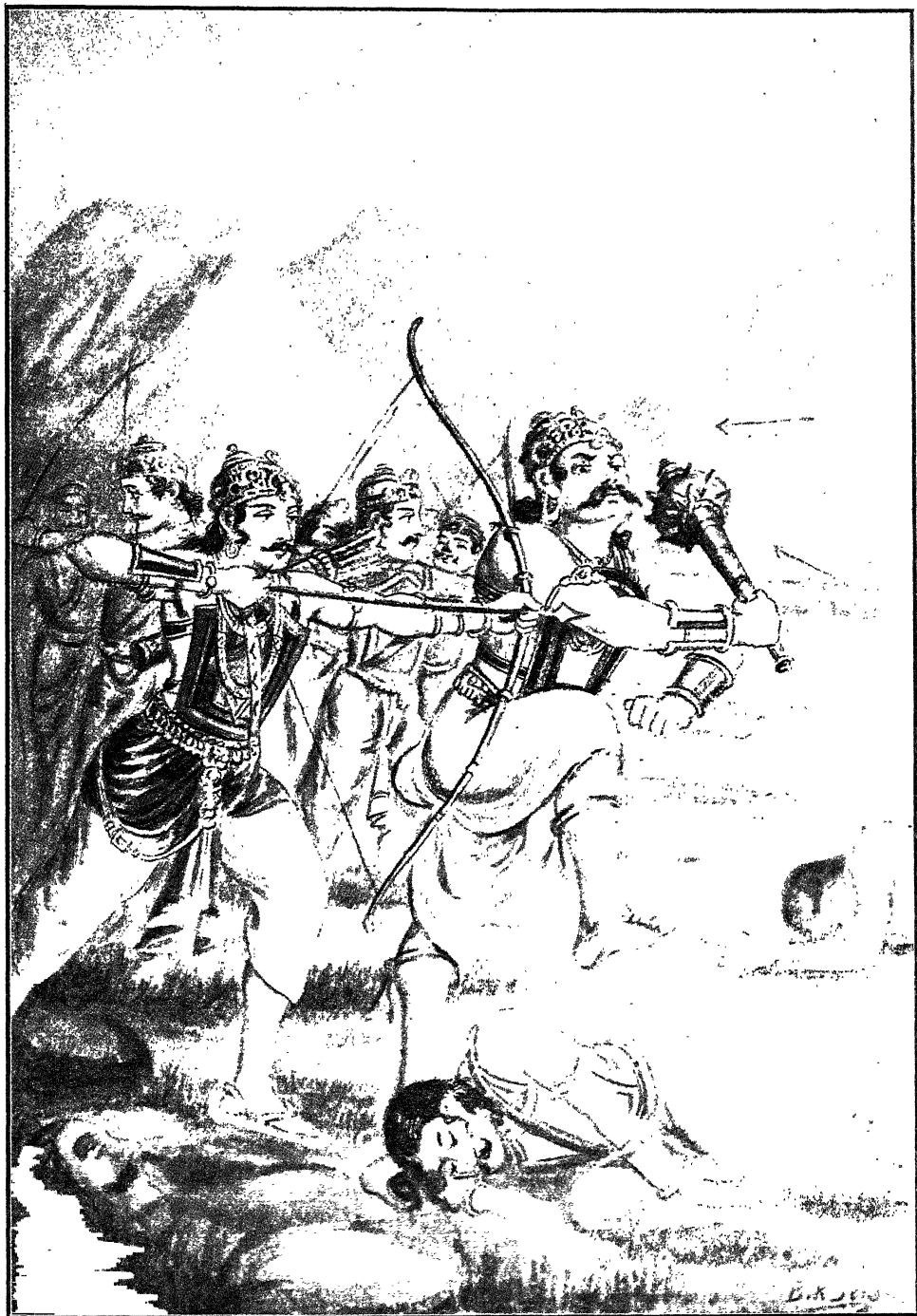
भीमसेन और अर्जुन, गायों के झुण्ड में मांस-लोलुप दो सिंहों की तरह, कौरवपक्ष की रथसेना के बीच में उसका संहार करते हुए......विचरने लगे।—२१३७

ऐसी दशा में आपके पिता बाल-ब्रह्मचारी भीष्म, आपके पुत्रों के सामने ही पूर्व की ओर सिर करके रथ से नीचे गिर पड़े ।—२१५४

करनेवाले शल्य का रथ ढक दिया। इसके बाद सुशर्मा, कृपाचार्य, भगदत्त, जयद्रथ, चित्रसेन, विकर्ण, कृतवर्म्मा, दुर्मर्षण, विन्द और अनुविन्द आदि महारथियों में से हर एक को तीन-तीन कङ्कपत्रयुक्त बाण मारे। जयद्रथ चित्रसेन के रथ पर चले गये। वहाँ से उन्होंने अर्जुन और भीमसेन को बहुत बाण मारे। शल्य और महारथी कृपाचार्य ने बहुत से मर्मभेदी बाण मारकर अर्जुन को पीड़ित किया। हे भारत, चित्रसेन आदि आपके पुत्रों में से हर एक ने भीमसेन और अर्जुन को पाँच-पाँच तीक्ष्ण बाण मारे। उधर महारथी अर्जुन और भीमसेन त्रिगर्तदेश की भारी सेना को विकट बाणों से पीड़ित और उन्मथित करने लगे। त्रिगर्तराज सुशर्मा अर्जुन को नव बाण मारकर, शत्रुसेना को त्रास पहुँचाकर, ऊँचे स्वर से सिंहनाद करने लगे। रथों पर स्थित अन्य योद्धा भी बाण बरसाकर भीमसेन और अर्जुन को घायल करने लगे। श्रेष्ठ रथी और १० उदार-प्रकृति भीमसेन और अर्जुन, गायों के झुण्ड में मांसलोलुप दो सिंहों की तरह, कौरव पक्ष की रथसेना के बीच उसका संहार करते हुए विचित्र रूप से विचरने लगे। वे युद्धभूमि के बीच सैकड़ों शूरों के बाण सहित धनुष काटकर उनके सिरों को धड़ से अलग करने लगे। उस युद्ध में सैकड़ों घोड़े मरे और घायल हुए; हज़ारों हाथी और उनके सवार मर-मरकर पृथ्वी पर गिर पड़े। बहुत से रथ भी टूट गये। सैकड़ों रथी और घुड़सवार मारे गये। हज़ारों शूर भी डर के मारे काँपते हुए देख पड़े। रण में मारे गये हाथियों, घोड़ों, पैदलों और टूटे हुए रथों से सारी युद्ध-भूमि पूर्ण हो उठी। हे भारत, इस युद्ध में मैंने अर्जुन का अद्भुत पराक्रम देखा। वे अपने बाणों से उन असंख्य वीरों को अनायास हत और आहत कर रहे थे।

कटे हुए छत्र, ध्वजा, अंकुश, परिस्तोम, केयूर, अङ्गद, हार, कम्बल, पगड़ी, ऋष्टि, चामर-व्यजन, राजाओं के कटे हुए चन्दनचर्चित हाथ और जङ्घा आदि अङ्ग सर्वत्र बिखरे हुए देख पड़ते थे। महाराज, २० आपके पुत्र राजा दुर्योधन भीमसेन और अर्जुन का ऐसा अद्भुत बल और पराक्रम देखकर भीष्म पितामह के पास गये। कृपाचार्य, कृतवर्मा, जयद्रथ, विन्द और अनुविन्द इस समय भी युद्ध से विमुख न होकर दोनों पाण्डवों का

सामना करते रहे। महाधनुर्द्धर अर्जुन और महाबली भीमसेन उसी तरह कौरव-सेना को पीड़ित करने लगे। कौरव पक्ष के वीरगण भी फुर्ती के साथ महारथी अर्जुन के रथ के ऊपर हज़ारों-लाखों-करोड़ों मयूरपक्ष-शोभित तीक्ष्ण बाण बरसाने लगे। महावीर अर्जुन अपने बाणों से उन बाणों को विफल करके महारथी क्षत्रियों को मृत्यु के मुख में पहुँचाने लगे। इतने में महारथी शल्य ने कुपित होकर अर्जुन की छाती में कई भल्ल बाण मारे। अर्जुन ने उन बाणों से तनिक भी व्यथित न होकर पाँच बाणों से शल्य का धनुष और हस्तावाप काट डाला। फिर बहुत से बाण उनके मर्मस्थल में मारे। तब शल्य क्रुद्ध हो उठे। उन्होंने और एक दृढ़ धनुष लेकर तीन बाण अर्जुन को, पाँच बाण वासुदेव को और नव बाण भीमसेन की दोनों भुजाओं और छाती में मारे।

हे भारत! इसी समय मगधराज जयत्सेन और द्रोणाचार्य, दुर्योधन की आज्ञा से, उसी स्थान पर आये जहाँ भीमसेन और अर्जुन कौरवों की बहुत बड़ी सेना को मार रहे थे। महा- ३१ रथी मगधराज ने भीमायुधधारी भीमसेन को आठ बाण मारे। पराक्रमी भीमसेन ने भी पहले दस और फिर पाँच बाण जयत्सेन को मारे। इसके बाद एक भल्ल बाण मारकर उनके सारथी को रथ से नीचे गिरा दिया। सारथी के मर जाने पर मगधराज के घोड़े इधर-उधर दौड़ते हुए सब सेना के सामने ही उनका रथ युद्धस्थल से ले भागे। इसी अवसर में महावीर द्रोणाचार्य ने सामने आकर पैंसठ बाणों से भीमसेन को घायल किया। महापराक्रमी भीमसेन ने भी पैंसठ तीक्ष्ण भल्ल बाण द्रोणाचार्य को मारे। प्रबल आँधी जैसे मेघों को छिन्न-भिन्न कर देती है वैसे ही अर्जुन भी बाणों से सेना सहित सुशर्मा को क्षत-विक्षत करने लगे।

महारथी भीष्म पितामह, राजा दुर्योधन और कोशलेश्वर बृहद्बल, तीनों वीर क्रुद्ध होकर भीमसेन और अर्जुन के समीप गये। इधर पाण्डवगण भी धृष्टद्युम्न के साथ भीष्म के सामने ३९ आये। भीष्म उस समय मुँह फैलाये हुए यमराज के समान जान पड़ते थे। शिखण्डी ने महाबली भीष्म को सामने पाते ही निर्भय भाव से उन पर आक्रमण किया। महाराज, इस तरह राजा युधिष्ठिर आदि पाण्डव और सृञ्जयगण शिखण्डी को और कौरवगण भीष्म को आगे करके युद्ध करने लगे। कौरव लोग भीष्म की जय चाहते हुए पाण्डवों के साथ घोरतर संग्राम करने लगे। वे लोग संग्रामरूप द्यूतक्रीड़ा में प्रवृत्त होकर जयलाभ के लिए भीष्म के जीवन की बाज़ी लगाकर युद्ध करने लगे। हे राजेन्द्र, उस समय धृष्टद्युम्न ने अपने सैनिकों को आज्ञा देते हुए पुकारकर कहा—हे वीरश्रेष्ठ रथी योद्धाओ, तुम लोग निर्भय होकर भीष्म पर आक्रमण करो। सेनापति धृष्टद्युम्न के ये वचन सुनकर पाण्डवों की सेना, प्राणों का मोह छोड़कर, भीष्म पर आक्रमण करने के लिए आगे बढ़ी। जैसे महासमुद्र तटभूमि को ग्रहण करता है, वैसे ४७ ही भीम-पराक्रमी भीष्म ने उस सेना पर धावा बोल दिया।

एक सौ पन्द्रह अध्याय

संग्राम से भीष्म का जी ऊबना

धृतराष्ट्र ने कहा—हे सञ्जय, महावीर्यशाली शान्तनु-नन्दन पितामह भीष्म ने दसवें दिन पाण्डवों और सृञ्जयों से किस तरह युद्ध किया? कौरवों ने किस तरह पाण्डवों के आक्रमण को रोका? यह सब हाल मुझसे कहो।

सञ्जय ने कहा—राजन्, मैं आपके आगे कौरवों और पाण्डवों के दारुण युद्ध का वृत्तान्त कहता हूँ, आप मन लगाकर सुनिए। महारथी अर्जुन के दिव्य अस्त्र-शस्त्रों के प्रहार से जैसे आपके पक्ष के वीर नित्य मरते थे वैसे ही पाण्डवों की महासेना को भीष्म भी, अपनी पूर्वोक्त प्रतिज्ञा के अनुसार, नित्य मारते थे। कौरवों सहित भीष्म को एक ओर, और पाञ्चालों सहित अर्जुन को दूसरी ओर, युद्ध करते देखकर लोग यह सन्देह करने लगे कि किस पक्ष की जय होगी। सब यही समझने लगे कि आज प्रलय हो जायगा। दसवें दिन अर्जुन और भीष्म के भयङ्कर युद्ध में घोर हत्याकाण्ड होते देख पड़ा। राजन्! उस भयानक संग्राम में महारथी, श्रेष्ठ अस्त्रों के ज्ञाता, भीष्म पितामह नित्य दस हज़ार योद्धाओं को मारते थे। जिनके नाम और गोत्र भी नहीं मालूम थे, ऐसे अन्यान्य देशों के शूर और युद्ध में पीठ न दिखानेवाले योद्धा भीष्म के हाथों मारे गये। इस तरह दस दिन तक पाण्डव-सेना का संहार करने से अन्त को धर्मात्मा भीष्म अपने जीवन से ऊब गये। उनके मन में यह इच्छा हुई कि मैंने बहुत लोगों की हत्या की है। अब मुझे मर ही जाना चाहिए। अतएव अपनी मृत्यु की इच्छा करके, और "अब मनुष्य-हत्या नहीं करूँगा" ऐसा इरादा करके, भीष्म ने युधिष्ठिर से कहा—हे पाण्डव! तुम सब शास्त्रों के जाननेवाले हो, इसलिए मैं जो धर्मवर्द्धक और स्वर्गदायक वचन कहता हूँ उन्हें सुनो। पुत्र, मैंने बहुत से प्राणियों को रण में मारा है। मेरे बहुत बड़े जीवन का अधिक अंश इसी क्रूर कर्म के करने में बीता है। इस समय जीवन से मेरा जी ऊब गया है। मैं अब ज़िन्दा रहना नहीं

१०

चाहता। इसलिए जो तुम मेरा प्रिय करना चाहते हो तो पाञ्चालों और सृञ्जयों सहित अर्जुन को आगे करके मुझे मारने का यत्न करो।

प्रियदर्शन पाण्डवश्रेष्ठ युधिष्ठिर ने देवव्रत भीष्म की यह इच्छा जानकर उसी समय सृञ्जयों के साथ उन पर आक्रमण किया। धृष्टद्युम्न और युधिष्ठिर यह कहकर अपनी सेना को आक्रमण के लिए उत्साहित करने लगे कि "हे सैनिक वीरो, दौड़ो, आक्रमण करो, युद्ध करो और भीष्म को जीत लो। शत्रुदमन सत्यप्रतिज्ञ अर्जुन और महाबाहु भीमसेन तुम्हारी रक्षा करेंगे। हे सृञ्जयगण, संग्राम में भीष्म से तुम्हें रत्ती भर भी डर नहीं है। हम लोग शिखण्डी को २० आगे करके आज भीष्म को अवश्य मार लेंगे।" महाराज! दसवें दिन इस तरह प्रतिज्ञा करके, ब्रह्मलोक अथवा विजय की प्राप्ति के लिए यत्न करते हुए पाण्डवगण, कुपित शिखण्डी और अर्जुन को आगे करके भीष्म की ओर बढ़े।

राजन्! तब आपकी ओर दुर्योधन की आज्ञा से अनेक देशों के महाबली राजा लोग, द्रोणाचार्य, अश्वत्थामा, सब भाइयों के साथ बलवान् दु:शासन और कौरव पक्ष की सेना, सब लोग मिलकर समरभूमि के बीच भीष्म की रक्षा करने लगे। आपके पक्ष के शूर योद्धा लोग महाव्रत भीष्म के अनुगामी होकर, शिखण्डी को आगे करके आते हुए, पाण्डवों से घोर युद्ध करने लगे। उधर चेदि और पाञ्चालदेश के श्रेष्ठ वीरों को साथ लेकर कपिध्वज महारथी अर्जुन, शिखण्डी को आगे रखकर, भीष्म से लड़ने लगे। सात्यकि अश्वत्थामा से, धृष्टकेतु पौरव से, युधामन्यु अनुचरों सहित दुर्योधन से, सेना सहित राजा विराट सेना सहित महाबली जयद्रथ से, महाराज युधिष्ठिर सेना सहित महाधनुर्द्धर शल्य से, सुरक्षित भीमसेन गजारोही सेना से और भाइयों सहित ३० सेनापति धृष्टद्युम्न अधृष्य, अनिवार्य, सब शस्त्रधारियों में श्रेष्ठ द्रोणाचार्य से युद्ध करने लगे। कर्णिकारचिह्नयुक्त ध्वजावाले रथ पर स्थित वीर अभिमन्यु से लड़ने के लिए सिंहकेतुवाले रथ पर स्थित राजकुमार बृहद्बल आगे बढ़े। आपके अन्य पुत्र और अन्य राजा लोग शिखण्डी और अर्जुन को मार डालने की इच्छा से उन पर आक्रमण करने चले।

इस प्रकार दोनों ओर की भारी सेनाएँ अपना पराक्रम दिखाती हुई इधर से उधर परस्पर आक्रमण करने के लिए दौड़ीं। उस समय उनके वेग से पृथ्वी काँपने लगी। संग्राम में भीष्म को लड़ते देखकर आपकी और पाण्डवों की सेना दोनों, प्राणों का मोह छोड़कर, घोर युद्ध करने लगीं। प्रहार के लिए चेष्टा करते हुए और परस्पर आक्रमण के लिए दौड़ते हुए वीरों का घोर कोलाहल दसों दिशाओं में व्याप्त हो गया। शङ्ख-नगाड़े आदि का शब्द, हाथियों का शब्द और सब सैनिकों का दारुण सिंहनाद चारों ओर सुन पड़ने लगा। वीरों के उत्कृष्ट हार, अङ्गद और किरीट आदि की प्रभा के आगे सब राजाओं की चन्द्र-सूर्य के समान प्रभा फीकी पड़ गई। उड़ी हुई धूल मेघ की घटा सी छा गई। उसके बीच शस्त्रों की चमक बिजली सी जान पड़ती

थी। दोनों दलों के योद्धा जो धनुष चढ़ाते थे उसका शब्द, बाणों का शब्द, शङ्ख-नगाड़े आदि का शब्द और चलते हुए रथों की घरघराहट का शब्द मेघगर्जन सा प्रतीत होता था। पाश, शक्ति, ऋष्टि और बाण आदि असंख्य शस्त्रों से परिपूर्ण आकाशमण्डल प्रकाश-हीन सा हो गया। ४० रथी लोग रथी वीरों को और घुड़सवार योद्धा घुड़सवार योद्धाओं को मार-मारकर गिराने लगे। हाथियों को हाथी और पैदलों को पैदल मारने लगे। महाराज, जैसे मांस की बोटी के लिए दो बाज़ लड़ते हैं वैसे ही भीष्म के जीवन के लिए कौरव और पाण्डव तुमुल युद्ध करने लगे। वे एक दूसरे को मारने और जीतने के लिए घोर युद्ध कर रहे थे। ४३

एक सौ सोलह अध्याय

संकुल युद्ध का वर्णन

सञ्जय ने कहा—राजन्, महापराक्रमी अभिमन्यु भीष्म को मारने के लिए असंख्य-सेना-परिवृत राजा दुर्योधन से युद्ध करने लगे। राजा दुर्योधन ने अति तीक्ष्ण नव बाण अभिमन्यु को मारे। फिर कुपित होकर तीन बाण और भी उनकी छाती में मारे। तब अभिमन्यु ने क्रोध करके मृत्यु की जिह्वा के समान भयङ्कर लोहमयी शक्ति दुर्योधन के रथ पर फेंकी। राजन्, आपके पुत्र दुर्योधन ने उस भयानक शक्ति को आते देखकर तीक्ष्ण क्षुरप्र बाण से उसके दो टुकड़े कर डाले। हे भारत, महावीर अभिमन्यु ने दुर्योधन की छाती और भुजाओं में पहले तीन और फिर दस बाण मारे। उन दोनों वीरों का वह घोर और विचित्र युद्ध देखकर सब दर्शक बहुत प्रसन्न हुए और राजा लोग उनकी प्रशंसा करने लगे। भीष्म को मारने और अर्जुन की विजय के लिए वीर अभिमन्यु दुर्योधन से घोर युद्ध करने लगे।

उधर शत्रुनाशन ब्राह्मणश्रेष्ठ अश्वत्थामा ने कुपित होकर सात्यकि की छाती में एक नाराच बाण मारा। सात्यकि ने भी गुरुपुत्र अश्वत्थामा के मर्मस्थलों में कङ्कपत्रभूषित नव बाण मारे। १० उन्होंने भी सात्यकि के दोनों हाथों और छाती में पहले नव और फिर तीस बाण मारे। महा-यशस्वी सात्यकि ने अश्वत्थामा के बाणों से बहुत घायल और व्यथित होकर उनको फिर तीन बाण मारे। पौरव ने धृष्टकेतु के ऊपर असंख्य बाण बरसाये, तब धृष्टकेतु ने तीस बाणों से पौरव को घायल किया। महारथी पौरव ने धृष्टकेतु का धनुष काट डाला और अनेक तीक्ष्ण बाणों से शत्रु को पीड़ित करके घोर सिंहनाद किया। धृष्टकेतु ने जल्दी से दूसरा धनुष लेकर पौरव को तिहत्तर तीक्ष्ण बाण मारे। इसी तरह वे दोनों महाबली महारथी एक-दूसरे पर असंख्य बाण बरसाते हुए घोर युद्ध करने लगे। दोनों ने दोनों के धनुष काट डाले और रथ तथा घोड़े भी नष्ट कर दिये। इसके बाद रथहीन दोनों योद्धा खड्ग-युद्ध करने के लिए तैयार हुए। जैसे

महावन में एक सिंहनी के लिए दो सिंह परस्पर झपटें, वैसे ही वे दोनों वीर शतचन्द्रयुक्त
२० दृढ़ ढालें और शततारकाचित्रित उज्ज्वल तलवारें लेकर एक दूसरे पर झपटे। वे आगे बढ़कर, पीछे हटकर, तरह-तरह के पैंतरे दिखाते हुए परस्पर आक्रमण और युद्ध करने लगे। अत्यन्त कुपित पौरव ने "ठहर-ठहर" कहकर धृष्टकेतु के सिर पर तलवार का वार किया। चेदिराज धृष्टकेतु ने भी बढ़कर पुरुषश्रेष्ठ पौरव के कन्धे पर तीक्ष्ण तलवार मारी। महाराज, वे दोनों वीर इस तरह वेग से परस्पर प्रहार करके अचेत होकर पृथ्वी पर गिर पड़े। तब आपके पुत्र जयत्सेन पौरव को, अपने रथ पर बिठाकर, समर-भूमि से हटा ले गये। क्रुद्ध प्रतापी सहदेव धृष्टकेतु को लेकर समर से हट गये।

राजन्, आपके पुत्र चित्रसेन ने पाण्डवदल के सुशर्मा नामक राजा को लोहमय बाणों से घायल कर दिया। इसके बाद साठ बाण, फिर नव बाण और मारे। सुशर्मा ने भी क्रुद्ध होकर चित्रसेन को सौ बाण मारे। फिर तीस बाण और मारे।

महाराज, उस भीष्म-सम्बन्धी समर में अपने यश और कुल के मान को बढ़ाते हुए कुमार
३० अभिमन्यु राजा बृहद्बल से घोर युद्ध करने लगे। अर्जुन जिसमें अनायास भीष्म को मार सकें, इसलिए पराक्रमी अभिमन्यु भी उनकी सहायता कर रहे थे। कोशलेश वीर बृहद्बल ने अभिमन्यु को पहले लोहमय पाँच बाण मारे, उसके बाद फिर बीस तीक्ष्ण बाण मारे। अभिमन्यु ने उस प्रहार से तनिक भी विचलित न होकर बृहद्बल को आठ लोहमय बाण मारे। उसके बाद शत्रु का धनुष काटकर कङ्कपत्रयुक्त तीस विकट बाण और मारे। राजपुत्र बृहद्बल भी दूसरा धनुष लेकर अभिमन्यु को अनेक प्रकार के बाणों से पीड़ित करने लगे। जैसे देवासुर-युद्ध में बलि और इन्द्र लड़े थे वैसे ही दोनों वीर क्षत्रिय कुपित होकर, भीष्म के वध और रक्षा के लिए, परस्पर घोर और विचित्र युद्ध कर रहे थे।

महाराज, उधर भीमसेन हाथियों के दल में घुसकर उनका संहार करने लगे। जैसे वज्रपाणि इन्द्र पर्वतों को तोड़ रहे हों वैसे ही गदा हाथ में लेकर हाथियों को मारते हुए भीमसेन

शोभायमान हुए। उनके प्रहार से पर्वततुल्य हाथी घोर चीत्कार से पृथ्वी को कँपाते हुए गिरने लगे। अञ्जन के समान काले रङ्ग के, पहाड़ ऐसे ऊँचे, गजराज पृथ्वी पर गिरकर इधर-उधर बिखरे हुए पहाड़ों के समान जान पड़ते थे।

महाधनुर्द्धर राजा युधिष्ठिर, अपनी सेना के द्वारा सुरक्षित होकर, समर के लिए उद्यत मद्रराज शल्य को पीड़ित करने लगे। शल्य भी भीष्म की रक्षा के लिए पराक्रम दिखाकर महा- ४० रथी युधिष्ठिर को पीड़ा पहुँचाते हुए युद्ध करने लगे। उधर सिन्धुराज जयद्रथ ने राजा विराट को पहले तीक्ष्ण नव बाणों से पीड़ित करके फिर तीस तीक्ष्ण बाण उनकी छाती में मारे। राजा विराट ने क्रुद्ध होकर जयद्रथ की छाती में तीस तीक्ष्ण बाण मारे। विचित्र धनुष, खड्ग, कवच, शस्त्र, ध्वजा आदि से सुशोभित दोनों वीर राजा इस तरह घोर संग्राम करने लगे।

राजन्, महात्मा द्रोणाचार्य राजकुमार धृष्टद्युम्न के सामने जाकर घोर और अद्भुत युद्ध करने लगे। उन्होंने धृष्टद्युम्न का धनुष काटकर फुर्ती के साथ पचास बाण मारे। शत्रु-नाशन धृष्टद्युम्न ने दूसरा धनुष लेकर द्रोणाचार्य के ऊपर अनेक बाण छोड़े। महारथी द्रोणा-चार्य ने उन बाणों को अपने बाणों से निष्फल कर दिया। इसके बाद बहुत तीक्ष्ण पाँच बाण द्रोणाचार्य ने धृष्टद्युम्न को मारे। तब उन्होंने अत्यन्त कुपित होकर यमदण्डतुल्य भारी गदा द्रोणाचार्य के ऊपर फेंकी। द्रोणाचार्य ने सोने की पट्टियों से मढ़ी उस गदा को आते देखकर पचास बाणों से उसके टुकड़े-टुकड़े कर डाले। द्रोण के बाणों से कटकर चूर्ण सी हो गई वह ५० गदा पृथ्वी पर गिर पड़ी। शत्रुतापन धृष्टद्युम्न ने गदा का प्रहार व्यर्थ होते देखकर एक लोहे की बनी शक्ति द्रोणाचार्य के ऊपर फेंकी। द्रोण ने नव बाणों से वह शक्ति काटकर गिरा दी, और अनेक तीक्ष्ण बाणों से धृष्टद्युम्न को पीड़ित किया। भीष्म के कारण द्रोणाचार्य और धृष्टद्युम्न ने इस तरह महाघोर युद्ध किया।

महावीर अर्जुन भीष्म को देखकर, जङ्गली हाथी जैसे दूसरे जङ्गली हाथी पर हमला करने के लिए दौड़ता है वैसे ही, तीक्ष्ण बाण बरसाते हुए उनकी ओर चले। महाप्रतापी राजा भगदत्त मदान्ध हाथी पर सवार थे। अर्जुन को आते देखकर, उन्हें रोकने के लिए, वे आगे बढ़े। भगदत्त को हाथी पर से बाण बरसाते देख महारथी अर्जुन यत्नपूर्वक उन पर बाण छोड़ने लगे। उस महारण में वीर अर्जुन चाँदी के समान चमकीले लोहे के बाण उस गजराज को मारने लगे। अर्जुन बारम्बार शिखण्डी से कहने लगे—"भीष्म के पास जाओ, बढ़ो, उन्हें मारो।" तब राजा भगदत्त अर्जुन को छोड़कर शीघ्रता के साथ राजा द्रुपद के रथ के ६० पास चले। इधर शिखण्डी को आगे करके अर्जुन फुर्ती के साथ भीष्म की ओर चले। उस समय घमासान युद्ध होने लगा। उधर से कौरव पक्ष के वीर भी कुपित होकर चिल्लाते और सिंहनाद करते हुए वेग के साथ अर्जुन की ओर दौड़े। उस समय अर्जुन का अद्भुत पराक्रम

देख पड़ा। हवा जैसे आकाश में मेघों को छिन्न-भिन्न कर डालती है, वैसे ही वीर अर्जुन आपके पुत्रों की सेनाओं को नष्ट-भ्रष्ट करने लगे।
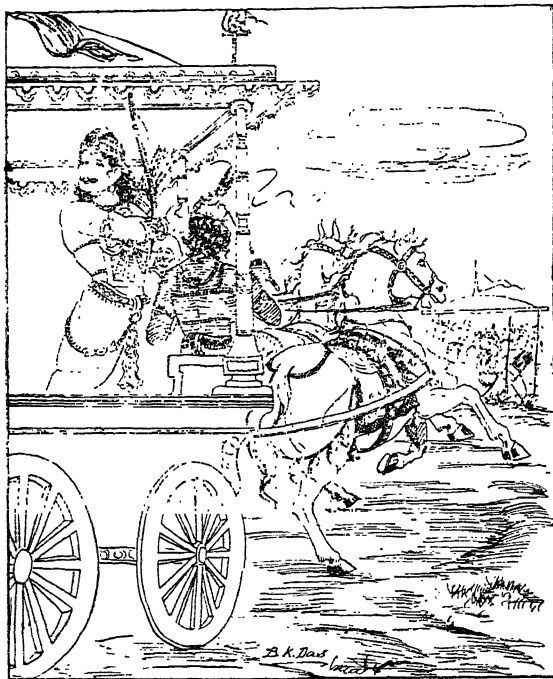
पितामह भीष्म को देखकर शिखण्डी फुर्ती के साथ अव्यग्र भाव से उन पर बाण बरसाने लगे। रथरूप कुण्ड में प्रज्वलित, धनुषरूप ज्वाला से शोभित, खड्ग, गदा, शक्ति आदि शस्त्ररूप ईंधन से प्रज्वलित, बाणरूप चिनगारियों से परिपूर्ण भीष्म-रूप अग्नि युद्ध में उस समय क्षत्रिय वीरों को भस्म करने लगा। आग जैसे हवा की सहायता से बढ़कर वन को भस्म करती है वैसे ही भीष्म भी दिव्य अस्त्र छोड़ते हुए शत्रुसेना में प्रज्वलित हो उठे। अर्जुन के अनुगामी सब सोमकों को नष्ट करके भीष्म ने सारी पाण्डवसेना को हरा दिया। उस महायुद्ध में महावीर भीष्म ने सब दिशाओं को अपने सिंहनाद और मरते हुए वीरों के आर्तनाद से प्रतिध्वनित कर दिया। वे सुवर्णपुङ्खयुक्त तीक्ष्ण बाणों से रथियों, घुड़सवारों और घोड़ों को मार-मारकर गिराने लगे। उनके बाणों से हज़ारों रथों के झुण्ड मुण्डहीन धड़ों से परिपूर्ण होकर छटे हुए ताड़ के वन से जान पड़ने लगे। रथों, हाथियों और घोड़ों की पीठें मनुष्यों से ७१ ख़ाली हो गईं। बिजली की कड़क से भी भयङ्कर उनके धनुष की प्रत्यञ्चा का शब्द सब ओर सुनकर सैनिक लोग काँप उठे। भीष्म के धनुष से छूटे हुए बाण निशाने से कभी नहीं चूकते थे। वे अमोघ बाण वीरों के शरीरों को फोड़कर उस पार निकल जाते थे। मैंने देखा कि रथी और सारथी से ख़ाली रथों को वायुवेगगामी घोड़े इधर-उधर लिये फिर रहे हैं। महाराज! चेदि, काशी, करूष आदि देशों के उच्च कुल में उत्पन्न महारथी, संग्राम से कभी विमुख न होनेवाले, शूर, सुवर्णमण्डित ध्वजाओं से शोभित रथों पर स्थित चौदह हज़ार क्षत्रिय अपनी चतुरङ्गिणी सेना सहित भीष्म के हाथ से मारे गये। मुँह फैलाये हुए महाकाल के समान भीष्म के सामने जो आया उसी को लोगों ने समझ लिया कि अब यह बच नहीं सकता। सोमकवंश के सभी महारथी योद्धाओं को भीष्म ने मार डाला। उस समय वीर अर्जुन और पराक्रमी शिखण्डी के ८० सिवा और कोई भीष्म के सामने जाने का साहस नहीं कर सका।

एक सौ सत्रह अध्याय

दुःशासन का पराक्रम

सञ्जय ने कहा—महाराज, भीष्म के पास पहुँचकर शिखण्डी ने उनकी छाती में दस तीक्ष्ण भल्ल बाण मारे। भीष्म ने क्रोध से प्रज्वलित तीव्र तिर्छी दृष्टि से देखा; ऐसा जान पड़ा मानों वे उन्हें भस्म कर देंगे। किन्तु शिखण्डी को जन्म की स्त्री जानकर सब लोगों के सामने भीष्म ने उन पर प्रहार नहीं किया। परन्तु शिखण्डी ने यह भीष्म का भाव नहीं जाना। महारथी भीष्म के पास खड़े हुए शिखण्डी से अर्जुन ने कहा—"हे वीर शिखण्डी, अब विचार और संशय की ज़रूरत नहीं। बस, भीष्म को मारने में जल्दी करो। युधिष्ठिर की सेना में तुम्हारे सिवा और कोई मुझे ऐसा नहीं देख पड़ता, जो पितामह भीष्म के सामने खड़ा होकर इनसे युद्ध कर सके। हे पुरुषसिंह, यह मैं तुमसे सत्य कह रहा हूँ।" अर्जुन के यों कहने पर शिखण्डी तरह-तरह के बाण बरसाते हुए भीष्म की ओर दौड़े। महाराज, आपके पिता देवव्रत भीष्म शिखण्डी के प्रहारों का कुछ ख़याल न करके क्रुद्ध अर्जुन के ऊपर बाण बरसाने लगे। वे तीक्ष्ण बाणों से पाण्डवों की महासेना को मारने लगे। राजन्, सेना सहित सब पाण्डव वैसे ही भीष्म को घेरने और बाणों से ढकने लगे, जैसे मेघमण्डली सूर्य को ढक लेती है। हे भरतश्रेष्ठ, चारों ओर से घिरे हुए भीष्म पितामह वन में आग के समान प्रज्वलित होकर युद्धभूमि में शूरों को भस्म करने लगे। १०

उस भयङ्कर संग्राम में आपके पुत्र दुःशासन का अद्भुत पौरुष देख पड़ा। वे अकेले ही अर्जुन आदि पाण्डवों से लड़ते थे और उन्हें रोककर भीष्म की रक्षा कर रहे थे। दुःशासन के इस कर्म को देखकर सब लोग बहुत सन्तुष्ट हुए। सब पाण्डव मिलकर भी दुःशासन को नहीं रोक सकते थे। दुःशासन रणभूमि में रथी शूरों को रथ-हीन करके हाथियों और घोड़ों को नष्ट करने लगे। उनके बाणों से विदीर्ण हाथी और धनुर्द्धर घुड़सवार पृथ्वी पर गिरने लगे। सैकड़ों हाथी उनके बाणों से पीड़ित होकर इधर-उधर भागने लगे। जैसे ईंधन पाकर आग प्रज्वलित होती है, वैसे ही दुःशासन प्रज्वलित होकर पाण्डवों की सेना को भस्म करने लगे। पाण्डवों में से महारथी अर्जुन के सिवा और कोई उन्हें जीतने के लिए उनके पास जाने का साहस नहीं कर सकता था। महावीर अर्जुन ही सबके सामने उन्हें जीतकर भीष्म की ओर अग्रसर हुए। भीष्म के बाहुबल का सहारा पाये हुए वीर दुःशासन, अर्जुन से हारकर भी, धीरज धरकर बारम्बार उन्हें रोकने की चेष्टा करने लगे। उस युद्ध में अर्जुन की बड़ी शोभा हुई। २१

उधर शिखण्डी और किसी से न लड़कर वज्रतुल्य कठोर और साँप के समान विषैले बाणों से भीष्म को ही घायल करने लगे। किन्तु वे बाण भीष्म को तनिक भी पीड़ा नहीं

पहुँचा सके। मुसकाते हुए भीष्म उन बाणों को वैसे ही रोक लेते थे जैसे गर्मी का सताया हुआ मनुष्य जल की धारा अपने ऊपर गिरने देता है। क्षत्रियों ने घोररूप भीष्म को देखा कि वे पाण्डवों की सेना को बाणवर्षा से नष्ट कर रहे हैं।

इसके बाद राजा दुर्योधन ने अपने सब सैनिकों से कहा—वीरो, तुम लोग शीघ्र चारों ओर से अर्जुन पर आक्रमण करो। धर्मज्ञ भीष्म तुम सबकी रक्षा करेंगे। हे नरपतियो, सुवर्णभूषित तालचिह्नयुक्त ध्वजावाले रथ पर विराजमान भीष्म ही हम लोगों के मङ्गल और रक्षक हैं। भीष्म तुम्हारे पास ही हैं, इसलिए तुम लोग निडर होकर पाण्डवों से युद्ध करो। सब देवता भी मिलकर भीष्म का सामना नहीं कर सकते, फिर पाण्डव हैं ही क्या चीज़। इसलिए
३० पाण्डवों से डटकर लड़ो। मैं ख़ुद तुम लोगों के साथ यत्नपूर्वक अर्जुन से युद्ध करूँगा।

राजन्! आपके पक्ष के सब महाबली योद्धा दुर्योधन के ये वचन सुनकर, निर्भय होकर, अर्जुन से युद्ध करने लगे। पतङ्ग जैसे आग पर आक्रमण करते हैं वैसे ही वे विदेह, कलिङ्ग, दासेरक, निषाद, सौवीर, वाह्लीक, दरद, प्रतीच्य, औदीच्य, मालव, अभीषाह, शूरसेन, शिवि, वसाति, शाल्व, शक, त्रिगर्त, अम्बष्ठ, केकय आदि देशों और जातियों के वीर कुपित होकर अर्जुन से लड़ने चले। महावीर अर्जुन ने सब दिव्य अस्त्रों का ध्यान किया और फिर उन्हीं अस्त्रों से संयुक्त बाण छोड़कर वे उन शत्रुओं को, आग जैसे पतङ्गों को जलाती है वैसे, भस्म करने लगे। उन महावेगवाले अस्त्रों के प्रभाव से युक्त हज़ारों बाण गाण्डीव धनुष से एक साथ निकलने लगे। गाण्डीव धनुष आकाश में बिजली की तरह चमकने लगा। उन बाणों से राजाओं के रथों की ध्वजाएँ कट-कटकर गिरने लगीं। बाणों से पीड़ित राजा लोग अर्जुन के सामने ठहर नहीं सके। ध्वजा, रथ, रथी, घोड़े, घुड़सवार, हाथी और उनके सवार अर्जुन के बाणों से पीड़ित और छिन्न-भिन्न होकर पृथ्वी पर गिरने लगे। अर्जुन की भुजाओं से छूटे हुए बाण सर्वत्र
४० व्याप्त हो गये। लाशों से पृथ्वी पट गई। दुर्योधन की सब सेना चारों ओर भागने लगी।

महारथी अर्जुन ने इस तरह कौरव-सेना को भगाकर दुःशासन के ऊपर बहुत से बाण छोड़े। वे लोहमय बाण दुःशासन के शरीर को चीरकर साँप जैसे बाँबी में घुसते हैं वैसे धरती में घुस गये। अब अर्जुन ने दुःशासन के सारथी और घोड़ों को भी मार डाला। फिर बीस बाणों से विविंशति का रथ तोड़कर उनको पाँच बाण मारे। अर्जुन ने कृपाचार्य, शल्य और विकर्ण के रथ नष्ट करके उन्हें बहुत से लोहमय बाण मारे। इस प्रकार महारथी कृप, शल्य, दुःशासन, विकर्ण और विविंशति, सब रथ-हीन होकर अर्जुन से हारकर युद्धभूमि से भाग खड़े हुए। हे भरतश्रेष्ठ, दोपहर के पहले इन महारथियों को जीतकर अर्जुन धूम-रहित अग्नि के समान प्रज्वलित हो उठे। बाणों से किरणमण्डित सूर्य के समान शोभा को प्राप्त अर्जुन अन्य राजाओं को भी पीड़ित करने लगे। बाण-वर्षा और दिव्य अस्त्रों के प्रभाव से सब महारथियों को विमुख

करके अर्जुन ने कौरवों और पाण्डवों की सेना के बीच रक्त की महानदी बहा दी। [पाण्डव और सृञ्जयगण भीष्म के ऊपर पूरा ज़ोर लगाकर आक्रमण करने लगे। भीष्म को भी प्रबल पराक्रम के साथ उनका सामना करते देखकर, समर में मरने से स्वर्गलोक मिलेगा—यह सोचकर, आपके पुत्र और उनके अधीन राजा लोग पाण्डवों का सामना करने लगे। कोई भी रण से नहीं भागा। उधर पाण्डवगण भी आपके पुत्रों से प्राप्त अपने पहले के क्लेशों को स्मरण करके निर्भय भाव से युद्ध करने लगे। उन शूरों ने निश्चय कर लिया कि जीतेंगे तो राज्य पावेंगे, और मर जायँगे तो स्वर्गलोक को जायँगे। यह सोचकर प्रसन्नतापूर्वक शत्रुओं से प्राणपण पराक्रम के साथ सब लड़ रहे थे।] रथी लोगों के बाणों से नष्ट-भ्रष्ट रथों और हाथियों के समूह सर्वत्र पड़े हुए थे। हाथियों के तोड़े रथ और पैदलों के मारे हुए घोड़े गिरे पड़े थे। हाथी, घोड़े, पैदल तथा रथों, घोड़ों और हाथियों के सवार मरे पड़े थे। उनके सिर और शरीर कट-कटकर सर्वत्र बिखरे पड़े थे। कुण्डल और अङ्गद आदि आभूषणों से भूषित महारथी राजपुत्र गिर रहे थे और कुछ गिरे पड़े थे। उनकी लाशों से सारा मैदान भरा पड़ा था। कुछ लोग रथों के पहियों के नीचे पड़कर कट गये थे और कुछ के शरीर हाथियों के पैरों से कुचल गये थे। पैदल और घुड़सवार इधर-उधर दौड़ रहे थे। हाथी और रथों के योद्धा चारों ओर मर-मरकर गिर रहे थे। जिनके पहिये, युग और ध्वजा आदि अङ्ग टूट गये हैं ऐसे रथ पृथ्वी पर पड़े हुए थे। हाथी, घोड़े और रथ आदि के सवारों के रक्त से सनी हुई वह पृथ्वी शरद ऋतु के सन्ध्या काल के लाल मेघ के समान देख पड़ती थी। कुत्ते, कौए, गिद्ध, भेड़िये, सियार आदि भयङ्कर मांसाहारी पशु-पक्षी भोजन पाकर बड़े आनन्द से बोल रहे थे। उस समय सब दिशाओं में तरह-तरह की कठोर गर्म और रूखी हवा चलने लगी। चीत्कार करते और गरजते हुए राक्षस, भूत, प्रेत आदि साक्षात् देख पड़ने लगे। सुवर्णभूषित हार और पताकाएँ सहसा हवा से उड़ने लगीं। हज़ारों सफ़ेद छत्र और ध्वजा सहित महारथी इधर-उधर बिखरे हुए देख पड़ने लगे। बाणों से पीड़ित होकर पताकाओं से शोभित बड़े-बड़े हाथी इधर-उधर भागने लगे। गदा, शक्ति, धनुष आदि शस्त्र हाथों में लिये हज़ारों क्षत्रिय पृथ्वी पर इधर-उधर पड़े देख पड़ते थे।

५० ... ६०

महाराज! तब भीष्म पितामह दिव्य अस्त्र का प्रयोग करके सब योद्धाओं के सामने अर्जुन की ओर चले; किन्तु कवचधारी शिखण्डी ने सामने आकर उन्हें रोक लिया। तब भीष्म ने उस अग्नि-तुल्य अस्त्र का उपसंहार कर लिया। इसी अवसर में अर्जुन ने पितामह को मोहित करके आपकी सेना को मारना शुरू किया। ६५

एक सौ अठारह अध्याय

भीष्म के पराक्रम का वर्णन

सञ्जय ने कहा—हे भरतश्रेष्ठ, उस समय सेनाओं के व्यूह टूट गये। सब लोग जीवन की आशा छोड़कर स्वर्ग पाने की इच्छा से घोर युद्ध करने लगे। उस समय युद्ध के नियमों का ख़याल किसी को नहीं रहा। साधारणतः रथी रथी से, घुड़सवार घुड़सवार से, हाथी का सवार हाथी के सवार से और पैदल पैदल से लड़ता है; परन्तु उस समय यह नियम जाता रहा। जो जिसे पाता था वह उसी पर प्रहार कर देता था। सब उन्मत्त से हो रहे थे। दोनों सेनाओं में बेतरह हलचल मच गई। मनुष्य, हाथी, घोड़े आदि इस तरह बिखरकर महाघोर संग्राम करने लगे। कोई किसी को नहीं पहचानता था; यहाँ तक कि लोग अपने ही पक्षवालों पर प्रहार कर रहे थे।

तब शल्य, कृपाचार्य, चित्रसेन, दुःशासन और विकर्ण, पाँचों वीर रथों पर बैठकर पाण्डव पक्ष की सेना को मारने और मथने लगे। पानी में डूबती हुई नाव के समान उस मारी जाती हुई पाण्डव-सेना ने अपनी रक्षा करनेवाला किसी को न देखा। जैसे जाड़े की ऋतु गाय आदि पशु-पक्षियों को कष्ट पहुँचाती है, वैसे ही पितामह भीष्म पाण्डवों को मर्मस्थल में पीड़ा पहुँचाने लगे। तुरन्त ही महावीर अर्जुन अपने बाणों से मेघवर्ण बड़े-बड़े हाथियों को मार-मारकर गिराने लगे। प्रधान-प्रधान योद्धा अर्जुन के बाणों से उन्मथित होकर गिरने लगे। आर्तनाद करते हुए बड़े-बड़े गज पृथ्वी पर गिरने लगे। आभूषणों से भूषित वीरों के शरीरों और कुण्डल-मण्डित मुण्डों से वह पृथ्वी व्याप्त हो गई। महापराक्रमी भीष्म और महारथी अर्जुन ने इस तरह पराक्रम दिखाकर घोर संहार कर डाला। युद्ध में पितामह को इस तरह पराक्रम के साथ लड़ते देखकर आपके सब पुत्र अपनी-अपनी सेना लेकर लौट पड़े। युद्ध में मरकर स्वर्ग पाने की इच्छा से वे लोग उस समय पाण्डवों से युद्ध करने लगे। हे महाभाग, पाण्डव भी आपके पुत्रों से प्राप्त अपने क्लेशों को स्मरण करके निर्भय होकर प्रसन्नतापूर्वक स्वर्ग लोक अथवा विजय की इच्छा से कौरवों के साथ लड़ने लगे।

१२

उस समय पाण्डवों के सेनापति धृष्टद्युम्न ने अपने सेनावालों से कहा—"हे सोमकगण, हे सृञ्जयगण, तुम लोग शीघ्र भीष्म के ऊपर आक्रमण करो।" अब सोमक और सृञ्जयगण भीष्म के बाणों से अत्यन्त घायल और पीड़ित होने पर भी, सेनापति की आज्ञा से उत्साहित होकर, शीघ्रता के साथ बाण बरसाते हुए भीष्म के ऊपर चारों ओर से आक्रमण करने लगे। उनके बाणों के प्रहार से कुपित होकर आपके पिता देवव्रत भीष्म सृञ्जयों से युद्ध करने लगे। पहले महात्मा परशुराम से भीष्म ने जो शत्रुदल नष्ट करनेवाली अस्त्रविद्या पाई थी, उसी अस्त्रविद्या के बल

से वे नित्य शत्रुसेना का संहार करते थे। उसी अस्त्रविद्या के प्रभाव से नव दिन तक नित्य उन्होंने पाण्डव-सेना के दस-दस हज़ार वीरों को मारा। हे भरतश्रेष्ठ, दसवें दिन अकेले भीष्म ने मत्स्य और पाञ्चाल देश की सेना के साथ युद्ध करके हज़ार हाथी के सवार, दस हज़ार घुड़सवार, पाँच हज़ार रथी, चौदह हज़ार पैदल और सात महारथी योद्धा मारे। इनके सिवा हाथी और घोड़े तो असंख्य मारे। इस प्रकार शिक्षा के प्रभाव से सब राजाओं की सेना का नाश करके उन्होंने विराट के प्रिय भाई शतानीक को मारा। शतानीक के साथी एक हज़ार वीर राजा भी भीष्म के भल्ल बाणों से मारे गये। समर में योद्धा लोग घबराकर अर्जुन को पुकारने और चिल्लाने लगे। पाण्डव-सेना के जो वीर अर्जुन के साथ-साथ भीष्म के सामने आये, वे ही मारे गये। दसों दिशाओं में बाण बरसाते हुए भीष्म पाण्डव-सेना भर को उन्मथित करके सेना के अग्रभाग में खड़े हुए। महाराज, दसवें दिन ऐसा अद्भुत संग्राम करने के बाद धनुष हाथ में लिये भीष्म पितामह दोनों सेनाओं के बीच में बहुत ही शोभायमान हुए। दोपहर के सूर्य के समान तपनेवाले भीष्म की ओर कोई राजा आँख उठाकर देख भी नहीं सकता था। इन्द्र ने जैसे दानवों को पीड़ित किया था वैसे ही भीष्म भी पाण्डवों को और उनकी सेना को पीड़ित करने लगे।

महाराज, इस तरह पराक्रम करके सेना के अग्रभाग में स्थित भीष्म को देखकर श्रीकृष्ण ने प्रसन्नतापूर्वक अर्जुन से कहा—"हे धनञ्जय, ये पितामह भीष्म दोनों सेनाओं के बीच में खड़े हैं। इस समय इन्हें बलपूर्वक मारने से ही तुम्हें जय-प्राप्ति होगी। इसलिए जहाँ पर भीष्म तुम्हारी सेना को छिन्न-भिन्न कर रहे हैं वहीं पर इन्हें बलपूर्वक रोक रक्खो। भीष्म के बाणों की चोट को तुम्हारे सिवा और कोई नहीं सह सकता।" श्रीकृष्ण के यों कहने पर अर्जुन उस समय भीष्म पर असंख्य बाण बरसाने लगे। ध्वजा, रथ, घोड़े आदि सहित भीष्म को अर्जुन ने अपने बाणों से अदृश्य कर दिया। कुरुश्रेष्ठ भीष्म भी अर्जुन के बाणों को अपने बाणों से काट-कूट करके नष्ट करने लगे। इसी बीच में अर्जुन ने भीष्म के बाणों से पीड़ित

और शोकसागर में निमग्न पाञ्चालराज द्रुपद, पराक्रमी धृष्टकेतु, महाबली भीमसेन, धृष्टद्युम्न, नकुल, सहदेव, चेकितान, पाँचों भाई केकयकुमार, महाबाहु सात्यकि, अभिमन्यु,
४० घटोत्कच, द्रौपदी के पाँचों पुत्र, शिखण्डी, वीर्यशाली कुन्तिभोज, विराट और युधिष्ठिर आदि सब पाण्डवपक्ष के वीरों की रक्षा की।

तब शिखण्डी बढ़िया धनुष और बाण लेकर वेग से भीष्म पर आक्रमण करने दौड़े। रणनिपुण अर्जुन भी भीष्म के रक्षक अनुचरों को मारकर शिखण्डी की रक्षा करने के लिए भीष्म की ओर चले। महारथी सात्यकि, चेकितान, धृष्टद्युम्न, राजा विराट, राजा द्रुपद, नकुल, सहदेव, अभिमन्यु, द्रौपदी के पाँचों पुत्र और अन्य सब वीर, अर्जुन के द्वारा सुरक्षित होकर, भीष्म को सामने देखकर ताक-ताककर तीक्ष्ण बाण मारने लगे। संग्राम से न भागनेवाले, दृढ़ धनुष धारण किये हुए वे वीर, भीष्म के ऊपर, कठोर प्रहार करने लगे। महात्मा भीष्म ने खेल की तरह उन सब वीरों के बाणों को खण्ड-खण्ड करके पाण्डव-सेना को मथना शुरू किया। शिखण्डी बारम्बार भीष्म के ऊपर बाण बरसा रहे थे; किन्तु उन्हें पहले की स्त्री समझकर भीष्म
५० ने कोई बाण नहीं मारा। पितामह ने द्रुपद की सेना के सात रथी योद्धा मार डाले। उस समय मत्स्य, पाञ्चाल और चेदि देश के सैनिक किलकिला शब्द करके एक भीष्म के ही ऊपर आक्रमण करने दौड़े। सूर्य को जैसे मेघ ढक लेते हैं वैसे ही मनुष्य, रथ, घोड़े, हाथी आदि की चतुरङ्गिणी सेना ने चारों ओर से भीष्म को घेर लिया। उस देवासुर-संग्राम के समान
५४ घोर युद्ध में शिखण्डी को आगे करके अर्जुन भीष्म के ऊपर बाण बरसाने लगे।

एक सौ उन्नीस अध्याय

भीष्म का गिरना

सञ्जय ने कहा—हे राजेन्द्र! पाण्डवगण और सृञ्जयगण इस तरह मिलकर, शिखण्डी को आगे करके, चारों ओर से पितामह भीष्म को घेरकर उन पर शतघ्नी, परिघ, परशु, मुद्गर, मूसल, प्रास, क्षेपणीय, बाण, शक्ति, तोमर, कम्पन, नाराच, वत्सदन्त, भुशुण्डी आदि शस्त्रों के प्रहार करने लगे। वीरों के प्रहारों से मर्मस्थलों में पीड़ा पहुँचने पर भी भीष्म विचलित नहीं हुए। उनका कवच छिन्न-भिन्न हो गया। भीष्म के श्रेष्ठ अस्त्रों का उदयरूप अग्नि शत्रुओं को भस्म कर रहा था। धनुष-बाण उस प्रज्वलित अग्नि की ज्वाला से जान पड़ते थे। रथचक्र का शब्द उस अग्नि का ताप था। भीष्म पितामह शत्रुओं के लिए प्रलयकाल के अग्नि के समान हो रहे थे। विचित्र धनुष ज्वाला के समान था। बड़े-बड़े वीर ईंधन के समान उसमें गिरकर जल रहे थे।

पितामह भीष्म रथों के भीतर से निकलकर फिर शत्रुपक्ष के राजाओं के बीच विचरकर सबको मारने लगे। द्रुपद और धृष्टकेतु को लाँघकर पितामह भीष्म पाण्डवों की सेना में जा घुसे। सात्यकि, भीमसेन, अर्जुन, धृष्टद्युम्न, विराट और द्रुपद, इन छः महारथियों के कवच काटकर भीष्म पितामह अकेले ही भयानक शब्द और वेग से युक्त, मर्मस्थल को फाड़नेवाले, तीक्ष्ण बाण मारने लगे। सात्यकि आदि छहों महारथियों ने भीष्म के उन तीक्ष्ण बाणों को विफल करके उन्हें दस-दस बाण मारे। महारथी शिखण्डी जो सुवर्णपुङ्ख, तीक्ष्णधार, बाण भीष्म को मारते थे उन बाणों से भीष्म को तनिक भी चोट नहीं पहुँचती थी। तब कुपित अर्जुन शिखण्डी को आगे करके भीष्म के सामने पहुँचे। उन्होंने तीक्ष्ण बाणों से भीष्म का धनुष काट डाला। उनके धनुष को कटते देखकर, उत्तेजित होकर कृतवर्मा, द्रोणाचार्य, जयद्रथ, भूरिश्रवा, शल, शल्य और भगदत्त ये वीर श्रेष्ठ और तीक्ष्ण बाण बरसाते हुए अर्जुन की ओर दौड़े। ये सातों महारथी अपने दिव्य अस्त्रों का प्रभाव दिखाते हुए अर्जुन के पास पहुँचे। प्रलयकाल में उमड़ रहे सागर के गरजने का सा शब्द करते हुए ये लोग "मारो, जल्दी करो, पकड़ लो, छेद डालो, काट डालो" इत्यादि बातें कहने लगे। अर्जुन के रथ के पास उन लोगों का कोलाहल सुनकर पाण्डव पक्ष के सात महारथी सात्यकि, भीमसेन, धृष्टद्युम्न, विराट, द्रुपद, घटोत्कच और अभिमन्यु उधर ही चले। ये लोग कुपित होकर धनुष चढ़ाते हुए फुर्ती के साथ अर्जुन के समीप पहुँचे। देवासुर-संग्राम में देवताओं के साथ दानवों का जैसे घोर संग्राम हुआ था, वैसे ही कौरव पक्ष के सात वीरों के साथ पाण्डव पक्ष के सात वीरों का घोर युद्ध होने लगा।

११

२०

भीष्म का धनुष कट जाने पर शिखण्डी ने दस बाण उनको और दस बाण सारथी को मारे। फिर एक बाण से उनके रथ की ध्वजा काट डाली। भीष्म ने दूसरा धनुष हाथ में लिया। अर्जुन ने फुर्ती के साथ तीन बाणों से उसे भी काट डाला। इस तरह भीष्म ने जो धनुष लिया वही अर्जुन ने काट डाला। तब कुपित होकर ओठ चाट रहे भीष्म ने अर्जुन के रथ पर एक प्रज्वलित वज्रतुल्य और पहाड़ को भी तोड़ डालनेवाली शक्ति फेंकी। अर्जुन ने पाँच

भल्ल बाणों से उस शक्ति के पाँच टुकड़े करके पृथ्वी पर गिरा दिये। क्रुद्ध अर्जुन के बाणों से
३० कटी हुई वह शक्ति बादल के बीच से गिरते हुए बिजली के टुकड़ों के समान जान पड़ने लगी।

उस शक्ति को इस तरह निष्फल देखकर भीष्म बहुत ही कुपित हुए। वे सोचने लगे कि अगर महाप्रतापी योगेश्वर वासुदेव इनके रक्षक न होते तो मैं पाँचों पाण्डवों को एक ही धनुष से मार सकता था। किन्तु पाण्डव मारे नहीं जा सकते, और स्त्री-जाति होने के कारण शिखण्डी भी अवध्य है। इन दोनों कारणों से अब मैं पाण्डवों के साथ युद्ध न करूँगा। पिता ने दूसरे विवाह के समय—निषाद-कन्या काली से व्याह करने के समय—मुझ पर प्रसन्न होकर मुझे दो वर दिये थे। एक तो यह कि मैं जब चाहूँ तब मरूँ और दूसरा यह कि युद्ध में कोई मुझे जीत न सके। मैं समझता हूँ कि मेरी मृत्यु का यही उपयुक्त समय है। क्योंकि ज़िन्दगी से मैं ऊब चुका हूँ।

पितामह भीष्म यों सोच रहे थे कि इसी समय आकाश में स्थित ऋषियों और वसुओं ने भीष्म के इस विचार को जानकर कहा—"हे तात भीष्म! तुम जो सोच रहे हो वही हमें पसन्द है। इसलिए अपना और हमारा प्रिय करने को तुम युद्ध बन्द करके अपना कर्तव्य करो।" महाराज, ऋषियों के यों कहने पर अनुकूल, सुगन्धित, जलकणयुक्त और धीमी हवा चलने लगी। देवलोक में नगाड़े बजने लगे और भीष्म के ऊपर आकाश से फूलों की वर्षा होने लगी। ऋषियों के पूर्वोक्त वचन भीष्म के सिवा और किसी ने नहीं सुने। वेदव्यास
४० की कृपा के प्रभाव से मुझे भी वे वचन सुन पड़े। हे नरनाथ, सब लोगों के प्रिय भीष्म के रथ से गिरने की बात जानकर सब देवता भी घबरा गये।

महातपस्वी भीष्म ने देवताओं और ऋषियों के उक्त वचन सुनकर, सब आवरणों को तोड़कर शरीर में घुसनेवाले तीक्ष्ण बाणों से पीड़ित होकर भी, अर्जुन पर प्रहार करना छोड़ दिया। उस समय शिखण्डी ने कुपित होकर और भी वेग से भीष्म की छाती में नव बाण मारे। किन्तु जैसे भूकम्प के समय भी पर्वत नहीं हिलते वैसे ही शिखण्डी के उन बाणों से भीष्म विचलित नहीं हुए। तब महाधनुर्द्धर अर्जुन ने हँसकर क्रोध के साथ गाण्डीव धनुष खींचकर पचीस क्षुद्रक बाण भीष्म को मारे। अर्जुन फुर्ती के साथ और भी सैकड़ों-हज़ारों बाण भीष्म के मर्मस्थलों और सब अङ्गों में मारने लगे। इसी तरह और योद्धा भी भीष्म को हज़ारों बाण मारने लगे। सत्यपराक्रमी भीष्म ने अपने बाणों से उन सब बाणों को नष्ट कर दिया। महारथी शिखण्डी ने सुवर्णपुङ्ख तीक्ष्ण बाण भीष्म को मारे। परन्तु उन बाणों के
५० लगने से भीष्म को तनिक भी व्यथा नहीं हुई।

अब अर्जुन ने कुपित होकर, शिखण्डी को आगे करके, भीष्म का धनुष काट डाला। दस बाण उनके सारथी को मारे, एक बाण से ध्वजा काट डाली और नव बाण उनके शरीर में

मारे। इस पर भीष्म ने दूसरा धनुष लिया। अर्जुन ने तीन भल्ल बाणों से उसे भी काट डाला। इसके बाद भीष्म ने जितने धनुष हाथ में लिये उन सबको अर्जुन ने फुर्ती के साथ अपने बाणों से काट डाला। तब भीष्म ने अर्जुन के ऊपर प्रहार करने का उद्योग छोड़ दिया। किन्तु अर्जुन ने फिर भी उनके मर्मस्थल में पचीस क्षुद्रक बाण मारे।

महारथी भीष्म का शरीर अर्जुन के बाणों से बहुत ही घायल हो गया। तब भीष्म ने कहा—वीर दुःशासन, ये पाण्डव पक्ष के महारथी अर्जुन कुपित होकर लगातार हज़ारों बाण मुझी को मार रहे हैं। वज्रपाणि इन्द्र समेत सब देवता, दानव और राक्षस आदि भी मिलकर न तो मुझे जीत सकते हैं और न अर्जुन को; फिर मनुष्य जाति के महारथी वीर मेरा क्या कर सकते हैं?

महावीर भीष्म दुःशासन से यों कह रहे थे, इसी समय शिखण्डी के पीछे स्थित अर्जुन अत्यन्त तीक्ष्ण बाण मारकर भीष्म को घायल करने लगे। गाण्डीव धनुष से छूटे हुए बहुत ही तीक्ष्ण भयानक बाणों से अत्यन्त वेधे जाते हुए भीष्म ने हँसकर फिर दुःशासन से कहा—हे दुःशासन, ये जो वज्रतुल्य बाण लगातार आकर मेरे शरीर में लग रहे हैं, वे शिखण्डी के बाण नहीं हैं। ये जो मूसल के समान बाण आकर दृढ़ कवच को तोड़कर मेरे मर्मस्थलों को छेद रहे हैं, वे शिखण्डी के बाण नहीं हो सकते। ये जो वज्र के समान वेग से आकर ब्रह्मदण्ड के समान मेरे शरीर में लगते हैं और मेरे जीवन को क्षीण कर रहे हैं, वे बाण शिखण्डी के नहीं हैं। ये जो गदा और परिघ के समान बाण यमदूत की तरह आकर मेरे प्राणों को नष्ट कर रहे हैं, वे बाण शिखण्डी के नहीं हैं। ये जो क्रुद्ध उत्तेजित नाग के समान बाण तेज़ी से आकर मेरे मर्मस्थल में प्रवेश कर रहे हैं, वे शिखण्डी के नहीं हैं। ये बाण जो मेरे शरीर को छेद रहे हैं, कभी शिखण्डी के नहीं हैं। ये बाण तो अर्जुन के ही हैं, इसमें कोई संदेह नहीं। गाण्डीव धनुष धारण करनेवाले महावीर महाबली अर्जुन के सिवा और किसी क्षत्रिय का प्रहार मुझे क्लेश नहीं पहुँचा सकता।

६०
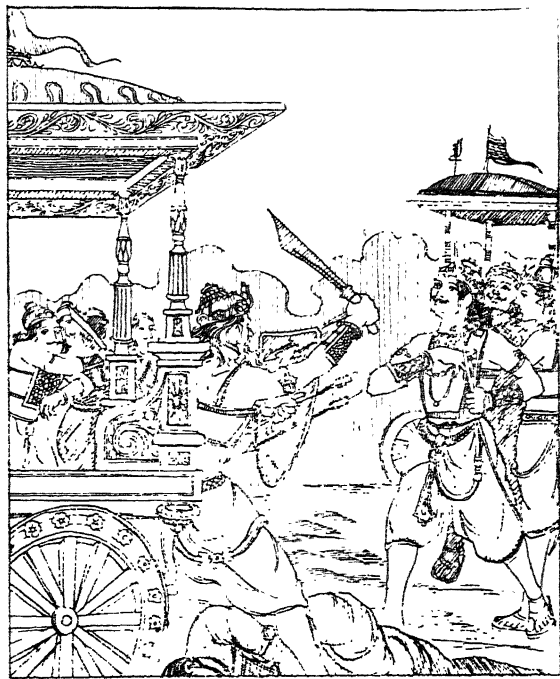
इतना कहकर मानो अर्जुन को भस्म कर डालने की इच्छा से भीष्म ने उन पर एक शक्ति फेंकी। अर्जुन ने सब कौरवों के सामने ही तीन बाणों से उस शक्ति के तीन टुकड़े कर डाले। मृत्यु अथवा विजय, दो में से एक के लिए भीष्म ने सुवर्णभूषित ढाल और तलवार हाथ में ली। भीष्म रथ पर से उतरने भी नहीं पाये कि अर्जुन ने फुर्ती के साथ तीक्ष्ण बाणों से उस ढाल और ७० तलवार के सौ टुकड़े कर डाले। अर्जुन का यह काम अत्यन्त अद्भुत जान पड़ा।

राजन्, इसी समय राजा युधिष्ठिर ने अपने सैनिकों से कहा—"हे वीरो, तुम लोग शीघ्र भीष्म के ऊपर आक्रमण करो। तुम्हें भीष्म से डरना न चाहिए।" तब सब लोग मिलकर अकेले भीष्म के ऊपर आक्रमण करने के लिए तोमर, प्रास, बाण, पट्टिश, खड्ग, नाराच, वत्सदन्त और भल्ल आदि अस्त्र-शस्त्र लेकर दौड़े। उस समय पाण्डव लोग और उनके पक्ष के वीर लोग घोर सिंहनाद करने लगे। उधर भीष्म की जय चाहनेवाले आपके पुत्र भी अकेले भीष्म की रक्षा करते हुए घोर सिंहनाद करने लगे। उस समय भीष्म और अर्जुन के युद्ध में कौरव और पाण्डव परस्पर भिड़कर बड़ी विकट लड़ाई लड़ने लगे। जैसे समुद्र में भारी हलचल मचे, वैसे ही दोनों सेनाएँ थोड़ी देर तक बड़े वेग से दौड़-दौड़कर परस्पर प्रहार और प्राणनाश करती रहीं। पृथ्वी में रक्त की कीचड़ मच गई। ऊँचा और नीचा कुछ नहीं जान पड़ता था। पृथ्वी का रूप बड़ा भयङ्कर हो उठा। महात्मा भीष्म ने दसवें दिन भी दस हज़ार योद्धाओं को मारकर मर्मस्थलों में अत्यन्त घायल और पीड़ित होने पर युद्ध रोक दिया। उधर महारथी अर्जुन सेना के अग्रभाग में खड़े होकर बाणवर्षा से कौरव-सेना को मारने और भगाने लगे। महाराज, ८० हमारे पक्ष के सब योद्धा अर्जुन के बाणों से अत्यन्त व्यथित और भीत होकर भागने लगे। राजन्! सौवीर, कितव, प्राच्य, प्रतीच्य, उदीच्य, मालव, अभीषाह, शूरसेन, शिवि, वसाति, शाल्व, त्रिगर्त, अम्बष्ठ और केकय, इन देशों के वीरों ने और उनकी सेना के लोगों ने संग्राम में अर्जुन के बाणों से पीड़ित और अत्यन्त घायल होकर भी भीष्म का साथ नहीं छोड़ा। अब पाण्डव पक्ष के सब वीरों ने मिलकर भीष्म को चारों ओर से घेर लिया। [शिखण्डी को आगे करके अर्जुन तो भीष्म पर प्रहार कर रहे थे और अन्य वीरगण बाणों की वर्षा करके कौरव-सेना के योद्धाओं को दूर भगा रहे थे।] उस समय पाण्डव पक्ष के लोग भीष्म के रथ के पास "गिरा दो, पकड़ लो, युद्ध करो, छिन्न-भिन्न कर दो" इत्यादि कहते हुए घोर कोलाहल करने लगे।

महाराज, भीष्म के शरीर में दो अंगुल भी ऐसी जगह न थी जहाँ वीर अर्जुन के बाण न घुस गये हों। राजन्! ऐसी दशा में आपके पिता बाल-ब्रह्मचारी भीष्म, आपके पुत्रों के सामने ही, पूर्व की ओर सिर करके रथ से नीचे गिर पड़े। उस समय सूर्य के अस्त होने में कुछ ही देर थी। आकाश में देवता और पृथ्वी में सब राजा लोग हाहाकार करने लगे। महात्मा भीष्म को रथ से नीचे गिरते देखकर हम लोगों के हृदय भी उनके साथ ही गिर पड़े। सब धनुर्द्धरों में श्रेष्ठ पितामह
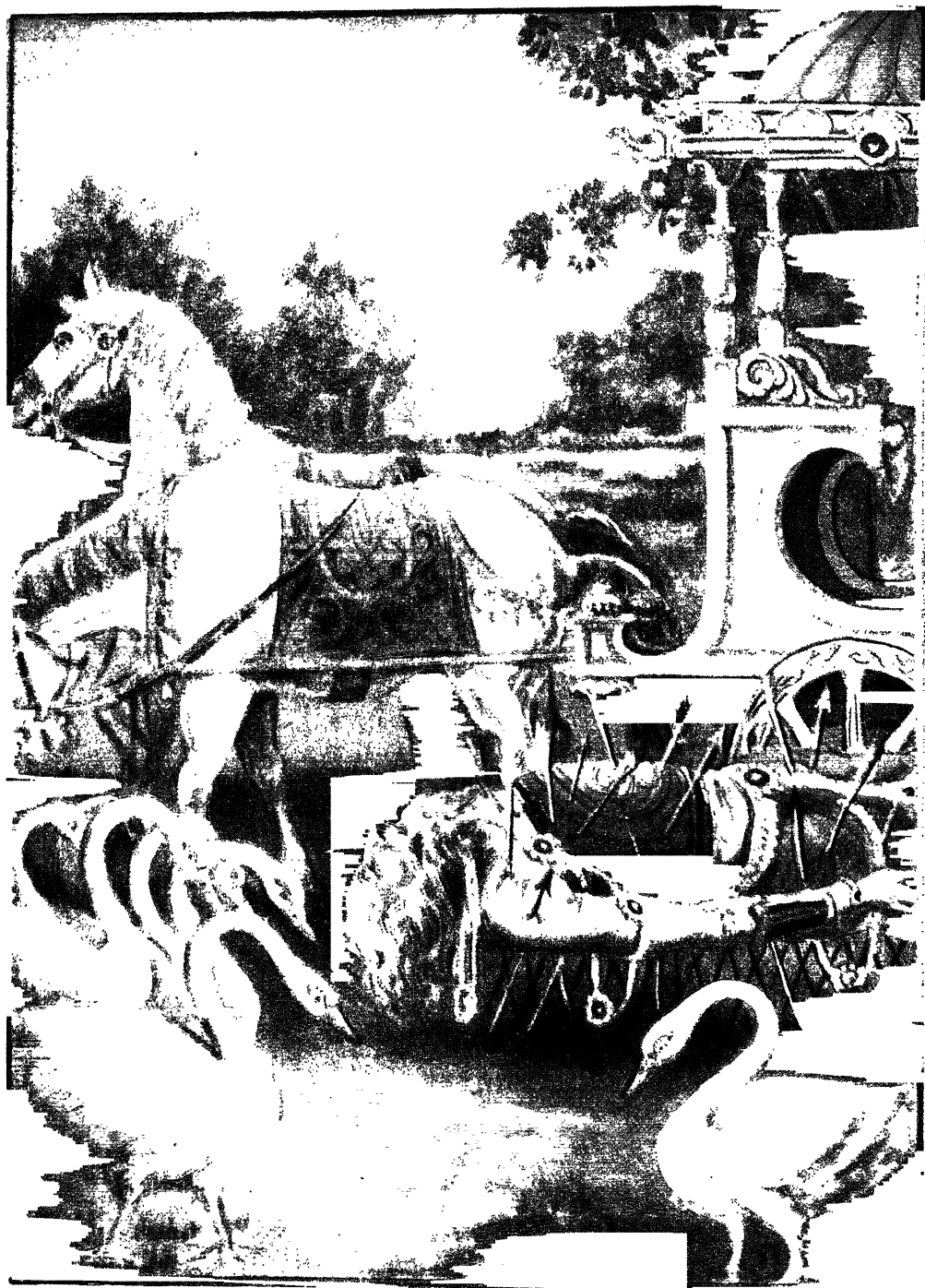
गङ्गा ने भीष्म की इच्छा जानकर महर्षियों को हंसरूप में उनके पास भेजा।—२१९९

भीष्म जिस समय इन्द्र की ध्वजा के समान पृथ्वी पर गिरे उस समय पृथ्वी काँप उठी और घोर शब्द होने लगा। पितामह के शरीर में इतने बाण घुसे हुए थे कि रथ से नीचे गिरने पर भी उनका शरीर पृथ्वी में नहीं छू गया। वे उन्हीं बाणों की शय्या पर गिर गये। उस समय उनके हृदय में ९१ दिव्य सात्विक भाव का उदय हो आया। पृथ्वी काँप उठी और मेघ जल बरसाने लगे।

राजन्! गिरते समय भीष्म ने सूर्य को दक्षिणायन में देखा था, इसी लिए उन्होंने उस समय प्राण-त्याग नहीं किये। उपयुक्त समय न देखकर वे फिर सचेत हो गये। उसी समय अन्तरिक्ष से उन्हें यह आकाशवाणी सुन पड़ी "सब शस्त्रधारियों में श्रेष्ठ पुरुषसिंह महात्मा भीष्म ने दक्षिणायन सूर्य में कैसे प्राण-त्याग किये?" यह देववाणी सुनकर भीष्म ने उत्तर दिया—"मैं अभी जीता हूँ।" पितामह भीष्म इस तरह दक्षिणायन काल में गिरकर भी सद्गति की इच्छा से उत्तरायण सूर्य की बाट जोहने लगे।

हिमवान् की कन्या और भीष्म की माता गङ्गा ने भीष्म की इच्छा जानकर महर्षियों को हंसरूप में उनके पास भेजा। भीष्म को देखने वे महर्षि उस स्थान पर आये, जहाँ वे पुरुषसिंह बाणों की शय्या पर पड़े हुए थे। हंसरूपी ऋषियों ने वहाँ पहुँचकर, भीष्म को देखकर, उनकी प्रदक्षिणा की। सूर्य के दक्षिण ओर स्थित ऋषियों ने परस्पर कहा—"महात्मा होकर भीष्म कैसे १०१ दक्षिणायन सूर्य में प्राण-त्याग करेंगे?" महामति भीष्म ने मन में विचारकर उन ऋषियों की ओर देखकर कहा—"मैंने मन में निश्चय कर लिया है कि दक्षिणायन सूर्य में प्राण-त्याग नहीं करूँगा। हे हंसो, मैं सच कहता हूँ, उत्तरायण सूर्य होने पर प्राणत्याग कर मैं अपने धाम को जाऊँगा। उत्तरायण सूर्य आने तक मैं जीता रहूँगा; क्योंकि पिता ने मुझको मृत्यु पर आधिपत्य का वर दिया है कि मैं जब चाहूँ तभी मरूँ। इसी से मैं जीवित हूँ। उपयुक्त समय आने पर मरूँगा।" हंसों से इतना कहकर भीष्म उसी शरशय्या पर लेटे रहे।

राजन्, कुरुकुलतिलक महात्मा महाबली और अवध्य भीष्म के गिरने पर पाण्डव और सृञ्जयगण आशातीत आनन्द के मारे सिंहनाद करने लगे। महासत्व पितामह के हत होने पर आपके पुत्र किङ्कर्तव्य-विमूढ़ और शोक से व्याकुल हो उठे। कुरुवंश के सब लोग घबरा गये। ११ कृपाचार्य और दुर्योधन आदि लम्बी-लम्बी साँसें लेते हुए रोने लगे। खेद के मारे बहुत देर तक वे जड़ की तरह खड़े रहे। उनकी इन्द्रियाँ निश्चेष्ट हो गईं। युद्ध के लिए वे उद्यत न हो सके। जैसे किसी ने उनके पैरों को पकड़ लिया हो इस तरह वे लोग पाण्डवों पर आक्रमण करने के लिए नहीं दौड़ सके। महापराक्रमी और अवध्य भीष्म के गिरने पर कुरुराज दुर्योधन को चारों ओर शून्य और अँधेरा देख पड़ने लगा। हम लोगों के सब अङ्ग अर्जुन के बाणों से क्षत-विक्षत हो रहे थे, हमारे अनेक वीर और अजेय भीष्म भी मारे जा चुके थे। अर्जुन से हारे हुए हम लोग कुछ अपना कर्तव्य न निश्चित कर सके।

पाण्डव लोग इस लोक में विजय और परलोक के लिए परम गति प्राप्त करके आनन्द से शङ्ख बजाने लगे। सृञ्जय, सोमक और पाञ्चालगण आनन्द से पुलकित हो उठे। सैकड़ों तुरही और नगाड़े बजने लगे। महाबली भीमसेन बारम्बार सिंहनाद करते हुए ताल ठोकने और उछलने लगे। भीष्म के मरने पर दोनों पक्ष के सैनिक शस्त्रों को रखकर चिन्ता करने लगे। कुछ लोग चिल्लाने लगे और कुछ लोग खेद और दुःख से अचेत-से हो गये। कुछ लोग क्षत्रिय-धर्म की निन्दा करने लगे और कुछ लोग महात्मा भीष्म की प्रशंसा करने लगे। ऋषिगण, पितृगण और भरतकुल के स्वर्गवासी पूर्व-पुरुषगण भीष्म को साधुवाद देने लगे। महावीर भीष्म शरशय्या पर पड़े-पड़े उत्तरायण सूर्य की प्रतीक्षा करते हुए
१२२ योगधारणपूर्वक महोपनिषद (गायत्री या प्रणव) का जप करने लगे।

एक सौ बीस अध्याय

दोनों पक्ष के वीरों का भीष्म के पास आना और उनको तकिया देना

धृतराष्ट्र ने कहा—हे सञ्जय! पिता के लिए आजन्म ब्रह्मचारी रहनेवाले देवतुल्य महात्मा भीष्म के गिर जाने पर, उनसे हीन, मेरे पक्ष के योद्धाओं की क्या दशा हुई? जब घृणा के कारण भीष्म ने द्रुपद के पुत्र शिखण्डी पर वार नहीं किया, तभी मैंने समझ लिया कि पाण्डवों के हाथों कौरव मारे गये। हा! इससे बढ़कर और क्या दुःख होगा? पिता की मृत्यु का समाचार सुनकर भी मुझ दुर्मति का हृदय सौ टुकड़े होकर फट क्यों नहीं जाता? मेरा हृदय अवश्य ही वज्र का बना हुआ है। हे सुव्रत, जय की इच्छा रखनेवाले कुरुसिंह भीष्म ने युद्ध में गिरने के बाद और जो कुछ किया हो वह मेरे आगे कहो। देवव्रत को बारम्बार शत्रुओं ने बाणों से मारा, यह अनर्थ मुझसे नहीं सहा जाता। जिन पराक्रमी भीष्म को पहले दिव्य अस्त्रों के द्वारा परशुराम भी नहीं मार सके, वही भीष्म आज पाञ्चालकुमार शिखण्डी के हाथ से मारे गये!

सञ्जय ने कहा—राजन्, पितामह भीष्म सन्ध्या के समय रथ से गिरकर कौरवों को विषादमग्न और पाण्डवों तथा पाञ्चालों को आनन्दित करते हुए शरशय्या पर लेट गये। उनका शरीर पृथ्वी से ऊपर ही रहा। असंख्य बाणों से छिन्न-भिन्न होकर भीष्म जब रथ से गिरे तब सब लोग हाहाकार करने लगे। सीमावृक्ष की तरह दोनों सेनाओं के बीच में जब भीष्म
१० गिर पड़े तब दोनों पक्ष के क्षत्रिय अत्यन्त भयभीत और उद्विग्न हो उठे। कवच और ध्वजा जिनकी कट गई है ऐसे पितामह भीष्म के गिरने पर कौरव और पाण्डव दोनों ने युद्ध बन्द कर दिया। उस समय आकाश में घना अँधेरा छा गया और अस्त होते हुए सूर्य की प्रभा मलिन हो गई। पृथ्वी के फटने का सा दारुण शब्द होने लगा। पुरुषश्रेष्ठ भीष्म को शरशय्या पर

पड़े देखकर सब प्राणी कहने लगे कि ये महात्मा श्रेष्ठ ब्रह्मज्ञानी और ब्रह्मज्ञानियों की गति हैं। शरशय्या पर पड़े हुए भीष्म को देखकर सिद्ध-चारणों-सहित ऋषिगण आपस में कहने लगे कि इन्होंने पूर्व-समय में अपने पिता शान्तनु को कामपीड़ित देखकर, उन्हें सुखी करने के लिए, जन्म-भर नैष्ठिक ब्रह्मचारी रहने का प्रण किया था। महाराज, भरतवंश के पितामह भीष्म के मारे जाने पर आपके पुत्रों को कुछ नहीं सूझ पड़ता था कि वे क्या करें। वे श्रीहीन लज्जित विषाद-मग्न होकर, सिर झुकाकर, शोक करने लगे। उधर संग्रामभूमि में स्थित पाण्डव लोग विजय पाकर सुवर्णभूषित महाशङ्ख बजाने लगे। अनेक तुरही और नगाड़े आदि बजाकर पाण्डवों की सेना हर्ष प्रकट करने लगी। महाबली शत्रु के मारे जाने के कारण परम आनन्दित भीमसेन बालकों की तरह उछलने और कूदने लगे। किन्तु कौरवगण घबरा गये। कर्ण और दुर्योधन [सन्ताप, क्षोभ और क्रोध के मारे] बारम्बार साँसें लेने लगे। सब लोग व्यग्रभाव से इधर-उधर दौड़ते हुए हाहाकार करने लगे। २०

भीष्म के गिरने पर दुर्योधन की आज्ञा से कवचधारी दु:शासन अपनी सेना लेकर बड़े वेग से द्रोणाचार्य के दल में गये। दु:शासन को आते देखकर, ये क्या कहेंगे, इस कौतूहल से सब कौरवों ने उनको चारों ओर से घेर लिया। दु:शासन ने द्रोणाचार्य के पास जाकर भीष्म के गिरने का हाल कहा। वह अप्रिय समाचार सुनते ही द्रोणाचार्य मूर्च्छित हो गये। होश आने पर प्रतापी द्रोणाचार्य ने अपनी सेना को युद्ध बन्द कर देने की आज्ञा दी। कौरवों को युद्ध बन्द करते देखकर पाण्डवों ने भी शीघ्रगामी घोड़ों पर दूतों को भेजकर युद्ध बन्द करा दिया।

सब सेनाएँ युद्ध बन्द करके जमा हुईं। तब सब राजा लोग कवच खोलकर भीष्म के पास आये। सैकड़ों-हज़ारों योद्धा युद्ध बन्द करके, प्रजापति के पास देवताओं की तरह, पितामह भीष्म के पास आये। इस तरह पाण्डव और कौरव दोनों, शरशय्या पर लेटे हुए, भीष्म के पास आकर उन्हें प्रणाम करके सामने खड़े हो गये। तब धर्मात्मा भीष्म ने उन सबसे स्नेह ३०

के साथ कहा—महाभाग क्षत्रियो, मैं तुम्हारा स्वागत करता हूँ। महारथी वीरो, मैं तुम्हारा स्वागत करता हूँ। हे वीरो, मैं तुम्हें देखकर बहुत प्रसन्न हुआ।

हे भरतश्रेष्ठ, भीष्म का सिर नीचे लटक रहा था। उन्होंने सबका स्वागत करने के बाद कहा— 'हे राजाओ! मेरा सिर बहुत नीचे लटक रहा है, इसलिए मुझे तकिया दो।" राजा लोग और कौरवगण उसी समय बढ़िया कोमल मूल्यवान् तकिये लेकर दौड़े आये; किन्तु भीष्म ने उनके लिए अनिच्छा प्रकट करके हँसकर कहा—"नरपतियो, ये तकिये वीरशय्या के योग्य नहीं हैं।" अब अर्जुन की ओर देखकर कहा—हे महाबाहु अर्जुन, मेरा सिर बहुत नीचे लटक रहा है। तुम इस वीरशय्या के योग्य जो तकिया समझते हो, वह मुझे दो।

सञ्जय कहते हैं कि महाराज! तब अर्जुन ने आँखों में आँसू भरकर, श्रेष्ठ गाण्डीव धनुष चढ़ाकर, पितामह को प्रणाम करके कहा—पितामह, मैं आपका आज्ञापालक हूँ। हे धनुर्द्धर-

४०

श्रेष्ठ, कुरुश्रेष्ठ! आज्ञा दीजिए क्या करूँ? भीष्म ने कहा—बेटा, मेरा सिर नीचे लटक रहा है। अर्जुन! तुम समर्थ, सब धनुर्द्धरों में श्रेष्ठ, क्षत्रिय-धर्म के ज्ञाता और बुद्धिमान् हो। तुम सत्व और गुण से सम्पन्न वीर पुरुष हो। इसलिए वीर-शय्या के योग्य तकिया मुझे दो।

"जो आज्ञा" कहकर, अपना कर्तव्य विचारकर, शत्रुविजयी अर्जुन ने गाण्डीव को अभिमन्त्रित किया और तीक्ष्ण धारवाले तीन बाण लेकर उस पर चढ़ाये। फिर पितामह को प्रणाम करके वे तीनों बाण मस्तक में मारे। उन बाणों पर तकिये के समान भीष्म का सिर ठहर गया। सुहृदों का आनन्द बढ़ानेवाले अर्जुन ने ठीक तकिया दिया, यह देखकर धर्मात्मा धर्मार्थतत्त्व के ज्ञाता भीष्म उन पर बहुत प्रसन्न हुए। उन्होंने अर्जुन का अभिनन्दन करके सब कौरवों की ओर देखकर कहा—हे अर्जुन, तुमने इस वीरशय्या के योग्य तकिया मुझे दिया। तुम यह न देकर और तरह का तकिया देते, तो मैं कुपित होकर तुमको शाप दे देता। हे महाबाहु, संग्राम में धर्मनिरत क्षत्रियों के लिए ऐसी ही शय्या और ऐसा ही तकिया चाहिए।
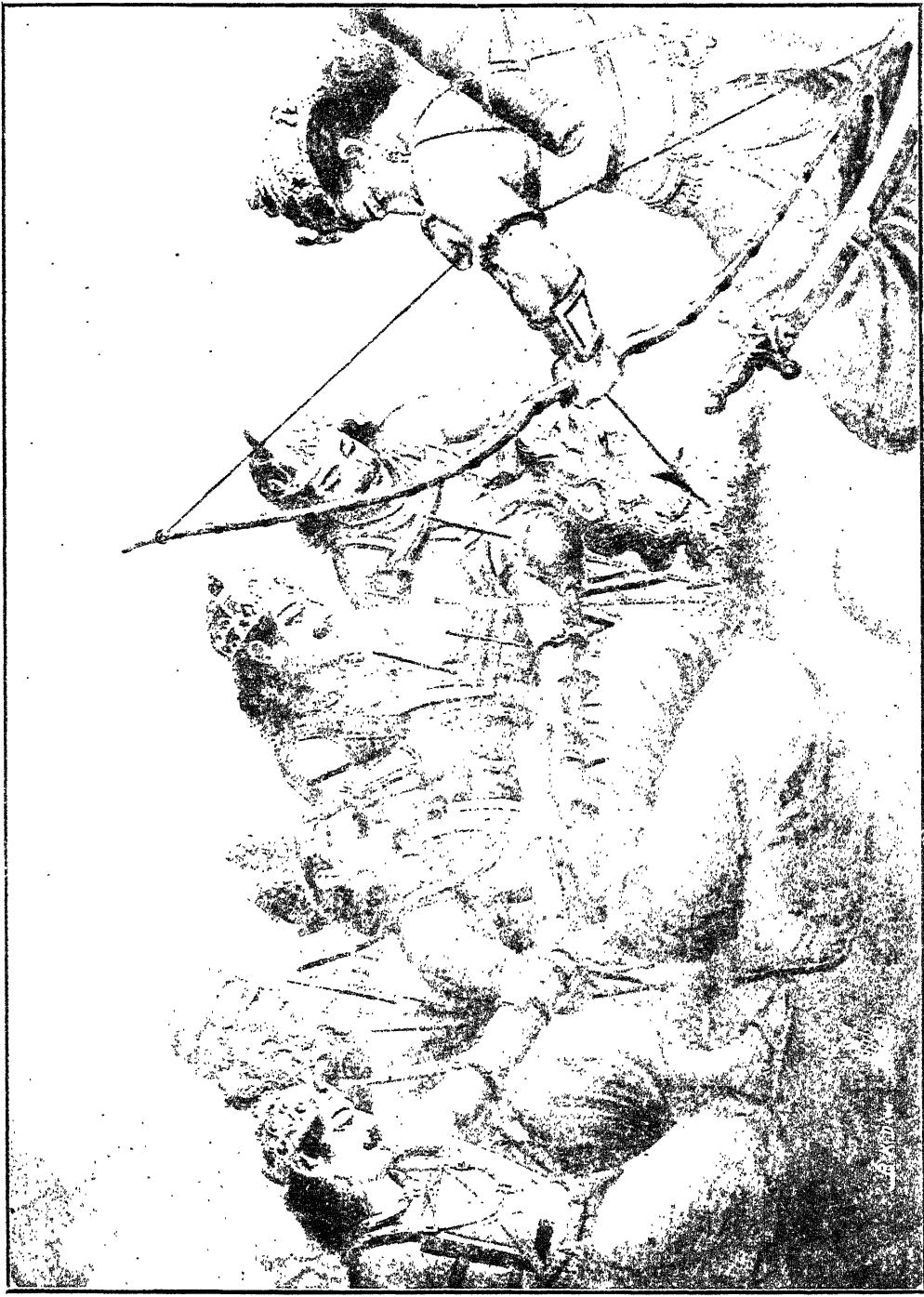
अर्जुन ने गाण्डीव को अभिमन्त्रित किया और......तीन बाण लेकर उस पर चढ़ाये। फिर पितामह को प्रणाम करके वे तीनों बाण उनके मस्तक में मारे।—२१६८
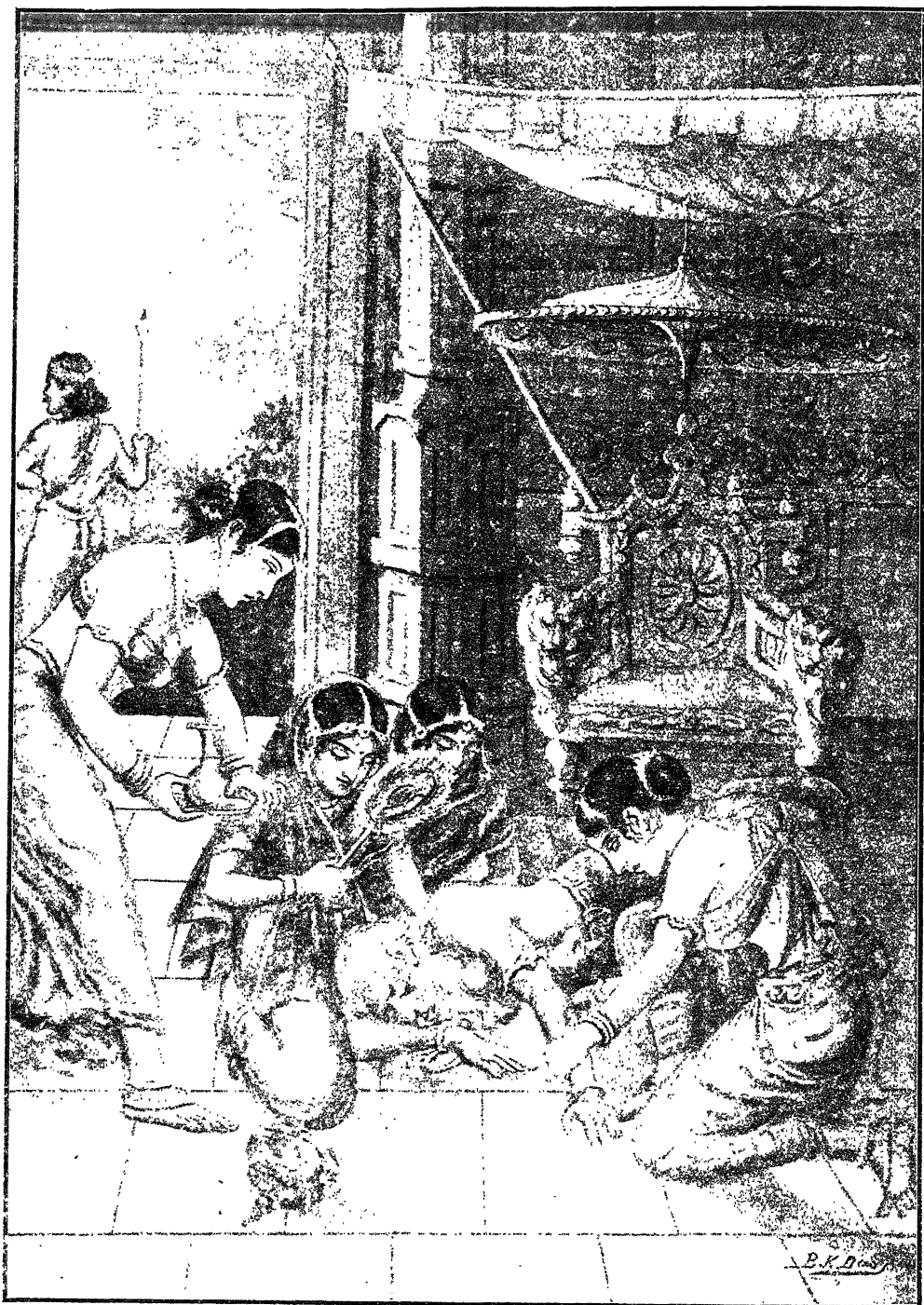
महाराज धृतराष्ट्र सञ्जय से इस तरह पूछते पूछते हार्दिक शोक से व्याकुल और अपने पुत्रों की जय से निराश हो अचेत होकर पृथिवी पर गिर पड़े।—२१८२

महात्मा भीष्म ने अर्जुन से यों कहकर उनके पास खड़े हुए राजाओं और राजपुत्रों से कहा—राजाओ और राजपुत्रो, देखो, अर्जुन ने मुझे यह तकिया दिया है। मैं सूर्य के उत्तरा- ५० यण होने तक इसी शय्या पर लेटा रहूँगा। सूर्य जब सात घोड़ों से युक्त और तेज से प्रदीप्त रथ पर चढ़कर उत्तरायण मार्ग में प्राप्त होंगे तब जो लोग मेरे समीप आवेंगे वे देखेंगे कि मैं अपने प्रियतम प्राणों को छोड़ूँगा। इस समय तुम लोग मेरे इस निवासस्थान के चारों ओर खाई खोद दो। मैं यहीं शरशय्या पर भगवान् सूर्य की उपासना करूँगा। मेरा यह भी अनुरोध है कि तुम लोग परस्पर वैर-भाव छोड़कर यह युद्ध बन्द कर दो।

सञ्जय कहते हैं—अब दुर्योधन की आज्ञा से शल्य-चिकित्सा में निपुण सुशिक्षित वैद्य लोग मरहम-पट्टी का सब सामान लेकर, चिकित्सा के लिए, भीष्म पितामह के पास आये। धर्मात्मा भीष्म ने उन्हें देखकर राजा दुर्योधन से कहा—तुम इन चिकित्सकों को जो कुछ देना है वह धन देकर सत्कार के साथ विदा कर दो। मैंने क्षत्रिय की प्रशंसनीय गति प्राप्त की है, इस समय इन वैद्यों की क्या ज़रूरत है? हे राजा लोगो, मैं शरशय्या पर लेटा हुआ हूँ; यह मेरा धर्म नहीं है कि चिकित्सा कराकर फिर आरोग्य होने की इच्छा करूँ। देखो, इन बाणों की ही चिता में मुझे भस्म करना।

राजा दुर्योधन ने पितामह भीष्म की यह आज्ञा सुनकर वैद्यों को, यथोचित धन देकर, सत्कार के साथ विदा कर दिया। महाराज, अनेक देशों के निवासी राजा लोग महातेजस्वी भीष्म की यह धर्मनिष्ठा और धर्मानुकूल मृत्यु की व्यवस्था देखकर चकरा गये। उन ६१ सब राजाओं, कौरवों और पाण्डवों ने भीष्म के पास जाकर उन्हें प्रणाम किया, और तीन बार उनकी प्रदक्षिणा की। फिर उनके चारों ओर रक्षक नियुक्त करके सब लोग चिन्ता करते हुए अपने-अपने शिविर को गये। सन्ध्या हो जाने पर रुधिर-लिप्त, घायल और थके हुए सब लोग दीन भाव से अपने डेरों में पहुँचे।

भरतकुल-पितामह भीष्म के युद्ध में गिरने पर प्रसन्न पाण्डवगण अपने शिविर में एकत्र हुए। उस समय महात्मा श्रीकृष्ण ने युधिष्ठिर के पास आकर कहा—महाराज, आपने समर में अमर-सदृश भीष्म को गिराकर आज जय प्राप्त की, इससे बढ़कर सौभाग्य क्या हो सकता है। देवता, मनुष्य, दानव आदि कोई भी इन युद्ध-निपुण सत्यव्रत भीष्म को युद्ध में परास्त नहीं कर सकता; किन्तु आपकी घोर दृष्टि में पड़कर ही आज उनकी मृत्यु हुई। आप जिसको कोप की दृष्टि से देखें वह किसी तरह नहीं बच सकता।

तब धर्मराज ने जनार्दन को सम्बोधन करके कहा—हे श्रीकृष्ण, तुम्हारे ही प्रसाद और अनुग्रह से आज हमने जय पाई है। तुम्हारे ही कोप से कौरव परास्त हुए हैं। तुम हमारे लिए परम आश्रय और भक्तों को अभय देनेवाले हो। तुम जिनके हितैषी और रक्षक हो,

उनकी जय होने में आश्चर्य ही क्या है ? तुमको सर्वथा अपना आश्रय बना लेनेवाला जो पा जाय वह थोड़ा है। मैं यही समझता हूँ।

धर्मराज के ये वचन सुनकर महात्मा श्रीकृष्ण मुसकराकर बोले—महाराज, ऐसे नम्र ७१ वचन कहना सर्वथा आपके ही योग्य काम है।

एक सौ इक्कीस अध्याय

अर्जुन का भीष्म को जल पिलाना

सञ्जय बोले—महाराज ! रात वीतने पर सबेरे फिर कौरव, पाण्डव और उनके अधीन अन्य राजा लोग शरशय्या पर पड़े हुए महारथी भीष्म के पास गये। उन्हें सबने प्रणाम किया। हज़ारों कन्याएँ वहाँ जाकर भीष्म के ऊपर चन्दनचूर्ण, खीलें, माला-फूल आदि बरसाने लगीं। प्रजा जैसे भगवान् सूर्य की उपासना करती है वैसे ही स्त्रियाँ, बालक, वृद्ध और अन्यान्य दर्शक लोग भीष्म को देखने के लिए उनकी सेवा में उपस्थित होने लगे। बाजे बजाने-वाले, नट, नर्तक और अनेक प्रकार के शिल्पी लोग भी भीष्म के पास गये। कौरव और पाण्डव-गण अस्त्र, शस्त्र, कवच आदि युद्ध की सज्जा त्यागकर, पहले की ही तरह प्रीतिपूर्वक अवस्था की छुटाई-बड़ाई के क्रम से, भीष्म के पास बराबर-बराबर बैठे। असंख्य राजाओं के बीच तेजस्वी भीष्म से शोभित वह भरतकुल की सभा आकाश में स्थित सूर्यमण्डल के समान शोभित हुई। देवगण जैसे इन्द्र की उपासना करते हैं वैसे ही सब नरपति भीष्म के पास शोभायमान हुए। महात्मा भीष्म असंख्य बाणों से विंधे हुए और पीड़ित होकर भी धैर्य से उस वेदना को सँभाले हुए थे। उन्होंने नागराज की तरह लम्बी साँस लेकर, सब राजाओं की ओर देखकर, पीने के ११ लिए जल माँगा। उसी समय क्षत्रियगण चारों ओर से अनेक प्रकार के उत्तम भोजन और स्वादिष्ठ शीतल जल से भरे कलश ले आये। भीष्म ने वह जल देखकर राजाओं से कहा—हे नरपालो, मैं इस शरशय्या पर लेटा हुआ हूँ सही, किन्तु अब मनुष्यलोक में मेरा निवास नहीं है। केवल उत्तरायण की प्रतीक्षा में मेरे प्राण अटके हुए हैं [वास्तव में मैं मृततुल्य और परलोकवासी हो चुका हूँ। यह समय ऐसा नहीं कि मैं इस लोक का सुन्दर भोजन और यह जल ग्रहण करूँ]। इस प्रकार राजाओं की निन्दा करके महात्मा भीष्म फिर बोले—हे नरपतियो, इस समय अर्जुन को देखने की मुझे बड़ी इच्छा है।

महाराज, तब महाबाहु अर्जुन ने पितामह के पास जाकर प्रणाम किया और हाथ जोड़-कर कहा—हे पूज्य पितामह, मुझे क्या आज्ञा है ? धर्मात्मा भीष्म ने पराक्रमी अर्जुन को सामने देखकर, उनका सत्कार करके, प्रसन्नतापूर्वक कहा—बेटा अर्जुन, तुम्हारे बाणों की जलन से मेरा
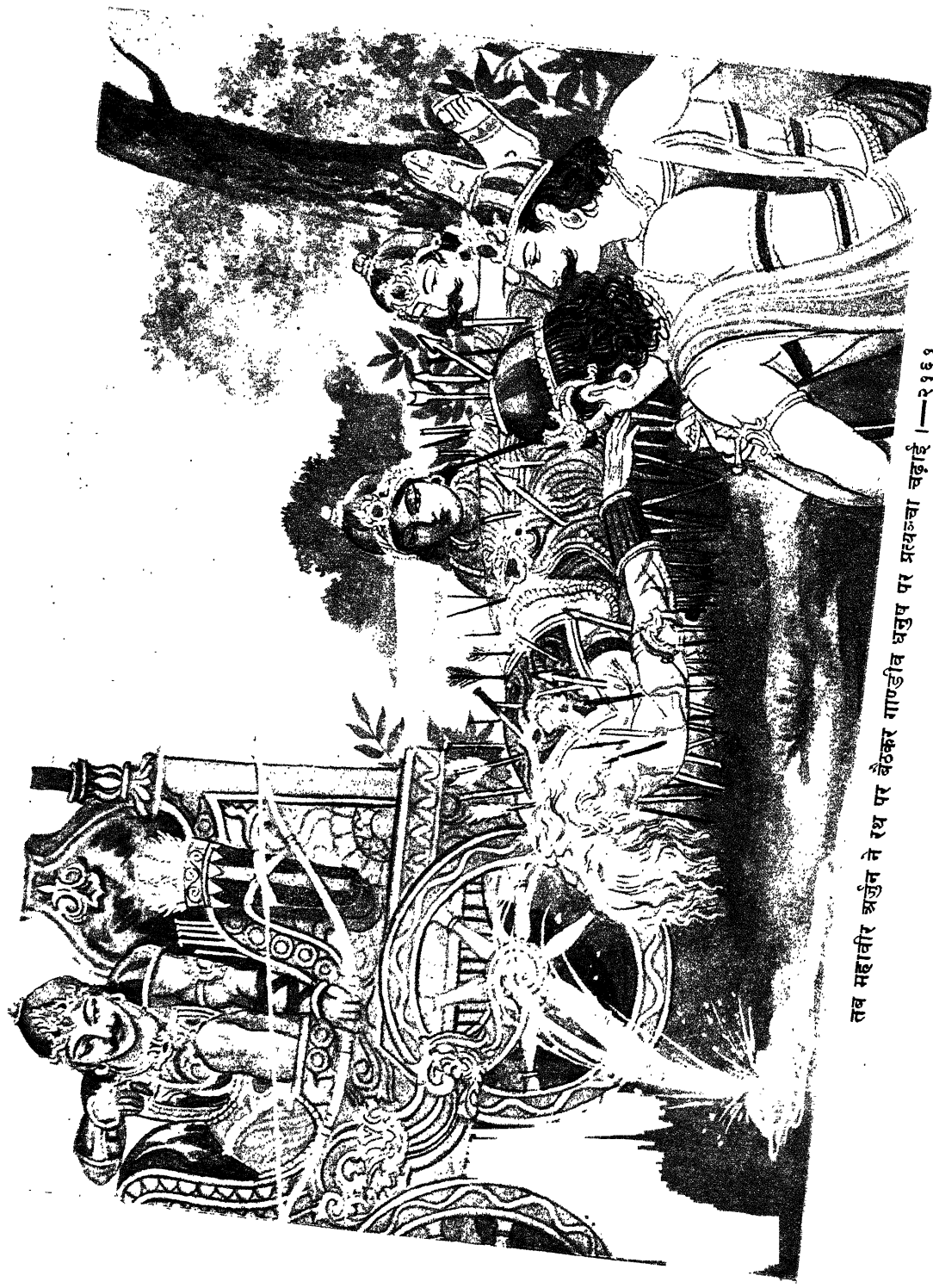
तब महावीर अर्जुन ने रथ पर बैठकर गाण्डीव धनुष पर प्रत्यञ्चा चढ़ाई।—२१६१

शरीर जल रहा है, मर्मस्थलों में व्यथा हो रही है और मुँह सूख रहा है। मैं वेदना से अत्यन्त पीड़ित हूँ। इसलिए तुम जल देकर मेरी प्यास बुझाओ। हे महारथी, तुम्हारे सिवा और कोई मुझे उपयुक्त रूप से जल नहीं पिला सकता।

तब महावीर अर्जुन ने रथ पर बैठकर गाण्डीव धनुष पर प्रत्यञ्चा चढ़ाई। वज्र की कड़क के समान वह प्रत्यञ्चा का शब्द सुनकर सब राजा और अन्य लोग डर गये। इसके बाद महारथी अर्जुन ने शरशय्या पर पड़े हुए सर्वशास्त्रज्ञ भरतकुल-श्रेष्ठ पितामह की प्रदक्षिणा करके धनुष पर प्रज्वलित बाण चढ़ाया। फिर उसे अभिमन्त्रित कर, पर्जन्य अस्त्र का प्रयोग करके, भीष्म के दक्षिण पार्श्व में पृथ्वी पर वह बाण मारा। तुरन्त ही पृथ्वी फट गई और उसी स्थान से सुगन्धपूर्ण अमृततुल्य मधुर निर्मल शीतल जल की धारा ऊपर निकली। वह जल पीकर महात्मा भीष्म बहुत प्रसन्न और तृप्त हो गये। इन्द्रसदृश पराक्रमी अर्जुन ने इस तरह भीष्म को जल पिलाया। अर्जुन का यह अद्भुत कार्य देखकर सब राजा लोग अत्यन्त विस्मित होकर दुपट्टे हिलाने लगे तथा कौरव लोग जाड़े से पीड़ित गायों की तरह डर के मारे काँपने लगे। उस समय चारों ओर शङ्ख और नगाड़े बजने लगे। २०

महाराज, इस तरह भीष्म ने तृप्त होकर सब राजाओं के आगे अर्जुन की प्रशंसा करके कहा—हे महाबाहु, तुमने जो काम आज कर दिखाया वह तुम्हारे लिए कुछ विचित्र नहीं है। ३० पहले नारद ऋषि ने मुझसे कहा था कि तुम पुरातन ऋषि नर हो। इन्द्र भी सब देवताओं के साथ मिलकर जो काम करने का साहस नहीं कर सकते वह कार्य तुम, श्रीकृष्ण की सहायता से, अकेले ही करोगे। हे अर्जुन, पृथ्वीमण्डल भर पर तुम अद्वितीय अर्थात् सर्वश्रेष्ठ धनुर्द्धर हो। जैसे सब प्राणियों में मनुष्य, पक्षियों में गरुड़, जलाशयों में सागर, चौपायों में गाय, तेजस्वी पदार्थों में आदित्य, पर्वतों में हिमालय और जातियों में ब्राह्मण श्रेष्ठ हैं, वैसे ही तुम सब धनुर्धारियों में श्रेष्ठ हो। मैं, विदुर, द्रोणाचार्य, बलराम, जनार्दन कृष्ण और सञ्जय, सबने बारम्बार दुर्योधन को हित का उपदेश किया; किन्तु मन्दमति दुर्योधन ने अश्रद्धापूर्वक किसी का कहा नहीं माना। इस कारण शास्त्रमर्यादा का उल्लङ्घन करनेवाला दुर्मति दुर्योधन भीमसेन के बल से बहुत शीघ्र नष्ट होगा।

भीष्म के इन तिरस्कार-वाक्यों को सुनकर कौरवेन्द्र दुर्योधन बहुत ही उदास हुए। उनको दुःखित देखकर महात्मा भीष्म ने कहा—हे दुर्योधन, तुम इस समय क्रोध छोड़ दो। बुद्धिमान् बलविक्रमशाली अर्जुन ने जिस तरह मुझे जल पिलाया, सो तुमने प्रत्यक्ष देख लिया। इस लोक में ऐसा काम और कौन कर सकता है? आग्नेय, वारुण, सौम्य, वायव्य, वैष्णव, ऐन्द्र, पाशुपत और ब्राह्म आदि सब दिव्य अस्त्र महात्मा श्रीकृष्ण और अर्जुन के सिवा और कोई नहीं जानता। भैया, जिनके ऐसे अलौकिक कार्य हैं उन्हें कोई परास्त नहीं कर सकता। राजन्, ४२

इन सत्यपरायण युद्धनिपुण पाण्डवों के साथ मेल कर लो। सर्वशक्तिमान् महात्मा श्रीकृष्ण जिनके पक्ष में हैं उनके साथ मेल कर लेना ही भला है। मरने से बचे हुए तुम्हारे भाई और शेष राजा लोग जब तक मारे न जायँ, उसके पहले ही मेल कर लो। जब तक युधिष्ठिर का कोप रूप प्रज्वलित अग्नि तुम्हारी सारी सेना को भस्म नहीं कर देता, उसके पहले ही मेल कर लो। जब तक नकुल, सहदेव और भीमसेन तुम्हारी सेना के महावीरों को नष्ट नहीं कर देते, उसके पहले ही महावीर पाण्डवों के साथ मेल कर लेना अच्छा है। यही मेरी सम्मति है। मेरी ५० मृत्यु से ही इस युद्ध का अन्त हो जाय। हे दुर्योधन, पाण्डवों के साथ होनेवाले युद्ध की शान्ति के लिए मैंने जो तुमसे कहा है वह तुम्हारे और तुम्हारे कुल के लिए अत्यन्त श्रेयस्कर है। इसलिए क्रोध त्यागकर शान्त भाव से पाण्डवों के साथ मेल कर लो। अर्जुन ने अब तक जो किया है वही तुम्हारे सावधान होने के लिए काफ़ी है। मेरे विनाश से ही इस घोर हत्याकाण्ड की समाप्ति हो जाय और तुम लोग शान्ति प्राप्त करो। पाण्डवों को आधा राज्य दे दो; युधिष्ठिर इन्द्रप्रस्थ में जाकर राज्य करें। हे कुरुराज! राजाओं की निन्दित नीच वृत्ति जो मित्रद्रोह है, उसमें लिप्त होकर अकीर्ति मत बटोरो। मेरे अन्त से ही प्रजा शान्ति का सुख भोगे। वैर भुलाकर सब राजा लोग प्रसन्नतापूर्वक परस्पर मिलें। राजन्! पिता पुत्र को, भानजा मामा को, भाई भाई को और मित्र मित्र को फिर पावे। मैं सत्य कहता हूँ, तुम मोह के आवेश से अगर फिर युद्ध करोगे तो अन्त को अवश्य तुम्हारा सर्वनाश होगा।

महाराज, महात्मा भीष्म सब राजाओं के आगे राजा दुर्योधन से यों कहकर चुप हो रहे। क्योंकि उनके मर्मस्थल के घावों में वेदना हो रही थी। सञ्जय ने कहा—राजन्, जो व्यक्ति मर रहा है उसे दवा जैसे नहीं रुचती वैसे ही महात्मा भीष्म के धर्मार्थ-सङ्गत परम- ५७ हितकर वचन आपके पुत्र दुर्योधन को नहीं रुचे।

एक सौ बाईस अध्याय

भीष्म और कर्ण की भेट

सञ्जय ने कहा—राजन्, भीष्म जब चुप हो गये तब सब राजा लोग उठकर अपने स्थानों को गये। उस समय पुरुषश्रेष्ठ कर्ण, भीष्म के गिरने का समाचार सुनकर, कुछ संकुचित होकर शीघ्रता के साथ उनके पास पहुँचे। वहाँ पहुँचकर उन्होंने देखा कि जन्म-(सेंठे की)शय्या पर पड़े हुए कार्त्तिकेय के समान भीष्म पितामह शरशय्या पर आँखें मूँदे पड़े हैं। कर्ण की आँखों में आँसू भर आये। उन्होंने गद्गद स्वर से कहा—हे कुरुश्रेष्ठ भीष्म! मैं वही राधेय कर्ण हूँ, जो सदा आपकी आँखों र चढ़ा हुआ था और जिसको, निरपराध होने पर भी, आप द्वेष्य समझते थे।

पितामह भीष्म ने कर्ण के ये वचन सुनकर धीरे-धीरे आँखें खोलीं। फिर रक्षकों को वहाँ से हटाकर एकान्त में उन्होंने, पिता जैसे पुत्र को गले से लगाता है वैसे ही, स्नेहपूर्वक एक हाथ से कर्ण को हृदय से लगा लिया। इसके बाद उन्होंने कहा—हे कर्ण, आओ आओ। तुम मेरे प्रतियोगी हो। सदा मेरे साथ लाग-डाँट रखनेवाले तुम्हीं एक हो। हे कर्ण, जो तुम इस समय मेरे पास न आते तो कभी तुम्हारा भला न होता। हे महाबाहु, मैंने नारदजी और व्यासजी के मुँह से सुना है कि तुम राधा के पुत्र नहीं, कुन्ती के बेटे हो। तुम्हारे पिता अधिरथ नहीं, साक्षात् सूर्यदेव हैं। भैया! मैं सच

कहता हूँ, तुम पर रत्ती भर भी द्वेष का भाव मेरे हृदय में नहीं है। मैंने तुम्हारा तेज घटाने के लिए ही सदा तुम्हारे लिए कठोर वाक्यों का प्रयोग किया है। हे कर्ण! तुम्हारा जन्म धर्मलोप से हुआ है, इसी कारण तुमसे पाण्डवों को अनेक कष्ट और दुःख पहुँचे हैं। तुम्हारी बुद्धि और प्रकृति इसी कारण गुणियों से द्वेष रखती है। इसी से कुरुसभा में मैंने अनेक बार तुमको रूखे और कड़वे वचन सुनाये हैं। मैं जानता हूँ कि युद्ध में तुम बहुत निपुण हो और तुम्हारा पराक्रम तथा बल शत्रुओं के लिए अत्यन्त असह्य है। हे कर्ण! तुम ब्रह्मनिष्ठ, शूर और श्रेष्ठ दानी हो। तुम बाणसन्धान और हाथ की फुर्ती में वीर अर्जुन और श्रीकृष्ण के बराबर हो। तुम्हारे समान पुरुष संसार में बहुत ही कम होंगे। यह सब जानकर भी तुम्हारे कारण पाण्डवों और कौरवों में फूट पड़ने के डर से मैं सदा तुमको दुर्वचन कहता रहा हूँ। कर्ण, तुमने काशिपुर में जाकर कुरुराज की कन्या के लिए एक धनुषमात्र की सहायता से सब राजाओं को परास्त किया था। युद्धनिपुण दुर्द्धर्ष प्रबल मगधराज जरासन्ध भी तुम्हारे समान नहीं थे। तुम युद्ध करने में देवसदृश हो। हे कर्ण, पौरुष के द्वारा कोई होनी को टाल नहीं सकता। इस समय जो तुम मेरा प्रिय करना चाहते हो तो अपने भाई पाण्डवों से मिल जाओ। मेरी मृत्यु से ही वैर की यह आग बुझ जाय और सब राजा कुशल से रहें।

कर्ण ने कहा—हे महात्मा, आप जो कुछ कह रहे हैं वह सब ठीक है। मैं सचमुच कुन्ती का पुत्र हूँ, सूत का नहीं। किन्तु कुन्ती ने जब मुझे त्याग दिया था तब सूत ने ही मुझे पाल-

पोसकर बड़ा किया। उसके बाद दुर्योधन के ऐश्वर्य और कृपा से मैं अब तक सुख भोग रहा हूँ। इन बातों को मैं मिथ्या या वृथा नहीं कर सकता। दृढ़व्रत श्रीकृष्ण जैसे पाण्डवों के लिए यश, धन, पुत्र, स्त्री और शरीर तक का त्याग करने के लिए तैयार रहते हैं वैसे ही मैं पुत्र, स्त्री आदि अपना सब कुछ दुर्योधन को अर्पण कर चुका हूँ। हे कौरव, क्षत्रियों के लिए व्याधि-मृत्यु अनुचित है और पाण्डवगण भी दुर्योधन पर अत्यन्त कुपित हैं। अतएव कई कारणों से यह अवश्यम्भावी युद्ध किसी तरह रुक नहीं सकता। मेल होने की कोई आशा नहीं। यह तो आप मानते ही हैं कि कोई मनुष्य पौरुष के द्वारा होनी को टाल नहीं सकता। आप लोगों ने पृथ्वी के लोगों के नाश की सूचना देनेवाले घोर उत्पात देखे थे और कुरु-सभा में उनका वर्णन भी किया था। इसलिए यह हत्याकाण्ड, यह युद्ध, किसी तरह बन्द नहीं होगा। मैं जानता हूँ कि श्रीकृष्ण सहित पाण्डव अजेय हैं—उन्हें कोई जीत नहीं सकता। अन्य पुरुषों के द्वारा अजेय समझकर
३० भी मैं उनसे युद्ध करने का उत्साह रखता हूँ। मैं समझता हूँ कि मैं युद्ध में पाण्डवों को जीत लूँगा। हम लोगों का यह दारुण वैरभाव किसी तरह दूर नहीं किया जा सकता। इसलिए आप मुझे क्षत्रिय-धर्म के अनुसार अर्जुन से युद्ध करने की आज्ञा दीजिए। मैं युद्ध के लिए निश्चय कर चुका हूँ। हे वीर, मैं चाहता हूँ कि आपसे आज्ञा लेकर मैं युद्ध करूँ। मैंने क्रोध या चञ्चलता के कारण आपको जो कुछ बुरा-भला कहा हो उसे, और मेरे दुर्व्यवहार को, क्षमा कीजिए।

भीष्म ने कहा—हे कर्ण, यदि यह दारुण वैरभाव तुम नहीं छोड़ सकते तो मैं तुमको युद्ध की आज्ञा देता हूँ। तुम क्षत्रिय-धर्म के अनुसार स्वर्ग की इच्छा से युद्ध करो। सुस्ती और क्रोध छोड़कर, शक्ति और उत्साह के अनुसार, सदाचार का पालन करते हुए, शत्रुओं से लड़ो और दुर्योधन का काम करो। मैं तुमको अनुमति देता हूँ कि जो चाहते हो सो पाओ। अर्जुन के द्वारा तुम उन लोकों को पाओगे जिन्हें लोग क्षत्रिय-धर्म का पालन करने से प्राप्त करते हैं। अहङ्कार छोड़कर, बल और वीरता का आश्रय लेकर, युद्ध करो। क्षत्रिय के लिए धर्मयुद्ध से बढ़कर शुभ कर्म दूसरा नहीं है। मैं तुमसे सच कहता हूँ कि मेल के लिए मैंने बहुत दिनों तक यत्न किया, किन्तु किसी तरह कृतकार्य नहीं हो सका।

सञ्जय ने कहा—महाराज! महात्मा भीष्म के यों कहकर चुप हो जाने पर प्रणाम करके
३९ कर्ण, आज्ञा लेकर, वहाँ से चल दिये। रथ पर चढ़कर वे दुर्योधन के पास जाने को चले।

महर्षि वेदव्यास-प्रणीत

महाभारत का अनुवाद

द्रोणपर्व

द्रोणाभिषेकपर्व

पहला अध्याय

जनमेजय का प्रश्न। वैशम्पायन का धृतराष्ट्र के पुत्रों की दशा का वर्णन करना

नारायणं नमस्कृत्य नरं चैव नरोत्तमम्।
देवीं सरस्वतीं चैव ततो जयमुदीरयेत्॥

जनमेजय ने कहा—भगवन्, तेजस्वी वलवीर्यशाली अलौकिक अतुल-सत्त्वधारी और अद्वितीय पराक्रमी भीष्म पितामह की शिखण्डी के हाथ से मृत्यु सुनकर शोक से व्याकुल राजा धृतराष्ट्र ने क्या किया? उनके पुत्र दुर्योधन ने भीष्म, द्रोण आदि महारथियों की सहायता से महा-योद्धा पाण्डवों को परास्त करके राज्य भोगने की इच्छा की थी। श्रेष्ठ योद्धा भीष्म के मारे जाने पर दुर्योधन ने क्या किया? यह सब हाल कहिए।

वैशम्पायन कहते हैं—महाराज! राजा धृतराष्ट्र, भीष्म की मृत्यु का हाल सुनकर, चिन्ता और शोक से ऐसे घबरा गये कि किसी तरह उनके चित्त की अशान्ति नहीं मिटी। वे दिन-रात उसी चिन्ता में डूबे रहते थे। इसी समय सायङ्काल में सञ्जय युद्धस्थल से हस्तिनापुर में धृतराष्ट्र के पास आये। पुत्रों के जीतने की इच्छा रखनेवाले राजा धृतराष्ट्र ने जब से भीष्म के मरने का हाल सुना था तभी से वे खिन्न होकर विलाप कर रहे थे। सञ्जय के आने पर उनसे धृतराष्ट्र ने पूछा—हे सञ्जय, कालप्रेरित कौरवों ने महाबली भीष्म के मरने पर अत्यन्त शोक-

१० पीड़ित होकर क्या किया ? मैं तो समझता हूँ कि वीर पाण्डवों की सैना त्रिभुवन के हृदय में डर उत्पन्न कर सकती है।

सञ्जय ने कहा—राजन्, संग्राम में भीष्म के गिरने पर आपके पुत्रों ने जो कुछ किया, सो मैं कहता हूँ। महाराज, सत्यपराक्रमी भीष्म के गिरने पर आपके पक्ष के और पाण्डव-पक्ष के वीर अलग-अलग सलाह करने लगे। महाराज, आपके पक्ष के लोगों को पितामह की मृत्यु से आश्चर्य था और पाण्डव-पक्ष के लोग आनन्दित थे । दोनों ओर के लोग क्षत्रियधर्म के अनुसार भीष्म के पास गये। सबने उनको प्रणाम किया। पाण्डवों ने तीक्ष्ण सन्नतपर्व बाणों के द्वारा पितामह के लिए तकिये और बिछौने की रचना की और उनके चारों ओर रक्षक नियुक्त कर दिये। इसके बाद वे सब परस्पर सम्भाषण करके, पितामह की अनुमति लेकर और उनकी प्रदक्षिणा करके, फिर युद्ध के लिए युद्धभूमि में आये। दोनों पक्ष के वीर, क्रोध से लाल आँखें किये, एक-दूसरे को देख रहे थे। उनके सिर पर काल सवार था। दोनों पक्ष की सेना युद्ध के लिए निकली। उसमें २० तुरही, भेरी आदि बाजे बजने लगे। दूसरे दिन सबेरे कालग्रस्त कौरवगण कोपवश होकर, महात्मा भीष्म के हितकारी उपदेश को न मानकर, अस्त्र-शस्त्र ले-लेकर युद्धभूमि में पहुँच गये।

राजन्, आपकी और दुर्योधन की जयाशारूप मूढ़ता के कारण कौरवों को मौत का न्योता मिल गया है। कौरव और उनके पक्ष के राजा लोग भीष्म के शरशय्याशायी होने पर उसी तरह चिन्तित हुए, जिस तरह ख़ूनी जानवरों से भरे वन में बिना रक्षक के बकरियाँ और भेड़ें घबरा जाती हैं। महाराज ! आपके पक्ष की सेना भीष्म के बिना नक्षत्र-हीन आकाश की तरह, वायुहीन अन्तरिक्ष की तरह, बिना फ़सलवाले खेत की तरह, अशुद्ध वाक्य की तरह और राजा बलि को जब वामनजी ने बलपूर्वक बाँध लिया था उस समय की नायकविहीन असुरसेना की तरह उद्विग्न, विचलित और श्रीहीन हो गई। राजन्, आपकी सेना उस समय विधवा सुन्दरी की तरह, जिसका पानी सूख गया हो उस नदी की तरह, भेड़ियों ने जिसे घेर रक्खा हो और जिसका साथी यूथप मार डाला गया हो उस मृगी की तरह तथा शरभ ने जिसमें रहनेवाले सिंह को मार डाला हो उस कन्दरा की तरह उद्विग्न, विचलित और श्रीहीन हो गई। तूफ़ान में फँसी नाव की जो हालत समुद्र में होती है वही दशा आपकी सेना की हुई। ठीक निशाना लगाने-वाले वीर पाण्डव आपकी सेना को अत्यन्त पीड़ित करने लगे। घोड़े, रथ, हाथी और पैदल ३० सब नष्ट-भ्रष्ट होने लगे। सब सैनिक उत्साहहीन, उदास और विकल देख पड़ने लगे। भीष्म के बिना कौरव पक्ष के राजा और सैनिक मानों पाताल में डूबने लगे।

उस समय कौरवों ने कर्ण को सब धनुर्द्धरों में श्रेष्ठ भीष्म-तुल्य जानकर अपनी रक्षा के लिए याद किया। जैसे गृहस्थ का मन साधु अतिथि की ओर और आपत्ति में पड़े हुए व्यक्ति का मन अपने मित्र की ओर दौड़ता है, वैसे ही कौरवों का ख़याल कर्ण की ओर गया। उस समय

सब राजा लोग कर्ण को अपना हितैषी और समर्थ समझकर "कर्ण ! कर्ण !" चिल्लाने लगे। उन्होंने कहा—महायशस्वी कर्ण ने इन दस दिनों तक शत्रुओं से युद्ध नहीं किया। उन्हें उनके मन्त्रियों, साथियों और मित्रों सहित शीघ्र बुलाओ; देर न करो। महावीर कर्ण दो रथी योद्धाओं के तुल्य तथा रथी और अतिरथी योद्धाओं में अग्रगण्य हैं। बड़े-बड़े शूर उनका सम्मान करते हैं। वे यमराज, इन्द्र, वरुण, कुबेर आदि लोकपालों और बड़े-बड़े असुरों से भी युद्ध कर सकते हैं; तथापि बल-विक्रमशाली रथी-महारथी आदि की गिनती के समय पितामह भीष्म ने उनको अर्द्धरथी कहा। इसी से क्रोधवश होकर कर्ण ने भी भीष्म के आगे प्रतिज्ञा की थी कि "हे पितामह, तुम्हारे जीते जी मैं युद्ध नहीं करूँगा। इस महासंग्राम में अगर तुम्हारे हाथ से पाँचों पाण्डव मारे गये तो मैं, दुर्योधन की अनुमति लेकर, वनवास करने चल दूँगा। और जो पाण्डवों के हाथों मरकर तुम स्वर्गवासी हुए तो मैं अकेला उन सब क्षत्रियों को मारूँगा, जिन्हें तुम पूर्ण रथी और महारथी कह रहे हो।" महाराज, आपके पुत्र दुर्योधन की सम्मति से यशस्वी कर्ण ने दस दिन तक शत्रुओं से युद्ध नहीं किया। महाबली भीष्म ही युधिष्ठिर-पक्ष के योद्धाओं को नष्ट करते रहे। महापराक्रमी सत्यसन्ध महाशूर भीष्म के मारे जाने पर आपके पुत्र और उनके पक्ष के राजा लोग कर्ण को वैसे ही स्मरण करने लगे जैसे पार जाने की इच्छा रखनेवाले लोग नाव को याद करते हैं। सब लोग यों चिल्लाने लगे—हा कर्ण ! यही तुम्हारे पराक्रम प्रकट करने का समय है। राजन्, कर्ण ने परशुराम से अस्त्र-विद्या सीखी है, और उनका पराक्रम दुर्निवार्य है, यही समझकर हमारे पक्ष के आदमियों को कर्ण की ही याद आई। जैसे बड़ी आपत्ति के समय लोग अपने मित्र को ही याद करते हैं वैसे ही पाण्डवों के द्वारा पीड़ित कौरव-सेना कर्ण को स्मरण करने लगी। राजन्, जैसे विष्णु भगवान् सदा देवताओं को महाभय से उबारते रहते हैं वैसे ही युद्धभूमि में इस महाभय से महाबाहु कर्ण भी हमारी रक्षा कर सकते हैं। ४०

वैशम्पायन कहते हैं कि सञ्जय को इस तरह बारम्बार कर्ण का ही नाम रटते देखकर विषैले नाग की तरह लम्बी साँस छोड़कर धृतराष्ट्र ने कहा—हे सञ्जय, दुर्योधन आदि तुम सब ने जब अत्यन्त उद्विग्न और पीड़ित होकर कर्ण को याद किया तब क्या कर्ण ने भी तुम्हारी रक्षा करना स्वीकार किया ? सत्यपराक्रमी धनुर्द्धरश्रेष्ठ कर्ण ने आर्त शरणागत कौरव दल की प्रार्थना को विफल तो नहीं किया ? भीष्म पितामह की मृत्यु से कौरवों की जो हानि हुई थी, पितामह का जो स्थान ख़ाली हुआ था, उसे पुरुषसिंह कहे जानेवाले कर्ण ने शत्रुओं को डरवाते हुए पूरा भी किया ? उन्होंने आर्त होकर रक्षा के लिए चिल्लानेवाले अपने मित्रों की जयाशा को सफल भी किया ? मेरे पुत्रों के भले और विजय के लिए कर्ण ने प्राणों का मोह छोड़कर शत्रुओं से युद्ध किया कि नहीं ? ५० ५३

दूसरा अध्याय

कर्ण की प्रतिज्ञा और युद्ध के लिए यात्रा

सञ्जय बोले—हे नरनाथ ! धनुर्द्धरश्रेष्ठ कर्ण को जब महात्मा भीष्म के गिरने का समाचार मिला तब वे अथाह सागर में टूटकर डूबते हुए जहाज़ के समान विपत्तिसागर में पड़ी हुई आपके पुत्र की सेना को, सगे भाई की तरह, उबारने के लिए उसके पास आये। पिता जैसे पुत्रों की रक्षा करने के लिए दौड़े वैसे ही महावीर कर्ण आपके पुत्रों की और उनके दल की रक्षा करने के लिए शीघ्रता के साथ वहाँ आये। महापराक्रमी शत्रु-समूहनाशन कर्ण [परशुराम के दिये हुए धनुष को साफ़ करके, उस पर प्रत्यञ्चा चढ़ाकर, काल अग्नि और वायु के तुल्य प्राणनाशक और शीघ्रगामी बाणों को उछालते हुए] कौरवों से कहने लगे—चन्द्रमा में जैसे श्री नित्य रहती है वैसे ही जिन द्विज-शत्रुहन्ता कृतज्ञ भीष्म में धृति, बुद्धि, पराक्रम, ओज, सत्य, स्मृति, प्रिय वाणी, ईर्ष्या का अभाव आदि वीरों के सब गुण मौजूद थे, वे शत्रुपक्ष के वीरों को मारनेवाले पितामह अगर आज मौत का शिकार बन गये तो मैं अन्य सब वीरों को मरा हुआ सा ही समझता हूँ। ब्रह्मचारी भीष्म की मृत्यु को देखकर किसे कल सूर्योदय होने का भी निश्चय होगा ? [भीष्म की मृत्युरूप अनहोनी होने पर सूर्योदय न होने की अनहोनी पर भी विश्वास किया जा सकता है।] मृत्युविजयी भीष्म की भी जब मृत्यु हो गई तब हम लोगों के जीवन की क्या आशा है ? सच है, इस लोक में कर्म के अनित्य सम्बन्ध से कोई भी वस्तु अविनाशी नहीं है, एक न एक दिन सभी का नाश होगा। वसुओं के समान महाप्रभावशाली और वसुओं के तेज से उत्पन्न भीष्म पितामह वसुलोक को जाकर वसुओं में लीन हो गये। अब धन, पुत्र, पृथ्वी, कौरवगण और इस सब सेना के लिए शोक करो। भीष्म के बिना हम सबकी शोचनीय दशा हो गई है।

सञ्जय कहते हैं—महाराज, महाप्रतापी भीष्म को मृत और कौरवों को शत्रुओं से परास्त देखकर कर्ण की आँखों में आँसू आ गये; वे दुःखित होकर बारम्बार साँसें लेने लगे। महाराज, आपके पुत्र और सैनिकगण वीर कर्ण के ये वचन सुनकर ज़ोर से रोने लगे।

राजन्, अब फिर भयङ्कर संग्राम आरम्भ हुआ। राजा लोग शत्रुसेनाओं में घुसकर उनका संहार करने लगे, सब सैनिक सिंहनाद करते दिखाई पड़ने लगे। उस समय महारथी-श्रेष्ठ
१० कर्ण सब योद्धाओं को प्रसन्न और उत्साहित करते हुए बोले—भाइयो, इस अनित्य जगत् में मुझे कुछ भी स्थिर नहीं देख पड़ता। हर एक वस्तु नाश होनेवाली है। अगर ऐसी बात नहीं है, तो फिर आप लोगों के देखते-देखते वीरवर पितामह भीष्म को पाण्डवों ने कैसे मार गिराया ? महारथी भीष्म पृथ्वी पर पड़े हुए सूर्य के समान दिखाई पड़ रहे हैं। जैसे पहाड़ को भी उलटने के लिए तैयार आँधी को साधारण वृक्ष नहीं रोक सकते, वैसे ही हमारे पक्ष के राजा लोग इस

समय भीष्म के बिना अर्जुन के पराक्रम के सामने नहीं ठहर सकते। कौरव-सेना के प्रधान वीर भीष्म के मारे जाने से सब सैनिक अनाथ, आर्त और उत्साह-हीन हो रहे हैं। मैं इस समय उसी तरह इस कुरु-सेना की रक्षा करूँगा, जिस तरह महात्मा भीष्म कर रहे थे। इस समय यह मेरा कर्त्तव्य हो गया है। जब कि युद्धप्रेमी महापराक्रमी भीष्म मारे गये हैं और मेरे ऊपर यह कर्त्तव्यभार आ पड़ा और जब यह जगत् और जीवन सदा रहने का है नहीं तब भला मैं क्यों डरने लगा? मैं शीघ्रता के साथ सीधे निशाने पर पहुँचनेवाले बाणों से शत्रुसेना को मारता हुआ रणभूमि में विचरण करूँगा। अगर विजय प्राप्त कर सका तो जगत् में श्रेष्ठ यश पाऊँगा और शत्रुओं के हाथ से मारा गया तो रणभूमि में वीर-गति पाऊँगा। युधिष्ठिर धैर्य, बुद्धि, धर्म और उत्साह से युक्त हैं; भीमसेन में सौ हाथियों का बल है; अर्जुन इन्द्र के पुत्र और जवान हैं; इसलिए देवता भी पाण्डवों की सेना को सहज में नहीं जीत सकते। यमराज के तुल्य माद्री के दोनों पुत्र और सात्यकि सहित साक्षात् वासुदेव जिस पक्ष में हैं, वह यमराज के मुख के समान है। कोई भी कायर उसके सामने पहुँचकर जीता नहीं लौट सकता। मनस्वी लोग बढ़े हुए तप को तप से ही और बल को बल से ही रोकते हैं। मेरा मन निश्चित रूप से शत्रुओं को रोकने और अपनी रक्षा करने के लिए पर्वत के समान अटल है। इस प्रकार मैं आज शत्रुओं के प्रभाव को रोकता हुआ जाते ही उन लोगों को जीत लूँगा। मित्रों के प्रति शत्रुओं के द्रोह को मैं सह नहीं सकता। जो सेना के भाग खड़े होने पर साथ दे, वही मित्र है। या तो मैं सत्पुरुषों के योग्य इस श्रेष्ठ कार्य को करूँगा, और या शत्रुओं के हाथ से मरकर भीष्म का अनुगामी होऊँगा। नारियों और कुमारों का रोना-चिल्लाना सुनकर और दुर्योधन का पौरुष प्रतिहत होने पर मेरा यही कर्तव्य है, यह मैं जानता हूँ। इसी लिए मैं आज राजा दुर्योधन के शत्रुओं को मारूँगा। पाण्डवपक्ष को मारने और कौरवपक्ष की रक्षा करने के लिए इस भयङ्कर रण में या तो मैं अपने प्रिय प्राण दूँगा, और या युद्ध में शत्रुओं को मारकर दुर्योधन को राज्य दूँगा। मुझे सुवर्णमय मणिरत्नमण्डित विचित्र उज्ज्वल कवच पहनाओ, सूर्य के समान प्रभा-युक्त शिरस्त्राण मेरे सिर पर रक्खो। बाण-पूर्ण सोलह तरकस और दिव्य धनुष ले आओ। तलवारें, शक्तियाँ, भारी गदाएँ, सुवर्णमण्डित विचित्र शङ्ख, सोने की शृङ्खला आदि सब युद्ध-सामग्री लाओ। कमल-चिह्नयुक्त विजयसूचक पताका को, कपड़ों से साफ़ करके, ले आओ। विचित्र माला और खीलें आदि माङ्गलिक वस्तुएँ उपस्थित करो। सफ़ेद मेघसदृश, हृष्ट-पुष्ट, मन्त्र से पवित्र किये गये जल से नहलाये गये, तेज़, बढ़िया, सुवर्ण के अलङ्कारों से अलङ्कृत घोड़े शीघ्र लाओ। सुवर्णमाल्य से शोभित, चन्द्र-सूर्य-सदृश कान्तियुक्त, रत्नों से भूषित, वाहनों से युक्त और संग्राम की सामग्री से परिपूर्ण बढ़िया रथ मेरी सवारी के लिए अभी लाओ। वेगशाली विचित्र चाप, उत्तम और ज़ोर को सहनेवाली धनुष की डोरियाँ, बाणपूर्ण बड़े-बड़े तरकस और कवच आदि सब

२०

सामग्री लाओ। प्रस्थानकाल में शुभसूचक जलपूर्ण सुवर्णकलश और दही भरा हुआ बर्तन लाओ। मुझे माला पहनाकर जयसूचक नगाड़े बजाओ।

हे सूत! तुम शीघ्र वहाँ पर मेरा रथ ले चलो जहाँ वीर भीमसेन, अर्जुन, युधिष्ठिर, नकुल और सहदेव हैं। मैं युद्धभूमि में उनके सामने पहुँचकर या तो उन्हें मारूँगा, और या ३० भीष्म की तरह शत्रुओं के हाथ से मारा जाऊँगा। जिस सेना में सत्यपरायण युधिष्ठिर, भीमसेन, अर्जुन, नकुल, सहदेव, सात्यकि, श्रीकृष्ण और सब सृञ्जय मौजूद हैं उसे मैं, सब राजाओं के साथ मिलकर आक्रमण करने पर भी, अजेय ही मानता हूँ। किन्तु मैं प्रतिज्ञा करता हूँ कि सर्वनाशक मृत्यु भी सावधान होकर सदैव अगर अर्जुन की रक्षा करे तो भी मैं युद्ध में उनको अवश्य मारूँगा, अथवा भीष्म की तरह उनके हाथों से मारा जाऊँगा। केवल मैं ही उन शूरवीर पाण्डवों की सेना के बीच युद्ध करने न जाऊँगा, प्रत्युत ये सब सहायक शूर राजा भी मेरे साथ अपना पराक्रम दिखावेंगे। ये मेरे सहायक राजा और योद्धा लोग मित्रद्रोही, कच्ची भक्ति रखनेवाले, कायर या पापी नहीं हैं।

सञ्जय कहते हैं—राजन्, अब सुवर्ण-मुक्ता-मणि-रत्नमण्डित उत्तम दृढ़ रथ कर्ण के सामने लाया गया। उसमें सुन्दर पताका फहरा रही थी, और हवा से बातें करनेवाले बढ़िया घोड़े जुते हुए थे। उसी रथ पर बैठकर महारथी कर्ण विजय के लिए रवाना हुए। सब कौरव उग्रधन्वा वीर कर्ण की स्तुति वैसे ही करने लगे, जैसे इन्द्र की स्तुति देवता करते हैं। श्रेष्ठ योद्धा कर्ण रथ पर बैठकर वहाँ चले जहाँ भीष्म पितामह शरशय्या पर शयन कर रहे थे। सुवर्ण-मुक्ता-मणि-रत्नमण्डित, ध्वजायुक्त, अश्वशोभित रथ पर कर्ण उसी तरह शोभायमान हुए जिस तरह गरजते हुए बादल पर सूर्य विराजमान हों। अग्नितुल्य तेजस्वी शुभरूप महारथी महाधनुर्द्धर कर्ण अग्निपिण्ड-सदृश उस रथ पर बैठकर ३७ विमान पर स्थित इन्द्र के समान शोभा को प्राप्त हुए।
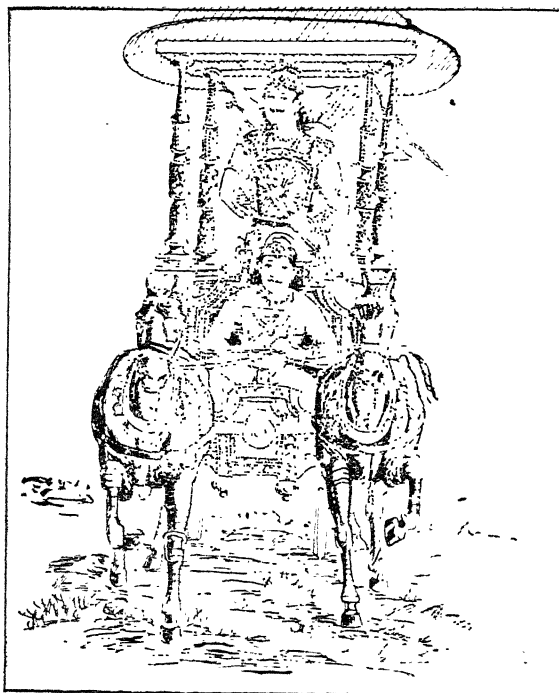
तीसरा अध्याय

कर्ण का भीष्म के पास जाकर उनसे युद्ध के लिए आज्ञा माँगना

सञ्जय कहते हैं—राजन्, कर्ण ने जाकर देखा कि महापराक्रमी महात्मा भीष्म शरशय्या पर पड़े हुए हैं। जैसे तूफ़ान ने समुद्र को सुखा डाला हो, वैसे ही अर्जुन ने सर्वक्षत्रान्तक गुरु पितामह भीष्म को दिव्य अस्त्रों के द्वारा गिरा दिया था। भीष्म के गिरते ही आपके पुत्रों की जय की आशा, कल्याण और रक्षाकवच खण्डित सा हो गया। महात्मा भीष्म कौरवों के लिए वैसे ही आश्रय-स्वरूप थे, जैसा अथाह में डूबकर थाह चाहनेवाले आदमी के लिए टापू होता है। यमुना के प्रवाह के समान असंख्य बाण उनके अङ्गों में छिदे हुए थे। इन्द्र के वज्र-प्रहार से पृथ्वी पर पड़े हुए मैनाक पर्वत के समान, आकाश से गिरे हुए सूर्य के समान, वृत्रासुर से पराजित इन्द्र के समान भीष्म पितामह पृथ्वी पर पड़े हुए थे। युद्ध में सब शत्रुसेना को अपने पराक्रम से मूढ़ बनानेवाले, सब सैनिकों में श्रेष्ठ, धनुर्द्धरों के शिरोमणि, आपके चाचा महाव्रत भीष्म को अर्जुन के बाणों से शिथिल होकर वीरोचित शरशय्या पर पड़े देखकर कर्ण शोक और मोह के आवेश से विह्वल हो उठे। उनकी आँखों में आँसू भर आये। वे तुरन्त रथ से उतरकर पैदल ही महात्मा भीष्म के पास पहुँचे। हाथ जोड़कर प्रणाम करके कर्ण ने कहा—पितामह, आपका कल्याण हो। मैं कर्ण हूँ। अपनी कल्याणमयी दृष्टि से मेरी ओर देखिए, और पवित्र वाक्यों से मुझे कृतार्थ कीजिए। आप ऐसे धर्मनिष्ठ वृद्ध को पृथ्वी पर इस तरह पड़े देखकर निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि इस लोक में कोई भी अपने पुण्य का फल नहीं भोगता। हे कुरुश्रेष्ठ, मुझे तो कौरवों में अब कोई कोष-सञ्चय, मन्त्रणा, व्यूहरचना और अस्त्र-प्रयोग में आप सा निपुण नहीं देख पड़ता। विशुद्ध बुद्धि से युक्त आप ही कौरवों को इस विपत्ति के पार लगानेवाले थे, सो आप बहुत से योद्धाओं को मारकर अब पितृलोक को जानेवाले हैं। जैसे क्रुद्ध बाघ मृगों को चौपट करते हैं, वैसे ही अब से पाण्डव लोग कुरुसेना का संहार करेंगे। हे पितामह, अर्जुन के पराक्रम को जाननेवाले कौरव अब गाण्डीव धनुष के शब्द से वैसे ही डरेंगे जैसे वज्र के शब्द से असुर डरते हैं। अब गाण्डीव धनुष से छूटे हुए बाणों का शब्द, वज्र की कड़क के समान, कौरवों को और उनके पक्ष के अन्य राजाओं को भयविह्वल बनावेगा। हे वीर, जैसे प्रज्वलित आग बड़ी-बड़ी ज्वालाओं से वृक्षों को जलाती है वैसे ही अर्जुन के बाण धृतराष्ट्र-पुत्रों को भस्म करेंगे। हवा और आग दोनों मिलकर महावन में बड़े-बड़े वृक्षों और घास-फूस-लता वग़ैरह को भस्म कर डालते हैं। सो अर्जुन तो अग्नि के तुल्य हैं, और कृष्ण वायु के समान हैं। हे भरतकुलदीपक! पाञ्चजन्य शङ्ख और गाण्डीव धनुष का शब्द सुनकर सब सेना डर जायगी। हे वीर, आपके न रहने से सब राजा लोग अर्जुन के रथ के शब्द को नहीं सह सकेंगे। पण्डित और वीर लोग जिनके अलौकिक कर्मों का बखान किया करते हैं,

जिन्होंने निवातकवच आदि दानवों को मारा और साक्षात् शङ्कर को संग्राम में सन्तुष्ट करके साधारण मनुष्यों के लिए दुर्लभ वरदान प्राप्त किये तथा जिनकी रक्षा सदा श्रीकृष्ण करते हैं, उन समराभिमानी अर्जुन से युद्ध करके आपके सिवा कोई भी राजा उनको परास्त नहीं कर सकता। आपने क्षत्रियकुल के काल, सुरासुर-पूजित, महाशूर परशुरामजी को अपने पराक्रम से रण में जीत लिया था। ऐसा कौन वीर है, जिसे आपने परास्त नहीं किया? किन्तु काल की कैसी विचित्र गति है कि वही आप आज अर्जुन के बाणों से घायल होकर पृथ्वी पर पड़े हुए हैं। मैं उन युद्धशूर पाण्डव अर्जुन को आपकी अनुमति लेकर मारने की इच्छा रखता हूँ। विषैले नाग के समान दृष्टि से ही वीरों के प्राण हर लेनेवाले शूर अर्जुन को २५ मैं, आपकी अनुमति मिलने से, अपने अस्त्रबल के द्वारा मार सकूँगा।

चौथा अध्याय

भीष्म की आज्ञा पाकर कर्ण की युद्धयात्रा

सञ्जय कहते हैं कि महाराज, कर्ण के ये वचन सुनकर पितामह भीष्म प्रसन्नतापूर्वक देश-काल के अनुकूल वचन बोले—हे कर्ण! सागर जैसे नदियों का, सूर्य जैसे ज्योतिर्मय पदार्थों का, सज्जन पुरुष जैसे सत्य का, उर्वरा भूमि जैसे सब बीजों का और मेघ जैसे सब प्राणियों के जीवन का आश्रय हैं, वैसे ही तुम अपने सुहृद कौरवों के आश्रयस्थल हो। देवता जैसे इन्द्र के आश्रित हैं वैसे ही तुम्हारे बान्धव कौरव तुम्हारे आश्रित हों। नारायण जैसे देवताओं का आनन्द बढ़ाते हैं वैसे ही तुम अपने मित्र कौरवों का आनन्द बढ़ाओ। हे वीर कर्ण, तुमने पहले कौरवों का प्रिय करने के लिए राजपुर में जाकर अपने बल-वीर्य से काम्बोजगण को जीता था। गिरिव्रज में स्थित नग्नजित् आदि राजाओं, अम्बष्ठों, विदेहों, गान्धारों और हिमवान् पर्वत के दुर्ग में रहनेवाले रणकर्कश किरातों को जीतकर तुमने दुर्योधन के अधीन कर दिया था। हे वीर! तुमने दुर्योधन के हित के लिए उत्कल, मेकल, पौण्ड्र, कलिङ्ग, अन्ध्र, निषाद, त्रिगर्त, वाह्लीक, आदि देशों में जाकर वहाँ के रहनेवाले बड़े-बड़े वीरों को अपने पराक्रम से जीता था। इस समय दुर्योधन जैसे सजातीय कुल और बान्धव आदि समेत सब कौरवों का आश्रयस्थल १० हैं, वैसे ही तुम भी उनके रक्षक बनो। मैं तुम्हें आशीर्वाद देता हूँ, जाओ, शत्रुओं से युद्ध करो। सब कौरवों को अपना अनुगामी बनाकर दुर्योधन को विजयी बनाओ। दुर्योधन के समान तुम भी मेरे पौत्रतुल्य हो। धर्म से जैसे मैं दुर्योधन का पितामह हूँ वैसे ही तुम्हारा भी हूँ। क्योंकि पण्डित लोग सत्सङ्गति के सम्बन्ध को जातिसम्बन्ध से भी अधिक माननीय बताते हैं। हे वीर कर्ण, कौरवों के साथ तुम्हारा वही सम्बन्ध हो गया है। सज्जन लोग

इसी लिए ग़ैरों से भी मित्रता करना चाहते हैं। मेरी सम्मति यह है कि तुम सत्यप्रतिज्ञ होकर, उसी सम्बन्ध के खयाल से, ममतापूर्वक दुर्योधन की तरह कौरव-सेना की रक्षा करो।

महाराज! भीष्म के ये वचन सुनकर, उनके चरणों में प्रणाम करके, महावीर कर्ण रथ पर सवार हुए और शीघ्रता के साथ युद्धभूमि की ओर चले। कर्ण ने सब राजाओं की बढ़िया सेना को देखकर उसे यथास्थान स्थापित और उत्साहित किया। विशाल वक्षःस्थलवाले बड़े-बड़े वीर सिपाही अस्त्र-शस्त्रों से सुसज्जित होकर युद्ध के लिए तैयार खड़े थे।

सब सेना के आगे चलनेवाले वीर कर्ण को लौटकर युद्ध के लिए तैयार देखकर दुर्योधन आदि कौरव बहुत प्रसन्न हुए। सभी वीर ताल ठोंककर, उछल-उछलकर, सिंहनाद और धनुष की डोरियों का शब्द करके अपना उत्साह प्रकट करते हुए वीर कर्ण की अभ्यर्थना करने लगे। १८

पाँचवाँ अध्याय

दुर्योधन के पूछने पर कर्ण का द्रोणाचार्य को सेनापति बनाने का प्रस्ताव करना

सञ्जय कहते हैं कि महाराज, कर्ण को रथ के ऊपर सामने देखते ही दुर्योधन ने प्रसन्न होकर कहा—हे मित्र, तुम्हारे द्वारा सुरक्षित अपनी सेना को मैं सर्वथा सनाथ समझता हूँ। बताओ, अब हमें क्या करना चाहिए? जो हमारे लिए हित और हमारी शक्ति से साध्य हो, वह निश्चित करके कहो।

कर्ण ने कहा—राजन्, आप हम सबके प्रभु और श्रेष्ठ बुद्धिमान् हैं। आप ही कर्तव्य-निर्द्धारण कीजिए। प्रधान स्वामी या राजा स्वयं जैसे कर्तव्य का निश्चय कर सकता है, वैसे दूसरा आदमी नहीं कर सकता। हे नरनाथ, हम लोग आपके ही मुँह से आज्ञा सुनना चाहते हैं। मुझे निश्चय है कि आप अनुचित या अनुपयुक्त नहीं कहेंगे।

दुर्योधन ने कहा—कर्ण! अवस्था, पराक्रम और ज्ञान में वृद्ध पितामह भीष्म ने सेनापति होकर सब योद्धाओं के साथ दस दिन तक अच्छी तरह युद्ध चलाया और मेरी सेना की रक्षा की। महायशस्वी पितामह ने अपने युद्ध-कौशल से मेरे शत्रुओं को भी मारा और अपनी सेना की भी रक्षा की। ऐसा दुष्कर कर्म करके महात्मा भीष्म स्वर्गलोक की यात्रा को तैयार हो चुके। अब हमारा पहला काम उपयुक्त सेनापति को चुनना है। तुम किसको सेनापति बनाने के योग्य समझते हो? जैसे बिना मल्लाह के नाव पल भर भी जल में नहीं रह सकती वैसे ही सेनापति के बिना सेना क्षण भर युद्धभूमि में नहीं टिक सकती। सेनापति के न होने पर, सारथी से ख़ाली रथ अथवा बिना मल्लाह की नाव के समान, सेना भी इधर-उधर बहकी-बहकी फिरती है। सेना का ठीक-ठीक सञ्चालन करने के लिए एक योग्य सेनापति का होना परम

आवश्यक है। पथप्रदर्शक मुखिया के बिना मुसाफ़िरों के झुण्ड जैसे कष्ट पाते हैं वैसे ही सेना-
१० पति-हीन सेना में भी सब दोष होते हैं। अतएव तुम विचारकर देखो कि हमारे पक्ष में जितने महानुभाव वीर हैं, उनमें ऐसा योग्य पुरुष कौन है जो महापराक्रमी भीष्म के उपरान्त उपयुक्त सेनापति हो सके। तुम जिसको पसन्द करोगे उसी को हम सहर्ष अपना सेनापति बनावेंगे।

कर्ण ने कहा—राजन्! आपकी सेना में जितने श्रेष्ठ पुरुष हैं वे सब सत्कुल में उत्पन्न, समर-विशारद, ज्ञानी, महाबली, महापराक्रमी, बुद्धिमान्, शास्त्रज्ञ, युद्ध में पीठ न दिखानेवाले और सेनापति होने के उपयुक्त हैं। किन्तु सब श्रेष्ठ महारथी एक साथ सेनापति नहीं बनाये जा सकते। इन सबमें से जिस एक में अधिक गुण देख पड़ें उसी को इस समय सेनापति बनाना चाहिए। किन्तु इन परस्पर समान स्पर्धा रखनेवाले वीरों में से किसी एक को जो आप सेनापति बना देंगे तो शेष सब शायद खिन्न होकर उस तरह उत्साह से आपके हित के लिए युद्ध न करें। इसलिए मेरी राय में योद्धाओं के आचार्य वृद्ध गुरु और सब शस्त्रधारियों में श्रेष्ठ द्रोणजी को ही सेनापति बनाना ठीक है। यही सबसे अधिक इस पद के उपयुक्त हैं। शस्त्रधारियों में श्रेष्ठ और नीतिज्ञान में बृहस्पति तथा शुक्र के समान महात्मा द्रोणाचार्य के रहते और कौन सेनापति-पद के योग्य हो सकता है? आपके पक्ष के राजाओं में ऐसा कौन है जो सेनापति होकर युद्ध के लिए जानेवाले गुरुवर द्रोणाचार्य का साथ न दे? राजन्! ये महात्मा आपके गुरु हैं, फिर सेनापतियों, शस्त्रधारियों और बुद्धिमानों में भी श्रेष्ठ हैं। हे दुर्योधन, जैसे युद्ध में असुरों को जीतने के लिए देवताओं ने कार्त्तिकेय को अपना सेनापति बनाया था वैसे ही आप शीघ्र
२१ द्रोणाचार्यजी को अपनी सेना का प्रधान सेनापति बनाइए।

छठा अध्याय

दुर्योधन का द्रोणाचार्य से सेनापतित्व स्वीकार करने के लिए प्रार्थना करना

सञ्जय कहते हैं कि महाराज, कर्ण के वचन सुनकर राजा दुर्योधन ने सेना के मध्य में स्थित द्रोणाचार्य से प्रार्थना की—महात्मन्, आप वर्ण में श्रेष्ठ हैं; कुल, अवस्था, बुद्धि, वीरता, चतुरता आदि में भी बड़े हैं। आप शत्रुओं के लिए दुर्धर्ष हैं। अर्थज्ञान, नीति, विजय, तपस्या, कृतज्ञता आदि गुणों में दूसरा कोई आपकी बराबरी नहीं कर सकता। हमारे पक्ष के राजाओं में आपके समान उपयुक्त सेनापति और कोई नहीं है। भगवन्, सब देवताओं की जैसे इन्द्र रक्षा करते हैं वैसे ही आप हम सबके रक्षक बनिए। हे द्विजश्रेष्ठ, आपको सेनापति बनाकर हम अपने शत्रुओं को जीतना चाहते हैं। जैसे रुद्रों में कपाली, वसुओं में पावक, यक्षों में कुबेर, देवगण में इन्द्र, ब्राह्मणों में वशिष्ठ, तेजस्वियों में सूर्य, पितरों में यमराज, जलचारियों

में वरुण, नक्षत्रों में चन्द्रमा, दानवों में शुक्राचार्य और सम्पूर्ण विश्व में सृष्टि-स्थिति-प्रलयकर्ता प्रभु नारायण श्रेष्ठ हैं, वैसे ही इन सेनापति-पद के लिए उपयुक्त क्षत्रियों में आप श्रेष्ठ सेनापति हैं। इसलिए मेरी प्रार्थना स्वीकार करके आप मेरी सेना के सेनापति बनिए। हे निष्पाप, यह ग्यारह अक्षौहिणी सेना आपके अधीन होकर युद्ध करे। भगवन्, इन्द्र जैसे दानवों को जीतते हैं वैसे ही शत्रुओं के विरुद्ध इस सेना से व्यूहरचना करके आप मेरे शत्रुओं को जीतिए। कार्त्तिकेय जैसे देवताओं के आगे-आगे चले थे, वैसे ही आप हम लोगों की सेना के अग्रगामी सेनापति हों। जैसे बड़े साँड़ के पीछे बैल चलते हैं वैसे ही हम लोग युद्धभूमि में आपके अनुगामी होंगे। अपने दिव्य धनुष का शब्द करते हुए महायोद्धा उग्रधन्वा अर्जुन जब संग्राम में आपको आगे देखेंगे तो कभी प्रहार नहीं करेंगे। हे पुरुषसिंह, आप यदि मेरे सेनापति बनेंगे १० तो मैं युद्ध में बन्धु-बान्धव और अनुगामी राजाओं सहित युधिष्ठिर को जीत लूँगा।

सञ्जय कहते हैं—महाराज, दुर्योधन के यों कहने पर सब राजा लोग सिंहनाद से आपके पुत्र को प्रसन्न करते हुए "द्रोणाचार्य की जय" कहने लगे। सैनिकगण भी महत् यश की इच्छा से प्रसन्नतापूर्वक दुर्योधन की बातों का समर्थन करते हुए द्रोणाचार्य की अभ्यर्थना करने लगे। अब महायशस्वी द्रोणाचार्य ने आपके पुत्र से यों कहा। १३

सातवाँ अध्याय

सेनापति के पद पर द्रोणाचार्य का अभिषेक

द्रोणाचार्य ने कहा—हे दुर्योधन! मैं वेद के छहों अङ्ग, मनुवर्णित अर्थविद्या, भगवान् शूलपाणि का पाशुपत अस्त्र और अन्य अनेक प्रकार के अस्त्र-शस्त्र तथा उनका प्रयोग अच्छी तरह जानता हूँ। तुम लोगों ने जय की इच्छा करके मुझमें जिन-जिन गुणों का होना बतलाया है उन गुणों का परिचय, तुम्हारा हित करने के लिए, देता हुआ मैं पाण्डवों से युद्ध करूँगा। किन्तु राजन्, मैं द्रुपद के पुत्र धृष्टद्युम्न को किसी तरह न मार सकूँगा। वह पुरुषश्रेष्ठ मुझे मारने के लिए ही उत्पन्न हुआ है। मैं सब सोमकों और पाञ्चालों को मारूँगा, और सब सैनिकों के साथ युद्ध करूँगा किन्तु प्रसन्न पाण्डवगण जी खोलकर मुझसे नहीं लड़ेंगे।

सञ्जय कहते हैं—महाराज, इस प्रकार द्रोणाचार्य की अनुमति पाकर आपके पुत्र दुर्योधन ने विधिपूर्वक उनको सेनापति बनाया। पूर्व समय में जैसे इन्द्र आदि देवताओं ने कार्त्तिकेय को अपना सेनापति बनाकर उनका अभिषेक किया था, वैसे ही दुर्योधन आदि राजाओं ने मिलकर सेनापति-पद पर द्रोणाचार्य को स्थापित किया, उनका अभिषेक किया। उस समय कौरवगण विचित्र बाजे और शङ्ख बजाकर हर्ष प्रकट करने लगे। अब ब्राह्मणों ने पुण्याह-पाठ और

स्वस्तिवाचन किया, सूत-मागध-वन्दीजन स्तुतिगान करने लगे, ब्राह्मण लोग शुभ आशीर्वाद के साथ जय-जयकार करने लगे और सुन्दरी स्त्रियाँ नाचने-गाने लगीं। इस प्रकार विधिपूर्वक द्रोणाचार्य का सत्कार और अभिषेक करके, सेनापति बनाकर, कौरवों ने समझ लिया कि अब पाण्डव परास्त हो गये।

सञ्जय कहते हैं—सेनापति बनाये जाने पर महारथी द्रोणाचार्य युद्ध की इच्छा से कौरवसेना की व्यूहरचना करके आपके पुत्रों के साथ युद्ध के लिए चले। सिन्धुनरेश जयद्रथ, कलिङ्गनरेश और आपके पुत्र विकर्ण उनके दक्षिण भाग में सुसज्जित सेना के साथ स्थित हुए। गान्धार देश के प्रधान-प्रधान घुड़सवार, जिनके हाथों में उज्ज्वल प्रास चमक रहे थे, शकुनि की मातहती में उस सैन्य-भाग की रक्षा के लिए, उसके पीछे, चले। कृपाचार्य, कृतवर्मा, चित्रसेन, विविंशति और दुःशासन आदि वीर योद्धा द्रोणाचार्य के वाम भाग की रक्षा में नियुक्त हुए। राजा सुदक्षिण की अधीनता में वीर काम्बोज, शक और यवनगण शीघ्रगामी घोड़ों पर सवार हो इस सैन्यभाग की रक्षा के लिए पीछे-पीछे चले। इसी तरह मद्र, त्रिगर्त, अम्बष्ठ, प्रतीच्य, उदीच्य, मालव, शिवि, शूरसेन, शूद्र, मलद, सौवीर, कितव, प्राच्य और दाक्षिणात्य देशों के राजा और उनकी सेना—दुर्योधन और कर्ण को आगे करके—अपने पक्ष को आनन्दित और उत्साहित करती हुई आगे बढ़ी। सब धनुर्द्धरों में श्रेष्ठ महारथी कर्ण सब सेना के हृदय में बल और उत्साह बढ़ाते हुए सबके आगे चले। उनकी बहुत बड़ी ध्वजा सूर्य के समान चमक रही थी और हाथियों के बाँधने की सुवर्ण-शृङ्खला से रथ में बँधी हुई थी। उसे देखकर कुरु-सेना के हृदय में हर्ष और युद्ध के लिए उत्साह बढ़ रहा था। उस समय कर्ण को देखकर सब लोगों को भीष्म की मृत्यु का शोक भूल गया। कौरव और उनके पक्ष के राजा लोग शोक-हीन हो गये। बहुतेरे सुभट एकत्र होकर आपस में कहने लगे कि पाण्डवगण वीर कर्ण को देखते ही युद्धभूमि से भाग खड़े होंगे। पराक्रम और वीर्य में हीन पाण्डवों की कौन कहे, देव-गण सहित इन्द्र भी समर में कर्ण को परास्त नहीं कर सकते। पराक्रमी भीष्म ने रण में

पाण्डवों की रक्षा की थी, उनको नहीं मारा था, किन्तु कर्ण उन्हें युद्ध में अवश्य अपने तीक्ष्ण बाणों से नष्ट कर देंगे। महाराज, योद्धा लोग इस तरह प्रसन्नतापूर्वक कर्ण की प्रशंसा करते हुए रणभूमि की ओर चले। हे नरनाथ, द्रोणाचार्य ने हमारी सेना में शकट-व्यूह की रचना की थी।

उधर युधिष्ठिर ने भी प्रसन्नतापूर्वक क्रौञ्च-व्यूह की रचना की। अपने रथ की वानर-युक्त ध्वजा को उड़ाते हुए महावीर अर्जुन और महात्मा श्रीकृष्ण उस व्यूह के मुखभाग में स्थित थे। सब योद्धाओं में श्रेष्ठ और सब धनुर्द्धरों के तेज के समूह-स्वरूप महातेजस्वी अर्जुन की ध्वजा आकाशमार्ग में स्थित होकर सारी सेना को प्रकाशित कर रही थी। उसे देखकर जान पड़ने लगा, मानों प्रलयकाल का सूर्य पृथ्वी को भस्म करने के लिए उदित हुआ है। अर्जुन सब योद्धाओं में, श्रीकृष्ण सब प्राणियों में, गाण्डीव धनुष सब धनुषों में और सुदर्शन चक्र सब चक्रों में श्रेष्ठ है। इन चारों श्रेष्ठ तेजों को धारण किये हुए, सफ़ेद घोड़ों से शोभित अर्जुन का रथ उद्यत कालचक्र के समान शत्रुसेना के आगे स्थित था। इस प्रकार कौरव-सेना के अग्रभाग में कर्ण और पाण्डव-सेना के अग्रभाग में अर्जुन खड़े होकर जय की और परस्पर वध की इच्छा से क्रुद्ध होकर एक दूसरे की ओर देखने लगे। ३०

महारथी द्रोणाचार्य जब युद्ध के लिए चले तब उनके सिंहनाद और शङ्खनाद से पृथ्वी काँप उठी। कौओं के समान काली तीव्र धूल हवा से उड़कर आकाशमण्डल में छा गई, इससे सूर्य भी छिप गये। आकाशमण्डल में बादल न होने पर भी मांस, हड्डी और रक्त की वर्षा होने लगी। हज़ारों गिद्ध, बाज़, कौए, कङ्क आदि मांसाहारी पक्षी सेनाओं के ऊपर मँडराने लगे। गीदड़ों के झुण्ड, भयानक चीत्कार करते हुए, मांस खाने और रक्त पीने की इच्छा से बारम्बार आपकी सेना के दाहने भाग में चक्कर लगाने लगे। बड़ी-बड़ी उल्काएँ, अपनी पूँछ फैलाये घोर शब्द करती और जलती हुई, संग्रामभूमि में गिरने लगीं। सेनापति के चलने के समय बिजली की चमक और कड़कड़ाहट के साथ सूर्य के चारों ओर बड़ा भारी मण्डल पड़ गया। कौरव-सेना के प्रस्थान के समय ये और अन्य अनेक घोर उत्पात दिखाई पड़ने लगे, जो कि युद्ध में वीरों की मृत्यु की सूचना दे रहे थे। ४०

अब परस्पर वध की इच्छा रखनेवाले सैनिकों में युद्ध होने लगा। कौरवों और पाण्डवों की सेना का घोर कोलाहल जगत् भर में फैल गया। जय की इच्छा रखनेवाले क्रुद्ध कौरव और पाण्डव एक दूसरे पर तीक्ष्ण अस्त्र-शस्त्रों के प्रहार करने लगे। महातेजस्वी महारथी द्रोणाचार्य सैकड़ों-हज़ारों तीक्ष्ण बाणों से शत्रुसेना को छिन्न-भिन्न करते हुए वेग से आगे बढ़े। उनको इस तरह युद्ध के लिए उद्यत देखकर पाण्डव और सृञ्जयगण भी अलग-अलग उन पर बाणों की वर्षा और उन्हें रोकने की चेष्टा करने लगे। द्रोणाचार्य भी पाण्डवों की महासेना और पाञ्चालों के दल में हलचल डालते हुए उन्हें छिन्न-भिन्न करने लगे। द्रोणाचार्य

के अनेक दिव्य अस्त्रों से व्यथित और पीड़ित पाण्डवों और पाञ्चालों की सेना वैसे ही तितर-बितर होने लगी जैसे हवा के झोंके से बादल फट जाते हैं। इन्द्र के प्रहार से पीड़ित असुरों के समान द्रोणाचार्य के प्रहारों से पीड़ित धृष्टद्युम्न आदि पाञ्चाल काँप उठे। तब दिव्य अस्त्रों के जाननेवाले धृष्टद्युम्न ने भी बाणवर्षा करके द्रोणाचार्य की सेना को उसी तरह छिन्न-भिन्न और पीड़ित किया। बली धृष्टद्युम्न ने अपने बाणों की वर्षा से द्रोणाचार्य की बाणवर्षा को रोककर सब कौरवों को अपने तीक्ष्ण बाणों से घायल कर दिया। महावीर द्रोणाचार्य अपनी
५० भागती हुई सेना को रोककर और युद्धभूमि में ठहराकर धृष्टद्युम्न की ओर दौड़े। जैसे क्रुद्ध होकर इन्द्र दानवों के ऊपर बाणवर्षा करें वैसे ही द्रोण भी धृष्टद्युम्न के ऊपर बाण बरसाने लगे। सिंह के मारे मृगों के समान द्रोण के बाणों से पीड़ित पाण्डव और सृञ्जयगण बारम्बार युद्ध से हटने लगे। जैसे जलती हुई लकड़ी घुमाई जाय वैसे ही द्रोणाचार्य बाणवर्षा करते हुए पाण्डवों की सेना में विचरने लगे। यह एक अद्भुत दृश्य देखने में आया। शास्त्रोक्त विधि से सुसज्जित आचार्य का रथ आकाश में घूमनेवाले नगर के समान देख पड़ रहा था। स्फटिक-सदृश उज्ज्वल ध्वजदण्ड से शोभित रथ के घूमते रहने से उसकी छोटी-छोटी पताकाएँ फहरा रही थीं। घोड़े हिनहिना रहे थे। उसकी गति देखकर अपने पक्ष के लोग प्रसन्न थे और शत्रुपक्ष के लोग डर
५४ रहे थे। ऐसे उत्तम रथ पर चढ़े हुए महात्मा द्रोणाचार्य शत्रुसेना का संहार करने लगे।

आठवाँ अध्याय

सञ्जय का द्रोणाचार्य के पराक्रम का वर्णन करके उनकी मृत्यु का समाचार कहना

सञ्जय ने कहा—महाराज, द्रोणाचार्य को इस प्रकार सारथी-रथ-हाथी-घोड़े आदि का संहार करते देखकर उनके प्रहार से व्यथित पाण्डवों की सेना और पाण्डवगण उनका सामना नहीं कर सके। तब राजा युधिष्ठिर ने धृष्टद्युम्न और अर्जुन से कहा—हे वीरो, तुम सावधान होकर सब ओर से घेरकर द्रोणाचार्य को रोको। अब अर्जुन, धृष्टद्युम्न और उनके अनुगामी केकयनरेश, भीमसेन, अभिमन्यु, घटोत्कच, युधिष्ठिर, नकुल, सहदेव, विराट, द्रुपद, शिखण्डी, द्रौपदी के पाँचों पुत्र, धृष्टकेतु, सात्यकि, चेकितान, युयुत्सु और अन्य राजा लोग द्रोणाचार्य के सामने जाकर अपने कुल और पराक्रम के अनुरूप अनेक अद्भुत कार्य करने लगे। रण में अपनी सेना को पाण्डवों की बाण-वर्षा से भागते देखकर महाबली द्रोणाचार्य ने लाल-लाल आँखें चढ़ाकर पाण्डवों की ओर देखा। युद्धदुर्मद द्रोणाचार्य तीव्र कोप के वश होकर रथ पर बैठे-बैठे ही बाणवर्षा से वैसे ही शत्रुसेना को सब ओर छिन्न-भिन्न करने लगे, जैसे आँधी मेघों को तितर-बितर कर डालती है। वृद्ध होने पर भी तरुणतुल्य बली और फुर्तीले द्रोणाचार्य क्रोध से उन्मत्त की तरह हाथी, घोड़े, रथ, मनुष्य

आदि की ओर इधर-उधर जा-जाकर उन्हें नष्ट करने लगे। वायु के समान वेगशाली द्रोणाचार्य के घोड़े स्वाभाविक लाल रङ्ग के थे, उस पर रक्त में सन जाने के कारण और भी लाल हो गये। इधर-उधर वेग से दौड़ने पर भी वे थके नहीं, आसानी से चारों ओर घूमने लगे। वे घोड़े अच्छी नस्ल के थे। क्रुद्ध काल के समान द्रोणाचार्य को आते देखकर पाण्डवपक्ष के योद्धा लोग इधर-उधर भागने लगे। इधर-उधर भागते, लौटते, युद्ध को देखते और ठहरते योद्धाओं का दारुण कोलाहल चारों ओर गूँज उठा। शूरों के हृदय में हर्ष और कायरों के हृदय में भय उत्पन्न करनेवाला वह कोलाहल आकाश और पृथ्वी में भर गया। द्रोणाचार्य युद्धभूमि में बारम्बार अपना नाम सुना-सुनाकर असंख्य बाणों से शत्रु-सेना को आच्छन्न करते हुए भयानक हो उठे। बली द्रोणाचार्य साक्षात् काल की तरह पाण्डवों की सेना के बीच विचर रहे थे। वे उग्र रूप धारण करके शूरों के सिर और अलङ्कार-शोभित भुजाएँ काट-काटकर गिराते हुए घोर सिंहनाद कर रहे थे। द्रोणाचार्य ने बाणों की वर्षा से शत्रुसेना के रथों को रथियों और सारथियों से ख़ाली कर दिया। द्रोणाचार्य के बाणों की वर्षा और हर्षसूचक सिंहनाद से योद्धा लोग जाड़े से पीड़ित गायों के समान काँपने लगे। द्रोणाचार्य के रथ-चक्रों की घरघराहट, प्रत्यञ्चा के शब्द और धनुष के निर्घोष से आकाश में घोर प्रतिध्वनि होने लगी। उनके धनुष से लगातार निकले हुए हज़ारों बाण सब दिशाओं में व्याप्त हो गये, और हाथी, घोड़े, रथ, पैदल आदि के ऊपर वेग से गिरने लगे। पाण्डवों और सृञ्जयों ने देखा कि धनुष और अन्य अस्त्र-शस्त्रों से प्रज्वलित अग्नि के समान द्रोणाचार्य उनकी सेना को भस्म कर रहे हैं। पाण्डव और सृञ्जयगण उनके पास पहुँचकर उन्हें रोकने की चेष्टा करने लगे। महापराक्रमी द्रोणाचार्य ने हाथियों, रथों, पैदलों और घोड़ों सहित पाण्डव-सेना का संहार करके बहुत शीघ्र पृथ्वी पर रक्त की कीच कर दी। वे ऐसे बाण बरसाने लगे और दिव्य अस्त्रों का प्रयोग करने लगे कि चारों ओर हाथी, घोड़े, रथ, पैदल आदि के ऊपर बाण ही बाण दिखाई पड़ने लगे। उनके रथ की ध्वजा बादलों में बिजली की तरह सर्वत्र घूमती दिखाई पड़ रही थी।

११

२०

अब वीर द्रोणाचार्य केकयदेश के पाँचों राजकुमारों को और पाञ्चालराज द्रुपद को अपने बाणों से पीड़ित करके हाथ में धनुष-बाण लिये युधिष्ठिर की सेना के बीच और आगे बढ़े। इतना पराक्रम और परिश्रम करके वे तनिक भी नहीं थके। उन्हें देखकर सिंहनाद करते हुए भीमसेन, अर्जुन, सात्यकि, धृष्टद्युम्न, काशिराज और शिवि, ये सब वीर उन पर बाणों की वर्षा करने लगे। द्रोणाचार्य के धनुष से निकले हुए तीक्ष्ण और सुवर्णमय विचित्र पुङ्ख से शोभित बाण हाथी, घोड़े और नौजवान योद्धा आदि के शरीरों को फाड़कर पृथ्वी में घुस जाते थे। उनके विचित्र पङ्ख रक्त में भीग जाते थे। बाणों के प्रहार से कट-कटकर गिरे हुए योद्धा, रथ, हाथी, घोड़े आदि से परिपूर्ण रणभूमि काले मेघों से व्याप्त आकाश की तरह शोभायमान हुई। महाराज! आपके पुत्रों का विभव और विजय चाहनेवाले वीर द्रोणाचार्य ने सात्यकि, भीमसेन, अर्जुन, धृष्टद्युम्न, अभिमन्यु, द्रुपद, काशिराज आदि अन्यान्य सब वीरों को अपने अद्भुत पराक्रम से पीड़ित और व्यथित किया। महाराज! ये और अन्य अनेक अद्भुत कार्य करके, प्रलयकाल के प्रचण्ड सूर्य के समान सब लोकों को तपाकर, अन्त को महात्मा द्रोणाचार्य भी इस लोक को छोड़कर स्वर्ग को सिधार गये। सुवर्णमण्डित रथ पर सवार द्रोणाचार्य इस तरह सैकड़ों-
३० हज़ारों शूरों को मारकर पाण्डवों से लड़ते-लड़ते धृष्टद्युम्न के हाथ से मारे गये। धैर्यशाली महावीर द्रोणाचार्य, समर में जमकर लड़नेवाले वीरों की एक अक्षौहिणी से भी अधिक सेना का संहार करने के बाद, परमगति को प्राप्त हुए। महाराज, अनेक अद्भुत कर्म करके क्रूरकर्मा अशुभ पाञ्चालों और पाण्डवों के हाथों महारथी द्रोणाचार्य मारे गये। युद्ध में आचार्य की मृत्यु होने पर आकाश में सिद्धगण, देवगण और पृथ्वी पर आपके पक्ष के सैनिक लोग घोर शोकसूचक कोलाहल करने लगे। सब प्राणी बारम्बार कहने लगे कि अहो, धिक्कार है! उनके इस शब्द की प्रतिध्वनि आकाश, अन्तरिक्ष, पृथ्वी और सब दिशाओं में गूँज उठी। देवों, पितरों और आचार्य के भाई-बन्धुओं ने देखा कि महारथी द्रोणाचार्य पृथ्वी पर मरे पड़े हैं। पाण्डव लोग इस तरह जय प्राप्त करके आनन्द से सिंहनाद करने और शङ्ख
३६ बजाने लगे। उनके सिंहनाद से पृथ्वी काँपने लगी।

नवाँ अध्याय

धृतराष्ट्र का शोकाकुल होना

धृतराष्ट्र ने कहा—हे सञ्जय, द्रोणाचार्य तो सब शस्त्रधारियों में श्रेष्ठ और सब शस्त्रों के युद्ध में निपुण थे। उन्हें जिस समय पाण्डवों और सृञ्जयों ने मिलकर मारा उस समय वे क्या कर रहे थे? उनका रथ टूट गया था या धनुष कट गया था, अथवा वे असावधान थे,

जो उनकी मृत्यु हुई? शत्रुओं के लिए दुर्द्धर्ष, सुवर्णपुङ्ख असंख्य तीक्ष्ण बाण बरसानेवाले, फुर्तीले, कृतविद्य, विचित्र युद्ध में अद्वितीय, बहुत दूर तक बाण को पहुँचा सकनेवाले, दिव्य अस्त्रों के ज्ञाता, अस्त्रयुद्ध के पारगामी, जितेन्द्रिय, द्विजश्रेष्ठ द्रोणाचार्य को धृष्टद्युम्न कैसे मार सका ? मेरी समझ में पौरुष की अपेक्षा दैव ही प्रबल है। ऐसा न होता तो रण में दारुण कर्म करनेवाले, सावधान, महारथी द्रोण के हाथ में धनुष-बाण रहने पर भी धृष्टद्युम्न उन्हें कैसे मार डालता ? चतुर्विध अस्त्रों के जाननेवाले, शस्त्रधारियों के आचार्य द्रोण की मृत्यु होना तुम बता रहे हो! सुवर्णमय और व्याघ्रचर्ममण्डित रथ पर चढ़नेवाले द्रोणाचार्य के मारे जाने की ख़बर पाकर मेरा शोक किसी तरह शान्त नहीं होता। हे सञ्जय, यह निश्चय है कि पराये दुःख को सुनकर उस दुःख से किसी के प्राण नहीं निकलते। तभी तो मन्दमति मैं, द्रोणाचार्य की मृत्यु का समाचार सुनकर भी, अब तक जीवित हूँ। इस समय मुझे दैव ही प्रधान और प्रबल जान पड़ता है; पौरुष निरर्थक है। हाय! मेरा यह हृदय वज्र का बना हुआ है जो द्रोण की मृत्यु सुनकर भी इसके सौ टुकड़े नहीं हो जाते! गुण सीखने की इच्छा से ब्राह्म और दैव अस्त्र सीखने के लिए ब्राह्मण- १० कुमार और राजपुत्र जिनकी सेवा करते थे वही द्रोणाचार्य आज मृत्यु के वश कैसे हुए? हे सञ्जय! समुद्र का सूख जाना, सुमेरु का जड़ से उखड़ना, सूर्य का पृथ्वी पर गिर पड़ना और द्रोणाचार्य का मरना समान है। द्रोणाचार्य की मृत्यु मेरे लिए असह्य हो रही है।

दुष्टों का दमन और धर्मात्मा पुरुषों की रक्षा करनेवाले शत्रुदमन द्रोणाचार्य ने दुर्मति दुर्योधन के लिए ही अपने प्राण दिये। मेरे दुर्मति पुत्रों की जय की आशा जिन पर निर्भर थी, जो बुद्धि में बृहस्पति और शुक्र के समान थे, वे द्रोणाचार्य किस तरह मारे गये? द्रोणाचार्य के रथ के घोड़े सुवर्णमय जाल ओढ़े रहते थे; वे घोड़े सब प्रकार के शस्त्रों के प्रहार को बचा जाते थे और संग्राम के समय दृढ़ता से डटे रहते थे; वे शङ्ख-दुन्दुभि-नाद, हाथियों की चिंघार और प्रत्यञ्चाओं के घोर घोष को सुनकर भी भड़कते नहीं थे; वे अनायास शस्त्रों और बाणों की वर्षा को सह लेते थे; वे बहुत परिश्रम करने पर भी थकते या हाँफते नहीं थे और शत्रुओं की हार की सूचना देते थे; वे लाल रङ्ग के, ऊँचे-पूरे, हवा के समान वेग से चलनेवाले, शान्त, सुशिक्षित, कभी विह्वल न होनेवाले सिन्धु देश के घोड़े क्या पराजित हो गये थे? सुवर्णभूषित और नरवीर द्रोणाचार्य के द्वारा शोभित रथ में जुते हुए वे घोड़े पाण्डवों की सेना में घुसकर उसके पार क्यों नहीं पहुँच सके? सत्यपराक्रमी द्रोणाचार्य ने सुवर्णमण्डित श्रेष्ठ रथ पर बैठकर युद्धभूमि में २० क्या-क्या किया था? हे सञ्जय! सब लोकों के धनुर्द्धर वीरों ने जिनसे अस्त्र-शस्त्र-विद्या सीखी थी, उन सत्यसन्ध बली द्रोणाचार्य ने किस तरह युद्ध किया था? उग्रधन्वा इन्द्रसदृश धनुर्द्धर-श्रेष्ठ द्रोणाचार्य के सामने कौन-कौन योद्धा युद्ध करने आये थे? सुवर्णमण्डित रथ पर विराजमान उन महाबली द्रोणाचार्य को दिव्य अस्त्र छोड़ते देखकर पाण्डव क्या भाग खड़े हुए थे? अथवा

सेनापति धृष्टद्युम्न, अर्जुन आदि भाई और सब सेना को साथ लिये हुए धर्मराज ने चारों ओर से द्रोणाचार्य को घेर लिया था? अवश्य अर्जुन ने अपने तीक्ष्ण बाणों से और राजाओं को द्रोणाचार्य के पास सहायता के लिए नहीं पहुँचने दिया होगा, तभी पापकर्मा धृष्टद्युम्न द्रोणाचार्य को मार सका। अर्जुन के द्वारा सुरक्षित तेजस्वी रौद्ररूप धृष्टद्युम्न के सिवा और कोई मुझे द्रोणाचार्य को मारनेवाला नहीं देख पड़ता। मैं समझता हूँ कि जैसे चींटियाँ साँप को घेरकर व्याकुल कर देती हैं वैसे ही नराधम पाञ्चालों की सेना तथा केकय, चेदि, करूष, मत्स्य और अन्यान्य देशों के क्षुद्र राजाओं के द्वारा घेरे और व्याकुल किये गये दुष्कर कर्म करनेवाले आचार्य को धृष्टद्युम्न ने मारा होगा। जैसे नदियों में सागर श्रेष्ठ है वैसे ही द्रोणाचार्य सब ब्राह्मणों में श्रेष्ठ थे। उन्होंने सब वेद, वेदाङ्ग और इतिहास-पुराण पढ़े थे। वे ब्राह्मण भी थे ३० और क्षत्रियधर्म के अनुयायी भी थे। वे शस्त्र और शास्त्र दोनों में पारङ्गत थे। वे वृद्ध ब्राह्मण शस्त्र के द्वारा कैसे मारे गये? मैंने क्रोधवश सदा पाण्डवों को क्लेश पहुँचाया; किन्तु द्रोणाचार्य ने क्लेश के अयोग्य पाण्डवों को सदा स्नेह की दृष्टि से देखा, और अर्जुन को सबसे बढ़कर युद्ध-विद्या सिखाई। उसी का यह फल उन्हें मिला। सब धनुर्द्धर योद्धा जिनके शिष्य हैं, जिनकी दी हुई शिक्षा से अपनी जीविका चलाते हैं, उन द्रोणाचार्य को राज्यश्री पाने की इच्छा रखनेवाले पाण्डवों ने कैसे मारा? द्रोणाचार्य सत्यवादी, सत्यप्रतिज्ञ और पुण्यात्मा थे। वे महासत्त्व, महाबली और देवताओं में जैसे इन्द्र श्रेष्ठ हैं वैसे ही वीर पुरुषों में श्रेष्ठ थे। उन फुर्तीले, दृढ़धन्वा, शत्रुमर्दन, बलवान् द्रोणाचार्य को, क्षुद्र मछलियाँ जैसे तिमि नामक महामत्स्य को मार डालें वैसे ही, पाण्डवों ने कैसे मार डाला? द्रोणाचार्य के सामने पहुँचकर विजय की इच्छा रखनेवाला कोई भी व्यक्ति जीवित नहीं बच सकता था। वेदपाठियों के वेदपाठ का शब्द और धनुर्विद्या सीखनेवालों के धनुष का शब्द सदा द्रोणाचार्य के यहाँ सुनाई पड़ता था। अर्थात् शास्त्र पढ़नेवाले और धनुर्विद्या सीखनेवाले विद्यार्थी सदा उनके पास बने रहते थे। कभी दीन न होनेवाले, पुरुषसिंह, श्रीयुक्त, अपराजित और धनुर्द्धरों के आचार्य द्रोण को रथियों ने किस तरह मार डाला? जिनका यश और बल दुर्द्धर्ष था, उन सिंह और गजराज के सदृश पराक्रमी द्रोणाचार्य को सब नरेन्द्रों के सामने धृष्टद्युम्न ने कैसे मारा? हे सञ्जय! दुर्गम गति से जानेवाले किन वीरों ने द्रोणाचार्य के आगे रहकर युद्ध किया था? कौन वीर योद्धा द्रोणाचार्य के पास रहकर उनकी रक्षा कर रहे थे और कौन वीर उनके पश्चाद्भाग की रक्षा करते थे? महात्मा द्रोणाचार्य के रथ के दहिने पहिये और बाँयें पहिये की रक्षा करनेवाले कौन वीर थे? संग्राम के समय कौन लोग द्रोणाचार्य के आगे ४० स्थित थे? किन वीरों ने द्रोणाचार्य से युद्ध करके वीरगति प्राप्त की? किन वीरों ने परम धैर्य के साथ आचार्य का सामना किया था? मन्दमति क़ायर क्षत्रिय, जो उनके सहायक

और रक्षक थे, उन्हें छोड़कर भाग तो नहीं गये थे? उसी समय में तो कहीं उन्हें अकेले पाकर शत्रुओं ने नहीं मार डाला? महाशूर द्रोणाचार्य कभी विकट आपत्ति या सङ्कट के समय भी शत्रु के डर से युद्ध में पीठ नहीं दिखाते थे। उन्हें शत्रुओं ने किस तरह मारा? घोर सङ्कट और विपत्ति के आ पड़ने पर भी आर्य पुरुष का कर्तव्य है कि यथाशक्ति अपना पराक्रम दिखलावे, डरे और भागे नहीं। महात्मा द्रोणाचार्य में यह बात थी। हे सञ्जय! शोक के मारे मैं घबरा रहा हूँ, मुझे मूर्च्छा आ रही है। तुम अभी चुप रहो। जब मेरा जी ठिकाने होगा तब मैं तुमसे सब वृत्तान्त पूछूँगा। ४५

दसवाँ अध्याय

धृतराष्ट्र का सचेत होकर फिर सञ्जय से द्रोण के मारे जाने का वृत्तान्त पूछना

वैशम्पायन कहते हैं—हे जनमेजय! महाराज धृतराष्ट्र सञ्जय से इस तरह पूछते-पूछते हार्दिक शोक से व्याकुल और अपने पुत्रों की जय से निराश हो, अचेत होकर, पृथ्वी पर गिर पड़े। तब अचेत पड़े हुए राजा धृतराष्ट्र को दासियाँ हवा करने लगीं, सुगन्धित शीतल जल छिड़कने लगीं। कुरुकुल की स्त्रियों ने बूढ़े राजा को अचेत होकर गिरते देखकर चारों ओर से घेर लिया। उन्होंने उन्हें हाथों से छूकर धीरे-धीरे पृथ्वी से उठाकर सिंहासन पर बिठाया। उन स्त्रियों की आँखों में आँसू भर आये। वे चारों ओर से हवा करने और उनकी सेवा करने लगीं। कुछ समय के बाद धृतराष्ट्र को होश आया किन्तु उनका शरीर उस समय भी काँप रहा था। उन्होंने फिर सञ्जय से सब वृत्तान्त पूछा।

धृतराष्ट्र ने कहा—हे सञ्जय! जैसे उदय हो रहे सूर्य अपने तेज से अँधेरे को नष्ट कर देते हैं वैसे ही शत्रुसेना को नष्ट करनेवाले द्रोणाचार्य के पास आते हुए राजा युधिष्ठिर का सामना किस वीर ने किया था? जैसे अपने विपक्षी यूथप हाथियों के द्वारा न जीता जा सकनेवाला, वेग से चलनेवाला, मस्त गजराज अन्य गजराज को हथिनी के समागम से प्रसन्न देखकर कुपित होकर उस पर आक्रमण करने के लिए चलता है, वैसे ही वीरश्रेष्ठ युधिष्ठिर ने शत्रुसेना में प्रवेश करके रण में वीरों को मारा होगा। महात्मा युधिष्ठिर अकेले ही अपनी दारुण क्रोधदृष्टि से दुर्योधन की सेना को भस्म कर सकते हैं। युधिष्ठिर महावीर, धीर, सत्य-वादी, जय की इच्छा रखनेवाले और अतुल पराक्रमी धनुर्द्धर हैं; वे दृष्टि से ही शत्रु को नष्ट करने की शक्ति रखनेवाले, जितेन्द्रिय, जगन्मान्य, दुर्द्धर्ष और अजातशत्रु हैं। उनसे लड़ने के लिए मेरे पक्ष के कौन-कौन वीर अग्रसर हुए थे? जो बड़े वेग से एकाएक द्रोणाचार्य के सामने गये होंगे, जो रण में शत्रुसेना के बीच बड़े-बड़े अद्भुत कर्म करते हैं, उन महाकाय, महान् १०

उत्साही, दस हज़ार हाथियों का बल रखनेवाले भीमसेन ने जब द्रोणाचार्य पर आक्रमण किया तब उनको मेरे पक्ष के किन-किन वीरों ने रोका ?

मेघ-सदृश, परम पराक्रमी अर्जुन जब, वज्रवर्षा करते हुए इन्द्र जैसे जल बरसाते हैं वैसे, बाण बरसाते हुए तल-घोष से और रथ के घर्घरनाद से सब दिशाओं को पूर्ण करते हुए सामने आये थे तब हमारे पक्ष के वीरों की क्या दशा हुई थी ? गाण्डीव धनुष धारण करने-वाले अर्जुन जब मेघ के समान गृध्रपत्रयुक्त बाण बरसाते हुए दुर्योधन आदि के आगे आये तब, हमारी सेना की क्या दशा हुई ? अर्जुन का धनुष बिजली की तरह चमक रहा होगा। रथ घटा के समान घिरे हुए होंगे। रथ का घर्घर शब्द ही मेघगर्जन सा प्रतीत हो रहा होगा। बाणों का शब्द ही बिजली की कड़कड़ाहट जान पड़ती होगी। मन और मनोरथ के समान वेग से वे सर्वत्र विचर रहे होंगे। क्रोध से मेघ को भी मात करनेवाले अर्जुन ने मर्मभेदी बाणों से जल की तरह रक्त बहाकर सब दिशाओं को प्लावित कर दिया होगा। भयङ्कर सिंहनाद करते हुए अर्जुन आकाश को बाणों से व्याप्त करते हुए जिस समय सामने आये होंगे उस समय २१ उन्हें देखकर हमारे पक्ष के राजाओं का क्या हाल हुआ होगा ? जब भयानक कर्म करते हुए अर्जुन तुम लोगों के सामने आये थे तब गाण्डीव धनुष का शब्द सुनकर ही तो हमारी सेना नहीं भाग खड़ी हुई थी ? हवा जैसे मेघों को और सेंठे के वन को छिन्न-भिन्न करती है, वैसे ही अर्जुन ने तुम लोगों का वध तो नहीं किया ? जिन्हें सेना के आगे स्थित सुनकर ही योधाओं की छाती दहल जाती है, उन गाण्डीव-धनुषधारी अर्जुन का सामना कौन कर सकता है ? सैनिकों को विचलित, कम्पित और वीरों को भयविह्वल करनेवाले घोर संग्राम में किन वीरों ने द्रोणाचार्य का साथ नहीं छोड़ा, और कौन कायर डर के मारे रण से भाग खड़े हुए ? किन लोगों ने रण में प्राण त्यागकर प्रशंसनीय वीर-गति पाई ? मैं समझता हूँ कि समर में देवताओं को भी परास्त कर सकनेवाले अर्जुन के तेज, घोड़ों के वेग और वर्षाकाल की घनघटा के घोर गर्जन-सदृश गाण्डीव-घोष को मेरे सैनिक कभी नहीं सह सकते—अर्जुन का सामना नहीं कर सकते। मतलब यह कि जनार्दन जहाँ रथ हाँकनेवाले सारथी और अर्जुन रथी हैं, उस पक्ष को देवता भी नहीं हरा सकते।

जिस समय सुकुमार, युवा, शूर, दर्शनीय, बुद्धिमान्, युद्धनिपुण, धीर और सत्यपराक्रमी नकुल महासिंहनाद से सैनिकों को विह्वल करते हुए द्रोणाचार्य के पास पहुँचे थे उस समय ३० किन वीरों ने उनका सामना किया था ? सफ़ेद घोड़ों से युक्त रथ पर बैठनेवाले, समर में दुर्जय, आर्यव्रती, ह्रीमान्, अपराजित सहदेव विषैले नाग के समान क्रोध से फुफकारते हुए, शत्रुओं को पीड़ित करने के लिए, जब रणाङ्गण में आये थे तब किन-किन वीरों ने उनका सामना किया था ? जयद्रथ की विशाल सेना को दल-मलकर कमनीय, सर्वाङ्गसुन्दरी, भोजनन्दिनी

रानी को हर लानेवाले, अखण्ड ब्रह्मचर्य, सत्य, धैर्य और शौर्य को धारण करनेवाले, महाबली, सत्यकर्मा, उत्साही, अपराजित, संग्राम में वासुदेव-सदृश, वासुदेव के अनुज, अर्जुन की दी हुई शिक्षा पाकर अस्त्रादि के प्रयोग में औरों से श्रेष्ठ और अर्जुन के समकक्ष सात्यकि जब द्रोणाचार्य के पास पहुँचे थे तब किन-किन वीरों ने उन्हें रोका था? वृष्णिवंश में श्रेष्ठ, सब धनुर्द्धरों में अग्रगण्य, अस्त्र-शस्त्र आदि के प्रयोग में निपुण, यश और अस्त्रविद्या में परशुराम के समान, और जैसे श्रीकृष्ण त्रिभुवन के आश्रयस्वरूप हैं वैसे ही उत्कृष्ट अस्त्रों के जानकार, प्रधान यादव सात्यकि सत्य, धैर्य, बुद्धि, और वीरता के आधार हैं। उनके वेग को किन-किन वीरों ने रोका था? पाञ्चालों में श्रेष्ठ, कुलीनों के प्रेमपात्र, सत्कर्मनिरत, अर्जुन के हितचिन्तक, मेरे अनिष्ट के लिए उत्पन्न, यम कुबेर सूर्य इन्द्र चन्द्र वरुण के समान प्रसिद्ध महारथी उत्तमौजा जिस समय द्रोण के साथ प्राणपण से युद्ध करने को तैयार हुए थे उस समय किन-किन वीरों ने उन्हें रोका था? जो महावीर धृष्टकेतु अकेले ही पाण्डवों की सहायता के लिए चेदि देश से आकर युद्ध में शामिल हुए हैं वे जब द्रोण पर आक्रमण करने चले थे तब उन्हें किसने रोका था? जिन वीर ने गिरिद्वार में भागते हुए दुर्द्धर्ष राजपुत्र को मारा था, उन केतुमान् को द्रोण के पास आने से किसने रोका था? ४२

जो पुरुषसिंह स्त्री और पुरुष दोनों के गुण-दोषों को जानते हैं, जो महात्मा भीष्म की मृत्यु का कारण हैं, वे उत्साही राजपुत्र शिखण्डी जब प्रसन्नतापूर्वक द्रोणाचार्य के सामने आये थे तब उन्हें किसने रोका था? जो अर्जुन से भी अधिक गुणी हैं, जो अस्त्रविद्या सत्य और ब्रह्मचर्य के अखण्ड आधार हैं, जो वीरता में श्रीकृष्ण के सदृश, बल में अर्जुन के समान, तेज में आदित्य के तुल्य और बुद्धि में बृहस्पति के बराबर हैं, वे मुँह फैलाकर आते हुए काल के समान वीरवर अभिमन्यु जब द्रोणाचार्य के सामने आये थे तब किन वीरों ने उनका सामना किया था? जिस समय वे तरुण प्रज्ञ युवा अभिमन्यु द्रोण पर आक्रमण करने वेग से चले थे उस समय तुम लोगों के मन की क्या दशा हुई थी? जैसे सब नद-नदी आदि समुद्र की ओर वेग से जाते हैं वैसे ही द्रौपदी के पाँचों पुत्रों ने जब द्रोणाचार्य पर हमला किया था, तब उन्हें किन वीरों ने रोका था? बाल्यावस्था में बारह वर्ष तक खेल-कूद छोड़कर, कठोर ब्रह्मचर्य धारण करके, भीष्म पितामह के पास रहकर युद्धकला सीखनेवाले धृष्टद्युम्न के चारों पुत्र—क्षत्रञ्जय, क्षत्रदेव, क्षत्रवर्मा और मानद—जब युद्धभूमि में देख पड़े थे तब उन्हें किन वीरों ने रोका था? जिन्हें वृष्णिवंश के वीर यादव सौ वीरों से भी अधिक बलवान् और पराक्रमी समझते हैं, उन महाबली चेकितान को किन वीरों ने द्रोण की ओर बढ़ने से रोका था? कलिङ्गकुमारी को हरण करनेवाले साहसी अनाधृष्टि वार्धक्षेमि को आचार्य पर हमला करने से किसने रोका था? धर्मात्मा, सत्यनिष्ठ, लाल ध्वजा और लाल शस्त्रों से शोभित, लाल ५०

कवच धारण करनेवाले, देखने में बीरबहूटी के समान लाल, पाण्डवों के मौसेरे भाई, पाण्डवों की जय चाहनेवाले, पाँचों भाई केकय-राजकुमार जब द्रोणाचार्य को मारने के लिए आगे बढ़े थे तब उन्हें किन-किन वीरों ने रोका था ? वारणावत में क्रुद्ध और मारने को तत्पर होकर छः महीने तक युद्ध करके भी राजा लोग जिन्हें परास्त नहीं कर सके, जिन्होंने वाराणसीपुरी में स्त्री-लोभी महारथी काशिराज के पुत्र को भल्ल के द्वारा रथ से नीचे मार गिराया था, उन
६० सत्यपरायण युयुत्सु को द्रोणाचार्य के ऊपर आक्रमण करते समय किन-किन वीरों ने रोका था ? महाधनुर्द्धर, पाण्डवों के प्रधान मन्त्री और सेनापति, दुर्योधन के परम शत्रु और द्रोणवध के लिए ही उत्पन्न, धृष्टद्युम्न जिस समय मेरे सैनिकों को मारते और छिन्न-भिन्न करते हुए द्रोणाचार्य के सामने पहुँचे थे उस समय उनको किन-किन वीरों ने रोका था ? द्रुपदराज की गोद में पले और बढ़े हुए और अस्त्र-शस्त्रों के द्वारा सुरक्षित शिखण्डी जब द्रोणाचार्य पर क्रोध करके झपटे थे तब उन्हें किन-किन वीरों ने रोका था ?

हे सञ्जय ! जिन्होंने चर्म-सदृश इस भूमण्डल को घेर रक्खा था, जिन शत्रुपक्ष के वीरों को मारनेवाले महारथी के रथ से भयानक शब्द उत्पन्न होता है, जिन्होंने स्वादिष्ठ उत्तम खाने-पीने के पदार्थ खिला-पिलाकर और यथेष्ट दक्षिणा देकर बिना किसी प्रकार के विघ्न के दस अश्वमेध यज्ञ किये हैं, जो पुत्र के समान अपनी प्रजा का पालन करते हैं, जिन्होंने यज्ञों में अगणित गोदान किये हैं, जिनके बराबर गोदान कभी कोई नहीं कर सका, और जिनका यह दुष्कर कार्य पूरा होने पर देवताओं ने जिनका नाम लेकर कहा था कि "इस जगत् में उशीनर-तनय के समान महात्मा कोई नहीं उत्पन्न हुआ, न होगा और न इस समय है", उन उशीनर के वंशधर शैव्य का सामना किसने किया था ? राजा विराट की रथ-सेना जब, मुँह फैलाये हुए
७१ काल की तरह, आचार्य पर आक्रमण करने आई थी तब उसे किन वीरों ने रोका था? जो महापराक्रमी मायावी राक्षस भीमसेन से तत्काल उत्पन्न हुआ था, जिसे मैं बहुत ही डरता हूँ, जो पाण्डवों की जय चाहनेवाला और मेरे पुत्रों का कण्टक है, वह घटोत्कच जब द्रोणाचार्य के सामने आया था तब उसको किन-किन वीरों ने रोका था ?

हे सञ्जय ! ये सब और अन्यान्य वीरगण जिनके लिए प्राणपण से रक्षा कर रहे हैं, और पुरुषोत्तम श्रीकृष्ण जिनके सहायक और हितचिन्तक हैं, वे पाण्डव किस तरह परास्त हो सकते हैं। श्रीकृष्ण लोकगुरु, लोकनाथ, सनातन पुरुष, समर में मानवों को शरण देनेवाले, दिव्यरूप और प्रभु हैं। पण्डित लोग उनके सम्पूर्ण दिव्य कर्मों का वर्णन करते हैं। मैं भी अपने
७७ चित्त को शान्त करने के लिए उन श्रीकृष्ण के गुणों का कीर्तन करूँगा।

इन्होंने वृषभ (वृषरूपधारी असुर)......को मारा है।—२१८७

ग्यारहवाँ अध्याय

धृतराष्ट्रकृत श्रीकृष्ण-गुण-वर्णन

धृतराष्ट्र बोले—हे सञ्जय ! गोविन्द के अलौकिक कर्म सुनो। इन महात्मा ने लड़कपन में ही गोपमण्डली में पलकर अपने बाहुबल का परिचय त्रिभुवन भर में दिया था। इन्होंने उच्चैःश्रवा (इन्द्र के घोड़े) के समान बली और हवा के समान तेज़ चलनेवाले यमुनावन-वासी केशी दैत्य का दमन किया। [श्रीकृष्ण ने पूतना, शकटासुर, धेनुक, महाबली अरिष्टासुर आदि को मारा है। महाबाहु वासुदेव ने गोवर्द्धन गिरि उठाकर शिलावर्षा से व्रज को बचाया और दावानल भी बुझाया है।] इन्होंने ऋषभ (वृषरूपधारी असुर), प्रलम्बासुर, नरकासुर, जम्भ, महासुर पीठ और यमतुल्य मुर दानव को मारा है। निहत्थे श्रीकृष्ण ने पराक्रम के साथ रण में कंस को, जिसका सहायक महाबली अजेय जरासन्ध था, उसके साथियों समेत मार डाला है। महापराक्रमी, अक्षौहिणीपति, भोजराज के मध्यस्थ, कंस के भाई, शूरसेन देश के राजा, सुनामा को भी बलदेव सहित श्रीकृष्ण ने युद्ध में मारा और उसकी सेना को नष्ट-भ्रष्ट कर दिया। महाक्रोधी ब्रह्मर्षि दुर्वासा को, सेवा करके, अपनी पत्नी सहित श्रीकृष्ण ने एक समय प्रसन्न किया और उनसे अमोघ वर प्राप्त किये। श्रीकृष्ण स्वयंवर में गान्धारराज की कन्या को हर लाये, सब राजाओं को वहाँ हराया और उस कन्या के साथ उन्होंने व्याह किया। राजा लोग यह नहीं सह सके कि राजकन्या उन्हें न मिलकर श्रीकृष्ण को मिले। १० असील घोड़ा जैसे चाबुक की चोट नहीं सह सकता, वैसे ही वे उसे न सहकर विवाह के अवसर पर बिगड़ खड़े हुए। श्रीकृष्ण ने बाण-रूप कोड़ों की मार से उनकी चमड़ी उधेड़ दी। जनार्दन श्रीकृष्ण ने अनेक अक्षौहिणी सेना के स्वामी महाबाहु जरासन्ध को कौशल से भीमसेन के हाथों द्वन्द्वयुद्ध में मरवा डाला। धर्मपुत्र युधिष्ठिर के राजसूय यज्ञ के अवसर पर राजसेना के अगुआ महाबली चेदिराज शिशुपाल ने सबसे पहले श्रीकृष्ण को अर्घ्य (पूजा) मिलते देखकर उसका विरोध किया तब, इसी कारण, श्रीकृष्ण ने कुपित होकर पशु की तरह उसे तुरन्त मार डाला। श्रीकृष्ण ने शाल्व के पराक्रम से सुरक्षित दुर्द्धर्ष आकाशगामी मायामय सौभ नामक दैत्यपुर को पराक्रम से तोड़-फोड़कर समुद्र में गिरा दिया। उन्होंने अङ्ग, वङ्ग, कलिङ्ग, मगध, काशी, कोसल, वात्स्य, गार्ग्य, करूष, पौण्ड्र, अवन्ती, दाक्षिणात्य, पहाड़ी, दाशेरक, काश्मीर, औरसिक, पिशाच, मुद्गल, काम्बोज, वाटधान, चोल, पाण्ड्य, त्रिगर्त, मालव, दुर्जय, दरद, खश, शक और अन्य अनेक देशों और उनके राजाओं को जीता। अनुचरों सहित आये हुए महाशक्तिशाली कालयवन को उन्होंने अपने बाहुबल से मार भगाया। उन्होंने विकट जल-जन्तुओं से पूर्ण समुद्र के भीतर प्रवेश किया, और जल के भीतर जाकर वरुण देव को अपने वश में कर लिया।

उन माधव ने पाताल-तलवासी पञ्चजन दानव को युद्ध में मारकर दिव्य पाञ्चजन्य शङ्ख उससे
२० प्राप्त किया। महात्मा जनार्दन ने अर्जुन के साथ खाण्डव वन में अग्नि को तृप्त किया, और उनसे आग्नेयास्त्र तथा दुर्द्धर्ष चक्र प्राप्त किया। महावीर श्रीकृष्ण गरुड़ पर बैठकर अमरावती पुरी गये, और अमरावती-निवासी देवगण को भयविह्वल करके इन्द्र-भवन से पारिजात का वृक्ष उखाड़ लाये। इन्द्र उनके पराक्रम को अच्छी तरह जानते थे, इसी से लाचार होकर उन्हें सब सहना पड़ा।

हे सञ्जय! मैंने कभी यह नहीं सुना कि ऐसा कोई राजा है जिसे श्रीकृष्ण ने नहीं हराया, या नीचा नहीं दिखाया। उन कमल-लोचन महातेजस्वी श्रीकृष्ण ने सभा के बीच जैसा अद्भुत काम कर दिखाया था वैसा काम उनके सिवा और कौन कर सकता है? भक्ति से विशुद्धात्मा होकर मैंने परमेश्वर श्रीकृष्ण को देखा है। इसी से उनके सब कर्म मुझे प्रत्यक्ष से दिखाई पड़ रहे हैं। पराक्रमी बुद्धिमान् वासुदेव के कार्य अनन्त हैं, उनकी गिनती नहीं की जा सकती। महात्मा केशव की आज्ञा से गद, साम्ब, प्रद्युम्न, विदूरथ, अवगाह, अनिरुद्ध, चारुदेष्ण, सारण, उल्मुक, निशठ, पराक्रमी झिल्लीबभ्रु, पृथु, विपृथु, शमीक और अरिमेजय आदि अनेकानेक योद्धा वृष्णिवीर—उनके बुलाने पर—रण में पाण्डवों का ही पक्ष लेंगे। तब अवश्य ही मेरे सैनिक प्राणसंशय और सङ्कट में पड़ेंगे। जिस ओर महात्मा वासुदेव होंगे उसी ओर दस हज़ार हाथियों का बल रखनेवाले पराक्रमी कैलास पर्वत
३१ सदृश वनमाली बलदेव भी अवश्य होंगे।

हे सञ्जय! द्विजगण जिन्हें सबका पिता बतलाते हैं वे जनार्दन कृष्ण क्या पाण्डवों का पक्ष लेकर युद्ध करेंगे? वे जब पाण्डवों के हित की इच्छा से युद्ध के लिए तैयार होंगे तब कोई उनका सामना नहीं कर सकेगा। यदि कौरवगण पाण्डवों को जीत भी लें तो महाबाहु वासुदेव पाण्डवों के लिए शस्त्र धारण करके कौरवों को और उनके पक्ष के सब राजाओं को मारकर कुन्ती को सम्पूर्ण राज्य दे देंगे। जिस ओर श्रीकृष्ण सारथी हैं और अर्जुन योद्धा हैं, उसके सामने युद्ध में कौन ठहर सकेगा? अतएव, हे सञ्जय! मैं किसी तरह कौरवों के लिए कल्याण की प्राप्ति नहीं देखता। अब जिस तरह युद्ध हुआ, वह सब मैं विस्तार के साथ सुनना चाहता हूँ, मुझसे कहो।

अर्जुन श्रीकृष्ण की और श्रीकृष्ण अर्जुन की आत्मा हैं। अर्जुन में विजय और श्रीकृष्ण में शाश्वती कीर्ति सदा रहती है। हे सञ्जय! अर्जुन को इस त्रिभुवन में कोई योद्धा परास्त नहीं कर सकता। श्रीकृष्ण भी सर्वगुणालङ्कृत और अलौकिक शक्तिशाली हैं। दुष्ट दुर्योधन दैव-विडम्बना से मोहित और निकटवर्त्ती मृत्यु के वशीभूत है, इसी लिए अर्जुन और श्रीकृष्ण के
४० प्रभाव और पौरुष को नहीं जानता। ये दोनों महात्मा नर-नारायण का अवतार हैं। दोनों

एक-प्राण दो-देह हैं। एक के ही दो रूप हैं। उनका पराभव असम्भव है, उसकी कल्पना भी नहीं की जा सकती। ये दोनों यशस्वी महात्मा चाहें तो हमारे पक्ष की सारी सेना को अकेले ही नष्ट कर सकते हैं। किन्तु मनुष्ययोनि में उत्पन्न होने के कारण ही मनुष्य-धर्म का पालन करते हुए वैसा नहीं करते। भीष्म और द्रोणाचार्य की मृत्यु ऐसी घटना है, जिसे युग का बदल जाना समझना चाहिए। इससे यह सिद्ध हो गया कि ब्रह्मचर्य, वेदपाठ, अथवा शस्त्र-शिक्षा आदि किसी के द्वारा मनुष्य मृत्यु से नहीं बच सकता। मृत्यु अनिवार्य है।

हे सञ्जय! युद्धदुर्मद लोकपूजित अस्त्रनिपुण महावीर भीष्म और द्रोणाचार्य की युद्ध में मृत्यु सुनकर भी जो मैं जीवित हूँ, यही आश्चर्य है! पहले युधिष्ठिर की राजलक्ष्मी और विभव देखकर मुझे बड़ी ईर्ष्या हुई थी। अब भीष्म और द्रोण की मृत्यु हो जाने के कारण मुझे युधिष्ठिर के आश्रित होकर रहना पड़ेगा। मेरी ही बदौलत कुरुवंश का यह विनाश हुआ है। हे सूत! जिन लोगों की मृत्यु आ गई है, उनके लिए तिनके वज्र बन जाते हैं। जिनके क्रोध से संग्राम में महावीर भीष्म और द्रोणाचार्य की मृत्यु हुई है, वे युधिष्ठिर अवश्य ही अनन्त ऐश्वर्य के अधिकारी होंगे। अतएव धर्मपुत्र युधिष्ठिर के ही पक्ष में धर्म है; मेरे पुत्रों की ओर से वह बिलकुल ही विमुख है। यह पापात्मा क्रूर काल सबका नाश किये बिना नहीं रहेगा। हे तात! मनस्वी लोग अपने मन में जो-जो मनोरथ करते हैं उन्हें प्रबल दैव मिथ्या कर देता है, उनकी सोची हुई बात नहीं होने पाती। जो यह दुश्चिन्त्य विषय उपस्थित हुआ है, इसके परिहार का उपाय नहीं है। ख़ैर, अब तुम युद्ध का वृत्तान्त वर्णन करो। ५१

बारहवाँ अध्याय

दुर्योधन का द्रोणाचार्य से युधिष्ठिर को जीते पकड़ लाने का वरदान माँगना

सञ्जय ने कहा—महाराज! मैंने सब हाल अपनी आँखों देखा है। जिस तरह पाण्डवों और सृञ्जयों के हाथों द्रोणाचार्य की मृत्यु हुई है, सो सब मैं आपके आगे विस्तारपूर्वक कहता हूँ।

महारथी भारद्वाज द्रोणाचार्य जब सेनापति बनाये गये तब सब सेना के बीच में खड़े होकर उन्होंने दुर्योधन से कहा—राजन्! तुमने कौरवश्रेष्ठ भीष्म पितामह के अस्त्रत्याग के उपरान्त ही इस समय मुझे सेनापति का पद देकर जो मेरा सत्कार किया है, उसके अनुरूप फल अवश्य तुम पाओगे। हे भारत! बतलाओ, तुम्हारी क्या इच्छा है? मैं कौन सा काम करूँ, जिससे तुम्हारी इच्छा पूरी हो?

तब राजा दुर्योधन ने कर्ण और दुःशासन आदि मन्त्रियों और स्वजनों से सलाह करके विजयी दुर्द्धर्ष द्रोणाचार्य से कहा—हे महामते! यदि आप प्रसन्न होकर मुझे वरदान देते हैं तो मैं यह माँगता हूँ कि आप श्रेष्ठ रथी युधिष्ठिर को जीते ही पकड़कर मेरे सामने लाइए।

यह सुनकर द्रोणाचार्य ने सारी सेना को हर्षित और उत्साहित करने के लिए दुर्योधन से कहा—राजन्! राजा युधिष्ठिर धन्य हैं; क्योंकि तुमने उनकी मृत्यु का वर न माँगकर जीते ही पकड़ लाने का वर माँगा। हे नरश्रेष्ठ! तुमने उनके वध की इच्छा क्यों नहीं की? हे दुर्योधन! तुमने मन्त्रणा-निपुण होकर भी युधिष्ठिर की मृत्यु क्यों नहीं चाही? युधिष्ठिर सचमुच अजातशत्रु हैं, उनका यह नाम सार्थक है। युधिष्ठिर का कोई शत्रु नहीं है। तुमने क्या अपने कुल की रक्षा करने के विचार से ही युधिष्ठिर की मृत्यु-कामना नहीं की? अथवा युद्ध में पाण्डवों को परास्त करके अन्त को उन्हें उनका राज्यांश देकर सौभ्रात्र बनाये रखने का इरादा कर लिया है? जो हो, राजा युधिष्ठिर के समान भाग्यवान् कोई नहीं है। उनका जन्म सार्थक है, उनका अजातशत्रु नाम भी आज सफल हुआ; क्योंकि तुम उनके महावैरी होकर भी उनसे इतना स्नेह रखते हो कि चाहे जिस कारण से हो, उनकी मृत्यु नहीं चाहते।

१०

हे भारत! बृहस्पतितुल्य व्यक्ति भी ऐसे अवसर पर अपने हृदय के भाव को नहीं छिपा सकता। इसी कारण उस समय दुर्योधन के हृदय का भाव एकाएक प्रकट हो गया। आचार्य की बात सुनकर वे प्रसन्नतापूर्वक कहने लगे—हे आचार्य! राजा युधिष्ठिर की मृत्यु होने से मैं विजय नहीं प्राप्त कर सकूँगा; क्योंकि युधिष्ठिर को मार डालने पर पाण्डव (अर्जुन) क्रुद्ध होकर हम सबको मार डालेंगे। फिर सब पाण्डवों का विनाश तो देवता भी मिलकर नहीं कर सकते। अतएव युधिष्ठिर के मारे जाने पर चारों पाण्डव निःसन्देह हमारे कुल को निर्मूल कर डालेंगे। किन्तु इस समय यदि आप सत्यपरायण राजा युधिष्ठिर को जीते ही मेरे पास पकड़ लावेंगे तो मैं फिर उनसे जुआ खेल करके उन्हें हरा दूँगा, और तब वे और उनके अधीन पाण्डव वनवासी होने के लिए विवश होंगे। इस तरह मैं मुद्दत तक विजयी होकर राज्य कर सकूँगा। यही कारण है कि मैं राजा युधिष्ठिर को मारना नहीं चाहता।

अर्थतत्त्व के ज्ञाता, बुद्धिमान् द्रोणाचार्य ने दुर्योधन के इस बुरे विचार का हाल सुनकर उनके माँगे वर में एक शर्त लगा दी। आचार्य ने कहा—हे दुर्योधन! यदि संग्राम में महावीर

अर्जुन युधिष्ठिर की रक्षा नहीं कर सकेंगे तो तुम युधिष्ठिर को अपने वश में समझ लो। २०
किन्तु अर्जुन के रहते यह बात नहीं हो सकती। इन्द्र सहित देवता और दानव मिलकर भी युद्धभूमि में पराक्रमी अर्जुन को परास्त नहीं कर सकते। इसी कारण मैं अर्जुन के सामने युधिष्ठिर को पकड़ लेने का साहस नहीं करता। अर्जुन मेरे प्रिय शिष्य हैं। उनकी अस्त्र-शिक्षा के लिए ही मैं आचार्य-पद पर रक्खा गया था। युवा और पुण्यात्मा अर्जुन ने मेरे सिवा इन्द्र और महादेव से भी बहुत से दिव्य अस्त्र पाये हैं। अर्जुन तुम्हारे बुरे व्यवहार से अत्यन्त क्रुद्ध हैं। इसी कारण मैं उनके आगे युधिष्ठिर को जीते ही पकड़ लेने का साहस नहीं करता। अतएव यदि किसी उपाय से अर्जुन को युद्धभूमि से हटा सको तो मैं अनायास युधिष्ठिर को जीते ही पकड़ लाकर तुम्हारी इच्छा पूरी कर सकता हूँ। हे पुरुषश्रेष्ठ! युधिष्ठिर को जान से न मारकर जीते पकड़ लेने से ही तुम्हें विजय प्राप्त होगी; और वे भी इस उपाय से मुट्ठी में आ जायँगे। नरोत्तम अर्जुन को हटा देने पर युधिष्ठिर यदि मेरे सामने, सम्मुख-युद्ध में, थोड़ी देर भी ठहर जायँगे तो मैं आज ही उन्हें पकड़कर तुम्हारे हवाले कर दूँगा। राजन्! अर्जुन के सामने समर में इन्द्रादि देवगण और दानवगण कोई भी युधिष्ठिर को पकड़ नहीं सकेगा।

सञ्जय कहते हैं—आचार्य द्रोण ने जब राजा युधिष्ठिर को पकड़ने के बारे में इस तरह निर्दिष्ट रूप से प्रतिज्ञा की तब आपके मूर्ख पुत्रों ने समझ लिया कि अब युधिष्ठिर पकड़ लिये गये। किन्तु दुर्योधन को अच्छी तरह मालूम था कि द्रोणाचार्य भीतर ही भीतर पाण्डवों के [ख़ासकर अर्जुन के] पक्षपाती और हितैषी हैं। इसी कारण द्रोणाचार्य की प्रतिज्ञा को शिथिल न होने देने के लिए, अनेक प्रकार की सलाह करके, दुर्योधन ने अपने पक्ष की सारी सेना में यह घोषणा करा दी कि आज आचार्य ने युधिष्ठिर को जीते ही पकड़ लेने की प्रतिज्ञा की है। ३१

तेरहवाँ अध्याय

द्रोणाचार्य से युधिष्ठिर को बचाने के लिए अर्जुन का प्रतिज्ञा करना

सञ्जय कहते हैं—महाराज! द्रोणाचार्य ने जब युधिष्ठिर को पकड़ने की दृढ़ प्रतिज्ञा की तब आपके पक्ष की सेना के लोग यह वृत्तान्त सुनकर बाणध्वनि, शङ्खनाद और सिंहनाद करके प्रसन्नता प्रकट करने लगे। उधर राजा युधिष्ठिर स्वजनों के बीच बैठे थे। उनके जासूसों ने तुरन्त जाकर उन्हें द्रोणाचार्य की प्रतिज्ञा का समाचार सुनाया। युधिष्ठिर ने अन्यान्य प्रधान लोगों को और भाइयों को तत्काल बुलाकर अर्जुन से कहा—हे पुरुषश्रेष्ठ! तुमने द्रोणाचार्य

की प्रतिज्ञा का हाल सुन लिया न ? अतएव अब ऐसा उपाय करो जिसमें उनकी यह प्रतिज्ञा पूरी न हो। हे वीर! शत्रुनाशन द्रोण ने जो अटल प्रतिज्ञा की है उसकी सीमा तुम्हीं हो; अर्थात् तुम मेरी रक्षा करते रहोगे तो वे मुझे पकड़ने का साहस नहीं कर सकते। इसलिए तुम मेरे पास रहकर द्रोणाचार्य से संग्राम करो, जिसमें दुर्योधन द्रोणाचार्य की सहायता से अपने सङ्कल्प को सिद्ध न कर सके।

अर्जुन ने कहा—महाराज! जैसे आचार्य का वध करना किसी तरह मेरा कर्तव्य नहीं है वैसे ही युद्धभूमि में अकेले अरक्षित भाव से आपको छोड़ जाना भी मेरा कर्तव्य नहीं है। युद्धभूमि में चाहे मुझे प्राण दे देने पड़ें, तथापि आचार्य के विपक्ष में मैं किसी तरह युद्ध न करूँगा। किन्तु दुर्योधन जो आपको जीवित पकड़कर विजय की १० इच्छा कर रहा है, वह मेरे जीते जी पूरी नहीं हो सकती। नक्षत्रों समेत आकाश भले ही गिर पड़े, पृथ्वी के टुकड़े-टुकड़े भले ही हो जायँ; किन्तु मेरे जीते जी आचार्य आपको नहीं पकड़ सकते। यदि वज्रपाणि इन्द्र अथवा विष्णु भगवान् सब देवताओं के साथ मिलकर स्वयं समर में दुर्योधन की सहायता करें तो भी वह आपको किसी तरह नहीं पकड़ सकता। हे राजेन्द्र! यद्यपि द्रोणाचार्य सब अस्त्रों के और अस्त्रविद्या के जाननेवालों में प्रधान हैं तथापि मेरे रहते आप के लिए भय नहीं है। राजन्! मेरी प्रतिज्ञा कभी विफल नहीं हुई और न आगे व्यर्थ हो सकती है। जहाँ तक स्मरण है, मैं कभी झूठ नहीं बोला; किसी से नहीं हारा; और न कभी किसी से कुछ वादा करके उसे मैंने रत्ती भर मिथ्या किया है।

महावीर अर्जुन के यों कहने पर पाण्डवों के शिविर में शङ्ख, भेरी, मृदङ्ग, डङ्के, तुरही आदि बाजे बजने लगे; वीरगण सिंहनाद और प्रत्यञ्चा के शब्द करने लगे; योद्धा लोग ख़म ठोकने लगे। ये अनेक प्रकार के निर्घोष आकाशमण्डल में गूँज उठे और उनकी प्रतिध्वनि दूर-दूर तक छा गई। उस समय शत्रु-पक्ष के शङ्खनाद आदि को सुनकर आपकी सेना में भी बाजे बजने लगे।

अब आपके और पाण्डव पक्ष के युद्ध चाहनेवाले वीर सैनिक मोर्चेबन्दी करके संग्राम की इच्छा से आगे बढ़े और एक दूसरे के पास पहुँच गये। उस समय कौरवों के साथ पाण्डवों का, और द्रोणाचार्य के साथ पाञ्चालों का लोमहर्षण संग्राम होने लगा। तब द्रोणाचार्य के द्वारा सुरक्षित कौरव-सेना को नष्ट करने के लिए सृञ्जयगण अधिक यत्नपूर्वक युद्ध करने लगे; परन्तु किसी तरह कृतकार्य न हो सके। दुर्योधन के पक्ष के महारथी लोग भी अर्जुन के द्वारा सुरक्षित सेना को नष्ट करने के लिए जी-जान से कोशिश करके भी उसमें सफलता न पा सके। दोनों ओर के सैनिक, रात्रिकाल के विविध पुष्पों से शोभित वृक्षों की श्रेणी के समान, निस्तब्ध देख पड़ने लगे। २०

इधर शत्रुनाशन द्रोणाचार्य सुवर्णमण्डित रथ पर बैठकर पाण्डवों की सेना को नष्ट-भ्रष्ट करते हुए उसके भीतर घुस गये और प्रज्वलित प्रतापी सूर्य के समान बाण बरसाते हुए चारों ओर विचरने लगे। पाण्डव और सृञ्जयगण रथ पर बैठे हुए, फुर्तीले, अकेले द्रोणाचार्य को अनेक-रूप और विभीषिकामय देखने लगे। द्रोणाचार्य के चलाये हुए बाण सब सैनिकों को भय-विह्वल करते हुए चारों ओर गिरने लगे। महारथी द्रोण उस समय आकाशमण्डल में विचरते हुए, असंख्य किरण-वेष्टित, मध्याह्न काल के सूर्य के समान देख पड़ने लगे। जैसे दानवगण समर में क्रुद्ध इन्द्र की ओर आँख उठाकर नहीं देख सकते वैसे ही उस समय पाण्डवों की सेना का कोई सुभट द्रोणाचार्य की ओर आँख उठाकर नहीं देख सकता था।

अब प्रबल प्रतापी द्रोणाचार्य शत्रुसेना को मोहित करते हुए फुर्ती के साथ बाण चलाकर धृष्टद्युम्न की सेना को पीड़ा पहुँचाने लगे। जहाँ पर धृष्टद्युम्न थे वहाँ पर द्रोणाचार्य ने इतने बाण बरसाये कि सब दिशाएँ और आकाशमण्डल बाणों से व्याप्त हो गया। द्रोणाचार्य उसी जगह पाण्डवों की सेना का संहार करने लगे। २९

चौदहवाँ अध्याय

युद्ध का वर्णन

सञ्जय कहते हैं—महाराज! तब द्रोणाचार्य पाण्डवों की सेना को, घास-फूस को आग की तरह, बाणों से भस्म करते हुए विचरने लगे। द्रोणाचार्य को क्रोध के मारे प्रदीप्त अग्नि के समान सब सेना को भस्म करते देखकर सृञ्जयगण भयविह्वल होकर काँपने लगे। द्रोणाचार्य के कानों तक खिंची हुई धनुष की डोरी का शब्द वज्र-निर्घोष के समान कानों के पर्दे फाड़ता हुआ चारों ओर सुनाई पड़ने लगा। फुर्ती के साथ हाथ चलानेवाले द्रोणाचार्य के बाण रथ, रथी, घुड़-सवार, हाथी, घोड़े, पैदल आदि को काट-काटकर गिराने लगे। जैसे गरजते हुए बादल हवा

की सहायता पाकर वर्षाकाल में शिलाओं की वर्षा करते हैं, वैसे ही द्रोणाचार्य भी सिंहनाद-पूर्वक बाण बरसाते हुए शत्रुपक्ष के लिए भयानक हो उठे। वे शत्रुसेना में विचरते हुए उसे क्षुब्ध करके शत्रुओं के हृदय में दारुण भय उत्पन्न करने लगे। उनके घूमते हुए रथ पर सुवर्ण-मण्डित धनुष बार-बार मेघों के बीच बिजली की तरह चमक रहा था। सत्यपरायण, प्राज्ञ, नित्य धर्म के अनुरागी द्रोणाचार्य ने क्रुद्ध होकर ऐसा घोर युद्ध किया कि रक्त की भयानक नदी बह चली। उस नदी में मांसाहारी जीव भरे पड़े थे। सेनाएँ ही उसका स्रोत थीं। ध्वजाओं को ही किनारे पर के वृक्षों के समान वह गिरा रही थी। जल की जगह पर उसमें रक्त था। हाथियों और घोड़ों की लाशों के ढेर तटभूमि की तरह देख पड़ते थे। टूटे हुए कवच घन्नई की तरह जान पड़ते थे। मांस की कीचड़ थी और मेदा-मज्जा-हड्डी आदि ही बालू के समान थे। पगड़ियाँ फेने की तरह बह रही थीं। युद्ध के घिरे हुए मेघ से वह उत्पन्न हुई थी। उसमें प्रास और खड्ग रूपी मत्स्य थे। मनुष्य-हाथी-घोड़े आदि से वह दुर्गम थी। बाणों का वेग ही उसका प्रवाह था। लोगों की लाशें लकड़ियों के समान उसमें बह रही थीं। रथ कच्छप की तरह देख पड़ते थे। कटे हुए मस्तक कमल की तरह जान पड़ते थे। रथ-हाथी आदि उसके भीतर कुण्ड से जान पड़ते थे। उसमें पड़े अनेक आभूषण चमक रहे थे। बड़े-बड़े रथ सैकड़ों भवर से देख पड़ते थे। पृथ्वी से उठती हुई धूल ही उसमें उठनेवाली लहरों के समान जान पड़ती थी। महापराक्रमी वीर योद्धा तो सहज में उस नदी के पार जा सकते थे, किन्तु कायरों के लिए वह अत्यन्त दुस्तर थी। हज़ारों लाशें उसमें भरी पड़ी थीं। कङ्क गिद्ध आदि जीव उसके चारों ओर मँड़रा रहे थे। वह नदी हज़ारों महारथी वीरों को यमलोक को लिये जा रही थी। बड़े-बड़े त्रिशूल उसमें नाग से जान पड़ते थे। अनेक जीव पक्षियों के समान प्रतीत होते थे। कटे हुए छत्र हंसों के समान उसमें देख पड़ते थे; कटे हुए मुकुट पक्षियों के सदृश जान पड़ते थे। चक्र कच्छप से, गदाएँ मगर सी और बाण छोटी-छोटी मछलियों से उसमें बह रहे थे। भयानक बगलों, गिद्धों और गीदड़ों के झुण्ड उसके आस-पास घूम रहे थे। महाबली द्रोणाचार्य के द्वारा युद्ध में मारे गये हज़ारों वीरों को वह रक्त की नदी यमलोक पहुँचा रही थी। केश सेवार और घास के समान दिखाई पड़ रहे थे। द्रोणाचार्य ने कायरों के हृदय में भय उत्पन्न करनेवाली ऐसी महाभयानक रक्त की नदी युद्धभूमि में बहा दी। द्रोणाचार्य को इस तरह गरज-गरजकर अपनी सेना को भयविह्वल करते देख युधिष्ठिर आदि पाण्डवपक्ष के योद्धा चारों ओर से द्रोणाचार्य पर आक्रमण करने और उन्हें रोकने चले। महापराक्रमी कौरवों ने जब उन शूरों को इस तरह आते देखा तब वे भी उन्हें रोकने के लिए चारों ओर से चले। उस समय उनका लोमहर्षण युद्ध होने लगा।

बहुत बड़े मायावी शकुनि समरभूमि में सहदेव के सामने आकर अनेक प्रकार के तीक्ष्ण बाणों के द्वारा उनको पीड़ित करने लगे। उन्होंने सहदेव के रथ की ध्वजा काट डाली और सारथी को भी घायल कर दिया। सहदेव ने भी क्रोध के वश होकर बाणों से शकुनि के धनुष, पताका, सारथी और घोड़ों को छिन्न-भिन्न करके शकुनि को साठ पैने बाण मारे। अब शकुनि रथ पर से उतर पड़े और गदा लेकर दौड़े। उन्होंने गदा के प्रहार से सहदेव के सारथी को मार गिराया। तब दोनों ही वीर रथ-हीन होकर गदा हाथ में लेकर शिखर-शोभित पहाड़ों की तरह युद्धभूमि में गदायुद्ध के पैंतरे दिखाते हुए क्रीड़ा सी करने लगे।
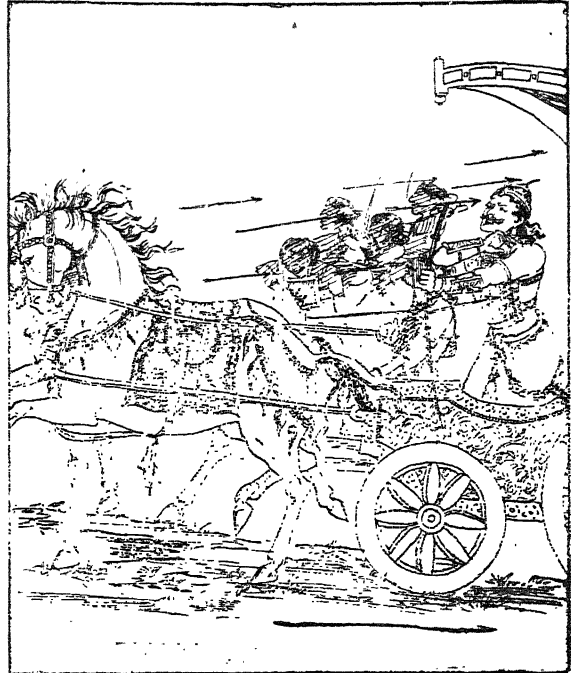
द्रोणाचार्य ने राजा द्रुपद को दस बाण मारे तब वे भी असंख्य बाणों से आचार्य को जर्जर करने लगे। आचार्य ने फिर उनसे भी अधिक पराक्रम के साथ असंख्य बाणों से द्रुपद को घायल कर डाला। भीमसेन ने विविंशति को अत्यन्त तीक्ष्ण बीस बाण मारे, परन्तु वे उस प्रहार से तनिक भी विचलित नहीं हुए। यह एक अद्भुत घटना हुई। विविंशति ने सहसा भीमसेन के घोड़े मार डाले और ध्वजा तथा धनुष की डोरी काट दी। इस पर विविंशति की सेना ने उनकी प्रशंसा की। अपने शत्रु का यह पराक्रम भीमसेन देख नहीं सके। उन्होंने भी शत्रु के घोड़ों को गदा के प्रहार से गर्दबर्द कर डाला। महाबली विविंशति मत्त गजराज की तरह क्रुद्ध होकर ढाल-तलवार हाथ में लेकर रथ से कूद पड़े और भीमसेन पर प्रहार करने के लिए झपटे। ३०

महावीर शल्य अपने भानजे नकुल को कुपित करने के लिए हँसकर लीलापूर्वक धनुष घुमाकर उन पर बाण बरसाने लगे। महापराक्रमी नकुल ने भी उनके सब घोड़े नष्ट कर दिये, सारथी को मार डाला तथा ध्वजा, छत्र और धनुष की डोरी काटकर शङ्ख बजाया। धृष्टकेतु ने भी कृपाचार्य के चलाये बाणों को काटकर उन्हें सत्तर बाण मारे और तीन बाणों से उनकी सुन्दर ध्वजा काटकर गिरा दी। कृपाचार्य भी बहुत से बाणों से धृष्टकेतु के बाणों को व्यर्थ करके घोर

युद्ध करने लगे। सात्यकि ने पहले हँसकर कृतवर्मा की छाती में लोहमय नाराच बाण, फिर और सत्तर बाण, और उसके बाद अन्य अनेक प्रकार के अगणित बाण मारे। वेग से चलनेवाली आँधी जैसे पहाड़ को नहीं कँपा सकती वैसे ही भोजराज कृतवर्मा सात्यकि को, पैने सतत्तर बाण मारकर भी, विचलित नहीं कर सके।

सेनापति धृष्टद्युम्न ने सुशर्मा के मर्मस्थलों में तीक्ष्ण बाण मारे। सुशर्मा ने भी तोमर के प्रहार से उनको अत्यन्त पीड़ित किया। महावीर राजा विराट मत्स्यदेश की सेना लेकर वीर कर्ण के सामने आये। उन्होंने अपने अपूर्व पराक्रम और युद्धकौशल से उन्हें आगे नहीं बढ़ने दिया। यह देखकर सबको बड़ा आश्चर्य हुआ। सूतपुत्र कर्ण ने भी पौरुष प्रकट करते हुए तीक्ष्ण बाणों से मत्स्यसेना को छिन्न-भिन्न करना शुरू किया। राजा द्रुपद खुद भगदत्त के सामने आकर उनके साथ घोर युद्ध करने लगे। भगदत्त ने बाणों से द्रुपद के सारथी, ध्वजा, रथ आदि को नष्ट करके द्रुपद को घायल कर दिया। उन्होंने भी अत्यन्त कुपित होकर तीक्ष्ण बाण से भगदत्त के वक्षःस्थल को छेद दिया। अस्त्रविद्याविशारद भूरिश्रवा और शिखण्डी, ये दोनों वीरवर देखनेवालों को भयविह्वल बना देनेवाला दारुण युद्ध करने लगे। वीर्यशाली भूरिश्रवा ने असंख्य बाणों से महारथी शिखण्डी को ढक दिया। शिखण्डी ने भी क्रोध करके नब्बे बाण मारकर भूरिश्रवा के छक्के छुड़ा दिये। गर्वित राक्षस घटोत्कच और अलम्बुष, दोनों ही जय की इच्छा से तरह-तरह की आसुरी माया प्रकट करके अत्यन्त घोर युद्ध करते हुए, कभी-कभी अन्तर्द्धान होकर, दर्शकों के हृदय में आश्चर्य उत्पन्न करने लगे। देवासुर-युद्ध में जैसे आश्चर्य में डालनेवाले कार्य हुए थे वैसे ही कार्य दिखाते हुए चेकितान और अनुविन्द भयानक युद्ध करने लगे। पहले किसी समय वराहरूप विष्णु के साथ हिरण्याक्ष दानव का जैसा युद्ध हुआ था वैसा ही युद्ध लक्ष्मण और क्षत्रदेव करने लगे।

अब महाबली हार्दिक्य बहुत शीघ्र अश्वयुक्त और तेज़ी के साथ चल रहे रथ पर बैठकर युद्ध की आकांक्षा से वीर अभिमन्यु के निकट पहुँचकर सिंहनाद करने लगे। महावीर अभिमन्यु उनके साथ भयानक युद्ध करने लगे। हार्दिक्य ने असंख्य बाणों से अभिमन्यु को घायल किया। अभिमन्यु ने भी तत्काल उनका छत्र, ध्वजा और धनुष काट डाला। अभिमन्यु ने और सात बाण हार्दिक्य को मारे तथा पाँच बाणों से उनके घोड़ों को और सारथी को पीड़ित करके वे सिंह की तरह बार-बार गरजकर सैनिकों के हृदय में हर्ष बढ़ाने लगे। अब अभिमन्यु ने शत्रु के प्राणों को हरनेवाला एक बाण धनुष पर चढ़ाना चाहा। किन्तु हार्दिक्य ने उस भयानक बाण को देखकर दो बाणों से मय धनुष के उसको काट डाला। शत्रुदमन अभिमन्यु ने कटे हुए धनुष को फेंककर युद्ध के लिए ढाल-तलवार हाथ में ली। उस खड्ग को घुमाते और अनेक ताराचिह्नों से शोभित ढाल चमकाते हुए वीर अभिमन्यु पराक्रम प्रकट करते हुए रणभूमि

में विचरने लगे। कभी ढाल-तलवार को घुमाते, कभी ऊपर फेरते और कभी हिलाते तथा तानते हुए अभिमन्यु ने ऐसी फुर्ती दिखाई कि किसी को ढाल और तलवार में कुछ भी अन्तर नहीं देख पड़ता था। अभिमन्यु सिंहनाद के साथ उछलकर हार्दिक्य के रथ पर चढ़ गये। पहले हार्दिक्य के बाल पकड़कर उन्हें आसन के नीचे खींच लिया, फिर लात मारकर सारथी के प्राण ले लिये और तलवार से ध्वजा काट गिराई। गरुड़ जैसे समुद्र को मथकर साँप को पकड़कर झकझोरते हैं वैसे ही अभिमन्यु ने हार्दिक्य को पकड़कर झकझोर डाला। उस समय जिनके बाल बिखरे हुए हैं वे पौरव हार्दिक्य सिंह के पछाड़े हुए अचेत साँड़ के समान जान पड़ने लगे। ६०

जयद्रथ ने देखा कि अनाथ की तरह हार्दिक्य मारे जा रहे हैं; अभिमन्यु ने उन्हें पटक दिया है और बाल पकड़कर प्राण लेने को उद्यत हैं। तब वे अत्यन्त क्रुद्ध होकर, सिंहनाद करके, सुवर्णजालयुक्त मयूरशोभित घुँघरूदार ढाल और तलवार लिये रथ से उतर पड़े। अभिमन्यु ने जयद्रथ को आते देखकर हार्दिक्य को छोड़ दिया, और रथ पर से कूदकर बाज़ की तरह वे जयद्रथ पर झपटे। अभिमन्यु ने शत्रुपक्ष के चलाये हुए प्रास, पट्टिश, खड्ग आदि शस्त्रों की वर्षा को ढाल पर रोकना और खड्ग से काटना शुरू कर दिया। पाण्डवसेना को अपना बाहुबल दिखाते हुए वीर अभिमन्यु, बाघ का बच्चा जैसे गजराज पर हमला करता है वैसे ही, ढाल-तलवार घुमाते हुए, अपने पिता के वैरी क्षत्रियश्रेष्ठ जयद्रथ के पास प्रहार करने के लिए पहुँचे। जैसे बाघ और सिंह दोनों परस्पर नखों और दाँतों से प्रहार करते हैं वैसे ही वे दोनों एक दूसरे को पाकर अत्यन्त उत्साह के साथ खड्ग-प्रहार करने लगे। ढाल और तलवार के करतबों में, प्रहार में, बचाने में और पैंतरे में दोनों वीर समान कौशल और फुर्ती दिखा रहे थे। दोनों ही दोनों पर समान रूप से प्रहार करते, पीछे हटते और भीतरी-बाहरी चोटें करते थे। दोनों वीर जिस समय भीतरी

और बाहरी चोटों के पैंतरे काट रहे थे उस समय वे परदार पहाड़ से प्रतीत होते थे। महावीर अभिमन्यु ने मौक़ा पाकर जयद्रथ को तलवार मारी, जयद्रथ ने भी शत्रु का वार अपनी ढाल पर ७१

रोककर खड्ग-प्रहार किया, जिसे अभिमन्यु ने अपनी ढाल पर रोक लिया। जयद्रथ का वह दृढ़ खड्ग अभिमन्यु की ढाल में मढ़े हुए सोने के पत्तर में लगकर टूट गया। मैंने देखा कि उसी समय जयद्रथ अपने खड्ग को खण्डित देखकर, छः पग हटकर, पलक मारते ही फुर्ती के साथ अपने रथ पर चढ़ गये। इधर अभिमन्यु भी खड्गयुद्ध बन्द करके फिर श्रेष्ठ रथ पर जा बैठे। उनके पक्ष के योद्धा राजाओं ने उनको चारों ओर से घेर लिया। वीर अभिमन्यु ढाल-तलवार उछालकर जयद्रथ की ओर देखते हुए सिंहनाद करने लगे।

सूर्य जैसे सब दिशाओं को अपने तेज से तपाते हैं वैसे ही शत्रुदलन अभिमन्यु जयद्रथ को इस तरह परास्त करके शत्रुसेना को पीड़ित करने लगे। अब शल्य ने एक भयानक सुवर्ण-मण्डित लोहमय, अग्निशिखा की तरह चमकीली, शक्ति लेकर अभिमन्यु को ताककर मारी। गरुड़ जैसे उछलकर आये हुए नाग को पकड़ लेते हैं वैसे ही अभिमन्यु ने उछलकर उस शक्ति को पकड़ लिया और फिर अपनी तीक्ष्ण तलवार म्यान से निकाली। सब राजा लोग अभिमन्यु के बल-वीर्य और अद्भुत पराक्रम को देखकर सिंहनाद करने लगे। अब अमित तेजस्वी शत्रु- ८० वीरनाशन अभिमन्यु ने वही अभेद्य मणिखचित शक्ति शल्य के ऊपर चलाई। केंचुल छोड़े हुए नाग के समान वह शक्ति शल्य के रथ पर पहुँची। उस शक्ति के प्रहार से सारथी मरकर गिर पड़ा। यह देखकर धृष्टकेतु, द्रुपद, विराट, युधिष्ठिर, कैकेय, सात्यकि, धृष्टद्युम्न, शिखण्डी, भीम, नकुल, सहदेव और द्रौपदी के पुत्र सब अभिमन्यु को साधुवाद देते हुए चिल्लाने लगे। उस समय बहुविध बाणों के शब्द और सिंहनाद से समरभूमि गूँज उठी। अपराजित अभि-मन्यु उस प्रशंसासूचक कोलाहल को सुनकर बहुत आनन्दित हुए। मेघमण्डल जैसे जल बरसाकर पर्वत के शिखर को ढक लेते हैं वैसे ही आपके पुत्रगण, शत्रुपक्ष के उस जयनाद और सिंहनाद को न सह सकने के कारण, एकाएक चारों ओर से अभिमन्यु पर बाण बरसाने लगे। शत्रुदमन शल्य ने सारथी की मृत्यु देखकर, अत्यन्त क्रुद्ध होकर, आपके पुत्रों की विजय की इच्छा से अभिमन्यु पर आक्रमण किया। ८७

पन्द्रहवाँ अध्याय

शल्य का युद्ध से हट जाना

राजा धृतराष्ट्र कहते हैं—हे सञ्जय, तुमने जो इन वीरों के द्वन्द्वयुद्धों का वर्णन किया उसे सुनकर इस समय मुझे भी आँखें न होने का खेद हो रहा है। मनुष्य इस कुरु-पाण्डव-युद्ध को देवासुर-युद्ध के समान अद्भुत और आश्चर्य में डालनेवाला कहेंगे। यह बढ़िया युद्ध-वृत्तान्त सुनकर भी मुझे तृप्ति नहीं होती। इसलिए तुम मेरे आगे शल्य और अभिमन्यु के युद्ध का हाल फिर कहो।

सञ्जय ने कहा—राजन् ! शल्य ने जब अपने सारथी को मरते देखा तब अत्यन्त कुपित होकर, लोहे की भारी गदा लेकर, वे रथ से उतर पड़े। महाराज ! भीमसेन उन्हें कालदण्ड हाथ में लिये साक्षात् यमराज के समान देखकर अपनी गदा लेकर बड़े वेग से उनकी ओर झपटे। अभिमन्यु भी वज्रतुल्य गदा हाथ में लेकर शल्य को गदा-युद्ध के लिए ललकारने लगे। महाप्रतापी भीमसेन ने समझाकर अभिमन्यु को रोक लिया। वे ख़ुद शल्य के सामने पहाड़ के समान जाकर डट गये। उसी तरह मद्रराज शल्य भी महाबली भीमसेन को देखकर, गजराज की ओर सिंह की तरह, झपटे। उधर तुरही, हज़ारों शङ्ख और डङ्के बजने लगे; वीर योद्धा सिंहनाद करने लगे और एक दूसरे की ओर झपटते हुए पाण्डवों और कौरवों के बीच असंख्य साधुवाद और जयनाद सुनाई पड़ने लगे। संग्राम में शल्य को १० छोड़कर और कोई भीमसेन का वेग नहीं सह सकता था। वैसे ही भीमसेन के सिवा और कोई वीरश्रेष्ठ मद्रराज शल्य की गदा का वार नहीं सँभाल सकता था। सोने की पट्टियों से शोभित और अपने लोगों के मन में हर्ष बढ़ानेवाली भारी गदा भीमसेन के चलाने पर प्रज्वलित हो उठी। उधर विभाग के अनुसार मण्डलाकार से घूमकर पैंतरा काटते हुए शल्य की विशाल गदा भीमसेन के वज्रतुल्य कठोर अंगों से लगकर बिजली की तरह चमकने लगी। वे दोनों वीर दो बड़े साँड़ों की तरह, घूमती हुई गदाओं के ही सींगों से शोभित होकर, गरजते हुए मण्डलाकार गति से घूमने लगे। दोनों वीर समान रूप से पैंतरे बदलते और गदा-युद्ध का कौशल दिखाते हुए प्रहार कर रहे थे। शल्य की भारी गदा भीमसेन की गदा पर पड़कर भयानक आग उगलती हुई तत्काल टूट गई। भीमसेन की गदा भी शल्य की गदा पर पड़कर,

बरसात के सन्ध्याकाल में जुगनुओं से शोभित वृक्ष की तरह, चिनगारियों से शोभायमान हुई। अब मद्रराज शल्य ने दूसरी गदा चलाई। उस गदा से बारम्बार प्रहार के समय अग्नि की ज्वालाएँ निकल रही थीं, जिनसे आकाशमण्डल प्रकाशित हो उठता था। शत्रु के ऊपर

चलाई गई भीमसेन की गदा भी, भारी उल्कापिण्ड के समान, प्रज्वलित होकर शल्य की सेना को
२० सन्ताप और भय से विह्वल बनाने लगी। वे दोनों गदाएँ आपस में टकराकर फुफकारती हुई नागकन्याओं के समान आग उगल रही थीं। जैसे दो बड़े बाघ नखों से, या महागजराज दाँतों से, परस्पर भिड़कर आक्रमण करते हों वैसे ही मद्रराज शल्य और भीमसेन गदाओं से परस्पर आक्रमण करते हुए युद्धभूमि में विचरने लगे।

अब क्षण भर में ही भीमसेन और शल्य दोनों, दारुण गदा-प्रहार से निकलनेवाले रक्त से लिप्त होकर, फूले हुए ढाक के वृक्ष के समान शोभित हुए। उन दोनों पुरुषसिंहों के भयानक गदा-प्रहार से वज्रपात के समान भयानक शब्द उठकर सब दिशाओं में व्याप्त हो गया। जैसे पहाड़ फट जाने पर भी कम्पित नहीं होता, वैसे ही दाहने और बायें अङ्गों में बारम्बार शल्य के गदा मारने पर भीमसेन तनिक भी विचलित नहीं हुए, और मद्रराज भी भीमसेन की गदा की चोटें खाकर वज्राहत पर्वत के समान धैर्य धारण किये खड़े रहे। बली गजराज के समान तुल्य बलवाले दोनों वीर भारी गदाएँ उठाकर एक दूसरे पर चोट कर रहे थे और मण्डलाकार घूम-कर, अन्तरमार्ग में रहकर, फिर मण्डलाकार गति से विचरण करते थे। कभी आठ पग जाकर एकाएक उछलकर दोनों, दोनों को नष्ट करने के विचार से, एक दूसरे पर लोहे की भारी गदाओं की चोट करते थे। इस तरह बारम्बार वेग के साथ दौड़ने से और गदाओं की चोटों से घायल होकर दोनों वीर, इन्द्र की ध्वजा के समान, मूर्च्छित होकर पृथ्वी पर गिर पड़े।

इधर महारथी कृतवर्मा गदा-प्रहार से पीड़ित, निश्चेष्ट, नाग के समान मूर्च्छा में पड़े हुए
३१ शल्य को विह्वल भाव से बारम्बार श्वास लेते देखकर बड़ी फुर्ती से उनके पास गये और चटपट उन्हें उठाकर रथ पर बिठाकर युद्धभूमि से हट गये। मैंने देखा कि मतवाले के समान विह्वल वीर्यशाली भीमसेन दम भर बाद होश में आकर उठ खड़े हुए। शल्य को समर से विमुख देखकर आपके पुत्रगण चतुरङ्गिणी सेना सहित डर से काँपने लगे। विजयशील पाण्डवों के द्वारा पीड़ित कौरवगण, शङ्का से व्याकुल होकर, आँधी के भगाये मेघों के समान चारों ओर भागने लगे। महाराज! महारथी पाण्डवगण इस प्रकार आपकी सेना को हराकर प्रज्वलित अग्नि के समान अपने तेज से शोभायमान हुए। पाण्डव पक्ष की सेना में चारों ओर वीर लोग प्रसन्नचित्त हो ऊँचे स्वर से सिंहनाद और जयनाद करने लगे; शङ्खध्वनियाँ होने लगीं
३७ तथा तुरही डङ्के मृदङ्ग आदि बाजे बजने लगे।

सोलहवाँ अध्याय

अर्जुन के युद्ध का वर्णन

सञ्जय कहते हैं—राजन् ! पराक्रमी वृषसेन ने अपनी सेना को इस तरह जब भागते देखा तब वे युद्धभूमि में अकेले ही अपनी अपूर्व अस्त्रविद्या के कौशल से कौरव-सेना की रक्षा करने लगे। युद्ध में वृषसेन ने अनेक प्रकार के असंख्य बाण चलाये। वे बाण पाण्डवों की सेना के हाथी, घोड़े, पैदल, रथी आदि को छेदकर इधर-उधर गिरने लगे। महाराज, उनके प्रज्वलित हज़ारों तीक्ष्ण बाण ग्रीष्म ऋतु के सूर्य की किरणों के समान सब ओर फैलकर रथियों और सवारों को अत्यन्त पीड़ित करके, आँधी के उखाड़े वृक्षों की तरह, एकाएक पृथ्वीतल पर गिराने लगे। महारथी वृषसेन अगणित घोड़ों, रथों और हाथियों को गिराते हुए रणभूमि में विचरने लगे।

युद्ध के मैदान में वृषसेन को, अकेले, निर्भय भाव से घूमते देखकर, सब राजाओं ने मिलकर चारों ओर से घेर लिया। इसी समय नकुल के पुत्र वीर शतानीक ने वृषसेन को मर्म्मभेदी दस नाराच बाण मारे। इसके बाद कर्ण के पुत्र वृषसेन ने भी शतानीक के धनुष और रथ की ध्वजा को काट डाला। द्रौपदी के पुत्रों ने भाई की यह दशा देखी तो वे उनके पास जाने के लिए वृषसेन की ओर दौड़े। उन्होंने बहुत से बाणों से वृषसेन को छिपा दिया। राजन्, मेघ जैसे जल बरसाकर उससे पर्वत को ढक देते हैं वैसे ही अश्वत्थामा आदि वीरगण वृषसेन को पीड़ित करनेवाले द्रौपदी के पुत्रों को अपने बाणों से अदृश्य करते हुए उनकी ओर दौड़े। पूर्व समय में दानवों के साथ देवताओं का जैसा भयानक संग्राम हुआ था वैसा ही लोमहर्षण रण कौरवों और पाण्डवों से होने लगा। पाण्डव, पाञ्चाल, कैकेय, मत्स्य और सृञ्जयगण शस्त्र ताने हुए कौरववीरों को मारने के लिए दौड़े। एक दूसरे के अपराधी कौरव और पाण्डवगण, विजय की इच्छा से, एक दूसरे को क्रूर दृष्टि से देखते हुए घोरतर युद्ध करने लगे। वे सब क्रुद्ध योद्धा आकाश में लड़ने के लिए उद्यत पक्षियों के राजा गरुड़ और नागों के समान जान पड़ते थे। भीम, कर्ण, कृपाचार्य, द्रोणाचार्य, अश्वत्थामा, धृष्टद्युम्न, सात्यकि आदि दोनों ओर के वीरों के बाहुबल के प्रभाव से समरभूमि प्रलयकाल के उदय हुए सूर्य के समान प्रदीप्त हो उठी। देवासुर-संग्राम के समान परस्पर प्रहार करते हुए महाबलशाली वीरगण घोरतम संग्राम करने लगे। कुछ ही समय में कौरवपक्ष के वीर भाग खड़े हुए और युधिष्ठिर की सेना कुरु-सेना को नष्ट करने लगी। १०

शत्रुओं के द्वारा कौरव-सेना को पीड़ित, भागते और क्षत-विक्षत होते देखकर द्रोणाचार्य उसे ढाढ़स बँधाते हुए कहने लगे कि हे शूरवीरो ! तुम भागो नहीं। अब लाल रङ्ग के

घोड़ोंवाले रथ पर बैठे द्रोणाचार्य ने, चार दाँतोंवाले गजराज की तरह, पाण्डव-सेना में घुस करके युधिष्ठिर पर आक्रमण किया। युधिष्ठिर भी कङ्कपत्रशोभित अनेक प्रकार के तीक्ष्ण बाण आचार्य को मारने लगे। आचार्य बड़ी फुर्ती से उनका धनुष काटकर उनकी ओर
२० झपटे। जैसे तटभूमि सागर के वेग को रोकती है वैसे ही पाञ्चालों के यश को बढ़ानेवाले कुमार ने, जो युधिष्ठिर के रथ-चक्र की रक्षा कर रहे थे, द्रोणाचार्य को रोक दिया। इस तरह कुमार के द्वारा द्रोणाचार्य को रोके जाते देखकर सब योद्धा सिंहनाद करते हुए कुमार को साधुवाद से सम्मानित करने लगे। महावीर कुमार ने अत्यन्त कुपित होकर आचार्य की छाती में एक बाण मारा। लगातार कई हज़ार बाणों से द्रोणाचार्य को हटा करके कुमार बारम्बार सिंहनाद करने लगे।

कौरव-सेना के रक्षक द्विजश्रेष्ठ द्रोणाचार्य ने फुर्तीले, संग्राम में न थकनेवाले, मन्त्रविद्या और अस्त्रविद्या में निपुण, आर्यव्रती, चक्र-रक्षक कुमार को परास्त करके पाण्डव-सेना के भीतर घुसकर अपूर्व रणकौशल दिखाना शुरू किया। द्रोण ने बारह बाण शिखण्डी को, बीस बाण उत्तमौजा को, पाँच बाण नकुल को, सात बाण सहदेव को, बारह बाण युधिष्ठिर को, तीन-तीन बाण द्रौपदी के पुत्रों को, पाँच बाण सात्यकि को और दस बाण राजा विराट को मारे। यों प्रधानता के अनुसार हर एक योद्धा को प्रहार से पीड़ित और विह्वल करते हुए द्रोणाचार्य युधिष्ठिर को पकड़ने के लिए आगे बढ़े। तब आँधी से उमड़े हुए और क्षोभ को प्राप्त समुद्र के समान चले आते क्रुद्ध वीर द्रोणाचार्य को रोकने के लिए महारथी युगन्धर आगे बढ़े। द्रोणाचार्य ने अनेक तीक्ष्ण बाणों से युधिष्ठिर को पीड़ित करके एक
३१ भल्ल बाण मारकर युगन्धर को रथ से गिरा दिया।

अब कैकेय, विराट, सात्यकि, द्रुपद, शिवि, पाञ्चालदेशीय व्याघ्रदत्त, महाबली सिंहसेन और अन्यान्य महारथीगण युधिष्ठिर की रक्षा करने के लिए अनेक प्रकार के बाण बरसाते हुए द्रोणाचार्य की राह रोककर खड़े हो गये। पाञ्चालदेशीय व्याघ्रदत्त ने फुर्ती के साथ द्रोणाचार्य को पचास तीक्ष्ण बाण मारे। इस अद्‌भुत कर्म को देखकर लोग ज़ोर से चिल्लाने लगे। उत्साहपूर्ण प्रसन्नचित्त सिंहसेन भी अन्य वीरों को भयविह्वल करते हुए द्रोणाचार्य को कई बाण मारकर हँसने लगे। महाबली द्रोणाचार्य क्रोध से आँखें फाड़कर, धनुष की डोरी को साफ़ करते हुए, तल-शब्द के साथ आगे बढ़े। आचार्य ने दो भल्ल बाणों से सिंहसेन और व्याघ्रदत्त के कुण्डलभूषित सिर काटकर पृथ्वी पर गिरा दिये। इस तरह पाण्डवपक्ष के वीरों को नष्ट करते हुए साक्षात् यमराज के समान द्रोणाचार्य महाराज युधिष्ठिर के रथ के पास पहुँचे। यतव्रत अजेय द्रोणाचार्य को युधिष्ठिर के पास पहुँचते देखकर पाण्डव-सेना के बीच महाकोलाहल उठा कि महाराज युधिष्ठिर पकड़े गये। राजन्, आपकी सेना के लोग आचार्य का पराक्रम देखकर कहने लगे कि आज राजा

दुर्योधन विजयी होकर कृतार्थ होंगे। इसमें सन्देह नहीं कि द्रोणाचार्य दम भर में ही युधिष्ठिर ४० को पकड़कर प्रसन्नतापूर्वक हमारे और महाराज दुर्योधन के पास ले आवेंगे।

महाराज, आपके सैनिक इस तरह कह ही रहे थे कि महावीर अर्जुन रथ के शब्द से सब दिशाओं को कम्पायमान और कौरव-सेना को पीड़ित करते हुए बड़े वेग से उस जगह आ पहुँचे जहाँ द्रोणाचार्य थे। अर्जुन ने युद्धभूमि में रक्त की महानदी बहा दी थी। उस नदी में जल की जगह रक्त था, बड़े-बड़े रथ भँवर से पड़ते दिखाई दे रहे थे। शूरों के शरीर और हाड़ उस नदी को और भी भयानक बना रहे थे। प्रेत-भूत आदि उसके किनारों पर भरे पड़े थे। बाण उसमें फेन से जान पड़ते थे और बहते हुए प्रास आदि शस्त्र मछली आदि जीव-जन्तुओं के समान देख पड़ते थे। महावीर अर्जुन वेग से उस नदी को लाँघकर एकाएक द्रोणाचार्य के पास पहुँच गये। महारथी अर्जुन ने द्रोणाचार्य की सेना को अपने युद्धकौशल से मोहित और बाणवर्षा से विह्वल करके उन पर घोर आक्रमण किया। महापराक्रमी अर्जुन इस फुर्ती के साथ धनुष पर बाण चढ़ाते और छोड़ते थे कि किसी को यह नहीं देख पड़ता था कि वे कब बाण निकालते हैं, कब धनुष पर चढ़ाते हैं और कब छोड़ते हैं। उनके धनुष से लगातार बाणों की वर्षा सी हो रही थी। अर्जुन के चलाये हुए अगणित बाणों से रणभूमि में चारों ओर अँधेरा छा गया—पृथ्वी, अन्तरिक्ष और आकाश कुछ भी नहीं सूझ पड़ता था। सर्वत्र बाण ही बाण नज़र आते थे। धूल के उड़ने से वह अँधेरा और भी घना हो गया। उधर सूर्य भी अस्ताचल पर पहुँच गये। उस समय यह नहीं जान पड़ता था कि कौन शत्रु है, कौन मित्र है, कौन अपने दल का है और कौन शत्रुपक्ष का है।

तब द्रोणाचार्य और दुर्योधन आदि ने युद्ध बन्द कर दिया। अर्जुन ने भी शत्रुपक्ष को भयविह्वल और युद्ध से विमुख देखकर अपनी सेना को शिविर की ओर लौटने की आज्ञा दी। महाराज, जैसे मुनि लोग सूर्यदेव की स्तुति करते हैं वैसे ५० ही पाण्डव, सृञ्जय और पाञ्चालगण प्रसन्न होकर अर्जुन की प्रशंसा करने लगे। इस तरह

वैरियों को परास्त करके कृष्ण सहित अर्जुन प्रसन्नतापूर्वक अपने डेरे को लौटे। सब योद्धाओं के पीछे अर्जुन का रथ चला। हीरे, नीलम, पुखराज, पन्ने, मूँगे, मोती, मानिक, बिल्लौर आदि रत्नों और सुवर्ण से भूषित रथ पर बैठे हुए अर्जुन नक्षत्रों से शोभित आकाशमण्डल में ५४ पूर्ण चन्द्रमा के समान शोभायमान हुए।

संशप्तकवधपर्व

सत्रहवाँ अध्याय

संशप्तकगण से लड़ने के लिए अर्जुन का जाना

सञ्जय कहते हैं कि महाराज! कौरवों और पाण्डवों की सेनाएँ अपने-अपने शिविर में जाकर अपने-अपने स्थान पर विश्राम करने लगीं। महारथी द्रोणाचार्य ने शिविर में पहुँचकर बहुत ही उदास और लज्जित होकर राजा दुर्योधन की ओर देखकर कहा—राजन्! मैंने पहले ही तुमसे कह दिया था कि अर्जुन के सामने युद्ध में देवगण भी राजा युधिष्ठिर को नहीं पकड़ सकते। तुम लोगों ने युधिष्ठिर के पकड़ने का बड़ा यत्न किया, परन्तु सफलता नहीं प्राप्त कर सके। अर्जुन ने युधिष्ठिर को बचा लिया। तुम मेरी बात सत्य मानो। श्रीकृष्ण और अर्जुन को कोई नहीं जीत सकता। अतएव किसी उपाय से अर्जुन को रणभूमि से दूर हटा ले जाओ, तो युधिष्ठिर को मैं कल पकड़कर तुम्हारे पास ले आऊँगा। इसका उपाय यही है कि कोई योद्धा अर्जुन को लड़ने के लिए ललकार कर दूर हटा ले जाय। अर्जुन अवश्य उससे लड़ने को जायँगे, और उसे युद्ध में जीते बिना कभी न लौटेंगे। मैं इसी बीच में मौक़ा पाकर धृष्टद्युम्न के सामने ही, पाण्डव-सेना के भीतर घुसकर, युधिष्ठिर को पकड़ लाऊँगा। अर्जुन की अनुपस्थिति में युधिष्ठिर यदि मुझे देखकर डर से भाग न खड़े हुए तो मैं उनको अवश्य पकड़ लाऊँगा। अगर युधिष्ठिर संग्राम में दम भर भी ठहर गये तो मैं उन्हें और उनके साथियों को पकड़कर तुम्हारे १० पास ले आऊँगा; अथवा जो वे युद्ध से भाग खड़े हुए तो वह भी विजय से बढ़कर है।

सञ्जय कहते हैं कि राजन्! द्रोणाचार्य के ये वचन सुनकर त्रिगर्तदेश के राजा सुशर्मा ने, अपने भाइयों के साथ, खड़े होकर दुर्योधन से कहा—महाराज! अर्जुन ने कई बार हमें परास्त किया है, हम पर चढ़ाई की है। हम लोगों ने उनका कोई अपराध नहीं किया, अर्जुन ही अकारण हम पर हमला करने के कारण अपराधी हैं। उन अपनी पराजयों को स्मरण करके हम सदा क्रोध की आग में भीतर ही भीतर जला करते हैं, यहाँ तक कि उसी

बेचैनी के मारे रात को हम सुख की नींद नहीं सो सकते। भाग्यवश ऐसा सुयोग प्राप्त हुआ है कि वही अर्जुन अस्त्र-शस्त्र धारण किये रणभूमि में हमारे सामने मौजूद हैं। आज हम अपनी इच्छा के अनुसार ऐसा काम करेंगे जिससे आपका भला होगा और हमें भी यश प्राप्त होगा। हम अर्जुन को युद्ध के लिए ललकार कर रण-भूमि के बाहर ले जायँगे और वहाँ उनको मार डालेंगे। आज पृथ्वी पर या तो अर्जुन नहीं रहेंगे, और या त्रिगर्त (हम लोग) नहीं रहेंगे। हम लोग यह प्रतिज्ञा करते हैं।

प्रस्थल के अधिपति त्रिगर्तनरेश सुशर्मा ने अपने पाँचों भाइयों—सत्य-वर्मा, सत्यरथ, सत्यव्रत, सत्येषु और सत्यकर्मा—के साथ दस हज़ार रथों सहित युद्ध की शपथ ली। सुशर्मा के साथ मावेल्लक, ललित्थ, मद्रकगण, मालव, तुण्डिकेरगण और अनेक जन-पदों (देशों) से आये हुए ख़ास-ख़ास दस हज़ार रथी भी युद्ध की शपथ लेने के लिए उद्यत हुए। तदनन्तर सब लोगों ने हवन के लिए अलग-अलग वेदियों पर अग्नि को लाकर स्थापित किया। इसके बाद सब योद्धा कुश-चीर और विचित्र कवच धारण करने लगे। घृतस्नात, मौर्वी-मेखला आदि से अलङ्कृत, कुश-चीर और कवच धारण किये, कृतकृत्य, जीवन के मोह को छोड़कर पवित्र लोक, यश और विजय की इच्छा रखनेवाले, पुत्रसम्पन्न, यजमान, वीर महारथीगण रण में शरीर त्यागकर—ब्रह्मचर्य वेदपाठ आदि प्रधान कर्मवाले बहुदक्षिणायुक्त यज्ञों से मिलनेवाले लोकों को—शीघ्र ही पहुँच जाने की इच्छा से हवन, ब्राह्मण-भोजन आदि श्रेष्ठ कर्म करने लगे। उन्होंने अलग-अलग भोजन कराकर, गऊ-सुवर्ण-वस्त्र-दक्षिणा आदि देकर, ब्राह्मणों को सन्तुष्ट किया। फिर परस्पर सम्भाषण और समर-व्रत धारण करके, आग जलाकर दृढ़ निश्चय के साथ, सब लोगों को सुनाकर उन्होंने ऊँचे स्वर से अर्जुन को मारने के लिए प्रतिज्ञा की। वे अग्नि को छूकर, साक्षी बनाकर कहने लगे—"हे नर-पतियो! अर्जुन को मारे बिना अगर हम युद्ध से लौटें, अथवा अर्जुन से डरकर युद्ध से भाग जायँ तो उन्हीं निकृष्ट लोकों को जायँ जहाँ मिथ्यावादी, मदिरा पीनेवाले, ब्रह्महत्या करनेवाले,

२१

गुरुस्त्री-गामी, ब्राह्मण के धन और राजपिण्ड को हरनेवाले, किसी की धरोहर हज़म कर जाने-
३० वाले, शरणागत को त्यागनेवाले और दीन वाणी कहते हुए को मारनेवाले पातकी जाते हैं।
जो हम अर्जुन के सामने से हटें तो उन्हीं निकृष्ट लोकों को जायँ जहाँ शास्त्रविहित मार्ग को
छोड़कर कुमार्ग पर चलनेवाले, नास्तिक, किसी के घर में आग लगा देनेवाले, गोहत्या करनेवाले,
अपकारी, ब्रह्मद्रोही, अग्नि और माँ-बाप को छोड़ देनेवाले, मोहवश ऋतुकाल में अपनी पत्नी के
पास न रहनेवाले, श्राद्ध के दिन स्त्री-सङ्ग करनेवाले, नपुंसक से युद्ध करनेवाले तथा अन्य अनेक
पातकी जाते हैं। यदि आज हम समर में अर्जुन-वधरूप दुष्कर कर्म कर सकेंगे तो अवश्य
उत्तम इष्ट लोकों को पावेंगे।" सुशर्मा आदि योद्धा इस तरह शपथ करके युद्ध के लिए चले
और दक्षिण दिशा की ओर अर्जुन को युद्ध के लिए ललकारते हुए समरभूमि में पहुँचे।

उनका युद्ध के लिए ललकारना सुनकर अर्जुन ने कहा—धर्मराजजी! मेरी यह प्रतिज्ञा
है कि अगर कोई युद्ध के लिए ललकारे तो मैं उससे अवश्य युद्ध करूँगा। इस समय ये संश-
प्तकगण युद्ध के लिए मुझे बुला रहे हैं।

अतएव आप मुझे आज्ञा दीजिए जिससे
मैं जाकर उन्हें उनके साथियों सहित
४० नष्ट कर आऊँ। मैं उनके इस आह्वान
को नहीं सह सकता। मैं आपके आगे
प्रतिज्ञा करता हूँ कि उन्हें अवश्य ही
मारूँगा। राजा युधिष्ठिर ने कहा—हे
पार्थ! महारथी द्रोणाचार्य की प्रतिज्ञा
का हाल तुमसे छिपा नहीं है, तुम सब
सुन चुके हो। इस समय तुम वही
करो जिसमें द्रोण की प्रतिज्ञा किसी
तरह पूरी न होने पावे। अस्त्रविद्या में
निपुण और युद्ध में न थकनेवाले द्रोणा-
चार्य बड़े पराक्रमी हैं। उन्होंने मुझे
पकड़कर दुर्योधन के पास ले जाने की
प्रतिज्ञा की है। इस पर अर्जुन ने
कहा—महाराज! आज मैं सत्यजित् को आपकी रक्षा का भार सौंपता हूँ; वही आपकी
रक्षा करेंगे। इनके जीते जी आचार्य अपनी प्रतिज्ञा पूरी न कर सकेंगे। यदि दैवयोग से
सत्यजित् वीरगति को प्राप्त हों तो फिर आप लोग युद्धभूमि में न ठहरिएगा।

सञ्जय कहते हैं—यह सुनकर महाराज युधिष्ठिर ने प्रीति-प्रफुल्ल नेत्रों से अर्जुन को देख-कर गले से लगाया और बारम्बार आशीर्वाद देकर जाने की अनुमति दी। भूखा सिंह जैसे भूख मिटाने के लिए मृगों के झुण्ड की ओर झपटता है वैसे ही अर्जुन त्रिगर्त देश की सेना की ओर वेग से चले। इसी अवसर में दुर्योधन के क्रुद्ध सैनिकगण अर्जुन-परित्यक्त युधिष्ठिर को पकड़ने के लिए प्रसन्नतापूर्वक आगे बढ़े। अब दोनों ओर के योद्धा लोग वैसे ही महावेग से भिड़ गये जैसे वर्षाकाल में गङ्गा और सरयू वेग के साथ समुद्र में जा मिलती हैं।

अठारहवाँ अध्याय

अर्जुन और संशप्तकगण का युद्ध

सञ्जय कहते हैं—महाराज! उधर संशप्तकगण समतल भूमि में ठहरकर, प्रसन्नतापूर्वक रथों का अर्धचन्द्राकार मोर्चा बनाकर, अर्जुन को आते देख हर्ष के साथ चिल्लाने और सिंहनाद करने लगे। वह शब्द चारों ओर और अन्तरिक्ष भर में भर गया। किन्तु चारों ओर मनुष्यों की भारी भीड़ थी, इस कारण उसकी प्रतिध्वनि नहीं हुई। अर्जुन ने उनको अत्यन्त प्रसन्न देखकर कृष्णचन्द्र से मुसकाकर कहा—हे वासुदेव! इन मरने के लिए तैयार त्रिगर्तदेश के लोगों को देखिए। ये लोग रोने की जगह प्रसन्नता और हर्ष प्रकट कर रहे हैं। अथवा इसमें सन्देह नहीं कि वे यह समझकर हर्ष प्रकट कर रहे हैं कि कापुरुषों के लिए दुष्प्राप्य उत्तम लोक उन्हें, युद्ध में मरने से, प्राप्त होंगे। अब त्रिगर्त लोगों की विशाल सेना के पास पहुँचकर अर्जुन ने बड़े ज़ोर से सुवर्णभूषित 'देवदत्त' शङ्ख बजाया, जिससे सब दिशाएँ प्रतिध्वनित हो उठीं। संशप्तकगण की सेना उस शङ्ख के भयानक शब्द को सुनकर अत्यन्त शङ्कित और पत्थर की मूर्ति की तरह चेष्टारहित हो गई। उनके घोड़े डर से आँखें फाड़कर, कान खड़े करके, पैर और गर्दन समेटकर एक साथ रक्त उगलने और मल-मूत्र-त्याग करने लगे। कुछ समय के बाद संशप्तकगण होश में आये। उन्होंने अपनी सेना को सँभाल करके अर्जुन पर लगातार बाण बरसाना शुरू किया। अर्जुन ने संशप्तकों के चलाये तीक्ष्ण हज़ारों बाणों को केवल पन्द्रह बाणों से राह में ही टुकड़े-टुकड़े कर डाला। तब संशप्तकों में से हर एक ने अर्जुन को दस-दस बाण मारे। अर्जुन ने भी उनको तीन-तीन बाण मारे। अर्जुन को फिर उन्होंने पाँच-पाँच बाण मारे। अर्जुन ने उसके उत्तर में फिर दो-दो तीक्ष्ण बाण मारकर उनको घायल कर दिया। संशप्तकगण ने फिर कुपित होकर, जैसे जलधाराएँ तालाब को भर देती हैं वैसे ही, तीक्ष्ण बाणों की वर्षा से श्रीकृष्ण और अर्जुन सहित उनके रथ को पाट दिया। वन के बीच जैसे भौंरों की कतार फूले हुए वृक्ष पर गिरती है वैसे ही उस समय अर्जुन के ऊपर हज़ारों बाण गिरने लगे।

अब सुबाहु ने बड़े, भारी और तीक्ष्ण लोहमय तीस बाण अर्जुन के किरीट में मारे। स्वर्णपुङ्खयुक्त बाण किरीट-मुकुट में लगने से अर्जुन उदित दिवाकर से, और सुवर्ण के अलङ्कारों से अलङ्कृत से, जान पड़ने लगे। तब अर्जुन ने भल्ल बाण मारकर सुबाहु का दृढ़ हस्तावाप (हाथों के बचाव के लिए पहना जानेवाला) काट डाला। अर्जुन सुबाहु पर सहस्रों बाणों की वर्षा करने लगे। तब सुशर्मा, सुरथ, सुधर्मा, सुधन्वा और सुबाहु ने अत्यन्त कुपित होकर दस-दस बाण अर्जुन को मारे। अर्जुन ने उन सबको तीक्ष्ण बाणों से घायल करके भल्ल बाणों से उनकी ध्वजाएँ काट डालीं। अर्जुन ने क्रुद्ध होकर सुधन्वा का धनुष काटकर रथ के घोड़े मार डाले, और उसका शिरस्त्राण-शोभित सिर पृथ्वी पर काट गिराया। इससे सुधन्वा के अनुचर अत्यन्त विह्वल होकर भागकर दुर्योधन की सेना के पास जा खड़े हुए। जैसे सूर्यदेव अपनी किरणों से अँधेरे को नष्ट कर देते हैं वैसे ही वीर अर्जुन कुपित होकर, लगातार बाण बरसाकर, त्रिगर्तसेना का संहार करने लगे। त्रिगर्तसेना के लोग शङ्कित और छिन्न-भिन्न होकर रक्षक की खोज में इधर-उधर भागने लगे। संशप्तकगण अर्जुन को कोप से अत्यन्त अधीर देखकर बहुत ही डरे। अर्जुन के बाणों से घायल होकर वे लोग भयातुर मृगों के समान मोहाभिभूत होने लगे। त्रिगर्तराज सुशर्मा ने क्रुद्ध होकर संशप्तकगण से कहा—वीरो! डरकर भाग खड़े होना तुम लोगों का कर्तव्य नहीं है। तुम लोग दुर्योधन के सामने वैसी भयङ्कर शपथ खाकर यहाँ लड़ने आये हो। अब इस तरह रण से भागकर वहाँ प्रधान-प्रधान वीरों से क्या कहोगे? उन्हें क्या मुँह दिखाओगे? भागोगे तो लोग क्या तुमको हँसेंगे नहीं? अतएव तुम सब मिलकर यथाशक्ति युद्ध करो। मृत्यु का क्या डर है? २०

सब सैनिकगण सुशर्मा के उत्साहवाक्य सुनकर लौट पड़े। वे तत्क्षण महाकोलाहल करते हुए, शङ्ख बजाते हुए, हर्ष और सन्तोष के साथ लड़ने के लिए डट गये। संशप्तकगण और नारायणी सेना जीवन का मोह छोड़कर युद्ध करने लगी। ३१

उन्नीसवाँ अध्याय

अर्जुन के घोर युद्ध का वर्णन

सञ्जय कहते हैं कि महाराज! अर्जुन ने संशप्तकगण को लौटकर आते देख महात्मा वासुदेव से कहा—हे श्रीकृष्ण! झटपट संशप्तकगण के सामने रथ ले चलिए। जान पड़ता है, प्राण रहते ये युद्ध करना न छोड़ेंगे। हे वासुदेव! आज आप मेरे बाहुबल और धनुष का प्रभाव देखिए। रुद्रदेव ने जैसे पशुओं का संहार किया था वैसे ही मैं आज इन संशप्तकगण

का संहार करूँगा। वासुदेव ने अर्जुन के ये वचन सुनकर, मङ्गल-कामना द्वारा उनका अभिनन्दन करके, उनकी इच्छा के अनुसार रथ चलाया। सफ़ेद घोड़ों से युक्त वह रथ आकाशचारी विमान की तरह शोभायमान हुआ। राजन्! देवासुर-संग्राम में इन्द्र के रथ के समान वह अर्जुन का रथ अनेक प्रकार की गतियों से मण्डलाकार घूमने लगा।

तब विविध शस्त्र हाथ में लिये हुए नारायणी सेना ने दम भर में बाण बरसाकर वासुदेव सहित अर्जुन को अदृश्य कर दिया। महावीर अर्जुन ने भी परम कुपित होकर उस युद्ध में दूना पराक्रम प्रकट किया। उन्होंने फुर्ती के साथ गाण्डीव धनुष को हाथ से पोंछकर, क्रोधसूचक भौंहें टेढ़ी करके, 'देवदत्त' शङ्ख बजाया और शत्रुनाशन त्वाष्ट्र अस्त्र छोड़ा। उस अस्त्र १० के प्रभाव से एक ही अर्जुन के अलग-अलग हज़ारों रूप चारों ओर दिखाई पड़ने लगे। शत्रुपक्ष के योद्धा लोग उन अनेक प्रतिरूपों से ऐसे मोहित हो गये कि परस्पर एक दूसरे को अर्जुन समझकर मारने-काटने लगे। "ये कृष्ण और अर्जुन एकत्र मौजूद हैं," इस तरह कहते-कहते वे लोग माया से मोहित होकर परस्पर प्रहार करने लगे। महाराज! परम दिव्य त्वाष्ट्र अस्त्र से मोहित संशप्तकगण इस तरह परस्पर प्रहार करके नष्ट होने लगे। संग्राम में योद्धा लोग फूले हुए ढाक के पेड़ के समान शोभायमान हुए। अर्जुन के उस अस्त्र ने शत्रुओं को यमपुर भेज दिया और उनके बाणों को भस्म कर दिया।

अब अर्जुन हँसकर ललित्थ, मालव, मावेल्लक और त्रिगर्तदेश के योद्धाओं को तीक्ष्ण बाणों से पीड़ित करने लगे। वे सब महावीर भी कालप्रेरित होकर अर्जुन के ऊपर अनेक प्रकार के असंख्य बाण छोड़ने लगे। उन दारुण बाणों से अर्जुन, वासुदेव और उनका ध्वजासहित दिव्य रथ, सब अदृश्य हो गये। इसी अवसर में निशाना ठीक लग जाने से संशप्तकगण आपस में कोलाहल करने लगे। वे लोग श्रीकृष्ण और अर्जुन को विनष्ट समझकर प्रसन्नचित्त हो वस्त्रों को हिलाने लगे। हज़ारों योद्धा भेरी, मृदङ्ग, शङ्ख आदि बजाने और कोलाहल करने लगे। वासुदेव बहुत ही थककर और पसीने से तर होकर अर्जुन से बोले—पार्थ, तुम कहाँ २० हो? हे शत्रुनाशन, मैं तुम्हें देख नहीं पाता। तुम जीवित भी हो? यह सुनकर अर्जुन ने उसी समय वायव्य अस्त्र छोड़ा, जिससे वे सब बाण उड़ गये। उस अस्त्र से उत्पन्न वायु ने सूखे पत्तों की तरह हाथी, घोड़े, रथ और शस्त्र-अस्त्र आदि के साथ संशप्तकगण को उड़ाना शुरू कर दिया। राजन्, जैसे पक्षियों के झुण्ड वृक्षों पर से उड़ते हैं वैसे ही संशप्तकगण उस वायव्य अस्त्र से उड़ने लगे। अर्जुन इस प्रकार उन्हें, अत्यन्त व्याकुल करके, हज़ारों बाणों से पीड़ित करने लगे। अर्जुन भल्ल बाणों से किसी का सिर, किसी का सशस्त्र हाथ और किसी की हाथी की सूँड़ के समान जाँघें काट-काटकर पृथ्वी पर गिराने लगे। किसी की पीठ के टुकड़े-टुकड़े हो गये, किसी की भुजा के कई खण्ड हो गये, और किसी-किसी की आँख फूट गई। वीर अर्जुन

इस प्रकार शत्रुओं को छिन्न-भिन्न करके गन्धर्व नगर के समान सुसज्जित बड़े-बड़े रथों के टुकड़े-टुकड़े और हाथी-घोड़े आदि को विनष्ट करने लगे। कहीं-कहीं पर ध्वजाओं के कट जाने से

मुण्डे रथ ठुण्डे ताड़ के पेड़ों के जङ्गल से प्रतीत होने लगे। कहीं पर योद्धा-बढ़िया धनुष-पताका से युक्त, ध्वज-दण्डमण्डित और अंकुशशोभित बड़े-बड़े गजराज वज्रपात से फटे हुए वृक्षयुक्त पहाड़ों के समान विदीर्ण होकर पृथ्वी पर गिरने लगे। चामरशोभित, कवच-धारी घोड़े अर्जुन के बाणों से मरकर आँखें निकालकर अपने सवारों सहित पृथ्वी पर धमाधम गिर रहे थे। तल-वार और नाराच बाण लगने से जिनके कवच कट गये हैं ऐसे हज़ारों पैदल योद्धा अर्जुन के बाणों से मर-मरकर गिरने लगे। कोई मर गया था, कोई मारा जा रहा था, कोई गिर पड़ा था, कोई गिर रहा था, कोई चक्कर खाकर गिरनेवाला था और कोई गिरकर निश्चेष्ट हो रहा था। उस समय वह युद्धभूमि बहुत ही भयानक हो उठी। युद्धभूमि में एकाएक दौड़-धूप होने से जो बहुत सी धूल उड़ी थी, वह अपार रक्त की वर्षा से बैठ गई। सैकड़ों-हज़ारों कबन्धों से परिपूर्ण होकर वह युद्ध का मैदान बहुत ही भयानक हो गया। उस समय, प्रलयकाल में पशु-संहार करनेवाले रुद्र की क्रीड़ाभूमि के समान अर्जुन का वह भयानक रथ शोभा को प्राप्त हुआ। संशप्तकगण की सेना के हाथी, घोड़े और रथ (के घोड़े) व्याकुल हो उठे। सब शत्रुसेना प्रहार से पीड़ित होकर भी अर्जुन के सामने पहुँचती और मर-मरकर इन्द्रपुरी को जा रही थी। उस समय वह समरभूमि मारे गये महारथियों से परिपूर्ण होकर अत्यन्त शोभित हुई। इधर अर्जुन समर में उन्मत्त हो उठे, उधर द्रोणाचार्य युधिष्ठिर को पकड़ने के लिए उनकी ओर चले। विशाल सुसज्जित सशस्त्र सेना, युधिष्ठिर को पकड़ने की इच्छा से फुर्ती से, द्रोणाचार्य के साथ चली। उस समय घोर संग्राम होने लगा।

३१

३९

बीसवाँ अध्याय

संकुल युद्ध का वर्णन

सञ्जय कहते हैं—राजन् ! द्रोणाचार्य ने वह रात बिता करके दुर्योधन को बहुत धीरज बँधाया। उधर युधिष्ठिर की रक्षा का काम अन्य वीरों को सौंपकर महावीर अर्जुन संशप्तक-गण को मारने गये, इधर द्रोणाचार्य युधिष्ठिर को पकड़ने की इच्छा से व्यूहरचना-पूर्वक अपनी विशाल सेना साथ लेकर पाण्डवों की सेना की ओर चले। युधिष्ठिर ने देखा कि द्रोणाचार्य अपनी सेना को सुपर्णव्यूह रचकर युद्ध में लाये हैं। तब युधिष्ठिर ने भी मण्डलार्द्धव्यूह अर्थात् अर्द्धचक्राकार व्यूह रचकर उनके विरुद्ध अपनी सेना को सञ्चालित किया। कौरव-सेना का व्यूह इस तरह था कि स्वयं महारथी द्रोणाचार्य उस व्यूह के मुख में स्थित थे। अपने अनुचरों और भाइयों सहित महाराज दुर्योधन उसके मस्तक में स्थित थे। कृतवर्मा और महातेजस्वी कृपाचार्य दोनों नेत्रों के स्थान पर थे। व्यूह के ग्रीवाभाग में भूतशर्मा, क्षेमशर्मा, पराक्रमी करकाक्ष, कलिङ्ग, सिंहल, प्राच्य, शूर आभीर, दशेरक, शक, यवन, काम्बोज, हंस-पथ, शूरसेन, दरद, मद्र और केकयगण हज़ारों हाथी, घोड़े, रथ और पैदल लिये हुए स्थित थे। भूरिश्रवा, शल्य, सोमदत्त और वाह्लीक अक्षौहिणी सेना साथ लिये उसके दक्षिण भाग की रक्षा कर रहे थे। अवन्ती देश के विन्द, अनुविन्द और काम्बोजराज सुदक्षिण अश्वत्थामा के आगे रहकर वाम भाग की रक्षा कर रहे थे। अम्बष्ठ, कलिङ्ग, मागध, पौण्ड्र, मद्रक, गान्धार, शकुन, प्राच्य, पार्वतीय और वसाति-गण पृष्ठभाग की रक्षा कर रहे थे। महारथी कर्ण के पुत्र अपने जातिवालों, बान्धवों और भाइयों सहित बहुत से देशों से आई हुई विशाल सेना साथ लिये उस व्यूह के पुच्छभाग में स्थित हुए। जयद्रथ, भीमरथ, सम्पाति, ऋषभ, जय, भूमिञ्जय, वृष, क्राथ और पराक्रमी निषधराज बहुत सी सेना साथ लेकर उसके वक्षःस्थल में स्थित हुए। हाथी, घोड़े, रथ, पैदल आदि के द्वारा द्रोणाचार्य का रचा हुआ वह सुपर्णव्यूह आँधी से चलायमान महासागर के समान आन्दोलित होने लगा। बड़े-बड़े वीर योद्धा लोग युद्ध की इच्छा से व्यूह के पक्ष-प्रपक्ष-स्थानों से, वर्षाकाल के बिजली से शोभित गरजते हुए मेघों के समान, निकलने लगे। सुसज्जित हाथी पर सवार प्राग्ज्योतिषेश्वर भगदत्त उस व्यूह के भीतर उदयाचल पर स्थित सूर्य के समान लगते थे। सेवकों ने भगदत्त के मस्तक पर फूलमाला से युक्त सफ़ेद छत्र लगाया, जिससे कार्त्तिकी पूर्णिमा को कृत्तिका नक्षत्रयुक्त चन्द्रमा के समान भगदत्त की शोभा हुई। उनका अञ्जनपुञ्ज-सदृश मदमत्त गजराज जलधाराओं से नहा रहे महापर्वत के समान शोभायमान हुआ। देवगण जैसे इन्द्र के आस-पास शोभा को प्राप्त होते हैं, वैसे ही विविध शस्त्र धारण किये हुए, विचित्र अलङ्कारों से शोभित, पहाड़ी राजा लोग भगदत्त के आस-पास शोभित हो रहे थे। ११

उधर धर्मराज युधिष्ठिर ने बहुत ही दृढ़ और दुर्भेद्य सुपर्णव्यूह की रचना देखकर सेना-
२० पति धृष्टद्युम्न से कहा—हे वीर ! आज ऐसा उपाय करो जिसमें द्रोणाचार्य मुझे पकड़ न सकें। धृष्टद्युम्न ने कहा—महाराज ! आप निर्भय रहें, द्रोणाचार्य बहुत यत्न करके भी आपको पकड़ न सकेंगे। मैं अपनी सेना और साथियों सहित उन्हें रोकूँगा, उनकी सारी चेष्टा व्यर्थ कर दूँगा। मेरे जीते जी आप किसी तरह की चिन्ता न करें। आचार्य द्रोण मुझको किसी तरह परास्त नहीं कर सकते।

सञ्जय कहते हैं—अब महावीर धृष्टद्युम्न बाणों की वर्षा करते हुए आचार्य के सामने आये। द्रोणाचार्य अपने काल-स्वरूप अशुभदर्शन धृष्टद्युम्न को देखकर बहुत ही अप्रसन्न और उत्साहहीन हो गये। महाराज ! उस समय आपके पुत्र दुर्मुख, द्रोणाचार्य को अत्यन्त उदास देखकर, उनका हित और सहायता करने के लिए धृष्टद्युम्न के सामने आये। तब वे दोनों वीर भयानक संग्राम करने लगे। धृष्टद्युम्न ने बड़ी फुर्ती के साथ दुर्मुख को अपने बाणों की वर्षा से ढक दिया और फिर लगातार बाण बरसाकर आचार्य को भी रोका। दुर्मुख ने धृष्टद्युम्न के द्वारा आचार्य को निवारित देखकर फुर्ती से जाकर अनेक चिह्नों से युक्त तीक्ष्ण बाणों के प्रहार से धृष्टद्युम्न को मोहित कर दिया। दोनों वीर इस तरह घोर संग्राम इधर करने लगे, उधर आचार्य द्रोण
३० युधिष्ठिर की सेना पर बाण बरसाने लगे। जैसे मेघमण्डल वायु के वेग से छिन्न-भिन्न हो जाता है वैसे ही युधिष्ठिर की सेना भी छिन्न-भिन्न होने लगी। वह युद्ध क्षण भर ऐसा घोर हुआ कि देखनेवाले दङ्ग हो गये। अन्त को योद्धा लोग उन्मत्त की तरह युद्ध की मर्यादा और नियम आदि तोड़ करके तुमुल युद्ध करने लगे। उस समय दोनों पक्ष के लोग अपने-पराये का कुछ ख़याल न करके जो सामने पड़ा उसी को मारने लगे। [धूल और बाणों से ऐसा अँधेरा छा गया कि] केवल अनुमान और चेतना के द्वारा एक दूसरे को जान सकता था, किन्तु वास्तव में कोई किसी को पहचान नहीं सकता था। वीरों के अङ्गों में चूड़ामणि, निष्क आदि अन्यान्य आभूषण और कनकमण्डित कवच चमक रहे थे, जिनसे वे योद्धा सूर्य के समान प्रतीत होते थे।

बगलों की क़तार से शोभित मेघमण्डल के समान वे चलते-फिरते हुए पताकायुक्त गजराज, घोड़े और रथ अत्यन्त मनोहर देख पड़ते थे। योद्धाओं को योद्धाओं ने मारा, घोड़े घोड़ों से भिड़ गये, हाथियों ने हाथियों को गिराया और रथियों ने रथियों को साफ़ किया। दम भर में हाथियों से हाथी भिड़ गये, और उनमें घोर युद्ध होने लगा। उन मदान्ध हाथियों के दाँतों की टक्कर और शरीर की रगड़ से धूमयुक्त आग प्रकट होने लगी। हाथियों के दाँत और हौदों पर की पताकाएँ टूट-टूटकर गिरने लगीं और पूर्वोक्त प्रकार से आग प्रज्वलित हो उठी, जिससे वे गजराज आकाश में बिजली-युक्त बादलों के समान शोभा को प्राप्त होने लगे। जैसे शरद ऋतु के प्रथम आकाश-मण्डल में मेघ छा जाते हैं, वैसे ही उस रणभूमि में चारों ओर हाथी ही हाथी देख पड़ते थे। कोई हाथी घोर चीत्कार कर रहा था, कोई प्रहार से पीड़ित होकर पृथ्वी पर गिर रहा था। कोई-कोई हाथी तीक्ष्ण तोमर और बाणों के प्रहार से पीड़ित हो प्रलयकाल के मेघ की तरह चिल्लाता हुआ पृथ्वी पर गिरकर मर जाता था। कोई हाथी बाण और तोमर के प्रहार से विह्वल और शङ्कित होकर भाग खड़ा हुआ। कुछ हाथी दूसरे हाथियों के दाँतों के कठिन प्रहार से पीड़ित होकर प्रलयकाल के मेघगर्जन के समान भयानक आर्तनाद करने लगे। कोई हाथी दूसरे हाथी के प्रहार से पीड़ित होकर युद्ध छोड़कर भागा तो महावत ने उसको बारम्बार अङ्कुश मारे, जिससे उत्तेजित होकर वह फिर लौट पड़ा और क्रोधान्ध होकर शत्रुसेना को रौंदने लगा। ४१

महावतों में से किसी को दूसरे महावत ने बाण या तोमर मारे और वह मरकर हाथी की पीठ पर से पृथ्वी पर गिर पड़ा; उसके हाथों से अंकुश और शस्त्र छूटकर अलग गिर पड़े। महावतों के बिना ख़ाली हौदा लादे हुए हाथी आर्तनाद करने और परस्पर भिड़कर, छिन्न-भिन्न मेघखण्ड की तरह, पृथ्वी पर गिरने लगे। कुछ हाथी पीठ पर निहत, पातित और पतितायुध योद्धाओं को लादे हुए बेसिलसिले गैंड़े की तरह इधर-उधर फिर रहे थे। कुछ हाथी तोमर, ऋष्टि और परशु आदि शस्त्रों की चोट खाकर आर्तनाद करते हुए, फटे हुए पर्वतशिखर की तरह, धमाधम पृथ्वी पर गिर रहे थे। उनकी पर्वतसदृश देहों के धमाके से पृथ्वीतल एकाएक काँप उठता था और शब्दायमान होने लगता था। मारे गये महावत की लाश लादे हुए पताका-शोभित बड़े-बड़े हाथी मर-मरकर चारों ओर गिरे पड़े थे, जिनसे वह रणभूमि पर्वतमालाओं से घिरी हुई सी जान पड़ती थी। हाथियों पर बैठे हुए महावत रथियों के मारे भल्ल बाणों से आहत और भिन्न-हृदय होकर, अंकुश और तोमर छोड़कर, पृथ्वी पर गिरते देख पड़ते थे। कोई-कोई हाथी लोहमय नाराच बाणों की चोट खाकर क्रौञ्च पक्षी की तरह चिल्लाते हुए दोनों पक्ष की सेना को रौंदते हुए चारों ओर भागने लगे। ५०

उस समय वह रणभूमि छिन्न-भिन्न हाथियों, घोड़ों और रथों से परिपूर्ण तथा मांस और रक्त की भयानक कीचड़ से अत्यन्त दुर्गम हो उठी। बड़े-बड़े हाथी पहियोंदार और बे-पहियों के

बड़े-बड़े रथों को अपने दाँतों से तोड़ते-फोड़ते हुए उन्हें रथियों सहित ऊपर उछालने लगे। रथी वीरों से शून्य रथ, सवारों से ख़ाली घोड़े और हाथी शङ्कित और घबराये हुए चारों ओर भागने लगे। ऐसा संकुल युद्ध हुआ कि पिता पुत्र को और पुत्र पिता को न पहचानकर मारने-काटने लगा। इस तरह अत्यन्त घोर संग्राम होने पर ऐसा हो गया कि किसी को कुछ नहीं जान पड़ता था। रक्त की कीच में लोगों के पैर बित्ता-बित्ता भर धँस जाने लगे। उस समय ऐसा जान पड़ने लगा कि मानों वृक्ष प्रज्वलित दावानल के बीच में गाड़ दिये गये हों। कपड़े, कवच, छत्र और पताका आदि रक्त में सन जाने के कारण सभी कुछ रुधिरमय सा प्रतीत होने लगा। मरे और घायल होकर गिरे अधमरे घोड़े, हाथी, रथ और मनुष्य सब रथों के पहियों से छिन्न-भिन्न और खण्ड-खण्ड होने लगे। वह सेना का समुद्र ऐसा था कि बड़े-बड़े हाथी ही उसका महावेग थे, मनुष्यों की लोथें सेवार सी प्रतीत होती थीं और रथ भयानक आवर्त से देख पड़ते थे। ६० विजयाभिलाषी वीरगण वाहनरूप नौका पर बैठे उसमें नहा करके, निमग्न न होकर, शत्रुओं को मोह से अभिभूत करने लगे। अपने-अपने विशेष चिह्नों से अलङ्कृत वीरगण बाणों से अदृश्य हो उठे। बाण-प्रहार से उनके चिह्न नष्ट हो जाने के कारण कोई किसी को नहीं पहचान सकता था। महारथी द्रोणाचार्य उस भयानक संग्राम में शत्रुओं को मोहाभिभूत करके राजा युधिष्ठिर की ओर चले। ६३

महारथी द्रोण ने अत्यन्त कुपित होकर......बाण-वर्षा से शत्रु-सेना को छा दिया—पृ० २२१९

इक्कीसवाँ अध्याय

द्रोणाचार्य के युद्ध का वर्णन

सञ्जय कहते हैं—महाराज ! राजा युधिष्ठिर द्रोणाचार्य को अपने समीप आये हुए देखकर उन पर लगातार तीक्ष्ण बाण बरसाने लगे। हाथियों के यूथपति को जब कोई महा-सिंह पकड़ना चाहता है तब जैसे अन्य हाथी चिल्लाने लगते हैं, वैसे ही युधिष्ठिर के सैनिक उस समय कोलाहल करने लगे। सत्यविक्रमी सत्यजित्, द्रोणाचार्य को देखकर, युधिष्ठिर की रक्षा के लिए आचार्य के सामने आये। सेना को क्षुब्ध करके दोनों योद्धा वैसा ही घोर युद्ध करने लगे जैसा राजा बलि और इन्द्र से हुआ था। पराक्रमी सत्यजित् ने द्रोणाचार्य को तीक्ष्ण बाणों से घायल करके उनके सारथी को विषैले साँप और काल के समान पाँच बाण मारे। इससे वह मूच्छित हो गया। फिर सत्यजित् ने आचार्य के घोड़ों को दस बाण मारे, दोनों पार्श्वों में स्थित दोनों सारथियों को दस-दस बाणों से घायल किया, और मण्डलगति से घूमकर क्रोधपूर्वक शत्रुनाशन द्रोणाचार्य के रथ की ध्वजा काट डाली।

शत्रुदमन द्रोण ने रणभूमि में सत्यजित् का यह अद्भुत कार्य देखकर, उनका काल आया हुआ समझकर, तत्क्षण मर्मभेदी तीक्ष्ण दस बाण उनको मारे और उनका बाण सहित धनुष काट डाला। राजन् ! प्रतापी सत्यजित् ने फुर्ती के साथ अन्य धनुष लेकर द्रोणाचार्य को कङ्कपत्र-शोभित तीस बाण मारे। सत्यजित् को इस प्रकार द्रोणाचार्य पर आक्रमण करते देखकर पाण्डवगण चिल्लाकर, कपड़े हिलाकर, हर्ष प्रकट करने लगे। तब महाबली वृक ने अत्यन्त कोप करके द्रोणाचार्य के हृदय में साठ बाण मारे। देखनेवालों को वृक का यह कार्य अत्यन्त अद्-भुत मालूम पड़ा। महारथी द्रोण ने भी अत्यन्त कुपित होकर, आँखें तरेरकर, शत्रु की ओर देखा और फिर वेग के साथ बाणवर्षा से शत्रुसेना को छा दिया। द्रोणाचार्य ने सत्यजित् और वृक का धनुष काटकर छः बाणों से वृक के घोड़ों और सारथी को मारकर वृक को भी मार डाला। उधर सत्यजित् बड़े वेग के साथ अन्य धनुष लेकर तीक्ष्ण बाणों से द्रोणाचार्य को तथा उनके सारथी, ध्वजा और घोड़ों को छेदने लगे। सत्यजित् का यह प्रहार-कौशल असह्य होने के कारण, उन्हें मारने के लिए, महाबली द्रोणाचार्य ने शीघ्रता के साथ उनके घोड़े, ध्वजा, धनुष की मूठ और आसपास रहनेवाले रक्षकों तथा सारथी के ऊपर तीक्ष्ण बाण बरसाना शुरू किया। आचार्य द्रोण ने इस तरह जब बार-बार सत्यजित् के अनेक धनुष काट डाले तब महा-वीर सत्यजित् अत्यन्त कुपित होकर आचार्य के साथ भयानक युद्ध करने लगे। महारथी वीरवर द्रोणाचार्य ने ऐसे प्रभावशाली सत्यजित् को अपने आगे देख, अत्यन्त कुपित होकर, एक अर्धचन्द्र बाण से उनका सिर काट डाला।

महारथी सत्यजित् के इस तरह मारे जाने पर धर्मराज युधिष्ठिर द्रोणाचार्य के डर से शङ्कित और विह्वल होकर, बड़े वेग से रथ हँकवाकर, उनके आगे से भाग खड़े हुए। इधर पाञ्चाल, केकय, मत्स्य, चेदि, करूष और कोशलदेश के योद्धागण महाराज युधिष्ठिर की रक्षा करने के लिए आचार्य के आगे उपस्थित हुए। जिस तरह आग भूसी के ढेर को जलाती है वैसे ही महावीर द्रोणाचार्य युधिष्ठिर को पकड़ने की इच्छा से उन सामने आये हुए वीरों को भस्म करने लगे। उस समय राजा विराट के छोटे भाई शतानीक द्रोणाचार्य को बारम्बार सेना का संहार करते देखकर उनके सामने पहुँचे। दुष्कर कर्म करने के लिए उन्होंने सूर्य-किरण-सदृश तेजःपुञ्ज छः बाणों से द्रोणाचार्य को, उनके घोड़ों को और सारथी को घायल किया। फिर बारम्बार सिंहनाद करके वे द्रोण पर बाण बरसाने लगे। उस समय महारथी द्रोणाचार्य ने बड़ी फुर्ती के साथ क्षुरप्र बाण मारकर उनका कुण्डलमण्डित सिर काटकर गिरा दिया। यह देखकर मत्स्यदेश की सेना डर के मारे भाग खड़ी हुई।

इस तरह महारथी द्रोणाचार्य मत्स्यों को परास्त करके चेदि, कारूष, केकय, पाञ्चाल, सृञ्जय और पाण्डवों की सेना को बारम्बार मारने और हराने लगे। अत्यन्त कुपित द्रोणाचार्य को, वन को जलाते हुए दावानल के समान, सब शत्रुसेना को भस्म करते देखकर सृञ्जयगण डर गये। शत्रुनाशन महारथी द्रोणाचार्य के धनुष का शब्द दसों दिशाओं में गूँज उठा। द्रोण के हाथ से छूटे हुए बाण असंख्य घोड़ों, हाथियों, रथों और पैदलों को नष्ट करने लगे। ग्रीष्म ऋतु में प्रबल आँधी से सञ्चालित, शिला बरसानेवाले, मेघों की तरह महाधनुर्द्धर, महाबाहु, मित्रपक्ष को अभयदान करनेवाले महावीर आचार्य लगातार तीक्ष्ण बाण बरसाते हुए युद्धभूमि में चारों ओर विचरने लगे। उस समय उनका सुवर्णभूषित धनुष मेघमण्डल में स्थित बिजली की तरह चमकता और मण्डलाकार घूमता हुआ चारों ओर दृष्टिगोचर होने लगा। उनकी ध्वजा की वेदी हिमालय के ऊँचे शिखर के समान शोभायमान थी। सुरासुरों के वन्दनीय महाप्रतापी भगवान् विष्णु जैसे दानवदल का दलन करें वैसे ही महावीर्यशाली आचार्य

३०

पाण्डवसेना का संहार करने लगे। महाबली सत्यपराक्रमी द्रोण ने अस्त्रविद्या के बल से मनुष्य-कुलनाशिनी, कायरों को डरानेवाली और यमपुरी को जानेवाली घोर रक्त की नदी बहा दी। गीदड़, कुत्ते और गिद्ध आदि मांसभोजी जीव तथा राक्षस उस नदी के आसपास भरे पड़े थे। टूटे-फूटे कवच उसमें लहरों के समान थे, ध्वजाएँ आवर्त-सदृश थीं, घोड़े और हाथी ग्राहगण थे, तलवारें मछली थीं, वीरों की हड्डियाँ कङ्कड़-पत्थर की जगह थीं, भेरी मुरज आदि बाजे कच्छप थे, ढालें और कवच छोटी-छोटी डोंगियाँ थे, केश सेवार और घास-फूस थे, बाणों की गति वेग था, धनुष प्रवाह थे, बाहुएँ पन्नग और मृत मनुष्यों के मस्तक ही शिलाओं की जगह पर थे। लाशों की जाँघें मछली सी, गदाएँ डोंगी सी, पगड़ियाँ फेनपुञ्ज सी, अँतड़ियाँ कीड़े-मकोड़े सी, ध्वजाएँ तटवृक्ष सी और घुड़सवार तथा हाथी नक्र (घड़ियाल) से प्रतीत होते थे। उस रक्त की नदी में मांस और रुधिर की कीचड़ हो रही थी। ४५

द्रोणाचार्य को साक्षात् काल के समान सेना का संहार करते देखकर अनेक वीरों के साथ पाण्डवगण उनके सामने आये और उनको रोकने की चेष्टा करने लगे। सूर्य के समान तेजस्वी द्रोणाचार्य भी उनसे घोर युद्ध करने लगे। यह देखकर कौरवपक्ष के सब राजा और राजपुत्र भी एकत्र होकर द्रोणाचार्य को चारों ओर से घेरकर उनकी रक्षा करने लगे। महावीर शिखण्डी ने पाँच बाण, क्षत्रवर्मा ने बीस बाण, वसुदान ने पाँच बाण, उत्तमौजा ने तीन बाण, क्षत्रदेव ने सात बाण, सात्यकि ने सौ बाण, युधामन्यु ने आठ बाण, युधिष्ठिर ने बारह बाण, ५० धृष्टद्युम्न ने दस बाण और चेकितान ने तीन बाण द्रोणाचार्य को मारे।

महावीर द्रोणाचार्य ने इन वीरों के बाणों की चोट सहकर, क्रुद्ध हो, मस्त हाथी की तरह रथसेना को लाँघकर दृढ़सेन को मार गिराया। फिर वे सहसा राजा क्षेम के सामने पहुँचे। क्षेम निर्भय भाव से प्रहार करने लगे। आचार्य ने उन्हें नव बाण मारे। राजा क्षेम मर गये। उनका शरीर रथ से पृथ्वी पर गिर पड़ा। महावीर द्रोणाचार्य चारों तरफ़ फिरकर सेना के मध्यस्थल में पहुँचे। अपने पक्ष के अन्य वीरों की रक्षा वही कर रहे थे, उनकी रक्षा कोई क्या करता। द्रोण ने वीर शिखण्डी को बारह और उत्तमौजा को बीस बाण मारकर एक भल्ल बाण से वसुदान को मार गिराया। फिर क्षत्रवर्मा को अस्सी और सुदक्षिण को छब्बीस बाण मारकर एक भल्ल बाण से क्षत्रदेव का सिर काट डाला और उन्हें रथ से गिरा दिया। इसके बाद युधामन्यु को चौंसठ और सात्यकि को तीस बाण मारकर वे बड़े वेग से युधिष्ठिर की ओर चले। धर्मपुत्र युधिष्ठिर फुर्ती के साथ अपने रथ के वेगशाली घोड़ों को हँकवाकर द्रोणाचार्य के सामने से हट गये।

अब महावीर पाञ्चाल्य नाम का राजकुमार द्रोणाचार्य के सामने आया। आचार्य ने उसका धनुष काट डाला, उसके सारथी और रथ के घोड़ों को नष्ट करके उसे भी यमपुरी को

भेज दिया। द्रोण के बाणों से निहत होकर महावीर पाञ्चाल्य वैसे ही रथ से गिर पड़ा जैसे कोई उल्कापिण्ड आकाश से टूटकर पृथ्वी पर गिरता है। पाञ्चाल्य के मारे जाने पर सब लोग
६० चारों ओर से "द्रोण को मारो, द्रोण को मारो !" कहकर चिल्लाने लगे। महापराक्रमी आचार्य कुपित होकर पाञ्चाल, मत्स्य, केकय, सृञ्जय और पाण्डवों की सेना को मारने लगे। चारों ओर हलचल सी मच गई। सात्यकि, चेकितान, धृष्टद्युम्न, शिखण्डी, वृद्धक्षेम और चित्रसेन के पुत्र, सेनाबिन्दु, सुवर्चा और अन्य बहुत से वीर द्रोणाचार्य और कौरव-सेना से परास्त हो गये। महाराज ! कौरवगण इस तरह जय प्राप्त करके भागती हुई पाण्डव-सेना का संहार करने लगे। दानवगण जैसे इन्द्र से परास्त होकर कम्पायमान हों वैसे ही पाञ्चाल, मत्स्य और
६५ केकयगण आचार्य से परास्त होकर काँपने लगे।

बाईसवाँ अध्याय

दुर्योधन और कर्ण की बातचीत

धृतराष्ट्र ने कहा—हे सञ्जय, उस महासमर में द्रोणाचार्य ने जब पाञ्चालों और पाण्डवों की सेना को मार भगाया तब और कौन उनके सामने उनका सामना करने के लिए आया ? कृतज्ञ, सत्यपरायण, दुर्योधन के हितैषी, चित्रयुद्धनिपुण, महाधनुर्द्धर, शत्रुपक्ष के लिए भयङ्कर, कुपित सिंह के समान, मस्त गजराज के तुल्य, पुरुषसिंह शूर द्रोणाचार्य जब जीवन का मोह छोड़कर क्षत्रियों के लिए यशस्कर, वीरों को प्रिय और कापुरुषों को अप्रिय युद्ध का दृढ़ विचार करके युद्धभूमि में मृत्यु की तरह विचरने लगे होंगे तब उनका सामना किसने किया होगा? हे सञ्जय! उस समय कौन-कौन वीर समर करने के लिए उद्यत हुआ ? सब वृत्तान्त मुझे सुनाओ।

सञ्जय ने कहा—महाराज ! पाञ्चाल, पाण्डव, मत्स्य, सृञ्जय, चेदि और केकयगण को आचार्य के दारुण बाणों के प्रहार से अत्यन्त पीड़ित और विह्वल होकर सागर के वेग से बहते हुए जहाज़ों की तरह भागते देखकर कौरव लोग सिंहनाद करने लगे। कौरव-सेना में हर्षसूचक विविध बाजे बजने लगे। कौरवपक्ष के वीरगण पराक्रमपूर्वक शत्रुपक्ष के रथों, घोड़ों और हाथियों को आगे बढ़ने से रोकने लगे। सेना और स्वजनमण्डली के बीच में स्थित राजा दुर्योधन उस समय शत्रुपक्ष की सेना को इस दशा में देखकर प्रसन्नतापूर्वक ज़ोर से हँसकर कर्ण से
१० कहने लगे—मित्र कर्ण ! यह देखो, पाञ्चालगण सिंह के डर से विह्वल हिरनों के झुण्ड की तरह आचार्य के बाणों से अत्यन्त पीड़ित होकर बहुत ही घबरा रहे हैं। हवा के झोंके से जैसे वृक्ष टूट जाते हैं वैसे ही ये लोग आचार्य के बाणों से मरकर अथवा घायल होकर पृथ्वी पर गिर

रहे हैं। जान पड़ता है, अब ये लोग युद्ध नहीं करेंगे। वह देखो, अगणित शत्रु-सेना महारथी आचार्य के सुवर्णपुङ्ख-शोभित तीक्ष्ण बाणों के प्रहार से पीड़ित होकर न तो भाग सकती है और न ठहर ही सकती है; योद्धा इधर-उधर बिललाते घूम रहे हैं। वह देखो, हाथी जैसे दावानल के बीच में घिरकर इधर-उधर दौड़ते हैं वैसे ही बहुत सी सेना महारथी द्रोण और अन्यान्य कौरवपक्ष के वीरों से घिरकर इधर-उधर भागती और भागने को राह न पाकर चारों ओर घूम रही है। वह देखो, पाण्डवों की सेना द्रोणाचार्य के तीक्ष्ण बाणों से, जो भौंरों की तरह भन्ना रहे हैं, विद्ध होकर भागती है और परस्पर भिड़ जाती है। वह देखो, कुपित भीमसेन को कौरव वीरों ने घेर लिया है और पाण्डवों तथा सृञ्जयों की सेना साथ छोड़कर भाग खड़ी हुई है। इससे मुझे बड़ा आनन्द हो रहा है। यह दुरात्मा भीमसेन आज चारों ओर द्रोण को ही देख रहा है, और जीवन तथा राज्य से निराश सा हो गया है।

कर्ण ने कहा—राजन्! महावीर भीम जीते जी कभी युद्ध से हटनेवाले नहीं हैं। ये हम लोगों का उल्लास और सिंहनाद भी कदापि नहीं सहन कर सकते। यह सम्भव नहीं कि बलवीर्य-सम्पन्न, युद्धदुर्मद और अस्त्र-शस्त्र की विद्या को अच्छी तरह सीखे हुए पाण्डव एकाएक हार मान लें और युद्ध छोड़ दें। वे विष-दान, आग में जलाने की चेष्टा, जुए की विडम्बना और वनवास के कष्टों को कभी न भूलेंगे और समर से न हटेंगे। महातेजस्वी महावीर भीमसेन युद्धभूमि में लौटे हुए आ रहे हैं, वे अवश्य ही हमारे पक्ष के प्रधान-प्रधान वीरों को यमपुर पहुँचावेंगे। उनके खड्ग, धनुष, शक्ति और लोहमय गदा के एक-एक प्रहार से असंख्य रथ, हाथी, घोड़े और पैदल विनष्ट होंगे। महावीर सात्यकि आदि योद्धा और पाञ्चाल, केकय, मत्स्य और पाण्डवगण भीमसेन के साथ हैं। ये सब

२०

महावीर महापराक्रमी और महारथी हैं। ख़ासकर महाक्रोधी वीर भीमसेन ने अत्यन्त क्रुद्ध होकर इन सबको युद्ध करने के लिए भेजा है। मेघ जैसे सूर्य को घेर लेते हैं वैसे ही ये सब वीर भीमसेन को घेरकर, सुरक्षित करके, चारों ओर से द्रोणाचार्य के सामने आ रहे हैं। मरने

के लिए उद्यत पतङ्ग जैसे दीपक पर गिरते हैं वैसे ही ये सब वीर एकाग्र चित्त से, जीवन की आशा छोड़कर, अरक्षित द्रोणाचार्य के ऊपर आक्रमण करेंगे। अस्त्र-शस्त्रकला में इन्होंने खूब अभ्यास किया है, अतएव आचार्य का सामना करना और उन्हें रोकना इन लोगों के लिए कुछ दु:साध्य नहीं। मेरी समझ में आचार्य पर बहुत भार आ पड़ा है, इसलिए इस समय उनके पास जाकर उनकी सहायता करना हम लोगों का कर्तव्य है। भेड़िये मिलकर जैसे एक बड़े गजराज को मार डालें वैसे ही पाण्डवपक्ष के सब योद्धा मिलकर अकेले द्रोणाचार्य को न मार डालें, यही सोचकर हमें आचार्य की सहायता करनी चाहिए।

सञ्जय कहते हैं—कर्ण के ये वचन सुनकर भाइयों और अन्य वीरों सहित राजा दुर्योधन महारथी द्रोणाचार्य के समीप गये। तब पाण्डवपक्ष के योद्धा, रङ्ग-रङ्ग के घोड़े जिनमें जुते हुए हैं ऐसे, रथों पर बैठकर द्रोणाचार्य को मारने के लिए आगे बढ़े और ३० घोर सिंहनाद तथा कोलाहल करने लगे।

तेईसवाँ अध्याय

वीरों के घोड़ों का वर्णन

धृतराष्ट्र ने कहा—हे सञ्जय! भीमसेन आदि जो वीर क्रुद्ध होकर द्रोणाचार्य का सामना करने गये थे, उनके रथों और चिह्नों का वर्णन करो, मैं सुनना चाहता हूँ।

सञ्जय ने कहा—महाराज, सुनिए। महारथी भीमसेन रीछ के से रङ्ग के घोड़ोंवाले रथ पर बैठकर समरभूमि में आये। महावीर सात्यकि चाँदी के रङ्ग के सफ़ेद घोड़ोंवाले रथ पर बैठकर द्रोणाचार्य की ओर चले। महारथी युधामन्यु अत्यन्त क्रुद्ध होकर सारङ्ग-वर्ण (सफ़ेद-नीला और लाल रङ्ग मिश्रित) के घोड़ोंवाले रथ पर बैठकर और महायोद्धा धृष्टद्युम्न महावेगशाली सुवर्णभूषित कबूतर के रङ्गवाले अर्थात् सफ़ेद-नीले घोड़ों के रथ पर बैठकर युद्ध करने चले।

धृष्टद्युम्न के पुत्र महावीर क्षत्रधर्मा अपने पिता की रक्षा करने और विजय पाने की इच्छा से लाल घोड़ोंवाले रथ के ऊपर बैठकर चले। शिखण्डी के पुत्र महाबाहु क्षत्रदेव अपने हाथ से, पद्मदल के रङ्गवाले और मल्लिका-पुष्प के रङ्ग की आँखोंवाले, घोड़ों को हाँकते हुए आगे बढ़े। वीर नकुल तोते के पङ्ख के रङ्ग के काम्बोजदेशीय दर्शनीय घोड़ोंवाले रथ पर बैठकर युद्ध करने चले। वीर उत्तमौजा श्याम-मेघवर्ण घोड़ेवाले रथ पर बैठकर समरभूमि में आये। सशस्त्र महावीर सहदेव के रथ में वायुवेगगामी तीतर के रङ्ग के कबरे घोड़े जुते हुए थे। सब योद्धा सैनिकगण सोने के गहनों से भूषित हवा के समान वेग से चलनेवाले घोड़ों से युक्त रथों पर बैठकर युधिष्ठिर के पीछे चले। महाराज युधिष्ठिर के रथ में ऐसे सुन्दर घोड़े जुते हुए थे, जिनका रङ्ग हाथीदाँत का सा था और जिनकी गर्दन पर काले और लम्बे बाल थे। पाञ्चाल- ११ राज द्रुपद सुवर्णमण्डित रथ पर बैठकर, युधिष्ठिर के पीछे चलनेवाली सेना से सुरक्षित होकर, धर्मराज के पीछे समरभूमि में चले। राजाओं के बीच में स्थित महाधनुर्द्धर द्रुपद के रथ में ऐसे घोड़े लगे हुए थे, जो निडर, किसी भी शब्द से न भड़कनेवाले, बढ़िया गहने पहने और परम सुन्दर थे। राजा द्रुपद के सिर पर स्वर्णमय छत्र तना हुआ था। मत्स्यराज बली विराट उनके पीछे चले। केकयदेश के राजकुमार, महावीर शिखण्डी और धृष्टकेतु अपनी-अपनी सेना को साथ लिये राजा विराट के पीछे चले। महाराज विराट के रथ में पाटल-पुष्प के रङ्ग के सफ़ेद दिव्य घोड़े जुते हुए थे। विराट के पुत्र के रथ में स्वर्णहारभूषित, वेग से चलनेवाले, पीले घोड़े लगे हुए थे। सुवर्णवर्ण और सुवर्ण की मालाओं से अलङ्कृत युद्धनिपुण केकयदेश के राजकुमार पाँचों भाई कवच पहने, लाल ध्वजा और वीरबहूटी के रङ्ग के लाल घोड़ों से युक्त रथ पर बैठकर वर्षाकाल के बरस रहे मेघ के समान शोभायमान हुए। महाबली शिखण्डी के रथ में कच्चे घड़े के रङ्ग के, तुम्बुरु गन्धर्व के दिये हुए, बहुमूल्य दिव्य घोड़े लगे हुए थे। युद्ध के लिए आये हुए बारह हज़ार पाञ्चालदेशीय योद्धाओं में से छः हज़ार वीर समरनिपुण महावीर तेजस्वी शिखण्डी के साथ चले। शिशुपाल के पुत्र के रथ में सारङ्ग के रङ्ग के (चितकबरे) २० घोड़े जुते थे। महाबलशाली वीर चेदिनरेश अपनी सेना को साथ लेकर काम्बोज देश के घोड़ों से युक्त रथ पर बैठकर युद्ध के लिए चले। केकयदेश के राजा बृहत्क्षत्र धुएँ के रङ्ग के सिन्धुदेशीय घोड़ों से युक्त रथ पर बैठकर संग्राम करने चले। शिखण्डी के पुत्र क्षत्रदेव के रथ में कमल के से रङ्ग के, मल्लिका-पुष्पसदृश रङ्ग की आँखोंवाले, वाह्लीकदेश के दिव्य घोड़े लगे हुए थे। शत्रुदमन सेनाबिन्दु के रथ में सुवर्णजाल से सुरक्षित और रेशम के रङ्ग के, शान्त, इच्छानुसार चलनेवाले घोड़े शोभायमान थे। काशिराज अभिभू के पुत्र महारथी नवयुवक सुकुमारवर्मा के रथ में क्रौञ्च पक्षी के रङ्ग के दिव्य घोड़े जुते हुए थे। काली गर्दन और सफ़ेद शरीरवाले, बहुत ही तेज़ और सारथी के इशारे पर इच्छानुसार चलनेवाले घोड़े युधिष्ठिर के पुत्र प्रतिविन्ध्य

के रथ की शोभा बढ़ा रहे थे। भीमसेन के पुत्र श्रेष्ठ योद्धा महाबली सुतसोम के रथ के घोड़े उड़द के फूल के रङ्ग के थे। सुतसोम सहस्रसोम (चन्द्रमा) के समान सौम्य हैं और उनका जन्म उदयेन्दु पुर (इन्द्रप्रस्थ) में, सोमाभिषव में, सोम के प्रसाद से हुआ था। वे सोमकसभा में प्रसिद्ध हैं।

महाराज! नकुल के पुत्र प्रशंसनीय शतानीक के रथ में साखू के पुष्प के रङ्ग के और तरुण ३० सूर्य के समान चमकीले श्रेष्ठ घोड़े लगे हुए थे। सहदेव के पुत्र महाबली श्रुतकर्मा के घोड़ों का रङ्ग मयूरग्रीव नाम के पन्ने के रङ्ग का था और उनके मुँह में सोने की लगाम थी, साज भी सब सुनहरा था। अर्जुन के पुत्र अर्जुनतुल्य पराक्रमी श्रुतनिधि श्रुतकीर्ति के रथ के घोड़ों का रङ्ग चकवे के पङ्ख के समान था। युद्ध-भूमि में श्रीकृष्ण और अर्जुन से ड्योढ़ी युद्धनिपुणता दिखानेवाले पराक्रमी वीर अभिमन्यु पिङ्गलवर्ण घोड़ों से शोभित रथ पर बैठकर चले। [धर्म के ख़याल से] अपने सौ भाइयों को छोड़कर पाण्डवों के पक्ष में जानेवाले आपके पुत्र युयुत्सु के रथ में बहुत बड़े, मृणाल के रङ्ग के, घोड़े जुते हुए थे। महावीर वृद्धक्षेम के पुत्र के रथ में पयाल के रङ्ग के अलङ्कृत और फुर्तीले घोड़े लगे हुए थे। सुचित्ति के पुत्र के रथ में सुवर्णजालशोभित काले पैरोंवाले सुशिक्षित विनीत घोड़े जुते हुए थे। श्रेणिमान् राजा के रथ के घोड़े सुवर्णपीठशोभित, अलङ्कृत, सोने की मालाओं से भूषित, सधे हुए, सफ़ेद रङ्ग के थे। काशिराज के रथ में सुवर्णमाला और सुवर्णपीठ से भूषित धीरप्रकृति घोड़े लगे हुए थे। अस्त्रविद्या, धनुर्वेद और वेदशास्त्र के पारगामी पण्डित क्षत्रियश्रेष्ठ सत्यधृति लाल घोड़ों से शोभित रथ पर बैठकर द्रोणाचार्य से युद्ध करने चले। पाञ्चालसेना के सेनापति और द्रोणाचार्य का सिर काटनेवाले धृष्टद्युम्न के रथ में सफ़ेद-नीले रङ्ग के घोड़े ४० जुते हुए थे। धृष्टद्युम्न के पीछे यम और कुबेर के तुल्य महावीर सत्यधृति, युद्धप्रिय सुचित्तिपुत्र श्रेणिमान्, वसुदान, काशिराजतनय आदि वीरगण वेगशाली, सुवर्णमालाधारी, काम्बोजदेशीय घोड़ोंवाले रथों पर बैठकर शत्रुसेना को डरवाते हुए समरभूमि में चले। धृष्टद्युम्न के साथ काम्बोजदेशीय छः हज़ार प्रभद्रक योद्धा शस्त्र उठाये हुए, प्राणों का मोह छोड़कर, धनुष चढ़ाकर शत्रुओं पर बाण बरसाते हुए चले। उनके रथों में अनेक रङ्ग के बढ़िया घोड़े लगे हुए थे और रथ तथा ध्वजाएँ सुवर्णमण्डित थीं। चेकितान के रथ के बढ़िया घोड़े सुवर्ण की मालाओं से भूषित, प्रफुल्लचित्त और न्यौले के रङ्ग के थे। अर्जुन के मामा कुन्तिभोज पुरुजित् इन्द्रधनुष के रङ्गवाले श्रेष्ठ घोड़ों से युक्त रथ में बैठकर युद्ध करने चले। महाराज रोचमान तारागण-चित्रित आकाश के समान रङ्गवाले श्रेष्ठ घोड़ों से युक्त रथ पर बैठकर द्रोणाचार्य का सामना करने चले। काले पैरोंवाले चितकबर घोड़े जरासन्ध के पुत्र वीरश्रेष्ठ सहदेव के रथ में जुते हुए थे। उन घोड़ों के गले में रत्नमण्डित सुवर्ण की मालाएँ पड़ी हुई थीं। सुदामा नामक वीर के रथ के घोड़े पुष्करनाल के रङ्ग के और वेग में बाज़ के समान जानेवाले थे। पाञ्चालदेशीय गोपति राजा के पुत्र सिंहसेन के रथ में ख़रगोश के से लाल रङ्ग के चमकीले रोएँवाले घोड़े लगे

हुए थे। पाञ्चालदेशीय प्रसिद्ध वीर जनमेजय ऐसे रथ पर बैठकर युद्धभूमि में चले जिसमें सरसों के फूल के से रङ्गवाले बढ़िया घोड़े जुते हुए थे। पाञ्चाल्य नाम के राजा के रथ में सुवर्ण-मालाधारी वेगशाली उड़द के फूल के रङ्गवाले घोड़े लगे हुए थे। उनकी पीठ दही के रङ्ग की थी और चेहरे का रङ्ग विचित्र था। राजा दण्डधार के रथ में पद्मकेसर के रङ्ग के, सुन्दर सिर-वाले, श्वेत-गौर पृष्ठ, शूर घोड़े लगे हुए थे। राजा व्याघ्रदत्त के रथ में अरुण-मलिनवर्ण-शरीर और मूसे के रङ्ग की पीठवाले घोड़े जुते हुए थे। वे घोड़े जाने के लिए बड़ी तेज़ी दिखा रहे थे। विचित्र मालाओं से भूपित, काले मस्तकवाले चितकबरे घोड़े पुरुषसिंह पाञ्चालदेशीय सुधन्वा के रथ में जुते हुए थे। अद्भुतदर्शन, विचित्रवर्ण, वीरबहूटी के रङ्ग के घोड़े चित्रा-युध राजा के रथ में जुते हुए थे। कोशलाधिपति के पुत्र सुक्षत्र के रथ में विचित्रवर्ण, ऊँचे, सुवर्णमाला-भूपित, चकवे के पेट के से रङ्गवाले सुन्दर घोड़े जुते हुए थे। सत्यधृति क्षेमि भी सुवर्णमाल्यधारी, बड़े और ऊँचे, शुभदर्शन, सधे हुए कबरे घोड़ों से युक्त रथ में बैठकर आगे बढ़े। महावीर शुक्ल की ध्वजा, कवच, धनुप और रथ के घोड़े आदि सब सामान सफ़ेद ही था। रुद्र के समान तेजस्वी समुद्रसेन के पुत्र चन्द्रसेन के रथ के घोड़े चन्द्रमा के समान सफ़ेद थे। शिवि के पुत्र चित्ररथ के रथ के घोड़े नीलकमल के रङ्ग के, सुवर्णभूपित और विचित्र मालाओं से अलङ्कृत थे। मिश्रश्याम वर्ण और लाल-सफ़ेद रोमों से शोभित श्रेष्ठ घोड़ों से युक्त रथ पर बैठकर युद्धप्रिय महायोद्धा रथसेन युद्ध करने चले। पटच्चर नामक असुरों को मारनेवाले और सब मनुष्यों से बढ़कर शूर कहानेवाले समुद्राधिप के रथ में तोते के रङ्ग के घोड़े जुते थे। विचित्र माला, कवच, आयुध और ध्वजा से अलङ्कृत चित्रायुध के रथ में ढाक के फूल के रङ्ग के घोड़े जुते हुए थे। महाराज नील की ध्वजा, कवच, धनुप, रथ के घोड़े आदि सब सामान नीले रङ्ग का था। चित्र राजा के घोड़े, ध्वजा, पताका, रथ, धनुप आदि सब सामान विचित्रवर्ण नाना रूप रत्नचिह्नों से विचित्र था। रोचमान के पुत्र हेमवर्ण के रथ के श्रेष्ठ घोड़े पद्म के रङ्ग के थे। दण्डकेतु के रथ के घोड़े युद्धसमर्थ, सुडौल, शर-दण्ड के समान उज्ज्वल-गौर पीठवाले, सफ़ेद अण्डकोशवाले और मुर्ग़ी के अण्डे की सी आभावाले थे। श्रीकृष्ण के हाथों युद्ध में पिता की मृत्यु होने पर, पाण्ड्यदेश-नरेश के सहायक मित्रों के भाग जाने और नगर लुट जाने पर जिन्होंने भीष्म, द्रोण और परशुराम से अस्त्रशिक्षा प्राप्त करके अस्त्रविद्या में रुक्मी, कर्ण, अर्जुन और श्रीकृष्ण के समान होकर द्वारकापुरी को नष्ट-भ्रष्ट करने और पृथ्वी-मण्डल को जीतने का इरादा किया था; किन्तु फिर हितचिन्तक सुहृदों के समझाने पर श्रीकृष्ण से वैर और बदला लेने का विचार छोड़ दिया और इस समय जो उत्तमता के साथ अपने राज्य का शासन कर रहे हैं, वे पाण्ड्यनरेश सागरध्वज वैडूर्यजालमण्डित चन्द्रकिरण के रङ्ग के घोड़ों से शोभित रथ पर बैठकर, अपने बाहुबल से दिव्य दृढ़ धनुष चढ़ाकर, द्रोणाचार्य के सामने

५०

६०

६१

चले। पाण्ड्यनरेश के अनुयायी १ लाख ४० हज़ार श्रेष्ठ रथियों के रथों के घोड़े वासकपुष्प के रङ्ग के थे। वीर घटोत्कच के रथ में अनेक रङ्ग, रूप और आकारवाले विचित्र घोड़े जुते हुए थे। उसकी ध्वजा में रथचक्र का चिह्न था। कौरवों के इरादे को और अपनी सब प्रिय वस्तुओं को छोड़कर, भक्तिपूर्वक युधिष्ठिर का आश्रय लेनेवाले, महाबाहु लोहितलोचन युयुत्सु के सुवर्णमय रथ में महाबली पराक्रमी महाकाय घोड़े लगे हुए थे।

सेना के मध्यभाग में स्थित धर्मज्ञ नृपश्रेष्ठ युधिष्ठिर के आगे, पीछे और आसपास बहुत से बढ़िया घोड़े चले। देवरूपी बहुत से प्रभद्रकगण कई रङ्गों के घोड़ों से शोभित रथों पर बैठकर युद्ध करने के लिए चले। सुवर्णदण्डमण्डित ध्वजाओं से अलंकृत वे सब वीर भीमसेन के
८० साथ इन्द्र सहित देवताओं के समान शोभायमान हुए। हे राजेन्द्र! पाण्डव-सेना में सब वीरों से अधिक धृष्टद्युम्न शोभायमान थे। वैसे ही इधर कौरवों की सेना में प्रतापी द्रोणाचार्य की शोभा सब वीरों से बढ़कर थी। द्रोणाचार्य के रथ में ध्वजा के ऊपर कृष्णाजिन और सुवर्णमय कमण्डलु बहुत ही शोभायमान हो रहा था। महाराज! मैंने देखा कि भीमसेन की ध्वजा पर वैडूर्य-मणिमय नेत्रों से युक्त महासिंह की अपूर्व शोभा हो रही थी। महाराज युधिष्ठिर के रथ में सुवर्णनिर्मित ग्रहों से युक्त चन्द्रमा की अपूर्व शोभा दिखाई पड़ रही थी। उनके रथ में बहुत बड़े, दिव्य, नन्द-उपनन्द नाम के दो मृदङ्ग—यन्त्र के द्वारा मधुर स्वर से बजकर—हर्ष को बढ़ा रहे थे। नकुल की ध्वजा में सोने की पीठ से शोभित अतीव उग्र शरभ शत्रुपक्ष की सेना को डरवा रहा था। सहदेव की ध्वजा में घण्टा-पताका आदि सहित चाँदी का बना हुआ हंस शत्रुओं के शोक को बढ़ा रहा था। द्रौपदी के पाँचों पुत्रों की ध्वजाओं में क्रमशः धर्म, वायु, इन्द्र और अश्विनीकुमारों की प्रतिमाएँ शोभायमान थीं। कुमार अभिमन्यु के रथ की ध्वजा में सोने का बना हुआ शार्ङ्ग पक्षी था। महाबाहु घटोत्कच की ध्वजा में विकटरूप गिद्ध अङ्कित था। घटोत्कच के रथ
९० में, राक्षसराज रावण के ऐसे इच्छानुसार चलनेवाले, बढ़िया घोड़े जुते हुए थे।

महाराज! राजा युधिष्ठिर के पास दिव्य महेन्द्र का धनुष था। भीमसेन के हाथ में दिव्य वायु का धनुष था। कभी जीर्ण न होनेवाले जिस (गाण्डीव) धनुष को ब्रह्माजी ने त्रैलोक्य की रक्षा के लिए बनाया था वह अर्जुन के हाथ में था। नकुल के हाथ में विष्णु का धनुष और सहदेव के हाथ में अश्विनीकुमारों का दिव्य धनुष था। घटोत्कच के हाथ में बहुत ही भयानक दिव्य पौलस्त्य धनुष था। द्रौपदी के पाँचों पुत्रों के पास क्रमशः रुद्र, अग्नि, कुबेर, यम और गिरीश के श्रेष्ठ धनुष थे। बलराम को जो श्रेष्ठ रौद्र धनुष प्राप्त हुआ था वही धनुष उन्होंने प्रसन्न होकर वीर अभिमन्यु को दे दिया था। कुमार अभिमन्यु के हाथ में वही धनुष था। राजन्! ये तथा अन्य अनेक शूरों की सुवर्णमण्डित और शत्रुओं के लिए शोकवर्द्धक ध्वजाएँ दिखाई पड़ रही थीं। महाराज! द्रोणाचार्य की सेना में चारों ओर ध्वजाएँ देख पड़ती थीं। वहाँ

कोई कायर नहीं था। वह सैन्यसागर पट में अङ्कित चित्र के समान दिखाई पड़ता था। हे राजेन्द्र! स्वयंवर-सभा के समान उस समरभूमि में द्रोणाचार्य की ओर वेग से जाते हुए वीरों के नाम और गोत्र सुनाई पड़ने लगे। ६८

चौबीसवाँ अध्याय

धृतराष्ट्र का अपने पुत्रों के लिए शोक करके सञ्जय से युद्ध का वर्णन करने के लिए कहना

धृतराष्ट्र ने कहा—हे सञ्जय! युद्धभूमि में भीमसेन के साथ जानेवाले ये वीर राजा लोग देवताओं की सेना को भी व्याकुल और परास्त कर सकते हैं। इनमें कोई भी युद्ध से हटनेवाला नहीं। सञ्जय! यह जीव भाग्य के अधीन होकर ही जन्म लेता है। मनुष्य चाहे कुछ भी सोचे, किन्तु उस भाग्य के अनुसार ही फल होता है। यही कारण है कि मनुष्य सोचता कुछ है और होता कुछ है। मृगछाला पहनकर और जटाधारी होकर युधिष्ठिर बहुत समय तक वन में रहे, एक वर्ष का अज्ञातवास भी उन्होंने पूरा किया। वही युधिष्ठिर अब इतनी भारी सेना एकत्र करके, युद्ध ठानकर, कौरवपक्ष को इस तरह परास्त कर रहे हैं। मेरे पुत्र की इस पराजय का कारण सिवा भाग्य के और क्या हो सकता है? इसी से मैं कहता हूँ कि हर एक मनुष्य अपने भाग्य को साथ लेकर ही जन्म लेता है। मनुष्य जिसको नहीं चाहता, उसी ओर भाग्य उसे खींच ले जाता है। मतलब यह कि भाग्य जब तक साथ नहीं देता तब तक मनुष्य अपनी इच्छा के अनुसार कुछ नहीं कर पाता। देखो, युधिष्ठिर ने जुआ खेलकर, सर्वस्व हारकर, क्लेश सहे; परन्तु भाग्य के अनुकूल होने से फिर उन्हें सहायक साथी मिल गये। मन्दमति दुर्योधन पहले मुझसे कहा करता था कि केकय, काशी, कोशल, चेदि और वङ्ग देश के योद्धा मेरे ही पक्ष में हैं। उसने मुझसे यह भी कहा था कि पृथ्वीमण्डल का अधिकांश उसी के अधिकार में है; युधिष्ठिर के अधिकार में उतनी पृथ्वी नहीं है। उसी महती सेना से सुरक्षित होने पर भी महावीर द्रोणाचार्य युद्धभूमि में धृष्टद्युम्न के हाथ से मारे गये, तो यह मेरे पुत्र के दुर्भाग्य के सिवा और क्या कहा जा सकता है? अहो! सदा युद्धप्रिय, सब अस्त्रों के प्रयोग में सिद्धहस्त, महाबाहु अद्वितीय योद्धा द्रोणाचार्य इतने राजाओं के बीच में सुरक्षित रहकर भी कैसे मारे गये! भीष्म और द्रोण की मृत्यु का समाचार सुनने से मैं बहुत ही घबराकर कष्ट पा रहा हूँ। अब यह दु:खमय जीवन रखने को मेरा जी नहीं चाहता। मुझे पुत्र की ममता में फँसे देखकर नीतिज्ञ विदुर ने पहले जो कुछ कहा था वह सब मेरे और दुर्योधन के आगे आया। हाय! अगर मैं उसी समय नृशंस दुर्योधन को छोड़ देता तो इस समय मेरे सभी १०

पुत्र न मारे जाते। एक को निकाल देने से शेष सब बच जाते। सच है, जो मनुष्य धर्म को छोड़कर केवल अर्थ (धन) को ही देखता है वह इस लोक में सुखी नहीं होता, लोग उसे क्षुद्र समझते हैं। हे सञ्जय! इस राज्य के श्रेष्ठ योद्धा और रक्षक द्रोणाचार्य के मारे जाने से मुझे यह राज्य विनाश से किसी तरह बचता नहीं देख पड़ता। जिन दोनों प्रधान वीर पुरुषों के बाहुबल के सहारे हम लोग निश्चिन्त और निष्कण्टक थे, उन क्षमताशाली भीष्म और द्रोण की जब मृत्यु हो गई है तब हम लोग कैसे बच सकते हैं? कौन हमारी रक्षा कर सकता है? हे सञ्जय! अब तुम उस भयानक युद्ध का सब वृत्तान्त विस्तार के साथ मुझे सुनाओ। किस-किसने युद्ध किया? किस-किसने किस-किस पर आक्रमण किया? कौन-कौन क्षुद्रचेता कायर रणभूमि से भाग खड़े हुए? श्रेष्ठ योद्धा अर्जुन ने कौन-कौन अद्भुत कर्म किये? असल में मुझे अपने भतीजे अर्जुन और भीमसेन से ही अपने पक्ष के लिए बड़ा भय है। पाण्डव-सेना के यों आक्रमण करने पर मेरे पक्ष की शेष सेना ने किस तरह कैसा दारुण संग्राम किया? युद्ध में पाण्डवों के प्रवृत्त होने पर तुम लोगों की मानसिक अवस्था २० कैसी हुई? मेरे पक्ष के किन-किन शूर-वीरों ने पाण्डवपक्ष के वीरों का सामना किया?

पचीसवाँ अध्याय

द्वन्द्वयुद्ध का वर्णन

सञ्जय ने कहा—महाराज! पाण्डवों ने जब इस तरह युद्धभूमि में आकर, सूर्य को जैसे मेघ छिपा लेते हैं वैसे, द्रोणाचार्य को घेर लिया तब हम लोग बहुत ही व्याकुल हो उठे। पाण्डवों की सेना के चलने-फिरने से इतनी धूल उड़ी कि उससे कौरवों की सेना ढक गई। आचार्य को न देखकर हम लोगों ने समझा कि वे शत्रुओं के हाथों मार डाले गये। उस समय राजा दुर्योधन ने उन शूरों और महाधनुर्द्धरों को द्रोणवधरूप दुष्कर क्रूर कर्म करने के लिए उद्यत देखकर कौरव-सेना को उनका सामना करने के लिए इस प्रकार आज्ञा दी—हे वीर सैनिको! तुम सब नरेश मिलकर, यथाशक्ति उत्साह और पराक्रम के अनुसार, पाण्डवों की इस सेना को रोको और नष्ट करो।

हे राजेन्द्र! तब आपके पुत्र वीर दुर्मर्षण दूर से भीमसेन को देखकर, द्रोणाचार्य के जीवन की रक्षा करने के लिए, भीमसेन के सामने आये और उन पर फुर्ती के साथ असंख्य बाणों की वर्षा करने लगे। क्रोध से भरे हुए यमराज के समान महावीर दुर्मर्षण ने ज्योंही भीमसेन पर बाणों की वर्षा की त्योंही भीमसेन ने दुर्मर्षण के ऊपर लगातार बाण बरसाना शुरू किया। इस तरह ये दोनों वीर लोमहर्षण संग्राम करने लगे।

उधर अन्यान्य युद्धनिपुण महारथी लोग, अपने-अपने स्वामियों की आज्ञा पाकर, राज्य की ममता और मृत्यु का डर छोड़कर शत्रुओं से भिड़ गये। युद्ध के लिए उन्मत्त कृतवर्मा ने मत्त मातङ्ग के समान पराक्रमी सात्यकि को और उग्रधन्वा सिन्धुराज जयद्रथ ने क्षत्रवर्मा को तीक्ष्ण बाण मारकर द्रोणाचार्य के पास जाने से रोका। क्रोध से विह्वल क्षत्रवर्मा ने जयद्रथ की ध्वजा और धनुष काटकर उनके मर्मस्थलों में दस नाराच बाण मारे। जयद्रथ ने भी फुर्ती के साथ दूसरा दृढ़ धनुष लेकर लोहमय तीक्ष्ण बाणों से क्षत्रवर्मा को घायल किया। पाण्डवों की विजय के लिए यत्न करनेवाले महारथी शूर युयुत्सु को सुबाहु ने द्रोणाचार्य के पास जाने से रोका। तब महारथी युयुत्सु ने अत्यन्त तीक्ष्ण दो क्षुर बाणों से सुबाहु की धनुष-बाण-सहित भुजाएँ काट डालीं। जैसे तटभूमि समुद्र के वेग को रोकती है वैसे ही शल्य ने धर्मात्मा राजा युधिष्ठिर को रोका। धर्मराज ने शल्य के मर्मस्थलों में बहुत से बाण मारे। शल्य भी युधिष्ठिर को चौंसठ बाण मारकर ज़ोर से सिंहनाद करने लगे। सिंहनाद करनेवाले शल्य पर अत्यन्त कुपित होकर युधिष्ठिर ने दो क्षुर बाणों से उनकी ध्वजा और धनुष काट डाला। यह देखकर लोग ऊँचे स्वर से चिल्लाने लगे। सेना सहित बाण बरसाते आते राजा द्रुपद को राजा बाह्लीक ने और उनकी सेना ने रोका। मदोन्मत्त महायूथ के अधिपति दो गजराजों के समान ये दोनों अपार सेना के स्वामी बुड्ढे राजा घोर युद्ध करने लगे। पूर्व समय में इन्द्र और अग्नि ने जिस तरह असुराधिप राजा बलि को बाणों से घायल किया था उसी तरह अवन्ति देश के राजपुत्र दोनों भाई विन्द और अनुविन्द मत्स्यराज विराट को बाणों से बेधने लगे। मत्स्य और केकय देश के योद्धा लोग परस्पर भिड़कर देवासुर-संग्राम की तरह अत्यन्त घोर और अद्भुत युद्ध करने लगे। दोनों ओर की चतुरंगिणी सेना भिड़ गई।
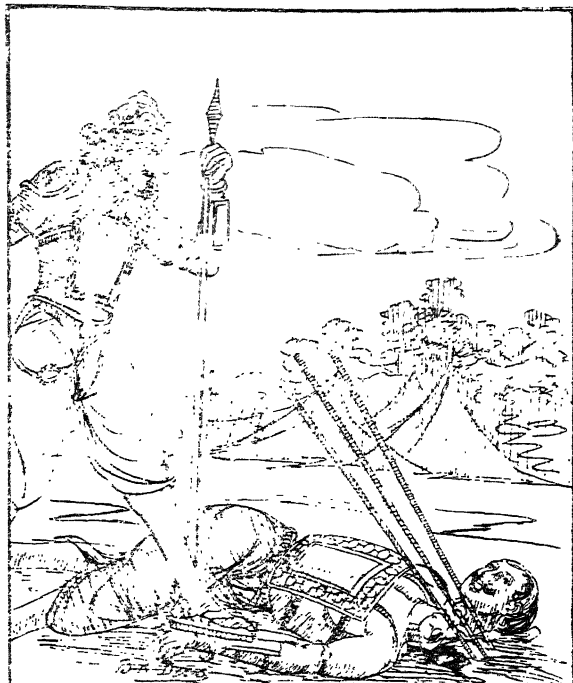
नकुल के पुत्र वीर शतानीक बाणों की वर्षा करते हुए द्रोणाचार्य के सामने जा रहे थे। उनको वीर भूतकर्मा ने आगे बढ़ने से रोका। शतानीक ने अत्यन्त क्रुद्ध होकर तीन तीक्ष्ण भल्ल

बाणों से भूतकर्मा के दोनों हाथ काटकर सिर काट डाला। महावीर विविंशति ने आचार्य की ओर जानेवाले बलविक्रमशाली सुतसोम को रोका। उन्होंने कुपित होकर सीधे निशाने पर पहुँचनेवाले पैने बाण बरसाकर अपने चाचा विविंशति के मर्मस्थलों को छिन्न-भिन्न करना शुरू किया। महावीर भीमरथ ने पैने लोहमय बाण बरसाकर शाल्व को पीड़ित किया और उनके सारथी तथा रथ के घोड़ों को छः बाणों से मार गिराया। मोर-सदृश घोड़े जिसमें जुते हुए थे, ऐसे रथ पर बैठकर आते हुए महावीर श्रुतकर्मा को चित्रसेन के पुत्र ने आगे बढ़ने से रोका। राजन्! आपके पराक्रमी पोते, अपने-अपने पितृकुल के नाम और मान की रक्षा के लिए, एक दूसरे के प्राण लेने का यत्न करते हुए घोर संग्राम करने लगे। सिंहपुच्छ के चिह्न से युक्त ध्वजा से शोभित रथ पर बैठे हुए महावीर अश्वत्थामा ने अपने पिता के गौरव और प्राणों की रक्षा के लिए बहुत से बाण बरसाकर राजपुत्र प्रतिविन्ध्य को रोका। महाबाहु प्रतिविन्ध्य भी अत्यन्त क्रुद्ध होकर मर्मभेदी
३० अनेक बाण मारकर उन्हें पीड़ित करने लगे। द्रौपदी के पुत्रगण, खेत में बीज बोनेवाले किसान की तरह, अश्वत्थामा के ऊपर लगातार बाण बरसाने लगे। अर्जुन के पुत्र महाबाहु श्रुतकीर्ति जब युद्ध के लिए आचार्य की ओर आगे बढ़े तब दुःशासन के पुत्र ने उनको रोका। अर्जुन के तुल्य पराक्रमी श्रुतकीर्ति ने बहुत पैने तीन भल्ल बाणों से दुःशासन के पुत्र के धनुष, ध्वजा और सारथी के सिर को काट डाला और फिर आगे को प्रस्थान किया। राजन्! दोनों पक्ष के योद्धा जिन्हें प्रधान वीर समझते हैं, उन पटच्चर असुरों का संहार करनेवाले वीर को राजकुमार लक्ष्मण ने रोका। पटच्चरविनाशन वीर ने कुपित होकर लक्ष्मण के धनुष और ध्वजा को काट डाला और उन पर बाण बरसाना शुरू किया। महाप्राज्ञ नवयुवक विकर्ण ने रणभूमि में द्रोण की ओर जाते हुए शिखण्डी को रोका। तब वे भी विकर्ण के ऊपर बाण बरसाने लगे। महाबाहु विकर्ण ने अनायास शिखण्डी के सब बाण काट डाले। महावीर उत्तमौजा आचार्य की ओर वेग से जा रहे थे, उन्हें महाबाहु अङ्गद ने बाण बरसाकर रोका। ये दोनों वीर क्रमशः अत्यन्त घोर युद्ध करने लगे। उस महायुद्ध को देखकर दोनों पक्ष के योद्धा परम प्रसन्न हुए।

महावीर दुर्मुख ने द्रोणाचार्य की ओर जाते हुए महारथी पुरुजित् को वत्सदन्त बाण
४० बरसाकर रोका। महारथी पुरुजित् ने कुपित होकर दुर्मुख की भौंहों के बीच में नाराच बाण मारा, जिससे दुर्मुख का मुखमण्डल नालयुक्त कमल के समान शोभायमान हुआ। महारथी कर्ण ने आचार्य के सामने जाते हुए लाल ध्वजावाले केकयदेशीय पाँचों भाइयों को बाण-वर्षा करके रोका। वे कर्ण के बाणप्रहार से अत्यन्त पीड़ित होकर उन पर बाणों की वर्षा करने लगे। कर्ण ने भी बारम्बार बाण बरसाकर उनको अदृश्य सा कर दिया। इस तरह कर्ण और केकयदेश के पाँचों भाई राजकुमार एक दूसरे के बाणों से घोड़े, सारथी, रथ और ध्वजा-सहित अदृश्य हो गये। महाराज! आपके तीनों पुत्रों—दुर्जय, जय और विजय—ने नील, काश्य और

जयत्सेन इन तीन वीरों को रोका। जैसे सिंह, बाघ और चीते के साथ भालू, भैंसे और साँड़ का संग्राम हो वैसे ही आपके तीन पुत्रों के साथ उक्त तीनों वीरों का घोर युद्ध देखकर दर्शक-गण परम सन्तुष्ट हुए। क्षेमधूर्ति और बृहन्त इन दोनों भाइयों ने आचार्य की ओर जाते हुए सात्वत को तीक्ष्ण बाण बरसाकर रोका। जैसे जङ्गल में सिंह के साथ दो मदोन्मत्त गजराजों का युद्ध हो वैसे ही सात्वत के साथ इन दोनों भाइयों का अद्भुत संग्राम होने लगा। कुपित चेदिराज ने असंख्य बाण बरसाकर युद्धप्रिय अम्बष्ठराज को द्रोण के सामने जाने से रोका। राजा अम्बष्ठराज ने अस्थिभेदिनी शलाका के द्वारा चेदिराज को घायल कर दिया। उस दारुण बाण के प्रहार से चेदिराज रथ से पृथ्वी पर गिर पड़े। उनके हाथ से धनुष और बाण भी गिर पड़ा। शारद्वत कृपाचार्य ने

५०

क्षुद्रक बाणों से कुपित वार्द्धक्षेमि को आगे बढ़ने से रोका। राजन्! विचित्र युद्ध में निपुण और समरप्रिय कृपाचार्य तथा वार्द्धक्षेमि के युद्ध को जो लोग देख रहे थे वे सब उसमें आसक्तचित्त होकर युद्ध को देखने लगे। वे लोग चित्रलिखित से रह गये। महारथी सौमदत्ति ने आचार्य के यश को बढ़ाते हुए महाराज मणिमान् को घेर लिया। उन्होंने फुर्ती के साथ सौमदत्ति के धनुष, ध्वजा-पताका, छत्र को काटकर और सारथी को मारकर रथ से नीचे गिरा दिया। तब शत्रुदमन यूपकेतु फुर्ती के साथ अपने रथ पर से कूद पड़े। उन्होंने तलवार के वार से मणिमान् के रथ, घोड़े, ध्वजा और सारथी को नष्ट कर दिया। इसके बाद यूपकेतु अपने रथ पर बैठकर, दूसरा धनुष लेकर, अपने हाथ से घोड़ों को भी हाँकने और तीक्ष्ण बाणों से पाण्डवों की सेना को नष्ट करने लगे। इन्द्र जैसे देवासुर-युद्ध में असुरों को मारने के लिए दौड़े थे वैसे ही वेग से जाकर वृषसेन ने बाणवर्षा से पाण्ड्यराज को रोका।
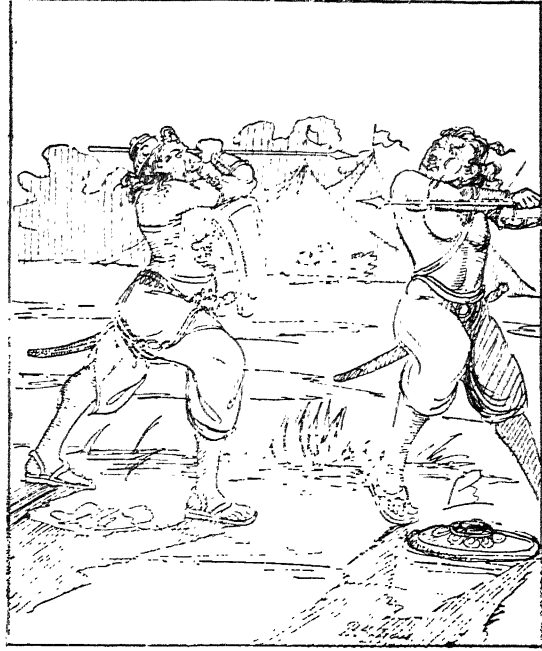
महावीर घटोत्कच गदा, परिघ, खड्ग, पट्टिश, लगुड़, शिला, मूसल, मुद्गर, चक्र, भिंदिपाल, परशु, धूल, हवा, आग, पानी, भस्म, कङ्कड़, तृण और वृक्ष आदि की वर्षा करके शत्रुसेना को विह्वल करने, भगाने, पीड़ित और नष्ट करने लगा। इस प्रकार विजयी होकर वह द्रोणाचार्य की

६० ओर बढ़ा। तब राक्षसश्रेष्ठ अलम्बुप भी अत्यन्त क्रोध से बहुत से अस्त्र-शस्त्र बरसाकर और तरह-तरह के मायायुद्ध करके घटोत्कच को रोकने लगा। पूर्व समय में शम्बरासुर और इन्द्र का जैसा घोर संग्राम हुआ था वैसा ही घोर संग्राम दोनों राक्षस करने लगे।

राजन् ! इस प्रकार सैकड़ों-हज़ारों रथी, घुड़सवार, पैदल और हाथीसवार योद्धा लोम-हर्षण संग्राम करने लगे। महाराज ! उस समय द्रोणाचार्य के वध के लिए जैसा घोर संग्राम हुआ था वैसा संग्राम पहले न कभी देखा गया और न सुना गया। उस समय रणभूमि में ६५ चारों ओर अनेक घोर, विचित्र और रौद्र युद्ध होते हुए दिखाई पड़ने लगे।

छब्बीसवाँ अध्याय

भगदत्त के पराक्रम का वर्णन

धृतराष्ट्र ने पूछा—हे सञ्जय ! सब योद्धा जब इस तरह रणभूमि में जाकर, परस्पर विभाग के अनुसार, द्वन्द्वयुद्ध करने लगे तब मेरे पक्ष के और पाण्डवों के पक्ष के वीरों ने कैसा युद्ध किया ? उधर महावीर अर्जुन ने संशप्तकगण पर किस तरह आक्रमण किया और संशप्तकगण ने उनका किस प्रकार सामना किया ?

सञ्जय ने कहा—महाराज ! सुनिए, दोनों सेनाओं के योद्धाओं ने जब इस तरह अपने-अपने प्रतिद्वन्द्वी को छाँटकर युद्ध ठान दिया तब आपके ज्येष्ठ पुत्र दुर्योधन ख़ुद हाथियों की सेना साथ लेकर भीमसेन का सामना करने पहुँचे। जैसे हाथी पर हाथी या साँड़ पर साँड़ हमला करता है वैसे ही राजा दुर्योधन ने भीमसेन पर आक्रमण किया। समरनिपुण असाधारण भुज-बलसम्पन्न वीर भीमसेन क्रोध करके हाथियों की सेना पर झपटकर टूट पड़े और फुर्ती के साथ हाथियों को मारने, गिराने तथा भगाने लगे। पर्वताकार बड़े-बड़े हाथी भीमसेन के लोहमय बाणों के प्रहार से छिन्न-भिन्न होकर, मदहीन होकर, इधर-उधर भागने लगे। मेघ-मण्डल जैसे आँधी के वेग से नष्ट-भ्रष्ट हो जाता है वैसे ही वे हाथी भीमसेन के प्रहार से पीड़ित होकर [क़तार से निकल-निकलकर चिल्लाते हुए] भागने लगे। सूर्यदेव उदय होकर जैसे भूमण्डल पर अपनी किरणें फैलाते हैं वैसे ही भीमसेन हाथियों पर बाणों की वर्षा करने लगे। उनके बाणप्रहार से हाथियों के शरीर कट-फटकर रक्त से भीग गये। सूर्य की किरणों से लाल सन्ध्याकाल के आकाश में शोभायमान बादलों के समान वे हाथी दिखाई पड़ने लगे।

भीमसेन को इस तरह हाथियों की सेना का नाश करते देखकर दुर्योधन अत्यन्त क्रोध से १० उन पर बाण बरसाने लगे। महाबाहु भीमसेन की आँखें क्रोध से लाल हो रही थीं। वे दुर्योधन के प्राण लेने के लिए उनको तीक्ष्ण बाण मारने लगे। भीम के बाणों से दुर्योधन का शरीर कट-फट

जब हाथी पास पहुँच गया तब भीमसेन झपटकर उस हाथी के ही तले छिप गये—पृ० २२३१

और चारों ओर से भगदत्त को घेरकर उन पर सहस्र-सहस्र अत्यन्त तीक्ष्ण बाण बरसाने लगे। भगदत्त ने अंकुश के द्वारा ही उन बाणों को व्यर्थ करके, हाथी को प्रहार से उत्तेजित करके, दम भर में पाण्डवों और पाञ्चालों की बहुत सी सेना नष्ट-भ्रष्ट कर दी। राजन् ! हम लोगों ने रणभूमि में वृद्ध राजा भगदत्त और उनके हाथी का अद्भुत पराक्रम देखा; उसे देखकर हमें बड़ा ही विस्मय हुआ। इसी समय दशार्ण देश के नरेश शीघ्रगामी पार्श्वगामी मदमत्त हाथी पर बैठकर वेग के साथ राजा भगदत्त के सामने युद्ध के लिए आये। पूर्व समय में भीमरूप, परदार और वृक्षों से शोभित पर्वत जैसे परस्पर टकराते थे वैसे ही वे दोनों वीर प्राणों का मोह छोड़कर घोर युद्ध करने लगे। प्राग्ज्योतिषपति महाराज भगदत्त के गजराज ने आगे बढ़कर, फिर पीछे हटकर, घूमकर बड़े वेग से दशार्णपति के हाथी की पसलियों में टक्कर मारकर उसे हटा दिया। [दशार्णपति के हाथी ने विह्वल होकर घुटने टेक दिये।] इसी बीच में भगदत्त ने सूर्य-किरण के समान चमकीले सात पैने तोमर अपने शत्रु दशार्णपति को और उनके हाथी को उस प्रहार से दशार्णपति का आसन विचलित हो उठा।

उधर धर्मराज युधिष्ठिर ने रथसेना साथ लेकर भगदत्त को चारों ओर से घेर लिया। हाथी पर बैठे महावीर भगदत्त उन रथों से घिरकर पहाड़ के ऊपर जङ्गल में प्रज्वलित अग्नि के समान शोभायमान हुए। चरों ओर से मण्डल बाँधकर सब रथी भगदत्त के ऊपर बाणों ४० की लगातार वर्षा करने लगे। परन्तु भगदत्त उनके बीच में बेखटके डटे रहे। इसके उपरान्त युद्धदुर्मद प्राग्ज्योतिषपुर के राजा भगदत्त ने अपने हाथी को सात्यकि के रथ के पास पहुँचाया। गजराज ने सात्यकि के रथ को सूँड़ से लपेटकर दूर फेंक दिया, जिससे रथ के टुकड़े-टुकड़े हो गये। सात्यकि फुर्ती के साथ रथ से पृथ्वी पर कूदकर वहाँ से भाग खड़े हुए। उनका सारथी भी बड़े-बड़े, सिन्धु देश के, घोड़ों की रास छोड़कर उनके पीछे ही भाग गया। अब वह गजराज उस रथों के घेरे से बाहर निकलकर राजाओं को मारने, फेंकने और रथों को तोड़ने-फोड़ने लगा। उस शीघ्रगामी हाथी के हमले से राजा लोग ऐसे व्याकुल और शङ्कित हो गये कि उन्हें उस एक हाथी के सैकड़ों रूप दिखाई देने लगे।

राजा भगदत्त जब अपने हाथी की सहायता से पाण्डवों और पाञ्चालों की सेना को नष्ट-भ्रष्ट करने लगे तब सब सैनिक सिलसिला तोड़ करके इधर-उधर भागने लगे। उस समय हाथियों और घोड़ों के चिल्लाने का घोर आर्त्तनाद सुनाई पड़ने लगा। महाराज ! तब महावीर भीमसेन फिर भगदत्त के सामने आये। भगदत्त का हाथी सूँड़ से फेंके हुए मद से भीमसेन के वाहनों ५० को भयविह्वल करने लगा। भीमसेन के रथ के घोड़े रथ को लिये बेतहाशा भाग खड़े हुए।

उस समय राजा कृती के पुत्र रुचिपर्वा रथ पर बैठकर बाण बरसाते हुए साक्षात् काल की तरह भीमसेन के पीछे दौड़े। पहाड़ी देश के राजा सुपर्वा ने तत्काल तीक्ष्ण

सत्ताईसवाँ अध्याय

संशप्तक-वध का वर्णन

सञ्जय कहते हैं—महाराज ! आप मुझसे अर्जुन के युद्धकौशल का वृत्तान्त पूछते हैं, सो मैं वर्णन करता हूँ, सुनिए। अर्जुन ने युद्धभूमि में भगदत्त की विविध क्रियाओं से उठनेवाली विकट धूल देखकर और सैनिकों का कोलाहल सुनकर वासुदेव से कहा—हे केशव ! महावीर भगदत्त शायद अपने ख़ूनी हाथी को लेकर युद्ध के मैदान में आये हैं। उसी से पीड़ित होकर सब सैनिक चिल्ला रहे और भाग रहे हैं। महाराज भगदत्त का हाथी बड़ा विकट है और वे ख़ुद भी इन्द्र के समान पराक्रमी हैं। हाथी पर से लड़नेवाले जितने योद्धा पृथ्वी पर हैं, उन सबमें भगदत्त श्रेष्ठ हैं। उनके हाथी की जोड़ का दूसरा हाथी नहीं है। वह हाथी लोह-मय कवच से सुरक्षित, कभी न थकनेवाला, अस्त्र-शस्त्र के प्रहार और अग्नि-स्पर्श को सहनेवाला है। उसे अस्त्र से नष्ट करना असम्भव नहीं तो दुःसाध्य अवश्य है। मेरी समझ में वह अकेला हाथी ही आज हमारी सेना को नष्ट कर देगा। मेरे और आपके सिवा और कोई भगदत्त तथा उनके हाथी को रोक नहीं सकता। इसलिए अब आप शीघ्रता के साथ मेरा रथ भगदत्त के सामने ले चलिए। अपने हाथी के बल से और अपनी अवस्था तथा बाहुबल से अहङ्कारी भगदत्त को मैं आज स्वर्ग भेजकर इन्द्र का प्रिय अतिथि बनाऊँगा। राजन् ! अर्जुन के ये वचन सुनकर महात्मा श्रीकृष्ण ने रथ को भगदत्त की ओर हाँक दिया।

[महावीर अर्जुन जब भगदत्त के साथ युद्ध करने के इरादे से उधर चले] तब महा-रथी त्रिगर्तदेशीय दस हज़ार और श्रीकृष्ण के अनुचर चार हज़ार, इस तरह चौदह हज़ार संशप्तकगण युद्ध के लिए ललकारते हुए अर्जुन के पीछे चले। इधर भगदत्त सब सेना का संहार कर रहे थे और उधर संशप्तकगण युद्ध के लिए ललकार रहे थे। इस दुहरे सङ्कट में पड़ने से अर्जुन का हृदय हिंडोले के समान दोनों ओर डोलने लगा। वे यह सोचकर बहुत व्याकुल हुए कि अब क्या करना चाहिए। यहाँ से लौटकर संशप्तकगण से युद्ध करूँ, अथवा युधिष्ठिर को बचाने के लिए भगदत्त से जाकर भिड़ूँ ? महाराज ! बहुत देर सोचकर अन्त को वीर अर्जुन ने संशप्तकों को ही मारने का निश्चय किया। वे उन्हीं की ओर लौट पड़े। अर्जुन का वध करने के लिए महावीर दुर्योधन और कर्ण ने ही सलाह करके यह उपाय निकाला था कि एक ओर संशप्तकगण युद्ध करें और दूसरी ओर भगदत्त लड़ें। किन्तु वीरश्रेष्ठ अर्जुन ने पहले चिन्ता में पड़कर अन्त को संशप्तक-वध का ही निश्चय करके उस कौशल को व्यर्थ कर दिया।

उस समय महावीर संशप्तकगण पराक्रमी अर्जुन के ऊपर चारों ओर से तीक्ष्ण असंख्य बाण बरसाने लगे। उनके बाण सब दिशाओं में व्याप्त हो गये। उन बाणों के बीच अर्जुन,

अट्ठाईसवाँ अध्याय

भगदत्त और अर्जुन के युद्ध का वर्णन

सञ्जय कहते हैं—महाराज ! महामति श्रीकृष्ण ने अर्जुन की इच्छा के अनुसार सुवर्ण-भूषित तेज़ घोड़ों को द्रोणाचार्य की सेना के सामने चलाया। द्रोणाचार्य के बाणों से पीड़ित अपने भाइयों की सहायता और रक्षा के लिए महारथी अर्जुन चले। इसी समय महावीर सुशर्मा अपने भाइयों के साथ अर्जुन से लड़ने के लिए उनके पीछे दौड़े। तब अर्जुन ने श्रीकृष्ण से कहा—हे शत्रुदमन ! वह देखिए, अपने भाइयों सहित सुशर्मा युद्ध के लिए मुझे ललकार रहा है। उधर उत्तर और आचार्य अपने तीक्ष्ण बाणों से हमारी सेना को मारकर भगा रहे हैं। संशप्तकगण ने इस तरह मेरे मन को दुहरे सङ्कट में डाल रक्खा है। अब आप ही विचार करके मुझसे कहिए कि इस समय मेरा क्या कर्तव्य है? [पहले संशप्तकगण का संहार करूँ, या द्रोण गुरु के बाणों से पीड़ित अपनी सेना की रक्षा करूँ ?]

श्रीकृष्ण ने अर्जुन के वचन सुनकर त्रिगर्तनरेश सुशर्मा की ओर रथ हाँक दिया। उस समय रणप्रिय अर्जुन ने सात बाणों से सुशर्मा को घायल करके उनकी ध्वजा और धनुष को काट डाला और फिर छः बाणों से उनके घोड़े, सारथी और भाई को मार डाला। यह देख-कर महावीर सुशर्मा ने क्रोध से विह्वल होकर अर्जुन के ऊपर भयानक सर्पाकार लोहमय शक्ति और श्रीकृष्ण के ऊपर तीक्ष्ण तोमर का प्रहार किया। अर्जुन ने तीन बाणों से उस शक्ति और तोमर को काट डाला और बाण-वर्षा से सुशर्मा को मूर्च्छित करके वे लगातार बाण छोड़ते हुए आगे बढ़े। कौरव-सेना के वीरों में से कोई भी उन्हें रोक नहीं सका। १०

महाराज ! महारथी अर्जुन अपने बाणों से बड़े-बड़े वीरों को मारकर सूखे वन को जलाने-वाली आग के समान रणभूमि में आगे बढ़े। सैनिक लोग अर्जुन के अग्निस्पर्श-सदृश दारुण बाणों के वेग को सहने में अशक्त हो उठे। महावीर अर्जुन अपने बाणों से सैनिकों का इस तरह संहार करके गरुड़ की तरह बड़े वेग से भगदत्त के सामने चले। उस समय युद्धविजयी अर्जुन कपट-द्यूत रचनेवाले दुरात्मा दुर्योधन के दोष से होनेवाले क्षत्रिय-संहार के लिए, पाण्डवों के लिए कल्याणप्रद और शत्रुओं की आँखों से शोक के आँसू बहानेवाले, गाण्डीव धनुष को हाथ में लिये हुए थे। कौरव-सेना के योद्धा लोग अर्जुन के बाणों से विह्वल होकर और भाग-कर, पहाड़ से टकराई हुई नाव की तरह, विपत्तिग्रस्त होने लगे।

उस समय क्रूरमति दस हज़ार कौरव-सेना के योद्धा, जय-पराजय के लिए दृढ़ निश्चय करके, अर्जुन को युद्ध के लिए बेधड़क ललकारने लगे। सब तरह की विपत्तियों को झेलनेवाले अर्जुन, जैसे कोई गजराज कमलवन में घुस करके उसे दलमल डाले वैसे ही, शत्रु-सेना के भीतर

चौदह तोमर चलाये। उनके चलाये हुए हर एक तोमर के अर्जुन ने तीन-तीन टुकड़े कर डाले। इसके बाद भगदत्त के हाथी का कवच भी देखते ही देखते अपने बाणों से काट गिराया। अर्जुन के बाणों से कवच कट जाने पर उनके प्रहारों से वह महागजराज अत्यन्त व्यथित हो उठा और जलधाराओं से नहाये हुए मेघ-हीन पर्वतराज की तरह शोभायमान हुआ। तब प्राग्ज्योतिषपति भगदत्त ने श्रीकृष्ण को लोहमय सुवर्णदण्डभूषित शक्ति मारी। रणनिपुण अर्जुन ने उसी दम फुर्ती के साथ उस शक्ति को बाणों से दो जगह से काट डाला। इसके बाद भगदत्त के छत्र और ध्वजा को काटकर उनके अङ्गों में दस बाण मारे। अर्जुन के कङ्कपत्रशोभित तीक्ष्ण बाणों से बुरी तरह घायल होने के कारण भगदत्त को बड़ा क्रोध चढ़ आया। वे अर्जुन के मस्तक पर असंख्य तोमर फेंककर बड़े ज़ोर से सिंहनाद करने लगे। भगदत्त के बाणों से अर्जुन के सिर पर का किरीट-मुकुट पलट गया। महावीर अर्जुन ने उस उलटे हुए किरीट को ठीक तौर से रखकर भगदत्त से कहा—हे प्राग्ज्योतिषेश्वर ! तुम अब इस समय सब लोगों को एक बार सदा के लिए अच्छी तरह देख लो [; क्योंकि अब तुम्हारी मृत्यु का समय आ गया है]।
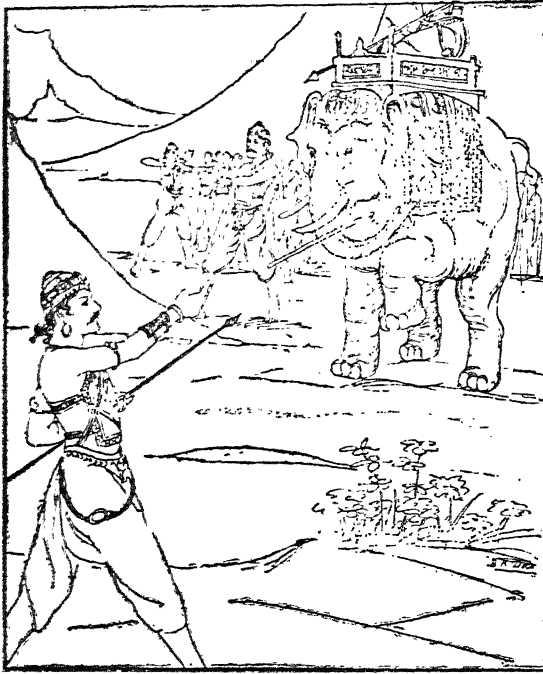
१०

अर्जुन के इन वचनों को सुनकर महारथी भगदत्त अत्यन्त क्रोध से व्याकुल हो, चमकीला धनुष हाथ में लेकर, अर्जुन और श्रीकृष्ण के ऊपर लगातार तीक्ष्ण बाण बरसाने लगे। उस समय रणविशारद अर्जुन ने बड़ी फुर्ती से भगदत्त का धनुष और तरकस काटकर बहत्तर बाणों से उनके मर्मस्थलों को छेद डाला। अर्जुन के तीक्ष्ण बाणों से मर्मस्थलों में अत्यन्त पीड़ित होने के कारण भगदत्त को बड़ा क्रोध हो आया। तब उन्होंने अर्जुन की छाती ताककर वैष्णव अस्त्र छोड़ा। महात्मा श्रीकृष्ण ने, अर्जुन की रक्षा के लिए, वह सर्वघाती अमोघ वैष्णवास्त्र अपनी छाती पर रोक लिया। [श्रीकृष्ण की आड़ में आ जाने से अर्जुन बच गये।] वह वैष्णवास्त्र श्रीकृष्ण के वक्षःस्थल में वैजयन्ती माला के रूप में स्थित हुआ। उस समय

२१ महावीर अर्जुन ने अत्यन्त क्लेश पाकर श्रीकृष्ण से कहा—हे मधुसूदन ! आपने प्रतिज्ञा की

अर्जुन से श्रीकृष्ण ने कहा कि इस राजा को बुढ़ापे ने घेर रक्खा है। यह शूर है तो बड़ा बलवान् किन्तु इसकी पलकें इतनी लटक गई हैं कि आँखें खुली रखने के लिए इसने पलकों को पट्टी से बाँध रक्खा है। यह सुनकर अर्जुन ने बाण से उस पट्टी को काट दिया; इससे भगदत्त की आँखों पर पलकें गिर जाने के कारण वे कुछ भी देख न सके। अब अर्जुन ने अर्धचन्द्र बाण से भगदत्त का वक्षःस्थल फाड़ डाला। तब भगदत्त के हाथ से धनुष और बाण छूटकर गिर गये और उनका शरीर प्राणहीन होकर गिर पड़ा। सन्ताड़ित पद्म-नाल से जैसे पत्ते झड़ जाते हैं वैसे ही भगदत्त के मस्तक पर से बहुमूल्य पगड़ी गिर पड़ी। अच्छी तरह फूला हुआ कनेर का पेड़ जैसे उखड़कर पहाड़ के ऊपर से गिर पड़े वैसे ही सुवर्णमाल्य-भूषित भगदत्त का शरीर सुवर्णभूषण-भूषित हाथी पर से पृथ्वी पर गिर पड़ा। उस समय महावीर अर्जुन इन्द्र-तुल्य महाबली इन्द्र के सखा वीर भगदत्त को मारकर वैसे ही कौरव-सेना के वीरों का संहार करने लगे जैसे आँधी बड़े-बड़े पेड़ों को तोड़ती और उखाड़ती है। ५१

तीसवाँ अध्याय

शकुनि का युद्धभूमि से भागना

सञ्जय कहते हैं—राजन्! अर्जुन इस तरह इन्द्र के प्रिय सखा भगदत्त को मारकर रणभूमि में घूमने लगे। उस समय वृषक और अचल नामवाले दो गान्धारराज-नन्दन अर्जुन को, सामने आकर, बाणवर्षा से पीड़ित करने लगे। कभी सामने से और कभी पीछे से वे अर्जुन के ऊपर वेगगामी तीक्ष्ण बाण चलाने लगे, जिनसे उनका शरीर घायल हो गया। अर्जुन ने क्रुद्ध होकर दम भर में तीक्ष्ण बाणों से गान्धार देश के राजकुमार वृषक के रथ के सारथी और घोड़ों को मार डाला और उनके धनुष, ध्वजा, छत्र और रथ को तिल-तिल करके काट डाला। महारथी अर्जुन अनेक प्रकार के अस्त्रों और शस्त्रों से शकुनि आदि गान्धार देश के योद्धाओं को बारम्बार व्याकुल करने लगे। फिर अर्जुन ने कुपित होकर शस्त्र ताने हुए पाँच सौ गान्धार-वीरों को दम भर में मार गिराया। वृषक बड़ी फुर्ती के साथ अपने बिना घोड़ों के रथ से कूदकर, भाई के रथ पर जाकर, दूसरा धनुष लेकर युद्ध करने लगे।

वीर अर्जुन, एक ही रथ पर बैठे हुए, वृषक और अचल नाम के दोनों भाइयों को बारम्बार तीक्ष्ण बाण मारने लगे। पूर्व समय में जैसे वृत्रासुर और बलासुर ने इन्द्र पर प्रहार किये थे वैसे ही वे दोनों भाई अर्जुन को तीक्ष्ण बाणों से बेधने लगे। जैसे गर्मी और वर्षा ऋतु के दो-दो महीने ताप और जल के द्वारा मनुष्यों को अत्यन्त व्याकुल करते हैं वैसे ही वे दोनों वीर राजकुमार स्वयं प्रहारों से बचकर अर्जुन पर प्रहार करने लगे। इसके बाद अर्जुन ने एक रथ पर सटे बैठे १०

अर्जुन ने अर्धचन्द्र बाण से भगदत्त का वक्षःस्थल फाड़ डाला—पृ० २२४०
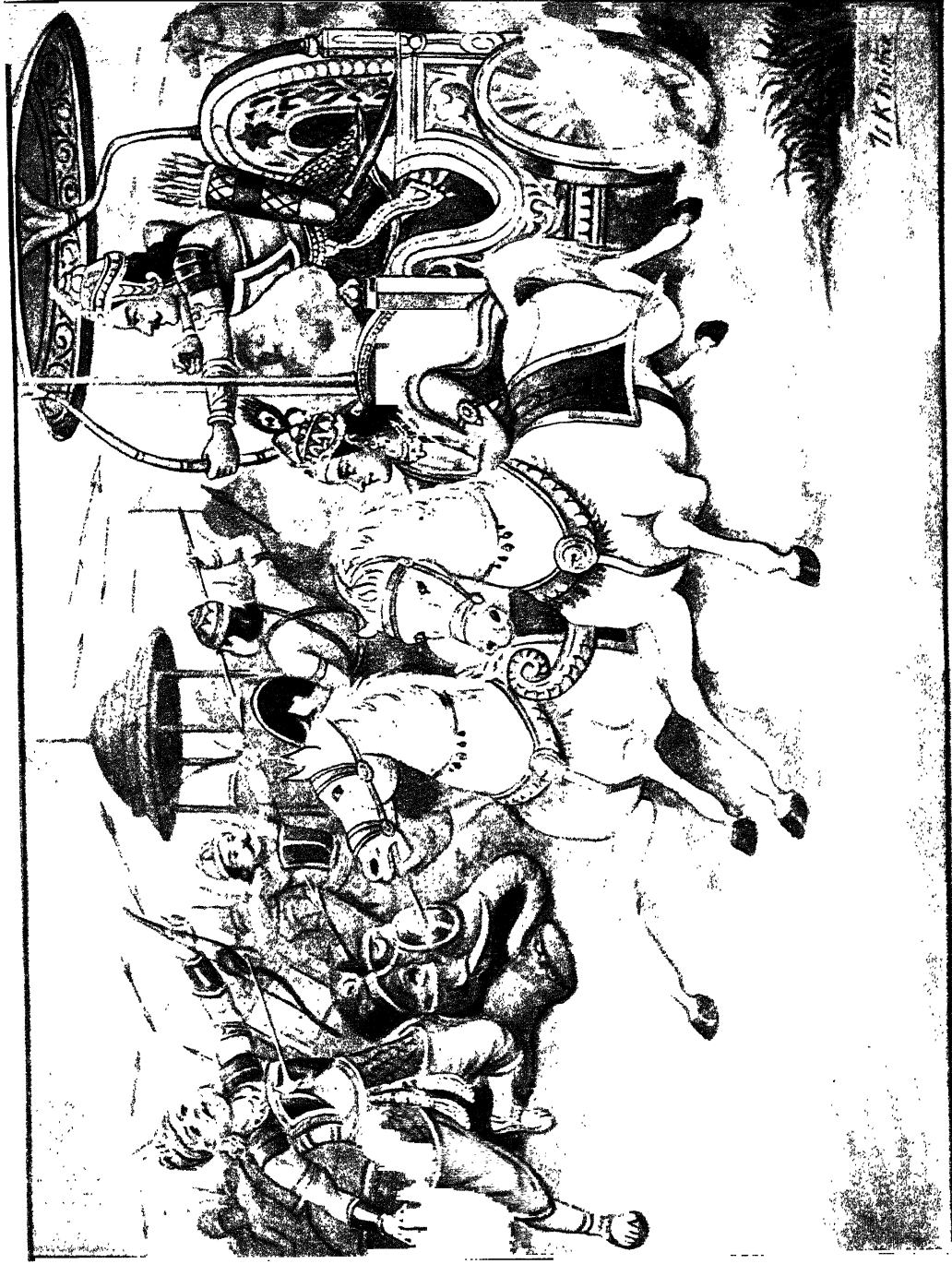
हुए दोनों भाइयों को एक ही बाण से मार डाला। उसी समय वे सिंहतुल्य लाल-लाल आँखोंवाले, एक ही रूप और आकार के, दोनों भाई मरकर रथ पर से गिर पड़े। अत्यन्त पवित्र वीर-यश को पृथ्वी पर सब ओर फैलाकर वे दोनों वीर स्वर्ग को सिधारे।

महाराज! इसके बाद आपके पुत्रगण संग्राम से न हटनेवाले, बन्धुजनप्रिय, दोनों मातुलों को मरकर गिरते देखकर आँसू बहाने लगे। मायानिपुण शकुनि ने जब देखा कि उनके दोनों भाई मारे गये तब वे श्रीकृष्ण और अर्जुन को मोहित करने के लिए माया-युद्ध करने लगे। उस समय शकुनि की माया के प्रभाव से सब दिशाओं और विदिशाओं से अर्जुन के ऊपर लाठी, अयोगुड़, पत्थर, शतघ्नी, गदा, बेलन, खड्ग, शूल, मुद्गर, पट्टिश, कम्पन, ऋष्टि, नखर, मुशल, परशु, क्षुर, क्षुरप्र, नालीक, वत्सदन्त, अस्थिसन्धि, चक्र, विशिख, प्रास और अन्यान्य बहुत से शस्त्रों की वर्षा होने लगी। गधे, ऊँट, भैंसे, बाघ, सिंह, सृमर (एक प्रकार के मृग), चीते, रीछ, कुत्ते, गिद्ध, वानर, साँप आदि बहुत से जीव भूख से व्याकुल और क्रोध से अन्धे होकर अर्जुन की ओर दौड़ते दिखाई पड़ने लगे। तब दिव्य अस्त्रों के जाननेवाले अर्जुन [अस्त्रों से अभिमन्त्रित] बाण चलाकर उन जीवों को नष्ट करने लगे। अर्जुन के बाणों से पीड़ित होकर भयानक चीत्कार करते हुए वे मर-मरकर यमपुर जाने लगे। २०

अब बहुत ही घना अँधेरा फैल गया, जिसने अर्जुन के रथ को छिपा लिया। उस अँधेरे के भीतर से कठोर वाक्य कहकर अदृश्य जीव अर्जुन की भर्त्सना करने लगे। अर्जुन ने ज्योतिर्मय अस्त्र का प्रयोग करके तुरन्त उस भयङ्कर अँधेरे को दूर कर दिया। इसके बाद भयानक जल के प्रवाह प्रकट हुए। अर्जुन ने वह जल सुखाने के लिए आदित्यास्त्र का प्रयोग किया। उस अस्त्र के प्रभाव से प्रायः सब जल सूख गया। इसी तरह महावीर अर्जुन ने हँसते-हँसते अस्त्रविद्या के बल से शकुनि की प्रकट की हुई सब मायाओं को नष्ट कर दिया। तब शकुनि अर्जुन के बाणप्रहार से पीड़ित होकर, बड़े फुर्तीले घोड़ोंवाले रथ पर बैठकर, कायरों की तरह रण छोड़कर भाग खड़े हुए। अब महाबाहु अर्जुन अपने हाथों की फुर्ती दिखाते हुए कौरव-सेना पर बाण बरसाने लगे। जैसे गङ्गा का प्रवाह पहाड़ से टकराकर दो धाराओं में बँट जाता है वैसे ही कौरव-सेना अर्जुन के बाणों से पीड़ित होकर दो भागों में बँट गई। कुछ सेना आचार्य के समीप और कुछ सेना दुर्योधन के पास चली गई। उस समय ऐसी धूल उड़ी कि अर्जुन को हम लोग देख नहीं पाते थे। केवल दक्षिण ओर लगातार गाण्डीव धनुष का घोर शब्द सुनाई पड़ रहा था। वह गाण्डीव का शब्द शङ्ख, दुन्दुभि और अन्य युद्ध के बाजों की ध्वनि से मिलकर आकाश में गूँज उठा। ३१

महाराज! उस समय दक्षिण ओर घोर संग्राम होने लगा। मैं द्रोणाचार्य के साथ था। धर्मराज युधिष्ठिर के वीर योद्धा कौरवपक्ष की सेना का संहार करने लगे। वर्षाकाल

में हवा जैसे मेघों को तितर-बितर कर देती है वैसे ही वीर अर्जुन अपने बाणों के प्रहार से शत्रुसेना को छिन्न-भिन्न करने और भगाने लगे। जल बरसाते हुए इन्द्र के समान बाणवर्षा करनेवाले अर्जुन को आते देखकर कोई वीर उन्हें नहीं रोक सका। अर्जुन के बाणों की चोट से अत्यन्त व्यथित होकर कौरवपक्ष के वीर ऐसे भागे कि भागते समय अपने ही पक्ष के लोगों को रौंदते-कुचलते और मारते चले जाते थे। अर्जुन के चलाये हुए कङ्कपत्रशोभित और शरीरों को काटनेवाले बाण टीड़ियों की तरह चारों ओर फैलने और गिरने लगे। साँप जैसे बाँबियों में घुसते हैं वैसे ही वे रक्त पीनेवाले बाण घोड़ों, हाथियों, पैदलों और रथी लोगों के शरीरों को फोड़कर पृथ्वी में घुसते दिखाई देते थे। अर्जुन अपनी प्रतिज्ञा के अनुसार हाथियों, घोड़ों और मनुष्यों को दूसरा बाण नहीं मारते थे; एक ही बाण लगने से वे जीव अत्यन्त व्यथित और प्राणहीन होकर पृथ्वी पर लोटने लगते थे। मरे हुए मनुष्यों, हाथियों और घोड़ों की लाशों से समर- ४० भूमि परिपूर्ण हो उठी। चारों ओर गीदड़ और कुत्ते कोलाहल कर रहे थे। इस तरह वह युद्धभूमि अत्यन्त भयानक और अद्भुत दिखाई पड़ने लगी। पिता पुत्र को, पुत्र पिता को, मित्र मित्र को और स्वजन स्वजन को छोड़कर आत्मरक्षा के लिए यत्न कर रहा था। अधिक क्या, लोग अपने-अपने वाहनों को भी छोड़कर भागे जा रहे थे। ४२

इकतीसवाँ अध्याय

अश्वत्थामा का राजा नील को मारना

धृतराष्ट्र ने कहा—हे सञ्जय! जिस समय कौरव-सेना छिन्न-भिन्न हो गई और तुम लोग रणभूमि छोड़कर भागने लगे उस समय तुम लोगों की क्या दशा हुई? छिन्न-भिन्न होकर भागती और शरणस्थान को न देखती हुई सेना को सँभालना और एकत्र करना बहुत ही दुष्कर होता है। मेरे पक्ष के सेनापति ने यह काम कैसे किया? तुम सब हाल मुझसे कहो।

सञ्जय ने कहा—महाराज! साधारण सैनिक लोग जब बे-सिलसिले भाग खड़े हुए तब भी महाराज दुर्योधन का प्रिय और अपने यश की रक्षा करने के लिए श्रेष्ठ वीरगण द्रोणाचार्य के पीछे चले। शस्त्र-अस्त्र तन गये, युधिष्ठिर अपने योद्धाओं के साथ युद्धभूमि में उपस्थित हुए और भयानक युद्ध होने लगा। उस समय आपके पक्ष के वीर योद्धा लोग बे-खटके आर्यजनोचित अद्भुत कर्म करके अपना पराक्रम प्रकट करने लगे। कौरवपक्ष के महापराक्रमी वीर मौक़ा पाकर भीमसेन, सात्यकि और धृष्टद्युम्न आदि पर आक्रमण करने लगे। क्रूरमति पाञ्चालगण "द्रोण को मारो, द्रोण को मारो" कहकर अपने पक्ष के लोगों को उत्तेजित करने लगे। वैसे ही आपके पुत्रगण "द्रोणाचार्य की रक्षा करो, द्रोणाचार्य की रक्षा करो" कहकर

अपने पक्ष के वीरों को आगे बढ़ने के लिए उत्साहित करते हुए प्रेरणा करने लगे। द्रोणाचार्य के जीवन को लेकर कौरवों और पाण्डवों में बाज़ी सी लग गई। पाण्डव कहते थे कि द्रोणाचार्य को मारो और कौरव कहते थे कि द्रोणाचार्य को न मारने पावें। आचार्य द्रोण पाञ्चाल देश की रथ-सेना के जिस-जिस अंश को अपने बाणों से छिन्न-भिन्न करने लगते थे उस-उस अंश की रक्षा करने के लिए वीर धृष्टद्युम्न वहीं पहुँच जाते थे। इस तरह सब सेना में उथल-पथल मच गई और युद्ध ने भयानक रूप धारण कर लिया। वीर योद्धा लोग भयानक सिंहनाद करते हुए अपने शत्रुओं पर आक्रमण करने लगे।

पाण्डवों पर आक्रमण करना कौरवपक्ष के वीरों के लिए असम्भव सा हो उठा। कौरवों के दिये हुए कष्टों को स्मरण करके पाण्डव भयानक आक्रमण से शत्रुपक्ष की सेना को व्याकुल करने लगे। पाण्डव लोग कुपित होकर द्रोणाचार्य को मारने के लिए प्राणपण करके घोरतर संग्राम करने १० लगे। वह संग्राम पत्थर और लोहे की वर्षा के समान अत्यन्त भयङ्कर हो उठा। बड़े-बूढ़े लोगों को भी, जिन्होंने पहले देवताओं और दानवों के घोर संग्राम देखे-सुने हैं, याद नहीं आता कि कभी ऐसा भयङ्कर युद्ध हुआ था। उस वीर-संहारकारी समर में सेना के बोझ से पृथ्वी अत्यन्त व्यथित होकर काँपने लगी। चारों ओर घूमते-फिरते कौरवपक्ष के सैनिकों का कोलाहल आकाशमण्डल में गूँजता हुआ पाण्डव-सेना में छा गया। पाण्डवपक्ष के सैनिकों को सामने देखकर द्रोणाचार्य सुतीक्ष्ण बाणों से उन्हें छिन्न-भिन्न करने लगे। तब पाण्डवपक्ष के सेनापति धृष्टद्युम्न क्रोध से विह्वल होकर उनके सामने आये और उन्हें रोकने की चेष्टा करने लगे। द्रोणाचार्य और धृष्टद्युम्न के उस अद्भुत समर को देखकर हम लोगों ने निश्चय कर लिया कि यह युद्ध अतुलनीय है।

इसके बाद अग्निसदृश तेजस्वी महाराज नील कौरव-सेना को उसी तरह अपने बाणों से भस्म करने लगे जिस तरह प्रज्वलित आग सूखी घास के ढेर को जलाती है। उनका धनुष ही ज्वाला था और बाण ही चिनगारियों के समान देख पड़ते थे। तब महा-

२८ प्रतापी वीर अश्वत्थामा हँसते हुए नील के सामने आकर कहने लगे—हे नील ! इन बहुत से योद्धाओं को अपने बाणों की आग में तुम व्यर्थ भस्म कर रहे हो। इन्हें मारने से क्या फल होगा? आओ, मुझ अकेले से ही युद्ध करो, शीघ्र ही क्रुद्ध होकर मुझ पर वार करो।

महाराज ! यह सुनकर महापराक्रमी और खिले हुए कमल के समान मुखवाले नील नरेश ने कमल-वर्ण कमल-लोचन अश्वत्थामा को कई तीक्ष्ण बाण मारे। महाबली अश्वत्थामा ने तुरन्त तीन भल्ल बाणों से नील के धनुष, ध्वजा और छत्र के टुकड़े-टुकड़े कर डाले। तब नील रथ से कूदकर ढाल-तलवार लेकर अश्वत्थामा का सिर काटने के लिए पक्षी की तरह उनकी ओर झपटे। अश्वत्थामा ने भी हँसकर फुर्ती के साथ एक भल्ल बाण से नील का, सुन्दर नासिका से शोभित और मणिमय कुण्डलों से अलङ्कृत, मस्तक काट डाला। लम्बे, कमलवर्ण, पूर्ण चन्द्रमा के समान मुखवाले, कमल-लोचन नील जब पृथ्वी पर मरकर गिर पड़े तब पाण्डवों की सेना बहुत ही व्यथित हो उठी। पाण्डव-पक्ष के योद्धा और महारथी लोग उस समय इस चिन्ता से अधीर हो उठे कि इस समय हमारी रक्षा कौन करेगा। क्योंकि महावीर अर्जुन तो दक्षिण-रणभूमि में दूर पर, बचे हुए संशप्तकों और नारायणी सेना के वीरों से, संग्राम कर रहे
२९ हैं। फिर वे कैसे हमारी रक्षा कर सकते हैं?

बत्तीसवाँ अध्याय

घमासान युद्ध का वर्णन

सञ्जय कहते हैं—राजन् ! इसके उपरान्त महावीर भीमसेन इस तरह अपनी सेना का संहार होना न देख सकने के कारण आगे बढ़े। उन्होंने क्रुद्ध होकर वाह्लीक को साठ और कर्ण को दस बाण कस-कसकर मारे। द्रोणाचार्य ने भीमसेन के प्राण लेने के लिए उनके मर्मस्थलों में लगातार तीक्ष्ण धारवाले छब्बीस बाण मारे। कर्ण ने बारह, अश्वत्थामा ने सात और दुर्योधन ने छः तीक्ष्ण बाण भीमसेन को मारे। तब भीम ने भी कुपित होकर फुर्ती दिखाते हुए द्रोणाचार्य को पचास, कर्ण को दस, दुर्योधन को बारह और अश्वत्थामा को आठ बाण मार-कर सिंहनाद किया। इस तरह वे अकेले ही उनके साथ संग्राम करने लगे। वह युद्धभूमि उस समय महाभयानक हो उठी। उस समय वहाँ मृत्यु बहुत ही सुलभ हो रही थी। धर्मराज युधिष्ठिर ने भीमसेन की रक्षा करने के लिए कई योद्धाओं को भेजा। नकुल, सहदेव और सात्यकि आदि योद्धा सहायता करने के लिए भीमसेन के पास पहुँचे। भीमसेन आदि सब वीर मिलकर क्रोध के साथ आगे बढ़े और द्रोणाचार्य की सेना को मारने का उद्योग करने लगे।
१० महारथी द्रोणाचार्य ने भी उन महाबली वीरों का अकेले ही सामना किया। उस समय कौरव

लोग, राज्य की आशा और मृत्यु का डर छोड़कर, पाण्डवों के सामने आये। हाथी का सवार हाथी के सवार को, रथी रथी को और घुड़सवार घुड़सवार को मारकर गिराने लगा। वीर लोग शक्ति, खड्ग और परशु आदि शस्त्रों के द्वारा परस्पर घोर प्रहार करने लगे। किसी-किसी का सिर नीचे हो गया और वह हाथी या घोड़े की पीठ से पृथ्वी पर गिर पड़ा। कोई बाण लगने से मरकर रथ से धरती पर आ रहा। किसी शूर का शरीर छिन्न-भिन्न हो गया और वह चेष्टारहित होकर ज़मीन पर गिर पड़ा, इसी बीच में एक हाथी उसकी छाती पर होकर चला गया, जिससे उसकी छाती और मस्तक चूर-चूर हो गया। इसी तरह अनेक हाथी इधर-उधर भागकर बहुत से जीवित, घायल, अधमरे और मरे हुए लोगों को रौंदने लगे। कुछ हाथी बाणों के प्रहार से चुटियल होकर धरती पर गिर पड़े और अपने बड़े-बड़े दाँतों से बहुत से गिरे हुए रथी लोगों के शरीरों को फाड़ने लगे। कुछ हाथी दाँतों में लगे हुए नाराच बाणों से सैकड़ों मनुष्यों को घायल करते हुए इधर-उधर विचरने लगे। हाथियों के दल इधर-उधर भागकर गिरे हुए घोड़ों, रथों, हाथियों और कवचधारी पैदलों को—मोटे नरकुल के वन की तरह—पैरों से कुचलते और रौंदते चले जाते थे। अपनी बात के पक्के शानदार राजा लोग काल के वश होकर गिद्धों के पङ्खों की बिछी हुई अत्यन्त क्लेशकर मृत्यु-शय्या पर पड़े हुए थे। उस समय मर्यादा तोड़कर भयानक युद्ध हो रहा था। मोहवश पिता पुत्र को और पुत्र पिता को मार रहा था। चारों ओर रथों के टूटे हुए धुरे, कटे धनुष, ध्वजा और छत्र आदि का गिर-गिरकर ढेर होने लगा। २० कोई घोड़ा, जुएँ का आधा अंश कट जाने पर, बड़े वेग से भाग खड़ा हुआ। तलवार की मूठ पकड़े हुए हाथ और कुण्डल-मण्डित मुण्ड कट-कटकर गिरने लगे। महापराक्रमी हाथी बिगड़ खड़े हुए और रथों को खींच-खींचकर तोड़ने-फोड़ने लगे। किसी जगह पर हाथी के हमले से घोड़े घायल हो-होकर अपने सवारों सहित धरती पर गिर रहे थे।

इस तरह मर्यादा-हीन अत्यन्त भीषण संग्राम हो रहा था। "हाय तात! हाय पुत्र! हाय मित्र! तुम कहाँ हो! कहाँ भागे जा रहे हो! इसे मारो! उसे इस जगह ले आओ! इस व्यक्ति को मार डालो!"—इस तरह की और अन्यान्य प्रकार की अनेक बातें चारों ओर सुनाई पड़ रही थीं। हास्य, सिंहनाद, शङ्खनाद, आर्तनाद और गर्जनशब्द चारों ओर उठकर उस रणभूमि को भयानक बना रहे थे। मनुष्यों, हाथियों और घोड़ों के शरीरों से रक्त का प्रवाह बह चला, जिससे ज़मीन की उठी हुई धूल बैठ गई। डरपोक मनुष्य उस दृश्य को देखकर डर गये। किसी वीर के रथ का पहिया शत्रु के रथ के पहिये में फँस गया जिससे, अन्य शस्त्र मारने का मौक़ा न रहने के कारण, उसने गदाप्रहार करके शत्रु का सिर चूर्ण कर डाला। उस निराश्रय संग्राम में आश्रयप्रार्थी वीर परस्पर केशाकर्षण, घूँसेबाज़ी और नख-दन्त-प्रहार आदि करके युद्ध करने लगे। किसी वीर ने तलवार तानने के लिए हाथ उठाया, इसी समय

शत्रु ने उस खड्ग-सहित हाथ के टुकड़े-टुकड़े करके गिरा दिये। किसी-किसी के धनुष-बाण-अंकुश आदि शस्त्रों से शोभित हाथ छिन्न-भिन्न होने लगे। कोई किसी के प्रति अपने हार्दिक विद्वेष को प्रकट करने लगा। किसी योद्धा ने समर से भागकर जान बचाई और किसी ने अपने समकक्ष योद्धा का सिर काट डाला। कोई आर्तनाद करता हुआ बड़े वेग से भाग खड़ा हुआ। कोई अत्यन्त भयविह्वल होकर चिल्लाने लगा। कोई तीक्ष्ण बाणों से शत्रु को और कोई अपने ही पक्ष के योद्धा को मार रहा था। पर्वतशिखरतुल्य कोई गजराज बाण की चोट खाकर वर्षाकाल के नदी के फटे हुए कगारे के समान गिर पड़ा। झरने से युक्त पर्वत के समान मदमत्त अन्य एक हाथी रथी, घोड़े और सारथी को पीड़ित करता हुआ खड़ा था। डरपोक दुर्बल हृदयवाले लोग खून से तर महावीरों को मार-काट करते देखकर मोह को प्राप्त और मूर्च्छित होने लगे। सभी लोग उद्विग्न हो रहे थे। ऐसा अँधेरा और हुल्लड़ था कि कुछ भी नहीं मालूम पड़ता था। कोई किसी को नहीं पहचानता था। सैनिकों की दौड़-धूप से उठी हुई बेशुमार धूल आकाशमण्डल में छा गई। समर में कोई नियम नहीं रहा।

उधर पाण्डवपक्ष के सेनापति धृष्टद्युम्न सदा युद्ध का उत्साह रखनेवाले पाण्डवों और अन्य वीरों को "यही ठीक मौक़ा है" कहकर उत्तेजित करने लगे। बाहुबलसम्पन्न पाण्डवगण सेनापति की आज्ञा के अनुसार शत्रुसेना का संहार करते हुए, राजहंस जैसे सरोवर में विचरते हैं वैसे ही, रणभूमि में द्रोणाचार्य की तरफ़ जा रहे थे। आचार्य द्रोण के रथ के सामने "उसे पकड़ो; भागो नहीं; शङ्का न करो; उसे मार डालो" इत्यादि भयङ्कर शब्द सुन पड़ते थे। उधर से द्रोणाचार्य, कृपाचार्य, कर्ण, अश्वत्थामा, जयद्रथ, शल्य, अवन्तिदेशीय विन्द और अनुविन्द आदि वीर योद्धा लोग शत्रुपक्ष के वीरों को रोकने लगे। इधर अत्यन्त कुपित, दुर्द्धर्ष और दुर्निवार्य पाञ्चालगण और पाण्डवगण शत्रुओं के बाणप्रहार से अत्यन्त पीड़ित होकर वीर आर्यों के धर्म का ख़याल करके द्रोणाचार्य के सामने समर में डटे रहे। इसके उपरान्त क्रोध से विह्वल होकर वीरश्रेष्ठ आचार्य हज़ारों बाण बरसाकर चेदि, पाञ्चाल और पाण्डवगण को अत्यन्त पीड़ित करने लगे। उनकी प्रत्यञ्चा की, वज्रपात के शब्द के समान मनुष्यों को भयविह्वल बना देनेवाली, ध्वनि और तलध्वनि चारों ओर सुनाई पड़ने लगी। महाराज! द्रोणाचार्य इस तरह पाञ्चालों और पाण्डवों के दल का विनाश कर ही रहे थे इसी समय महावीर अर्जुन संशप्तकगण को हराकर, रुधिर रूप जल और बाण-समूह रूप आवर्त से युक्त भयानक रणकुण्ड से उत्तीर्ण होकर, वहाँ पर आ गये। हम लोगों ने महायशस्वी सूर्यतुल्य अर्जुन की वानरचिह्न-युक्त ध्वजा देखी। पाण्डवदल के मध्यवर्ती, युगान्तकाल के सूर्य के समान प्रचण्ड, महावीर अर्जुन अस्त्ररूप किरणों से संशप्तकसैन्यसागर को सुखाकर कौरव-सेना को तपाने और पीड़ित करने लगे। जैसे प्रलयकाल में धूमकेतु उदय होकर सब प्राणियों को भयाकुल और भस्म

अर्जुन ने......कर्ण के छोटे भाई को मार डाला—पृ० २२४७

इस दुर्भेद्य चक्रव्यूह को किस तरह तोड़ सकेंगे—पृ० २२९३
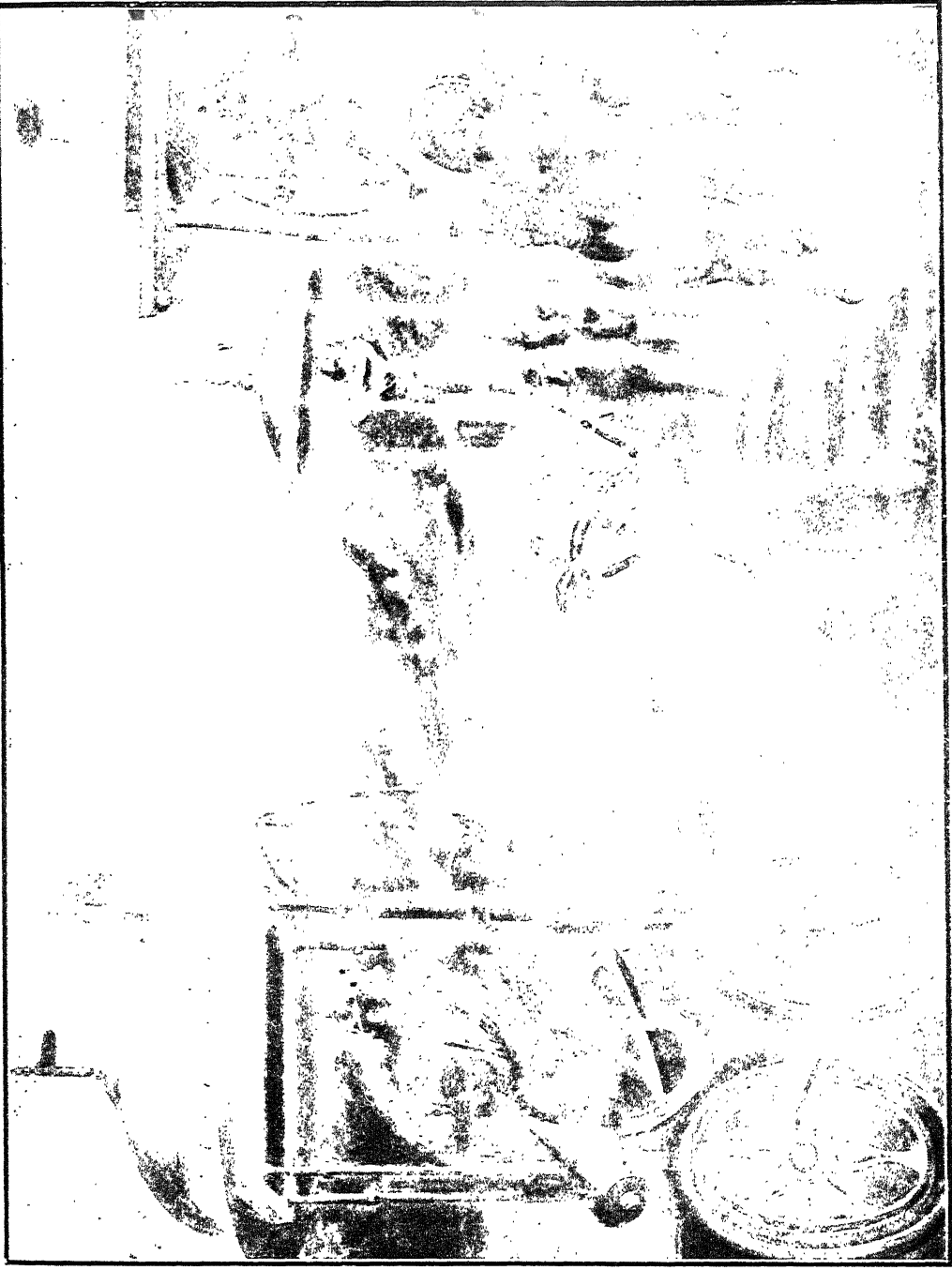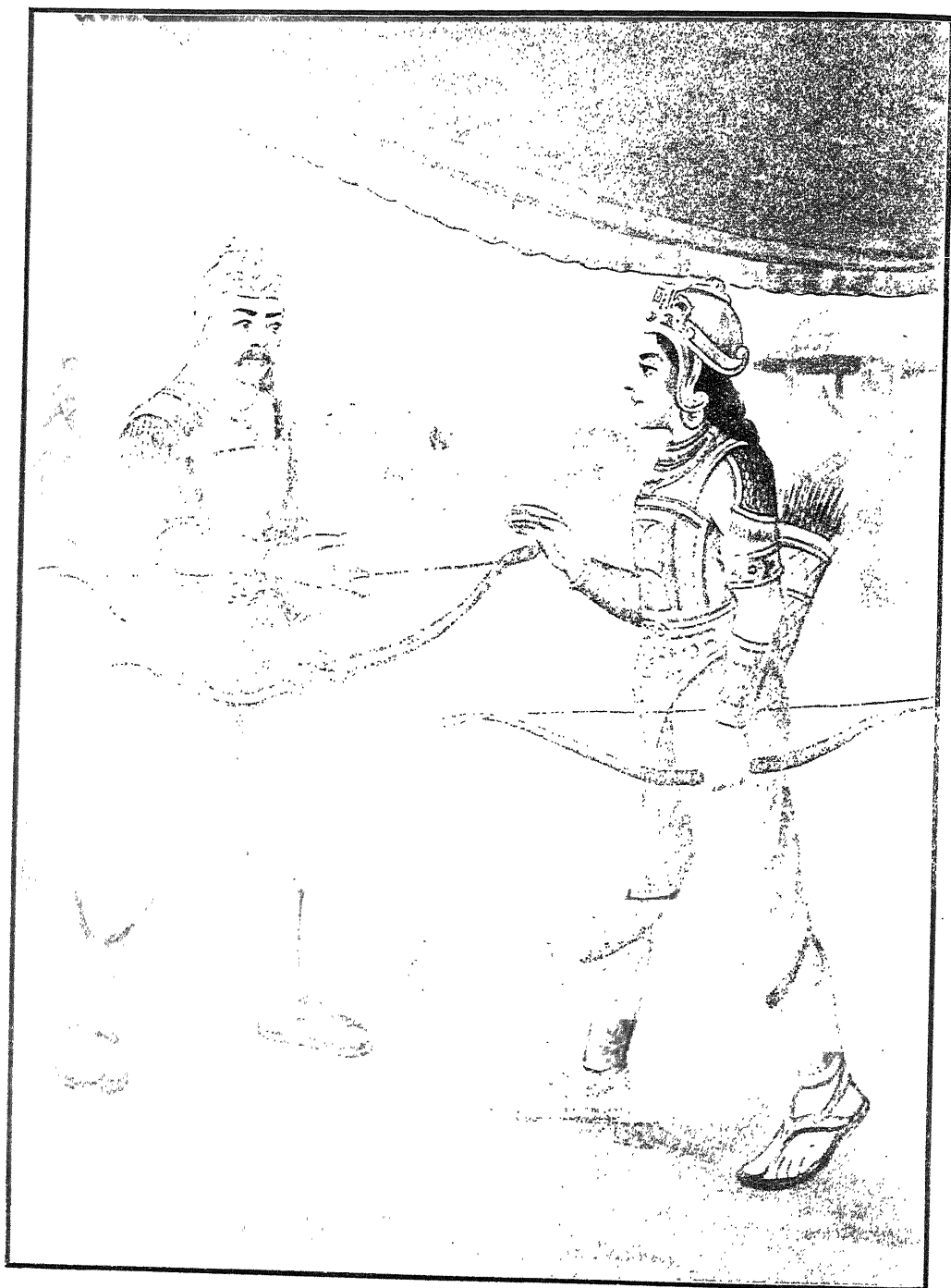
करता है वैसे ही अर्जुन भी अस्त्रतेज से कौरवों को जलाने लगे। हाथी, घोड़े, रथ आदि पर बैठे हुए वीरगण अर्जुन के बाणों से मरकर गिरने लगे। उनके अङ्ग छिन्न-भिन्न और केश बिखरे हुए थे। कोई आर्तनाद और कोई चीत्कार करने लगा। कुछ लोग अर्जुन के बाणों से तत्काल मरकर पृथ्वी पर गिर पड़े। महावीर अर्जुन योद्धाओं के वीर-धर्म का ख़याल करके गिरे-पड़े और भागे हुए शत्रुओं को नहीं मारते थे। कौरवपक्ष के प्रायः सभी लोग विस्मित और समर से विमुख होकर हाहाकार करने और "कर्ण! कर्ण!" चिल्लाने लगे। शरणार्थी ५० कौरवों का रोना-चिल्लाना सुनकर "डरो नहीं" कहकर कर्ण ने अर्जुन का सामना किया। उन्होंने आते ही अर्जुन के ऊपर आग्नेय अस्त्र छोड़ा। चमकीले धनुष को घुमाकर तीक्ष्ण बाण बरसानेवाले कर्ण के बाणों को अर्जुन ने अपने बाणों से विफल करना शुरू किया। कर्ण भी अपने बाणों से अर्जुन के बाणों को रोकते और बाण-वर्षा करते हुए सिंहनाद करने लगे। इसी बीच में धृष्टद्युम्न, भीमसेन और सात्यकि ने एक साथ कर्ण को तीन-तीन बाण मारे। कर्ण ने अर्जुन के ऊपर बाण बरसाकर, उनके बाणों को व्यर्थ करके, तीन बाणों से धृष्टद्युम्न, भीम और सात्यकि के धनुष काट डाले। तब उक्त तीनों वीर, धनुष कट जाने से, विषहीन साँप के समान हो गये। वे अपने-अपने रथ पर से कर्ण के ऊपर शक्ति चला करके सिंहनाद करने लगे। वे विषैले नाग के समान प्रज्वलित अग्निशिखा सी शक्तियाँ बड़े वेग से कर्ण की ओर चलीं। महावीर फुर्तीले कर्ण ने तीन-तीन बाणों से राह में ही हर एक शक्ति के तीन-तीन टुकड़े कर डाले। फिर वे अर्जुन के ऊपर बाण बरसाकर सिंहनाद करने लगे। महावीर अर्जुन ने भी कर्ण को सात बाण मारकर अत्यन्त तीक्ष्ण भयानक बाणों ६० से कर्ण के छोटे भाई को मार डाला। उसके बाद छः बाणों से शत्रुञ्जय को मारकर एक भल्ल बाण से विपाट का सिर काट गिराया। इस तरह कर्ण के तीनों भाइयों को, कर्ण और दुर्योधन आदि के सामने ही, अकेले अर्जुन ने मार डाला।

अब महावेगशाली भीमसेन ने रथ से उतरकर, पक्षिराज गरुड़ की तरह झपटकर, खड्ग के प्रहार से कर्ण के पक्ष के पन्द्रह वीरों को देखते ही देखते मार डाला। फिर रथ पर बैठकर

दूसरा धनुष हाथ में लेकर दस बाण कर्ण को, पाँच बाण कर्ण के सारथी को और घोड़ों को भी उन्होंने मारे। महाबली धृष्टद्युम्न ने भी पहले ढाल-तलवार लेकर चन्द्रवर्मा और निषध देश के राजा बृहत्क्षत्र का सिर काट डाला और फिर रथ पर बैठकर, दूसरा धनुष लेकर, सिंहनादपूर्वक वीर कर्ण को इक्कीस बाण मारे। सात्यकि ने भी दूसरा धनुष लेकर सिंहनाद करके चौंसठ बाणों से कर्ण को घायल किया। फिर दो भल्ल बाणों से उनका धनुष काट डाला। इसके बाद उनके दोनों हाथों में और छाती में तीन बाण मारे। तब राजा दुर्योधन, द्रोणाचार्य और जयद्रथ ने आकर सात्यकि-रूप महासागर में डूबते हुए कर्ण का उद्धार किया। कर्ण के साथ के सैकड़ों पैदल, घोड़े, हाथी और रथी योद्धा अत्यन्त ७१ भयविह्वल होकर उन्हीं के पीछे भाग खड़े हुए। इधर धृष्टद्युम्न, भीमसेन, अभिमन्यु, अर्जुन, नकुल और सहदेव सात्यकि की सहायता करने लगे।

महाराज! इस प्रकार आपके और पाण्डवपक्ष के वीरगण परस्पर विनाश के लिए घोरतर संग्राम करने लगे। सब लोग प्राणपण से युद्ध कर रहे थे। पैदल, रथी, हाथियों और घोड़ों के सवार परस्पर भिड़ रहे थे। कहीं पर हाथी के सवार रथियों और पैदलों के साथ, कहीं पर घुड़सवार के साथ घुड़सवार, कहीं हाथी के सवार से हाथी के सवार, कहीं रथी के साथ रथी और कहीं पैदल के साथ पैदल घोर युद्ध कर रहे थे। वह संग्राम मांसाहारी पशु-पक्षियों के आनन्द को बढ़ानेवाला और यमपुरी को बसानेवाला था। मनुष्यों, रथों, हाथियों और घोड़ों के द्वारा असंख्य मनुष्य, हाथी, रथ और घोड़े नष्ट-भ्रष्ट हो रहे थे। कहीं पर हाथी ने हाथी को, कहीं रथी ने रथी को, कहीं घोड़े ने घोड़े को, कहीं पैदल ने पैदल को, कहीं रथी ने हाथी को, कहीं हाथी ने घोड़े को और कहीं घोड़े ने मनुष्य को मार डाला। किसी की जीभ कट गई, किसी के दाँत टूट गये, किसी की आँखें निकल पड़ीं, किसी का कवच टूट गया और किसी के आभूषण गिर पड़े। इस तरह चारों ओर मृत्यु का साम्राज्य देख पड़ता था। भयानक स्वरूपवाले बड़े-बड़े हाथी अनेक शस्त्रधारी शत्रुओं के प्रहार से मारे गये। हाथियों के पैरों से, घोड़ों की टापों से और रथों के पहियों से रौंदी गई, क्षत-विक्षत और नष्ट होती हुई सब सेना अत्यन्त व्याकुल हो उठी। इस तरह मांसाहारी पशु-पक्षी और राक्षस आदि के लिए आह्लादजनक, अत्यन्त भयानक, लोकक्षयकारी संग्राम उपस्थित होने पर महाबली वीरगण क्रोधविह्वल होकर बलपूर्वक एक दूसरे को मारते और मरते हुए रणभूमि में विचरने लगे। महाराज! दोनों ओर की सेना इस तरह ख़ून से तर और छिन्न-भिन्न हो गई। थके हुए वीरगण एक दूसरे का मुँह ताकने लगे। इसी बीच में सूर्यनारायण अस्ताचल पर पहुँच गये। तब दोनों पक्ष की सेनाएँ ८० युद्ध बन्द करके धीरे-धीरे अपने-अपने शिविर में विश्राम के लिए चली गईं।

अभिमन्युवधपर्व

तेंतीसवाँ अध्याय

द्रोणाचार्य की प्रतिज्ञा। अभिमन्यु के मारे जाने का संक्षिप्त वर्णन

सञ्जय ने कहा—महाराज! महातेजस्वी अर्जुन के पराक्रम से जब हमारी सेना भाग खड़ी हुई, द्रोणाचार्य का इरादा पूरा नहीं हुआ और राजा युधिष्ठिर सुरक्षित ही रहे तब समर में जीते गये, कवच-हीन, धूलिधूसरित कौरव-वीर समरविजयी शत्रुओं के अचूक बाणों से घायल और उद्विग्न होकर इधर-उधर ताकने लगे। शत्रुपक्ष के वीर उनकी हँसी उड़ाने लगे। इसके बाद आचार्य की अनुमति से कौरवों ने युद्ध बन्द कर दिया। लोग अर्जुन के पराक्रम और गुणों की बड़ाई करने लगे। कुछ लोग अर्जुन और श्रीकृष्ण की मित्रता की प्रशंसा कर रहे थे। उस समय कौरवगण सन्नाटे में आकर चुप हो गये।

सवेरा होने पर राजा दुर्योधन शत्रुपक्ष की उन्नति और विजय देखकर अत्यन्त कुपित और उदास हो सब योद्धाओं के सामने प्रणयकोप, अभिमान और पाण्डवों के प्रति शत्रुभाव के साथ द्रोणाचार्य से यों कहने लगे—हे द्विजश्रेष्ठ! हम लोग अवश्य ही आपके शत्रुपक्ष में हैं; क्योंकि आपने युधिष्ठिर को सामने पाकर भी नहीं पकड़ा। आप जिसे पकड़ना चाहें, वह अगर आपके समीप आ जाय तो चाहे देवगण के साथ मिलकर भी पाण्डव उसकी रक्षा करें किन्तु उसे बचा नहीं सकते, आपके हाथ से उसका छुटकारा नहीं हो सकता। आपने पहले प्रसन्न होकर मुझे वर दिया है, तो फिर अब क्यों नहीं उसे पूरा करते? आर्य पुरुष अपने भक्त को कभी निराश नहीं करते।

दुर्योधन के ये वचन सुनकर द्रोणाचार्यजी क्रुद्ध होकर कहने लगे—हे दुर्योधन! मैं सदैव तुम्हारा भला करने की चेष्टा करता हूँ, फिर भी तुम ऐसी बातें कह रहे हो! मेरे बारे में तुम्हारा ऐसा ख़याल करना ठीक नहीं। देखो, अर्जुन के द्वारा रक्षित रहने पर १० महाराज युधिष्ठिर को पकड़ना सर्वथा असम्भव है। अर्जुन के पास रहने पर देव, दैत्य, गन्धर्व,

यक्ष, राक्षस, नाग आदि सब मिलकर भी युधिष्ठिर को नहीं पकड़ सकते। जहाँ विश्वविधाता स्वयं वासुदेव सहायक रूप से विराजमान हैं और महापराक्रमी अर्जुन सेनापति हैं, वहाँ सिवा महाप्रभु शङ्कर के और किसी का बल कुछ काम नहीं कर सकता। ख़ैर, मैं तुमसे यह सत्य कहता हूँ कि आज पाण्डवपक्ष के किसी एक श्रेष्ठ महारथी योद्धा को मारूँगा; मेरी यह बात मिथ्या नहीं हो सकती। हे नरेश! आज मैं चक्रव्यूह की रचना करूँगा। इस व्यूह (मोर्चे) को देवता भी नहीं तोड़ सकते। तुम आज फिर किसी उपाय से अर्जुन को युधिष्ठिर के पास से दूर हटाने का उपाय करो। युद्ध की ऐसी कोई बात नहीं जिसे अर्जुन जानते न हों, या कर सकते न हों। अर्जुन ने इधर-उधर घूमकर, अनेक स्थानों से, युद्ध के सम्बन्ध की सब तरह की जानकारी प्राप्त कर ली है।

महावीर द्रोणाचार्य के यों कहने पर शेष संशप्तकगण फिर महारथी अर्जुन को युद्ध के लिए, युद्धभूमि के दक्षिण भाग में, ललकारने लगे। इसके बाद संशप्तकगण के साथ अर्जुन का भयानक संग्राम होने लगा। वैसा युद्ध शायद कभी किसी ने देखा-सुना न होगा। इधर द्रोणाचार्य ने बड़े यत्न के साथ चक्रव्यूह बनाया। दोपहर में तपनेवाले सूर्य के समान वह व्यूह आँखों में चकाचौंध पैदा कर देनेवाला था। उधर वीर कुमार अभिमन्यु, धर्मराज युधिष्ठिर की अनुमति के अनुसार, घूम-फिरकर उस दुर्भेद्य चक्रव्यूह को बारम्बार तोड़ने लगे। उसके बाद उन्होंने अत्यन्त दुष्कर कार्य करते हुए हज़ारों वीरों का संहार किया। फिर एक साथ छः महारथी वीरों से अकेले लड़कर अन्त को, शस्त्र-हीन असहाय अवस्था में, दुःशासन के पुत्र के हाथों वे मारे गये। इस घटना से हमारे पक्ष के लोगों को बड़ा ही सन्तोष और आनन्द हुआ। पाण्डव लोग और उनके पक्ष के सब लोग अभिमन्यु की मृत्यु के शोक से बहुत ही अधीर हो उठे। इसके उपरान्त हम लोगों ने विश्राम के लिए युद्ध बन्द कर दिया।

२०

धृतराष्ट्र ने कहा—हे सञ्जय! अर्जुन का पुत्र महावीर अभिमन्यु तो अभी पूरी तरह जवान भी नहीं हुआ था। उस होनहार लड़के के मारे जाने का समाचार सुनकर मेरा हृदय शोक से फटा सा जाता है! राज्य की इच्छा रखनेवाले वीरों ने जिस क्षत्रिय-धर्म के अनुसार उस बालक के ऊपर अस्त्र-शस्त्र चलाये, वह क्षत्रिय-धर्म बड़ा ही दारुण है! पूर्व पुरुषों ने क्षत्रिय-धर्म को कैसा घोर बनाया है! मेरे पक्ष के वीरों ने अत्यन्त सुखी और निःशङ्क होकर रण में विचरनेवाले वीर अभिमन्यु को किस तरह मारा? पुरुषसिंह अभिमन्यु ने महारथियों की सेना को नष्ट करने के लिए जिस तरह रणभूमि में विचरण किया और जिस तरह युद्ध में अपना प्रशंसनीय पराक्रम प्रकट किया, सो सब मेरे आगे वर्णन करो।

सञ्जय ने कहा—राजन्! आप मुझसे जो वृत्तान्त पूछ रहे हैं, सो मैं विस्तार के साथ वर्णन करता हूँ, सुनिए। शत्रुसेना का संहार करने के लिए अभिमन्यु जिस तरह संग्रामभूमि में

विचरते रहे, जिस तरह हमारे पक्ष के विजयाभिलाषी दुर्निवार दुर्द्धर्ष वीरगण उनके प्रहार से क्षत-विक्षत हुए, सो सब सुनिए। जिस तरह आपके पक्ष के योद्धा लोग वीर अभिमन्यु के पराक्रम और प्रहार से तृण-गुल्म-वृक्ष-पूर्ण वन में दावानल से घिरे हुए वनवासी जीव-जन्तुओं के समान भय से विह्वल और उद्विग्न हो उठे, सो सब मैं आपके आगे कहता हूँ, मन लगाकर सुनिए। २८

चौंतीसवाँ अध्याय

चक्रव्यूह-निर्माण का वर्णन

सञ्जय कहते हैं—महाराज! श्रीकृष्ण सहित पाँचों पाण्डव ऐसे हैं कि देवता भी उनको नहीं हरा सकते। वे सदा समर में उद्योग के साथ अद्भुत कर्म करनेवाले, कर्मों से अपनी श्रमशीलता और कष्टसहिष्णुता प्रकट करनेवाले हैं। महाराज! उत्तम कर्म, कुल, बुद्धि, कीर्ति, यश, श्री आदि की विशेषताओं में इस त्रिभुवन में महात्मा कृष्ण के समान कोई पुरुष न हुआ है और न होगा। राजा युधिष्ठिर भी सत्य, धर्म, तप, दान, ब्राह्मणभक्ति आदि सद्गुणों के कारण देव-भाव प्राप्त कर चुके हैं। लोग कहते हैं कि प्रलय के समय का अन्तकारी यमराज, यशस्वी परशु-राम और रणभूमि में उपस्थित भीमसेन, ये तीनों एक से भयङ्कर हैं। प्रतिज्ञा के अनुसार काम करने में निपुण गाण्डीवधन्वा अर्जुन के समकक्ष वीर अजेय योद्धा मुझको पृथ्वी भर में नहीं देख पड़ता। नकुल में गुरुभक्ति, सलाह को गुप्त रखना, विनय, इन्द्रियदमन, अनुकरण-निपुणता या सौन्दर्य और शूरता, ये छः श्रेष्ठ गुण सदा अखण्ड रूप से वर्तमान हैं। सहदेव भी शास्त्रज्ञान, गाम्भीर्य, मधुर भाषण, सत्त्व, रूप और पराक्रम में देवश्रेष्ठ अश्विनीकुमारों के तुल्य हैं। राजन्! वासुदेव में और पाँचों पाण्डवों में जो पूर्वोक्त गुण अलग-अलग मौजूद हैं, उन सभी श्रेष्ठ गुणों का समावेश अकेले अभिमन्यु में देखा जाता था। राजा युधिष्ठिर का धैर्य, श्रीकृष्ण का स्वभाव (चरित), भीमसेन का पराक्रम, अर्जुन का रूप और विक्रम, नकुल की नम्रता और सहदेव का शास्त्रज्ञान, ये सब बातें वीर अभिमन्यु में देख पड़ती थीं। १०

धृतराष्ट्र ने कहा—हे सञ्जय! वही रणदुर्जय अभिमन्यु किस प्रकार युद्ध के मैदान में मारा गया? मैं सब हाल विस्तार के साथ सुनना चाहता हूँ।

सञ्जय ने कहा—हे नर-नाथ! आप दुस्सह शोक को रोककर सँभलकर बैठिए। मैं आपके सुहृदों की मृत्यु का वृत्तान्त कहता हूँ, सुनिए। आचार्य द्रोण ने चक्रव्यूह बना करके उसके बीच में इन्द्रसदृश नरेशों को स्थापित किया। उस व्यूह के द्वार पर सूर्य के समान तेजस्वी राजपुत्रगण खड़े किये गये। सब राजा और राजपुत्र मिलकर उस व्यूह की रक्षा करने लगे। सब की ध्वजाएँ लाल रङ्ग की थीं और ध्वजाओं के दण्ड सुवर्णशोभित थे। वे

लोग सुवर्ण-मणि-मण्डित मालाएँ पहने, शरीरों में चन्दन-अगुरु लगाये, लाल आभूषण और महीन रेशमी लाल कपड़े पहने, पुष्पमालाओं से अलङ्कृत और मरने-मारने के लिए दृढ़ प्रतिज्ञा किये हुए थे। ऐसे दस हज़ार राजपुत्र एकत्र होकर संग्राम करने के विचार से अभिमन्यु पर आक्रमण करने को आगे बढ़े। वे सब परस्पर समान रूप से सुख-दुःख का अनुभव करनेवाले, समान साहस से परिपूर्ण, एक दूसरे के हित में निरत और संग्राम में एक दूसरे से बढ़कर काम करने की स्पर्धा रखनेवाले वीर आपके पौत्र प्रियदर्शन लक्ष्मण को आगे करके स्थित हुए। सफ़ेद छत्र और चामरों की शोभा से उदय हो रहे सूर्य के सदृश जान पड़नेवाले इन्द्रतुल्य श्रीमान् राजा दुर्योधन महावीर कर्ण, कृपाचार्य और दुःशासन आदि महारथियों के साथ उस सेना के बीच में विराजमान हुए। उस सेना के अग्रभाग में सेनापति द्रोणाचार्य थे। सिन्धु देश के स्वामी वीर जयद्रथ उस सेना के बीच में स्थिर सुमेरु पर्वत के समान देख पड़ते थे। आपके देवतुल्य तीस कुमार, अश्वत्थामा के
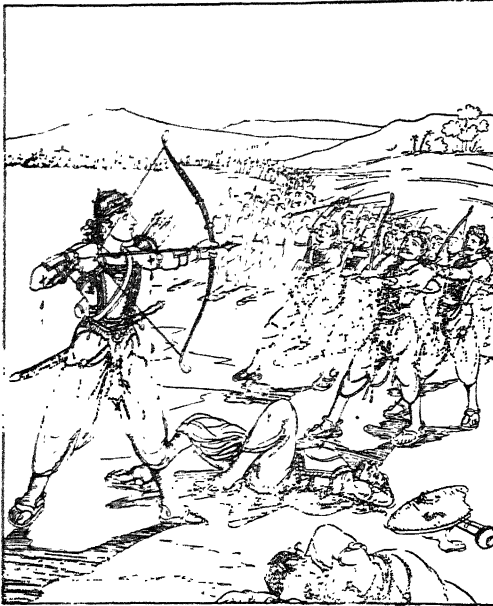
२०

साथ, जयद्रथ के पास स्थित थे। द्यूतक्रीड़ा में निपुण गान्धारराज शकुनि, शल्य और भूरिश्रवा आदि महारथी भी जयद्रथ के पास अपने-अपने रथों पर विराजमान थे। इस प्रकार व्यूहरचना के उपरान्त दोनों पक्ष के वीर योद्धा जीवन का मोह छोड़कर बड़ा भयानक युद्ध करने लगे। २५

पैंतीसवाँ अध्याय

युधिष्ठिर का अभिमन्यु से पद्मव्यूह (चक्रव्यूह) को तोड़ने के लिए कहना

सञ्जय कहते हैं—हे नर-नाथ! द्रोणाचार्य के द्वारा सुरक्षित और दुर्द्धर्ष उस कौरव-सेना से लड़ने के लिए भीमसेन आदि पाण्डवपक्ष के योद्धा आगे बढ़े। भीमसेन, नकुल-सहदेव आदि पाण्डव, सात्यकि, चेकितान, धृष्टद्युम्न, कुन्तिभोज, राजा द्रुपद, वीर अभिमन्यु, शिखण्डी, उत्तमौजा, राजा विराट, द्रौपदी के पाँचों पुत्र, चेदिपति शिशुपाल-नन्दन, क्षत्रधर्मा, बृहत्क्षत्र, धृष्टकेतु, घटोत्कच, युधामन्यु, महाबलशाली केकय देश के पाँचों राजकुमार, सैकड़ों हज़ारों

सृञ्जयगण और अन्यान्य युद्धप्रिय अस्त्रनिपुण वीरगण, युद्ध की इच्छा से, एकाएक द्रोणाचार्य की ओर चले। महाबलशाली द्रोणाचार्य भी स्थिर भाव से निकट आते हुए वीरों को बाणों की वर्षा करके रोकने लगे। प्रबल जलप्रवाह जैसे दुर्भेद्य पर्वत को लाँघकर आगे नहीं जा सकता, अथवा समुद्र जैसे अपनी तटभूमि को लाँघ नहीं सकता वैसे ही पाण्डवपक्ष के वीरगण द्रोणाचार्य को लाँघकर आगे नहीं जा सकते थे। वे और सृञ्जयगण द्रोणाचार्य के चलाये हुए बाणों से अत्यन्त व्यथित होकर उनके सामने नहीं ठहर सके। उस समय हम लोगों ने आश्चर्य के साथ द्रोणाचार्य का अद्भुत बाहुबल देखा। १०

उस समय राजा युधिष्ठिर कुपित द्रोण को, काल के समान आते देखकर, रोकने के लिए अनेक प्रकार के उपाय सोचने लगे। युधिष्ठिर ने यह सोचकर कि द्रोण को रोकने की शक्ति और किसी में नहीं है, अर्जुन और वासुदेव के समान बलवीर्यसम्पन्न अभिमन्यु को वह कठिन काम सौंपने के इरादे से उनसे कहा—बेटा! मेरी समझ में नहीं आता कि हम लोग इस दुर्भेद्य चक्रव्यूह को किस तरह तोड़ सकेंगे। अब तुम्हीं ऐसा उपाय करो कि अर्जुन आकर हम लोगों की निन्दा न करें। तुम, अर्जुन, श्रीकृष्ण और प्रद्युम्न इन चार आदमियों के सिवा इस चक्रव्यूह को तोड़नेवाला और कोई नहीं देख पड़ता। इस समय तुम्हारे पितृपक्ष और मातुलपक्ष के सब लोग तथा सैनिकगण तुमसे वर माँगते हैं। तुम इन्हें वरदान दो। तुम अस्त्र-शस्त्र लेकर शीघ्र द्रोणाचार्य की सेना का संहार करो, नहीं तो संग्राम से लौटकर अर्जुन हम लोगों की अवश्य निन्दा करेंगे।

अभिमन्यु ने कहा—महात्मन्! मैं अपने पितृकुल के विजयी होने की इच्छा से शीघ्र ही द्रोणाचार्य के इस सुरक्षित सुदृढ़ भयानक सैन्यसागर में प्रवेश करूँगा। हे आर्य! मुझे पिता ने इस व्यूह में घुसकर शत्रुसेना नष्ट करने का उपाय तो बता दिया है, किन्तु अगर कोई आपत्ति आ पड़ी तो मैं इस व्यूह के भीतर से बाहर नहीं निकल सकता। राजा युधिष्ठिर ने कहा—बेटा! तुम इस व्यूह को तोड़कर हमारे लिए भीतर जाने का द्वार बना दो। तुम जब भीतर घुसोगे तो हम लोग भी तुम्हारे पीछे चलेंगे। तुम युद्ध में अर्जुन के सदृश हो। हम लोग सब ओर से २० तुम्हारी रक्षा करते हुए तुम्हारे पीछे ही रहेंगे। भीमसेन ने कहा—वत्स! मैं, धृष्टद्युम्न, सात्यकि, पाञ्चालगण, केकयगण, मत्स्यगण और सब प्रभद्रकगण तुम्हारे पीछे चलेंगे। तुम एक बार व्यूह को तोड़ दोगे तो फिर हम लोग उसमें प्रवेश करके शत्रुपक्ष के वीरों को चुन-चुनकर मारेंगे।

अभिमन्यु ने कहा—जैसे पतङ्ग जलती हुई आग में घुसता है वैसे ही मैं कुपित होकर दुर्द्धर्ष द्रोणाचार्य की सेना के भीतर अवश्य प्रवेश करूँगा। आज मैं पितृपक्ष और मातृपक्ष के लिए हितकर और यशस्कर कार्य करूँगा; अपने मामा और पिता का प्रिय अवश्य ही करूँगा। इस समय सब प्राणी एक बालक के हाथ से शत्रुओं को नष्ट होते देखेंगे। यदि आज समर

में मेरे सामने आकर कोई पुरुष जीवित बच जाय तो मैं माता सुभद्रा के गर्भ से उत्पन्न नहीं हुआ और अर्जुन का पुत्र नहीं। अगर मैं आज समरक्षेत्र में एक ही रथ पर बैठकर सम्पूर्ण क्षत्रियमण्डल के आठ-आठ टुकड़े न कर सका तो अर्जुन का पुत्र नहीं। यदि मैं अकेला ही सब क्षत्रियों के धुर्रे न उड़ा दूँ तो मैं अर्जुन का बेटा नहीं।

युधिष्ठिर ने कहा—हे अभिमन्यु! तुम आज साध्य, रुद्र, मरुद्गण, वसुगण और आदित्यगण के समान पराक्रमी महावीरों के द्वारा सुरक्षित और दुर्द्धर्ष द्रोणाचार्य के सेनाव्यूह को तोड़ने का उत्साह प्रकट कर रहे हो, तुम धन्य हो। तुम्हारा बल बढ़े। सञ्जय कहते हैं कि महाराज! राजा युधिष्ठिर के ये वचन सुनकर अभिमन्यु बारम्बार अपने सारथी से कहने लगे ३२ कि हे सुमित्र! शीघ्र मेरे रथ को द्रोणाचार्य की सेना के सामने ले चलो।

छत्तीसवाँ अध्याय

अभिमन्यु के युद्ध का वर्णन

सञ्जय कहते हैं कि राजन्! युधिष्ठिर के ये वचन सुनकर अभिमन्यु जब सारथी से बारम्बार "चलो, चलो" कहने लगे तब सारथी ने कहा—हे आयुष्मन्! इसमें सन्देह नहीं कि पाण्डवों ने आपको यह बहुत भारी काम सौंपा है। पर मेरी प्रार्थना यह है कि आप पहले क्षण भर इस बारे में विचार कर लीजिए कि यह काम आपके योग्य है या नहीं, फिर युद्ध में प्रवृत्त हूजिए। आचार्य द्रोण कार्यनिपुण और अस्त्र-विद्या में मँजे हुए हैं। आप अभी बालक और सुख में पले हुए हैं और वे बलवान् तथा युद्धनिपुण हैं। यह सुनकर अभिमन्यु ने हँसते-हँसते कहा—हे सारथि! क्षत्रियों की और द्रोणाचार्य की बात तो जाने दो, मैं देवगण सहित ऐरावत पर बैठे हुए इन्द्र और सब प्राणियों के वन्दनीय साक्षात् शङ्कर से भी रणभूमि में लोहा ले सकता हूँ। फिर इन क्षत्रियों के साथ युद्ध करने में मुझे क्या शङ्का हो सकती है? आज यह सारी शत्रुसेना मेरे सोलहवें अंश के बराबर भी नहीं है। औरों की बात जाने दो, मैं अपने मामा साक्षात् विश्वविजयी कृष्णचन्द्र और पिता अर्जुन से भी लड़ने को तैयार हूँ। मुझे रत्ती भर भी डर नहीं है। राजन्! इस तरह सारथी के वचनों की उपेक्षा करके अभिमन्यु बारम्बार यही कहने लगे कि हे सूत! देर मत करो, शीघ्र मुझे द्रोणाचार्य की सेना के निकट ले चलो।

सारथी ने उदास मन से तीन-तीन साल की अवस्था के, सुवर्णभूषित, अभिमन्यु के १० रथ के घोड़ों को द्रोणाचार्य की सेना की तरफ़ हाँका। वे हवा के समान वेग से चलनेवाले घोड़े, सारथी के द्वारा हाँके जाने पर, तेज़ी के साथ द्रोणाचार्य की सेना की ओर चले। कौरवगण अभिमन्यु को अपनी ओर आते देखकर, द्रोणाचार्य को आगे करके, उन्हें रोकने के

अभिमन्यु ने......व्यूह को तोड़कर उसके भीतर प्रवेश किया—पृ० २२२९

अभिमन्यु......ऊँचे स्वर से कहने लगे—पृ० २२७५
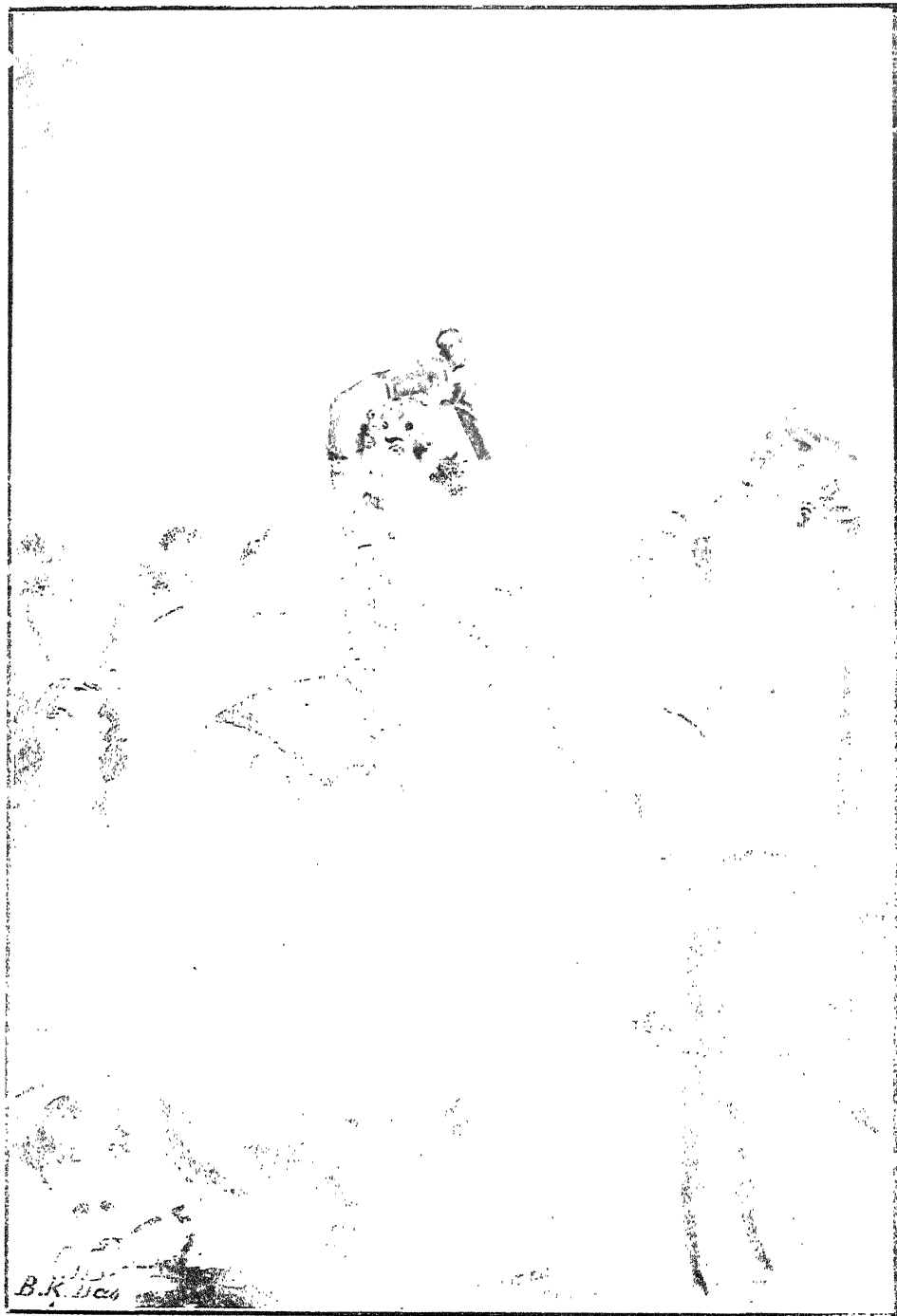
लिए आगे बढ़े। इधर पाण्डवपक्ष के योद्धा भी अभिमन्यु के पीछे-पीछे चले। जैसे सिंह का बच्चा झपटकर हाथियों के झुण्ड पर पहुँचता है वैसे ही कर्णिकारचिह्नयुक्त ध्वजा के सुवर्णमय दण्ड से शोभित रथ पर बैठे हुए, सुवर्णरत्नमय कवच से अलङ्कृत, अर्जुन से भी श्रेष्ठ वीर अभिमन्यु युद्ध के लिए द्रोणाचार्य आदि वीर महारथियों के सामने पहुँचे। व्यूह की रक्षा के लिए यत्नशील कौरवगण उत्साहित होकर अभिमन्यु के ऊपर प्रहार करने लगे। नदियों में श्रेष्ठ गङ्गा का भँवर जैसे समुद्र के जल में प्रवेश करके दम भर तुमुल भाव धारण करता है वैसे ही परस्पर प्रहार करते हुए वीरगण घमासान युद्ध करने लगे। इसी अवसर में महाबलशाली अभिमन्यु ने द्रोणाचार्य के सामने ही उस व्यूह को तोड़कर उसके भीतर प्रवेश किया। चतुरङ्गिणी सेना ने महावीर अभिमन्यु को शत्रुसेना के भीतर घुसकर वीरों का संहार करते देख प्रसन्नतापूर्वक उत्साह के साथ उनको चारों ओर से घेर लिया। वीरगण अनेक प्रकार के बाजे बजाने और सिंहनाद करने लगे। कोई खम ठोकता था, कोई गम्भीर स्वर से गरज रहा था और कोई हुंकार कर रहा था। कहीं पर कोई वीर शत्रु से कह रहा था कि ठहर तो जा, ठहर तो जा। कहीं पर भीषण कोलाहल सुनाई पड़ रहा था। कहीं कोई कह रहा था कि भागना नहीं, कोई कहता था कि मेरे सामने आओ। कोई कहता था कि ठहर जाओ। कोई कहता था कि यह मैं खड़ा हूँ, आ, युद्ध कर। वीरगण बारम्बार इसी तरह के वाक्य कह रहे थे। हाथी चिंघार रहे थे, घोड़े हिनहिना रहे थे। गहनों की खनखनाहट और झनझनाहट हो रही थी। हँसने का, धनुष का, हाथों का और रथों के पहियों का शब्द ऐसा हो रहा था कि उससे पृथ्वीमण्डल गूँज उठा। महाराज! इस तरह सब लोग अभिमन्यु की ओर चले। महाबली वीर फुरतीले और मर्मज्ञ अभिमन्यु ने मर्मभेदी बाणों से उन शत्रुपक्ष के योद्धाओं को मारना शुरू कर दिया। पतङ्ग जैसे आग में जल मरते हैं वैसे ही वे कौरवपक्ष के वीर सैनिक अनेक चिह्नों से युक्त तीक्ष्ण बाणों के प्रहार से पीड़ित और विवश होकर मरने और गिरने लगे। उस समय वह रणभूमि कुशों से बिछी हुई यज्ञवेदी के समान शत्रुओं के कटे हुए अङ्गों से व्याप्त हो गई। अभिमन्यु ने उन लोगों के—गोह के चमड़े के बने अँगुलित्रों से शोभित, धनुष, बाण, ढाल, तलवार, अंकुश, अभीषु, तोमर, परश्वध, गदा, लगुड़, प्रास, ऋष्टि, पट्टिश, भिन्दिपाल, परिघ, शक्ति, कम्पन, प्रतोद, शङ्ख, कुन्त, कचग्रह, मुद्गर, क्षेपणी, पाश, उपल आदि विविध शस्त्रों से युक्त, केयूर, अङ्गद आदि आभूषणों से अलङ्कृत और मनोहर चन्दन अङ्गराग आदि से चर्चित—हाथों को हज़ारों की संख्या में काट-काटकर ढेर लगा दिया। वे रुधिर-सिक्त विशाल भुजाएँ गरुड़ के काटे हुए पाँच सिर के नागों के समान फड़कती हुई शोभित हो रही थीं। महावीर अभिमन्यु ने शत्रुओं के मस्तकों से पृथ्वीमण्डल को पाट दिया। वे मस्तक मनोहर नासिका, मुख और केशों से शोभित थे; वे रमणीय कुण्डल माला मुकुट पगड़ी और मणि-रत्न आदि से विभूषित

२०

थे; वे कमल-कुसुम से सुहावने और चन्द्र तथा सूर्य के सदृश प्रभापूर्ण थे; वे व्रणविहीन और पवित्र सुगन्ध से युक्त थे। वे शत्रुओं के मस्तक क्रोध के मारे दाँतों से ओठ चबाते हुए ही काट डाले
३० गये थे और वे जीवित अवस्था में हित के प्रिय वचन कहनेवाले थे। गन्धर्वनगर-तुल्य जो विशाल रथ सुसज्जित थे उन्हें अभिमन्यु ने अपने बाणों से छिन्न-भिन्न कर डाला। उनके धुरे कट गये, त्रिवेणु दण्ड और जुआँ आदि सब अङ्ग अलग-अलग हो गये। उनके जङ्घा, कूबर, पहिये, आरे, आसन और अन्य सब सामान अस्तव्यस्त और नष्ट-भ्रष्ट हो गये। इस तरह के बहुमूल्य रथों को अभिमन्यु ने खण्ड-खण्ड कर डाला। उन्होंने अपने तीक्ष्ण बाणों से पताका, अंकुश, ध्वजा आदि से शोभित हाथियों को, कवच और तर्कस आदि से अलङ्कृत उनके सवारों को और उनके चरणरक्षकों को मार-मारकर गिराना शुरू कर दिया। उनकी गर्दनों, बन्धनरज्जु, कम्बल, घण्टा, छत्र, माला, सूँड़ और दाँत आदि को काट डाला। वनायु देश के, काम्बोज देश के, वाह्लीक देश के और पहाड़ी घोड़े बड़े वेग से चलनेवाले थे; उनके नेत्र, कान, पूँछ आदि अङ्ग चञ्चल नहीं थे; उन पर शक्ति, ऋष्टि और प्रास आदि शस्त्रों से युद्ध करनेवाले सुशिक्षित योद्धा सवार थे। वे घोड़े अभिमन्यु के बाणों से मर-मरकर पृथ्वी पर गिरने लगे। उनके चामर और कलँगी आदि सामान कट गये, आँखें और जीभें निकल आईं, पेट फट गये, आँतें निकल आईं, प्लीहा निकल पड़ी, गले की घण्टियाँ टूटकर गिर पड़ीं और उनके सवार मर गये। घोड़ों के कवच कट गये थे और वे मल-मूत्र और रक्त से सने हुए थे। इस तरह घोड़े मर-मरकर मांसाहारी जीवों के आनन्द को बढ़ाने लगे। जैसे भगवान् शङ्कर ने दुर्द्धर्ष असुर-सेना का संहार किया था वैसे ही विष्णुसदृश प्रभावशाली अभिमन्यु ऐसा दुष्कर कर्म करके कौरवपक्ष की
४१ चतुरङ्गिणी सेना का संहार करने लगे। वीर अभिमन्यु शत्रुओं के लिए असह्य पराक्रम प्रकट करके चारों ओर आपकी सेना के पैदल योद्धाओं को मारने लगे।

हे नरनाथ! आपके पुत्रों और उनके पक्ष के वीरों ने जब देखा कि अकेले अभिमन्यु तीक्ष्ण बाणों से उसी तरह शत्रुसेना का संहार कर रहे हैं जिस तरह स्कन्द ने असुरों की भारी सेना का नाश किया था, तब वे व्याकुल होकर घबराकर चञ्चल दृष्टि से इधर-उधर ताकने लगे। उनके मुँह सूख गये, पसीना बहने लगा और रोंगटे खड़े हो गये। जय का उत्साह जाता रहा और वे भागने के लिए उत्साहित होकर प्राण बचाने की इच्छा से परस्पर नाम-गोत्र का उच्चारण करके एक दूसरे को भागने के लिए पुकारने लगे। महाराज! अधिकांश लोग मारे गये अपने पुत्र, पिता, भाई, बन्धु, सम्बन्धी आदि को वहीं छोड़कर, घोड़े-हाथी आदि अपनी सवारियों को
४६ तेज़ी से हाँककर, वीर अभिमन्यु के आगे से भाग खड़े हुए।

———

सैंतीसवाँ अध्याय

दुर्योधन आदि से हुए अभिमन्यु के युद्ध का वर्णन

सञ्जय कहते हैं—महाराज! राजा दुर्योधन ने जब महापराक्रमी अभिमन्यु के बाणों से अपनी सेना को छिन्न-भिन्न होते और भागते देखा तब अत्यन्त कुपित होकर वे खुद अभिमन्यु से युद्ध करने के लिए चले। महारथी द्रोणाचार्य ने दुर्योधन को अभिमन्यु के पास जाते देखकर कहा—हे वीरो! तुम लोग शीघ्र राजा दुर्योधन के साथ जाओ। वीर अभिमन्यु हमारे सामने ही कौरव-सेना के वीरों का संहार कर रहे हैं। तुम लोग इसी दम अभिमन्यु को रोकने के लिए जाओ; डरो नहीं, दुर्योधन की रक्षा करो। राजन्! तब महाबलशाली रणविजयी अस्त्रज्ञानसम्पन्न वीर लोग दुर्योधन की सहायता के लिए आगे बढ़े। आचार्य द्रोण, अश्वत्थामा, कृपाचार्य, कर्ण, कृतवर्मा, शकुनि, बृहद्बल, शल्य, भूरि, भूरिश्रवा, शल, पौरव, वृषसेन आदि वीर योद्धा लोग लगातार बाणों की वर्षा करने लगे। इन

वीरों ने बाणों की वर्षा से वीर अभिमन्यु को रोककर और मोहित सा करके दुर्योधन को बचा लिया। अपने मुँह से छीने हुए कौर की तरह दुर्योधन का हाथ से निकल जाना अभिमन्यु से नहीं सहा गया। वे बाणवर्षा से घोड़ों और सारथी सहित उन महारथियों को विमुख करके घोर सिंहनाद करने लगे। द्रोण आदि महारथी, मांस के लिए गरजते हुए सिंह के समान, अभिमन्यु के उस पराक्रम और सिंहनाद को नहीं सह सके। तब उन महारथियों ने चारों ओर से रथों के बीच में अभिमन्यु को घेरकर उन पर अनेक चिह्नयुक्त तीक्ष्ण बाण बरसाना शुरू कर दिया। महापराक्रमी अभिमन्यु ने आकाशमार्ग में ही उन बाणों को अपने बाणों से काट १० डाला और फिर अपने तीक्ष्ण बाणों से उन वीरों को घायल किया। अभिमन्यु का यह कार्य देखकर दर्शकों को बड़ा आश्चर्य हुआ। तब द्रोण आदि महारथियों ने क्रोध के वश होकर, समर से विमुख न होनेवाले, अभिमन्यु को मारने के लिए विषधर सदृश बाणों से छिपा सा दिया। वीर अभिमन्यु ने अकेले ही तटभूमि के समान स्थिर रहकर, समुद्र के सदृश क्षोभ को प्राप्त, उस विशाल सेना को रोका। इस प्रकार परस्पर संहार करने में प्रवृत्त दोनों पक्ष के वीरों

में से कोई भी समरभूमि से पीछे नहीं हटता था। उस समय दुःसह ने नव, दुःशासन ने बारह, कृपाचार्य ने तीन, द्रोणाचार्य ने सत्रह, विविंशति ने सत्तर, कृतवर्मा ने सात, बृहद्बल ने आठ, अश्वत्थामा ने सात, भूरिश्रवा ने तीन, शल्य ने छः, शकुनि ने दो बाण और दुर्योधन ने तीन बाण अभिमन्यु को एक साथ मारे। महाप्रतापी अभिमन्यु ने उन बाणों को सह लिया और फिर मानों नृत्य करते-करते तीन-तीन बाण इन सब वीरों को मारे।

राजा दुर्योधन आदि वीरों ने अभिमन्यु को इस तरह भय दिखाया तथापि वे न तो भयभीत हुए और न विचलित ही हुए। अभिमन्यु ने अत्यन्त कुपित होकर बाणविद्या की करामात दिखा दी। गरुड़ और हवा के समान वेग से चलनेवाले और सारथी के इच्छानुसार २१ जानेवाले घोड़ों से युक्त रथ पर बैठकर आते हुए अश्मकेश्वर को उन्होंने रोका। अश्मकेश्वर ने अभिमन्यु के सामने आकर "ठहर-ठहर" कहकर उनको दस बाण मारे। महावीर अभिमन्यु ने हँसते-हँसते दस बाणों से उनके सारथी, रथ के घोड़ों, ध्वजा, दोनों बाहुओं, धनुष और मस्तक को काटकर गिरा दिया। यह देखकर अश्मकेश्वर की सारी सेना भाग खड़ी हुई। तब कर्ण, कृपाचार्य, द्रोणाचार्य, अश्वत्थामा, शकुनि, शल, शल्य, भूरिश्रवा, क्राथ, सोमदत्त, विविंशति, वृषसेन, सुषेण, कुण्डभेदी, प्रतर्दन, वृन्दारक, ललित्थ, प्रबाहु, दीर्घलोचन और दुर्योधन आदि योद्धा कुपित होकर अकेले अभिमन्यु के ऊपर बाण बरसाने लगे। पराक्रमी अभिमन्यु ने इन लोगों के बाणों से अत्यन्त पीड़ित होकर कर्ण के ऊपर, कवच और देह को भेदनेवाला, एक महाभयानक बाण छोड़ा। वह बाण कर्ण के कवच को तोड़कर पृथ्वी में वैसे ही घुस गया जैसे बाँबी में साँप घुसता है। महावीर कर्ण उस दारुण प्रहार से अत्यन्त व्यथित और विह्वल होकर, भूकम्प के समय पर्वत के समान, कम्पित हो उठे। अब अभिमन्यु ने अत्यन्त कुपित होकर अन्य तीन तीक्ष्ण बाणों से ३० दीर्घलोचन, सुषेण और कुण्डभेदी को घायल कर दिया। तब महावीर कर्ण ने अभिमन्यु को पचीस नाराच बाण मारे। साथ ही अश्वत्थामा ने बीस और कृतवर्मा ने सात बाण मारे। सब सैनिकों ने देखा कि अभिमन्यु के शरीर भर में बाण लगे हैं और वे पाश हाथ में लिये यमराज के समान युद्धभूमि में विचर रहे हैं। निकटवर्त्ती शल्य को बाणों से अदृश्य करके सम्पूर्ण कौरव-सेना को विभीषिका दिखाते हुए महाप्रतापी अभिमन्यु सिंहनाद करने लगे। उनके मर्मभेदी बाणों से अत्यन्त पीड़ित होकर शल्य रथ पर बैठ गये और अचेत हो गये। राजन्! आपके पक्ष के सैनिकगण शल्य को बाणप्रहार से पीड़ित देख, सिंह-पीड़ित मृगों के समान, द्रोणाचार्य के सामने ही भाग खड़े हुए। उस समय देवता, चारण, सिद्ध, पितृगण और पृथ्वीतल के सब प्राणी अभिमन्यु के युद्धकौशल और अस्त्र-शिक्षा की प्रशंसा करने लगे। हवनकुण्ड में स्थित ३७ और आहुति से प्रज्वलित अग्नि के समान वीर अभिमन्यु परम शोभा को प्राप्त हुए।

अड़तीसवाँ अध्याय

अभिमन्यु के पराक्रम का वर्णन

धृतराष्ट्र ने पूछा—हे सञ्जय ! वीर अभिमन्यु जब इस तरह शत्रुपक्ष के महाधनुर्द्धर वीरों को विमर्दित करने लगे तब मेरे पक्ष के किन-किन वीरों ने उनको रोका ?

सञ्जय ने कहा—महाराज ! वीर अभिमन्यु ने द्रोणाचार्य के बाहु-बल से सुरक्षित रथ-सेना को पार करने की इच्छा से जिस तरह युद्धक्रीड़ा की, सो सुनिए। शल्य के छोटे भाई ने जब अपने बड़े भाई को अभिमन्यु के बाणों से अत्यन्त व्यथित देखा तब वे क्रोध के मारे बाण बरसाते हुए अभिमन्यु की ओर दौड़े। उन्होंने अभिमन्यु को और उनके सारथी तथा घोड़ों को दस बाण मारकर सिंहनाद करते हुए ललकारा। फुर्तीले महावीर अभिमन्यु ने तीक्ष्ण बाण चलाकर एक साथ उनके मस्तक, हाथों, पैरों, रथके चारों घोड़ों, छत्र, ध्वजा, पताका और त्रिवेणु, तल्प, चक्र, युग, तूणीर, अनुकर्ष और रथ की अन्यान्य सामग्री को तथा दो चक्ररक्षकों और सारथी का मस्तक काट डाला। उस समय अभिमन्यु को कोई भी आँख उठाकर नहीं देख सकता था। महावीर शल्य के भाई के कपड़े और गहने अस्त-व्यस्त हो गये। आँधी से नष्ट किये गये पहाड़ की तरह जब

उन्हें अभिमन्यु ने मार डाला तब सब सेना चारों ओर भागने लगी। दर्शक लोग अभिमन्यु के इस अलौकिक कार्य को देखकर वाह-वाह कहकर उनकी प्रशंसा करने लगे।

शल्य के छोटे भाई के मारे जाने पर उनके साथ की सेना के वीर योद्धा लोग कुपित होकर अभिमन्यु को अपने कुल, नाम और निवासस्थान का परिचय देते हुए बहुत से अस्त्र-शस्त्र तानकर उन पर आक्रमण करने के लिए दौड़े। उन वीरों में से कुछ लोग रथों पर, कुछ लोग घोड़ों पर और कुछ लोग हाथियों पर सवार थे। कुछ लोग पैदल ही थे। बाणों के चलने का शब्द, रथों के पहियों की घरघराहट, हुङ्कार, सिंहनाद, प्रत्यञ्चा का शब्द, तलध्वनि और घोर गर्जन चारों ओर छा गया। "आज तुम जीते जी हमारे हाथ से छुटकारा नहीं

पा सकते !” यह कहते हुए शत्रुसेना के वीर अभिमन्यु के आगे गरजने लगे। उन लोगों के ये वचन सुनकर अभिमन्यु ने हँसते-हँसते उन सब पर प्रहार किये। जिसने उन पर पहले प्रहार किया उसको पहले और जिसने पीछे प्रहार किया उसको पीछे, उसी क्रम से, वीर अभिमन्यु ने घायल किया। इस तरह विचित्र कौशल और फुर्ती दिखाते हुए वीर अभिमन्यु कोमल भाव से युद्ध करने लगे। उन्होंने अपने पिता अर्जुन से और कृष्णचन्द्र से जो विचित्र अस्त्र प्राप्त किये थे उनका प्रयोग, उन्हीं की तरह, करना शुरू किया। युद्ध के समय किसी को यह नहीं देख पड़ता था कि अभिमन्यु किस समय बाण निकालते हैं, किस समय धनुष पर चढ़ाते हैं और किस समय छोड़ते हैं। अभिमन्यु का मण्डलाकार घूमता हुआ धनुष चारों ओर शरद ऋतु के सूर्य के मण्डल के समान देख पड़ रहा था। उनकी प्रत्यञ्चा का शब्द और तलध्वनि, वर्षाकाल के मेघमण्डल से निकले हुए, वज्र के शब्द के समान सुनाई पड़ रही थी। ह्रीमान्, असहनशील, मानी, प्रियदर्शन अभिमन्यु वीरों का सम्मान करने के लिए बाणों और
२० अस्त्रों के द्वारा उनसे युद्ध करने लगे। इसके बाद वर्षाकाल बीत जाने पर जैसे सूर्यदेव प्रचण्ड रूप धारण करते हैं वैसे ही महावीर अभिमन्यु पहले कोमल युद्ध करके क्रमशः प्रचण्ड युद्ध करने लगे। वे सूर्यकिरण के समान तीक्ष्ण, सुवर्णपुङ्खयुक्त, विचित्र बाण बरसाने लगे। हज़ारों क्षुरप्र, वत्सदन्त, विपाठ, अर्धचन्द्र, नाराच, भल्ल और अञ्जलिक आदि अनेक प्रकार के बाणों से द्रोणाचार्य के सामने ही उनकी रथ-सेना को छिन्न-भिन्न करने लगे। कौरव-सेना इस तरह
२४ अभिमन्यु के बाणों से अत्यन्त व्यथित होकर युद्ध से भागने लगी।

उनतालीसवाँ अध्याय

दुःशासन और अभिमन्यु का युद्ध

धृतराष्ट्र ने कहा—हे सञ्जय! महारथी अभिमन्यु के पराक्रम से अपने पुत्र की सेना के नष्ट और विमुख होने का समाचार सुनकर मुझे शोक भी हो रहा है और सन्तोष भी हो रहा है। अब तुम, असुरों के साथ स्कन्द भगवान् के युद्ध के समान, कौरव-सेना के साथ अभिमन्यु के युद्ध का वृत्तान्त विस्तारपूर्वक कहो।

सञ्जय ने कहा—राजन्! महावीर अभिमन्यु ने अकेले ही जिस तरह बहुत से योद्धाओं के साथ घोर युद्ध किया, सो सब मैं विस्तार के साथ आपके आगे वर्णन करता हूँ, मन लगाकर सुनिए। महापराक्रमी अभिमन्यु उत्साह के साथ रथ पर बैठकर युद्ध का उत्साह रखनेवाले शत्रुनाशन कौरवपक्ष के वीरों पर बाणों की वर्षा करने लगे। युद्धभूमि में महाबली अभिमन्यु

घुमाई जानेवाली जलती हुई लकड़ी की तरह घूमकर द्रोण, कर्ण, कृपाचार्य, शल्य, अश्वत्थामा, भोजराज, बृहद्बल, दुर्योधन, भूरिश्रवा, शकुनि और अन्यान्य बहुत से राजाओं, राजपुत्रों और सैनिकों को बड़ी फुर्ती के साथ अपने बाणों से पीड़ित करने लगे। उस समय वे इतनी तेज़ी से विचर रहे थे कि शत्रुपक्ष के लोगों को जान पड़ता था कि अनेक मूर्तियाँ धारण किये वे चारों ओर मौजूद हैं। राजन्! महातेजस्वी अभिमन्यु को इस तरह असाधारण रणकौशल दिखाते देखकर कौरव-सेना के लोग काँप उठे।

इसी समय महारथी प्रतापी द्रोणाचार्य अभिमन्यु के असाधारण रणकौशल को देखकर, प्रसन्न होकर दुर्योधन के मर्मस्थल को चोट पहुँचाते हुए, कृपाचार्य से कहने लगे—हे आचार्य! ६ वह देखो, पाण्डवों के प्रसिद्ध पुत्र महावीर अभिमन्यु धर्मराज युधिष्ठिर, नकुल, सहदेव, भीमसेन तथा अन्यान्य बन्धु-बान्धव, सम्बन्धी और मध्यस्थ लोगों को सन्तुष्ट करके जा रहे हैं। मेरी राय में इस समय इस बालक के समान समरनिपुण धनुर्द्धर योद्धा यहाँ पर दूसरा नहीं है। यह महावीर चाहे तो सहज ही सम्पूर्ण कौरव-सेना का नाश कर सकता है; किन्तु न-जाने वह ऐसा क्यों नहीं करता!

आचार्य के प्रेम-पगे वचन सुनकर दुर्योधन ने अभिमन्यु पर क्रुद्ध हो द्रोणाचार्य की ओर देखकर कर्ण, वाह्लीक, दुःशासन, शल्य और अन्य अपने अनुयायियों से कहा—हे सुहृदो! देखो, सब क्षत्रियों के गुरु और ब्रह्मवेत्ताओं के शिरोमणि आचार्य ममता-मोह के वश होकर ही अर्जुन के पुत्र को मारना नहीं चाहते। मैं सच कहता हूँ, आचार्य अगर शत्रु को मारने के लिए उद्यत होकर तत्परता के साथ युद्ध करें तो मनुष्य की कौन कहे, यमराज भी नहीं बच सकते। किन्तु अर्जुन इनके प्रिय शिष्य हैं। शिष्य, पुत्र और उनकी सन्तान को धर्मात्मा लोग स्नेह की दृष्टि से देखते हैं, इसी लिए आचार्यजी अभिमन्यु की रक्षा कर रहे हैं। इस प्रकार आचार्य के द्वारा रक्षित होने के कारण ही अभिमन्यु अपने को वीर्यशाली समझ रहा है। अतएव अब तुम लोग मिलकर इस पौरुषाभिमानी बालक को चटपट मार डालो।

दुर्योधन के ये वचन सुनकर सब वीर योद्धा लोग क्रोधपूर्वक अभिमन्यु को मारने के विचार से शीघ्रता के साथ द्रोणाचार्य के सामने ही अभिमन्यु की ओर दौड़े। उस समय दुःशा- २० सन ने दुर्योधन से गर्व के साथ कहा—राजन्! राहु जैसे सूर्य को ग्रस लेता है वैसे ही मैं इस समय सम्पूर्ण पाञ्चालों और पाण्डवों के सामने ही अभिमन्यु को मार डालूँगा। इसके बाद अभिमानी अर्जुन और कृष्ण दोनों मेरे हाथ से अभिमन्यु के मारे जाने का समाचार पाकर अवश्य ही अपने प्राण दे देंगे। फिर कृष्ण और अर्जुन की मृत्यु की ख़बर सुनकर पाण्डु के अन्य क्षेत्रज पुत्र और उनके बन्धु-बान्धव, कायरों की तरह, शक्तिहीन और शोकाकुल होकर निःसन्देह एक ही दिन में मर जायँगे। महाराज! इस तरह एक अभिमन्यु के नष्ट होने से ही

आपके सब शत्रुओं का नाश हो जायगा। अतएव आप मेरे मङ्गल और विजय की कामना कीजिए। मैं अकेला ही आपके शत्रुओं का संहार किये डालता हूँ।

महाराज! आपके पुत्र दु:शासन ने यों कहकर ऊँचे स्वर से सिंहनाद किया। वे अत्यन्त कुपित होकर अभिमन्यु के सामने पहुँचकर उन पर बाणवर्षा करने लगे। महारथी अभिमन्यु ने भी उनको छब्बीस बाण मारे। महापराक्रमी दु:शासन क्रुद्ध होकर मदमत्त गजराज की तरह अभिमन्यु के साथ घोर संग्राम करने लगे। इसके उपरान्त रथ-शिक्षा में निपुण दोनों वीर दाहने-बायें विचित्र मण्डलाकार गतियों से रथ घुमाते हुए एक दूसरे पर प्रहार करने लगे। उस समय सैनिक लोग चारों ओर पणव, मृदङ्ग, दुन्दुभि, क्रकच, महानक, भेरी, झर्झर और शङ्ख
३१ बजाते हुए घोर सिंहनाद करने लगे।

चालीसवाँ अध्याय

अभिमन्यु के द्वारा कर्ण और दु:शासन की पराजय

सञ्जय कहते हैं कि राजन्! यद्यपि वीर अभिमन्यु के सब अङ्ग कट-फट गये थे तथापि वे धैर्य के साथ अपने शत्रु दु:शासन से कहने लगे—हे निष्फल क्रोध करनेवाले अधर्मी वीराभिमानी पुरुष! बड़ी बात जो आज समर-भूमि में तुम मेरी आँखों के आगे आ गये। तुमने जो भरी सभा में महाराज धृतराष्ट्र के सामने कटुवचन कहकर धर्मराज को कुपित किया था और शकुनि-कल्पित कपट-द्यूत में अपने बाहुबल के मद से मत्त होकर महावीर भीमसेन को जो कुवाक्य कहे थे, उसका फल आज तुमको मिलेगा। रे दुर्बुद्धि कौरव! आज अभी बहुत शीघ्र तुमको पराई सम्पत्ति हड़प कर जाने का, क्रोध, अशान्ति, लोभ, अज्ञान, द्रोह, अति साहस का और मेरे उग्र-धनुर्धर पिता और चाचा के राज्यहरण का उग्र प्रतिफल प्राप्त होगा। मैं समर में सब सेना के सामने ही तुमको अपने बाणों से मारकर अमर्षणशील द्रौपदी और भीमसेन के ऋण से मुक्त हो जाऊँगा; अपने पिता की इच्छा पूरी करूँगा और तुम्हें वीर पाण्डवों को कुपित करने का और सम्पूर्ण अधर्म का फल भोगना पड़ेगा। अगर तुम युद्ध छोड़कर मेरे सामने से भाग न गये तो आज किसी तरह जीते नहीं बच सकते।

महाराज! अभिमन्यु ने इस तरह भर्त्सना करके दु:शासन को अग्नि के समान तेज:पुञ्ज
११ और वायु के सदृश शीघ्रगामी एक दारुण बाण मारा। अभिमन्यु के धनुष से छूटा हुआ वह बाण दु:शासन के जत्रुस्थान को भेदकर पुङ्ख सहित पृथ्वी के भीतर वैसे ही घुस गया जैसे साँप बाँबी में घुस जाता है। फिर वीर अभिमन्यु ने धनुष को कान तक खींचकर अत्यन्त तीक्ष्ण पचीस बाण दु:शासन को मारे। वीर दु:शासन अभिमन्यु के बाणों से घायल और

व्यथित होकर मूर्च्छित हो रथ पर गिर पड़े। उस समय सारथी उन्हें अचेत देखकर उनका रथ समरभूमि से शीघ्र ही हटा ले गया। यह देखकर पाण्डवगण, द्रौपदी के पाँचों पुत्र, पाञ्चालगण, केकयगण और राजा विराट सभी अभिमन्यु की प्रशंसा और घोर सिंहनाद करने लगे। पाण्डवपक्ष के सैनिक सन्तुष्ट होकर युद्धभूमि में तरह-तरह के बाजे बजाने लगे और प्रधान शत्रु दुःशासन को हरानेवाले कुमार अभिमन्यु का पराक्रम देखकर चकित हुए। धर्म, वायु, इन्द्र और अश्विनीकुमारों की मूर्तियों के चिह्न से अलङ्कृत ध्वजाओंवाले रथों पर बैठे हुए द्रौपदी के पाँचों पुत्र, पराक्रमी सात्यकि, चेकितान, धृष्टद्युम्न, शिखण्डी, केकयराजकुमार, धृष्टकेतु, मत्स्य देश के योद्धा, पाञ्चाल देश के सैनिक और सृञ्जयगण युधिष्ठिर आदि पाण्डवों के साथ द्रोणाचार्य की सेना को छिन्न-भिन्न करने के लिए बड़े वेग के साथ समरभूमि में

आगे बढ़े। इस समय संग्राम से कभी न हटनेवाले और विजय की इच्छा रखनेवाले दोनों पक्षों के वीर तुमुल युद्ध करने लगे। इस तरह भयानक समर उपस्थित होने पर राजा दुर्योधन ने वीरवर कर्ण से कहा—हे अङ्गराज, देखो, वह सूर्य के समान तेजस्वी प्रतापी वीर दुःशासन रणभूमि में शत्रु-सेना का संहार करके अन्त को अभिमन्यु के वश हो रहे हैं और पाण्डवगण महाबली सिंह की तरह क्रुद्ध होकर अभिमन्यु की रक्षा करने के लिए वेग से युद्धभूमि में चले आ रहे हैं। २०

राजन्! तब दुर्योधन के परमहितैषी वीर कर्ण ने कुपित होकर अत्यन्त तीक्ष्ण बाणों से अभिमन्यु को घायल किया और उनके अनुगामी पूर्वोक्त वीरों को भी वे तीक्ष्ण बाणों से पीड़ित करने लगे। आचार्य के सामने जाने की इच्छा रखनेवाले महावीर अभिमन्यु ने फुर्ती के साथ कर्ण को तिहत्तर तीक्ष्ण बाण मारे और फिर कौरवपक्ष के श्रेष्ठ रथियों को भी वे शस्त्रप्रहार से व्यथित करने लगे। किन्तु कौरव-सेना का कोई भी योद्धा उस समय महावीर अभिमन्यु को द्रोणाचार्य के सामने जाने से रोक नहीं सका। उस समय सब योद्धाओं की अपेक्षा अभिमानी, विजयाभिलाषी, परशुराम के शिष्य, महावीर कर्ण सैकड़ों श्रेष्ठ बाणों और शस्त्रों से अभिमन्यु को पीड़ित करने लगे; किन्तु महापराक्रमी देवतुल्य अभिमन्यु उससे तनिक भी व्यथित नहीं हुए। ३१
वे शिला पर पैने किये गये आनतपर्व बहुत से भल्ल बाणों से वीरों के धनुष काटकर बलपूर्वक कर्ण

के ऊपर लगातार सैकड़ों बाण छोड़ने लगे। अभिमन्यु के धनुष से छूटे हुए उन साँप-सदृश बाणों ने कर्ण के छत्र, ध्वजा, सारथी और घोड़ों को नष्ट कर दिया। तब महावीर कर्ण ने अभिमन्यु को बाण मारे। उन्होंने अनायास ही उन बाणों के प्रहार को सह लिया और दम भर में देखते ही देखते एक ही बाण से कर्ण की ध्वजा और धनुष काटकर पृथ्वी पर गिरा दिया। उस समय कर्ण के भाई, अपने भाई की ऐसी दशा देखकर, सुदृढ़ धनुष लेकर अभिमन्यु पर आक्रमण करने को दौड़े। कर्ण की दुर्दशा देखकर अनुचरों सहित पाण्डवगण ज़ोर से
३७ सिंहनाद करने, बाजे बजाने और अभिमन्यु की बड़ाई करने लगे।

इकतालीसवाँ अध्याय

अभिमन्यु के पराक्रम का वर्णन

सञ्जय कहते हैं—राजन्! कर्ण के भाई ने बार-बार गरजकर और धनुष की डोरी खींचकर फुर्ती के साथ अभिमन्यु और कर्ण के रथों के बीच में आकर दस बाण छोड़े, जिनसे अभिमन्यु का सारथी और घोड़े घायल हो गये और छत्र तथा ध्वजा जर्जर हो गई। महावीर अभिमन्यु को, अपने पिता और पितामह के समान अलौकिक कार्य करके, अन्त में कर्ण के भाई के बाणों से पीड़ित होते देखकर कौरवगण अत्यन्त सन्तुष्ट हुए। अब महावीर अभिमन्यु ने दर्प के साथ एक बाण मारकर कर्ण के भाई का सिर काटकर गिरा दिया। अभिमन्यु के बाण से निहत भाई को, वायुवेग के द्वारा जड़ से उखड़कर पर्वत से गिरनेवाले कर्णिकार वृक्ष की तरह, रथ से पृथ्वी पर गिरते देखकर वीर कर्ण बहुत ही व्यथित हुए।

कर्ण को इस तरह रण से विमुख करके वीर अभिमन्यु कङ्कपत्रशोभित असंख्य बाणों की वर्षा करते हुए अन्य वीरों की ओर चले और क्रोध के साथ उस विस्तृत चतुरङ्गिणी कौरव-सेना को छिन्न-भिन्न करने लगे। अभिमन्यु के बाणों से विद्ध और व्यथित होकर वीर कर्ण बड़े वेग से रणभूमि से हट गये। यह देखकर सब सेना विश्रृङ्खल होकर प्राण लेकर इधर-उधर

भागने लगी। अभिमन्यु के, जलधारा और टीड़ीदल के समान, असंख्य बाणों से आकाश-मण्डल व्याप्त हो गया। बाणों के सिवा और कुछ भी न देख पड़ता था। कौरवपक्ष की सेना अभिमन्यु के तीक्ष्ण बाणों से जर्जर होकर भाग खड़ी हुई। केवल पराक्रमी योद्धा सिन्धुराज जयद्रथ अपने स्थान से नहीं हटे। १०

तब महावीर अभिमन्यु शङ्ख बजाते हुए कौरव-सेना में घुसकर सूखी घास को जलानेवाली प्रचण्ड आग के समान बाणों की आग से शत्रुसेना को भस्म करने लगे। उन्होंने दम भर में असंख्य रथियों, हाथियों, घोड़ों, हाथी-घोड़ों के सवारों और पैदल योद्धाओं को छिन्न-भिन्न करके पृथ्वी को कबन्धों और लाशों से व्याप्त कर दिया। कौरवपक्ष के सैनिक अभिमन्यु के बाण-प्रहार से अत्यन्त व्याकुल और पीड़ित होकर प्राणरक्षा के लिए बड़े वेग से चारों ओर भागे और ऐसे घबराये कि अपने ही दल के लोगों को मारने लगे। अभिमन्यु के चलाये हुए विषम विपाठ नाम के बाण रथों, हाथियों और घोड़ों को नष्ट करके पृथ्वीतल में गिरने लगे। शस्त्र, अंगुलित्राण, गदा और अङ्गद आदि सोने के अलङ्कारों से अलङ्कृत हज़ारों कटी हुई भुजाएँ, असंख्य बाण, धनुष, खड्ग, मनुष्यों के शरीर और माला तथा कुण्डल आदि से शोभित सिर पृथ्वी पर बिछ गये। ढेर के ढेर रथों के टूटकर गिरे हुए दिव्याभरणभूषित आसन, ईशादण्ड, अक्ष, चक्र, युग, शक्ति, धनुष, ध्वजा, ढाल, तलवार, बाण, असंख्य मृत क्षत्रियों की लाशें, मरे हुए हाथी और घोड़े गिरने के कारण वह रणभूमि क्षण भर में अगम्य और बड़ी भयङ्कर हो उठी। मारे जाते हुए और घायल राजपुत्रों तथा क्षत्रियों के आर्तनाद की ऐसी घोर प्रतिध्वनि उठी कि उसे सुनकर कायरों के कलेजे काँप उठे। उस समय महावीर अभिमन्यु असंख्य शत्रुसेना, रथ, घोड़े और हाथी आदि का संहार करके कौरव-सेना के भीतर घुसकर आग जैसे सूखे हुए जङ्गल को जलाती है वैसे ही शत्रुओं को नष्ट करते हुए इधर-उधर घूमने लगे। सेना के इधर-उधर भागने से ऐसी धूल उड़ी कि उसके मारे हम लोग असंख्य हाथियों, घोड़ों और मनुष्यों के बीच में उन प्राणनाशक पराक्रमी अभिमन्यु को देख नहीं पाते थे। किन्तु दम भर के बाद ही महावीर अभिमन्यु मध्याह्नकाल के सूर्य के समान, अपने प्रताप से, शत्रुओं को तपाते हुए उस असंख्य सेना के बीच प्रकट होकर बहुत ही शोभायमान हुए। २६

बयालीसवाँ अध्याय

जयद्रथ की तपस्या और शङ्कर से वरदान पाने का वृत्तान्त

धृतराष्ट्र ने पूछा—हे सञ्जय ! अत्यन्त सुखी, बाहुबल का दर्प रखनेवाले, रणनिपुण अभिमन्यु ने तीन-तीन साल के बढ़िया घोड़ों से शोभित रथ पर बैठकर प्राणपण से युद्ध करने के लिए जब समरसागर में प्रवेश किया तब पाण्डवसेना का कौन-कौन वीर उनके साथ गया ?

सञ्जय ने कहा—महाराज ! युधिष्ठिर, भीमसेन, नकुल, सहदेव, शिखण्डी, मत्स्यदेश के वीर, सात्यकि, धृष्टद्युम्न, विराट, द्रुपद, कैकेय और धृष्टकेतु आदि अभिमन्यु के आत्मीय-स्वजन लोग उनकी रक्षा करने के लिए उनके साथ-साथ युद्ध के मैदान में चले। कौरव-सेना के योद्धा लोग पाण्डवपक्ष के वीरों को युद्धभूमि में आते देखकर वहाँ से भाग गये। तब उग्र धनुष धारण करनेवाले महातेजस्वी आपके दामाद जयद्रथ, कौरव-सेना को स्थिर और युद्ध के लिए उत्साहित करने की इच्छा से, दिव्य अस्त्र का प्रयोग करते हुए पुत्रवत्सल पाण्डवों को रोक-कर मत्त गजराज की तरह युद्धभूमि में घूमने लगे। जयद्रथ को जीतकर व्यूह के भीतर घुसना पाण्डवों और उनके पक्ष के वीरों के लिए अशक्य हो गया।

धृतराष्ट्र ने कहा—हे सञ्जय ! महाबाहु जयद्रथ ने अकेले ही, मेरे पुत्रों के हित की इच्छा से, क्रोधी बली पाण्डवों को व्यूह के बाहर ही रोककर बड़ा भारी काम किया। वास्तव में यह उनके लिए बड़ा भारी भार था। मुझे जयद्रथ का बल-वीर्य बहुत ही अद्भुत जान १० पड़ता है। तुम उनके युद्ध के वृत्तान्त का वर्णन विस्तार के साथ करो। सिन्धुराज जयद्रथ ने कौन सा दान, हवन, यज्ञ या तप किया था, जिसके प्रभाव से वे अकेले ही क्रोधान्ध पाण्डवों को युद्ध में परास्त कर सके ?

सञ्जय ने कहा—राजन् ! जयद्रथ ने जब द्रौपदी को हर ले जाने की कुचेष्टा की थी तब भीमसेन ने उन्हें परास्त किया था। उस अपमान से कुपित होकर जयद्रथ ने इन्द्रियों को विषयों से रोक करके, भूख-प्यास धूप-वर्षा आदि के कष्ट सहकर, घोर तपस्या और वेदपाठ-पूर्वक वर-लाभ के लिए महादेव की आराधना की। भक्तवत्सल भवानीपति ने जयद्रथ पर दया करके उनसे स्वप्न में कहा—हे जयद्रथ ! मैं तुम पर प्रसन्न हूँ, तुम इच्छा के अनुसार वरदान माँग लो। तब जयद्रथ ने प्रणाम करके हाथ जोड़कर कहा—हे महादेव ! मैं आपके वरदान के प्रभाव से अकेला रथ पर बैठकर महाबलशाली पाँचों पाण्डवों को परास्त कर सकूँ। शङ्कर ने कहा—हे सिन्धुराज ! मैं वर देता हूँ कि तुम अर्जुन के सिवा सब पाण्डवों को [एक दिन] युद्ध में परास्त कर सकोगे। राजन् ! महादेव के ये वचन सुनकर "बहुत अच्छा" कहकर जयद्रथ जाग पड़े। वीर जयद्रथ ने शङ्कर के उसी वरदान के प्रभाव से और दिव्य अस्त्रों के बल २० से उस दिन अकेले ही पाण्डवों को परास्त किया [और व्यूह के भीतर नहीं जाने दिया]।

हे जयद्रथ ! मैं तुम पर प्रसन्न हूँ, तुम इच्छा के अनुसार वरदान मांग लो—पृ० २२६६

महाराज ! उस समय जयद्रथ के ज्या-निर्घोष और तलध्वनि को सुनकर शत्रुपक्ष के क्षत्रिय भयविह्वल और कौरवपक्ष के वीर प्रसन्न तथा उत्साहित हो उठे। कौरवपक्ष के वीरगण व्यूह की रक्षा का भार जयद्रथ को सौंपकर, साहस के साथ धनुष चढ़ाकर, राजा युधिष्ठिर की सेना के सामने चले। २२

तेंतालीसवाँ अध्याय

जयद्रथ के युद्ध का वर्णन

सञ्जय ने कहा—राजन् ! आप मुझसे सिन्धुराज जयद्रथ के पराक्रम के बारे में पूछ रहे हैं, इसलिए जिस तरह जयद्रथ ने पाण्डवों से युद्ध किया और उन्हें आगे बढ़ने से रोका वह सब वृत्तान्त मैं कहता हूँ; सुनिए। गन्धर्वनगर के सदृश, विविध अलङ्कारों से अलंकृत, फुर्तीले और सारथी के आज्ञाधीन सिन्धु देश के बड़े डील-डौलवाले घोड़ों से युक्त, रथ पर चढ़कर वीर जयद्रथ मोर्चे के मोहरे पर पहुँचे। उनके रथ के ऊपरी भाग में चाँदी का बना हुआ वराहचिह्न ध्वजा के ऊपर शोभायमान था। वे सफ़ेद छत्र, पताका और चामर आदि राजकीय चिह्नों से आकाशमण्डल में स्थित चन्द्रमा के समान शोभा को प्राप्त हुए। हीरा, मोती, मणि, स्वर्ण आदि से भूषित लोहमय उनके रथ का वरूथ (रथवेष्टन) ज्योतिष्क-मण्डली से आवृत आकाश के समान जान पड़ता था।

इसके बाद वीर जयद्रथ ने धनुष चढ़ाकर बहुत से बाण बरसाये और अभिमन्यु ने व्यूह के जिस स्थान को अपने शस्त्रों की वर्षा से ख़ाली करके राह कर ली थी उस स्थान को फिर सेना के द्वारा पूरा कर दिया। जयद्रथ ने सात्यकि को तीन, भीमसेन को आठ, धृष्टद्युम्न को साठ, विराट राजा को दस, राजा द्रुपद को पाँच, शिखण्डी को दस, युधिष्ठिर को सत्तर, कैकेयगण को पचीस बाण और द्रौपदी के पाँचों बेटों को तीन-तीन बाण मारकर अन्यान्य वीरों को असंख्य बाणों से पीड़ित करना शुरू किया। जयद्रथ की यह अद्भुत फुर्ती देखकर लोगों को बड़ा आश्चर्य हुआ। महाप्रतापी युधिष्ठिर ने हँसते-हँसते तीक्ष्ण भल्ल बाण से जयद्रथ का धनुष काट डाला। उन्होंने दम भर में दूसरा धनुष लेकर धर्मराज को दस बाण और १० अन्य वीरों को तीन-तीन बाण मारे। तब महावीर भीमसेन ने जयद्रथ की फुर्ती देखकर शीघ्रता के साथ तीन-तीन भल्ल बाणों से उनका धनुष, ध्वजा और छत्र काट डाला। पराक्रमी सिन्धु-राज ने उसी दम अन्य धनुष पर डोरी चढ़ाकर भीमसेन की ध्वजा, धनुष और घोड़ों को नष्ट कर दिया। महाबाहु भीमसेन उस बिना घोड़ों के रथ से उतरकर सात्यकि के रथ पर चले गये। उस समय ऐसा जान पड़ा कि सिंह पर्वत के ऊपर चढ़ रहा है।

राजन् ! आपके सैनिकगण जयद्रथ के इस कार्य को देखकर अत्यन्त आह्लाद के साथ ऊँचे स्वर से उनको शाबाशी देने लगे। वीर सिन्धुराज ने अकेले ही क्रोधविह्वल पाण्डवों को अपने बाहुबल और अस्त्र-शस्त्र के प्रभाव से रोक लिया, यह देखकर सब लोग उनकी प्रशंसा करने लगे। पहले महावीर अभिमन्यु ने अपने पक्ष के योद्धाओं को साथ ले, कौरव पक्ष के असंख्य हाथियों को मारकर, पाण्डवों को व्यूह के भीतर जाने की जो राह दिखलाई थी वह राह जयद्रथ ने इस समय अपने कौशल और शिव के वरदान के प्रभाव से बन्द कर दी। मत्स्य, पाञ्चाल, केकय और पाण्डवगण बड़े यत्न से लड़ते-भिड़ते जयद्रथ के पास पहुँचे; किन्तु जयद्रथ के प्रभाव और पराक्रम को किसी तरह न सह सकने के कारण कुछ नहीं कर सके। उस समय पाण्डवपक्ष के वीरों ने द्रोणाचार्य की सेना के व्यूह को तोड़ने की जितनी चेष्टाएँ कीं, उन्हें जयद्रथ ने अनायास ही विफल कर दिया। १९

चवालीसवाँ अध्याय

अभिमन्यु के पराक्रम का वर्णन

सञ्जय ने कहा—हे नरेन्द्र ! जयद्रथ ने जय पाने की इच्छा रखनेवाले पाण्डवों को जब इस तरह बाहर ही रोक दिया तब दोनों पक्ष के वीर भयानक संग्राम करने लगे। महातेजस्वी अभिमन्यु शत्रुसेना के भीतर घुसकर वैसे ही शत्रुसेना को मथने लगे जैसे कोई बड़ा भारी मच्छ समुद्र के जल को मथता है। उस समय कौरवपक्ष के वीरगण प्रधानता के अनुसार अभिमन्यु पर आक्रमण करने के लिए उनकी ओर चले। अभिमन्यु के साथ कौरवों का भयानक युद्ध होने लगा। कौरव लगातार बाणवर्षा करने लगे। उन्होंने रथों के बीच में अभिमन्यु को घेर लिया। अभिमन्यु ने कुपित होकर कई बाण कर्णनन्दन वृषसेन को मारे, उनके सारथी को मार डाला, धनुष काट डाला और उनके रथ के घोड़ों को भी घायल कर डाला। हवा के समान वेग से चलनेवाले घोड़े सहसा अचेत वृषसेन को युद्धस्थल से लेकर भाग खड़े हुए। इसी बीच में अभिमन्यु के रथ को लेकर उनका सारथी भी अन्यत्र चला गया। महारथी वीर लोग अभिमन्यु का पराक्रम देखकर प्रसन्नतापूर्वक "साधु-साधु" कहकर कोलाहल करने लगे।

कुपित सिंह के समान झपटकर बाणों से शत्रुसेना का विनाश करते हुए अभिमन्यु को आगे बढ़ते देख शीघ्रता के साथ वीर वसातीय उनके सामने पहुँचे। वसातीय ने फुर्ती के साथ सुवर्णपुंखयुक्त तीक्ष्ण साठ बाण अभिमन्यु को मारकर कहा—हे वीर कुमार ! मेरे मौजूद रहते तुम कभी समर में जीते-जी छुटकारा नहीं पा सकते। तब अभिमन्यु ने अपने अत्यन्त तीक्ष्ण बाण से लोह-कवचधारी वीर वसातीय का वक्षःस्थल चीर डाला। वसातीय मरकर रथ से

पृथ्वी पर गिर पड़े। उनकी मृत्यु देखकर कौरवपक्ष के वीरगण अपने-अपने अनेकानेक प्रकार के धनुष चढ़ा-चढ़ाकर दौड़े। उन्होंने अभिमन्यु को, मार डालने के लिए, चारों ओर से घेर लिया। उस समय युद्ध बहुत ही भयानक हो उठा। महावीर अभिमन्यु ने क्रोध से विह्वल होकर उनके धनुष, बाण आदि अस्त्र-शस्त्र, कलेवर और माल्यमण्डित तथा कुण्डलों से अलंकृत मस्तक काटना शुरू कर दिया। इधर-उधर चारों ओर खड्ग, अंगुलित्राण, पट्टिश और परश्वध आदि से युक्त और सुवर्ण के अलङ्कारों से अलङ्कृत कटे हुए हाथ पड़े हुए थे। उस समय रणभूमि माला, आभूषण, कपड़े, ध्वजदण्ड, ढाल, तलवार, हार, मुकुट, छत्र, चामर, आसन, ईषादण्ड, रथों के जुए, टूटे हुए पहिये, युग, अनुकर्ष, पताका, घोड़े, सारथि, टूटे हुए रथ तथा मरे हुए हाथियों-घोड़ों से परिपूर्ण हो उठी। समरभूमि उस समय विजयाभिलाषी महाबली पराक्रमी अनेक देशों के राजाओं की लाशों से परिपूर्ण और इसी से भयङ्कर दिखाई पड़ने लगी। अभिमन्यु क्रुद्ध होकर शत्रुसेना को विदीर्ण करते हुए इधर-उधर घूमने लगे। उस समय अभिमन्यु को कोई अच्छी तरह देख नहीं पाता था; क्योंकि वे फुर्ती के साथ एक जगह से दूसरी जगह जा रहे थे। महाराज! हम लोग केवल अभिमन्यु का सुवर्णमण्डित कवच, आभूषण, मण्डलाकार धनुष और बाण ही देख पाते थे। सूर्य जैसे किरणों से सब लोकों को ढक लेते हैं वैसे ही तेजस्वी अभिमन्यु अपने बाणों से वीरों को व्याप्त करते हुए देख पड़ते थे। सेना के बीच में स्थित, सूर्य के समान तप रहे, अभिमन्यु को उस समय कोई स्थिर दृष्टि से देख भी नहीं सकता था। १० २१

पैंतालीसवाँ अध्याय

अभिमन्यु के पराक्रम से राजा दुर्योधन की पराजय

सञ्जय ने कहा—महाराज! जैसे प्रलयकाल आ जाने पर काल सब प्राणियों के जीवन का संहार करता है वैसे ही इन्द्र-सदृश पराक्रमी अभिमन्यु बड़े-बड़े योद्धाओं को मारने लगे। उस समय शत्रुसेना को विदलित करते हुए अभिमन्यु की अपूर्व शोभा हुई। व्याघ्र जैसे झपटकर मृग को दबोच ले वैसे ही अभिमन्यु ने शत्रुसेना के व्यूह में घुसकर सत्यश्रवा को पकड़ लिया और पृथ्वी पर उनको खींचना शुरू किया। तब कौरवपक्ष के सब योद्धा अनेक प्रकार के अस्त्र-शस्त्र लेकर बड़े वेग से अभिमन्यु के पास पहुँचे और "मैं पहले मारूँगा, मैं पहले वार करूँगा" कहकर होड़ सी लगा करके वे अभिमन्यु को मारने के लिए उद्यत हुए। समुद्र के भीतर तिमि नाम का मत्स्य जैसे छोटी मछलियों को लील लेता है वैसे ही कुमार अभिमन्यु उन क्षत्रियों और सुभटों को मार-मारकर गिराने लगे। जैसे सब नदियाँ सागर में जाकर समा जाती हैं वैसे ही युद्ध से मुँह न मोड़नेवाले अपराजित अभिमन्यु के पास पहुँचकर कोई भी

जीवित नहीं लौटता था। उस समय कौरवपक्ष के सैनिक लोग उसी तरह अत्यन्त भयविह्वल होकर काँपने लगे जिस तरह महाग्राह से पकड़ा गया मनुष्य काँपता है और तूफ़ान के भयङ्कर वेग से क्षोभ को प्राप्त सागर के बीच तबाह होती हुई नाव डगमगाती है।

अब पराक्रमी निडर मद्रराज शल्य के पुत्र वीर रुक्मरथ ने भागती हुई सेना को धीरज देकर उत्तेजित करते हुए कहा--हे वीर क्षत्रियो! सैनिको! डरो नहीं। क्यों भागते हो? मेरे जीते-जी अभिमन्यु तुम्हारा कुछ नहीं कर सकते। मैं निःसन्देह इन्हें जीते ही पकड़ १० लूँगा। सुसज्जित सुवर्णमण्डित रथ पर बैठे हुए रुक्मरथ बड़े वेग से अभिमन्यु के सामने पहुँचे। उन्होंने अभिमन्यु के हृदय में और दाहनी तथा बाईं भुजा में तीन-तीन बाण मारकर घोर सिंहनाद किया। अभिमन्यु ने उसी दम उनका धनुष, दोनों हाथ और सुन्दर नयन-नाक तथा भृकुटि से शोभित सिर बाणों से काटकर पृथ्वी पर गिरा दिया। रण-दुर्मद शल्य-पुत्र के प्रिय हमजोली के राजकुमारगण सुवर्णखचित ध्वजा से शोभित रथों पर बैठे हुए थे। उन्होंने जब रुक्मरथ की मृत्यु देखी तब कुपित होकर, ताल-प्रमाण सुदृढ़ धनुष तान-तानकर, चारों ओर से अकेले अभिमन्यु को घेर लिया। शस्त्रविद्या में सुशिक्षित, तरुण, अत्यन्त असहनशील वीरों ने घेरकर अपने बाणों से अभिमन्यु को छा लिया। यह देखकर राजा दुर्योधन बहुत ही प्रसन्न हुए और उन्होंने समझ लिया कि अब अभिमन्यु जीते नहीं बच सकते। राजपुत्रों ने अनेक प्रकार के चिह्नों से युक्त, सुवर्णपुंख-शोभित बाणों से दम भर में अभिमन्यु को छिपा सा दिया। हमें उनका रथ ध्वजदण्ड और सारथी, सब टीड़ीदल से घिरे हुए खेत की तरह देख पड़ते थे। उस समय अंकुश की चोट खाये हुए हाथी की तरह अत्यन्त घायल और इसी से २१ क्रुद्ध होकर अभिमन्यु ने गान्धर्व अस्त्र का प्रयोग करके माया प्रकट की। महावीर अर्जुन ने घोर तप करके तुम्बुरु आदि गन्धर्वों से वह अद्भुत दिव्य अस्त्र प्राप्त किया था। उस अस्त्र का प्रयोग करते ही शत्रुसेना मोहित हो गई। अभिमन्यु ने फुर्ती के साथ गान्धर्व अस्त्र छोड़कर ऐसा अद्भुत कौशल दिखलाया कि बड़े-बड़े योद्धा दङ्ग हो गये। वे अलातचक्र की तरह कभी एक,

कभी सौ और कभी हज़ार रूप धारण किये हुए से देख पड़ते थे। फिर उन्होंने रथसञ्चालनकला और अस्त्र-माया के द्वारा राजाओं को मोहाभिभूत करके उनके शरीरों के टुकड़े-टुकड़े करना शुरू किया। सान पर रक्खे गये पैने बाणों के प्रहार से वीरों के प्राण निकलकर परलोक सिधारते और मृत शरीर पृथ्वी पर गिरते जाते थे। इसके बाद अभिमन्यु ने धारदार बाणों से कुछ राजकुमारों के धनुष, रथ के घोड़े, सारथी, ध्वजा, अङ्गदादि आभूषणों से शोभित बाहु और सिर काटना शुरू कर दिया। जैसे पाँच साल के पुराने फलयुक्त आम के पेड़ टूट-टूटकर गिरते हैं वैसे ही एक सौ राजकुमारों को अभिमन्यु ने बाणों से मार गिराया। उस समय एक-मात्र अभिमन्यु के पराक्रम से क्रुद्ध सर्प-सदृश, सुखभोग के योग्य, एक सौ जवान और शूर राजकुमारों की मृत्यु होते देखकर राजा दुर्योधन बहुत ही डर गये। अभिमन्यु को रथियों, हाथियों, घोड़ों और पैदल सेना का संहार करते देखकर, क्रोधान्ध होकर, स्वयं दुर्योधन शीघ्रता के साथ उनके सामने पहुँचे। उन दोनों वीरों का असम्पूर्ण अद्भुत युद्ध थोड़ी देर तक बहुत ही भयङ्कर होता रहा। इतने में ही वीर अभिमन्यु के बाणों से अत्यन्त पीड़ित और व्यथित होकर राजा दुर्योधन वहाँ से हट गये। ३०

छियालीसवाँ अध्याय

राजकुमार लक्ष्मण की मृत्यु

धृतराष्ट्र ने कहा—हे सञ्जय! तुम बहुतों के साथ एक के संग्राम करने और बराबर विजयी होने की बात बारम्बार कह रहे हो। मुझे तो इस समय अभिमन्यु का ऐसा पराक्रम और बाहुबल विश्वास के अयोग्य और अत्यन्त अद्भुत प्रतीत हो रहा है। किन्तु असल बात यह है कि जिनका एकमात्र अवलम्बन धर्म ही है, उनका ऐसा अद्भुत पराक्रम होना कुछ असम्भव नहीं है। चाहे जो हो, अब यह बताओ कि उन एक सौ राजकुमारों की मृत्यु और दुर्योधन के विमुख होने पर मेरी सेना का क्या हाल हुआ? उसने किस तरह अभिमन्यु का सामना किया?

सञ्जय ने कहा—राजन्! आपके पक्ष के महारथियों के मुँह सूख गये, दृष्टि चञ्चल हो उठी, रोंगटे खड़े हो गये और बराबर पसीना बह चला। उस समय उनके मन में विजयी होने का उत्साह ज़रा भी नहीं रहा। सब लोग भागने का निश्चय करके मरे हुए भाई, पिता, पुत्र, मित्र, सुहृद्, सम्बन्धी, भाई-बन्धु आदि को छोड़-छोड़कर अपने हाथी घोड़े आदि को तेज़ी से हाँककर इधर-उधर भागने लगे।

उधर द्रोणाचार्य, अश्वत्थामा, बृहद्बल, कृपाचार्य, दुर्योधन, कर्ण, कृतवर्मा और शकुनि अपनी सेना को छिन्न-भिन्न देखकर, अत्यन्त क्रुद्ध होकर, अभिमन्यु पर आक्रमण करने के लिए

आगे बढ़े। किन्तु वीर अभिमन्यु ने इन सभी वीरों को एक-एक करके युद्ध से विमुख सा कर दिया। तब तेजस्वी, लाड़-प्यार से पले हुए, राजकुमार लक्ष्मण लड़कपन और दर्प के मारे बेखटके अकेले ही वेग से अभिमन्यु के सामने पहुँचे। पुत्रस्नेह के कारण उनकी सहायता और रक्षा के लिए राजा दुर्योधन भी उनके पीछे पहुँचे। अन्यान्य महारथी वीर योद्धा भी राजा दुर्योधन के साथ चले। मेघमण्डल जैसे पहाड़ पर पानी बरसाता है वैसे ही वे सब वीर अभिमन्यु के ऊपर बाण बरसाने लगे। हवा जैसे मेघों को तितर-बितर कर देती है वैसे ही अभिमन्यु भी उस विशाल सेना को और उन वीरों को उन्मथित करने लगे। इसके उपरान्त जैसे मतवाला हाथी अन्य हाथियों से जाकर भिड़ता है वैसे ही वीर अभिमन्यु भी—अपने पिता के साथ उपस्थित, धनुष ताने हुए, अत्यन्त दुर्द्धर्ष, कुबेर के पुत्र के समान सुन्दर और प्रियदर्शन—लक्ष्मण के पास पहुँचे। लक्ष्मण ने अभिमन्यु के वक्षःस्थल और दोनों भुजाओं में अनेक तीक्ष्ण बाण मारे। डण्डे की चोट खाकर कुपित विषैले नाग के समान अत्यन्त क्रुद्ध वीर अभिमन्यु ने आपके पोते लक्ष्मण से कहा—हे लक्ष्मण! मैं तुमको अभी यमपुरी भेजता हूँ। इसलिए तुम अच्छी तरह इस लोक को एक बार देख लो। मैं तुमको तुम्हारे भाई-बन्धुओं के सामने ही काल के गाल में पहुँचाता हूँ। महाराज! इतना कहकर वीर अभिमन्यु ने उसी समय केंचुल छोड़े हुए नाग के समान चमकीला और भयानक भल्ल बाण निकालकर उससे लक्ष्मण का, सुन्दर नासिका भ्रुकुटी केश और कुण्डलों से शोभित, सिर काट डाला।

लक्ष्मण की मृत्यु देखकर सब वीरगण हाहाकार करने लगे। शोक और क्रोध से अधीर होकर राजा दुर्योधन ऊँचे स्वर से पुकारकर सब राजाओं से कहने लगे—हे वीर क्षत्रियो! तुम लोग मिलकर चटपट इस दुष्ट बालक अभिमन्यु को मार डालो। तब कुपित होकर द्रोणाचार्य, कृपाचार्य, कर्ण, अश्वत्थामा, बृहद्बल और कृतवर्मा इन छः महारथियों ने अभिमन्यु को चारों ओर से घेर लिया। अभिमन्यु ने तीक्ष्ण बाणों से इन छहों वीरों को घायल करके हटा दिया। फिर वे बड़े वेग से सिन्धुराज जयद्रथ की सेना के भीतर घुसे। कलिङ्गदेश के योद्धा, निषादगण और पराक्रमी क्राथनन्दन ने हाथियों का दल

आगे करके अभिमन्यु की राह रोक दी। तब दोनों ओर से अत्यन्त भीषण संग्राम होने लगा। महाबाहु अभिमन्यु ने बहुत ही दुर्भेद्य दुर्द्धर्ष हाथियों की सेना को छिन्न-भिन्न करना शुरू कर दिया। उस समय ऐसा जान पड़ने लगा मानों प्रचण्ड आँधी आकाशमण्डल में बड़े वेग से मेघों को तितर-बितर कर रही है। क्राथनन्दन ने बाणवर्षा से अभिमन्यु को रोकने का बड़ा यत्न किया। इसी समय द्रोणाचार्य आदि छहों महारथी फिर जाकर दिव्य अस्त्रों का प्रयोग करते हुए अभिमन्यु से युद्ध करने लगे। अभिमन्यु ने अपने बाणों के असह्य प्रहारों से उक्त छहों वीरों को विमुख सा करके क्राथनन्दन को बहुत ही पीड़ित किया और फिर अनेक प्रकार के बाणों से उनका छत्र और ध्वजा काट डाली, सारथी और घोड़ों को मार डाला तथा धनुष, बाण और बजुल्ले समेत उनकी भुजाएँ काट डालीं। इसके उपरान्त श्रेष्ठ कुल, शील, ज्ञान, वीर्य और कीर्ति से युक्त, अस्त्रबलसम्पन्न क्राथनन्दन को मार गिराया। यह देखकर प्रायः अन्य सब वीरगण भयविह्वल होकर समर से हट गये। २७

सैंतालीसवाँ अध्याय

कोशलेश्वर बृहद्बल का मारा जाना

धृतराष्ट्र ने कहा—हे सञ्जय! अपने कुल के अनुरूप अद्भुत कार्य करनेवाले, व्यूह के भीतर घुसे हुए, नवयुवक, अपराजित, संग्राम से विमुख न होनेवाले अभिमन्यु को तीन साल के, बलशाली, अच्छी नस्ल और देश के घोड़ों से युक्त रथ पर बैठकर जैसे आकाशमण्डल में सूर्य भ्रमण करते हैं वैसे ही रणभूमि में भ्रमण करते देखकर किन-किन रथियों ने उनका सामना किया?

सञ्जय ने कहा—महाराज! अभिमन्यु ने व्यूह के भीतर जा करके आपके पक्ष के राजाओं और सैनिकों को जब तीक्ष्ण बाण मारकर रण से हटा दिया तब कुपित होकर द्रोणाचार्य, कृपाचार्य, कर्ण, अश्वत्थामा, बृहद्बल और कृतवर्मा इन छः महारथियों ने अभिमन्यु को चारों ओर से घेर लिया। सिन्धुराज जयद्रथ को द्वार-रक्षा का भार सौंपा गया था, इसी लिए अवशिष्ट सैनिक लोग धर्मराज युधिष्ठिर की सेना को रोकने के लिए उधर चले। अन्यान्य वीर भी ताल प्रमाण बड़े-बड़े धनुष चढ़ाकर अभिमन्यु के ऊपर लगातार पैने बाण छोड़ने लगे। अभिमन्यु ने उन रणविद्या-विशारद और सब विद्याओं में निपुण वीरों को अपने रणकौशल से आश्चर्य में डाल दिया और बाणवर्षा करके विह्वल कर दिया। उन्होंने द्रोणाचार्य को पचास, बृहद्बल को बीस, कृतवर्मा को अस्सी, कृपाचार्य को साठ और अश्वत्थामा को कानों तक खींचकर सुवर्णपुङ्खयुक्त वेगशाली दस बाण मारे। फिर शत्रुदल के बीच में फुर्ती के साथ पीले रङ्ग के, पैने, कर्णी नाम के कई एक विकट बाण वीर कर्ण के कान में मारे। इसके उपरान्त कृपा-

चार्य के पार्श्वरक्षक दोनों सारथियों को और घोड़ों को मारकर, उनकी छाती में दारुण दस बाण मारकर, उन्हें विह्वल कर दिया। फिर आपके पुत्र और अन्य वीरों के सामने ही अभिमन्यु ने कौरवकुल की कीर्ति को बढ़ानेवाले वृन्दारक नाम के महावीर को मार डाला। अभिमन्यु को इस तरह निर्भय भाव से कौरवपक्ष के प्रधान-प्रधान वीरों का संहार करते देखकर अश्वत्थामा ने उनको पचीस क्षुद्रक नाम के तीक्ष्ण बाण मारे। अभिमन्यु ने भी आपके पुत्रों के सामने ही शीघ्रता के साथ तीक्ष्ण बाणों से अश्वत्थामा को पीड़ित किया। उन्होंने सुतीक्ष्ण साठ बाणों से अभिमन्यु को घायल किया, पर वे मैनाक पर्वत के समान तनिक भी विचलित न हुए। अश्वत्थामा ने फिर सुवर्णपुङ्खयुक्त तिहत्तर बाण अभिमन्यु को मारे। पुत्रवत्सल आचार्य द्रोण ने एक सौ, पिता के हितैपी अश्वत्थामा ने साठ, कर्ण ने बाईस भल्ल बाण, कृतवर्मा ने चौदह भल्ल बाण, बृहद्बल ने पचास भल्ल बाण और कृपाचार्य ने दस भल्ल बाण एक साथ अभिमन्यु को मारे। अभिमन्यु ने भी उन सबको दस-दस बाण मारे। कोशलेश्वर बृहद्बल ने कर्णी बाण से अभिमन्यु को वक्षःस्थल में घायल किया। उन्होंने क्रुद्ध होकर फुर्ती के साथ उनकी ध्वजा, धनुष, सारथी और घोड़ों को नष्ट करके पृथ्वी पर गिरा दिया। रथ न रहने पर ढाल-तलवार लेकर बृहद्बल ने अभिमन्यु का कुण्डल-मण्डित सिर काटने का इरादा किया। तब अभिमन्यु ने तीक्ष्ण बाण मारकर उनका हृदय फाड़ डाला। इससे वे प्राणहीन होकर पृथ्वी पर गिर पड़े। उस समय कटु वचन कहते हुए, खड्ग-धनुप धारण किये, दस हज़ार राजा युद्ध में पीठ दिखाकर भाग खड़े हुए। महावीर अभिमन्यु बृहद्बल को मारकर अपने पैने बाणों से शत्रुसेना को स्तम्भित करते हुए युद्ध के मैदान में भ्रमण करने लगे।
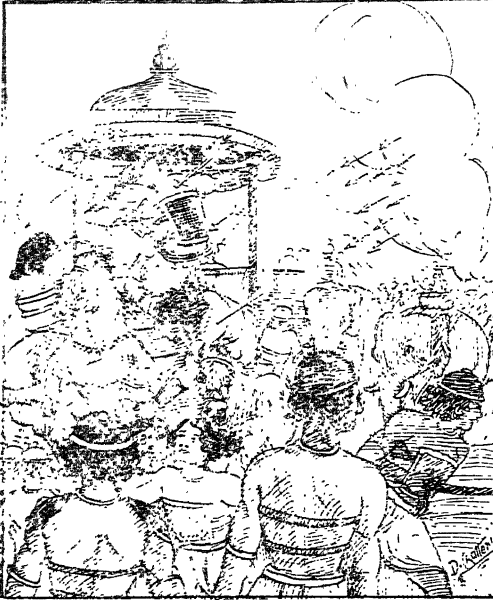
अड़तालीसवाँ अध्याय

अभिमन्यु के अद्भुत पराक्रम का वर्णन

सञ्जय ने कहा—राजन् ! महावीर अभिमन्यु ने कर्ण के कान में दुबारा तीक्ष्ण कर्णिक बाण मारकर पचास बाणों से उनको जर्जर कर दिया। महारथी कर्ण ने अभिमन्यु के प्रहार

से विह्वल और क्रोधान्ध होकर उनको उतने ही बाण मारे। उन बाणों से घायल होकर अभिमन्यु अपूर्व शोभा को प्राप्त हुए। उन्होंने भी क्रोध करके कर्ण को असंख्य उग्र बाण मारे। अभिमन्यु के दारुण बाणों के प्रहार से कर्ण के अङ्ग कट-फट गये और उनसे रक्त की धारा वह चली, जिससे कर्ण की भी अपूर्व शोभा हुई। एक दूसरे के बाणों से घायल होकर, रक्त से भीगे हुए, दोनों वीर फूले हुए ढाक के पेंड़ के समान जान पड़ने लगे।

महाबाहु अभिमन्यु ने कर्ण के छः महाबली अमात्यों को, सारथी को और घोड़ों को मार डाला तथा धनुष, ध्वजा और रथ काट डाले। उन्होंने अन्य महावीरों को भी दस-दस बाणों से घायल किया। अभिमन्यु ने वास्तव में यह बहुत ही अद्भुत काम किया। फिर उन्होंने छः बाणों से मगधराज के पुत्र को मार डाला। इसके बाद तरुण अवस्थावाले अश्वकेतु को, सारथी और घोड़ों सहित, यमपुर भेज दिया। हाथी पर सवार मार्तिकावतक भोज का सिर एक क्षुरप्र बाण से काटकर वीर अभिमन्यु घोर सिंहनाद करने लगे। उस समय वीर दुःशासन का पुत्र अभिमन्यु के सामने आया। उसने तीक्ष्ण चार बाण अभिमन्यु के घोड़ों को, एक बाण सारथी को और दस बाण अभिमन्यु को मारे। महापराक्रमी अभिमन्यु ने दुःशासन के पुत्र के बाणप्रहार से कुपित होकर उसको दस बाण मारे; फिर क्रोध से लाल आँखें करके वे ऊँचे स्वर से कहने लगे—हे दुःशासन के प्रिय पुत्र! तुम्हारे पिता बड़े डरपोंक हैं जो संग्राम से भाग खड़े हुए। बड़ी बात है जो तुम क्षत्रिय-धर्म को जानते हो और युद्ध करने के लिए तैयार हो। किन्तु याद रक्खो, मेरे हाथ से जीते नहीं बच सकते! १०

महावीर अभिमन्यु ने दुःशासन के पुत्र से यों कहकर बहुत ही तीक्ष्ण, चमकीला, साफ़ किया हुआ एक नाराच बाण धनुष पर चढ़ाकर शत्रु पर छोड़ा। किन्तु महापराक्रमी अश्वत्थामा ने फुर्ती के साथ तीन तीक्ष्ण बाणों से उस नाराच को राह में ही काट डाला। अभिमन्यु ने अश्वत्थामा के रथ की ध्वजा काटकर वीर शल्य को तीन बाण मारे। शल्य ने धैर्य के साथ उस प्रहार को सहकर गृद्धपत्रयुक्त नव बाण अभिमन्यु के हृदय में मारे। शल्य का यह कर्म बहुत ही अद्भुत जान पड़ा। तब युद्धनिपुण अभिमन्यु ने फुर्ती के साथ शल्य का धनुष काटकर उनके पार्श्वरक्षक सारथियों को मार डाला और फिर लोहमय छः बाण मारकर शल्य को पीड़ित किया। अभिमन्यु के बाणों से पीड़ित शल्य वह रथ छोड़कर दूसरे रथ पर सवार हो गये। समरनिपुण अभिमन्यु ने झटपट शत्रुञ्जय, चन्द्रकेतु, मेघवेग, सुवर्चा और सूर्यभास, इन पाँच वीरों का वध करके शकुनि को कई बाण मारकर विह्वल कर दिया। शकुनि ने अभिमन्यु को तीन तीक्ष्ण बाण मारकर राजा दुर्योधन से कहा—राजन्! अब हमें चाहिए कि सब लोग मिलकर अभिमन्यु का वध करें; क्योंकि यह हममें से एक-एक को मारे डालता है। हे नर-नाथ! इसी समय कर्ण ने द्रोणाचार्य से कहा—ब्रह्मन्! यह वीर बालक हम लोगों में

से हर एक को युद्ध से हटा करके सम्पूर्ण सेना का संहार कर रहा है। इसलिए आप तुरन्त इसके प्राण लेने का कोई उपाय बताइए।

महावीर द्रोणाचार्य ने यह सुनकर कौरवपक्ष के सब वीरों को सुनाकर कहा--हे वीरो! देखो, इस कुमार का कैसा युद्धकौशल है; कहीं प्रहार करने का तनिक भी अवकाश नहीं देख पड़ता। इस वीर बालक की फुर्ती तो देखो। यह बालक चारों ओर विचर रहा है, पर कहीं ज़रा भी प्रहार करने का मौक़ा नहीं देता। यह बालक सब बातों में अपने पराक्रमी पिता अर्जुन के ही समान है। यह ऐसी फुर्ती के साथ तरकस से बाण निकालता, धनुष पर चढ़ाता और २० चलाता है कि रथ के मार्गों में केवल मण्डलाकार धनुष ही देख पड़ता है। शत्रुदमन महावीर अभिमन्यु बाणप्रहार से मुझे जर्जर, पीड़ित और मोहित सा कर रहा है तथापि इसका ऐसा अद्भुत पराक्रम देखकर मुझे बड़ा आनन्द हो रहा है। कौरवपक्ष के बड़े-बड़े वीर योद्धा कुपित होकर, लाख-लाख यत्न करने पर भी, प्रहार करने का मौक़ा नहीं देख पाते; यह देखकर मुझे बड़ा आह्लाद हो रहा है। ऐसे अपूर्व युद्धकौशल के कारण यह वीर बालक वीरों में सबसे अधिक मान पाने के योग्य है। महावीर अभिमन्यु ऐसी फुर्ती के साथ अपने बाणों की वर्षा से सब दिशाओं को व्याप्त कर रहा है कि इसमें और अर्जुन में कुछ भी भेद नहीं देख पड़ता।

महावीर कर्ण ने अभिमन्यु की मार से अत्यन्त पीड़ित होकर फिर द्रोणाचार्य से कहा--हे आचार्य! युद्ध छोड़कर भाग जाना वीर क्षत्रियों का धर्म नहीं है, इसी कारण अभिमन्यु के बाणों से व्यथित होकर भी मैं रणभूमि में मौजूद हूँ। इस तेजस्वी कुमार के अग्निसदृश प्रज्वलित परम दारुण बाण मेरे हृदय को चीरे डालते हैं।

कर्ण के ये वचन सुनकर महारथी द्रोणाचार्य हँसकर कहने लगे--हे कर्ण! अभिमन्यु का कवच सुदृढ़ और अभेद्य है। फिर यह अभी जवान और फुर्तीला है, जल्द थक नहीं सकता। मैंने इसके पिता पराक्रमी अर्जुन को कवच पहनने की सब गुप्त बातें और तरीक़े बतला दिये हैं। उन सब उपायों को यह बालक भी अच्छी तरह जानता है। एक उपाय यह है कि यत्न के साथ बाण मारकर इसका धनुष और धनुष की डोरी काटी जा सकती है; और अभीषु, रथ के घोड़े तथा पार्श्वरक्षक सारथी मारे जा सकते हैं। कर्ण! अगर तुमसे हो सके तो यह काम कर डालो; इस तरह अभिमन्यु को पहले शस्त्र-हीन करके फिर प्रहार करो। तुम अच्छी तरह समझ लो कि जब तक इसके हाथ में धनुष है तब तक सब देवता और दैत्य ३० मिलकर भी इसे परास्त नहीं कर सकते। अतएव अगर तुम अभिमन्यु को परास्त करना चाहते हो तो उसे रथ-हीन करके उसका धनुष काट डालो।

महाराज! द्रोणाचार्य की सलाह मानकर कर्ण ने फुर्ती के साथ बाणवर्षा करते हुए अभिमन्यु के धनुष को शीघ्रता के साथ काट डाला। भोज ने अभिमन्यु के रथ के घोड़ों

अब वे क्रुद्ध सिंह की तरह द्रोणाचार्य्य की ओर झपटे—पृ० २२७७

को मार डाला। कृपाचार्य ने उनके पार्श्वरक्षक सारथियों को मार गिराया। इस प्रकार अभिमन्यु का धनुष कट जाने पर शेष वीरगण उन पर बाण बरसाने लगे। राजन्! उस समय वे निर्दय छहों महारथी फुर्ती से एक साथ अकेले बालक अभिमन्यु पर प्रहार करने लगे। धनुष और रथ न रहने पर भी वीर अभिमन्यु ने वीर क्षत्रिय का धर्म नहीं छोड़ा। वीर महारथियों ने तो धर्म को छोड़ दिया; परन्तु बालक अभिमन्यु ने नहीं छोड़ा। असहाय अभिमन्यु ढाल-तलवार लेकर, आकाशमार्ग में उछलकर, गरुड़ की तरह फुर्ती के साथ बलपूर्वक कौशिक (सर्वतोभद्र) आदि पैतरों से घूमते हुए शत्रुसेना का संहार करने लगे। छिद्रदर्शी महाधनुर्द्धर लोग वीर अभिमन्यु को देखकर और यह समझकर कि यह खड्गधारी बालक मुझ पर ही प्रहार करने आ रहा है, उनको ताक-ताककर तीक्ष्ण बाण मारने लगे। इसी समय शत्रुदमन द्रोणाचार्य ने फुर्ती के साथ नाराच बाण से अभिमन्यु के खड्ग की मणिमय मूठ काट डाली। [अभिमन्यु का शरीर बाणों से छिद चुका था। द्रोणाचार्य ने तलवार की मूठ काट डाली।] इसी समय कर्ण ने तीक्ष्ण बाणों से ढाल भी काट डाली। इस तरह धनुष-बाण या ढाल-तलवार कुछ न रहने पर वीर अभिमन्यु ने पृथ्वी पर आकर हाथ में चक्र ले लिया। अब वे क्रुद्ध सिंह की तरह द्रोणाचार्य की ओर झपटे। तब चक्र की उज्ज्वल रेणु से शोभित अङ्गवाले चक्रपाणि अभिमन्यु की बड़ी शोभा हुई। वे उस समय चक्र हाथ में लिये हुए अपने मामा वासुदेव के समान जान पड़ने लगे। क्षण भर तक वीर अभिमन्यु का रूप बहुत ही भयावना हो उठा। महातेजस्वी सिंहनाद करते हुए वीरों के बीच में खड़े हुए अभिमन्यु के शरीर से रक्त बह रहा था, जिससे उनके कपड़े लाल हो रहे थे। भौंहें टेढ़ी करके शत्रुसेना की ओर देखते हुए अभिमन्यु की बड़ी शोभा हुई।

उनचासवाँ अध्याय

अभिमन्यु के मारे जाने का वर्णन

सञ्जय ने कहा—महाराज ! महावीर अभिमन्यु उस समय चक्र हाथ में लेकर संग्राम में दूसरे विष्णु के समान शोभा को प्राप्त हुए। उनके बिखरे हुए बाल हवा में उड़ रहे थे। उनके हाथ में ऊपर उठा हुआ चक्र बहुत ही शोभायमान हो रहा था। उस समय कोई भी अभिमन्यु को आँख उठाकर नहीं देख सकता था। घबराये हुए राजाओं ने अभिमन्यु के उस चक्र को खण्ड-खण्ड कर डाला। तब अभिमन्यु गदा लेकर अश्वत्थामा की ओर दौड़े। उन्होंने, प्रज्वलित अग्नि के समान, उस गदा को देखकर रथ पर से कूदकर अपनी जान बचाई। तब महावीर अभिमन्यु ने गदा के प्रहार से अश्वत्थामा के घोड़ों, पार्श्वरक्षक सारथियों और रथ को चूर-चूर कर डाला। बाणों से सब शरीर छिदा हुआ होने के कारण उस समय अभिमन्यु शल्लकी (साही नाम के पशु) के समान देख पड़ने लगे। इसके उपरान्त अभिमन्यु ने सुबल के पुत्र कालिकेय को मार करके उनके अनुचर गान्धार देश के सतहत्तर योद्धाओं को उसी गदा से मार गिराया। फिर वसातीय दस रथी, केकय देश के सात रथी और दस हाथी मारकर अभिमन्यु ने गदा की चोट से दुःशासन के पुत्र के रथ और घोड़ों को नष्ट कर दिया।

११
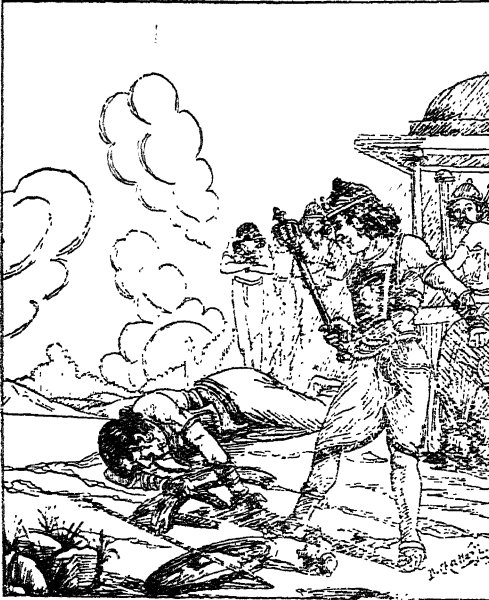
महावीर दुःशासन का पुत्र भीषण गदा तानकर "ठहर ठहर" कहता हुआ अभिमन्यु की ओर दौड़ा। पहले समय में महादेव और अन्धकासुर ने जैसे भयानक गदायुद्ध किया था वैसे ही अभिमन्यु और दुःशासन का पुत्र दोनों, एक दूसरे के प्राण लेने के लिए, गदाप्रहार करने लगे। वे दोनों वीर परस्पर गदा का वार करके इन्द्रध्वज की तरह अचेत हो पृथ्वी पर गिर पड़े। इसी बीच में कौरवों की कीर्ति को बढ़ानेवाले दुःशासन के पुत्र ने उठते हुए अभिमन्यु के मस्तक में वेग से गदा मारी। इतनी देर तक अकेले युद्ध करते-करते अभिमन्यु थक गये थे, उस पर दुःशासन के पुत्र ने ज़ोर से मस्तक में गदा मारी। उस प्रहार से अभिमन्यु के प्राण निकल गये और उनका चेतनाहीन शरीर पृथ्वी पर गिर पड़ा।

महाराज ! कमल-वन को जैसे गजराज नष्ट-भ्रष्ट कर डाले वैसे ही सारी शत्रु-सेना को मथकर अन्त को अकेले वीर अभिमन्यु कई वीरों के द्वारा अधर्मपूर्वक मारे गये। व्याधों के हाथ से मारे गये जङ्गली गजराज की तरह मृत अभिमन्यु बहुत ही शोभायमान हुए। उस समय आपके पक्ष के सब महारथियों ने समर-भूमि में मरे पड़े हुए महावीर अभिमन्यु को घेर लिया। ग्रीष्म ऋतु में जङ्गल को जलाकर बुझे हुए दावानल के समान, कौरव-सेना को तपाकर अस्त हुए सूर्य के समान, राहु-ग्रस्त चन्द्रमा के समान, सूखे हुए समुद्र के समान और वृक्षों की डालें तोड़कर रुकी हुई आँधी के समान पड़े हुए पूर्णचन्द्र के सदृश मुखवाले, सुन्दर अलकों से शोभित अभिमन्यु को इस तरह निर्जीव देखकर आपके पक्ष के सब महारथी बहुत प्रसन्न होकर बारम्बार सिंहनाद करने लगे। महाराज ! कौरवों को बड़ा ही हर्ष हुआ; किन्तु अन्य वीरों की आँखों से आँसुओं की धारा बह चली। उस समय आकाश से गिरे हुए चन्द्रमा के समान, पृथ्वी पर पड़े हुए अभिमन्यु को देखकर आकाशचारी सिद्ध आदि प्राणी चिल्ला-चिल्लाकर कहने लगे—महावीर द्रोणाचार्य और कर्ण आदि कौरवपक्ष के छः महारथियों ने मिलकर इस अकेले वीर बालक को मारा है। हमारी राय में यह घोर अधर्म हुआ है। महाराज ! मरे हुए अभिमन्यु रणशय्या पर पड़े हुए थे और उनके चारों ओर सुवर्णपुङ्खयुक्त बाण, वीरों के कुण्डल-शोभित कटे हुए मस्तक, विचित्र पगड़ियाँ, पताका, चामर, विचित्र कम्बलासन, उत्तम आयुध, रथ, घोड़े, हाथी, हाथियों और घोड़ों के अलङ्कार, केंचुल छोड़े विषैले नागों के समान म्यान से निकली हुई तलवारें, धनुष, कटी हुई शक्तियाँ, ऋष्टि, कम्पन, प्रास और पट्टिश आदि शस्त्र-अस्त्र बिखरे हुए पड़े थे। इनसे वह पृथ्वीमण्डल पूर्णचन्द्र और ग्रह-नक्षत्र-तारागण से युक्त आकाश-मण्डल के समान शोभायमान हो रहा था। अभिमन्यु के बाणों से सवार समेत मरकर गिरे हुए, रक्त में सने हुए, केवल अन्तिम साँस ले रहे घोड़ों की लाशों से वह रणभूमि अत्यन्त अगम्य थी। महावत, अंकुश, घण्टा, चर्म, आयुध और झण्डों से शोभित तथा अभिमन्यु के बाणों से निहत पर्वताकार हाथी मरे पड़े थे। सारथी और रथी की लाशों से पूर्ण, विक्षुब्ध कुण्ड के समान, बिना घोड़ों के रथ जहाँ-तहाँ टूटे पड़े थे। हाथों में शस्त्र पकड़े प्राणहीन पैदलों के शरीर सब ओर ढेरों देख पड़ते थे। इन सबसे वह रणभूमि उस समय डरपोकों के लिए भयावनी हो रही थी। २० ३१

राजन् ! चन्द्र-सूर्य के सदृश तेजस्वी बालक अभिमन्यु जब मरकर युद्धक्षेत्र में गिर पड़े तब कौरवपक्ष के वीर अत्यन्त आह्लादित और पाण्डवपक्ष के लोग अत्यन्त शोकविह्वल हो उठे। पाण्डवों की सेना युधिष्ठिर के सामने ही प्राण लेकर भागने लगी। अभिमन्यु की मृत्यु होने के कारण योद्धाओं को भागते देखकर महाराज युधिष्ठिर ने कहा—हे वीर क्षत्रियो ! समरनिपुण महाबाहु अभिमन्यु युद्ध से पीछे नहीं हटे, बल्कि शत्रुओं के हाथ से मरकर स्वर्ग को चले गये। फिर तुम क्यों भागे जा रहे हो ? भागो नहीं, डरो मत, हम लोग शीघ्र ही शत्रुओं को परास्त

करेंगे। श्रीकृष्ण और अर्जुन के समान प्रभावशाली प्रतापी महावीर अभिमन्यु संग्राम में विषैले नाग के समान शत्रुपक्ष के अनेक राजकुमारों को मारकर स्वर्ग को गये हैं। दस हज़ार सेना सहित महारथी कोशलेश्वर बृहद्बल को मारकर वीर अभिमन्यु इन्द्रलोक को गये हैं। हज़ारों रथों, रथियों, हाथियों, घोड़ों और पैदल सेना का संहार करके वे पुण्यकर्मा कुमार अपने पुण्य से जीते हुए उन सनातन लोकों में पहुँचे हैं, जिन्हें पुण्यात्मा लोग पाते हैं। इसलिए वीर अभिमन्यु कदापि शोचनीय नहीं हैं। महातेजस्वी अभिमन्यु ऐसा विकट युद्ध और मार-काट करके भी तृप्त नहीं हुए थे; इस कारण उनकी मृत्यु शोचनीय नहीं है। [हे नरनाथ! धर्मराज युधिष्ठिर ने ऐसे वचन कहकर अपने पक्ष के दुःखित वीरों का दुःख दूर किया और उन्हें दिलासा दिया।] ३६

पचासवाँ अध्याय

युद्धभूमि का पुनर्वर्णन

सञ्जय ने कहा—राजन्! इस तरह शत्रुपक्ष के श्रेष्ठ वीर अभिमन्यु को मारकर, शत्रुओं के बाणों से पीड़ित और रक्त से नहाये हुए, ग्लानिग्रस्त हम लोग सायङ्काल को विश्राम करने के लिए अपने डेरों को लौटे। लाल कमल के समान सूर्य का विम्ब अस्ताचल के शिखर पर पहुँच गया। दिन और रात की सन्धि का समय आ पहुँचा। चारों ओर गीदड़ों का अमङ्गल-सूचक शब्द सुनाई पड़ने लगा। क्रमशः सूर्यदेव ने चमकीले खड्ग, शक्ति, ऋष्टि, वरूथ, ढाल और अलङ्कारों की आभा को हरकर—अन्तरिक्ष और पृथ्वी को एकाकार सा करते हुए—अपने प्रिय शरीर अग्नि में प्रवेश किया। उस समय हम लोग और हमारे शत्रुपक्ष के लोग दोनों ही, संग्राम में विमोहित से होकर, रणभूमि को देखते हुए धीरे-धीरे अपने-अपने शिविर को चले। हम लोगों ने देखा कि समरभूमि ऐसे हाथियों की लाशों से परिपूर्ण और दुर्गम हो रही है, जो आकाश को छूनेवाले पर्वतशिखर के समान हैं और पताका, अङ्कुश, घण्टा, कवच और सवारों सहित मरे पड़े हैं। रथी, सारथी, विभूषण, घोड़े, पार्श्वसारथी, पताका, केतु आदि से शून्य और टूटे-फूटे बड़े-बड़े रथ इधर-उधर पड़े हुए थे। शत्रुपक्ष के वीरों के बाणों ने उन रथों को तोड़-फोड़ डाला था और वे उजड़े लुटे हुए नगर से प्रतीत होते थे। वीरों के बाणों से सवारों सहित ऐसे घोड़े मरे पड़े थे, जो विविध बहुमूल्य आभूषणों से अलङ्कृत थे, जिनकी जीभें, दाँत, आँखें और आँतें बाहर निकली हुई थीं और जिन्होंने समरभूमि को बहुत ही भयानक बना रक्खा था। बहुमूल्य ढाल, आसन, कपड़े, अस्त्र-शस्त्र आदि से विभूषित और अमूल्य शय्या पर लेटने के योग्य वीरगण हाथी, घोड़े, रथ आदि वाहनों और अनुचरों सहित अनाथ की तरह पृथ्वी पर पड़े हुए थे। भीषण आकार के गीदड़, कुत्ते, कौवे, बगले, गिद्ध, गरुड़, भेड़िये, चीते, रक्त पीनेवाले पक्षी, राक्षस, पिशाच आदि आनन्द के साथ युद्ध में निहत प्राणियों

की खाल फाड़कर मांस, मज्जा और चर्बी खा रहे थे। अनेकों मांसभोजी राक्षस आदि एक दूसरे से लाशें छीनते, हँसते, गाते और तालियाँ बजाते थे। १०

राजन्! वीरों के शस्त्रप्रहार से उत्पन्न, दुस्तर वैतरणी के समान भयानक, रक्त की नदी रणभूमि में बह रही थी। रथ उसमें नाव-डोंगी आदि के समान जान पड़ते थे, हाथी पर्वत से प्रतीत होते थे और मनुष्यों के कटे हुए सिर कमल से देख पड़ते थे। मांस की कीचड़ हो रही थी। विविध अस्त्र-शस्त्र मालाओं के समान उसमें बह रहे थे। अधमरे और मरे लोगों के शरीरों से परिपूर्ण वह भयानक नदी रणक्षेत्र के बीच में बह रही थी। भीषण आकारवाले गीदड़, कुत्ते और अन्य अनेक मांसाहारी पशु-पक्षी बड़े आनन्द के साथ उस नदी में मांस खाते और रक्त पीते हुए भयङ्कर स्वर से चिल्ला रहे थे। सैनिकों ने सन्ध्या के समय इन्द्रसदृश, भूषणों से विहीन, मृत महावीर अभिमन्यु को देखा कि हव्य-विहीन यज्ञ के अग्नि के समान बुझे हुए पड़े हैं। उस यमपुरी को बढ़ानेवाली, नाचते हुए कबन्धों से परिपूर्ण, भयावनी रणभूमि को क्रमशः छोड़ करके सब योद्धा अपने-अपने शिविर में गये। १५

इक्यावनवाँ अध्याय

अभिमन्यु के लिए युधिष्ठिर का शोक और विलाप

सञ्जय कहते हैं—महाराज! इस तरह महारथी अभिमन्यु के मारे जाने पर पाण्डव-पक्ष के सब वीर योद्धा रथ, कवच और धनुष आदि रखकर महाराज युधिष्ठिर के चारों ओर बैठकर उसी भयानक युद्ध का ध्यान करते हुए अभिमन्यु की याद करने लगे। धर्मपुत्र युधिष्ठिर अपने वीर भतीजे की मृत्यु से अत्यन्त कातर और दुःखित होकर विलाप करके कहने लगे—हाय! महावीर अभिमन्यु मेरा प्रिय और हित करने की इच्छा से देवताओं के लिए भी दुर्भेद्य द्रोणाचार्य की सेना के व्यूह में ऐसे घुस गया था जैसे गायों के झुण्ड में सिंह प्रवेश करे। जिसके पराक्रम से महाधनुर्द्धर रणदुर्मद अस्त्र-शस्त्र-विशारद शत्रुपक्ष के महारथी योद्धा समर से भाग खड़े हुए, जिसने हमारे प्रधान शत्रु दुःशासन को समर के बीच थोड़ी ही देर में मूर्च्छित और विमुख कर दिया था और जो अनायास ही द्रोणाचार्य के सेना रूप महासागर के पार पहुँच गया था, वह रणपण्डित वीर अभिमन्यु दुःशासन के पुत्र से युद्ध करके उसके हाथों मारा गया! अब आज मैं किस तरह पुत्रवत्सल अर्जुन और, पुत्र को न देखकर अत्यन्त कातर, सुभद्रा को अपना मुँह दिखाऊँगा? श्रीकृष्ण और अर्जुन यहाँ आकर मुझसे अभिमन्यु के बारे में पूछेंगे तो मैं उनको क्या उत्तर दूँगा? मैंने ही जयलाभ और अपने प्रिय की इच्छा से यह श्रीकृष्ण, अर्जुन और सुभद्रा के लिए दुःखदायक अप्रिय कार्य किया है! लोभ के वश हुआ पुरुष कभी दोष को नहीं जान सकता; वह लोभ और मोह के वश होकर दोषपूर्ण कार्य करने लगता १०

है। मैं राज्य-लोभ के वश होकर ही ऐसे अनिष्ट का ख़याल नहीं कर सका। हा! जो सुकुमार बालक अभी सुन्दर भोग, भोजन, शयन, सवारी, कपड़े, गहने आदि पाने के योग्य था उसी को मैंने इतने बड़े युद्ध का भार सौंपकर सबके आगे भेज दिया! सुशिक्षित सीधा घोड़ा जैसे विषम सङ्कट में पड़कर उससे नहीं उबरता वैसे ही संग्राम के विषय में अनभिज्ञ बालक अभिमन्यु भी रण में जाकर मृत्यु के मुख से नहीं बच सका। आज हम लोग यदि स्वयं प्राण दे करके अभिमन्यु के साथ पृथ्वी पर नहीं लेटेंगे तो अवश्य ही क्रुद्ध अर्जुन की कोपदृष्टि की आग में भस्म हो जायँगे। जो अर्जुन अत्यन्त सन्तोषी, लोभ-हीन, बुद्धिमान्, लज्जाशील, क्षमाशाली, सुरूप, मानी, औरों का सम्मान करनेवाले, सत्य-परायण, धीर, महाबली और पराक्रमी हैं; जिनके श्रेष्ठ और अद्भुत कार्यों की प्रशंसा पण्डितगण करते हैं; जिन महावीर ने हिरण्य-पुर-निवासी इन्द्र के वैरी निवातकवच और

कालकेय असुरों का संहार किया; जिन्होंने क्षण भर में अनुचरों सहित पुलोम-नन्दन को मारा और जो शरणागत शत्रु को भी अभयदान करते हैं उनके पुत्र बली अभिमन्यु की रक्षा हम लोग नहीं कर सके! हमको धिक्कार है! महाबली धृतराष्ट्रपुत्रों के लिए अवश्य ही महाभय का समय आ गया है। बेटे के मारे जाने के कारण क्रोधान्ध होकर महावीर अर्जुन अवश्य ही सब कौरवों का नाश कर डालेंगे। क्षुद्र लोग जिसके सहायक हैं वह स्वयं क्षुद्र और अपने कुल का संहार करानेवाला दुरात्मा दुर्योधन अवश्य शोक करता हुआ बुरी तरह से मारा जायगा। हाय! इस असाधारण पौरुषसम्पन्न अभिमन्यु को इस तरह रणभूमि में पड़े देखकर मुझे जय, २१ राज्य, देवशरीर या इन्द्रपद की प्राप्ति भी प्रीतिदायक नहीं।

बावनवाँ अध्याय

वेदव्यास का आगमन

सञ्जय कहते हैं—महाराज! युधिष्ठिर इस तरह विलाप कर ही रहे थे कि वहाँ पर महर्षि कृष्णद्वैपायन व्यास आ गये। राजा युधिष्ठिर ने महात्मा व्यास को देखते ही उठकर

विधिपूर्वक उनका सत्कार और पूजन किया। व्यासजी जब आसन पर बैठ गये तब, भतीजे की मृत्यु से शोकविह्वल, युधिष्ठिर बैठकर दीनभाव से वेदव्यास से कहने लगे—भगवन्! बालक अभिमन्यु को युद्ध में कई महाधनुर्द्धर महारथियों ने मिलकर अधर्मयुद्ध करके मार डाला। वह बालक और बालबुद्धि होने पर भी वीर था और शत्रुपक्ष के वीरों को मारनेवाला था। युद्ध करते समय उस असहाय बालक को शत्रुओं ने अनीति से मारा। मैंने अभिमन्यु से कहा था कि तुम इस व्यूह के भीतर हमारे घुसने की राह बना दो। मेरी आज्ञा के अनुसार व्यूह को तोड़कर अभिमन्यु भीतर घुस गया। हम लोग उसके पीछे शत्रुसेना के भीतर घुसने लगे, तो दुष्ट जयद्रथ ने राह रोक दी; हमें भीतर नहीं जाने दिया। क्षत्रियों का यह नियम है कि वे समान युद्ध [एक के साथ एक या अनेक के साथ अनेक] करते हैं; किन्तु शत्रुओं ने असमान युद्ध करके अभिमन्यु को मार डाला। यही मुझे बड़ा सन्ताप है। मेरी आँखों से शोक के आँसू बह रहे हैं। मैं बारम्बार अभिमन्यु के मरण को सोच रहा हूँ। मुझे किसी तरह शान्ति नहीं प्राप्त होती।

सञ्जय कहते हैं कि भगवान् महर्षि वेदव्यास ने शोकाकुल राजा युधिष्ठिर को इस तरह विलाप और सन्ताप करते देखकर कहा—हे सब शास्त्रों में निपुण धर्मपुत्र! तुम सरीखे महात्मा और ज्ञानी पुरुष विपत्ति में कभी घबराते नहीं हैं। यह महावीर कुमार रण में बहुत से शत्रुओं को मारकर, जिसको कोई बालक नहीं कर सकता उस अद्भुत कार्य को करके, स्वर्गलोक को गया है। हे युधिष्ठिर! विधाता का यह मृत्युरूप विधान अलंघ्य है। हे भारत! देवता, दानव, गन्धर्व आदि सबको एक दिन अवश्य मृत्यु के वश होना पड़ता है। १०

युधिष्ठिर ने कहा—हे महात्माजी! ये महाबली नरपतिगण मरकर सेना के बीच पृथ्वी-तल पर पड़े हुए हैं। इनमें कोई दस हज़ार हाथियों का बल रखनेवाले थे और कोई हवा के समान वेग और बल से सम्पन्न थे। ये सब परस्पर लड़कर मरे हैं। इन्हें युद्ध में मारनेवाला कोई भी योद्धा जगत् में नहीं देख पड़ता। ये सब पराक्रमी थे और तपोबल से भी सम्पन्न थे। इनके हृदय में सदैव शत्रुओं को जीतने का ख़याल बना रहता था। ये युद्ध से भागना या हारना जानते ही न थे; किन्तु वे ही ये इस समय, आयु समाप्त हो जाने से, मरे पड़े हैं। इनके मरण से आज मृत्यु का नाम सार्थक हुआ। ये शूर, क्रोधी और मानी राजपुत्र शत्रु के वशीभूत होकर काल के शिकार बन गये हैं और निश्चेष्ट निरभिमान होकर पृथ्वी पर पड़े हैं। हे ऋषि-वर! इन मारे गये राजाओं को देखकर मेरे हृदय में यह संशय उत्पन्न हुआ है कि यह मृत्यु कौन है; क्या है? इसकी उत्पत्ति कहाँ से हुई है और यह किसलिए प्रजा का संहार करती है? आप कृपा करके यह सब वृत्तान्त वर्णन करके मेरे संशय को दूर कीजिए।

सञ्जय कहते हैं कि धर्मराज ने महर्षि से जब यह प्रश्न किया तब उन्हें आश्वासन देने के लिए महर्षि कहने लगे—हे नरश्रेष्ठ! पूर्व समय में महर्षि नारद ने राजा अकम्पन से जो

२० वर्णन किया था वह प्राचीन इतिहास मैं तुमको सुनाता हूँ। राजा अकम्पन को भी इसी तरह अत्यन्त असह्य पुत्रशोक हुआ था। अब मैं मृत्यु की उत्पत्ति का वर्णन करता हूँ। इस उपाख्यान को सुनने से स्नेहबन्धन-जनित दुःख-शोक से तुम्हारा छुटकारा हो जायगा। हे पुत्र! यह उपाख्यान बहुत ही पवित्र, शत्रुनाशक, महामङ्गलमय, आयु बढ़ानेवाला, शोक मिटानेवाला, पुष्टिवर्द्धक, वेदपाठ के समान फल देनेवाला और श्रेष्ठ है। तुम इसे मन लगाकर सुनो। राजन्! आयुष्मान् पुत्र, राज्य और सम्पत्ति की इच्छा रखनेवाले ब्राह्मणों, क्षत्रियों और वैश्यों को नित्य प्रातःकाल यह उपाख्यान सुनना चाहिए।

पूर्व समय में, सत्ययुग में, अकम्पन नाम के एक प्रतापी नरेश थे। वे युद्धभूमि में शत्रुओं के वशीभूत हो गये। उनके पुत्र का नाम हरि था। वह नारायण के समान बलशाली, श्रीमान्, अस्त्र-शस्त्र चलाने में निपुण, बुद्धिमान् और इन्द्र के तुल्य था। वह भी युद्धक्षेत्र में जाकर शत्रुओं के बीच घिर गया। वह हाथियों, घोड़ों और मनुष्यों के ऊपर असंख्य बाणों की वर्षा करके, अत्यन्त दुष्कर कार्य करने के उपरान्त, शत्रुओं के हाथ से मारा गया। शत्रुओं के हाथों अपने प्रिय पुत्र की मृत्यु हुई देखकर क्रोध और शोक से व्याकुल राजा अकम्पन रणभूमि से अपनी राजधानी में आये। वहाँ पुत्र का क्रिया-कर्म करके राजा अकम्पन दिन-रात चिन्ता करते हुए शोक से अत्यन्त विह्वल रहने लगे। उन्हें किसी तरह शान्ति नहीं मिलती थी। इसी बीच में एक दिन देवर्षि नारद उनके पुत्रशोक का हाल जानकर, उन्हें

३१ धीरज देने के लिए, उनके पास आये। राजा ने देवर्षि नारद को आते देखकर यथोचित उपचारों से भक्ति के साथ उनकी पूजा की। फिर शत्रुओं के विजयी होने का और अपने पुत्र के मारे जाने का वृत्तान्त विस्तार के साथ कहकर अकम्पन ने कहा—भगवन्! शत्रुओं ने पराक्रम प्रकट करके मेरे महाबली पुत्र को मार डाला है। अब आप कृपा कर मुझसे कहिए कि यह मृत्यु कौन और क्या है? इसका पराक्रम और पौरुष कितना और कैसा है? मैं इसका हाल जानने के लिए अत्यन्त उत्सुक हूँ। हे धर्मराज! वरदानी देवर्षि नारद अकम्पन राजा का प्रश्न सुनकर पुत्रवियोग से उत्पन्न शोक को मिटानेवाले इस उपाख्यान का वर्णन करने लगे।

नारद ने कहा—हे नर-नाथ! मैंने इस विस्तृत उपाख्यान को जिस तरह सुना है, उसी तरह तुम्हारे आगे वर्णन करता हूँ, मन लगाकर सुनो। लोकपितामह ब्रह्माजी ने पहले प्रजा की सृष्टि की। उसके बाद इस जगत् को जैसे का तैसा बना हुआ देखकर, विनष्ट न होते देख, उन्हें बड़ी चिन्ता हुई। बहुत सोचने पर भी वे सृष्टिसंहार के उपाय के बारे में कुछ निश्चय नहीं कर सके। तब उनके मन में क्रोध उत्पन्न हुआ। उस कोप के प्रभाव से, अन्तरिक्ष से, एक दारुण अग्नि उत्पन्न हुआ जो संसार के सब देशों को जलाने के लिए

४० चारों ओर फैलने लगा। इस तरह कमलासन ब्रह्मा ने क्रोध के आवेश से सब जगत्

को भयविह्वल बनाकर ज्वालामाला से व्याप्त चराचर जगत् और आकाशमण्डल को भस्म कर देना चाहा। उस अग्नि में चराचर प्राणी जलने लगे।

तब जटाजूटधारी निशाचरपति महादेवजी ब्रह्माजी के शरणागत हुए। महादेवजी को प्रजा के हित की इच्छा से आया हुआ देखकर, तेज के प्रभाव से प्रज्वलित होकर, ब्रह्माजी कहने लगे—हे वत्स! तुमने मेरी इच्छा से जन्म लिया है। तुम वरदान के योग्य हो। इसलिए बतलाओ, तुम्हारा मनोरथ क्या है? मैं तुम्हारा प्रिय करने को तैयार हूँ। ४५

तिरपनवाँ अध्याय

ब्रह्मा और रुद्र का संवाद और मृत्यु देवी की उत्पत्ति

महादेव ने ब्रह्मा से कहा—हे विभो! इस प्रजा की सृष्टि करने के लिए आपने ही पहले यत्न किया और तरह-तरह के जीवों की उत्पत्ति तथा पालन आपके ही द्वारा हुआ है। हे प्रभो! वही प्रजा इस समय आपके क्रोध की आग से भस्म हुई जा रही है। भगवन्! यह देखकर मेरे मन में करुणा हो आई है। इसलिए प्रसन्न होकर अपने इस क्रोध को शान्त कीजिए।

ब्रह्मा ने कहा—हे महादेव! मैं जगत् भर का संहार नहीं करना चाहता। मेरी इच्छा नहीं कि यह कार्य इस तरह हो; किन्तु पृथ्वी के हित की इच्छा से ही मुझे मन्यु (क्रोध) हो आया है। इस पृथ्वी ने भारी भार से पीड़ित होकर प्राणियों का विनाश करने के लिए मुझसे अनुरोध किया था। किन्तु मैं सम्पूर्ण जगत् के संहार का कुछ उपाय नहीं सोच सका। इसी कारण मेरे अन्तःकरण में क्रोध का उदय हो आया।

महादेव ने कहा—हे विश्वनाथ! विश्व-संहार के लिए उत्पन्न हुए क्रोध को आप प्रसन्न होकर शान्त कीजिए; सब चराचर जगत् का संहार न कीजिए। आपकी कृपा से यह भूत, भविष्य और वर्तमान त्रिविध जगत् बना रहे। आपने क्रोध के वश होकर जो यह आग उत्पन्न की है वह नदी, पत्थर, वृक्ष, पल्लव, घास-फूस आदि सब स्थावर और जङ्गम जगत् को

भस्म किये डालती है। आप मुझ पर प्रसन्न होकर यही वरदान दीजिए कि आपका क्रोध शान्त हो। भगवन् ! आपने जो सृष्टि की थी वह भस्म हुई जा रही है, इसलिए आप अपने इस तेज को अपने में ही लीन कर लीजिए। प्रजा के हित की इच्छा करके इसका कोई और १२ उपाय सोचिए। आप ऐसा कीजिए जिसमें ये प्राणी बने रहें, सृष्टि की जड़ नष्ट न हो और प्रजा का अत्यन्त अभाव न हो जाय। हे देवताओं के ईश्वर ! आपने मुझे प्रजापालन के कार्य में नियुक्त किया है। [फिर आपको इस प्रजा पर दया नहीं आती।] आप मुझ पर प्रसन्न हैं, इसी से मैं आपसे यह वर माँगता हूँ कि आप इस सृष्टि को नष्ट न होने दें।

नारद ऋषि कहते हैं—राजन् ! इसके बाद सब लोकों के पितामह ब्रह्मा ने, प्रजा के हित के लिए कहे गये, शिव के वचन सुनकर उस क्रोधरूप तेज को फिर अपने में लीन कर लिया। इस तरह अग्नि का उपसंहार करके ब्रह्मा ने सृष्टि के लिए प्रवृत्ति-धर्म की और मोक्ष के लिए निवृत्ति-धर्म की कल्पना की। तब क्रोध से उत्पन्न अग्नि का उपसंहार करते समय ब्रह्मा के इन्द्रिय-छिद्रों से एक अद्‌भुत नारी उत्पन्न हुई। उसके अङ्गों का रङ्ग काला, लाल और पिङ्गल था। उसका मुख, जिह्वा और नेत्र लाल थे। उसके कानों में तपे हुए सोने के कुण्डल थे और अङ्गों में सुवर्ण के गहने थे। उस स्त्री ने प्रकट होकर दक्षिण दिशा में आश्रय लिया। वह ब्रह्मा और शङ्कर को देखकर जब मुसकाती हुई दक्षिण दिशा में खड़ी हुई तब विधाता ने "मृत्यु" नाम से उसको सम्बोधन करके २० कहा—तुम इस प्रजा का संहार करो। मेरी संहार-बुद्धि के द्वारा, मेरे क्रोध से, तुम्हारा जन्म हुआ है इसलिए तुम मेरी आज्ञा से जड़-चेतन सब प्रजा का नाश करो। ऐसा करने से तुम्हारा कल्याण होगा।

नारदजी कहते हैं—कमलयोनि ब्रह्मा के ये वचन सुनकर, दम भर सोचकर, वह कमलनयनी मृत्यु देवी खेद के मारे रोने लगी। उसके नेत्रों से आँसुओं की बूँदें गिरीं। पितामह ब्रह्मा ने सब प्राणियों के हित के लिए उन आँसुओं को अपने हाथों में ही रोक २३ लिया। अनुनय करके वे मृत्यु को सन्तुष्ट करने लगे।

ब्रह्मा के इन्द्रिय-छिद्रों से एक अद्भुत नारी उत्पन्न हुई—पृ० २२८६

चौवनवाँ अध्याय

अकम्पनोपाख्यान की समाप्ति

नारदजी कहते हैं कि राजन् ! उस नारी ने दुःख छोड़कर, हाथ जोड़कर, लता की तरह नम्र होकर ब्रह्मा से कहा—महात्माजी ! आपने मुझ पापीयसी नारी की सृष्टि क्यों की ? मैं जान-बूझकर मूढ़ की तरह ऐसा अहित और क्रूर कर्म कैसे करूँगी ? मैं अधर्म से डरती हूँ, इसलिए आप कृपा करके मुझे यह आज्ञा न दीजिए। जिनके परम प्रिय पुत्र, मित्र, भाई, पिता और पति आदि को मैं नष्ट करूँगी वे अवश्य ही मेरा अनिष्ट चाहेंगे। भगवन् ! बन्धु-वियोग से दुःखित प्राणियों की आँखों से जो आँसू गिरेंगे उन्हीं से डरकर मैं शरण में आई हूँ। मैं हाथ जोड़कर आपसे निवेदन करती हूँ कि आप मुझ पर प्रसन्न हों; मैं कदापि यमराज के भवन में नहीं जा सकूँगी। हे पितामह, आप कृपा करके मेरा यह मनोरथ पूरा कीजिए। मैं धेनुकाश्रम में जाकर अत्यन्त कठोर तप के द्वारा आपकी आराधना करना चाहती हूँ। आप कृपा करके मुझे इसकी आज्ञा दीजिए। मैं आपसे यही वर चाहती हूँ कि आप मुझे यह काम न सौंपें। विलाप करते हुए प्राणियों के प्रिय प्राणों को मैं नहीं हर सकूँगी। इस अधर्म से आप मेरी रक्षा कीजिए।

ब्रह्मा ने कहा—हे मृत्यु ! तुम्हारी उत्पत्ति ही प्रजा के नाश के लिए हुई है। इससे तुम, मेरी आज्ञा के अनुसार, जाकर सब प्रजा का संहार करो; इस बारे में अधिक सोच-विचार मत करो। सब लोगों का नाश अवश्य ही होगा; यह टल नहीं सकता। तुम मेरी आज्ञा का पालन करो। इसके लिए कोई तुम्हारी निन्दा नहीं करेगा। १०

नारदजी कहते हैं—ब्रह्मा के ये वचन सुनकर, अत्यन्त भयविह्वल हो, हाथ जोड़कर मृत्युदेवी ब्रह्मा की ओर ताकती हुई चुपचाप खड़ी रही। संसार के भले के लिए लोकसंहार करना वह किसी तरह स्वीकार नहीं कर सकी। पितामह ब्रह्मा क्षणभर चुप रहे, फिर शीघ्र ही हँसते हुए लोकरक्षा के लिए सुप्रसन्न हुए। इस तरह लोकपितामह ब्रह्मा ने जब क्रोध त्याग दिया तब सब प्राणी अपमृत्यु से बचकर पहले की ही तरह प्रसन्न हो गये। वह कन्या मृत्युदेवी प्रजासंहार करना अङ्गीकार न करके, ब्रह्मा से विदा होकर, वहाँ से चली और शीघ्र ही धेनुकाश्रम में पहुँचकर कठोर तपस्या करने लगी। सब इन्द्रियों को भोग्य विषयों से हटाकर वह घोर तप करने लगी। प्रजा के हित की इच्छा से वह इक्कीस पद्म वर्ष तक एक पैर से खड़ी रही। फिर इक्कीस पद्म वर्ष तक दूसरे पैर से खड़ी रही। फिर अयुत पद्म वर्ष तक मृगों के साथ विचरती रही। इसके बाद स्वच्छ जलवाली पवित्र नन्दा नदी में जाकर नियम-पूर्वक एक हज़ार आठ वर्ष तक जल के भीतर रहकर उसने समय बिताया। इस प्रकार

२१ नन्दा तीर्थ में निष्पाप होकर वह पहले पवित्र कौशिकी तीर्थ में पहुँची। वहाँ केवल वायुभक्षण और जल पी करके फिर नियम ग्रहण-पूर्वक उसने घोर तप किया। फिर पञ्चगङ्गा तीर्थ और वेतस तीर्थ में जाकर, विशेष तप करके, शरीर सुखाया। उसके बाद भागीरथी और प्रधान तीर्थ महा-मेरु में जाकर, प्राणायामपरायण होकर, शिला की तरह निश्चेष्ट भाव से वह तप करती रही। इसके उपरान्त हिमाचल के शिखर पर पहुँचकर, उँगली पर सारे शरीर का भार देकर, निखर्व वर्षों तक वह तप करती रही। फिर वह कन्या पुष्कर, गोकर्णतीर्थ, नैमिषतीर्थ, मलयतीर्थ आदि में यथेष्ट नियम ग्रहण करके अपने शरीर को सुखाती रही। इस प्रकार वह अनन्य भक्ति के साथ एकाग्रचित्त से ब्रह्मा की आराधना करती रही।

तब भगवान् ब्रह्मा वहाँ आये और शान्त तथा प्रसन्न मन से पूछने लगे—हे मृत्यु ! तुम किसलिए ऐसा कठोर तप कर रही हो ? मृत्यु ने कहा—भगवन् ! सब प्रजा स्थिर और एकाग्रचित्त से सुस्थ रहकर अपना समय बिता रही है। वह वाक्य द्वारा भी परस्पर किसी का अपकार नहीं करती। मैं किसी तरह उसका विनाश नहीं कर सकूँगी। मैं आपसे यही ३० वर माँगती हूँ। मैं अधर्म से डरकर ही यह घोर तप कर रही हूँ। अतएव आप मुझे अभय प्रदान कीजिए। मेरा कोई अपराध नहीं है। मैं इसी डर से अत्यन्त व्याकुल हो रही हूँ। प्रार्थना करती हूँ कि आप कृपा करके मुझे आश्रय दें। राजन् ! तब त्रिकालज्ञ ब्रह्मा ने कहा—हे कन्या ! इस चराचर प्रजा का संहार करने से तुमको रत्ती भर भी अधर्म या पाप नहीं होगा। मेरा वचन कभी मिथ्या नहीं होने का। अतएव तुम निडर होकर चारों प्रकार की प्रजा का संहार करो। तुम्हें सनातन धर्म पवित्र करेगा। लोकपाल यमराज, व्याधियाँ, देवगण और मैं, ये सब तुम्हारी सहायता करेंगे। मैं तुमको यह भी वर देता हूँ कि तुम यह कर्म करने से निष्पाप और रजोगुण-हीन होकर परम प्रसिद्धि प्राप्त करोगी।

तब उस कन्या ने प्रणामपूर्वक ब्रह्मा को प्रसन्न किया और हाथ जोड़कर कहा—ब्रह्मन् ! अगर मेरे बिना यह कार्य नहीं हो सकता हो तो, लाचार होकर, मैं आपकी इस आज्ञा को शिरोधार्य करती हूँ। अगर धर्म से यह कर्तव्य है तो फिर मुझे भय नहीं है; किन्तु आप मेरा एक निवेदन सुनिए। लोभ, क्रोध, असूया, ईर्ष्या, द्रोह, मोह, निर्लज्जता और परस्पर कही गई कठोर वाणी ये भिन्न-भिन्न इन्द्रियवृत्तियाँ लोगों के शरीर को क्षीण करती रहा करें।

ब्रह्मा ने कहा—हे मृत्यु ! तुम जो कहती हो वही होगा। अब तुम प्रजा के संहार में लग जाओ। इससे तुम न तो अधर्म में लिप्त होगी और न मेरे ही द्वारा तुम्हारा अनिष्ट होगा। तुम्हारे आँसुओं की जो बूँदें मेरे हाथों में गिरी हैं वे जीवों के शरीरों में व्याधि रूप से प्रकट होकर उनके प्राणों को नष्ट करने में तुम्हारी सहायता करेंगी। इसमें तुम्हें रत्ती भर भी अधर्म ४० नहीं होगा। अब तुम डरो मत। तुम प्राणियों का धर्म हो, धर्म की स्वामिनी हो। तुम धर्म-

परायण और धर्म का कारण होकर धैर्यधारणपूर्वक सब प्राणियों के जीवन-संहार में लग जाओ। काम और क्रोध से बची रहकर सब प्राणियों के जीवन को हरो। इससे तुम्हें अक्षय धर्म होगा। [जो लोग धर्मात्मा हैं वे मरकर भी अमर रहेंगे और] जो दुराचारी हैं उन्हें उनका अधर्म ही नष्ट करेगा। तुम मेरी आज्ञा का पालन करके अपने आत्मा को पवित्र करो। तुम अपने अन्तःकरण में आये हुए काम और क्रोध को त्याग करके, समदर्शी होकर, जीवों का संहार करो। पुण्य बुद्धि से इस कार्य को करोगी तो पवित्र रहोगी और असत्यमार्ग का ग्रहण करोगी तो अपने को पाप में मग्न करोगी। यह समझकर, मेरी आज्ञा के अनुसार, निर्भय होकर अपने कर्तव्य का पालन करो।

नारदजी कहते हैं—हे नर-नाथ! इसके बाद उस कन्या ने अपना नाम 'मृत्यु' होने से उद्विग्न होकर और 'कहा न मानने से ब्रह्माजी शाप न दे दें' इस डर से तत्काल ब्रह्मा की आज्ञा स्वीकार कर ली। राजन्! वही मृत्यु काम-क्रोध-हीन होकर, निर्लिप्त भाव से, अन्तकाल में सब प्राणियों के जीवन को नष्ट करती है। सभी प्राणियों की मृत्यु होती है। रोग कहलानेवाली व्याधियाँ प्राणियों के ही शरीर से उत्पन्न होती हैं और उनके द्वारा प्राणियों को अत्यन्त व्यथा होती है। अतएव अन्तकाल में प्राणियों का प्राण-वियोग होते देखकर तुम उन प्राणियों के लिए वृथा शोक न करो। प्राण-नाश होने पर सब इन्द्रियाँ प्राणियों के साथ परलोक में जाती हैं और अपने-अपने कार्य को सम्पन्न करके फिर लौट आती हैं। मनुष्यों की ही तरह देवगण भी परलोक में जाकर अपना-अपना कार्य करते हैं; अर्थात् इन्द्र आदि देवता भी मनुष्यों की तरह मनुष्यलोक में आते और अनेक कर्म करके स्वर्गलोक को लौट जाते हैं। घोररूप, भीम-नाद, सर्वचारी, उग्र, अनन्ततेज से सम्पन्न प्राणवायु सब प्राणियों के शरीर को ही प्राणों से अलग कर देता है। उसका गमन-आगमन नहीं है। राजन्! देवताओं की भी मर्त्यसंज्ञा है; उन्हें भी मृत्यु नहीं छोड़ती। इससे अब तुम अपने पुत्र की मृत्यु के लिए निष्फल शोक मत करो। वह सुरलोक में वीरों के मनोहर लोक पाकर, दुःखहीन होकर, पुण्य करनेवाले पुण्यात्माओं के साथ आनन्द कर रहा है। महाराज! प्रजा की यह मृत्यु दैव-निर्दिष्ट है। समय आने पर मृत्यु ही प्राणियों का संहार करती है। अन्य के द्वारा किसी की मृत्यु होने की कल्पना उन्हीं मूढ़ पुरुषों की है, जो मृत्यु के इस रहस्य को नहीं जानते। असल में अपनी मृत्यु का कारण प्राणी आप ही है; मृत्यु डण्डा हाथ में लेकर किसी को नहीं मारने आती। जो लोग समझदार हैं वे, यह जानकर कि ब्रह्माजी ने ही सब प्राणियों की मृत्यु उत्पन्न की है और कभी-न-कभी अवश्य ही मृत्यु होगी, मृत पुरुषों के लिए कभी शोक नहीं करते। राजन्! तुमको अब मालूम हो गया है कि प्राणियों की मृत्यु दैव-विहित है। अब तुम पुत्र की मृत्यु के लिए शोक करना छोड़ दो।

महाराज अकम्पन ने प्रिय सखा नारद के ऐसे यथार्थ वचन सुनकर कहा—भगवन्! इस इतिहास के सुनने से मेरा शोक जाता रहा। मैं प्रसन्न होकर अपने को कृतार्थ समझ रहा हूँ। मैं आपको प्रणाम करता हूँ। व्यासजी कहते हैं कि महाराज अकम्पन का पुत्रशोक दूर करके देवर्षि नारदजी वहाँ से नन्दन वन को चले गये। हे धर्मराज! इस इतिहास को खुद सुनने अथवा अन्य किसी को सुनाने से धन की प्राप्ति होती है। इसके पढ़ने, सुनने या सुनाने से पुण्य होता है, यश मिलता है, आयु बढ़ती है और अन्त समय स्वर्गलोक की प्राप्ति होती है। राजन्! तुमने इस परमार्थ-पूर्ण तत्त्वज्ञानसहायक इतिहास को सुन लिया। अब क्षत्रियधर्म, वीरों की परमगति और मृत्यु का रहस्य सोचकर धैर्य धारण करो। चन्द्रमा के अंश से उत्पन्न निष्पाप महारथी अभिमन्यु युद्ध-भूमि में असंख्य वीर क्षत्रियों के आगे सम्मुख युद्ध करके, शत्रु-सेना का संहार करते-करते, शत्रुओं के खड्ग, गदा, शक्ति और धनुष-बाण के प्रहार से मरकर फिर चन्द्रलोक को चला गया। अतएव हे पाण्डव! अपने भाइयों के साथ धैर्य धारण करके शोक-हीन होकर, सावधान और सुसज्जित होकर, फिर शत्रुओं से युद्ध करो। ५८

पचपनवाँ अध्याय

षोड़शराजकीय उपाख्यान का प्रारम्भ। सुवर्णष्ठीवी की कथा
और राजा मरुत्त के चरित्र का वर्णन

सञ्जय धृतराष्ट्र से कहते हैं कि महाराज! मृत्यु की उत्पत्ति और उसके अद्भुत कार्य का वर्णन सुनकर राजा युधिष्ठिर सन्तुष्ट हुए। व्यासदेव को प्रसन्न करके उनसे धर्मराज ने कहा—भगवन्! पूर्व समय में इन्द्र के समान पराक्रमी, पुण्यात्मा, माननीय, सत्यवादी और निष्पाप अनेक राजर्षि हो गये हैं। ऐसे कितने राजर्षियों को मृत्यु ने नष्ट किया है? आप फिर अपने यथार्थ और शोक दूर करनेवाले वचन सुनाकर मेरा सन्ताप दूर कीजिए। प्राचीन राजर्षियों के कर्मों का वर्णन करके मुझे ढाढ़स बँधाइए। पुण्यात्मा राजर्षियों ने ब्राह्मणों को कौन-कौन और कितनी दक्षिणाएँ दी हैं? यह सब मुझसे कहिए।

व्यासजी ने कहा—हे धर्मराज! राजा शैव्य के एक पुत्र था, जिसका नाम सृञ्जय था। महर्षि पर्वत और नारद सृञ्जय के सखा थे। एक दिन दोनों ऋषि सृञ्जय से मिलने के लिए उनके भवन में गये। सृञ्जय ने आदर के साथ दोनों ऋषियों की विधिपूर्वक पूजा की। दोनों ऋषि अत्यन्त सन्तुष्ट होकर बड़े सुख से कुछ दिन तक राजा के भवन में रहे। एक दिन राजा सृञ्जय उनके साथ सुख से बैठे हुए थे, इसी समय राजा की एक परम सुन्दरी अविवाहिता कन्या ने वहाँ आकर राजा को प्रणाम किया। राजा ने भी अभिनन्दनपूर्वक उसे आशीर्वाद दिया। महर्षि पर्वत ने उस सुन्दरी को देखकर हँसकर कहा—राजन्! यह श्रेष्ठ लक्षणों से युक्त चञ्चल-

मैं तुमको शाप देता हूँ कि तुम इच्छानुसार स्वर्ग को न जा सकोगे—पृ० २२६१

नयनी कन्या किसकी है ? यह सूर्य की प्रभा है, या अग्नि की शिखा है, अथवा चन्द्रमा की कान्ति है ? इनमें से कोई नहीं है तो अवश्य ही श्री, ह्री, कीर्ति, धृति, पुष्टि या सिद्धि में से कोई न कोई होगी। महाराज सृञ्जय ने देवर्षि पर्वत के वचन सुनकर कहा—हे मित्र! यह कन्या मेरी ही है। यह श्रेष्ठ कन्या अब योग्य वर चाहती है। इसी समय देवर्षि नारद राजा से कह उठे—राजन्! यदि तुम कन्यादान करके कल्याण प्राप्त करना चाहते हो तो मुझे यह कन्या, भार्या बनाने के लिए, दे दो। राजा सृञ्जय ने प्रसन्न होकर तुरन्त उन्हें अपनी कन्या देना स्वीकार कर लिया। १०

तब देवर्षि पर्वत ने क्रोधान्ध होकर देवर्षि नारद से कहा—देखो, पहले मैं ही मन ही मन इस कन्या को भार्यारूप से प्राप्त कर चुका हूँ। पीछे से तुमने इसे माँग लिया। इससे मैं तुमको शाप देता हूँ कि तुम इच्छानुसार स्वर्ग को न जा सकोगे। यह सुनकर नारद ने भी कहा—यह मेरी पत्नी है, ऐसा मन से सोचना, मुँह से कहना और बुद्धि से निश्चय करना, सत्य (प्रतिज्ञा), जल छोड़कर कन्यादान होना (अग्नि का साक्षी होना) और पाणिग्रहण के मन्त्रों का पढ़ा जाना, ये ही विवाह के लक्षण प्रसिद्ध हैं। किन्तु इनका होना ही किसी कन्या के किसी पुरुष की स्त्री होने के लिए यथेष्ट नहीं है। असल में सप्तपदी-गमन (सात भाँवरें फिरना) ही विवाह की पूर्णता है। तुमने इस कन्या का वरण मन से ही किया था, असल में तुम्हारे साथ इसका ब्याह नहीं हुआ था। फिर भी तुमने अन्यायपूर्वक मुझे शाप दिया, इससे मैं भी तुमको शाप देता हूँ कि तुम मेरे बिना स्वर्गलोक न जा सकोगे। हे धर्म-राज! इस तरह दोनों महर्षि परस्पर शाप देकर उन्हीं राजा के भवन में रहने लगे।

इधर पुत्र की इच्छा से नरपति सृञ्जय विशुद्ध-हृदय होकर बड़े यत्न से, खाने-पीने की सामग्री और कपड़े आदि देकर, ब्राह्मणों की आराधना करने लगे। एक दिन वेद-वेदाङ्ग के पारदर्शी स्वाध्यायनिरत ब्राह्मणों ने राजा सृञ्जय पर प्रसन्न होकर, उन्हें पुत्र देने की इच्छा से, देवर्षि नारद के पास जाकर कहा—ब्रह्मन्! आप राजा सृञ्जय को उनकी इच्छा के अनुरूप एक पुत्र-रत्न दीजिए। ब्राह्मणों की प्रार्थना स्वीकार करके नारद ने महाराज सृञ्जय से कहा—राजन्! ब्राह्मण लोग सन्तुष्ट होकर तुम्हारे एक पुत्र उत्पन्न होने की इच्छा करते हैं। अब तुम बतलाओ, कैसा पुत्र चाहते हो ? तुम्हारा कल्याण होगा। २०

राजा सृञ्जय ने हाथ जोड़कर कहा—भगवन्! आप ऐसी कृपा करें कि मैं आपके वर से सब गुणों से अलंकृत, कीर्तिशाली, यशस्वी, महापराक्रमी एक पुत्र प्राप्त करूँ। विशेषता यह हो कि उस बालक का मल-मूत्र, थूक-कफ, पसीना आदि सब सुवर्णमय हो। नारद ने सृञ्जय राजा की प्रार्थना स्वीकार कर ली और उन्हें उनकी इच्छा के अनुसार वरदान दिया। राजा सृञ्जय के यहाँ थोड़े ही दिनों में, उनकी इच्छा के अनुरूप, पुत्र उत्पन्न हुआ। वह पुत्र पृथ्वी-

मण्डल में सुवर्णष्ठीवी के नाम से प्रसिद्ध हुआ। महर्षि नारद के वरदान से वह पुत्र क्रमशः अपरिमित धन का अधिकारी हो गया। उस पुत्र के द्वारा राजा सृञ्जय ने अपने यहाँ की सब वस्तुओं को सुवर्णमय बना लिया। समयानुसार उन राजा के यहाँ घर, दीवार, क़िला, ब्राह्मणशाला, अतिथिशाला, शय्या, आसन, स्थान, थाली आदि सब पात्र सुवर्णमय हो गये और दिन-दिन लक्ष्मी बढ़ने लगी। कुछ दिन के उपरान्त दस्युओं को राजकुमार के द्वारा सुवर्ण उत्पन्न होने का हाल मालूम हुआ। उन्होंने राजकुमार को देखकर, दल बाँधकर, राजा का अनिष्ट करना विचारा। उन दस्युओं में से किसी-किसी ने कहा—हम ख़ुद जाकर राजपुत्र को पकड़ लावेंगे। वह राजपुत्र ही सुवर्ण की खान है। अतएव उसे पकड़ लेने का यत्न करना ही हमारा कर्तव्य है।

इसके उपरान्त लोभ के वशवर्ती दस्युगण एक दिन राजभवन में घुस गये और राजकुमार सुवर्णष्ठीवी को पकड़कर वन की ओर भाग गये। राजकुमार को वे डाकू पकड़ तो ले गये लेकिन ३० आगे क्या करना चाहिए, इसका निश्चय बहुत सोचकर भी वे न कर सके। अन्त को किंकर्तव्यविमूढ़ होकर उन्होंने राजकुमार के शरीर के टुकड़े-टुकड़े कर डाले; परन्तु उससे उन्हें रत्ती भर भी सोना नहीं मिला। राजकुमार की मृत्यु होते ही वरदान से मिलनेवाले धन की भी सम्भावना न रही। तब वे मूर्ख डाकू मोहवश, एक दूसरे को उस धन का अपहरण करनेवाला समझकर, एक दूसरे को मारने लगे। इस प्रकार उन डाकुओं ने उस अद्भुत राजकुमार को मारकर आप ही अपनी हत्या कर ली और अन्त को सब नरकगामी हुए।

इधर राजा सृञ्जय, वरदान से प्राप्त, अपने पुत्र को नष्ट देखकर अत्यन्त दुःखित हुए और करुण स्वर से विलाप करने लगे। पुत्रशोक से दुःखित राजा के पास जाकर महर्षि नारद कहने लगे—हे सृञ्जय! हम लोग ब्रह्मवादी महर्षि हैं। यद्यपि हम सदा तुम्हारे भवन में रहते हैं; किन्तु तुम भी एक दिन मर जाओगे और विषयभोग और मनोरथों से तुम्हारी तृप्ति न होगी। हे सृञ्जय! हमने सुना है कि अविक्षित् के पुत्र महाप्रतापी राजा मरुत्त को भी मृत्यु के मुख में जाना पड़ा है! बृहस्पति की स्पर्धा करके महर्षि संवर्त ने उनको यज्ञ कराया था। भगवान् शङ्कर ने राजा मरुत्त को विविध यज्ञ करने के लिए हिमवान् पर्वत का एक सुवर्णमय भाग दे दिया था। यज्ञ के अन्त में बृहस्पति और इन्द्र आदि सब देवता उन ४० राजा के साथ बैठते थे। उनके यज्ञमण्डप का सब सामान सुवर्णमय था। राजा मरुत्त के यज्ञ के समय भोजन की इच्छा से आये हुए ब्राह्मण और द्विज (क्षत्रिय और वैश्य भी) इच्छानुरूप बढ़िया दूध, दही, घी, मिठाई, भक्ष्य, भोज्य पदार्थ खा-पीकर तृप्त होते थे। वेदपाठी प्रसन्नचित्त ब्राह्मणगण मनमाने कपड़े और गहने पाते थे। राजर्षि मरुत्त के यज्ञ में मरुद्गण अथवा सब देवगण भोजन के समय सब चीज़ें परोसते थे। विश्वेदेवा उनके सभासद थे। पराक्रमी राजा मरुत्त के यज्ञों में विधिपूर्वक दी हुई घी की आहुतियों से प्रसन्न देवगण उनके राज्य भर

में खूब जल बरसाते थे, जिससे बहुत अन्न उपजता था। वे राजर्षिश्रेष्ठ ब्रह्मचर्य-पालन, वेदपाठ और श्राद्ध आदि करके सदैव ऋषियों, देवताओं और पितरों को सन्तुष्ट रखते थे। राजा मरुत्त ब्राह्मणों को उनकी इच्छा के अनुसार अमित शय्या, आसन, सवारियाँ और दुस्त्यज सुवर्णराशि देकर सन्तुष्ट करते थे। देवराज इन्द्र सदैव उनके शुभचिन्तक थे। राजा मरुत्त अपनी प्रजा को पुत्र के समान सुख से रखकर श्रद्धापूर्वक यज्ञ करने से प्राप्त अक्षय लोकों में पहुँचे और वहाँ अपने पुण्यों का फल भोगने लगे। उन्होंने हज़ार वर्ष तक युवा रहकर अपनी प्रजा, पुत्र, स्त्री, बन्धु-बान्धव आदि के साथ राज्य किया। हे सृञ्जय! धर्म, ज्ञान, वैराग्य और ऐश्वर्य अथवा धर्म, अर्थ, काम और बल में तुमसे अधिक और तुम्हारे पुत्र से बढ़कर पुण्यात्मा राजा मरुत्त भी मृत्यु से नहीं बच सके। अतएव तुम अपने उस पुत्र का शोक मत करो, जिसने न तो यज्ञ ही किये और न ब्राह्मणों को दक्षिणा ही दी। ५०

छप्पनवाँ अध्याय

सुहोत्र का उपाख्यान

नारद ने कहा—हे सृञ्जय! बहुत ही दुर्द्धर्ष और अद्वितीय वीर राजा सुहोत्र को भी मरना पड़ा है। वे ऐसे प्रतापी थे कि देवता लोग भी उनकी तरफ़ आँख उठाकर नहीं देख सकते थे। उन्होंने धर्मानुसार राज्याधिकार प्राप्त करके यह नियम कर रक्खा था कि वे ऋत्विक् ब्राह्मण और पुरोहित आदि का सम्मान करते, उनसे अपने हित के उपदेश पूछते और उन्हीं के मत पर चलते थे। सुहोत्र को यह मालूम हुआ कि प्रजापालन, दान, यज्ञ और शत्रुओं को जीतना ही क्षत्रिय का धर्म है। इस धर्म के पालन में धन की आवश्यकता देखकर राजा ने धर्मानुसार धन प्राप्त करने की इच्छा की। विधिपूर्वक देवगण की आराधना करके और बाहुबल से शत्रुओं को हराकर वे म्लेच्छों और डाकुओं से ख़ाली पृथ्वीमण्डल का राज्य करते थे। उन्होंने अपने गुणों से सब प्राणियों को सन्तुष्ट कर रक्खा था। उनके राज्य में हर साल मेघों से सुवर्ण की वर्षा होती थी। उनके राज्य में जो नदियाँ थीं उनमें ग्राह आदि जलजीव भी सुवर्णमय थे। उन नदियों का सुवर्ण सर्वसाधारण की सम्पत्ति था। मेघों से सुवर्णमय ग्राह और केकड़े, तरह-तरह की मछलियाँ आदि अद्भुत बहुमूल्य पदार्थ बरसते थे। उनके राज्य में कोसों लम्बी-चौड़ी बावलियाँ थीं। राजन्! अपने राज्य में हज़ारों सुवर्णमय ग्राह, मगर, मच्छ, कच्छ आदि देखकर स्वयं राजा सुहोत्र को बड़ा विस्मय हुआ। उन्होंने कुरुजाङ्गल क्षेत्र में जाकर यज्ञ करना आरम्भ कर दिया और उन यज्ञों में ब्राह्मणों को अपने राज्य का वह अपरिमित सुवर्ण

दे डाला। महाराज सुहोत्र ने इसी तरह हज़ार अश्वमेध यज्ञ, एक सौ राजसूय यज्ञ, क्षत्रियों के करने के अन्य अनेक पुण्यदायक यज्ञ तथा निरन्तर अन्यान्य काम्य (किसी कामना से किये जानेवाले) और नैमित्तिक (किसी कारण से किये जानेवाले) कर्म किये। हे सृञ्जय ! वे राजा सुहोत्र भी नहीं बचे। सत्य, तप, दान और दया में तुमसे श्रेष्ठ और तुम्हारे पुत्र से अधिक पुण्यात्मा राजा सुहोत्र को भी एक दिन मरना ही पड़ा। अतएव तुम अपने उस पुत्र का शोक मत करो, जिसने न यज्ञ किये, न दक्षिणा दी और न वेद ही पढ़ा। १२

सत्तावनवाँ अध्याय

महाराज अङ्ग का उपाख्यान

नारद ने कहा—हे सृञ्जय ! सुना है कि महातेजस्वी पुरुवंशी राजा अङ्ग को भी मृत्यु ने नहीं छोड़ा। उन राजर्षि ने दस लाख एक रङ्ग सफ़ेद घोड़े ब्राह्मणों को दान किये थे। उनके अश्वमेध यज्ञ में अनेक देशों से वेदपाठी, शास्त्रज्ञ, विधि के जाननेवाले और ब्रह्मज्ञ असंख्य ब्राह्मण पण्डितों का समागम हुआ था। वे सभी वेदज्ञ, विद्वान्, ब्रह्मचारी, उदार, प्रियदर्शन ब्राह्मण राजा अङ्ग के यहाँ उत्तम भोजन, कपड़े, गृह, शय्या, आसन, सवारी और दक्षिणा पाकर बहुत ही प्रसन्न हुए। नट, नाचनेवाले, गन्धर्व, स्वर्णचूड़ाधारी सेवक, आरती करनेवाले लोग नित्य सेवा और क्रीड़ा आदि के द्वारा उन ब्राह्मणों को सन्तुष्ट किया करते थे। राजा ने हर एक यज्ञ में यथासमय ब्राह्मणों को अपार दक्षिणा दी। राजा ने दक्षिणा में सुवर्णमण्डित मतवाले दस हज़ार हाथी दिये, ध्वजा-पताका सहित सुवर्णमय दस हज़ार रथ दिये और सुवर्णमय अलङ्कारों से भूषित हज़ारों कन्याएँ दीं। उन्होंने रथ, हाथी, घोड़े, घर, खेत, सुवर्णमालाओं से भूषित लाखों गाय-बैल और हज़ारों दास-दासियाँ दक्षिणा में दीं। पुरातत्त्व के जाननेवाले विद्वानों का कथन है कि राजा ने सोने से जिनके सींग मढ़े थे, चाँदी से खुर मढ़े थे, काँसे की दोहनी और बछड़े जिनके साथ थे, ऐसी बढ़िया दुधार हज़ारों गायें और दासियाँ, दास, गदहा, ऊँट, बकरी, भेड़ आदि असंख्य पशु, बहुविध रत्न और अन्नों के पर्वत—यज्ञों की दक्षिणा में—सुपात्र ब्राह्मणों को दिये थे। उन याज्ञिक राजा अङ्ग ने अपने धर्म के अनुसार सब इच्छाओं को पूर्ण करनेवाले और निर्दोष यज्ञ किये थे। तुमसे अधिक धर्मात्मा, दानी, दयालु और सत्यनिष्ठ और तुम्हारे पुत्र की अपेक्षा पुण्यात्मा राजा अङ्ग को भी एक दिन मरना ही पड़ा। अतएव तुम अपने उस पुत्र का शोक मत करो, जिसने न यज्ञ किये, न दक्षिणा दी और न वेद ही पढ़ा। १२

अट्ठावनवाँ [illegible]

महाराज शिवि का उपाख्यान

नारद ने कहा—हे सृञ्जय ! हमने सुना है कि उशीनर के पुत्र महाप्रतापी राजा शिवि को भी एक दिन मरना पड़ा। सब शत्रुओं को जीतकर उन्होंने पर्वत-द्वीप-समुद्र-वन-सहित इस पृथ्वीमण्डल पर अपना अधिकार कर लिया था। वे अपने रथ के शब्द से पृथ्वीमण्डल को कँपाते हुए दिग्विजय कर चुके थे। राजा शिवि ने दिग्विजय में बहुत सा धन प्राप्त करने के बाद अनेक प्रकार के यज्ञ किये, जिनमें ब्राह्मणों को बहुत-बहुत दक्षिणा दी गई। उन्होंने युद्ध में अन्य मनुष्यों की हिंसा किये बिना ही बहुत सा धन प्राप्त किया था। सब क्षत्रियश्रेष्ठ मूर्धाभिषिक्त राजा लोग शिवि को युद्ध में अपने समान और माननीय समझते थे। महात्मा शिवि ने अपने बाहुबल से पृथ्वीमण्डल के राजाओं को जीत लिया और फिर निर्विघ्न रूप से बहु-फलदायक अश्वमेध यज्ञ किया। उन्होंने उस यज्ञ में हाथी, घोड़े, मृग, गाय, बकरे, भेड़ आदि पशु और सहस्र कोटि निष्क सुवर्ण तथा जीविका के लिए सम्पूर्ण भूमि भी ब्राह्मणों को दे दी थी। वर्षा में जितनी बूँदें पृथ्वी पर गिरती हैं, आकाशमण्डल में जितने तारे हैं, गङ्गा में जितने बालू के कण हैं, सुमेरु पर्वत पर जितने शिलाखण्ड हैं और समुद्र में जितने रत्न और जीव-जन्तु हैं उतनी ही अलंकृत गायें उन्होंने यज्ञ में दान की थीं। भगवान् ब्रह्मा ने भूत, भविष्य और वर्त्तमान में ऐसा प्रतापी कोई राजा अपनी सृष्टि में नहीं देख पाया, जो महाराज शिवि के कार्य-भार को सँभाल सके। नरपति शिवि ने अनेक प्रकार के यज्ञ किये, जिनमें सब प्रार्थियों की इच्छाएँ पूरी की गईं। उन यज्ञों में खम्भे (यूप), आसन, घर, दीवारें, फाटक आदि सब सुवर्ण के थे। खाने-पीने की सब सामग्री पवित्र और स्वादिष्ट बनी थी। हज़ारों-लाखों की संख्या में प्रियवादी विद्वान् ब्राह्मण उपस्थित हुए थे। यज्ञस्थल में दूध-दही के तालाब भरे हुए थे, अन्न के पर्वत के समान ढेर लगे थे। तरह-तरह की खाने-पीने की चीज़ें भरी पड़ी थीं। चारों ओर यही सुन पड़ता था कि "नहाओ, खाओ, पियो"। उन दानी राजा के धर्मकार्यों से सन्तुष्ट होकर रुद्रदेव ने यह कहकर उनको वरदान दिया था कि राजन् ! तुम्हारी सम्पत्ति, श्रद्धा, कीर्त्ति, धर्म-कर्म, प्राणियों का तुम पर स्नेह का भाव और स्वर्ग अक्षय हो। १०

इस प्रकार इच्छा के अनुरूप वरदान पाकर नरपति शिवि भी, समय आने पर, स्वर्गलोक को गये। हे सृञ्जय ! सत्य, तप, दया और दान में तुमसे अधिक और तुम्हारे पुत्र से बढ़कर पुण्यात्मा राजा शिवि को भी मृत्यु ने नहीं छोड़ा। अतएव तुम उस पुत्र के लिए वृथा शोक मत करो, जिसने न यज्ञ किये, न दक्षिणा दी और न वेदपाठ ही किया। १५

उनसठवाँ अध्याय

रामचन्द्रजी का उपाख्यान

नारद ने कहा—महाराज! सुना है, राजा दशरथ के पुत्र श्रीरामचन्द्र को भी एक दिन मृत्यु के वश होना पड़ा। सब प्रजा महात्मा रामचन्द्र को अपने सगे बेटे से भी बढ़कर प्यार करती थी। सब गुणों से अलंकृत महातेजस्वी रामचन्द्र ने पिता की आज्ञा के अनुसार स्त्री के साथ चौदह वर्ष तक वनवास किया। वहाँ जनस्थान में रहते समय वहाँ के निवासी तपस्वियों की रक्षा के लिए उन्होंने चौदह हज़ार राक्षसों को मारा। वहीं रहने के समय लक्ष्मण और राम दोनों भाइयों को माया से मोहित करके राक्षसराज रावण, राम की प्यारी पत्नी, सीता को हर ले गया। महाबलशाली श्रीरामचन्द्र ने रावण के उस अपराध से अत्यन्त कुपित होकर उस पर चढ़ाई कर दी और अन्त को उस शत्रुओं से न हारनेवाले, देवता-दैत्यों के लिए अवध्य, देव-ब्राह्मण-वैरी दुरात्मा रावण को और उसके वंश भर को युद्धभूमि में मार डाला।

प्रजा के हितैषी, देवर्षिगण-सेवित, देवता आदि के द्वारा सम्मानित रामचन्द्र की पवित्र उज्ज्वल कीर्ति अब तक पृथ्वीमण्डल भर में व्याप्त हो रही है। सब प्राणियों के हितैषी महात्मा रामचन्द्र ने बहुविध राज्य पाकर धर्म के अनुसार प्रजा का पालन किया। उन्होंने महायज्ञ अश्वमेध किया। घृतधारा आदि से इन्द्र तृप्त कर दिये गये थे। रामचन्द्र ने और भी कई १० प्रकार के यज्ञ किये। यज्ञकाल में भूख-प्यास को जीतकर वे सब प्रकार की व्याधियों से मुक्त अर्थात् नीरोग थे। असाधारण गुणवान् और अपने तेज से प्रकाशमान रामचन्द्र उस समय सब प्राणियों से बढ़कर शोभायमान हुए। महात्मा राम का राज्य ऐसा था कि पृथ्वी पर ऋषि, देवता और मनुष्य एकत्र रहा करते थे। प्राणियों के शरीर में तेज, प्राण, अपान, उदान और समान वायु की कमी न थी। सब तेजस्वी पदार्थ प्रकाशमान थे, कोई निस्तेज नहीं दिखाई पड़ता था। कभी कोई अनर्थ या अनिष्ट नहीं होता था। सब प्रजा पूरी आयु का उपभोग करती थी। कोई जवानी में नहीं मरता था। वेदोक्त विधि के अनुसार दिये गये विविध हव्य, कव्य, निष्पूर्त और आहुत सामग्री को देवगण प्रसन्नता के साथ ग्रहण करते थे। रामचन्द्र के राज्य में डाँस, मच्छड़ और ख़ूनी जानवर आदि का उत्पात नहीं था। न तो कोई पानी में डूबता था और न कोई आग में जलकर मरता था। राज्य भर में कोई धर्महीन, लोभी या मूर्ख देखने को नहीं था। सब वर्णों की प्रजा सदा सज्जनयोग्य अपने-अपने इष्ट कार्य में लगी रहती और अपने-अपने कर्तव्य का पालन करती थी।

जिस समय जनस्थान में राक्षसों ने स्वाहा-स्वधा और पूजा का लोप करना शुरू कर दिया था उस समय महात्मा रामचन्द्र ने ही उन्हें मारकर पितरों और देवताओं को स्वाहा-

स्वधा और पूजा फिर दिलाई थी। रामचन्द्र के राज्यकाल में मनुष्यों के सहस्र (अर्थात् बहुत) पुत्र होते थे और सब हज़ार वर्ष तक जीवित रहते थे। बड़े को छोटे का श्राद्ध नहीं करना पड़ता था। श्यामवर्ण, लाल नयनोंवाले, मस्त हाथी के समान पराक्रमी, सिंह-स्कन्ध, आजानु- २० बाहु, बली, सबके हितैषी राम ने युवा रहकर ग्यारह हज़ार वर्ष तक राज्य किया। उनके राज्यकाल में सब प्रजा राम का ही नाम जपा करती थी और सम्पूर्ण जगत् अत्यन्त सुन्दर हो रहा था। महात्मा रामचन्द्र ने अन्त को अपने दो पुत्रों और छः भतीजों को राज्य बाँट दिया। उसके बाद अवध भर के स्वेदज, अण्डज, उद्भिद् और जरायुज जाति के चतुर्विध प्राणियों को साथ लेकर वे स्वर्ग पधार गये। हे सृञ्जय! तप, सत्य, दया और दान में तुमसे श्रेष्ठ और तुम्हारे पुत्र से कहीं अधिक पुण्यात्मा महात्मा रामचन्द्र को भी मृत्यु की मर्यादा माननी पड़ी है। अतएव अब तुम उस पुत्र के लिए वृथा शोक मत करो, जिसने न यज्ञ किया, न दक्षिणा दी और न वेदाध्ययन ही किया। २५

साठवाँ अध्याय

राजा भगीरथ का उपाख्यान

नारद ने कहा—महाराज भगीरथ बड़े प्रतापी थे; पर उन्हें भी मृत्यु के मुख में जाना पड़ा। भगीरथ ने इतने यज्ञ किये थे कि उनके यज्ञों के सुवर्ण के खम्भे तमाम गङ्गा के तट पर दूर-दूर तक थे। उन्होंने वीर राजाओं और राजपुत्रों को परास्त करके सुवर्ण के गहनों से अलङ्कृत दस लाख सुन्दरी कन्याएँ ब्राह्मणों को दान की थीं। वे कन्याएँ एक-एक रथ पर बैठी थीं और हर एक रथ में चार-चार उत्तम अलङ्कृत घोड़े जुते हुए थे। प्रत्येक रथ के पीछे सुवर्णमाला-भूषित सौ हाथी थे। हर हाथी के साथ हज़ार घोड़े और हर घोड़े के साथ सुवर्णालङ्कृत सौ गउएँ थीं। गउओं के साथ बहुत सी बहुमूल्य बकरियाँ अथवा भेड़ें थीं। राजा भगीरथ के भारी दक्षिणा देने के समय इतनी भीड़ हुई कि उस भीड़ के आक्रमण से व्यथित और व्याकुल होकर भगवती गङ्गा उन राजा की गोद में बैठ गईं। तभी से वे, भगीरथ की कन्या के अर्थ में, भागीरथी नाम से प्रसिद्ध हुई हैं। पुत्र के समान ही गङ्गा ने भगीरथ के पुरखों को नरक से उबारा है। भगवती भागीरथी जिस जगह पर राजा भगीरथ की जाँघ पर बैठ गई थीं, वह स्थान उर्वशीतीर्थ के नाम से अब तक प्रसिद्ध है। हे सृञ्जय! देवता, मनुष्य और पितृगण के आगे सूर्यसदृश तेजस्वी मधुरभाषी गन्धर्वगण इस गाथा को गाते हैं।

राजन्! इस तरह भगवती गङ्गा ने इक्ष्वाकुकुल-चूड़ामणि, बहुत बड़ी दक्षिणावाले यज्ञों के करनेवाले, महात्मा भगीरथ को अपना पिता बनाया है। भगीरथ की यज्ञशाला को इन्द्र

और वरुण आदि लोकपाल सुशोभित करते थे और सब प्रकार के यज्ञ के विघ्नों को मिटाते थे। ब्राह्मण लोग जहाँ पर जब जिस वस्तु को माँगते थे वहीं पर उसी समय वह वस्तु उन्हें भगीरथ
१० राजा देते थे। कोई ऐसी वस्तु नहीं थी, जिसे राजा ब्राह्मणों को अदेय समझते हों। वे महात्मा अन्त को ब्राह्मणों के प्रसाद से ब्रह्मलोक को गये। मरीचिप महर्षिगण, मोक्ष और स्वर्ग की प्राप्ति के लिए, सूर्य के समान ब्रह्मविद्या और कर्मकाण्ड में निपुण महात्मा भगीरथ के पास आते और उनकी उपासना करते थे। हे सृञ्जय! सत्य, दया, दान और तप में तुमसे श्रेष्ठ और तुम्हारे पुत्र से बढ़कर पुण्यात्मा भगीरथ भी मृत्यु से नहीं बचे। इस कारण तुम उस पुत्र के
१४ लिए वृथा शोक मत करो जिसने न यज्ञ किया, न दक्षिणा दी और न वेदपाठ ही किया।

इकसठवाँ अध्याय

राजा दिलीप का उपाख्यान

नारद ने कहा—हे सृञ्जय! हमने सुना है कि परम प्रतापी और बड़े धर्मात्मा राजा दिलीप को भी मृत्यु के मुख में जाना ही पड़ा। दिलीप ने सैकड़ों बड़े-बड़े यज्ञ किये थे। उनके यज्ञों में तत्त्वज्ञानी, शास्त्र का अर्थ जाननेवाले, याज्ञिक, पुत्र-पौत्र-सम्पन्न हज़ारों-लाखों वेदपाठी ब्राह्मण आये और सम्मानित हुए थे। महाराज दिलीप ने यज्ञ के समय ब्राह्मणों को दक्षिणा में धन-रत्न-पूर्ण सम्पूर्ण पृथ्वीमण्डल दान कर दिया था। उनके यज्ञ में स्रुक् आदि सब सामग्री सुवर्ण की थी और यज्ञमण्डप का मार्ग सुवर्णमय बनाया गया था। धर्म के समान उन राजा की सभा में इन्द्र आदि सब देवता उपस्थित रहते थे। उनके यज्ञ में बड़े-बड़े हज़ारों हाथी चलते थे और परम प्रकाशमान सम्पूर्ण सभामण्डप सुवर्णमय बना हुआ था। रस आदि पीने के पदार्थों की नहरें भरी हुई थीं और भोज्य पदार्थों के पर्वत से ढेर लगे हुए थे। उनके यज्ञ में सहस्र-व्याम-विस्तृत सुवर्णमय यूप थे। उन यूपों में सुवर्णमय 'चषाल' 'प्रचषाल' बने हुए थे। तेरह हज़ार अप्सराओं ने नृत्य किया था और प्रसन्न होकर गन्धर्वराज विश्वावसु ने ख़ुद वीणा बजाई थी। यज्ञ में आये हुए लोग समझते थे कि विश्वावसु मुझे ही वीणा बजाकर सुना रहा है। उस यज्ञ में आये हुए लोग गुड़-भात खाकर तृप्त और मत्त होकर राहों में लेटे हुए थे; चल नहीं सकते थे। महात्मा दिलीप ने रथ पर चढ़कर जल के ऊपर युद्ध किया था; उनके रथ के पहिये
१० पानी में नहीं डूबे थे। यह एक अद्भुत कार्य था, जिसे अन्य राजा लोग नहीं कर सकते थे। दिलीप के सिवा यह अद्भुत क्षमता और किसी में नहीं थी। दृढ़धनुर्द्धर, सत्यवादी, बहुत दक्षिणा देकर यज्ञ करनेवाले राजा दिलीप के दर्शन भर जिन मनुष्यों ने किये थे उन्हें भी स्वर्गलोक प्राप्त हुआ था। राजा दिलीप के महल में सदैव धनुष की डोरी का शब्द, वेदपाठ की

ध्वनि और भोजन करो, खाओ, पियो इत्यादि का शब्द सुनाई पड़ता था। हे सृञ्जय! वे तुम्हारी अपेक्षा श्रेष्ठ सत्यवादी, तपस्वी, दयालु और दानी तथा तुम्हारे पुत्र से अधिक पुण्यात्मा राजा दिलीप भी मृत्यु के मुख में जाने से नहीं बचे। इस कारण अब तुम अपने उस पुत्र की मृत्यु का वृथा शोक मत करो जिसने न यज्ञ किया, न दक्षिणा दी और न वेदपाठ किया। १३

बासठवाँ अध्याय

महाराज मान्धाता का उपाख्यान

नारद ने कहा—हे सृञ्जय! सुनने में आता है कि युवनाश्व के पुत्र और सब देवताओं, दानवों और मनुष्यों को जीतनेवाले प्रतापी राजा मान्धाता को भी एक दिन मृत्यु के मुख में जाना पड़ा था। वे अपने पिता की कोख से पैदा हुए थे और स्वयं अश्विनीकुमारों ने उन्हें पिता के पेट से निकाला था। उसका वृत्तान्त यों है कि मान्धाता के पिता युवनाश्व एक समय शिकार खेलने के लिए वन में गये थे। वहाँ उनके वाहन थक गये और उन्हें ख़ुद भी प्यास लगी। दूर से यज्ञ का धुआँ देखकर वे एक यज्ञशाला में पहुँचे। वहाँ उन्हें एक कलश में रक्खा हुआ मन्त्रों से पवित्र ''पृषदाज्य'' प्राप्त हुआ। वे उसी को पी गये। उसके प्रभाव से युवनाश्व के सूर्य-सदृश तेजस्वी गर्भ देख पड़ा। देवताओं के वैद्य अश्विनीकुमारों ने राजा की यह दशा देखकर, उनके प्राणों की रक्षा के लिए उनकी कोख को फाड़कर एक परम सुन्दर कुमार बाहर निकाला, और उसे राजा की गोद में बिठा दिया। देवतुल्य बलशाली नये कुमार को पिता की गोद में लेटे देखकर देवता परस्पर कहने लगे कि यह अभी का पैदा हुआ बालक क्या पीकर जियेगा? तब इन्द्र ने कहा—यह बालक मुझको पियेगा। इतना कहते ही इन्द्र की उँगलियों में अमृतमय दूध उत्पन्न हो गया। इन्द्र ने करुणा करके कहा था कि यह बालक मेरी उँगलियाँ पियेगा; सो उनके ''मान्धाता'' इस कथन के अनुसार देवताओं ने युवनाश्व के पुत्र का नाम मान्धाता ही रख दिया। अद्भुत नामवाले 'मान्धाता' बालक के मुख में इन्द्र के हाथ से दूध और घी की धाराएँ गिरने लगीं। इन्द्र का हाथ पीने के कारण मान्धाता में दिव्य शक्ति का सञ्चार हुआ और वे नित्य प्रति शीघ्रता के साथ बढ़ने लगे। वे बारह दिन में बारह वर्ष के बालक के समान हो गये। महापराक्रमी मान्धाता ने एक ही दिन में सम्पूर्ण पृथ्वीमण्डल को जीत लिया। धर्मात्मा, धीर, सत्यवादी, जितेन्द्रिय और महापराक्रमी मान्धाता ने जनमेजय, सुधन्वा, गय, पूरु, बृहद्रथ, असित और नृग आदि बड़े-बड़े पराक्रमी नरपतियों को बाहुबल और धनुष की सहायता से जीत लिया। जहाँ से सूर्य का उदय होता है और जहाँ पर उनका अस्त होता है वहाँ से वहाँ तक युवनाश्व के पुत्र महाराज मान्धाता का क्षेत्र कहलाता है। मान्धाता ने सौ १०

अश्वमेध और इतने ही राजसूय यज्ञ किये थे। उन्होंने यज्ञ की दक्षिणा में ब्राह्मणों को सुवर्ण-पूर्ण रोहित और मत्स्य देश दान किये थे, जो बहुत ऊँचे और श्रेष्ठ समझे जाते थे। उनके भीतर पद्मराग मणियों की खानें थीं। उनके यज्ञ में नाना प्रकार के भक्ष्य-भोज्य अन्नों के, पहाड़ ऐसे ऊँचे, ढेर लगे हुए थे। ब्राह्मणों के अलावा जो और लोग आये थे वे भी उन स्वादिष्ठ आहारों से तृप्त होकर परम आनन्द को प्राप्त हुए थे। उस यज्ञशाला में अनेक प्रकार की खाने-पीने की सामग्रियों के पर्वताकार ढेर लगे थे। घी के कुण्ड, दही का फेन, विविध भोज्य पदार्थों की कीचड़ और गुड़ का जल जिनमें था ऐसी मधु-क्षीर-वाहिनी नदियाँ अन्न के पहाड़ों को घेरे हुए थीं। उनके यज्ञ में असंख्य देवता, असुर, मनुष्य, नाग, यक्ष, गन्धर्व, पक्षी आदि प्राणी आये थे। वेद और वेदाङ्ग के पण्डित ब्राह्मणों और ऋषियों का बड़ा भारी जमघट था। वहाँ कोई ऐसा न था, जो शास्त्रों का ज्ञाता न हो। महातेजस्वी मान्धाता समुद्रों समेत धन-रत्न-पूर्ण समग्र पृथ्वीमण्डल ब्राह्मणों को देकर और सब दिशाओं में अपनी पवित्र उज्ज्वल कीर्ति फैला-कर अन्त को स्वर्गवासी हुए। वे यह शरीर त्यागकर अपने पुण्य से जीते हुए लोकों में गये। हे सृञ्जय! तप, सत्य, दया, दान में तुमसे श्रेष्ठ और तुम्हारे पुत्र से बढ़कर पुण्यात्मा महाराज मान्धाता भी जब मृत्यु के मुख में जाने से नहीं बचे तब तुमको अपने उस पुत्र की मृत्यु का वृथा
२० शोक न करना चाहिए, जिसने न यज्ञ किया, न दक्षिणा दी और न वेदपाठ ही किया।

तिरसठवाँ अध्याय

ययाति राजा का उपाख्यान

नारद ने कहा—हे सृञ्जय, सुना जाता है कि महाराज नहुष के पुत्र ययाति भी मृत्यु के मुँह में जाने से नहीं बचे। उन महात्मा ने सौ अश्वमेध, सौ राजसूय, सौ वाजपेय, हज़ार पुण्ड-रीक याग, इतने ही अतिरात्र, असंख्य चातुर्मास्य, विविध अग्निष्टोम यज्ञ और बहुत दक्षिणावाले अन्य अनेक यज्ञ करके ब्राह्मणद्वेषी म्लेच्छों की सम्पत्ति और पृथ्वी जो कुछ थी सो सब उनसे छीन-कर ब्राह्मणों को दे दी थी। राजा ययाति जिस समय पुण्य यज्ञ कर रहे थे उस समय पवित्र नदी सरस्वती, समुद्र, नदी, पहाड़ आदि सब जल की जगह दूध-दही देकर उनकी सहायता करते थे। ययाति ने देवासुर-संग्राम के समय देवताओं की सहायता की थी और यज्ञ के समय सम्पूर्ण पृथ्वी-मण्डल के चार भाग करके चारों ऋत्विजों को दे दिये थे। उन्होंने बहुत से यज्ञ किये। उनके शर्मिष्ठा और (शुक्र की कन्या) देवयानी नाम की दो पत्नियाँ थीं, जिनके गर्भ से धर्मानुसार उन्होंने कई पुत्र उत्पन्न किये। देवसदृश राजा ययाति, दूसरे इन्द्र की तरह, अपनी इच्छा के अनुसार सब लोकपालों के बाग़ों में सैर किया करते थे। बहुत समय तक विषयभोग करने पर भी जब

उनकी विषयवासना शान्त नहीं हुई तब वेद-शास्त्र के ज्ञाता राजा ययाति एक गाथा गाते हुए स्त्रियों सहित वन को चले गये। वानप्रस्थ आश्रम में प्रवेश करते समय ययाति ने जो गाथा गाई थी वह यह है कि "पृथ्वीमण्डल भर पर धान्य, यव, सुवर्ण, पशु, स्त्री आदि जितनी भोग की सामग्री है वह सब अगर एक ही आदमी को भोग करने के लिए मिल जाय तो भी उसे तृप्ति नहीं होगी। यह जानकर मनुष्य को वैराग्यपूर्वक शान्ति का मार्ग ग्रहण करना चाहिए।" महाराज ययाति इस तरह विरक्त होकर, सब विषयों की वासना छोड़कर, धैर्यधारणपूर्वक वन को चले गये। वन जाते समय उन्होंने छोटे लड़के पूरु को राज्य सौंप दिया था। हे सृञ्जय ! वन में जाकर हरि को भजते हुए अन्त समय वे भी मृत्यु के वशवर्ती हुए। तुमसे तप, दया, दान और सत्य में अधिक और तुम्हारे पुत्र से बढ़कर पुण्यात्मा महाराज ययाति को भी एक दिन मरना ही पड़ा। इसलिए तुम अपने उस पुत्र की मृत्यु का शोक न करो, जिसने न यज्ञ किया, न दक्षिणा दी और न वेद ही पढ़ा। ११

चौंसठवाँ अध्याय

महाराज अम्बरीष का उपाख्यान

नारद ने कहा—हे सृञ्जय ! सुनते हैं कि प्रतापी महाराज अम्बरीष को भी मृत्यु ने नहीं छोड़ा। राजा अम्बरीष ने अकेले ही दस लाख वीर राजाओं से युद्ध किया था। अस्त्र-शस्त्र के युद्ध में निपुण, घोरदर्शन वैरी राजाओं ने जय पाने की इच्छा से युद्धभूमि में चारों ओर से कटु वचन कहते-कहते अम्बरीष को घेर लिया था। किन्तु अम्बरीष ने अपने बाहुबल, फुर्ती और अस्त्रबल से उन सबको परास्त कर दिया। उन शत्रुओं के छत्र, शस्त्र, ध्वजा, रथ, वाहन आदि को नष्ट कर दिया, बहुतों को मार भी डाला। इस तरह वे सब शत्रु अम्बरीष के अधीन हो गये। मरने से जो शत्रु बच रहे थे वे अपने प्राण बचाने के लिए, कवच फेंककर "हम आपके शरणागत हैं" कहते हुए, अम्बरीष के आश्रय में आ गये।

महाबलशाली इन्द्र-सदृश राजा अम्बरीष ने इस तरह सब राजाओं को अपने अधीन करके सारी पृथ्वी को अपने अधिकार में कर लिया और फिर शास्त्रविधि के अनुसार सैकड़ों यज्ञ किये। उन यज्ञों में जो लोग आये थे उनको अत्यन्त स्वादिष्ठ भोजन कराये गये थे। सब लोग ख़ूब छक गये थे। विधिपूर्वक ब्राह्मणों की पूजा की गई थी और वे लोग ख़ूब स्वादिष्ठ तरह-तरह के, लड्डू, पूरी, पुए, कचौड़ी, करम्भ (दही-चिउरा), पृथुमृद्वीक, अच्छी तरह बनाये गये विविध अन्न, कच्ची रसोई, मैरेयक (मदिरा), रागखाण्डव, शरबत, मुलायम और ख़ुशबूदार मिठाइयाँ, घी, मधु, दूध, दही, जल, रसीले फल, कन्द-मूल आदि विविध पदार्थ खा-पीकर

परम प्रसन्न होते थे। मद्य-पान को पापजनक जानकर भी सुखप्राप्ति के लिए बहुत से लोग
१० इच्छानुसार मदिरा पीते थे और प्रसन्नतापूर्वक गाते-बजाते थे। मदिरा और अन्य नशों को खा-पीकर नशे में मस्त हज़ारों आदमी, अम्बरीष की प्रशंसा से पूर्ण, कविता और गाथा गाते और हर्ष के मारे नाचने लगते थे।

राजन्! प्रतापी अम्बरीष ने अपने यज्ञों में बहुत दक्षिणा दी थी। उन्होंने विद्वान् ब्राह्मणों को दस अयुत यज्ञ करानेवाले एक लाख ऐसे राजा दान किये थे, जो सुवर्ण के कवच, सफ़ेद छत्र और कलँगी से शोभित थे, सुवर्णमय रथों पर सवार थे और जिनके साथ उनके सब अनुचर आदि भी थे।* अम्बरीष ने यह अद्भुत ही काम किया जो दण्ड-कोष-सामग्रीसहित मूर्धाभिषिक्त सैकड़ों राजा और राजपुत्र दक्षिणा में दे डाले। महर्षियों ने प्रसन्न होकर कहा था कि राजा अम्बरीष ने जैसी अपरिमित दक्षिणा दी और अद्भुत यज्ञ किये, वैसी दक्षिणा न किसी ने दी होगी और न कोई आगे दे सकेगा। हे सृञ्जय! वे राजा अम्बरीष भी अन्त को मृत्यु के अधीन हुए। तप, सत्य, दया, दान में तुमसे बढ़े हुए और तुम्हारे पुत्र से अधिक पुण्यात्मा राजा अम्बरीष भी जब मरने से नहीं बचे तब तुमको उस पुत्र की मृत्यु का वृथा शोक
१७ नहीं करना चाहिए, जिसने न यज्ञ किया, न दक्षिणा दी और न वेदाध्ययन ही किया।

पैंसठवाँ अध्याय

राजा शशबिन्दु का उपाख्यान

नारदजी कहते हैं—हे सृञ्जय! सुना जाता है कि महाप्रतापी राजा शशबिन्दु भी मरने से नहीं बचे। सत्यविक्रमी श्रीमान् शशबिन्दु ने अनेक प्रकार के बड़े-बड़े यज्ञ करके देवताओं और ब्राह्मणों को सन्तुष्ट किया था। शशबिन्दु के एक लाख रानियाँ थीं। एक-एक रानी के गर्भ से राजा के एक-एक हज़ार पुत्र उत्पन्न हुए थे। वे राजकुमार अत्यन्त पराक्रमी, वेदशास्त्रविशारद, हिरण्मय कवचों से भूषित और श्रेष्ठ धनुर्द्धर योद्धा थे। उन राजकुमारों ने भी अलग-अलग विधिपूर्वक बहुत से अश्वमेध यज्ञ और अन्य प्रकार के दस-दस लाख यज्ञ किये थे। राजा शशबिन्दु ने स्वयं अश्वमेध करके उसकी दक्षिणा में वे सब अपने पुत्र ब्राह्मणों को दे डाले। हर एक राजकुमार के साथ और भी बहुत कुछ सामान था। एक-एक राजपुत्र के साथ सौ-सौ रथ, हाथी, घोड़े और मणि-सुवर्ण आदि से अलङ्कृत कन्याएँ भी थीं। हर कन्या के साथ सौ हाथी थे। प्रत्येक हाथी के साथ सौ रथ थे। हर रथ के साथ सुवर्णमाल्यभूषित महाबली श्रेष्ठ सौ घोड़े थे। प्रत्येक घोड़े के साथ हज़ार गायें थीं। हर गाय के साथ पचास भेड़ें थीं।

* शायद इन राजाओं का पौरोहित्य ब्राह्मणों को दिलाया गया था।

हे सृञ्जय ! राजा शशविन्दु ने अश्वमेध यज्ञ करके इस तरह ब्राह्मणों को अपार धन दिया था। साधारणतः लोगों के अश्वमेध यज्ञ में जितने लकड़ी के खम्भे होते हैं उतने लकड़ी के खम्भे तो शशविन्दु के यज्ञ में थे ही, किन्तु उनके अलावा उतने ही सुवर्ण के खम्भे (यूप) भी थे। शशविन्दु के महायज्ञ में इतनी अधिक सामग्री तैयार की गई थी कि कोस भर के ऊँचे, पर्वताकार, खाने-पीने की सामग्री के, तेरह ढेर खिला-पिला चुकने पर अन्त को वच रहे थे। उनके राज्यकाल में यह पृथ्वीमण्डल शान्ति से परिपूर्ण था; कहीं कोई विघ्न, अनर्थ या व्याधि नहीं देख पड़ती थी। सर्वत्र हृष्ट-पुष्ट मनुष्य दिखाई पड़ते थे। राजा शशविन्दु बहुत समय तक इस तरह राज्य करके अन्त में स्वर्ग को चले गये। हे महाराज ! तप, सत्य, दया, दान में तुमसे श्रेष्ठ और तुम्हारे पुत्र से बढ़कर पुण्यात्मा प्रतापी महाराज शशविन्दु भी जब मृत्यु से नहीं बच सके तब फिर तुम उस पुत्र की मृत्यु का वृथा शोक क्यों करते हो, जिसने न यज्ञ किये, न दक्षिणा दी और न वेदपाठ ही किया। १२

छासठवाँ अध्याय

महाराज गय का उपाख्यान

नारदजी ने कहा—हे सृञ्जय ! सुना जाता है कि अमूर्तरया के पुत्र महाराज गय को भी मृत्यु ने नहीं छोड़ा। उन महात्मा ने सौ वर्ष तक हवन से बचा हुआ अन्न ही खाकर जीवन धारण किया था। महाराज गय के इस उत्कृष्ट नियम को देखकर अग्निदेव अत्यन्त सन्तुष्ट हुए और वरदान देने के लिए उनके पास आकर कहने लगे—"मैं प्रसन्न हूँ, मुझसे वरदान माँगो"। राजा गय ने अग्निदेव से कहा—"हे अग्निदेव ! मेरी इच्छा है कि मैं तप, ब्रह्मचर्य, व्रत, नियम और गुरुजन के प्रसाद से सब वेदशास्त्रों का मर्म जान जाऊँ। औरों की हिंसा न करके मैं अपने धर्म से अक्षय धन का अधिकारी हो जाना चाहता हूँ। मैं नित्य श्रद्धापूर्वक ब्राह्मणों को धन दे सकूँ और अपने वर्ण की सुन्दरी धर्मपत्नियों के गर्भ से मेरे उत्तम सन्तान उत्पन्न हो। सदा धर्म में ही मेरा मन लगा रहे और धर्मपालन में कभी कोई विघ्न न हो"। राजा गय के ये वचन सुनकर अग्निदेव बहुत सन्तुष्ट हुए और इच्छानुरूप वरदान देकर अन्तर्द्धान हो गये।

राजा गय ने अग्निदेव की कृपा और वरदान के प्रभाव से अभिलषित विषय पाकर अपने शत्रुओं को परास्त किया। इसके उपरान्त उन्होंने सौ वर्ष की दीक्षा लेकर धर्मानुसार दर्श-पौर्णमास, आग्रयण, चातुर्मास्य आदि अनेक श्रेष्ठ यज्ञ किये और ब्राह्मणों को बहुत अधिक दक्षिणा देकर सन्तुष्ट किया। सौ वर्ष तक नित्य प्रातःकाल उठकर वे ब्राह्मणों को एक लाख सत्तर हज़ार गौएँ, दस हज़ार घोड़े और एक लाख निष्क सुवर्ण दान करते थे। प्रति नक्षत्र में नक्षत्र-दक्षिणा

१८ देते और सोम तथा अङ्गिरा के समान बहुत से विविध यज्ञ करते थे। गय राजा ने अश्वमेध यज्ञ के अन्त में ब्राह्मणों को सुवर्ण की वेदियाँ (चबूतरे) बनवाकर दान की थीं। उन वेदियों में असंख्य मणि-रत्न भी थे। उस यज्ञ में बहुत से रत्नों से शोभित, सब प्राणियों के मन को मोहनेवाले, बहुमूल्य, सुवर्ण के खम्भे (यूप) थे। महाराज गय ने यज्ञ के समय में प्रसन्न-चित्त ब्राह्मणों और अन्यान्य प्रार्थियों को उत्तम भोजन कराये थे। समुद्र, वन, द्वीप, नदी, नद, नगर, देश, स्वर्ग और आकाशमण्डल में रहनेवाले तरह-तरह के सब जीव महाराज गय के यज्ञ में सब प्रकार से तृप्त और सन्तुष्ट होकर कहने लगे थे कि महाराज गय के यज्ञ के समान और किसी का यज्ञ कभी नहीं हुआ। महात्मा गय के यज्ञ की वेदी तीस योजन चौड़ी, छत्तीस योजन लम्बी, चौबीस योजन आगे और पीछे विस्तृत थी। उसमें असंख्य मणि, मोती, हीरे जगह-जगह जगमगा रहे थे। महाराज गय ने ब्राह्मणों को कपड़े, गहने और पहले कहे अनुसार दक्षिणाएँ दी थीं। उनका यज्ञ समाप्त होने पर सबको, दे-लेकर, खिला-पिलाकर भोजन-सामग्री के पचीस पहाड़ बराबर ढेर, दूध और रस की कई नदियाँ और कपड़ों तथा गहनों की कई ढेरियाँ बच रही थीं। ऐसा अद्भुत यज्ञ करने के ही प्रभाव से महाराज गय की कीर्त्ति तीनों लोकों में प्रसिद्ध है। जहाँ गय ने यज्ञ किया था उस स्थान पर अक्षयवट और पवित्र ब्रह्मसरोवर अब तक मौजूद है। इन्हीं के कारण गय का नाम जगत्प्रसिद्ध हो रहा है। हे सृञ्जय! तप, सत्य, दया, दान में तुमसे अधिक और तुम्हारे पुत्र से बढ़कर पुण्यात्मा धर्मात्मा महाराज गय को भी अन्त को मृत्यु के वश होना पड़ा। इसलिए अब तुम अपने उस पुत्र की मृत्यु का शोक मत २१ करो, जिसने न यज्ञ किया, न दक्षिणा दी और न वेद ही पढ़ा।

सड़सठवाँ अध्याय

महाराज रन्तिदेव का उपाख्यान

नारदजी कहते हैं—हे सृञ्जय! सुना जाता है कि महामति रन्तिदेव की भी मृत्यु हुई। दानी रन्तिदेव राजा के यहाँ रसोई बनाने और परोसनेवाले दो लाख नौकर थे। ये लोग राजा के यहाँ आनेवाले अतिथि-अभ्यागतों और भूखे-प्यासों के लिए नित्य बढ़िया रसोई बनाते और उनके आगे परोसते थे। रन्तिदेव ने न्याय से उपार्जित बहुत सा धन ब्राह्मणों को दे डाला था। उन्होंने वेद पढ़े थे और क्षत्रिय-धर्म के अनुसार युद्ध करके शत्रुओं को वश में कर लिया था। रन्तिदेव के यज्ञदीक्षा लेने पर, स्वर्ग पाने की इच्छा से, बहुत से यज्ञपशु स्वयं उनके पास आ जाते थे। उनके अग्निहोत्र यज्ञ में इतने पशु मारे गये थे कि उनके रसोईघर से, मारे गये पशुओं के चमड़ों से, जो खून निकला उससे अत्यन्त पवित्र श्रेष्ठ चर्मण्वती नदी प्रकट हुई।

महाराज रन्तिदेव बारम्बार यह कहते हुए कि "तुमको निष्क देता हूँ, तुमको निष्क देता हूँ" ब्राह्मणों को हज़ारों निष्क दान करते थे और इतने पर भी जो लोग बच रहते थे उन्हें दिलासा देकर सुवर्ण-निष्क ही देते थे। वे ऐसे दानी थे कि एक-एक दिन में हज़ारों-लाखों-करोड़ों निष्क देकर भी यह खेद किया करते थे कि मैंने आज थोड़ा ही दान किया, अब और ब्राह्मण कहाँ मिलें जिनको दान दूँ। दान लेनेवाले ब्राह्मणों को दान न देने से मुझे चिरस्थायी महादुःख होगा,—यही सोचकर राजा बहुत सा द्रव्य दान किया करते थे। हे सृञ्जय! सहस्र सुवर्ण के बैल, सौ गायें और एक सौ आठ सुवर्णमुद्रा, इतने को एक निष्क कहते हैं। राजा रन्तिदेव सौ वर्ष तक हर पक्ष में ऐसे करोड़ों निष्क ब्राह्मणों को देते थे। उनके यहाँ सब सामान सुवर्ण का था। वे ऋषियों, ब्राह्मणों को सुवर्ण की बनी अग्निहोत्र की सामग्री, यज्ञ की सामग्री, करवे (करक), घड़े, थाली, पीढ़े, शय्या, आसन, सवारियाँ, महल, मकान, विविध फल-फूलों के वृक्ष और अन्न आदि सामग्री दान किया करते थे। रन्तिदेव की उस अलौकिक समृद्धि और सम्पत्ति को देखकर पुराण-इतिहास के ज्ञाताओं ने यह गाथा गाई है कि "महाराज रन्तिदेव का ऐसा विभव और धन-सम्पत्ति कुबेर के भवन में भी नहीं देख पड़ती, मनुष्यों के यहाँ की कौन कहे! महाराज रन्तिदेव के भवन तो सुवर्ण-रत्न की खान हैं।" रन्तिदेव के भवन में इतने अधिक अतिथि-अभ्यागत आते थे कि उनके भोजन के लिए इक्कीस हज़ार गायें मारी जाती थीं। सुन्दर चमकीले मणिकुण्डल पहने हुए रसोइये उत्तम-उत्तम भोजन तैयार करके अतिथियों से पुकार-पुकारकर कहते थे कि "अच्छी तरह छककर मांस आदि भक्षण कीजिए। आज का मांस पहले का सा नहीं बना है, बहुत बढ़िया बना है।" महाराज रन्तिदेव के यहाँ जितना सुवर्ण था वह सब उन्होंने यज्ञ करते समय ब्राह्मणों को बाँट दिया था। उनके यज्ञों में देवता प्रत्यक्ष आकर हव्य ग्रहण करते थे, पितृगण कव्य ग्रहण करते थे और ब्राह्मण याचक आदि सब यथेष्ट पदार्थ पाकर प्रसन्न होते थे। हे सृञ्जय! महाराज रन्तिदेव तप, दया, दान और सत्य में तुमसे बढ़े हुए और तुम्हारे पुत्र से अधिक पुण्यात्मा थे; तथापि उन्हें भी मरना पड़ा। इसलिए अब तुम अपने उस पुत्र की मृत्यु के लिए वृथा शोक मत करो, जिसने न यज्ञ किये, न दक्षिणा दी और न वेद ही पढ़ा। २१

अड़सठवाँ अध्याय

महाराज भरत का उपाख्यान

नारद ने कहा—हे सृञ्जय! महाप्रतापी दुष्यन्त के पुत्र भरत को भी मरना पड़ा। वे महाप्रतापी बाल्यावस्था में ही वन में ऐसे अद्भुत कार्य करते थे जो और मनुष्यों के लिए सर्वथा दुष्कर थे। वे बर्फ़ के समान सफ़ेद और नख तथा दाढ़ें ही जिनके शस्त्र हैं ऐसे महाबली सिंहों

को अपने बाहुबल से पछाड़कर खींचते हुए ले आते और बाँधते थे। क्रूरप्रकृति अत्यन्त उग्र व्याघ्रों को हराकर वश में कर लेना उनके बायें हाथ का खेल था। मैनसिल और लाख के रङ्ग की लाल बूँदों से युक्त जिनकी खाल होती है ऐसे चीतों को पकड़कर वे वश में कर लेते थे। बहुत से विषैले साँपों और बली गजराजों को पकड़कर उनके दाँत उखाड़ डालते थे और उन सूखे मुँहवाले वशवर्ती जीवों को अधमरा करके छोड़ देते थे। बड़े-बड़े बली भैंसों को पकड़-कर खींचते थे और सैकड़ों बल-दृप्त सिंहों को पकड़कर खींचते थे। सूमर, गैंड़े आदि अनेक बली वनजन्तुओं को पकड़ कर लाते, बाँधते और वश में करके छोड़ देते थे। उन जीवों की जान भर बच जाती थी। तपोवनवासी ऋषियों ने बालक भरत के ऐसे अद्भुत कर्म देखकर उनका नाम 'सर्वदमन' रख दिया था। भरत की माता शकुन्तला उन्हें सदा मना किया करती थीं कि बेटा, इस तरह वन के जीवों को क्लेश मत दो।

महाराज भरत जब बड़े हुए तब उन्होंने यमुना-तट पर सौ अश्वमेध, सरस्वती-तट पर तीन सौ अश्वमेध और गङ्गा-तट पर चार सौ अश्वमेध यज्ञ किये। इसके बाद उन्होंने फिर हज़ार अश्वमेध और सौ राजसूय यज्ञ किये और उनमें ब्राह्मणों को बहुत बड़ी-बड़ी दक्षिणाएँ दीं। भरतजी ने अग्निष्टोम, अतिरात्र, विश्वजित् और हज़ारों वाजपेय यज्ञ करके देवताओं को सन्तुष्ट
१० कर दिया। राजा भरत ने इस तरह असंख्य यज्ञ किये और ब्राह्मणों को अपरिमित धन देकर प्रसन्न कर दिया। उन्होंने यज्ञ की दक्षिणा में आचार्य कण्व को एक हज़ार विशुद्ध सुवर्ण के बने हुए कमल दिये थे। उनके यज्ञ में सुवर्ण के बने यूप इतने बड़े थे कि उनका घेरा सौ व्याम (व्याम = चार हाथ) का था। इन्द्र आदि देवताओं ने आकर ब्राह्मणों के साथ उनके यूप की स्थापना की थी। राजा भरत ने अलङ्कारों से अलङ्कृत रत्नमण्डित सुवर्णशोभित असंख्य हाथी, घोड़, रथ, ऊँट, बकरे, भेड़ें, दासी-दास, धन, धान्य, बछड़ों सहित दुधार गायें, गाँव, घर, खेत, विविध वस्त्र और सैकड़ों करोड़ अयुत सुवर्णमुद्राएँ ब्राह्मणों को दान की थीं। वे चक्रवर्ती, शत्रुओं को जीतनेवाले, स्वयं अपराजित और उत्साही महात्मा भरत भी एक दिन मृत्यु के मुँह में चले गये। हे सृञ्जय! तुमसे बढ़कर तपस्वी, दानी, दयालु, सत्यवादी और तुम्हारे पुत्र से बढ़कर पुण्यात्मा भरत को भी जब मरना पड़ा तब तुम्हें अपने उस पुत्र की मृत्यु का वृथा शोक
१७ कभी न करना चाहिए, जिसने न यज्ञ किया, न दक्षिणा दी, न वेद ही पढ़ा।

उनहत्तरवाँ अध्याय

महाराज पृथु का उपाख्यान

नारद ने कहा—हे सृञ्जय! सुना जाता है कि राजा वेन के पुत्र महाराज पृथु को भी एक दिन मृत्यु के अधीन हो जाना पड़ा था। महर्षियों ने उनसे राजसूय यज्ञ कराया था और

आपस में सलाह करके, उसी अवसर पर, भारत-सम्राट् के पद पर उनका अभिषेक किया था। महाप्रतापी पृथु ने अपने बाहुबल से पृथ्वीमण्डल के सब वीर राजाओं को परास्त कर दिया था। महर्षियों ने यह कहकर उनका सार्थक नामकरण किया था कि ये महाराज हम सबको प्रथित (प्रसिद्ध) करेंगे इसलिए इनका नाम पृथु होगा। ये हम प्राणियों की क्षत (शत्रुओं या डाकुओं-चोरों के आक्रमण से होनेवाले शस्त्रकृत घाव) से रक्षा करेंगे इसलिए ये क्षत्रिय हैं और इनका क्षत्रिय पद सार्थक है। हे सृञ्जय ! महाराज पृथु को देखकर सब प्रजा ने कहा था कि हम सब इनके अनुरागी हैं, इसी से प्रजा-रञ्जन गुण होने के कारण वे राजा हुए।

महाराज पृथु के राज्यकाल में यह पृथ्वी बिना जोते ही सब अन्न उत्पन्न करती थी और कामधेनु के समान प्रजा को मनचाही चीज़ें देती थी। सब गायें कामधेनु थीं। कमल मधुपूर्ण रहते थे। कुश सुवर्णमय थे और उनका स्पर्श सुखदायक था। लोग उन्हीं के बने कपड़े पहनते और उन्हीं की शय्या पर लेटते थे। कोई प्राणी भूखा नहीं रहता था, लोग वृक्षों के अमृततुल्य स्वादिष्ट मधुर फल खाते थे। उस समय के मनुष्य नीरोग और निडर थे; उनकी सब इच्छाएँ पूरी होती थीं। मनुष्य इच्छानुसार वृक्षों के तले या पहाड़ों की कन्दराओं में रहते थे। उस समय पृथ्वी पर राष्ट्र और पुर आदि का विभाग नहीं हुआ था। सब प्रजा इच्छानुसार प्रसन्नतापूर्वक जहाँ चाहे वहाँ रहती थी। महाराज पृथु जब समुद्र-यात्रा करते तब जल-स्तम्भन हो जाता था। इसी तरह पर्वत आदि भी उन्हें यथेष्ट मार्ग दे दिया करते थे। फाटक आदि के भीतर रथ जाते समय उनके रथ की ऊँची ध्वजा कभी नहीं टूटी।

महात्मा प्रतापी पृथु एक समय अपनी सभा में सुखपूर्वक विराजमान थे, इसी समय वनस्पति, पर्वत, देवता, असुर, मनुष्य, नाग, सप्तऋषि, पुण्यजन (यक्ष), गन्धर्व, अप्सरा, पितर आदि सब उनके पास जाकर कहने लगे—महाराज ! आप सम्राट् हैं, क्षत्रिय हैं, हमारे रक्षक, पिता और राजा हैं। आप प्रभु हैं, इसलिए हम सब अनुगत प्रजा को हमारी इच्छा के अनुसार वर दीजिए, जिनसे तृप्त होकर हम लोग सदा सुख से रहें। १०

तब महात्मा पृथु ने उन्हें यथेष्ट वर देना स्वीकार कर लिया। इसके उपरान्त अपना दिव्य आजगव धनुष और उग्र बाण लेकर, क्षण भर सोचकर, उन्होंने पृथ्वी से कहा—हे धरित्री ! इधर आ, तेरा कल्याण हो। तू शीघ्र इस प्रजा को, इच्छा के अनुरूप, दूध दे। तब मैं प्रजा को, इसकी प्रार्थना के अनुसार, अन्न देकर सन्तुष्ट करूँगा। और जो तू मेरी आज्ञा नहीं मानेगी तो मैं अभी इन बाणों से तेरे टुकड़े-टुकड़े कर डालूँगा। पृथ्वी ने डरकर कहा—हे भद्र ! मुझे आज से आप अपनी कन्या समझिए। हे वीर ! आप वत्स, पात्र, दुहनेवाले और दूध आदि की कल्पना कर दीजिए, तो मैं सबको उनकी अभीष्ट वस्तुएँ दे दूँगी। नारदजी कहते हैं—हे सृञ्जय ! तब पृथु राजा ने गोरूपिणी पृथ्वी को दुहने का सब प्रबन्ध कर दिया।

संसार के सब प्राणी निम्नलिखित प्रकार से पृथ्वी को दुहने लगे। सबसे पहले दुहने की इच्छा से वृक्ष आदि (वनस्पति) पृथ्वी के पास आये। वत्सवत्सला गाय का रूप रक्खे हुए पृथ्वी, दुहनेवाले और दुहने के पात्र को चाहती हुई, खड़ी ही थी। वनस्पतियों में पुष्पित शाल वृक्ष बछड़ा बना, पाकर का पेड़ दुहनेवाला बना, कटे हुए वृक्ष का फिर पनप आना ही दूध और उदुम्बर (गूलर) पात्र हुआ। पर्वत जब पृथ्वी को दुहने लगे तब उदयाचल बछड़ा बना और महापर्वत सुमेरु दुहनेवाला हुआ। उन्होंने रत्न और ओषधिरूप दूध को प्रस्तरमय पात्र में दुह लिया। उसके बाद सब देवताओं ने इन्द्र को बछड़ा और सूर्य को दुहनेवाला बनाकर प्रिय तेजोमय वस्तुओं को लकड़ी के पात्र में दुह लिया। असुरों ने विरोचन को बछड़ा और शुक्राचार्य को दुहनेवाला बनाकर आममय पात्र में मायारूप दूध दुह लिया। मनुष्यों ने स्वायम्भुव मनु को बछड़ा और स्वयं महाराज पृथु को दुहनेवाला बनाकर पृथ्वीतलरूप पात्र में खेती और अन्नरूप
२१ दूध दुह लिया। नागवंश ने महानाग तक्षक को बछड़ा और नागराज धृतराष्ट्र को दुहनेवाला बनाकर अलाबु-पात्र में विषरूप दूध दुह लिया। अक्लिष्टकर्मा सप्तर्षियों ने राजा सोम को बछड़ा और बृहस्पति को दुहनेवाला बनाकर छन्दोमय पात्र में ब्रह्मस्वरूप वेदमय दूध दुह लिया। यक्षों ने वृषध्वज शंकर को बछड़ा और कुबेर को दुहनेवाला बनाकर आमपात्र में अन्तर्द्धान-विद्यारूप दूध दुह लिया। गन्धर्वों और अप्सराओं ने चित्ररथ को बछड़ा और विश्वरुचि को दुहनेवाला बनाकर पद्म-पात्र में पवित्र सुगन्धरूप दूध दुह लिया। पितरों ने वैवस्वत को बछड़ा और यम को दुहनेवाला बनाकर रजतपात्र में स्वधा-स्वरूप दूध दुह लिया। हे सृञ्जय! इस प्रकार सभी प्राणियों ने अपने-अपने बछड़े की सहायता से अपने-अपने पात्र में अपनी-अपनी अभीष्ट वस्तु दुह ली, जिससे कि अब तक उनका गुज़र हो रहा है।

महाप्रतापी पृथु ने बहुत से यज्ञ करके, सब प्राणियों को उनके अभीष्ट पदार्थ देकर, सन्तुष्ट कर दिया। उन्होंने अश्वमेध यज्ञ में पृथ्वी पर के सब पदार्थों की सुवर्णमयी प्रतिमूर्तियाँ बनवाकर ब्राह्मणों को दान कर दी थीं। उन्होंने सुवर्ण के छासठ हज़ार हाथी बनवाकर ब्राह्मणों को दान किये थे। इसी तरह मणि-रत्न-पूर्ण और सुवर्णमयी पृथ्वी बनवाकर ब्राह्मणों को दान कर दी थी। हे सृञ्जय! महाराज पृथु तुमसे अधिक सत्यनिष्ठ, दयालु, दानी और तपस्वी थे और तुम्हारे पुत्र से बढ़कर धर्मात्मा थे; किन्तु उन्हें भी एक दिन मृत्यु के मुख में जाना ही पड़ा। इसलिए अब तुम अपने उस पुत्र की मृत्यु का वृथा शोक मत करो, जिसने न
३३ यज्ञ किया, न दक्षिणा दी और न वेद ही पढ़ा।

सत्तरवाँ अध्याय

भगवान् परशुराम का उपाख्यान

नारद ने कहा—हे सृञ्जय ! महायशस्वी, शूर और वीर, लोक-नमस्कृत परशुराम को तो तुम जानते ही होगे। वे भी एक दिन अवश्य मरेंगे और अन्त समय तक जीवन-मुख आदि में अतृप्त ही रहेंगे। श्रेष्ठ राजलक्ष्मी और बढ़िया सुख पाकर भी उनके चित्त में किसी तरह का विकार नहीं उत्पन्न हुआ। उन्होंने पृथ्वी का पापरूप भार उतारने के लिए अस्त्र-शस्त्र धारण कर रक्खे थे। उनके श्रेष्ठ चरित्र में कभी कोई परिवर्तन नहीं हुआ। एक समय कृत-वीर्य के पुत्र सहस्रबाहु अर्जुन ने, क्षत्रिय-सेना के साथ, उनके पिता के आश्रम में पहुँचकर बल-पूर्वक अग्निहोत्र की गाय ले जाने का प्रयत्न किया और मुनिवर जमदग्नि पर भी आक्रमण किया। उस समय परशुरामजी घटनास्थल पर उपस्थित नहीं थे। लौटने पर उन्हें यह वृत्तान्त विदित हुआ। तब उन्होंने क्रोधान्ध होकर उस सहस्रबाहु अर्जुन को मार डाला, जिसे कभी कोई शत्रु युद्ध में नहीं जीत सका था। परशुरामजी ने उसी सिलसिले में मृत्युग्रस्त चौंसठ हज़ार अयुत क्षत्रियों को एक धनुष की सहायता से नष्ट कर दिया। उसके बाद और भी ब्राह्मण-द्वेषी दुष्ट चौदह हज़ार क्षत्रियों को मारा। महावीर परशुराम ने निग्रहपूर्वक हज़ार क्षत्रियों को मूसल से और इतने ही क्षत्रियों को खड्ग से मारा। उन्होंने हज़ार क्षत्रियों को वृक्षों की डालों में फाँसी देकर और हज़ार क्षत्रियों को पानी में डुबाकर मार डाला। हज़ार क्षत्रियों के दाँत तोड़ डाले और हज़ार क्षत्रियों के कान काट लिये। उन्होंने बचे हुए हैहयवंशी क्षत्रियों को बाँधकर मार डाला और उनके सिर तोड़ दिये। सात हज़ार क्षत्रियों को दण्ड-स्वरूप उन्होंने कड़वा धुआँ पिलाया। पिता के मारे जाने से कुपित महामति परशुराम ने गुणावती के उत्तर और खाण्डव वन के दक्षिण जो स्थान है वहाँ शतसहस्र वीर हैहयों को रथ, हाथी, घोड़े आदि सहित समर में मार डाला। उस समय परशुराम ने क्षत्रियों के कहे हुए कटु वचन और "हे परशु-राम, दौड़ो, बचाओ" यह ब्राह्मणों-सहित पिता की पुकार स्मरण करके परशु से दस हज़ार क्षत्रियों का संहार कर डाला। परम प्रतापी परशुरामजी ने इसके उपरान्त क्षत्रिय-कुल पर क्रोध करके काश्मीर, दरद, कुन्ति, क्षुद्रक, मालव, अङ्ग, वङ्ग, कलिङ्ग, विदेह, ताम्रलिप्त, रक्षोवाह, वीत-होत्र, त्रिगर्त, मार्तिकावत, शिवि तथा अन्यान्य देशों के शत-सहस्र-कोटि क्षत्रियों को तीक्ष्ण बाणों से यमपुरी भेज दिया। वीरबहूटी और दुपहरी-फूल के रङ्ग के शत्रुओं के रक्त का प्रवाह बहाकर उन्होंने उससे कई सरोवर भर दिये और अट्ठारहों द्वीपों को अपने वश में कर लिया। उसके बाद सैकड़ों महायज्ञ किये, जिनके समाप्त होने पर ब्राह्मणों को बड़ी-बड़ी दक्षिणाएँ दीं। उनके यज्ञ में जो वेदी सुवर्ण की बनी थी वह बत्तीस हाथ ऊँची थी और विधि-पूर्वक बनाई गई थी। ११

उस वेदी में सैकड़ों रत्न थे और सैकड़ों पताकाएँ लगी हुई थीं। गाँव के और वन के असंख्य पशुओं से पूर्ण यह समग्र पृथ्वी परशुराम ने आचार्य कश्यप को दक्षिणा में दे दी थी। पृथ्वी को दस्यु रूप क्षत्रियों से शून्य और शिष्ट जनों से परिपूर्ण करके अश्वमेध महायज्ञ में परशुराम ने कश्यप को दक्षिणा में सुवर्णभूषणमण्डित एक लाख गजराज दान किये थे।

हे श्वित्यनन्दन! परशुराम ने इस प्रकार इक्कीस बार इस पृथ्वी को क्षत्रिय-हीन करके २० सैकड़ों यज्ञ किये और सारी पृथ्वी ब्राह्मणों को दान कर दी। महर्षि कश्यप ने सातों द्वीप पृथ्वी परशुराम से लेकर उनसे कहा—हे राम! तुम यह पृथ्वी मुझको दे चुके हो इसलिए, मेरी आज्ञा के अनुसार, इस पृथ्वी से निकलकर अन्यत्र जाकर रहो। महाराज! ब्राह्मण की आज्ञा मानकर श्रेष्ठ योद्धा परशुराम ने बाणप्रहार से समुद्र को उसकी सीमा से हटा दिया और वे महेन्द्राचल पर जाकर रहने लगे। इस प्रकार सैकड़ों गुणों से अलङ्कृत, तेजस्वी, यशस्वी और भृगुवंश की कीर्ति को बढ़ानेवाले परशुराम भी एक दिन अवश्य मरेंगे। राजन्! सत्य, तप, दया, दान में तुमसे श्रेष्ठ और तुम्हारे पुत्र से अधिक पुण्यात्मा परशुराम को भी एक दिन मरना पड़ेगा। अत-एव अब तुम अपने उस पुत्र की मृत्यु के लिए वृथा शोक मत करो, जिसने न यज्ञ किया, न दक्षिणा दी और न वेद ही पढ़ा। देखो, तुमसे सब बातों में श्रेष्ठ, सब गुणों से अलङ्कृत, प्रतापी राजर्षि २५ लोग मृत्यु के वश हुए हैं और ऐसे ही सैकड़ों राजा और प्रतापी लोग आगे चलकर मरेंगे।

इकहत्तरवाँ अध्याय

युधिष्ठिर को समझाकर व्यासजी का अपने आश्रम को जाना

व्यासदेव ने कहा—हे धर्मराज ! नारद के मुँह से यह अत्यन्त पवित्र और आयु को बढ़ानेवाला सोलह राजाओं का उपाख्यान सुनकर राजा सृञ्जय चुप हो गये। उन्हें इस तरह दीन भाव से चुप देखकर नारदजी बोले—राजन् ! जो मैंने तुमसे कहा, उसे सुनकर तुम हृदय में धारण कर सके हो न ? मेरी बात तुम्हारे मन में बैठ गई है न ? अथवा शूद्री-पति ब्राह्मण जिसमें खिलाया जाय उस श्राद्ध की तरह मेरा सब समझाना निष्फल ही हो गया ?

नारद के ये वचन सुनकर राजा सृञ्जय ने हाथ जोड़कर कहा—भगवन् ! आपने पुत्र-शोक को मिटानेवाला धन्य उत्तम यह उपाख्यान सुनाया। इसमें यज्ञ करनेवाले, दक्षिणा देने-वाले, प्राचीन राजर्षियों का वृत्तान्त वर्णन किया गया है। सूर्य जैसे अँधेरे को मिटा देते हैं वैसे ही इन उपाख्यानों के सुनने से उत्पन्न ज्ञान और विस्मय ने मेरे शोक को दूर कर दिया। मैं निष्पाप हो गया हूँ, मेरी सब व्यथा जाती रही। बताइए, मैं क्या करूँ ? यह सुनकर नारद ने कहा—राजन् ! बड़ी बात जो तुम्हारे हृदय से पुत्रशोक जाता रहा। अब तुम्हारी जो इच्छा हो वह वर माँगो। जो तुम चाहोगे वही पाओगे। हम ऋषि लोग मिथ्यावादी नहीं हैं। सृञ्जय ने कहा—भगवन् ! आप मुझ पर प्रसन्न हैं, इसी से मैं कृतकृत्य हो गया। आप जिस पर प्रसन्न हों उसके लिए दुर्लभ ही क्या है। तब नारद ने कहा—राजन् ! डाकुओं ने वृथा तुम्हारे पुत्र की हत्या की है। मैं उसे, यज्ञबलि में निहत पशु की तरह, कष्ट-दायक नरक से उबारकर फिर तुमको देता हूँ। व्यासजी कहते हैं—प्रसन्न ऋषि नारद के तपोबल के प्रभाव से सृञ्जय का वह पुत्र, कुबेर के लड़के की तरह अद्भुत प्रभा से सम्पन्न होकर, सृञ्जय के सामने प्रकट हो गया। अपने पुत्र को पाकर राजा सृञ्जय बहुत प्रसन्न हुए। उन्होंने इसके उपरान्त बहुत से श्रेष्ठ यज्ञ किये और उनमें ब्राह्मणों को खूब दक्षिणाएँ दीं। हे युधिष्ठिर ! सृञ्जय का पुत्र सुवर्णष्ठीवी अकृतार्थ और प्राणभय से डरा हुआ था। वह न तो युद्धविद्या में निपुण था और न युद्ध में मारा ही गया था। उसने न तो यज्ञ ही किया था और न उसके कोई सन्तान ही उत्पन्न हुई थी। इन्हीं कारणों से देवर्षि नारद ने फिर उसे जिला दिया था; किन्तु आपका भतीजा अभिमन्यु तो शूर, वीर और कृतार्थ था। उसने सामने युद्ध में हज़ारों शत्रुओं को मारा और फिर आप भी सम्मुख संग्राम में मारा जाकर स्वर्गलोक को गया। लोग ब्रह्मचर्य, प्रज्ञा, शास्त्र के अध्ययन और महायज्ञ द्वारा जिन अक्षय लोकों को पाते हैं उन्हीं लोकों में तुम्हारा भतीजा अभिमन्यु गया है। विद्वान् पण्डित लोग नित्य पुण्य कर्म करके स्वर्गलोग प्राप्त करना चाहते हैं, किन्तु स्वर्गवासी पुण्यात्मा जीव स्वर्गलोक से इस लोक १०

में आना नहीं चाहते। इसलिए युद्ध में मरकर स्वर्ग को गये हुए वीर अभिमन्यु को पार्थिव सुख-भोग के लिए यहाँ नहीं लाया जा सकता और वैसा करना उचित भी नहीं होगा। योगी लोग एकान्त में समाधि लगाकर ईश्वर का ध्यान करके जिस गति को पाते हैं, और श्रेष्ठ यज्ञ तथा तपस्या करने से जो उत्तम गति मिलती है, वही गति तुम्हारे वीर पुत्र अभिमन्यु को प्राप्त हुई है। मरण के उपरान्त दैवी सम्पत्ति को पाकर राजा की तरह वीर अभिमन्यु अमृतमय किरणों से शोभायमान होकर चन्द्रलोक में विराजमान है। द्विजों के योग्य अपनी चन्द्रमयी देह पाकर अभिमन्यु उत्तम लोकों में सुख भोग रहा है। उसके लिए शोक करना ठीक नहीं।

हे धर्मराज! यह वृत्तान्त मैंने तुमको बता दिया है। अब स्थिर होकर धैर्य धारण करो; शोक मत करो। मेरी समझ में इस लोक में स्थित जीवित पुरुष ही शोचनीय हैं, स्वर्गगत पुरुष नहीं। महाराज! शोक करने से पाप की वृद्धि ही होती है। इसलिए समझदार पुरुष को चाहिए कि शोक त्यागकर श्रेय के लाभ का यत्न करता रहे। प्रहर्ष, प्रीति, आनन्द, प्रिय कार्य और उत्साह, इनको विद्वान् लोग शौच (पवित्रता) कहते हैं। शोक अपवित्रता का २० रूप है। यह जानकर उठो, अपने को पवित्र और एकाग्र बनाओ, शोक मत करो। तुम मृत्यु की उत्पत्ति, अनुपम तप, सब प्राणियों में समभाव और सृञ्जय के मरे हुए पुत्र का फिर जी उठना इत्यादि वृत्तान्त सुन चुके। महाराज! यह सब जानकर तुम शोक मत करो। अब मैं जाता हूँ। मेरा कहा मानो।

अब भगवान् वेदव्यास वहीं अन्तर्द्धान हो गये। मेघ-विहीन आकाश के समान प्रभा से युक्त, वागीश्वर बुद्धिमानों में श्रेष्ठ, वेदव्यासजी युधिष्ठिर को समझाकर चले गये। महेन्द्रतुल्य पराक्रमी, न्याय से धनोपार्जन करनेवाले, पहले के राजाओं के यज्ञों का वृत्तान्त सुनकर और मन ही मन उनकी प्रशंसा करके युधिष्ठिर शोक-हीन हो गये। किन्तु फिर वे दीन भाव से यह २६ चिन्ता करने लगे कि अर्जुन के आने पर उनसे क्या कहूँगा।

प्रतिज्ञापर्व

बहत्तरवाँ अध्याय

अभिमन्यु के लिए अर्जुन का विलाप

सञ्जय धृतराष्ट्र से कहते हैं—महाराज! प्राणियों का संहार करनेवाला वह भयङ्कर दिन बीत गया और भगवान् भास्कर अस्ताचल पर पहुँच गये। सन्ध्या हो गई। हे भरतश्रेष्ठ, दोनों ओर की सेनाएँ युद्ध बन्द करके अपने-अपने शिविर को चली गईं। उधर अर्जुन भी दिव्य अस्त्रों के द्वारा संशप्तक-सेना का संहार करके, विजय दिलानेवाले रथ पर बैठे

हुए, अपने शिविर को चले। रास्ते में जाते-जाते अर्जुन गद्गद स्वर से कृष्णचन्द्र से कहने लगे—हे गोविन्द! मेरा हृदय इस समय क्यों अकारण भयविह्वल हो रहा है? मेरे मुँह से अच्छी तरह बात नहीं निकलती, अङ्ग काँप रहे हैं, शरीर सुस्त हो रहा है, रथ पर बैठे रहा नहीं जाता! मेरे हृदय में एक अस्पष्ट अनिष्ट-चिन्ता घुसी हुई है, वह किसी तरह दूर नहीं होती। पृथ्वी पर और सब दिशाओं में अत्यन्त उग्र अनिष्टसूचक उत्पात देख पड़ते हैं, वे मुझे भयविह्वल कर रहे हैं। भाई-बन्धुओं सहित महाराज युधिष्ठिर तो कुशलपूर्वक होंगे न?

कृष्णचन्द्र ने कहा—हे अर्जुन! भाइयों सहित धर्मराज सकुशल ही होंगे। इस विषय में सन्देह और शोक मत करो। वहाँ और ही कुछ अनिष्ट हो सकता है।

सञ्जय कहते हैं—इसके बाद श्रीकृष्ण और अर्जुन ने रणभूमि के निकट सन्ध्यावन्दन किया। फिर दोनों मित्र रथ पर बैठकर युद्ध की बातें करते हुए अपने शिविर के पास पहुँचे। अपने शत्रुओं का नाश करके दुष्कर कर्म करनेवाले अर्जुन और श्रीकृष्ण ने अपने शिविर को देखा तो वह नष्ट-भ्रष्ट और निरानन्द देख पड़ा। इससे अर्जुन का हृदय धड़कने लगा। उन्होंने बेचैन होकर कहा—हे जनार्दन! आज मङ्गलमय तुरही, नगाड़े, शङ्ख आदि बाजे नहीं बज रहे हैं। करताल और वीणा बजाकर गवैये लोग मङ्गलगीत नहीं गाते। मेरे शिविर में वन्दीजन मेरी स्तुति के मनोरम पद नहीं पढ़ते। योद्धा लोग मुझे देखते ही सिर झुकाकर दूसरी तरफ़ चले जाते हैं। वे पहले की तरह मेरा अभिनन्दन करके मेरे आगे, रण में किये गये, अपने कर्मों का वर्णन नहीं करते। हे माधव! आज यह क्या बात है? मेरे सब भाई तो सकुशल हैं न? स्वजनों को व्याकुल देखकर मेरे मन का भाव शुद्ध नहीं होता, अनिष्ट की आशङ्का और भी ज़ोर पकड़ती जाती है। पाञ्चालराज द्रुपद, राजा विराट और मेरे पक्ष के अन्य योद्धा सबके सब सकुशल हैं न? आज मुझे रण से आते देखकर वीर अभिमन्यु हँसता हुआ, अपने भाइयों के साथ, पहले की तरह मुझे लेने क्यों नहीं आता?   १०

सञ्जय कहते हैं—अर्जुन और श्रीकृष्ण इस तरह बातचीत करते हुए शिविर के भीतर गये। भीतर जाकर दोनों ने देखा कि चारों भाई पाण्डव बहुत ही व्याकुल और उदास हो रहे हैं। उदास अर्जुन ने भीतर पहुँचकर सब भाइयों और पुत्रों को देखा, किन्तु अभिमन्यु नहीं देख पड़े। तब घबराकर अर्जुन ने कहा—हे वीरो! तुम सबके चेहरों का रङ्ग उड़ा हुआ है और उदासी झलक रही है। वीर अभिमन्यु मुझे यहाँ नहीं देख पड़ता। तुम लोग कोई मेरा अभिनन्दन नहीं करते। मैंने सुना है कि आज द्रोणाचार्य ने चक्रव्यूह की रचना की थी। बालक अभिमन्यु के सिवा तुम लोगों में ऐसा कोई नहीं था जो उस व्यूह को तोड़कर भीतर जा सकता। मैंने अभिमन्यु को उस व्यूह के भीतर जाने का उपाय बता दिया था, लेकिन उससे बाहर निकलने का उपाय नहीं बताया था। तुम लोगों ने कहीं उस   २०

बालक को शत्रु-सेना के भीतर तो नहीं भेज दिया ? शत्रुनाशन अभिमन्यु शत्रुओं के व्यूह को तोड़कर, भीतर घुसकर, कहीं शत्रुओं के हाथ से युद्ध में मारा तो नहीं गया ? जल्दी

बतलाओ, लोहित-लोचन, महाबाहु, जङ्गली सिंह-शिशु के तुल्य और उपेन्द्र के समान पराक्रमी वीर बालक अभिमन्यु युद्ध में मारा तो नहीं गया ? बतलाओ, सुकुमार, महा-योद्धा, इन्द्र का पौत्र और मेरा प्रिय अभिमन्यु युद्ध में मारा तो नहीं गया ? सुभद्रा और द्रौपदी के प्रिय पुत्र और श्रीकृष्ण तथा कुन्ती के दुलारे अभिमन्यु को किसी ने मार तो नहीं डाला ? किसे काल ने मोहित कर दिया है ? पराक्रम, ज्ञान और माहात्म्य में वृष्णिवीर श्रीकृष्ण के समकक्ष महावीर अभिमन्यु क्या मारा गया ? सुभद्रा का प्यारा पुत्र, मेरा दुलारा, शूरश्रेष्ठ अभिमन्यु अगर मुझे देखने को न मिला तो मैं अपने प्राण दे दूँगा । कोमल घुँघराले बालों से शोभित, बालक, मृग-नयन, मस्त हाथी के समान पराक्रमी, सिंहशावक के समान वीर, मन्द मुसकान के साथ मधुर भाषण करनेवाले, शान्त, बड़े-बूढ़ों की आज्ञा का पालन करनेवाले, विनीत, लड़कपन में भी अद्भुत कर्म करनेवाले, प्रिय-वादी, मत्सर-रहित, महाउत्साही, महाबाहु, कमलदल के तुल्य विशाल नयनोंवाले, भक्तों पर दया
३० करनेवाले सुन्दर अभिमन्यु को मैं न देख पाऊँगा तो अपनी जान दे दूँगा । नीच प्रवृत्तियों से दूर रहनेवाले, कृतज्ञ, ज्ञानी, अस्त्रविद्या में निपुण, युद्ध में पीठ न दिखानेवाले, युद्धप्रिय, शत्रुओं को डरवानेवाले, स्वजनों का प्रिय और हित करने में तत्पर, अपने पितृकुल की जय के लिए यत्न-शील, शत्रु पर पहले प्रहार न करनेवाले, युद्ध में कभी न घबरानेवाले अपने प्रिय पुत्र अभिमन्यु को यदि मैं न देख पाऊँगा तो अपनी जान दे दूँगा । रथी योद्धाओं की गणना के समय मैंने उस महारथी की गणना करते हुए कहा था कि उसमें अन्य महारथियों से आधा गुण अधिक है। उसी नवयुवक, बाहुबल में अद्वितीय और प्रद्युम्न तथा श्रीकृष्ण के परम प्रिय अभिमन्यु को अगर मैं न देख पाऊँगा तो अवश्य अपनी जान दे दूँगा। बालक अभिमन्यु के सुन्दर ललाट, नासिका, नयन, भृकुटी और ओठों से शोभित मुखचन्द्र को बिना देखे मेरे हृदय को शान्ति न मिलेगी। वीणा की ध्वनि और कोयल के शब्द के समान मधुर अभिमन्यु की बोली सुने बिना मेरे हृदय

को कभी शान्ति नहीं मिल सकती। उस वीर का देव-दुर्लभ असाधारण रूप बिना देखे मेरे हृदय को शान्ति नहीं मिलेगी। प्रणाम करने में निपुण और पितृगण के आज्ञाकारी अभिमन्यु को आज अगर मैं नहीं देख पाऊँगा तो मुझे कभी शान्ति न मिलेगी। हाय! वह सुकुमार वीर महा-मूल्य शय्या पर लेटने के योग्य सनाथ अभिमन्यु युद्धभूमि में अनाथों की तरह पड़ा हुआ होगा। पहले कोमल बिस्तर पर सोते समय जिसके पास सुन्दर स्त्रियाँ रहती थीं, वही इस समय धूल में पड़ा होगा और चारों ओर गिदड़ियाँ उसे घेरे हुए होंगी। जिसको पहले सूत-मागध-वन्दी-जन स्तुति-गीतों से जगाते थे उसी के आसपास आज ख़ूनी मांसाहारी जीव बुरे स्वर से चिल्ला रहे होंगे। जिसका सुन्दर मुख छत्रछाया के योग्य था, उसी के मुख को आज रणभूमि की रज मलिन करेगी! हाय पुत्र! मैं तुम्हारा मुख देखकर तृप्त नहीं हुआ था; किन्तु मैं ऐसा अभागा हूँ कि काल तुमको बलपूर्वक मेरे पास से लिये जा रहा है। पुण्यात्मा लोग जहाँ जाते हैं वह अपनी कान्ति से रमणीय यमराज की संयमनी पुरी आज तुम्हें पाकर अत्यन्त शोभायमान हो रही होगी। निर्भय होकर युद्ध करनेवाले तुम प्रिय अतिथि को पाकर यम-राज, वरुण, कुबेर और इन्द्र आदि लोकपाल तुम्हारी पूजा करेंगे। ४०

सञ्जय कहते हैं कि महाराज! जहाज़ टूटने पर उस पर सवार डूबता हुआ सौदागर जैसे विलाप करे वैसे ही अत्यन्त दुःख के साथ विलाप करके अर्जुन ने युधिष्ठिर से पूछा—हे कुरुनन्दन! वीर अभिमन्यु श्रेष्ठ वीरों से युद्ध करते-करते शत्रुसेना का विनाश करके सम्मुख-युद्ध में मारा तो नहीं गया? बहुत से महारथी योद्धा मिलकर यत्नपूर्वक उससे लड़ रहे होंगे और उस समय उस अकेले बालक ने सहायता के लिए मेरा स्मरण किया होगा। जान पड़ता है कि कर्ण, द्रोण, कृपाचार्य प्रमुख विपक्षियों के तीक्ष्ण बाणों से पीड़ित वह बालक अवश्य ही "हे पिता, दौड़ो, मेरी रक्षा करो!" कहकर बहुत विलाप कर रहा होगा और उसी समय नीच-हृदय शत्रुओं ने मिलकर उसे मार डाला होगा। अथवा वह मेरा पुत्र और श्रीकृष्ण का भानजा है, इसलिए उसने कभी ऐसे दीन वचन न कहे होंगे। मेरा हृदय अवश्य ही पत्थर का है, जो महाबाहु रक्तनयन वीर बालक अभिमन्यु को न देखकर टुकड़े-टुकड़े नहीं हो जाता! हाय! नृशंस नीच धनुर्द्धर शत्रुओं ने श्रीकृष्ण के भानजे और मेरे पुत्र बालक अभिमन्यु को मर्मभेदी तीक्ष्ण बाण कैसे मारे? जब मैं शत्रुओं को मारकर आता था तब वह उत्साही वीर बालक सदैव आगे बढ़कर मेरे पास आता और मेरा अभिनन्दन करता था; किन्तु आज वह क्या मुझे नहीं देखता? आज वह मेरे पास आकर अभिनन्दन क्यों नहीं करता? अवश्य ही वह इस समय ख़ून से तर होकर पृथ्वी पर मरा पड़ा होगा। आकाश से गिरे हुए सूर्य की तरह कान्तिपूर्ण अपने अङ्गों की आभा से वह रणभूमि की शोभा बढ़ा रहा होगा। मुझे सुभद्रा के लिए बड़ा शोक हो रहा है; क्योंकि वह युद्ध से न भागनेवाले अपने वीर पुत्र की ५०

मृत्यु का समाचार पाकर अवश्य ही शोकपीड़ित होकर प्राण दे देगी। हाय! आज अभिमन्यु को न देखकर सुभद्रा और द्रौपदी मुझसे क्या कहेंगी और मैं ही उन दुःख से पीड़ित देवियों से क्या कहूँगा? मेरा हृदय वज्र का बना हुआ है, जो अपनी बहू उत्तरा को शोक से पीड़ित होकर विलाप करते देख टुकड़े-टुकड़े न हो जायगा!

मैंने लौटते समय हर्ष और गर्व से भरे हुए धृतराष्ट्र के पुत्रों का सिंहनाद सुना है और श्रीकृष्ण ने भी सुना है कि वैश्या-पुत्र युयुत्सु इस प्रकार कौरवों से तिरस्कार-पूर्ण भर्त्सनावाक्य कह रहे थे कि "हे अधर्मी महारथियो! तुम लोग अर्जुन को हराने में असमर्थ होकर अकेले ६० महाबली बालक को मारकर लज्जित नहीं होते? देखो, कुछ ही देर के बाद तुम्हें पाण्डवों का पराक्रम देखने को मिल जायगा। तुम लोगों ने युद्धभूमि में श्रीकृष्ण और अर्जुन का अपराध किया है इसलिए तुमको शोक करना चाहिए; क्योंकि तुम्हारे सिर पर मौत सवार है। तुम शोक करने के बदले वृथा प्रसन्न हो रहे हो और सिंहनाद कर रहे हो। तुम लोगों को शीघ्र ही अपने पापकर्म का फल मिलेगा। तुमने भारी अधर्म किया है, इसका फल तुम्हें क्यों न मिलेगा।" महामति युयुत्सु कोप और दुःख से परिपूर्ण होकर, शस्त्र रखकर, वहाँ से चले गये। हे श्रीकृष्ण! तुमने युयुत्सु के मुँह से ये बातें सुनकर युद्धभूमि में ही मुझसे क्यों नहीं कहा? मैं उन नीच-प्रकृति महारथियों को उसी समय, वहीं, अपने बाणों की आग से भस्म कर देता!

सञ्जय कहते हैं कि आँखों में आँसू भरे हुए, पुत्रशोक से पीड़ित, चिन्तित अर्जुन को पकड़कर, उनके तीव्र शोक को शान्त करते हुए, कृष्णचन्द्र इस प्रकार समझाने लगे—हे पार्थ! इस तरह शोक से कातर मत होओ। युद्ध से न भागनेवाले शूरों की, ख़ासकर हम जैसे शस्त्र-जीविकावाले क्षत्रियों की, एक दिन यही गति होती है। हे बुद्धिमानों में श्रेष्ठ अर्जुन! जो लोग शूर हैं, डटकर युद्ध करते हैं, उनके लिए धर्मशास्त्रविशारद विद्वानों ने यही गति निश्चित की है। जो शूर क्षत्रिय रण में पीठ नहीं दिखाते उनका युद्ध में मरना निश्चित और स्वाभाविक है। वीर कुमार अभिमन्यु उन्हीं श्रेष्ठ लोकों को गया है जहाँ पुण्यात्मा लोग जाया करते हैं। हे भरतकुल-तिलक!

सभी वीर यह चाहते हैं कि सम्मुख-संग्राम में लड़ते-लड़ते उनकी मृत्यु हो। वीर अभिमन्यु ७७
रण में महाबली राजपुत्रों को मारकर लड़ते-लड़ते उस मृत्यु से मरा है, जिसकी वीर लोग इच्छा रखते हैं। हे पुरुषसिंह ! तुम शोक मत करो। धर्मसंस्थापक महापुरुषों ने युद्ध में मरना क्षत्रियों का धर्म निश्चित किया है। देखो, ये सब तुम्हारे भाई और सुहृद तुम्हें शोकविह्वल देखकर उदास हो रहे हैं। इन्हें समझाओ, ढाढ़स बँधाओ। जानने योग्य सब बातें तुम जानते हो। तुम्हें इस तरह शोक नहीं करना चाहिए।

अद्भुत कर्म करनेवाले कृष्णचन्द्र ने जब इस तरह समझाया तब महावीर अर्जुन गद्-गद स्वर से अपने भाइयों से कहने लगे—महाबाहु, ऊँचे कन्धोंवाले, कमलनयन वीर अभिमन्यु की मृत्यु का वृत्तान्त मैं सुनना चाहता हूँ। जिन्होंने मेरे पुत्र को मारा है वे जल्द ही संग्राम में देखेंगे कि उनके दल के हाथी, घोड़े, रथ और योद्धा मेरे बाणों से नष्ट होंगे। तुम लोग अस्त्र-शस्त्र चलाने में निपुण हो। तुम लोग शस्त्र लिये मौजूद थे। तुम्हारे आगे तो इन्द्र भी अभिमन्यु की हत्या नहीं कर सकते थे। अगर मैं जानता कि तुम सब पाण्डव और पाञ्चाल-गण मेरे पुत्र अभिमन्यु की रक्षा न कर सकोगे तो मैं स्वयं कहीं न जाकर उसकी रक्षा करता। तुम लोग रथ पर बैठकर बाण-वर्षा कर रहे थे, तब भी कैसे शत्रुपक्ष के योद्धा तुम्हें हटा करके अभिमन्यु को मार सके ? बड़े आश्चर्य की बात है ! आज मुझे मालूम हो गया कि तुम लोगों ८० में पौरुष और पराक्रम ज़रा भी नहीं है। ऐसा न होता तो तुम्हारी आँखों के आगे ही शत्रु लोग अभिमन्यु की हत्या कैसे कर पाते ! अथवा मुझे अपनी ही निन्दा करनी चाहिए। तुम दुर्बल, भीरु, कच्चे निश्चयवाले पर भरोसा करके मैं क्यों संशप्तकगण से लड़ने गया था ! तुम लोग मेरे पुत्र की रक्षा नहीं कर सके तो क्या ये कवच, शस्त्र, धनुष-बाण आदि केवल दिखाने के लिए ही तुमने धारण कर रक्खे हैं ? तुम लोग क्या जनता में बढ़-बढ़कर वीरता की बातों की डींग हाँकना ही जानते हो ?

बढ़िया खड्ग धारण किये हुए वीर अर्जुन इतना कहकर चुप हो गये। काल के समान क्रुद्ध और पुत्रशोक से पीड़ित विह्वल अर्जुन बारम्बार साँसें ले रहे थे। उनकी आँखों में शोक और क्रोध के मारे आँसू भरे हुए थे। केवल बड़े भाई युधिष्ठिर और महात्मा श्रीकृष्ण के सिवा अर्जुन के और सब सुहृद्गण उनसे बात करने की कौन कहे, उनकी ओर देख भी नहीं सकते थे ! वे दोनों महानुभाव सब समय सब अवस्थाओं में अर्जुन के हितचिन्तक, प्रिय, उनके हृदय के भाव को पहचाननेवाले और अनुगत थे। अर्जुन भी उन्हें बहुत मानते और प्यार करते थे। वे ही उस समय अर्जुन से कुछ कह सकते थे। अब पुत्रशोक से अत्यन्त पीड़ित और क्रुद्ध कमलनयन अर्जुन से महाराज युधिष्ठिर यों कहने लगे। ८८

———

तिहत्तरवाँ अध्याय

युधिष्ठिर का विस्तार से अभिमन्यु के मारे जाने का वृत्तान्त कहना और
अर्जुन का शपथ खाकर जयद्रथ के वध की प्रतिज्ञा करना

युधिष्ठिर ने कहा—हे महाबाहु अर्जुन ! तुम जब संशप्तक-सेना को मारने गये तब द्रोणाचार्य ने मुझे पकड़ने के लिए बड़ी चेष्टा की। [व्यूह बना करके] आचार्य जब मुझे पकड़ने का यत्न करने लगे तब हम लोग भी अपनी सेना को व्यूहरचना-पूर्वक शत्रुओं के सामने खड़ा करके उनके आक्रमण को रोकने की चेष्टा करने लगे। मेरे पक्ष के बहुत से रथियों ने द्रोणाचार्य को बढ़ने से रोका और मैं भी सुरक्षित हो गया, तब द्रोणाचार्य अपने तीक्ष्ण बाणों से हमारी सेना को पीड़ित करते हुए हम लोगों की ओर बढ़े। उस समय हम लोगों को आचार्य ने इतना सताया कि हम लोग उनकी सेना के व्यूह को क्या तोड़ते, उनकी ओर आँख उठाकर देखने में भी असमर्थ हो गये। तब मैंने घबराकर अद्वितीय योद्धा कुमार अभिमन्यु से कहा कि पुत्र, तुम द्रोणाचार्य की सेना के इस व्यूह को तोड़कर हमारे लिए भीतर घुसने का रास्ता कर दो। हम लोगों की प्रेरणा से, उत्तम प्रकृति के बढ़िया घोड़े की तरह, पराक्रमी अभिमन्यु ने असह्य भार होने पर भी उसे अपने ऊपर ले लिया। गरुड़ जैसे समुद्र में घुसें वैसे ही वह बालक तुम्हारी सिखाई हुई अस्त्रविद्या के बल से, अपने बाहुबल के सहारे, शत्रुसेना के भीतर घुस गया। हम लोग अभिमन्यु के पीछे जा रहे थे। जिस राह से अभिमन्यु व्यूह के भीतर गया था उसी राह से हम लोग भी भीतर जाने का प्रयत्न करने लगे। उस समय क्षुद्र-पराक्रमी सिन्धुदेश के राजा जयद्रथ ने, रुद्र के दिये हुए वरदान के प्रभाव से, हम सबको बाहर ही रोक दिया। बहुत यत्न करने पर भी हम उसे नहीं हटा सके। उधर महारथी द्रोणाचार्य, कृपाचार्य, कर्ण, अश्वत्थामा, कोशलराज बृहद्बल और कृतवर्मा, इन छः महारथियों ने

१० अकेले बालक अभिमन्यु को चारों तरफ़ से घेर लिया। महावीर अभिमन्यु उन लोगों से यथाशक्ति युद्ध करता रहा किन्तु अन्त को कई महारथियों ने मिलकर उसका रथ नष्ट कर दिया। दुःशासन का पुत्र गदा लेकर बड़ी फुर्ती से रथ-हीन अभिमन्यु के पास पहुँचा। सङ्कट में पड़े हुए अभिमन्यु को, पैदल देखकर, दुःशासन के बेटे ने मार डाला। धार्मिकश्रेष्ठ अभिमन्यु ने पहले हज़ारों हाथियों, घोड़ों, रथियों और पैदल सिपाहियों को मारा। उसके बाद आठ हज़ार रथी, नव सौ हाथी, दो हज़ार श्रेष्ठ योद्धा राजपुत्र उसके हाथ से मारे गये। अभिमन्यु के बाणों से बहुत से अलक्षित वीर राजाओं, राजपुत्रों और क्षत्रिय योद्धाओं की मृत्यु हुई। उसने महापराक्रमी कोशलेश बृहद्बल को भी बलपूर्वक सम्मुख समर में मारा। इस तरह घमासान युद्ध करके और अद्भुत पराक्रम दिखाकर वह स्वर्ग को सिधार गया। भैया ! हमारे शोक को बढ़ानेवाली यह घटना इस तरह हुई है।

अर्जुन......लम्बी साँस लेकर गिर पड़े।—पृ० २३१६

युधिष्ठिर के ये वचन सुनकर पुत्रवत्सल अर्जुन शोक से व्याकुल हो उठे और "हाय बेटा!" कहकर, लम्बी साँस लेकर, गिर पड़े। तब सब वीर लोग चारों ओर से उनको घेरकर उदास दृष्टि से एक दूसरे की ओर निहारने लगे। कुछ देर बाद अर्जुन को होश आया। वे उस समय क्रोध के मारे ज्वरग्रस्त मनुष्य की तरह काँप रहे थे और बारम्बार लम्बी साँसें ले रहे थे। हाथ से हाथ मलकर, दाँत कटकटाकर, उन्मत्त की तरह देखते हुए अर्जुन कहने लगे—हे धर्मराज! हे वीरो! मैं तुम लोगों के आगे यह प्रतिज्ञा करता हूँ कि कल सबेरे अवश्य जयद्रथ को मार डालूँगा। अगर जयद्रथ प्राणों की रक्षा के लिए, डरकर, दुर्योधन आदि को छोड़कर हम लोगों की, पुरुषोत्तम कृष्ण की अथवा हे महाराज, आपकी शरण में न आ गया तो अवश्य ही मैं कल सबेरे उसको मार डालूँगा। दुष्ट जयद्रथ मेरे साथ पहले की मित्रता (अथवा नातेदारी का ख़याल) भुलाकर दुर्योधन का प्रिय करना चाहता है। वही नीच पापी मेरे लड़के के वध का कारण है। इसलिए कल मैं अवश्य उसे मारूँगा। युद्धभूमि में जो कोई उसकी रक्षा करने के लिए मुझसे लड़ेगा उसे—चाहे द्रोणाचार्य हों और चाहे कृपाचार्य—मैं अवश्य अपने तीक्ष्ण बाणों का लक्ष्य बनाऊँगा। हे श्रेष्ठ पुरुषो! अगर मैं कल संग्राम में यह काम न करूँ तो मुझे वे लोक न प्राप्त हों जिनमें पुण्यात्मा और शूरवीर क्षत्रिय जाते हैं। अगर मैं कल जयद्रथ को न मारूँ तो उन्हीं लोकों में जाऊँ जिनमें माता-पिता की हत्या करनेवाले, गुरु-स्त्री-गामी, चुग़लख़ोर, सज्जनों से डाह रखनेवाले और उन्हें वृथा कलङ्क लगाकर उनकी निन्दा करनेवाले पापी जाते हैं। अगर मैं कल जयद्रथ को न मारूँ तो उन्हीं लोकों में जाऊँ जिनमें किसी की धरोहर मार लेनेवाले, विश्वासघाती, पर-स्त्री-गामी, दूसरे को बदनाम करनेवाले, ब्रह्महत्या और गोहत्या करनेवाले तथा देवता पितर अतिथि अग्नि आदि को दिये बिना अकेले ही पायस यवान्न साग कृसर (खिचड़ी या तिल-चावल) संयाव (हलुवा) पुये मांस आदि खानेवाले पातकी जाते हैं। अगर कल मैं जयद्रथ का वध न करूँ तो उन्हीं लोकों में जाऊँ जिनमें वेदपाठी ब्रह्मचारी ब्राह्मण का और वृद्धजन गुरु-जन साधुजन आदि का अनादर करनेवाले जाते हैं। अगर कल मैं जयद्रथ के प्राण न ले लूँ

२१

३० तो वही कष्टदायक नरक-गति मुझे भी प्राप्त हो जो ब्राह्मण, गाय और अग्नि को पैर से छूनेवालों और जल में थूकने या मल-मूत्र त्याग करनेवालों की होती है। नङ्गा होकर नहानेवाला, अतिथि-अभ्यागत को विमुख करनेवाला, रिश्वत लेनेवाला, झूठ बोलनेवाला, धोखा देनेवाला, वञ्चक, अपनी असली औक़ात या कार्यों को छिपाकर अन्यथा प्रकट करनेवाला, झूठी ख़बर देनेवाला, भृत्य पुत्र स्त्री आश्रितजन आदि के सामने उन्हें दिये बिना अकेले मिठाई आदि खानेवाला जिस बुरी गति को प्राप्त होता है वही गति मेरी हो, अगर मैं कल जयद्रथ का वध न करूँ। जो नीच प्रकृति का पुरुष अपने आश्रित अच्छे स्वभाववाले और आज्ञा-पालन करनेवाले का त्याग कर देता है, उसका पालन-पोषण नहीं करता अथवा अपने साथ उपकार करनेवाले की निन्दा करता है, उसी की सी बुरी गति मेरी भी हो, अगर मैं जयद्रथ-वध की प्रतिज्ञा पूरी न करूँ। पूजनीय सुपात्र परोसी को श्राद्ध की आहार-सामग्री आदि न देनेवाला और अयोग्य तथा शूद्रा या रजस्वला कन्या से ब्याह करनेवाले ब्राह्मणों को श्राद्ध में भोजन करानेवाला, मदिरा पीनेवाला, लोक और शास्त्र की मर्यादा को तोड़नेवाला, कृतघ्न तथा अपने मालिक की निन्दा करनेवाला जिस बुरी गति को प्राप्त होता है वही गति मेरी भी हो, अगर मैं कल जयद्रथ-वध की प्रतिज्ञा पूरी न करूँ। अगर मैं कल जयद्रथ को न मारूँ तो मेरी भी वही गति हो जो सव्य होकर (बायें हाथ से) भोजन करनेवाले या गोद में रखकर खानेवाले, पलाश के आसन पर बैठनेवाले, तिन्दुक से दतून करनेवाले, सबेरे तक सोनेवाले, ठण्ड से डरकर न नहानेवाले ब्राह्मण, कायर क्षत्रिय, जिस गाँव में एक ही कूप हो

४० और कोई वेदपाठी न रहता हो उस गाँव में छः महीने तक रहनेवाले, शास्त्र की निन्दा करनेवाले, दिन को मैथुन करने और सोनेवाले, किसी के घर में आग लगा देनेवाले, किसी को विष खिला देनेवाले और अग्निहोत्र न करनेवाले की होती है। पानी पीती हुई गाय को हँका देनेवाले, रजस्वला-गमन करनेवाले, कन्या बेचनेवाले, पुरोहिती और सेवावृत्ति करनेवाले ब्राह्मण, मुख-मैथुन करनेवाले और ब्राह्मण को कुछ देने का वादा करके पीछे लोभ के मारे न देनेवाले मनुष्य की जो बुरी गति होती है वही गति मेरी भी हो, अगर मैं कल जयद्रथ को न मारूँ। जिन अधर्मियों का उल्लेख कर चुका हूँ और जिन पापियों का उल्लेख नहीं किया, उन सबकी सी बुरी गति मेरी हो, अगर मैं कल जयद्रथ को न मारूँ। मैं यह दूसरी प्रतिज्ञा करता हूँ कि अगर कल दिन डूबने से पहले पापी जयद्रथ जीता-जागता रहा तो मैं यहीं आग में जल मरूँगा। मैं सच कहता हूँ कि असुर, देवता, मनुष्य, पक्षी, नाग, पितर, निशाचर, ब्रह्मर्षि, देवर्षि और चराचर जगत्, कोई भी कल मेरे शत्रु जयद्रथ की रक्षा नहीं कर सकता। अभि-मन्यु की मृत्यु का मूलकारण जयद्रथ चाहे भागकर रसातल में घुस रहे, चाहे आकाश में चला जाय, चाहे देवलोक अथवा दैत्यलोक में भाग जाय, तथापि कल सबेरे मैं अवश्य अपने पैने सैकड़ों बाणों से उसका सिर काट डालूँगा।

यह कहकर वीर अर्जुन ने दाहने-बायें बड़े ज़ोर से गाण्डीव धनुष की डोरी बजाई। वह गाण्डीव का शब्द सब शब्दों को दबाकर आकाशमण्डल तक पहुँच गया। अर्जुन ५० जब इस प्रकार प्रतिज्ञा कर चुके तब श्रीकृष्ण ने अपना पाञ्चजन्य शङ्ख बजाया। अत्यन्त कुपित अर्जुन ने भी उनके साथ ही अपना दिव्य देवदत्त शङ्ख बजाया। श्रीकृष्ण के मुँह की हवा से परिपूर्ण पाञ्चजन्य के छिद्र से जो शब्द निकला उसने पाताल, स्वर्ग, दिशाओं के मण्डल और दिक्पालों को प्रलयकाल की तरह कँपा दिया। उस समय पाण्डवों के शिविर में अर्जुन की प्रतिज्ञा सुनकर हज़ारों बाजे और शङ्ख बजने लगे; सब वीर योद्धा हर्ष और उत्साह से सिंहनाद करने लगे। ५३

चौहत्तरवाँ अध्याय

अर्जुन की प्रतिज्ञा सुनकर जयद्रथ का घबराना और
द्रोणाचार्य का उसे ढाढ़स बँधाना

सञ्जय कहते हैं—महाराज! पुत्र की मृत्यु का बदला लेने के लिए उद्यत पाण्डवों का वह महाशब्द सुनकर जासूसों ने जाकर जयद्रथ को सब हाल कह सुनाया। सुनते ही घबराकर जयद्रथ उठ बैठे। वे शोक के मारे हक्का-बक्का होकर अत्यन्त दुःखित हुए। वे उस समय मानों अथाह अपार शोक के समुद्र में डूबने लगे। जयद्रथ बहुत सोच-विचारकर उसी समय अपने डेरे से वहाँ पर गये जहाँ दुर्योधन और सब राजा बैठे हुए थे। अर्जुन से डरे हुए जयद्रथ सब वीर राजाओं के सामने विलाप करते हुए, लज्जित भाव से, कहने लगे—हे राजाओ! पाण्डु की स्त्री कुन्ती के गर्भ से कामी इन्द्र के द्वारा उत्पन्न दुर्मति अर्जुन ने अकेले मुझको मार डालने की प्रतिज्ञा की है। आप लोगों का भला हो, मैं अपने प्राण बचाने के लिए अभी अपने देश को जाता हूँ। अथवा हे श्रेष्ठ क्षत्रियो, आप सब लोग मिलकर अपने अस्त्रबल के प्रभाव से मेरी रक्षा कीजिए। अर्जुन मेरे प्राण लेना चाहता है, आप लोग मेरी रक्षा करने का वचन मुझे दें। द्रोणाचार्य, कृपाचार्य, कर्ण, दुर्योधन, शल्य, वाह्लीक और दुःशासन आदि योद्धा चाहें तो साक्षात् काल के हाथ से भी मुझे छुड़ा सकते हैं। तो फिर क्या मार डालने के लिए उद्यत अकेले अर्जुन से आप सब राजा लोग मुझे नहीं बचा सकते? पाण्डवों की प्रतिज्ञा और हर्षध्वनि सुनकर मैं बहुत ही डर गया हूँ। मरनेवाले मनुष्य की तरह मेरे अङ्ग शिथिल हो रहे हैं। अवश्य ही गाण्डीवधन्वा अर्जुन ने मेरे वध की प्रतिज्ञा की है इसी कारण, शोक करने के समय भी, पाण्डव हर्ष प्रकट करते हुए सिंह की तरह गरज रहे हैं। मेरी समझ में तो मनुष्यों की १० कौन कहे, सब देवता, गन्धर्व, असुर, नाग, राक्षस आदि भी मिलकर अर्जुन की प्रतिज्ञा

को मिथ्या नहीं कर सकते। इसलिए आप लोग मुझे अनुमति दीजिए कि मैं अपनी जान लेकर अपने घर चला जाऊँ। आप लोगों का भला हो। मैं यहाँ से भागकर ग़ायब हो जाऊँगा तो पाण्डव मुझे यहाँ देख ही न पावेंगे।

डर और शङ्का से व्याकुल जयद्रथ को इस तरह विलाप करते देखकर अपने काम को ही श्रेष्ठ माननेवाले राजा दुर्योधन यों कहकर उन्हें दिलासा देने लगे—हे पुरुषसिंह, तुम डरो मत। इतने वीर क्षत्रियों के बीच में तुम रहोगे फिर कौन युद्धभूमि में तुम पर आक्रमण करने का साहस कर सकेगा? देखो मैं, वीर कर्ण, चित्रसेन, विविंशति, भूरिश्रवा, शल, शल्य, दुर्द्धर्ष वीर वृषसेन, पुरुमित्र, जय, भोज, काम्बोजराज सुदक्षिण, सत्यव्रत, महाबाहु विकर्ण, दुर्मुख, दुःशासन, सुबाहु, सशस्त्र कलिङ्गराज, अवन्ति देश के दोनों भाई विन्द और अनुविन्द, द्रोणाचार्यजी, अश्वत्थामा, शकुनि तथा और भी अनेक देशों के राजा लोग अपनी-अपनी सेना साथ लेकर तुम्हारी रक्षा करेंगे। तुम अपने मन से यह चिन्ता दूर कर दो। तुम ख़ुद भी तो श्रेष्ठ रथी और शूर हो। फिर क्यों पाण्डवों से इतना डर रहे हो? मेरी ग्यारह अक्षौहिणी
२० सेना तुम्हारी रक्षा करने के लिए जी खोलकर युद्ध करेगी। हे वीर सिन्धुराज! तुम मत डरो।

सञ्जय कहते हैं—महाराज! सिन्धुराज जयद्रथ को इस तरह दिलासा देकर राजा दुर्योधन उन्हें साथ लिये हुए रात को ही द्रोणाचार्य के स्थान पर पहुँचे। आचार्य को प्रणाम करके दोनों बैठ गये। तब जयद्रथ ने विनीत भाव से कहा—हे आचार्य! निशाने पर बाण मारने, दूर तक बाण चलाने, फुर्ती और दृढ़ प्रहार करने में अर्जुन में और मुझमें क्या अन्तर है? आप कृपा करके मुझे बताइए। द्रोणाचार्य ने कहा—हे तात! अर्जुन और तुम दोनों ही मेरे शिष्य हो और मैंने दोनों को बाण-विद्या की एक सी शिक्षा दी है। किन्तु अर्जुन ने अधिक अभ्यास करके और कष्ट सहकर तुमसे अधिक निपुणता प्राप्त कर ली है। इसी कारण अर्जुन तुमसे सब बातों में बढ़कर हैं। परन्तु युद्ध में अर्जुन से तुम्हें बिलकुल न डरना चाहिए; क्योंकि इस डर से मैं तुम्हारी रक्षा करूँगा। मेरे बाहुबल से रक्षित पुरुष का देवता भी कुछ नहीं बिगाड़ सकते। मैं कल ऐसे व्यूह की रचना करूँगा, जिसे अर्जुन किसी तरह नहीं तोड़ सकेंगे। इसलिए तुम निडर होकर युद्ध करो। हे महारथी! अपने क्षत्रिय-धर्म का पालन करके बाप-दादे की राह पर चलो। तुमने विधिपूर्वक वेदों को पढ़ा है, तुम अग्निहोत्र करते हो और बहुत से यज्ञ भी कर चुके हो। तुम तो सब तरह कृतार्थ हो चुके हो। अब तुम्हें मृत्यु से न डरना चाहिए। अगर तुम अर्जुन से लड़कर मारे भी जाओगे तो मन्द मनुष्यों के लिए दुर्लभ और महाभाग्य से मिलनेवाले मनुष्य-शरीर का पाना सफल हो जायगा; तुम बाहु-
३० बल से जीते हुए दिव्य लोकों में जाओगे। अपने मन में ख़ूब समझ लो कि यादव, कौरव, पाण्डव, मैं और मेरा पुत्र कोई अमर नहीं है; सबको एक दिन मरना ही होगा। बली काल

किसी को नहीं छोड़ेगा। हम सब बारी-बारी से मरेंगे और अपने-अपने कर्मों को साथ ले जायँगे। तपस्वी लोग कठोर तप करके जिन लोकों को जाते हैं उन्हीं लोकों को क्षत्रिय-धर्म का पालन करनेवाले वीर पुरुष भी पाते हैं।

आचार्य के ये वचन सुनने से सिन्धुराज जयद्रथ को सहारा मिला। उन्होंने अर्जुन का डर छोड़कर युद्ध करने का निश्चय कर लिया। महाराज! उस समय कौरव-सेना के लोग भी प्रसन्न होकर कोलाहल और सिंहनाद करने लगे। चारों ओर बाजे बजने लगे। ३५

पचहत्तरवाँ अध्याय

अर्जुन और श्रीकृष्ण की बातचीत

सञ्जय कहते हैं कि राजन्! इधर महात्मा श्रीकृष्ण, अर्जुन के प्रतिज्ञा करने पर, उनसे बोले—हे अर्जुन! तुमने न मुझसे ही सलाह ली और न भाइयों की ही राय पूछी और जयद्रथ के मारने की दुष्कर प्रतिज्ञा कर बैठे। यह तुमने बड़े ही साहस का काम किया। यह बहुत बड़ा बोझ तुमने अपने सिर पर उठा लिया है। मुझे यही चिन्ता है कि कहीं प्रतिज्ञा पूरी न कर सकने पर हम लोग लोगों के उपहास के पात्र न हों! मैंने जिन गुप्तचरों को दुर्योधन के शिविर में भेजा था, वे वहाँ से चटपट आकर मुझसे वहाँ का सब हाल कह गये हैं। उनका कहना है कि तुमने जब जयद्रथ के मारने की प्रतिज्ञा की तब यहाँ होनेवाले सिंहनाद और बाजों के शब्द सुनकर धृतराष्ट्र के सब पुत्र बहुत डरे और जयद्रथ भी घबरा गया। वे लोग सोचने लगे कि शत्रु-शिविर में अकस्मात् यह सिंहनाद क्यों हो रहा है। इसका कोई कारण अवश्य है। इसके उपरान्त कौरव लोग युद्ध के लिए सुसज्जित होने लगे। उनके शिविर में युद्ध के लिए तैयार होनेवाले हाथी, घोड़े, रथ और पैदल आदि का शब्द सुनाई पड़ने लगा। वे लोग यह सोचकर युद्ध की तैयारी करने लगे कि अभिमन्यु के मारे जाने की ख़बर से शोकाकुल अर्जुन क्रोधान्ध होकर रात को ही आक्रमण कर देंगे। हे अर्जुन! कौरवों ने भी अपने जासूसों से तुम्हारी जयद्रथ-वध की प्रतिज्ञा और उसे पूरा करने के लिए क़समें खाना सुन लिया है। तब क्षुद्र मृगों की तरह दुर्योधन के अनुचर और राजा जयद्रथ उदास हो गये। १० इसके बाद सिन्धु-सौवीर देश का राजा जयद्रथ अपने अनुचरों के साथ दीनभाव से दुर्योधन की राजसभा में गया। वहाँ मन्त्रणा के समय अपने बचाव की सब सलाहें सोचकर राजसभा में वह दुर्योधन से कहने लगा कि हे राजन्! मुझे ही अपने बेटे की मृत्यु का कारण जानकर कल सवेरे अर्जुन मुझे मारने के लिए युद्ध करेंगे। उन्होंने अपनी सब सेना के बीच में मेरे मारने की प्रतिज्ञा की है। मुझे विश्वास है कि देवता, गन्धर्व, असुर, राक्षस आदि कोई

भी अर्जुन की प्रतिज्ञा को टाल नहीं सकता। इसलिए अब आप लोग मेरी रक्षा का उपाय कीजिए। ऐसा न हो कि मौक़ा पाकर अर्जुन अपनी प्रतिज्ञा पूरी कर लें। आप लोग जो उपाय उचित समझें सो करें। यदि आप लोग अच्छी तरह मेरी रक्षा न कर सकें तो हे कुरुनन्दन! मुझे आज्ञा दीजिए, मैं अपने घर चला जाऊँ।

घबराये हुए जयद्रथ के यों कहने पर दुर्योधन ने उदास होकर सिर झुका लिया और वह सोच में पड़ गया। दुर्योधन को अत्यन्त चिन्तित देखकर राजा जयद्रथ कोमल, अपने हित के, आक्षेपपूर्ण वचन इस प्रकार कहने लगा—महाराज! आपके दल में मुझे कोई ऐसा पराक्रमी योद्धा नहीं देख पड़ता जो महायुद्ध में अपने अस्त्र से अर्जुन के अस्त्र को रोक सके। वासुदेव जिनके सहायक हैं वे अर्जुन जब गाण्डीव धनुष को. मण्डलाकार घुमावेंगे तब उनके २० आगे कौन ठहर सकेगा? साक्षात् इन्द्र भी तो नहीं ठहर सकते। सुना जाता है कि पराक्रमी अर्जुन ने किसी समय पैदल ही महेश्वर से हिमालय पर्वत पर युद्ध किया था। उन्होंने इन्द्र के कहने से अकेले ही हिरण्यपुर-निवासी हज़ारों दानवों को मार डाला था। मेरी समझ में तो बुद्धिमान् वासुदेव के साथ वीर अर्जुन देवगण सहित त्रिभुवन को भी नष्ट कर सकते हैं। इसी कारण मैं प्रार्थना करता हूँ कि या तो आप यह वादा कीजिए कि अपने वीर पुत्र अश्वत्थामा सहित महात्मा द्रोणाचार्य मेरी रक्षा करेंगे और या मुझे यहाँ से अपने घर जाने की आज्ञा दीजिए।

हे अर्जुन! राजा दुर्योधन ने ख़ुद द्रोणाचार्य से जयद्रथ की रक्षा करने के लिए विशेष रूप से प्रार्थना की है। देखो, द्रोणाचार्य ने तुम्हारी प्रतिज्ञा व्यर्थ करके जयद्रथ के प्राण बचाने की तैयारी शुरू कर दी है। सब योद्धा और उनके रथ, युद्ध के लिए, अभी से तैयार हो रहे हैं। द्रोणाचार्य ने विचित्र व्यूह की रचना की है; उसका पिछला आधा हिस्सा पद्मव्यूह है और आगे का आधा हिस्सा शकटव्यूह। पद्मव्यूह का जो अंश है उसके मध्य में एक और सूचीमुख व्यूह बनाया गया है। उसी सूचीव्यूह के पिछले हिस्से में जयद्रथ रहेगा। कर्ण, भूरिश्रवा, अश्वत्थामा, दुर्जय वृषसेन, कृपाचार्य और शल्य ये छः महारथी उस व्यूह के अग्रभाग की रक्षा करेंगे। हे पार्थ! ये छहों महारथी धनुर्विद्या, अस्त्रकौशल, वीर्य, दम और कस में अद्वितीय और दुर्द्धर्ष हैं। हे अर्जुन! तुम इन छहों में से हर एक के बल-वीर्य के बारे में अलग-अलग विचार करके देखो। फिर जब ये छहों मिलकर युद्ध करेंगे तब इन्हें सहज में जीत लेना सर्वथा असम्भव होगा। अतएव मैं मन्त्रणा-निपुण, दूरदर्शी, बुद्धिमान्, हितैषी मन्त्रियों के ३१ साथ फिर कार्यसिद्धि और अपने हित का उपाय सोचूँगा।

छियत्तरवाँ अध्याय

अर्जुन का श्रीकृष्ण से अपनी शक्ति का वर्णन करना

अर्जुन ने कहा—हे वासुदेव ! दुर्योधन के जिन छः महारथियों को आप बहुत बलवान् मानते हैं वे, मेरी समझ में, सब मिलकर भी मेरे समान नहीं हैं। मैं तो समझता हूँ कि उनका बल-वीर्य मेरे आधे बल-वीर्य के बराबर भी नहीं है। हे मधुसूदन ! आप देखेंगे कि मैं जयद्रथ को मारने की इच्छा से इन सबके अस्त्र-शस्त्रों को अपने अस्त्र-शस्त्रों से निष्फल कर दूँगा। अपने अनुचरों सहित द्रोणाचार्य खड़े देखते रहेंगे और मैं अपने बाणों से जयद्रथ का सिर काटकर गिरा दूँगा। यदि साध्यगण, ग्यारहों रुद्र, आठों वसु, अश्विनीकुमार, मरुद्गण, इन्द्र, विश्वेदेवा, अन्य लोकपालगण, पितर, गन्धर्व, गरुड़, समुद्र, स्वर्ग, आकाश, यह पृथ्वी, सब दिशाएँ, दिक्पाल देवता, गाँव के और वन के सब जीव, स्थावर और जङ्गम प्राणी मिल करके सिन्धुराज जयद्रथ की रक्षा करेंगे तो भी कल सवेरे आप मेरे बाणों से रण में उसको मरा हुआ ही देखेंगे। हे श्रीकृष्ण ! मैं यह बात सत्य की क़सम खाकर और शस्त्र छूकर कहता हूँ। हे केशव ! उस पापी जयद्रथ की रक्षा करनेवाले महारथी द्रोणाचार्य के ऊपर ही मैं

सबसे पहले आक्रमण करूँगा। दुष्ट दुर्योधन का विश्वास है कि द्रोणाचार्य के ऊपर ही उसकी हार-जीत निर्भर है। इसलिए उन्हीं द्रोणाचार्य की सेना के अगले भाग को चीर करके मैं जयद्रथ के पास पहुँचूँगा। कल आप देखेंगे कि वज्रपात से जैसे पहाड़ों के शिखर फटते हैं वैसे ही बड़े-बड़े वीर योद्धा मेरे तीक्ष्ण बाणों से विदीर्ण हो-होकर युद्धभूमि में गिर रहे हैं। गिरते हुए और गिरे हुए मेरे तीक्ष्ण बाणों से विदीर्ण-देह नर, हाथी, घोड़े आदि के शरीरों से रक्त की नदी बह चलेगी। मेरे गाण्डीव धनुष से छूटे हुए, मन और हवा के समान वेग से जानेवाले, तीक्ष्ण बाण हज़ारों मनुष्यों, हाथियों और घोड़ों के जीवन को नष्ट करेंगे। इस महायुद्ध में योद्धा लोग मेरे उन महाघोर अस्त्रों को देखेंगे जिन्हें मैंने इन्द्र, यम, कुबेर, रुद्र और वरुण आदि देवताओं से प्राप्त किया है। हे श्रीकृष्ण ! कल आप देखेंगे कि जयद्रथ की रक्षा

११

करनेवालों के अस्त्रों को मैं ब्रह्मास्त्र के प्रयोग से नष्ट करूँगा। कल युद्ध में आप देखेंगे कि मैं अपने बाणों के वेग से राजाओं के सिर काटकर उनसे रणभूमि को पाट दूँगा। मैं मांसाहारी जीवों को तृप्त करूँगा, शत्रुपक्ष की सेना को मार भगाऊँगा, मित्रों को प्रसन्न करूँगा और जयद्रथ को मारूँगा। बहुत से अपराध करनेवाला, निन्दित नातेदार, पापदेश में उत्पन्न राजा जयद्रथ मेरे हाथ से मरकर अपने आत्मीयों को शोक में डालेगा। सिन्धुदेश के सब दूध-भात के खानेवाले, पापाचारी क्षत्रिय अपने राजा जयद्रथ के साथ मेरे बाणों से मर-मरकर यमपुर को जायँगे। हे श्रीकृष्ण! कल सवेरे मैं ऐसा अद्भुत कर्म करूँगा जिससे दुर्योधन को मानना पड़ेगा कि त्रिभुवन में मेरे समान दूसरा योद्धा नहीं है। मेरा गाण्डीव दिव्य धनुष है, मैं स्वयं युद्ध
२० करनेवाला हूँ और आप मेरे सारथी हैं। फिर मैं किसे परास्त नहीं कर सकता? भगवन्! आपकी कृपा से मैंने समर में कहाँ विजय नहीं पाई? मुझे अजेय दुर्द्धर्ष जानकर भी, मेरे असह्य पराक्रम को जानकर भी, आप क्यों मेरा तिरस्कार कर रहे हैं? चन्द्रमा में चिह्न और समुद्र में जल जैसे स्थिर हैं वैसे ही मेरी प्रतिज्ञा भी अटल है। हे वासुदेव! आप मेरी, मेरे अस्त्रों की, दृढ़ दिव्य धनुष की और मेरे बाहुबल की अवमानना न कीजिए। मैं संग्राम में इस तरह जाऊँगा कि किसी से नहीं हारूँगा और सबको जीत लूँगा। मेरी सत्य प्रतिज्ञा है। आप जयद्रथ को मरा हुआ ही समझिए। ब्राह्मण में सत्य, सज्जनों में नम्रता, यज्ञ में श्री और नारायण में जय नित्य निरन्तर विराजमान है।

सञ्जय कहते हैं कि महाराज! श्रीकृष्ण से यों कहकर, आप अपने पराक्रम का वर्णन करने के उपरान्त, अपनी शक्ति पर भरोसा करके अर्जुन ने कहा—हे श्रीकृष्ण! आप ऐसा
२७ उद्योग कीजिए जिसमें सवेरा होते ही मुझे रथ तैयार मिले और मेरी प्रतिज्ञा पूरी हो।

सतहत्तरवाँ अध्याय

श्रीकृष्ण का अपनी बहन सुभद्रा को समझाना

सञ्जय कहते हैं—महाराज! दुःख और शोक से पीड़ित अर्जुन और श्रीकृष्ण ने वह रात जागकर ही बिता दी। वे क्रुद्ध साँप की तरह साँसें लेते रहे। इस तरह नर और नारायण को अत्यन्त कुपित जानकर इन्द्र आदि सब देवता बहुत ही घबराये और व्यथित होकर सोचने लगे कि इसका फल क्या होगा। कौन सी दुर्घटना, कौन सा महा अनर्थ होनेवाला है? उस समय अत्यन्त दारुण आँधी धूल उड़ाती हुई वेग से चलकर घोर अमङ्गल की सूचना देने लगी। आदित्यमण्डल में कबन्ध और मण्डल (परिध) देख पड़ने लगा। बिना मेघों के दारुण वज्राघात शब्द होने लगे, कड़क-कड़ककर बिजलियाँ गिरने लगीं। पर्वत-

वन-सहित पृथ्वी वारम्वार काँपने लगी। बड़े-बड़े जल-जन्तुओं के निवासस्थान समुद्र क्षोभ को प्राप्त होने लगे। नदियों की धाराएँ उलटी बहने लगीं। मांसाहारी जीवों को आनन्दित और यमपुरी को परिपूर्ण करने के लिए रथियों, हाथियों, घोड़ों और पैदलों के दोनों ओठ फड़कने लगे। सब वाहन एक साथ मल-मूत्र त्याग करते हुए रोने लगे। इन दारुण उत्पातों को देखकर और महावली अर्जुन की उग्र प्रतिज्ञा का हाल सुनकर आपके पक्ष के सब योद्धा और सैनिक अत्यन्त व्यथित और खिन्न हो गये।

इधर महावीर अर्जुन ने कृष्णचन्द्र से कहा—हे केशव! आप जाकर अपनी बहन सुभद्रा, बहू उत्तरा और उसकी सखियों को समझाइए; उनका शोक दूर कीजिए। सामवाक्य, सत्योपदेश आदि के द्वारा किसी तरह उनको ढाढ़स बँधाइए। अर्जुन के यों कहने पर अत्यन्त उदास कृष्णचन्द्र अर्जुन के घर में गये और वहाँ पुत्र-शोक से पीड़ित, व्याकुल, अपनी बहन सुभद्रा को इस तरह समझाने लगे—सुनो बहन! तुम और तुम्हारी बहू उत्तरा दोनों ही वीर कुमार अभिमन्यु की मृत्यु के लिए शोक मत करो। हे सुभद्रा! काल के द्वारा सभी प्राणियों की एक दिन यही गति होती है। उत्तम कुल में उत्पन्न वीर क्षत्रियश्रेष्ठ अभिमन्यु की मृत्यु उसके योग्य ही हुई है; सम्मुखयुद्ध में लड़ते-लड़ते मरना क्षत्रियोचित मृत्यु है। इसलिए तुम पुत्र की मृत्यु का शोक मत करो। मैं तो इसे उसके लिए बड़े भाग्य की बात मानता हूँ, जो पिता के तुल्य पराक्रमी धीर महारथी अभिमन्यु क्षत्रियधर्म के अनुसार उस गति को प्राप्त हुआ, जिसकी सब क्षत्रिय इच्छा करते हैं। बहुत से शत्रुओं को जीतकर और मारकर वीर अभिमन्यु उन अक्षय लोकों को गया है जहाँ पुण्यात्मा लोग जाते हैं और सब तरह की इच्छाएँ पूरी होती हैं। सज्जन लोग तप, ब्रह्मचर्य, वेद-शास्त्र के अध्ययन और प्रज्ञा आदि सत्कर्मों के द्वारा जो गति प्राप्त करने का उद्योग करते हैं, वही गति तुम्हारे पुत्र को प्राप्त हुई है। हे सुभद्रा! तुम वीर बालक की माता, वीर पति की पत्नी, वीर पिता की बेटी और वीर भाई की बहन हो। इसलिए तुम्हें अपने पुत्र का शोक न करना चाहिए। उसको परमगति प्राप्त

१०

हुई है। बहन ! तुम धीरज धरो, पापमति बाल-घातक जयद्रथ बहुत जल्द अपने इष्ट-मित्र-अनुचर आदि सहित अपने किये का फल भोगेगा। यह रात बीतते ही पापी जयद्रथ इन्द्र की अमरावती पुरी में भी जाकर क्यों न अपनी जान बचाना चाहे, लेकिन अर्जुन के हाथ से जीता नहीं बचेगा। यह निश्चित समझो कि कल के दिन जयद्रथ का सिर धड़ पर न रहेगा। इस-
२० लिए शोक करना छोड़ो, रोना बन्द करो। फिर यह भी विचार करो कि वह वीर बालक जिस तरह क्षत्रियधर्म का पालन करते-करते श्रेष्ठ गति को प्राप्त हुआ है, उसी तरह हम लोग और अन्य सब शस्त्रधारी लोग एक दिन उसी गति को पहुँचेंगे। चौड़ी छाती और बड़ी बाहुओंवाला महारथी अभिमन्यु असंख्य शत्रुओं के आगे से नहीं हटा और लड़ते-लड़ते हज़ारों शत्रुओं को मारकर स्वर्ग को गया है। इसलिए तुम सब शोक-सन्ताप करना छोड़ो। बहन, अपनी बालिका बहू को ढाढ़स बँधाओ और ख़ुद शोक करना छोड़ो। सबेरे शत्रु के मारे जाने की ख़बर सुनने से तुम्हारा शोक दूर हो जायगा। अर्जुन ने जो प्रतिज्ञा की है वह अवश्य पूरी होगी, वह मिथ्या नहीं हो सकती। तुम्हारे पति जो करना चाहते हैं वह कदापि निष्फल नहीं होता। मैं फिर कहता हूँ कि अगर मनुष्य, नाग, पिशाच, राक्षस, पक्षी, देवता, दैत्य आदि सब मिलकर युद्धभूमि में जयद्रथ की रक्षा करेंगे, तो भी कल सबेरे उन सबके
२६ साथ जयद्रथ जीवित नहीं रह सकता।

अठहत्तरवाँ अध्याय

सुभद्रा का विलाप और श्रीकृष्ण का उन्हें फिर समझाना-बुझाना

सञ्जय कहते हैं कि राजन् ! पुत्रशोक से विह्वल और अत्यन्त दुःखित सुभद्रा, श्रीकृष्ण के ये वाक्य सुनकर, इस तरह विलाप करने लगीं—हा पुत्र ! तुम तो पिता के तुल्य पराक्रमी थे, फिर कैसे संग्राम में शत्रुओं के हाथ से मारे गये ! नीलकमल के समान साँवला, सुन्दर दाँतों और विशाल नेत्रों से शोभित तुम्हारा मनोहर मुख आज युद्धभूमि की धूल से भरा हुआ कैसा दिखाई पड़ रहा है ! अवश्य ही सब लोग देख रहे होंगे कि सुन्दर सिर, ग्रीवा, बाहु, कन्धे, चौड़ी छाती, गम्भीर नाभि और मनोहर लोचनों से शोभायमान, सारे शरीर में लगे हुए शस्त्रों के घावों से अलङ्कृत, शूर, संग्राम से पीछे न हटनेवाले तुम पृथ्वी पर उदय हुए चन्द्रमा के समान पड़े हुए हो। हाय, अभी तो तुम्हारी शुरू जवानी थी, तुम्हारे सुन्दर अङ्ग अभी परिपुष्ट हुए थे। पहले जो बहुमूल्य कोमल प्रार्थनीय बिछौनोंवाली सुख-शय्या पर लेटते थे, वही सुख-भोग के योग्य तुम आज कैसे बाणों से बिंधे हुए युद्धभूमि में पड़े हुए हो और गिदड़ियाँ तुमको घेरे हुए हैं। पहले जिस महाबाहु को सुन्दरी स्त्रियाँ घेरे रहती थीं और प्रसन्नचित्त सूत-मागध-

वन्दीजन स्तुतिपूर्वक जिसकी उपासना करते थे, वही तुम आज युद्धभूमि में पड़े हुए हो और मांसाहारी जीव तुम्हारे चारों ओर घोर शब्द से चिल्ला रहे हैं। हाय पुत्र! वीर पाञ्चाल, पाण्डव और यादव तुम्हारे सहायक थे, फिर किसने किस तरह अनाथ की भाँति तुमको मार डाला? हाय निष्पाप पुत्र! मुझ अभागिन के नेत्र तुमको देखकर तृप्त नहीं होते थे; इसलिए तुम्हें देखने को अवश्य आज मैं यमराज की पुरी को जाऊँगी। हे पुत्र! तुम्हारे विशाल नेत्र, मनोहर केश, सुगन्धित मुख और मधुर वचनों से युक्त व्रणशून्य मुखमण्डल को अब मैं फिर कब देखूँगी? भीमसेन के बल, अर्जुन की धनुर्विद्या, यादवों और पाञ्चालों के बाहुबल तथा केकय-मत्स्य-सृञ्जय आदि देशों के वीरों को धिक्कार है, जो वे युद्धभूमि में तुम्हारी रक्षा नहीं कर सके। मेरे नेत्र शोक के आँसुओं से व्याकुल हैं। अभिमन्यु को न देखने के कारण आज मुझे सारी पृथ्वी अन्धकारमयी और सूनी देख पड़ रही है। तुम वासुदेव के भानजे, अर्जुन के वीर पुत्र और अतिरथी थे। संग्रामभूमि में तुम्हारी लाश को मैं कैसे देख सकूँगी! हे पुत्र! आओ आओ, तुम्हें भूख लगी होगी, मेरे स्तनों में दूध भरा हुआ है। मुझ मन्दभागिनी की गोद में बैठकर दूध पी लो। मैं तुम्हें देखकर तृप्त नहीं हुई हूँ। हाय वीर! तुम स्वप्न के मिले धन की तरह दिखाई पड़कर अचानक नष्ट हो गये। अहो, मनुष्य-शरीर अनित्य और जल में उठनेवाले बुल्ले की तरह चञ्चल है। बेटा अभिमन्यु! तुम्हारी यह तरुणी भार्या उत्तरा, तुम्हारे शोक से, व्याकुल हो रही है। वृषभ-हीन गाय की तरह बिलखती हुई इस बहू को मैं किस तरह समझाऊँगी और रक्खूँगी? अहो, पुत्र! सङ्कट-समय में मुझे छोड़कर तुम चले गये। जब पुत्र के होने का फल मिलने का समय आया तब तुम मुझे दर्शनों को तरसती छोड़ चल बसे! काल की गति को बड़े-बड़े समझदार भी नहीं जान सकते! कौन जानता था कि केशव ऐसे सहायक रक्षक के रहते तुम यों अनाथ की तरह संग्राम में मारे जाओगे! अच्छा, जाओ पुत्र! यज्ञ करनेवाले, दानी, जितेन्द्रिय, आत्मज्ञानी ब्राह्मण, ब्रह्मचारी, पुण्य तीर्थों में नहानेवाले, कृतज्ञ, उदार, गुरुसेवा-परायण और सहस्र दक्षिणा दान करनेवाले धर्मात्माओं की जो गति होती है वही श्रेष्ठ गति तुमको मिले। संग्राम में पीठ न दिखानेवाले योद्धा लोग युद्ध में शत्रुओं को मारकर मरने पर जो गति पाते हैं वही गति तुम्हें मिले। सहस्र गोदान करनेवालों, यज्ञ के लिए दान करनेवालों, सब सामग्री सहित गृह-दान करनेवालों की जो शुभ गति होती है; आश्रय देने योग्य ग़रीब ब्राह्मणों को धन-रत्न दान करनेवालों, निरभिमान और संन्यासियों की जो गति होती है; अथवा दण्डनीय पापियों को उचित दण्ड देनेवालों की जो गति होती है, वही गति तुम्हें प्राप्त हो। व्रतधारी मुनियों को ब्रह्मचर्य-पालन करने से और पतिव्रताओं को पति-सेवा से जो गति मिलती है, वही गति तुम्हें प्राप्त हो। सदाचार का पालन करके राजा लोग जिस श्रेष्ठ गति को पाते हैं, चारों आश्रमों के लोग अपने-अपने धर्म का पालन करके

और पुण्यात्मा लोग पुण्य की रक्षा करके जो सनातनी गति पाते हैं, वही गति तुम्हें प्राप्त हो। दीन जनों पर दया करनेवाले, सदा सबको बाँटकर खानेवाले और छल-प्रपञ्च या चुग़ली न करनेवाले जिस गति को पाते हैं वही गति तुम्हें प्राप्त हो। जो लोग व्रत-नियम आदि का पालन करते हैं, धर्मात्मा हैं, गुरुजन की सेवा करते हैं और अतिथि को विमुख नहीं जाने देते उन्हें जो गति प्राप्त होती है वही शुभ गति तुम्हें प्राप्त हो। कष्ट और सङ्कट के समय जो अपने को ३० सँभाले रहते हैं, शोक की आग में जलकर भी जो धैर्य को नहीं छोड़ते, सदा माता-पिता की सेवा करते रहते हैं और अपनी स्त्री के सिवा अन्य स्त्री की ओर आँख उठाकर नहीं देखते, उन्हें जो गति प्राप्त होती है, वही गति तुम्हें प्राप्त हो। ऋतुकाल में अपनी स्त्री का सहवास करनेवालों और परस्त्री-गमन से विमुख मनीषी पुरुषों को जो गति प्राप्त होती है वही गति तुम्हें प्राप्त हो। जो ईर्ष्याशून्य पुरुष सबको समदृष्टि से देखते हैं, किसी को मर्मपीड़ा नहीं पहुँचाते और जो क्षमाशील हैं उनको जो गति प्राप्त होती है वही गति तुम्हें प्राप्त हो। जो लोग मदिरा नहीं पीते; मांस नहीं खाते; मद, दम्भ, झूठ, पर-सन्ताप और अन्याय से बचे रहते हैं, उन्हें जो गति प्राप्त होती है वही गति तुम्हें प्राप्त हो। लोक-लज्जा का ख़याल रखनेवाले, सब शास्त्रों के ज्ञाता, ज्ञान से ही तृप्त, जितेन्द्रिय सज्जनों को जो गति प्राप्त होती है वही गति तुम्हें प्राप्त हो।

शोक से पीड़ित होकर सुभद्रा दीन भाव से इस तरह विलाप कर रही थीं, इसी समय उत्तरा को साथ लिये द्रौपदी भी वहाँ आ गईं। वे सब बहुत विलाप करके रोने लगीं। वे अत्यन्त दुःख से उन्मत्त सी और अचेत होकर पृथ्वी पर गिर पड़ीं। अत्यन्त दुःखित श्रीकृष्ण ने दुःख से विह्वल सुभद्रा को अनेक उपचारों से सचेत किया। पानी छिड़ककर वे उनको होश में लाये। इसके बाद कृष्णचन्द्र ने अचेत सी, रोती-काँपती हुई, पृथ्वी पर लोट रही सुभद्रा से कहा—बहन, तुम पुत्र के लिए शोक मत करो। और हे पाञ्चाली द्रौपदी, ४० तुम उत्तरा को समझाओ। क्षत्रियश्रेष्ठ वीर अभिमन्यु उस प्रशंसनीय गति को प्राप्त हुआ है जिसके लिए क्षत्रिय लोग सदा लालायित रहते हैं। हे वरानने! मैं तो यही चाहता हूँ कि हम लोगों के कुल में और जितने पुरुष हैं वे यशस्वी अभिमन्यु की सी गति पावें। हम लोग और हमारे पक्ष के सब लोग मिलकर जो कर सकते हैं वह तुम्हारे अकेले महारथी पुत्र ने कर दिखाया है। इसलिए उसकी मृत्यु कदापि शोचनीय नहीं है।

कृष्णचन्द्र इस तरह अपनी बहन, द्रौपदी और उत्तरा को समझा-बुझाकर अर्जुन के पास गये। वहाँ राजाओं, मित्रों और अर्जुन को विश्राम के लिए आज्ञा देकर वे ख़ुद विश्राम करने ४४ के लिए अन्तःपुर में गये। और सब लोग भी अपने-अपने डेरे में विश्राम करने के लिए गये।

उन्नासीवाँ अध्याय

श्रीकृष्ण और दारुक का संवाद

सञ्जय कहते हैं—इसके उपरान्त महात्मा श्रीकृष्ण अर्जुन के भवन में गये। वहाँ हाथ-पैर धोकर उन्होंने अच्छे स्थान में वैडूर्यमणि के रङ्गवाले हरे कुशों की शुभ-शय्या बिछाई। फिर विधिपूर्वक मङ्गल माल्य, अक्षत, गन्धद्रव्य आदि से उसे अलङ्कृत करके उसके चारों ओर श्रेष्ठ शस्त्र रक्खे। इसके बाद अर्जुन जब जल-स्पर्श आचमन आदि कर चुके तब विनीत परिचारक नित्य रात्रि को दी जानेवाली रुद्र की बलि ले आये। अब अर्जुन ने महादेव की पूजा की और बलि दी। इसके उपरान्त प्रसन्न चित्त से उन्होंने गन्ध-माला आदि से श्रीकृष्ण की पूजा की और उन्हें भी रात्रि के योग्य उपहार अर्पण किये। तब अर्जुन को साधुवाद देकर कृष्णचन्द्र ने कहा—अर्जुन! तुम्हारा कल्याण हो, अब तुम जाकर आराम करो। मैं भी तुम्हारे भले के लिए जाता हूँ।

अर्जुन के हितचिन्तक भगवान् वासुदेव द्वार पर सशस्त्र सावधान द्वारपालों को तैनात करके, दारुक सारथी को साथ लिये, अपने शिविर में गये। वहाँ सफ़ेद शय्या पर लेट करके महायशस्वी विष्णुस्वरूप भगवान् कृष्णचन्द्र बहुत से कर्त्तव्यों के बारे में सोचने लगे। उन्होंने अर्जुन के शोक-दुःख को मिटानेवाली और तेज तथा द्युति को बढ़ानेवाली व्यवस्था योगबल के द्वारा कर दी। राजन्! उस रात को पाण्डवों के शिविर में किसी को नींद नहीं आई। सब लोग इस प्रकार सोचते रहे कि पुत्रशोक से पीड़ित वीर अर्जुन ने कल सवेरे जयद्रथ को मारने की प्रतिज्ञा की है। महाबाहु शत्रुदमन अर्जुन उस अपनी प्रतिज्ञा को किस तरह पूर्ण करेंगे! पुत्रशोक से विह्वल होकर अर्जुन यह बड़ी दुष्कर प्रतिज्ञा कर बैठे हैं। [एक तो जयद्रथ स्वयं साधारण योद्धा नहीं है, उस पर] दुर्योधन ने अपने पराक्रमी भाइयों, महारथी योद्धाओं और असंख्य सेना को जयद्रथ की रक्षा के लिए नियुक्त कर रक्खा है। हम लोग यही चाहते हैं कि महाबली अर्जुन युद्ध में जयद्रथ और अन्य शत्रुओं को मारकर, प्रतिज्ञारूप महाव्रत से उत्तीर्ण होकर, विजयी और सुखी हों। जो कल वे जयद्रथ का वध नहीं कर पावेंगे तो अवश्य ही जलती हुई चिता में अपने प्राण दे देंगे; क्योंकि अर्जुन कभी अपनी प्रतिज्ञा को टाल नहीं सकते। धर्मराज युधिष्ठिर की सम्पूर्ण विजय अर्जुन के ऊपर ही निर्भर है। यदि अर्जुन अपने प्राण दे देंगे तो फिर धर्मपुत्र युधिष्ठिर भी जीवित नहीं रह सकेंगे। इसलिए यदि हमने कुछ दान, हवन या पुण्य किया है तो उसके फल से अर्जुन अपने शत्रुओं पर विजय पावें। राजन्! इस तरह आपस में कहकर, अर्जुन की जय मनाते हुए, वीरों ने वह रात बड़े कष्ट से बिताई। १०

इधर उसी रात को श्रीकृष्ण ने जागकर और अर्जुन की प्रतिज्ञा का स्मरण करके अपने सारथी से कहा—हे दारुक! पुत्र-वध से शोकाकुल अर्जुन ने कल जयद्रथ को मारने की प्रतिज्ञा २०

की है। उसकी ख़बर पाकर दुर्योधन, अपने मन्त्रियों से सलाह करके, ऐसा उपाय करेगा जिसमें अर्जुन युद्ध में जयद्रथ का वध न कर सकें। दुर्योधन की कई अक्षौहिणी सेना और

पुत्र सहित सब अस्त्रों के ज्ञाता द्रोणाचार्य अवश्य जयद्रथ की रक्षा करेंगे। आचार्य जिसकी रक्षा करें उसे, दैत्यों और दानवों के दर्प को मिटानेवाले, अद्वितीय वीर इन्द्र भी नहीं मार सकते। परन्तु मैं कल वह उपाय करूँगा जिससे सूर्य के अस्त होने से पहले ही अर्जुन जयद्रथ को मार लेंगे। स्त्री-मित्र-सजातीय बन्धु-बान्धव आदि कोई भी मुझे अर्जुन से बढ़कर प्रिय नहीं है। मैं क्षण भर भी इस पृथ्वी को अर्जुन-रहित नहीं देख सकता। अतएव चाहे जिस तरह हो, कल अवश्य ही अर्जुन की प्रतिज्ञा पूरी होगी। मैं ख़ुद, अर्जुन के लिए, सहसा चतुरङ्गिणी सेना सहित कर्ण और दुर्योधन आदि सबको जीतकर मार डालूँगा। हे दारुक! कल अर्जुन के लिए मैं ख़ुद युद्ध करूँगा और तीनों लोकों के निवासी मेरे पराक्रम को देखेंगे। मैं कल हज़ारों राजाओं, सैकड़ों राजपुत्रों और चतुरङ्गिणी सेना को मार भगाऊँगा। मैं क्रुद्ध होकर तुम्हारे आगे ही अर्जुन के लिए अपने सुदर्शन चक्र

३१ से उन राजाओं की सेना को मार गिराऊँगा। कल देवता, गन्धर्व, पिशाच, नाग, राक्षस और त्रिभुवन के सब प्राणी जान लेंगे कि मैं अर्जुन का मित्र हूँ। जो अर्जुन का शत्रु है वह मेरा शत्रु है और जो अर्जुन का मित्र है वह मेरा मित्र है। तुम निश्चित समझो कि अर्जुन मेरा आधा शरीर है; हम दोनों मित्र "एक प्राण दो देह" हैं। हे दारुक! तुम प्रातःकाल होते ही मेरे श्रेष्ठ सुसज्जित रथ को लेकर मेरे साथ युद्धभूमि में चलना। रथ पर गदा, दिव्य शक्ति, चक्र, धनुष-बाण आदि शस्त्र और युद्ध की सब सामग्री रख लेना। उसमें रथ की शोभा बढ़ानेवाले गरुड़ से अलङ्कृत ध्वजा और छत्र लगा देना। सूर्य और अग्नि के समान चमकीले, विश्वकर्मा के द्वारा निर्मित सुवर्णजाल से शोभित बलाहक, मेघपुष्प, शैव्य और सुग्रीव नाम के चारों घोड़े जोतकर, कवच पहन करके, तुम रथ पर तैयार रहना। ज्योंही तुम्हें मेघगर्जन-सदृश मेरे पाञ्चजन्य शङ्ख का गम्भीर शब्द सुन पड़े त्योंही तुम वेग से मेरे पास आ जाना। हे

४० दारुक! मैं अपने फुफेरे भाई अर्जुन के सब दुःख और क्रोध को एक ही दिन में, शत्रुवध

करके, शान्त कर दूँगा। मैं सब प्रकार से ऐसा यत्न करूँगा कि दुर्योधन आदि के सामने ही अर्जुन दुष्ट जयद्रथ को मार लेंगे। मुझे पूरी आशा है कि युद्धभूमि में कल अर्जुन जिसे-जिसे मारने का यत्न करेंगे उसे-उसे मार डालेंगे।

दारुक ने कहा—हे पुरुषोत्तम! स्वयं आप जिसका रथ हाँकते हैं उस भाग्यशाली की जय होना सर्वथा निश्चित है। उसकी हार कहाँ से हो सकती है। आपने मुझे जो आज्ञा दी है उसी के अनुसार मैं सब काम करूँगा। कल सुप्रभात होगा और अर्जुन अवश्य विजय प्राप्त करेंगे। ४४

अस्सी अध्याय

अर्जुन का स्वप्नावस्था में श्रीकृष्ण के साथ कैलास पर जाना

सञ्जय कहते हैं—राजन्! उधर अचिन्त्य-पराक्रमी अर्जुन अपनी की हुई प्रतिज्ञा को और जयद्रथ की रक्षा के लिए की हुई दुर्योधन की सलाह को सोचते-सोचते कुछ निद्रित हो गये। अब शोकपीड़ित अर्जुन के निकट स्वप्नावस्था में गरुड़ध्वज श्रीकृष्ण आये। भक्ति और प्रेम से परिपूर्ण अर्जुन सदा, सभी अवस्थाओं में, उठकर श्रीकृष्ण का आदर करते थे। उस समय भी श्रीकृष्ण को देखकर उन्होंने उठकर उनका आदर-सत्कार किया और बैठने के लिए उन्हें आसन दिया। किन्तु आप आसन पर नहीं बैठे, खड़े ही रहे। महातेजस्वी कृष्णचन्द्र ने अर्जुन के मन की बात को भाँपकर बैठकर कहा—हे पार्थ! तुम खेद न करो। यह बली काल बहुत ही दुर्जय है। काल ही सब प्राणियों को भवितव्यता के लिए विवश करता है। हे नरश्रेष्ठ! बतलाओ तो, तुम क्यों खेद कर रहे हो? तुम श्रेष्ठ ज्ञानी हो। जो समझदार हैं वे शोक नहीं करते। तुमको भी शोक नहीं करना चाहिए। शोक से सब काम बिगड़ जाते हैं। अपने कर्तव्य का पालन करो। जो मनुष्य हाथ पर हाथ रक्खे केवल शोक किया करता है उसका वह शोक ही शत्रु है। हे मित्र! शोक करनेवाला मनुष्य अपने शत्रुओं को प्रसन्न और बान्धवों को दुखी करता है। वह स्वयं भी मर मिटता है। इसलिए तुम शोक मत करो।

यह सुनकर अर्जुन ने कहा—हे श्रीकृष्ण! मैं प्रतिज्ञा कर चुका हूँ कि अपने पुत्र की हत्या के मूल-कारण दुर्मति जयद्रथ को कल अवश्य मारूँगा। यह निश्चित है कि मेरी प्रतिज्ञा पूरी न होने देने के लिए दुर्योधन आदि कौरव कुछ उठा न रक्खेंगे। वे जयद्रथ को सारी सेना के पीछे रक्खेंगे और उनके पक्ष के सब महारथी मिलकर उसकी रक्षा करेंगे। हे श्रीकृष्ण! दुर्योधन की अत्यन्त दुर्जेय ग्यारह अक्षौहिणी सेना, जो मरने से बची है, जयद्रथ की रक्षा करेगी और सब महारथी भी उसे बचाने का उद्योग करेंगे। ऐसी दशा में दुरात्मा जयद्रथ के पास १०

तक मैं कैसे पहुँचूँगा और उसे देखूँगा ? ख़ासकर इन दिनों सूर्य के दक्षिणायन होने के कारण दिन छोटा होता है। इससे, इतने थोड़े समय में, इतनी सेना को नष्ट करके जयद्रथ तक पहुँचना असम्भव जान पड़ता है। जब वह दुष्ट मुझे नहीं मिलेगा और इसी कारण मैं उसको नहीं मार सकूँगा, तब मेरी प्रतिज्ञा कैसे पूरी होगी ? प्रतिज्ञा पूरी न होने पर मुझ सा मानी पुरुष कैसे जीता रह सकता है ? हे वीर ! इस समय दुःख-विनाश की मेरी आशा नष्ट सी हो रही है। प्रातःकाल होने में अब देर नहीं है, इसी से मैं आपसे यह कह रहा हूँ।

महाराज ! अर्जुन के शोक का कारण सुनकर श्रीकृष्ण आचमन करके, पूर्वमुख होकर, आसन पर बैठ गये। इसके बाद वे अर्जुन के हित और जयद्रथ के वध के लिए इस प्रकार कहने लगे—हे अर्जुन ! देवादिदेव महादेव ने जिसके द्वारा सब दैत्यों का नाश किया था वह दिव्य सनातन पाशुपत अस्त्र अगर तुम्हें स्मरण है तो उसकी सहायता से कल तुम अवश्य जयद्रथ को मार सकोगे। वह अस्त्र तुम एक बार शङ्कर से प्राप्त कर चुके हो; किन्तु यदि उसे भूल गये हो तो इस समय एकाग्र मन से उस अस्त्र की प्राप्ति के लिए भगवान् शङ्कर का ध्यान
२० करो। तुम उनके भक्त हो, इस कारण उनके प्रसाद से वह महान् दिव्य अस्त्र अवश्य तुम्हें प्राप्त होगा।

यह सुनकर अर्जुन ने आचमन किया और पृथ्वी पर बैठकर वे एकाग्र चित्त से शङ्कर का ध्यान करने लगे। थोड़ी देर में शुभ ब्राह्म मुहूर्त्त (चार घड़ी रात रहे) उपस्थित होने पर अर्जुन ने अपने को कृष्णचन्द्र के साथ आकाशमार्ग में जाते हुए देखा। श्रीकृष्ण उनका दाहना हाथ पकड़े हुए थे और वे हवा के समान वेग से ज्योतिष्कमण्डली-पूर्ण, सिद्ध-चारण-सेवित आकाशमार्ग द्वारा जाकर पवित्र हिमालय पर्वत के शिखर और मणिमान् पर्वत पर पहुँचे। अनेक अद्भुत दृश्य देखते हुए धर्मात्मा अर्जुन उत्तर दिशा में चले। उन्होंने श्वेत पर्वत देखा; कुबेर की विहार-वाटिका में पद्मों से शोभित सुन्दर सरोवर देखा। फिर सदा फूलने-फलनेवाले वृक्षों से शोभित और स्फटिक शिलाओं से अलङ्कृत अगाध जलवाली, श्रेष्ठ नदी गङ्गा को देखा। गङ्गा-तट पर अनेक सिंह, व्याघ्र और अनेक प्रकार के मृग विचर रहे थे; पवित्र आश्रम शोभायमान थे और मनोहर पक्षी उड़ रहे थे। उसके आगे जाकर उन्होंने मन्दराचल के विविध स्थानों को देखा। उनमें किन्नरों के
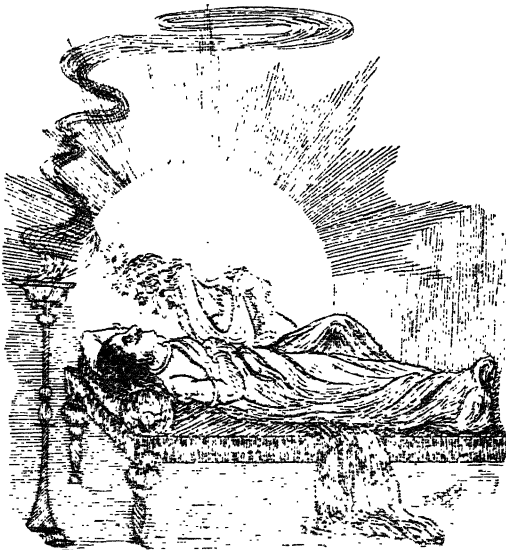
अर्जुन को, तपस्या में निरत, देवदेव महात्मा शंकर देख पड़े।—पृ० २३२५

गाने का शब्द गूँज रहा था। अनेक ओषधियों के प्रकाश से परिपूर्ण सोने-चाँदी के शिखर और फूले हुए कल्पवृक्ष उसकी शोभा बढ़ा रहे थे। फिर अञ्जन-राशि के तुल्य काल पर्वत देखा। ३० आगे ब्रह्मतुङ्ग पर्वत, अनेक नदियाँ, अनेक देश, अनेक नगर, बहुत ऊँचे शतशृङ्ग पर्वत, शर्याति-वन, पवित्र अश्वशिरा ऋषि का स्थान, आथर्वण ऋषि का स्थान, वृषदंश शैल और महामन्दर पर्वत देखा। उस पर्वत पर अप्सराएँ और किन्नर विहार कर रहे थे। उस पर्वत पर जाते-जाते अर्जुन सहित श्रीकृष्ण ने देखा कि यह पृथ्वीमण्डल पवित्र झरनों और सुवर्ण आदि धातुओं की खानों से युक्त तथा चन्द्रमा की किरणों से प्रकाशित हो रहा है; अनेक नगर माला की तरह इसे घेरे हुए हैं। उन्होंने अनेक रत्नों के आकर और अद्भुत आकारवाले समुद्रों को भी देखा। धनुष से छूटे हुए बाण की तरह श्रीकृष्ण सहित अर्जुन आकाश, अन्तरिक्ष, स्वर्ग और पृथ्वी पर विचरते हुए आश्चर्य के साथ सब दृश्य देखते जा रहे थे। इसके उपरान्त अर्जुन ने एक बहुत बड़ा विशाल पर्वत देखा, जिसकी दीप्ति ग्रह-नक्षत्र-चन्द्रमा-सूर्य और अग्नि के समान थी। उसी प्रज्वलित अग्नि के समान पर्वत पर अर्जुन को, सदा तपस्या में निरत, देवदेव महात्मा शङ्कर देख पड़े। अर्जुन को उनका तेज एकत्र प्रकाशमान सहस्र सूर्यों के प्रकाश सा जान पड़ा। वे सिर पर जटाजूट और हाथ में त्रिशूल धारण किये हुए थे। वे वल्कल और मृगछाला पहने हुए थे। उनके हज़ार नेत्र थे और अङ्ग विचित्र थे। महापराक्रमी महादेव के पास पार्वती देवी और तेजस्वी भूतगण उपस्थित थे। उन गणों में से कोई गा रहा था, कोई बजा रहा था, कोई ४० ज़ोर से बोल रहा था, कोई हँस रहा था, कोई नाच रहा था, कोई इधर-उधर टहल रहा था, कोई ताल ठोक रहा था और कोई ऊँचे स्वर से चिल्ला रहा था। आसपास पवित्र सुगन्ध भरी हुई थी। ब्रह्मवादी ऋषि लोग दिव्य स्तोत्रों से उनकी स्तुति कर रहे थे। सब प्राणियों की रक्षा करनेवाले, ईशान, बरदानी, शिव को देखते ही कृष्णचन्द्र ने अर्जुन के साथ सनातन ब्रह्म का उच्चारण करते-करते पृथ्वी पर सिर रखकर उन्हें प्रणाम किया। लोकों के आदि, विश्वकर्मा, जन्म-रहित, ईशान (जिनकी इच्छा अप्रतिहत है), अव्यय (विकाररहित), प्रवृत्ति और निवृत्ति के कारणस्वरूप, उत्पत्तिस्थान, आकाशरूप, वायुरूप, सब प्रकार के वेगों के आश्रयस्थल, जलधाराओं को उत्पन्न करनेवाले, पृथ्वी की परमप्रकृति, देव दानव यक्ष और मनुष्यों का शासन करनेवाले, योग और योगियों के परम आश्रय, प्रत्यक्ष परब्रह्म, ब्रह्मज्ञानियों के इष्टदेव, जगत् की सृष्टि और संहार करनेवाले, काल के समान दारुण कोपवाले, महात्मा, इन्द्र के ऐश्वर्य आदि और सूर्य के प्रताप आदि गुणों के उत्पत्तिस्थान महादेव को श्रीकृष्ण और अर्जुन ने मन-वाणी-काया से प्रणाम किया और वे उन जन्मरहित कारण-स्वरूप शङ्कर की शरण में गये जिनकी शरण में सूक्ष्म अध्यात्म पद के ज्ञान को खोजनेवाले विद्वान् लोग जाते हैं। अर्जुन भी उन्हें सब प्राणियों के आदि और भूत भविष्य वर्तमान का उत्पत्तिस्थान जानकर भक्तिपूर्वक बारम्बार प्रणाम करने लगे।

नर और नारायण दोनों को आये देखकर, प्रसन्न होकर, हँसते हुए देवादिदेव शङ्कर
५० कहने लगे—हे नर-श्रेष्ठ वीरो, मैं तुम्हारा स्वागत करता हूँ। उठो, तुम्हारी सब थकन जाती रहे। बोलो, क्या चाहते हो? यहाँ तुम जिस कार्य की सिद्धि के लिए आये हो, उसे मैं अवश्य सिद्ध करूँगा। तुम अपने कल्याण का वर माँगो, मैं वह तुम्हें देने को तैयार हूँ।

महादेव के वचन सुनकर महात्मा श्रीकृष्ण और अर्जुन उठे और हाथ जोड़कर, भक्तिपूर्वक, उनकी स्तुति करने लगे। श्रीकृष्ण और अर्जुन ने कहा—भव (सबके प्रभु), शर्व (संहार करनेवाले), रुद्र, वरदानी, पशुपति, उग्र, कपर्दी, महादेव, भीम, त्र्यम्बक, शान्तरूप, ईशान, दक्ष के यज्ञ का विध्वंस करनेवाले, अन्धकासुर को मारनेवाले, कुमार कार्त्तिकेय के पिता, नीलग्रीव, वेधा, पिनाकी, हविष्य (यज्ञ में भाग पानेवाले), सत्यस्वरूप, विभु (व्यापक), विलोहित, धूम्र, व्याध, अपराजित, सब प्राणियों में श्रेष्ठ, सर्वजयी, नीलशिखण्ड, शूली, दिव्यचक्षु, होता, पाता (रक्षक), त्रिनेत्र, वसुरेता, अचिन्त्यस्वरूप, अम्बिकापति, सर्वदेववन्दित, वृषध्वज, मुण्ड, जटा-
६० जूटधारी, ब्रह्मचारी, जल में तप करनेवाले, ब्रह्मण्य, अजित, विश्वात्मा, विश्वस्रष्टा और विश्व में व्याप्त मृत्युञ्जय को प्रणाम है। आप सेवनीय हैं, सब प्राणियों के अथवा प्रमथ भूतगण आदि के प्रभु और-वेद-मुख हैं, आपको हम प्रणाम करते हैं। सर्वस्वरूप, शङ्कर, शिव (मोक्ष देनेवाले), वाचस्पति, प्रजापति, विश्वपति और महत् जनों के पति रुद्र को हमारा प्रणाम है। आपके हज़ारों सिर, हज़ारों हाथ, हज़ारों नेत्र और हज़ारों चरण हैं। आपके कर्म असंख्य हैं। आप मृत्युरूप हैं। आपको हम प्रणाम करते हैं। हिरण्यवर्ण, हिरण्यकवचधारी, भक्तों पर दया करनेवाले जगदीश्वर को हम प्रणाम करते हैं। प्रभो! ऐसी कृपा कीजिए जिससे हमारी कामना पूरी हो।

सञ्जय कहते हैं—राजन्! इस प्रकार स्तुति करके अर्जुन सहित श्रीकृष्ण, अस्त्र की
६५ प्राप्ति के लिए, शङ्कर को प्रसन्न करने लगे।

इक्यासी अध्याय

स्वप्नावस्था में ही रुद्र से पाशुपत अस्त्र पाकर अर्जुन का
श्रीकृष्ण के साथ अपने शिविर को लौट आना

सञ्जय ने कहा—महाराज! हाथ जोड़े हुए महानुभाव अर्जुन ने प्रसन्नचित्त होकर, सम्पूर्ण तेजों के आधार, शङ्करजी की ओर सादर भक्तिपूर्ण दृष्टि से देखा। उन्होंने आश्चर्य के साथ देखा कि वासुदेव ने उनकी ओर से रात्रि को जो विधिपूर्वक पूजोपहार रुद्र को अर्पण किया था वह वहाँ, शङ्कर के पास, मौजूद है। तब मन ही मन शङ्कर और नारायणावतार कृष्णचन्द्र की पूजा करके अर्जुन ने महादेव से कहा कि हे जगदीश्वर! मैं आपसे दिव्य पाशुपत

हँसते हुए देवादिदेव शङ्कर कहने लगे ।—पृ० २३३६

अस्त्र प्राप्त करना चाहता हूँ। अर्जुन के मन की बात जानकर मुसकुराते हुए श्रीशङ्कर ने कृष्णचन्द्र और अर्जुन से कहा—हे पुरुषश्रेष्ठो! मैं तुम्हारा स्वागत करता हूँ। तुम्हारा मनोरथ मैंने जान लिया। जिस काम से तुम यहाँ आये हो, उसके पूर्ण होने का वरदान मैं तुमको देता हूँ। पहले मैंने जिनसे समर में देवताओं के वैरी दानवों का संहार किया था वे दिव्य धनुष और बाण यहाँ, निकट ही, अमृतमय दिव्य सरोवर में रक्खे हुए हैं। तुम जाकर उस उत्तम धनुष और बाण को ले आओ।

तब वे दोनों वीर "बहुत अच्छा" कहकर, शिव के गणों के साथ, उस दिव्य सरोवर पर गये। शिवजी का बताया हुआ वह सरोवर सैकड़ों आश्चर्यजनक दिव्य ऐश्वर्यों से युक्त, सर्वार्थ-साधक और पवित्र था। सूर्यमण्डलसदृश उस सरोवर के पास असम्भ्रान्त भाव से जाकर नर-नारायण ऋषियों के अवतार कृष्णचन्द्र और अर्जुन ने देखा कि जल के भीतर दो भयङ्कर नाग बैठे हैं। एक नाग अत्यन्त भयङ्कर और एक ही सिर का है; किन्तु दूसरा नाग अग्नि के समान प्रज्वलित है और उसके हज़ार सिर हैं। तब वेदज्ञ कृष्णचन्द्र और अर्जुन ने आचमन करके हाथ जोड़कर शङ्कर को प्रणाम और स्मरण किया और शतरुद्री के मन्त्र पढ़ना आरम्भ किया। वे दोनों महात्मा, शङ्कर की अपरम्पार महिमा जानकर, प्रणामपूर्वक उन दोनों नागों की आराधना करने लगे। तब वे दोनों महानाग शङ्कर के प्रभाव से देखते ही देखते शत्रुओं का नाश करनेवाले दिव्य धनुष और बाण बन गये। तुरन्त ही प्रसन्न होकर श्रीकृष्ण और अर्जुन ने श्रेष्ठ प्रभा से युक्त धनुष-बाण उठा लिया और लाकर शङ्कर के आगे रख दिया। इसके उपरान्त शिव के पार्श्वभाग से पिङ्गललोचन तपोमूर्ति बलवान् नील-लोहित एक ब्रह्मचारी प्रकट हुआ, जो कि शिव का ही दूसरा रूप था। उस ब्रह्मचारी ने वह श्रेष्ठ धनुष हाथ में लेकर, एकाग्रता के साथ ठीक पैंतरे से खड़े होकर, विधिपूर्वक बाण चढ़ाकर धनुष को खींचा। अचिन्त्य-पराक्रमी अर्जुन ने ध्यान के साथ उसका धनुष पकड़ना, डोरी खींचना और पैंतरे से खड़े होना देखा और शिवजी के उच्चारण किये हुए अस्त्र-मन्त्र को याद कर लिया। महाबली प्रभु शङ्कर ने उस बाण को उसी सरोवर में छोड़ा और उसके बाद वह धनुष भी उसी सरोवर में डाल दिया। स्मृतिशक्तिसम्पन्न अर्जुन ने शङ्कर को प्रसन्न देखकर अपने मन में, पहले वन में जो शङ्कर का दर्शन हुआ था और उन्होंने सन्तुष्ट होकर पाशुपत अस्त्र के साथ जो वर दिया था, उसे स्मरण किया और मन ही मन कहा कि हे शङ्कर, वह आपका दिया हुआ वर और अस्त्र मुझे प्राप्त हो। अर्जुन के मन के भाव को जानकर अन्तर्यामी महादेव ने प्रसन्नतापूर्वक पाशुपत अस्त्र के साथ ही यह वर दिया कि तुम्हारी प्रतिज्ञा पूरी हो। दुर्द्धर्ष अर्जुन ने इस प्रकार शङ्कर से फिर दिव्य पाशुपत अस्त्र पाकर निश्चय कर लिया कि हम कृतकार्य हो गये। अर्जुन के शरीर में उस समय आनन्द के मारे रोमाञ्च हो आया।

इसके उपरान्त अर्जुन और कृष्णचन्द्र दोनों ने परम प्रसन्न होकर देवादिदेव महादेव को भक्तिपूर्वक प्रणाम किया। फिर दोनों ही, शङ्कर की अनुमति लेकर, प्रसन्नतापूर्वक वैसे ही अपने शिविर को लौटे जैसे जम्भासुर के वध के लिए महासुरनाशक शङ्कर की अनुमति लेकर
२५ प्रसन्नचित्त इन्द्र और विष्णु अपने लोक को गये थे।

बयासी अध्याय

कृष्णचन्द्र का युधिष्ठिर के पास आना

सञ्जय कहते हैं—हे भरतकुल-तिलक! पूर्वोक्त प्रकार से श्रीकृष्ण और दारुक सारथी की बातें हो ही रही थीं कि रात बीत गई। प्रातःकाल होते ही सूत-मागध-बन्दीजन आकर स्तुति-पाठ करके युधिष्ठिर को जगाने लगे। वैतालिक सूत आदि ताल दे-देकर प्रभाती मङ्गल गाते हुए पुरुषश्रेष्ठ धर्मराज की स्तुति करने लगे। नाचनेवाले नाचने लगे और गवैये लोग मधुर कण्ठ से ऐसे गीत गाने लगे, जिनमें कुरुवंश की प्रशंसा और गुणों का वर्णन था। मृदङ्ग, झाँझ, भेरी, पणव, डङ्के, गोमुख, पटह, नगाड़े और शङ्ख आदि बाजे बजने लगे। चतुर और बाजे बजाने में निपुण पुरुष प्रसन्नचित्त होकर इन तथा अन्य बाजों को अच्छे ढँग से बजाने लगे। इन बाजों का मेघगर्जन-तुल्य भारी शब्द आकाशमण्डल में गूँज उठा। उससे सोये हुए राजेन्द्र युधिष्ठिर जाग पड़े। महामूल्य उत्तम शय्या पर सुखपूर्वक सोये हुए राजा युधिष्ठिर उठकर प्रातःकाल के आवश्यक कामों से निपटने के लिए स्नानगृह में गये। तब सफ़ेद कपड़े पहने, जवान, नहाये हुए एक सौ आठ नहलानेवाले कर्मचारी भरे हुए सोने के घड़े लेकर धर्मराज की सेवा में उपस्थित हुए। हलका कपड़ा पहने हुए राजा युधिष्ठिर सुन्दर आसन पर बैठ गये। नहलानेवालों ने चन्दन से सुगन्धित और मन्त्रों से अभिमन्त्रित स्वच्छ जल से उन्हें अच्छी तरह नहलाया। बलवान् सुशिक्षित नहलानेवालों ने कषाय ओषधियों से औटाये हुए जल से खूब मल-मलकर राजा को नहलाया। फिर केवड़े आदि के बसाये हुए सुगन्धित जल से उनका शरीर
१० साफ़ किया गया। इसके बाद, जल सुखाने के लिए, महाराज युधिष्ठिर ने सिर पर राजहंस के समान सफ़ेद पगड़ी ढीली-ढाली लपेट ली। सब अङ्गों में हरिचन्दन और अङ्गराग लगाकर, माला पहनकर, नये वस्त्र धारण कर महाबाहु युधिष्ठिर सदाचार के अनुसार पूर्वमुख हो हाथ जोड़कर गायत्री का जप करने लगे। अब वे अग्निहोत्रशाला में, जहाँ अग्निदेव प्रज्वलित हो रहे थे, विनीत भाव से गये। वहाँ मन्त्र पढ़कर लकड़ियों और घी की आहुतियों से अग्नि की आराधना करके वे बाहर निकले। फिर दूसरी ड्योढ़ी में जाकर पुरुषसिंह युधिष्ठिर ने वेद-पाठी, वृद्ध, जितेन्द्रिय, वेदव्रतस्नात, यज्ञान्त में अनेक बार अवभृथ स्नान किये हुए श्रेष्ठ ब्राह्मणों

के दर्शन किये। वहाँ युधिष्ठिर के साथ सदा रहनेवाले सूर्योपासक एक हज़ार और अन्य आठ हज़ार ब्राह्मण उपस्थित थे। शहद, घी, मङ्गल-कार्यों में काम आनेवाले श्रेष्ठ फल, अक्षत, फूल, दूब आदि माङ्गलिक पदार्थों से ब्राह्मणों के द्वारा स्वस्तिपाठ कराकर हर एक ब्राह्मण को उन्होंने एक-एक निष्क सुवर्ण दक्षिणा दी और उनकी प्रदक्षिणा की। इसके सिवा उन्हें आभूषणों से अलङ्कृत सौ घोड़े, उत्तम कपड़े, भरपूर दक्षिणा, बछड़ों सहित ऐसी दुधार कपिला गउएँ दीं, जिनके सींग सोने से और खुर चाँदी से मढ़े थे। इसके बाद स्वस्तिक-चिह्नयुक्त पात्र, सकोरे, सोने के सम्पुटित अर्घ्यपात्र, माला, जल के भरे घड़े, प्रज्वलित अग्नि, अक्षतपूर्ण पात्र, रुचक (एक प्रकार का नींबू), रोचना, अच्छी तरह अलङ्कृत शुभरूपिणी कन्या, दही, घी, शहद, जल, मङ्गलरूप पक्षी तथा अन्य पूजनीय पदार्थों को देखकर और छूकर राजा युधिष्ठिर बाहर की ड्योढ़ी में आये। वहाँ उनके परिचारकों ने सोने का सर्वतोभद्र सिंहासन लाकर रख दिया। उस दिव्य सिंहासन को विश्वकर्मा ने बनाया था। उस पर कोमल बहुमूल्य बिछौना बिछा था, जिस पर सफ़ेद चादर पड़ी थी। मोती, मणि, वैदूर्य आदि बहुमूल्य रत्न उसमें जड़े हुए थे। उस सिंहासन पर जब युधिष्ठिर बैठे तब अनुचरगण सफ़ेद बहुमूल्य कपड़े और आभूषण ले आये। पोशाक और गहने पहन लेने पर युधिष्ठिर का रूप शत्रुओं के शोक को बढ़ानेवाला देख पड़ा। भृत्यगण चन्द्रकिरण-सदृश, सुवर्णदण्डयुक्त, बहुमूल्य सुन्दर चामर डुलाकर उनकी सेवा करने लगे। उस समय वे चमकती हुई बिजलियों से शोभित मेघ के समान जान पड़ने लगे। सूतगण स्तुति करने लगे, बन्दीजन वन्दनागान गाने लगे और गवैये गन्धर्व मधुर गीत गाकर उन्हें प्रसन्न करने लगे। दम भर तक बन्दीजनों का शब्द गूँजता रहा। इसके बाद रथों की घरघराहट, घोड़ों की टापों की आवाज़, हाथियों के घण्टों का शब्द, शङ्खनाद और मनुष्यों के पैरों का शब्द ऐसा हुआ कि उससे वहाँ की पृथ्वी मानों काँप उठी। २० ३०

थोड़ी देर के बाद कुण्डल-मण्डित, कमर में तलवार लटकाये हुए, कवचधारी, नवयुवक द्वारपाल ने वहाँ आ करके घुटने टेककर वन्दनीय युधिष्ठिर को प्रणाम करके निवेदन किया कि महाराज, महात्मा वासुदेव पधारे हैं। पुरुषसिंह युधिष्ठिर ने कहा—उनका स्वागत करो और उनको श्रेष्ठ आसन लाकर दो। जब श्रीकृष्ण को भीतर लाकर श्रेष्ठ आसन पर बिठाया गया तब युधिष्ठिर ने उनका सत्कार किया। श्रीकृष्ण ने भी धर्मराज का सत्कार किया। ३५

तिरासी अध्याय

युधिष्ठिर की प्रार्थना और श्रीकृष्णचन्द्र का आश्वासन देना

सञ्जय कहते हैं कि युधिष्ठिर ने अभिनन्दन करके कहा—हे श्रीकृष्ण! रात को कुछ कष्ट तो नहीं हुआ? आपकी ज्ञानेन्द्रियाँ तो ठीक हैं? श्रीकृष्ण ने भी युधिष्ठिर से कुशल-

प्रश्न करके कहा—हे सौम्य ! आपके दर्शन से मैं प्रसन्न हो गया। महाराज ! इसी समय द्वार-पाल ने आकर निवेदन किया कि महाराज के दर्शनों के लिए सब सुहृद आये हुए हैं। युधिष्ठिर की आज्ञा पाकर वह द्वारपाल उन लोगों को ले आया। राजा विराट, भीमसेन, धृष्टद्युम्न, सात्यकि, चेदिराज धृष्टकेतु, महारथी राजा द्रुपद, शिखण्डी, नकुल, सहदेव, चेकितान, केकय देश के राजा, कौरव युयुत्सु, पाञ्चालतनय उत्तमौजा, सुबाहु, युधामन्यु और द्रौपदी के पाँचों पुत्र तथा अन्य अनेक सुहृद युधिष्ठिर के पास आये। उन्होंने सबको बैठने की आज्ञा दी। वे लोग युधिष्ठिर को यथायोग्य प्रणाम करके यथोचित बहुमूल्य आसनों पर बैठ गये। महा-बली श्रीकृष्ण और सात्यकि दोनों वीर एक ही आसन पर बैठे।

अब उन सबको सुनाकर राजा युधिष्ठिर ने, श्रीकृष्ण को सम्बोधित करके, मधुर स्वर में कहा—हे कृष्णचन्द्र ! सब देवता जैसे एक इन्द्र के आश्रित हैं, वैसे ही हम लोग एक आपका ही
१० आश्रय लेकर युद्ध में विजय और सुख चाहते हैं। आप अच्छी तरह जानते हैं कि शत्रुओं ने किस तरह हमारा राज्य छीन लिया, अपमान किया, हमें वन को भेज दिया और हमने कैसे-कैसे क्लेश पाये हैं। हे सबके ईश्वर, भक्तवत्सल, मधुसूदन ! हमारे सब सुख और हमारी स्थिति आपके ही भरोसे है। सो अब आप ऐसा उपाय कीजिए, जिसमें अर्जुन की जयद्रथ-वध की प्रतिज्ञा पूरी हो और मेरे हृदय में आपकी भक्ति अटल बनी रहे। हे श्रीकृष्ण ! आप नौकास्वरूप होकर इस दुःख और क्रोध के महासागर से हमें पार लगाइए। युद्ध में तत्पर रथी भी वह काम नहीं कर सकता जो आप, सारथी बनकर, कर रहे हैं। हे जनार्दन ! जैसे आप सब आपत्तियों से यादवों की रक्षा करते हैं वैसे ही इस सङ्कट से हमारी रक्षा कीजिए। हे महाबाहु ! हे शङ्ख-चक्र-गदाधर ! हम लोग नौका-हीन अथाह कौरव-सागर में डूब रहे हैं, आप नौकास्वरूप होकर उससे हमें उबारिए। हे देवदेव, हे ईश, हे सनातन, हे संहार करनेवाले, हे विष्णु, हे जिष्णु, हे हर, हे कृष्ण, हे वैकुण्ठ, हे पुरुषोत्तम ! आपको प्रणाम है। देवर्षि नारद से मैं सुन चुका हूँ कि आप पुरातन नारायण ऋषि हैं, वर देनेवाले हैं, शार्ङ्ग धनुष धारण करनेवाले विष्णु हैं और श्रेष्ठ हैं। सो आप नारद के कथन को सत्य कीजिए।

सभा के बीच युधिष्ठिर के यों कहने पर मेघगर्जन-सदृश गम्भीर स्वर से श्रीकृष्ण कहने
२० लगे—राजन् ! देवताओं सहित तीनों लोकों में अर्जुन के समान धनुर्द्धर योद्धा दूसरा नहीं है। वे वीर्यवान्, अस्त्रज्ञ, पराक्रमी, महाबली, युद्धनिपुण, क्रोधी और तेजस्वी हैं। वृषभस्कन्ध, महा-बाहु, महाबली, सिंह और साँड़ के समान चलनेवाले अर्जुन अवश्य आपके शत्रुओं को मारेंगे। मैं वही उपाय करूँगा जिससे वीरश्रेष्ठ अर्जुन दुर्योधन की सेना को उसी प्रकार नष्ट करेंगे जिस प्रकार आग ईंधन के ढेर को भस्म करती है। अर्जुन आज अपने बाणों से उस क्षुद्र, पापी, अभिमन्यु की मृत्यु के मूल-कारण, जयद्रथ को उसी मार्ग में भेजेंगे जिससे कोई लौटकर नहीं

आता। आज उसके मांस को गिद्ध, बाज़, गीदड़ और नरमांस-भोजी अन्य पिशाच-राक्षस आदि अवश्य खायँगे। अगर आज इन्द्र आदि सब देवता भी मिलकर जयद्रथ की रक्षा करें तो भी वह दुर्मति अवश्य मारा जायगा। आज दुष्ट जयद्रथ को मारकर अर्जुन आप से मिलेंगे। आप शोक और सन्ताप त्यागकर शान्त हों। २८

चौरासी अध्याय

अर्जुन का युधिष्ठिर के पास आना

सञ्जय कहते हैं—महाराज! इस तरह युधिष्ठिर से श्रीकृष्ण की बातचीत हो रही थी कि इसी समय सुहृदों सहित राजा युधिष्ठिर के दर्शन करने के लिए अर्जुन वहाँ पर आये। उस ड्योढ़ी में प्रवेश कर, प्रणाम करके, सामने खड़े हुए अर्जुन को युधिष्ठिर ने आसन से उठकर प्रेमपूर्वक छाती से लगा लिया। फिर आशीर्वाद देकर, उनका मस्तक सूँघकर, हँसते हुए धर्मराज कहने लगे—भाई अर्जुन! आज संग्राम में अवश्य तुम्हें भारी विजय प्राप्त होगी; क्योंकि तुम्हारे मुख की कान्ति ऐसी ही उज्ज्वल है और श्रीकृष्ण भी तुम पर अत्यन्त प्रसन्न हैं। तब अर्जुन ने बहुत ही आश्चर्यजनक वृत्तान्त का वर्णन करते हुए कहा—राजन्! आपका भला हो; कल रात को मैंने स्वप्न में श्रीकृष्ण की प्रसन्नता से एक बहुत ही अद्भुत दृश्य देखा है। [सञ्जय कहते हैं कि महाराज,] अब अपने सुहृदों के आश्वासन के लिए रात का वह सब वृत्तान्त अर्जुन ने कह सुनाया, जिस तरह वे शिव से जाकर मिले थे और उनसे पाशुपत अस्त्र प्राप्त किया था। वह वृत्तान्त सुनकर सबको बड़ा आश्चर्य हुआ। सबने सिर झुकाकर शङ्कर को प्रणाम किया और अर्जुन को साधुवाद देकर हर्ष प्रकट किया।

इसके बाद राजा युधिष्ठिर ने सब भाई-बन्धुओं को युद्ध-यात्रा करने की आज्ञा दी। वे लोग शीघ्रतापूर्वक सुसज्जित होकर प्रसन्नता के साथ युद्ध करने के लिए चल दिये। महावीर सात्यकि, श्रीकृष्ण और अर्जुन—युधिष्ठिर को प्रणाम करके—हर्ष और उत्साह के साथ उस भवन से बाहर निकले। वीर सात्यकि और कृष्णचन्द्र एक ही रथ पर बैठकर अर्जुन के डेरे पर पहुँचे। वहाँ पहुँचकर शास्त्र के जाननेवाले श्रीकृष्ण ने अर्जुन के, वानरचिह्नयुक्त ध्वजा से अलंकृत, श्रेष्ठ रथ को तैयार किया। मेघ के समान गम्भीर शब्द करनेवाला, तपे हुए सोने की सी कान्ति से युक्त, सुसज्जित वह श्रेष्ठ रथ बालसूर्य के समान शोभा देने लगा। अर्जुन जब सब नित्य-कृत्य कर चुके तब श्रीकृष्ण ने उनके पास जाकर कहा—हे अर्जुन! ध्वजा-पताका-युक्त तुम्हारा रथ तैयार है। अब महाबली अर्जुन ने सुवर्ण-कवच और किरीट पहना, धनुष-बाण १०

लिया, रथ की प्रदक्षिणा की और तब वे उस पर सवार हुए। उस समय तप विद्या और अवस्था में वृद्ध, कर्मकाण्डी, सदाचारी, जितेन्द्रिय ब्राह्मण लोग स्तुतिपूर्वक जयसूचक आशीर्वाद देकर उनका अभिनन्दन करने लगे। श्रेष्ठ रथी अर्जुन उस विजयदायक और युद्धमन्त्रों से अभिमन्त्रित सुवर्णमय रथ पर बैठकर सुमेरु पर्वत के शिखर पर स्थित सूर्यनारायण के समान अपूर्व शोभा को प्राप्त हुए। शर्याति के यज्ञ में आते हुए इन्द्र के साथ जैसे अश्विनीकुमार गये थे वैसे ही अर्जुन के साथ श्रीकृष्ण और सात्यकि रथ पर सवार हुए। वृत्रासुर के वध के लिए जाते समय मातलि ने जैसे इन्द्र के घोड़ों की रास पकड़ी थी वैसे ही सारथी के काम में निपुण महात्मा
१८ श्रीकृष्ण ने अर्जुन के घोड़ों की रास हाथ में ली। चन्द्रमा जैसे अँधेरे का नाश करने के लिए बुध और शुक्र के साथ जाते हैं, अथवा इन्द्र जैसे तारक असुर के संग्राम में वरुण और सूर्य के साथ गये थे, वैसे ही शत्रुनाशन वीर अर्जुन, जयद्रथ-वध के लिए, सात्यकि और श्रीकृष्ण के साथ रथ पर बैठकर रणक्षेत्र को चले। बाजे बजने लगे, मङ्गलगीतों और स्तुतियों का पाठ किया जाने लगा। मागधों और सूतों के स्तुतिपाठ का शब्द, जयशब्द, आशीर्वाद, पुण्याहपाठ आदि का शब्द, एकत्र होकर उन वीरों की प्रसन्नता और उत्साह को बढ़ाने लगा। उस समय पवित्र सुगन्धित अनुकूल वायु पाण्डवों को प्रसन्न और उनके शत्रुओं को शोकाकुल शुष्क करने लगा। राजन्! उस समय पाण्डवों की विजय के सूचक, और कौरवों के लिए इसके विपरीत, विविध सगुन दिखाई पड़ने लगे।

अपने दक्षिण ओर विजयसूचक सगुन देखकर अर्जुन ने महाधनुर्द्धर सात्यकि से कहा—हे युयुधान! मुझे इस समय जो शकुन देख पड़ते हैं, उनसे साफ़ मालूम पड़ता है कि आज के युद्ध में मेरी विजय अवश्य होगी। अब मैं वहाँ जाता हूँ जहाँ सिन्धुराज यमलोक को जाने के लिए मेरे पराक्रम की प्रतीक्षा कर रहा है। किन्तु जयद्रथ का वध करना जैसे मेरा आवश्यक कर्तव्य है, वैसे ही धर्मराज की रक्षा करना भी है। इसलिए आज तुम धर्मराज की रक्षा करो; यह काम मैं तुमको सौंपता हूँ। इसमें सन्देह नहीं कि मेरे ही समान तुम भी उनकी
३० रक्षा कर सकोगे। तुम श्रीकृष्ण के समान पराक्रमी हो, साक्षात् इन्द्र भी तुमको युद्ध में परास्त नहीं कर सकते। महारथी प्रद्युम्न या तुम यदि महाराज युधिष्ठिर की रक्षा का काम अपने ऊपर ले लो तो फिर मैं निश्चिन्त होकर जयद्रथ को मार लूँगा। मेरे लिए तुम कुछ चिन्ता न करना। मेरे रक्षक श्रीकृष्ण हैं। तुम सब तरह से धर्मराज की ही रक्षा करना। जहाँ मेरे साथ महाबाहु श्रीकृष्ण हैं वहाँ किसी तरह की विपत्ति नहीं आ सकती। अर्जुन के यों कहने
३५ पर शत्रुदमन यादवश्रेष्ठ सात्यकि युधिष्ठिर के पास चले गये।

जयद्रथ-वधपर्व

पचासी अध्याय

धृतराष्ट्र का पुत्रों के लिए शोक करके सञ्जय से युद्ध का वर्णन करने के लिए कहना

धृतराष्ट्र ने कहा—हे सञ्जय! प्रातःकाल होने पर अभिमन्यु-वध के दुःख और शोक से पीड़ित पाण्डवों ने क्या किया? उन्होंने किन वीरों से युद्ध किया? अर्जुन के अद्भुत पराक्रम और कर्मों को जाननेवाले कौरव, अभिमन्यु-वधरूप अपराध करके भी, कैसे निर्भय बने रहे? पुत्र-शोक से पीड़ित कुपित अर्जुन को मृत्यु की तरह आते उन्होंने कैसे देखा? युद्ध में पुत्र के मारे जाने से दुःखित अर्जुन को गाण्डीव धनुष कँपाते देखकर मेरे पुत्रों ने क्या किया? हे सञ्जय! संग्राम में दुर्योधन पर कैसी बीती? आज घोर विलाप सुनाई पड़ रहा है। हे सूत-पुत्र! आज जयद्रथ के भवन में पहले की तरह अन्य महाशब्दों को दबाकर आकाश तक उठनेवाला वह तुरही, शङ्ख, दुन्दुभि, सूत, मागध, वन्दीजन और नाचनेवालों का शब्द नहीं सुन पड़ता। मेरे बेटों के डेरे में आज सूत-मागधों की की हुई स्तुति का शब्द और नाचनेवालों की छमाछम नहीं सुन पड़ती। बहुत से दीन-दुखी याचकों का, अनेक प्रकार का, श्रुति-मधुर शब्द आज मुझे नहीं सुनाई पड़ता। पहले सत्यधृति सोमदत्त के भवन में बैठकर जिस सुमधुर शब्द को सुनता था, वह आज मुझको नहीं सुनाई पड़ता। मैं अभागा आज देख रहा हूँ कि मेरे पुत्रों और बान्धवों के घरों में घोर आर्तनाद सुनाई पड़ रहा है और वे घर उत्साह-हीन जान पड़ते हैं। विविंशति, दुर्मुख, चित्रसेन, विकर्ण तथा मेरे अन्य पुत्रों का वह हर्ष और उत्साह से पूर्ण शब्द आज नहीं सुन पड़ता। महाधनुर्द्धर और मेरे पुत्रों के परम सहायक अश्वत्थामा के घर में सदा ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य शिष्य बने रहते थे। वितण्डा (अपना पक्ष स्थापित न करके दूसरे के पक्ष पर आक्षेप करना), आलाप (भाषण), संलाप (दो आदमियों की परस्पर बात-चीत), द्रुत-गति से बाजे बजाकर और मनोहर गीत गाकर लोग दिन-रात उनकी सेवा किया करते थे। बहुत से कौरव, पाण्डव और यादव उनकी उपासना किया करते थे। उन अश्वत्थामा के भवन में भी आज पहले का सा मनोहर मधुर शब्द नहीं सुन पड़ता। वीर अश्वत्थामा के यहाँ जो नाचने-गानेवाले सदा रहते थे उनका भी शब्द आज नहीं सुन पड़ता। विन्द और अनुविन्द के शिविर में तथा केकयराजकुमारों के भवन में सायङ्काल को नित्य जो महाध्वनि सुन पड़ती थी वह आज नहीं सुन पड़ती। उनके यहाँ नित्य आनन्दित मनुष्यों का कोलाहल और नाचने-गानेवालों के ताल और गीत की ध्वनि जो सुन पड़ती थी, उसका आज कहीं पता नहीं। सोमदत्त के पुत्र श्रुतनिधि के घर में पहले यज्ञ करनेवाले याज्ञिक सदा उपस्थित रहते थे; किन्तु आज वहाँ उनका शब्द नहीं सुनाई पड़ता। महात्मा द्रोणाचार्य के भवन में नित्य जो वेद-पाठ का शब्द, प्रत्यञ्चा की

ध्वनि, तोमर-खड्ग आदि अस्त्रों की झनकार और रथों की घरघराहट सुन पड़ती थी, वह आज नहीं सुन पड़ती। वहाँ अनेक देशों से आये हुए लोग नाना प्रकार के गीत गाते और बाजे २० बजाते थे। आज वह शब्द भी नहीं सुन पड़ता।

हे सञ्जय! महात्मा श्रीकृष्ण जिस समय उपप्लव्य नगर से, शान्ति की इच्छा से, सब प्राणियों की भलाई के लिए सन्धि का प्रस्ताव लेकर आये थे उस समय मैंने मन्दमति दुर्योधन से कहा था कि "अरे दुर्योधन! इस समय श्रीकृष्ण के द्वारा पाण्डवों से मेल कर ले। मेरी समझ में सुलह करने का यही ठीक समय है, इस अवसर को हाथ से न जाने दे। मेरी बात को न टाल। शान्ति के लिए प्रार्थना करनेवाले श्रीकृष्ण का कहा अगर न मानेगा, हित के लिए वे जो उपदेश कर रहे हैं उसे टाल देगा, तो युद्ध में किसी तरह तुझे जय नहीं मिल सकती।" हे सञ्जय! सन्धि करने के लिए मैंने इस तरह बारम्बार दुर्योधन से अनुरोध किया किन्तु उस दुर्मति ने कालवश होकर मेरी बात टालकर, कर्ण और दु:शासन के कहे पर चलकर, श्रीकृष्ण को कोरा जवाब दे दिया। मैं, बुद्धिमान् विदुर, द्रोण, वाह्लीक, जयद्रथ, सोमदत्त, पितामह भीष्म, अश्वत्थामा, शल्य, भूरिश्रवा, पुरुमित्र, जय, धर्मात्मा कृपाचार्य तथा अन्य हमारे समझदार भाई-बन्धु सभी ने जुए का विरोध किया था। अगर इन सब हितैषियों की और मेरी सलाह को मेरा पुत्र दुर्योधन मान लेता तो [कभी यह कुल-क्षय न होता;] वह बहुत समय तक जीवित रहकर राज्य भोगता। उसके इष्ट-मित्र भी मौज करते। मैंने बारम्बार समझाकर दुर्योधन से कहा था कि बेटा! पाण्डव लोग सरलहृदय, मधुरभाषी, अपने जातिवालों और भाइयों से ३० प्रिय वचन बोलनेवाले, कुलीन, मिलकर चलनेवाले और प्राज्ञ हैं; उन्हें सुख मिलेगा। जो पुरुष धर्म पर दृष्टि रखता है वह इस लोक में सर्वत्र सुख भोगता है और मरने पर परलोक में भी उसको शान्ति और कल्याण प्राप्त होता है। हे पुत्र! धर्मात्मा पाण्डव जो बात स्वीकार कर लेंगे उसे कदापि मिथ्या न करेंगे। उन्हें भी यह राज्य मिलना चाहिए। यह समुद्र-पर्यन्त पृथ्वी, तुम्हारे ही समान, उनके भी बाप-दादे की है। इस पर तुम्हारा और उनका एक सा अधिकार है। [अगर तुम्हें यह शङ्का हो कि राज्य मिलने पर शक्तिशाली होकर पाण्डव तुम्हारा राज्य छीन लेंगे, तो तुम्हारी यह शङ्का निर्मूल है।] पाण्डव लोग धर्म को नहीं छोड़ सकते। [तुम्हारा हिस्सा छीनने की चेष्टा वे कभी न करेंगे।] मेरे सजातीय वृद्धजन ऐसे हैं जिनका कहा पाण्डव सुनेंगे और मानेंगे। शल्य, सोमदत्त, महात्मा भीष्म, द्रोण, विकर्ण, वाह्लीक, कृपाचार्य तथा भरतवंश के अन्य सब श्रेष्ठ पुरुष तुम्हारे हित के लिए पाण्डवों से जो कुछ कहेंगे उसे पाण्डव मान लेंगे। पूर्वोक्त पुरुषों में से तुम ऐसा किसे समझते हो, कि वह तुम्हारे हित के विरुद्ध कार्य करने के लिए पाण्डवों से अनुरोध करेगा? फिर श्रीकृष्ण तो कभी धर्म को छोड़ने के नहीं। पाण्डवगण उन्हीं के अनुगामी हैं। [तुम धर्मपूर्वक, श्रीकृष्ण के

कहने से, पाण्डवों को उनका राज्य दे दो और यह शङ्का छोड़ दो कि राज्य पाकर बली पाण्डव अधिक शक्तिशाली हो जायँगे और मेरा भी राज्य छीन लेंगे।] पाण्डव धर्मात्मा हैं, वे मेरी बात मान लेंगे—जो स्वीकार कर लेंगे उसके खिलाफ़ कुछ नहीं करेंगे। हे सञ्जय! मैंने विलाप करते-करते इस तरह दुर्योधन से बारम्बार कहा था; किन्तु वह मूढ़ तो काल के वश हो रहा था, इसी से उसने मेरी बात नहीं सुनी। अतएव मुझे स्पष्ट मालूम पड़ रहा है कि इस घोर संग्राम में हमारे पक्ष का कोई भी जीवित नहीं बच सकता।

जिस पक्ष में भीमसेन, अर्जुन, यादव-श्रेष्ठ वीर सात्यकि, दुर्द्धर्ष धृष्टद्युम्न, अपराजित शिखण्डी, पाञ्चालकुमार उत्तमौजा, दुर्जय युधामन्यु, अश्मक, केकय, सोमक के पुत्र क्षत्रधर्मा, चेदिराज, चेकितान, काश्य के पुत्र अभिभू, द्रौपदी के पाँचों बेटे, राजा विराट, महारथी द्रुपद, पुरुषसिंह नकुल और सहदेव आदि योद्धा हैं और सलाह देनेवाले सहायक साक्षात् कृष्णचन्द्र हैं, उस पक्ष के विरुद्ध—युद्ध में जीने की इच्छा रखनेवाला—कौन पुरुष खड़ा हो सकता है? दिव्य अस्त्रों का प्रयोग करनेवाले रणनिपुण पाण्डवपक्ष के वीरों के पराक्रम और प्रहार को सिवा दुर्योधन, कर्ण, दुःशासन और शकुनि के और कौन सह सकता है? मुझे तो इस समय इन चार पुरुषों के सिवा पाँचवाँ ऐसा कोई अपने दल में नहीं देख पड़ता, जो कुपित पाण्डवों के बाणप्रहार को सह सके, या उनका सामना कर सके। हे सञ्जय! सच तो यह है कि साक्षात् कृष्णचन्द्र जिस पक्ष के सारथी और कहना माननेवाले सहायक हैं और सुसज्जित कवच-धारी वीर अर्जुन योद्धा हैं, वह पक्ष कभी युद्ध में हार नहीं सकता। तुम कहते हो कि पुरुष-सिंह भीष्म और द्रोण दोनों मारे जा चुके हैं। इस समय शायद दुर्योधन मेरे पहले के विलाप और समझाने को याद करके पछता रहा होगा। भविष्यदर्शी नीतिज्ञ विदुर ने पहले ही इस युद्ध के कुफल का अनुमान करके जो वचन कहे थे उन्हें इस समय सत्य होते देखकर शायद मेरे पुत्र सोचते और पछताते होंगे। मुझे जान पड़ता है कि इस समय सात्यकि और अर्जुन के बाणों से अपनी सेना को पीड़ित, परास्त और रथों के आसनों को वीरों से ख़ाली देखकर मेरे पुत्र शोकाकुल हो रहे होंगे। जैसे ग्रीष्म ऋतु में हवा की सहायता से प्रचण्ड महा दावानल सूखी घास के ढेर को भस्म करता है वैसे ही वीर अर्जुन अवश्य अपने अस्त्रों से मेरी सेना को भस्म कर रहे होंगे। ४०

हे सञ्जय! जब सायङ्काल को अर्जुन के पुत्र अभिमन्यु का वध करके, अर्जुन का अप-राध करके, मेरे पक्ष के लोग अपने शिविर में लौट आये थे तब तुम लोगों के मन की क्या दशा थी? तुम वर्णन करने में निपुण हो, इसलिए सब वृत्तान्त कहो। हे तात! यह निश्चित बात है कि मेरे पुत्र और योद्धा लोग अद्भुतकर्मा अर्जुन का अपकार करके उनके पराक्रम और प्रहार को किसी तरह नहीं सह सकते। अभिमन्यु के मारे जाने से अर्जुन के कुपित होने पर ५०

दुर्योधन, कर्ण, दुःशासन और शकुनि ने क्या कहा और अपना क्या कर्तव्य सोचा ? हे तात ! लोभी, दुर्मति, क्रोध से विकृत-मस्तिष्क, राज्य की इच्छा करनेवाले, मूढ़, मन्द, मत्सर-पूर्ण दुर्योधन के अन्याय से युद्ध में जो कुछ फल हुआ, सो मुझसे कहो। दुर्योधन आदि ने उस समय

५४ अच्छी नीति को ग्रहण किया या दुर्नीति को ?

छियासी अध्याय

सञ्जय का धृतराष्ट्र को उलहना देकर युद्ध-वर्णन का आरम्भ करना

सञ्जय ने कहा—महाराज ! मैंने युद्ध की सब घटनाएँ प्रत्यक्ष देखी हैं। आप सावधान होकर सुनिए, मैं सब हाल कहता हूँ। असल में आपका ही इसमें सारा दोष है। हे भरतश्रेष्ठ ! पानी की बाढ़ निकल जाने पर पुल बाँधने की चेष्टा के समान आपका यह विलाप इस समय निष्फल है। इसलिए अब आप शोक न कीजिए। राजन् ! काल का अद्भुत विधान किसी तरह टल नहीं सकता। इस होनी को दैव ने पहले ही निश्चित कर दिया था। इसलिए अब आप व्यर्थ शोक न कीजिए। हे कुरुकुल-श्रेष्ठ ! पहले ही यदि आप युधिष्ठिर को और अपने पुत्रों को द्यूतक्रीड़ा न करने देते तो कभी यह सङ्कट न उपस्थित होता; आपको यह दुःखदायक दृश्य न देखना पड़ता। फिर, युद्ध होने के पहले ही अगर आप कुपित कौरवों और पाण्डवों को समझा-बुझाकर शान्त कर देते तो यह आपत्ति न आती। अगर आप पहले ही कहा न माननेवाले दुर्योधन को पकड़कर कारागार में डाल देते और कौरवों को विनाश के मुँह में जाने से बचा लेते तो यह अनर्थ न होता। सब पाण्डव, पाञ्चाल, यादव और अन्य राजा लोग जानते हैं कि यह महा अनर्थ आपकी विषम बुद्धि के दोष से हुआ है। यदि आप पिता के योग्य काम करके दुर्योधन को [समझाकर या दण्ड देकर] सुमार्ग पर लगाते और धर्म के अनुसार कार्य करते अर्थात् पाण्डवों को उनके हिस्से का राज्य दे देते तो आपको कभी इस सङ्कट का सामना न करना पड़ता। आप बहुत ही चतुर कहलाते हैं; किन्तु आप सनातन धर्म का त्याग करके दुर्योधन, कर्ण और शकुनि के मत पर चले। राजन् ! मैं आपका यह सब विलाप सुन चुका। आप बड़े राज्यलोभी हैं, आपका यह विलाप विष मिले हुए शहद के

१० समान है। आप जैसा समझ रहे हैं कि इस अनर्थ में आपके पुत्र का ही सारा दोष है, आपका नहीं है सो मैंने सुन लिया। श्रीकृष्ण पहले राजा युधिष्ठिर, भीष्म या द्रोण को उतना नहीं मानते थे जितना कि आपको। किन्तु जब से उनको यह मालूम हो गया कि आप ऊपर से तो धर्म की बातें कहते हैं, किन्तु हृदय से राज्य के लोभी [और अधर्मी पुत्र के पक्षपाती] हैं, तब से श्रीकृष्ण की नज़र से आप गिर गये हैं। महाराज ! भरी सभा में आपके पुत्र आदि ने पाण्डवों को भले-बुरे

वचन कहे और आप उसकी उपेक्षा ही करते रहे, उसी का यह बदला अब आपको मिल रहा है। हे भरतश्रेष्ठ! आपने अगर बाप-दादा के राज्य को इस तरह हथियाने की चेष्टा न की होती, तो वीर पाण्डव सम्पूर्ण पृथ्वी जीतकर आपको अर्पण कर देते। कौरवों के राज्य और यश को पहले शत्रुओं ने छीन लिया था। पाण्डु ने ही शत्रुओं को जीतकर उस यश और राज्य को प्राप्त किया था। धर्मात्मा पाण्डवों ने उस यश और राज्य को और भी अधिक बढ़ाया था। किन्तु आपने राज्य के लोभ में पड़कर पाण्डवों को उनके पैतृक राज्य से भ्रष्ट क्या किया, पाण्डु और पाण्डवों के उस कार्य को निष्फल कर डाला।

चाहे जो हो, इस समय युद्ध-काल में जो आप अपने पुत्रों की निन्दा करते हैं और अनेक प्रकार से उनके दोषों का वर्णन कर रहे हैं, सो वह व्यर्थ है। राजा लोग युद्ध ठानकर फिर रण में जीवन की ममता नहीं रखते। इस समय आपके पक्ष के पराक्रमी वीर क्षत्रियश्रेष्ठ जीवन का मोह छोड़कर, पाण्डवों की सेना में घुसकर, युद्ध कर रहे हैं। श्रीकृष्ण, अर्जुन, सात्यकि और भीमसेन जैसे वीरश्रेष्ठ अद्वितीय वीर जिस सेना के संरक्षक हैं, उससे सिवा वीर कौरवों के और कौन लोहा ले सकता है? जिस दल के योद्धा अर्जुन, सात्यकि और भीमसेन हैं तथा जिस पक्ष के मन्त्री कृष्णचन्द्र हैं, उस पक्ष के पराक्रम को वीरश्रेष्ठ कौरवों और उनके साथी क्षत्रियों के सिवा और कौन मनुष्य सह सकता है? महाराज! प्रहार और २१ आक्रमण के अवसर को जाननेवाले और क्षत्रिय-धर्म में निरत शूर मनुष्य जितना कर सकते हैं उतना वीर कौरव कर रहे हैं। पुरुषसिंह पाण्डवों के साथ कौरवों का जैसा घोर युद्ध हुआ उसका वर्णन मैं करता हूँ, आप ध्यान देकर सुनिए। २३

सत्तासी अध्याय

द्रोणाचार्य का शकटव्यूह बनाना

सञ्जय कहते हैं—महाराज! रात बीतने पर शस्त्रधारियों में श्रेष्ठ द्रोणाचार्य अपनी सेनाओं को लेकर शकटव्यूह की रचना करने लगे। उस समय वहाँ गरजते हुए, क्रोधी, असहनशील, शूर और परस्पर वध करने के लिए उद्यत योद्धाओं की विचित्र बोलियाँ सुन पड़ने लगीं। कोई धनुष चढ़ाकर, कोई धनुष की डोरी साफ़ करते और साँसें लेते हुए चिल्लाने लगे कि इस समय अर्जुन कहाँ हैं। कुछ लोग म्यान से खिंची हुई, धारदार, पानी के मारे आकाश की तरह चमकीली, सुन्दर मूठवाली तलवारों के हाथ फेंकने लगे। हज़ारों शिक्षित वीर लोग, संग्राम के लिए उद्यत होकर, चारों ओर तलवारों और धनुषों के पैंतरे दिखाते दिखाई पड़ने लगे। कुछ वीर चन्दन लगी हुई, घण्टा-भूषित और सुवर्ण हीरे आदि से अलङ्कृत गदाएँ उठाकर अर्जुन

को पूछने लगे। कुछ बाहुबल-सम्पन्न योद्धा, उठे हुए इन्द्रध्वज-सदृश, परिघ उठाकर आकाश को अवकाश-हीन बनाने लगे। विचित्र मालाएँ पहने हुए अन्य योद्धा लोग संग्राम के लिए तैयार होकर, अनेक प्रकार के शस्त्र हाथ में लेकर, अपने-अपने स्थान पर खड़े हो रणभूमि में पुकारने लगे कि अर्जुन कहाँ हैं? मानी भीमसेन कहाँ हैं? गोविन्द कृष्ण कहाँ हैं? और उनके सुहृद पाञ्चाल आदि कहाँ हैं?

उस समय अपना दिव्य शङ्ख बजाकर स्वयं रथ के घोड़ों को शीघ्रता से चलाते हुए आचार्य द्रोण इधर-उधर व्यूह में सेना स्थापित करते हुए वेग से जाते दिखाई पड़ रहे थे। युद्ध-प्रिय सब सेना जब ठीक स्थान पर तैनात हो चुकी तब द्रोणाचार्य ने कहा—हे जयद्रथ! तुम, सोमदत्त के पुत्र, महारथी कर्ण, अश्वत्थामा, शल्य, वृषसेन और कृपाचार्य, ये लोग एक लाख घोड़े, साठ हज़ार रथ, चौदह हज़ार मदमत्त गजराज और इक्कीस हज़ार कवचधारी पैदल सेना लेकर मुझसे छः कोस के अन्तर पर ठहरो। वहाँ पर इस तरह चतुरङ्गिणी सेना और छः महारथियों के बीच में तुम रहोगे; तब इन्द्र सहित देवता भी तुम पर आक्रमण न कर सकेंगे, पाण्डवों की तो कोई बात ही नहीं। अब तुम बेखटके होकर अपनी जगह पर जाओ।

सञ्जय कहते हैं—महाराज! आचार्य के इस कथन से धैर्य धर करके सिन्धुपति जयद्रथ, उन महारथियों के साथ, निर्दिष्ट स्थान को गये। उनके साथ गान्धार देश के योद्धा, उनके शरीररक्षक होकर, चले। वे लोग कवच पहने, सावधान, घोड़ों पर सवार और हाथों में प्रास (एक शस्त्र) लिये हुए थे। हे राजेन्द्र! जयद्रथ के रथ के सुशिक्षित घोड़े कलँगी और सोने के गहनों से सजे हुए थे। जयद्रथ के साथ अच्छी तरह अलङ्कृत, सिन्धु देश के तीन हज़ार और अन्य सात हज़ार घोड़े थे, जिन पर सशस्त्र योद्धा सवार थे।

राजन्! आपके पुत्र दुर्मर्षण, डेढ़ हज़ार मस्त हाथियों की सेना लेकर, सब सैनिकों के आगे युद्ध करने के लिए खड़े हुए। उनके उन हाथियों का आकार भयानक और कर्म बड़े ही रौद्र थे। उन पर युद्ध-निपुण योद्धा सवार थे। आपके पुत्र दुःशासन और विकर्ण दोनों ही, जयद्रथ की रक्षा के लिए, आगे की सेना में स्थित हुए। महारथी द्रोणाचार्य ने स्वयं महा-बली असंख्य वीर राजाओं को तथा रथ, घोड़े, हाथी और पैदल सेना को ठीक स्थान पर तैनात करके एक दुर्भेद्य व्यूह बनाया। उस व्यूह का अगला हिस्सा छकड़े के आकार का चौड़ा था और पिछला हिस्सा चक्र अथवा कमल के आकार का था। वह व्यूह आगे चौबीस कोस लम्बा और पीछे दस कोस चौड़ा था। महावीर द्रोणाचार्य ने पीछे के पद्मव्यूह के भीतर एक और व्यूह बनाया। वह सूचीमुख व्यूह था। वह व्यूह बहुत ही गुप्त और दुर्भेद्य था। सूचीमुख के द्वार पर महाधनुर्द्धर कृतवर्मा उसकी रक्षा के लिए नियुक्त थे। उसके बाद क्रमशः काम्बोजराज, जलसन्ध और उनके बाद महाराज दुर्योधन और कर्ण थे। युद्ध से न हटनेवाले

एक लाख वीर योद्धा शकटव्यूह के अगले भाग की रक्षा करने लगे। असंख्य सेना साथ में लिये हुए राजा दुर्योधन उन योद्धाओं के पीछे थे। राजा जयद्रथ सबके पीछे गूढ़ सूचीव्यूह के पार्श्व-भाग में थे। द्रोणाचार्य स्वयं शकटव्यूह के अगले हिस्से में रहकर उसकी रक्षा करने लगे। सफ़ेद कवच, कपड़े, पगड़ी आदि पहने, चौड़ी छातीवाले, महाबाहु द्रोणाचार्य क्रुद्ध काल की तरह अपने रथ पर बैठे हुए बारम्बार धनुष की डोरी बजा रहे थे। वही उस सेना के रक्षक और सञ्चालक थे। वेदी तथा मृगछाला के चिह्नों से युक्त ध्वजा और लाल रङ्ग के घोड़ों से शोभित द्रोणाचार्य का रथ देखकर सब कौरवों को अपार हर्ष हुआ। क्षोभ को प्राप्त समुद्र के समान, द्रोणाचार्य के बनाये, उस व्यूह को देखकर सिद्धों और चारणों को बड़ा ही विस्मय हुआ। सब प्राणी अपने मन में कहने लगे कि यह सैनिकों का विशाल व्यूह पर्वत-समुद्र-वन-सहित सम्पूर्ण पृथ्वी को भी नष्ट कर सकता है। बहुत रथ, रथी, हाथी, घोड़े और पैदल सेना से परिपूर्ण, महा कोलाहल से भयङ्कर, अद्भुत, आप ही अपनी उपमा और शत्रुओं के हृदय को दहलानेवाला वह शकटव्यूह देखकर राजा दुर्योधन को बड़ी प्रसन्नता हुई। ३०

३४

अट्ठासी अध्याय

रणभूमि में अर्जुन का पहुँचना

सञ्जय कहते हैं—महाराज! आपके पक्ष की सेना जब व्यूह में ठीक स्थान पर स्थापित हो चुकी; चारों ओर भेरी मृदङ्ग डङ्के आदि बजने लगे; सेना का कोलाहल और बाजों का शब्द आकाशमण्डल तक गूँज उठा; लोमहर्षण शङ्ख-नाद रणभूमि में व्याप्त हो गया और हाथों में शस्त्र लेकर कौरवगण युद्ध के लिए प्रस्तुत हुए, तब उस रौद्रमुहूर्त में सबके सामने अर्जुन आये। उनकी सेना के आगे-आगे झुण्ड के झुण्ड हज़ारों कौए चक्कर लगा रहे थे; मांसाहारी रक्त पीनेवाले पशु-पक्षी क्रीड़ा सी कर रहे थे। अशुभ रूपवाली गिदड़ियाँ हमारी सेना के चलते समय मार्ग में, उसके दक्षिण भाग में, घोर शब्द करने लगीं और मृगों के झुण्ड भी विकट शब्द करके अशुभ की सूचना देने लगे। उस भयानक जनसंहार के उपस्थित होने पर वज्रध्वनि के साथ आकाश से जलती हुई हज़ारों उल्काएँ गिरने लगीं। सम्पूर्ण पृथ्वी बारम्बार काँपने लगी। अर्जुन जिस समय संग्रामभूमि में आये उस समय कङ्कड़ियाँ उड़ाती हुई रूखी आँधी चलने लगी।

इधर व्यूह-रचना में निपुण नकुल के पुत्र शतानीक और धृष्टद्युम्न दोनों वीर पाण्डवों की सेना के व्यूह की रचना करने लगे। राजन्! उधर आपके पुत्र दुर्मर्षण ने हज़ार रथ, सौ हाथी, तीन हज़ार घोड़े और दस हज़ार पैदल साथ लेकर सब सेना से तीन हज़ार गज़ आगे खड़े होकर कहा—हे वीरो! तटभूमि जैसे समुद्र के वेग को रोकती है वैसे ही आज मैं युद्ध में दुर्द्धर्ष अर्जुन को आगे नहीं बढ़ने दूँगा। आज सब लोग अर्जुन को उसी तरह मुझसे टकरा- १०

कर रुकते देखेंगे जिस तरह चट्टान में पत्थर अटक जाता है। हे संग्राम की इच्छा रखनेवाले वीरो ! तुम सब खड़े-खड़े तमाशा देखो। मैं अकेला ही इन सब एकत्र होकर आनेवाले पाण्डव-पक्ष के वीरों से लड़ूँगा और अपने यश और मान को बढ़ाऊँगा। महाराज ! महारथी वीरों के साथ इस तरह कहते हुए महाधनुर्द्धर वीर दुर्मर्षण अपने स्थान पर डटकर खड़े हुए। उधर वज्रधारी इन्द्र के तुल्य, दण्डपाणि यमराज के समान असह्य, काल-प्रेरित मृत्यु के समान अनिवार्य, शङ्कर के समान अक्षोभ्य, पाशधारी वरुण के समान वीर अर्जुन प्रलयकाल के ज्वाला-मालायुक्त अग्नि के समान क्रोध और तेज से प्रज्वलित देख पड़ने लगे। जान पड़ता था, वे सब जगत् को भस्म कर डालेंगे। क्रोध, अमर्ष और बल से प्रचण्ड, युद्धविजयी, निवातकवच दानवों का नाश करनेवाले अर्जुन उस समय अपनी सत्य प्रतिज्ञा को पूर्ण करने के लिए उद्यत देख पड़े। नारायण के अवतार श्रीकृष्ण के साथ नर के अवतार अर्जुन अपने रथ पर, उदय हुए सूर्य के समान, शोभायमान हो रहे थे। वे कवच, मणिमय कुण्डल, सुवर्णमय किरीट-मुकुट, सफ़ेद माला और कपड़े पहने हुए थे। उनके अङ्गों में अङ्गद आदि गहने जगमगा रहे थे। गाण्डीव धनुष को कम्पायमान करते हुए वीर अर्जुन ने सेना के अग्र भाग में आकर इतने फ़ासले पर अपना रथ खड़ा कराया, जहाँ से शत्रुसेना के मध्यभाग में बाण मारा जा सकता था।

२० अब महाप्रतापी अर्जुन ने ज़ोर से अपना शङ्ख बजाया। साथ ही महात्मा वासुदेव ने भी अपना श्रेष्ठ पाञ्चजन्य शङ्ख बड़े ज़ोर से बजाया। उन दोनों वीरों के शङ्ख-नाद को सुनते ही आपकी सेना में हलचल सी मच गई। सैनिकों के रोंगटे खड़े हो गये, लोग काँप उठे और अचेत से हो गये। बिजली की कड़क सुनकर लोग जैसे डर जाते हैं वैसे ही कौरव-सेना के लोग उन शङ्खों का महानाद सुनकर डर गये। हाथी-घोड़े आदि वाहन घबराहट और डर के मारे मल-मूत्र-त्याग करने लगे। महाराज ! इस तरह वाहनों सहित आपकी सब सेना व्याकुल हो उठी। उन शङ्खों का दारुण शब्द सुनकर कुछ लोग विह्वल हो उठे, कुछ डर के मारे अचेत हो गये और कुछ भाग खड़े हुए। हे भरतश्रेष्ठ ! उस समय अर्जुन के रथ की ध्वजा पर स्थित वानर भी, ध्वजा पर स्थित अन्य भयानक प्राणियों के साथ, मुँह फैलाकर घोर महानाद करता हुआ आपके सैनिकों को डरवाने लगा।

अब आपकी सेना में सैनिकों का उत्साह और हर्ष बढ़ाने के लिए शङ्ख, भेरी, मृदङ्ग, नगाड़े आदि बाजे बजाये जाने लगे। अनेक प्रकार के बाजों के शब्द, खम ठोंकने के शब्द, गर्जन और सिंहनाद, चिल्लाने और पुकारने के शब्द और महारथी वीरों के रथ-सञ्चालन के शब्द से रणभूमि परिपूर्ण हो उठी। राजन् ! कायरों के हृदय में भय का सञ्चार करनेवाले

२६ उस तुमुल शब्द से अत्यन्त हर्षित होकर अर्जुन श्रीकृष्ण से यों कहने लगे।

———

नवासी अध्याय

अर्जुन के युद्ध का वर्णन

अर्जुन ने कहा—हे श्रीकृष्ण ! जिस जगह पर यह दुर्मर्षण खड़ा हुआ है उसी जगह पर मेरा रथ ले चलो। मैं इस गज-सेना को छिन्न-भिन्न करता हुआ शत्रुओं की सेना के भीतर घुसूँगा। सञ्जय कहते हैं—अर्जुन के यों कहने पर कृष्णचन्द्र ने रथ को दुर्मर्षण के पास ले जाने के लिए घोड़ों को हाँक दिया। इसके बाद अर्जुन कौरवों की सेना से अत्यन्त भयानक युद्ध करने लगे। उस संग्राम में असंख्य रथी, पैदल, हाथी और घोड़े मारे गये। पर्वत पर मेघ जैसे जलधारा बरसाते हैं वैसे ही अर्जुन भी शत्रु-सेना के ऊपर लगातार बाणों की वर्षा करने लगे। कौरवपक्ष के रथी और महारथी भी वासुदेव और अर्जुन के ऊपर तीक्ष्ण बाणों की वर्षा सी करने लगे। तब अर्जुन ने क्रोध करके अपने को रोकनेवाले शत्रु-पक्ष के रथी योद्धाओं के सिरों को बाण मारकर धड़ों
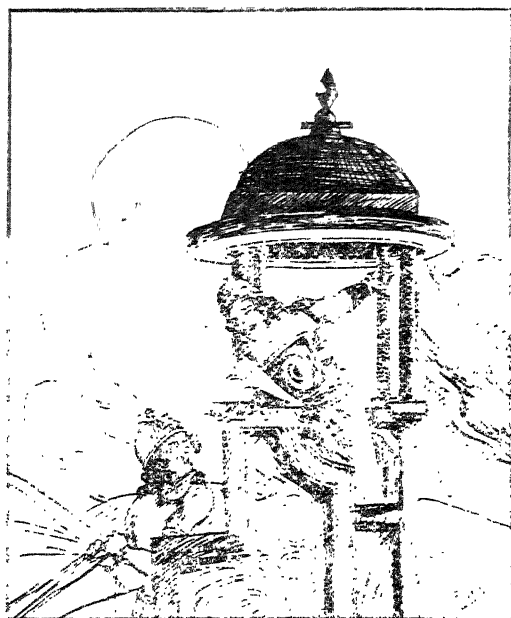
से अलग करना शुरू कर दिया। ओठ चबा रहे, लाल-लाल आँखें निकाले, कुण्डलों और शिरस्त्राणों से शोभित शूरों के कटे हुए सिर युद्धभूमि में बिछ गये। चारों ओर बिखरे हुए योद्धाओं के सिर दलित कमलों के वन की तरह शोभायमान हुए। [रक्त से भीगे हुए सुनहरे कवच बिजली से शोभित मेघों के समान जान पड़ते थे।] पके हुए ताड़ के फल गिरने से जैसा शब्द होता है वैसा ही शब्द वीरों के सिर कट-कटकर गिरने से सुनाई पड़ रहा था। वीरों के कबन्ध उठ खड़े हुए और कोई धनुष हाथ में लिये और कोई म्यान से तलवार निकाले प्रहार के लिए उद्यत देख पड़ने लगे। जय की इच्छा से युद्ध करनेवाले वीरगण अर्जुन को परास्त करने के उद्योग में इतने तन्मय थे कि उन पुरुषश्रेष्ठों के सिर कट-कटकर गिर पड़ते थे और उन्हें उसकी ख़बर भी न होती थी। घोड़ों के सिर, हाथियों की सूँड़ें, वीर पुरुषों के सिर और हाथ कट-कटकर पृथ्वी पर इतने गिरे कि उनसे रणभूमि बिछ गई। १०

महाराज ! उस समय आपके सैनिकों को सारी रणभूमि अर्जुनमयी सी दिखाई पड़ने लगी। वे "यह अर्जुन है", "कहाँ अर्जुन है ?", "यही अर्जुन है" इस तरह के वचन कहते हुए आपस में ही एक दूसरे को, अर्जुन जानकर, मारने लगे। किसी-किसी ने घबराकर आप ही अपने को शस्त्र मार लिया। इस प्रकार काल से मोहित कौरवपक्ष के योद्धा सर्वत्र अर्जुन को ही देखने लगे। रक्त से भीगे हुए, बेहोश वीरगण समरशय्या में पड़े हुए थे। वे दारुण वेदना से अत्यन्त पीड़ित होकर अपने-अपने बान्धवों को पुकारने और कराहने लगे। भिन्दि-पाल, प्रास, शक्ति, ऋष्टि, परशु, निर्व्यूह, खड्ग, धनुष, तोमर, बाण और गदा आदि शस्त्रों से शोभित, कवचयुक्त और अङ्गद आदि आभूषणों से अलङ्कृत वीरों के हाथ अर्जुन के बाणों से कट-कटकर पृथ्वी पर गिर रहे थे। वे महानाग और बेलन के समान हाथ उठते, गिरते और तड़पते दिखाई पड़ रहे थे। जो-जो वीर पुरुष अर्जुन के सामने जाकर उनसे भिड़ता था, उस-
२० उसके शरीर में अर्जुन के काल-सदृश बाण घुसते थे। रथ-मार्ग में नृत्य सा करनेवाले शीघ्रगामी और फुरतीले अर्जुन इस तरह धनुष घुमा रहे थे कि उन पर प्रहार करने का तनिक भी अवकाश नहीं देख पड़ता था। अर्जुन अपने हाथों की फुरती दिखाते हुए इतनी जल्दी बाण निकालते, धनुष पर चढ़ाते, निशाना ताकते और बाण छोड़ते थे कि सब देखनेवालों के आश्चर्य की हद नहीं थी। वीर-वर अर्जुन अपने बाणों से एक साथ ही हाथी, महावत और योद्धा को, घोड़े और सवार को तथा रथी और सारथी को मार गिराते थे। पराक्रमी अर्जुन उस समय आते हुए, आये हुए, युद्ध कर रहे और सामने खड़े हुए, किसी भी शत्रु को नहीं छोड़ते थे; सभी को मार-मारकर गिरा रहे थे। उदय हो रहे सूर्यदेव जैसे अपनी किरणों से गहरे अँधेरे को नष्ट करते हैं वैसे ही प्रतापी अर्जुन ने कङ्कपत्रशोभित तीक्ष्ण बाणों से शत्रुपक्ष के हाथियों के दल को मारकर नष्ट-भ्रष्ट कर दिया। अर्जुन के बाणों से छिन्न-भिन्न हाथियों के झुण्ड के झुण्ड आपकी सेना के बीच पड़े हुए थे। उनसे वह रणभूमि प्रलयकाल में पर्वतों से परिपूर्ण भूमि सी दिखाई पड़ने लगी।

राजन् ! उस समय क्रोध से विह्वल महावीर अर्जुन शत्रुओं के लिए दोपहर के सूर्य के समान अत्यन्त दुर्निरीक्ष्य हो उठे। कौरव-सेना के योद्धा लोग उनके बाणों से अत्यन्त पीड़ित और शङ्कित होकर, घबराकर, रणभूमि को छोड़कर भागने लगे। आँधी जैसे मेघमण्डल को छिन्न-भिन्न कर देती है वैसे ही महावीर अर्जुन भी कौरव-सेना को मारकर भगाने लगे। उनके बाणों की मार से भगाई जा रही आपके पुत्र की सेना अर्जुन की ओर देख भी नहीं सकती
२९ थी। रथी और घुड़सवार योद्धा लोग अर्जुन के बाणों से पीड़ित होकर कोड़े, धनुष-कोटि, हुङ्कार, कशा और पार्ष्णि के प्रहार आदि से, डाँटकर, पुचकारकर अपने घोड़ों को भगाते हुए भागने लगे। जो हाथियों पर सवार थे वे पार्ष्णि, पैर के अँगूठे और अङ्कुश के प्रहार से

हाथियों को चलाते हुए प्रवल वेग से भागने लगे। बहुत से लोग अर्जुन के वाणों की मार से ऐसे घवरा उठे कि वे मोहित होकर अर्जुन की ही ओर जाने लगे। राजन् ! इस प्रकार आपके पक्ष के वीर लोग उत्साह-हीन होकर घवरा उठे। ३३

नब्बे अध्याय

अर्जुन से दुःशासन की हार

धृतराष्ट्र ने पूछा—हे सञ्जय ! महावीर अर्जुन जब इस तरह हमारी सेना का संहार करने लगे तब कौन-कौन वीर उनके सामने युद्ध करने को आये ? अथवा सब वीर हारकर, विफलमनोरथ होकर, शकटव्यूह के भीतर ही घुस गये और दीवार के समान अटल द्रोणाचार्य की आड़ लेकर सबने अपने प्राण बचाये ?

सञ्जय ने कहा—राजन् ! महावीर अर्जुन इस प्रकार आपके वीरों को हराकर अपना पराक्रम प्रकट करने लगे। आपकी सेना के अनेक वीर मारे गये, सब सैनिक निरुत्साह होकर भागने पर ही उतारू हो गये। उन्हें अर्जुन अपने तीक्ष्ण वाणों से मारने लगे। उस समय कोई भी अर्जुन की ओर देख नहीं सकता था। तब आपके पुत्र महावीर दुःशासन अपने सैनिकों की ऐसी दुर्दशा देखकर, क्रोध से विह्वल हो, युद्ध के लिए अर्जुन की ओर वेग से चले। सोने का कवच और सोने का ही शिरस्त्राण धारण किये हुए पराक्रमी महावीर दुःशासन ने बहुत सी गज-सेना के द्वारा अर्जुन को घेर लिया। जान पड़ता था, वे अपनी गज-सेना से पृथ्वीमण्डल को ग्रस लेंगे। हाथियों के गलों में पड़े हुए घण्टों के शब्द, शङ्खनाद, प्रत्यञ्चा के शब्द, वीरों के सिंहनाद और हाथियों के शब्द से पृथ्वीमण्डल, आकाशमण्डल और सब दिशाएँ गूँज उठीं। महाराज ! कुछ देर तक युवराज दुःशासन बहुत ही भयङ्कर देख पड़े। अङ्कुश के प्रहार से प्रेरित होकर सूँड़ उठाये हुए क्रुद्ध हाथियों को, पक्षयुक्त पर्वतों के समान, चारों ओर से आते देखकर वीर अर्जुन ने बड़े ज़ोर से सिंहनाद किया। फिर वे वाणों की वर्षा करके शत्रुपक्ष की गज-सेना का संहार करने लगे। वायु-सञ्चालित तरङ्गपूर्ण उमड़े हुए समुद्र के समान उस गज-सेना ११ के बीच, महामगर के समान, अर्जुन ने प्रवेश किया। प्रलयकाल में आकाश में तप रहे सूर्य-नारायण के समान शत्रुदमन अर्जुन उस समय सब दिशाओं में वाण-वर्षा करते दिखाई पड़ने लगे। उस समय घोड़ों की टापों के शब्द, रथों के पहियों के शब्द, लोगों के चिल्लाने के शब्द, धनुषों की डोरियों के शब्द, अनेक प्रकार के वाजों के शब्द, पाञ्चजन्य और देवदत्त नामक शङ्खों के शब्द और गाण्डीव धनुष के शब्द से मनुष्य और हाथी अचेत से हो गये; उनका वेग धीमा पड़ गया। साँप के डसने के समान जिनका स्पर्श है ऐसे वाण मारकर अर्जुन उन हाथियों को छिन्न-भिन्न करने लगे और वे हाथी चिल्ला-चिल्लाकर परकटे पहाड़ों की तरह

नष्ट होने लगे। अर्जुन के असंख्य बाण एक साथ आकर उनके शरीरों में घुसते थे। अन्य अनेक हाथी दाँतों की जड़, मस्तक, सूँड़, कपाल आदि स्थानों में अर्जुन के असंख्य बाण लगने पर क्रौञ्च पक्षियों की तरह बारम्बार चिल्लाने लगे।

हाथियों पर बैठे हुए योद्धाओं के सिरों को भी वीर अर्जुन अपने अत्यन्त तीक्ष्ण भल्ल २० बाणों से काट-काटकर पृथ्वी पर गिराने लगे। हाथियों पर सवार वीरों के कुण्डल-मण्डित सिर जब कट-कटकर पृथ्वी पर गिरने लगे तब ऐसा जान पड़ा मानों अर्जुन कमल के फूलों से रणचण्डी की पूजा कर रहे हैं। हाथी जब घबराकर पीड़ित होकर इधर-उधर भागने लगे तब नाना प्रकार के शस्त्रों की चोट खाये हुए, कवच-हीन, घायल और रक्त से नहाये हुए अनेकों सैनिक शक्तिहीन होने के कारण हाथियों के हौदों पर से नीचे लटकने लगे। अर्जुन के एक ही बाण से दो-दो तीन-तीन शत्रु घायल होकर पृथ्वी पर गिर पड़ते थे। अर्जुन के नाराच बाण हाथियों के शरीरों में गहरे घुस जाते थे। वे हाथी मुँह से रक्त-वमन करते हुए मय अपने सवार के पृथ्वी पर गिर पड़ते थे, जिन्हें देखकर जान पड़ता था कि वृक्षयुक्त पहाड़ के शिखर फट-फटकर गिर रहे हैं। महावीर अर्जुन अपने सन्नत-पर्व-शोभित भल्ल बाणों के द्वारा रथी योद्धाओं के धनुष की डोरी, धनुष, ध्वजा, उनके रथ का युग और ईषा आदि को काट रहे थे। नहीं जान पड़ता था कि अर्जुन कब तरकस से बाण निकालते हैं, कब धनुष पर चढ़ाते हैं, कब उसे खींचते और कब छोड़ते हैं। केवल यही देख पड़ता था कि वे धनुष को मण्डलाकार घुमाते हुए रणभूमि में चारों ओर नृत्य सा कर रहे हैं। अर्जुन के नाराच बाण बहुत ही गहरे घुस जाने के कारण मुँह से रक्त उगलते हुए हज़ारों हाथियों का दम भर में पृथ्वी पर ढेर हो गया।

राजन्! उस समय समरक्षेत्र में असंख्य कबन्ध उठ खड़े हुए। वे कबन्ध वहाँ चारों ओर भयङ्कर युद्ध करते दिखाई पड़ने लगे। धनुष, अङ्गुलित्राण, खड्ग आदि शस्त्रों और अङ्गद आदि सुवर्णमय आभूषणों से युक्त हाथ चारों ओर कटे २९ हुए पड़े थे। समरभूमि में सर्वत्र सुन्दर सामग्री से युक्त छिन्न-भिन्न आसन, ईषादण्ड, रथबन्धन, टूटे हुए पहिये, जुए, टुकड़े-टुकड़े हो गये रथ, महाध्वजा, असंख्य माला, गहने, कपड़े, मारे गये हाथी-घोड़े और धनुष-बाण-ढाल-तलवार आदि धारण किये मृत वीर क्षत्रिय पड़े हुए थे; इससे वह रणभूमि

बहुत ही भयङ्कर दिखाई पड़ रही थी। महाराज! इस तरह अर्जुन के बाणों से नष्ट हो रही दुःशासन की सेना अपने नायक सहित व्यथित होकर भाग खड़ी हुई। दुःशासन भी अर्जुन के बाणों से पीड़ित और भयविह्वल होकर, मय अपनी सेना के, शकटव्यूह के भीतर घुस गये और रक्षा के लिए महात्मा द्रोणाचार्य की शरण में पहुँचे। ३४

इक्यानबे अध्याय

अर्जुन और द्रोण का युद्ध। द्रोणाचार्य को छोड़कर अर्जुन का आगे बढ़ना

सञ्जय कहते हैं—महाराज! महावीर अर्जुन इस तरह दुःशासन की सेना का संहार करके जयद्रथ पर आक्रमण करने के लिए आचार्य की सेना के सामने वेग से चले। द्रोणाचार्य व्यूह के द्वार पर खड़े थे। उनके पास पहुँचकर अर्जुन ने, कृष्णचन्द्र की अनुमति के अनुसार, हाथ जोड़कर कहा—ब्रह्मन्! आप मेरे भले की इच्छा करें और अपने मुँह से 'स्वस्ति' कहकर मुझे आशीर्वाद दें। मैं आपके प्रसाद से ही इस दुर्भेद्य व्यूह के भीतर जाना चाहता हूँ। भगवन्! आप मेरे पिता के समान हैं, धर्मराज के समान हैं, [पुरोहित धौम्य] और महात्मा श्रीकृष्ण के समान हैं। हे तात! आपके लिए जैसे अश्वत्थामा हैं वैसे ही मैं हूँ। आप जैसे उनकी रक्षा करते हैं वैसे ही मेरी भी रक्षा कीजिए। मैं आपकी कृपा से युद्धभूमि में सिन्धुराज जयद्रथ को मारना चाहता हूँ। प्रभो! मेरी प्रतिज्ञा की रक्षा कीजिए।

सञ्जय कहते हैं कि महावीर द्रोणाचार्य ने अर्जुन के ये वचन सुनकर मुसकाकर कहा—हे अर्जुन! तुम मुझे पहले जीते बिना जयद्रथ को नहीं मार सकते। अब हँसते-हँसते द्रोणाचार्य ने तीक्ष्ण बाणों से अर्जुन को और उनके रथ, घोड़े, ध्वजा और सारथी को ढक दिया। तब अर्जुन ने अपने बाणों से आचार्य के बाणों को व्यर्थ करके अपने भयङ्कर बाणों से उन्हें पीड़ित किया। इसके बाद गुरु के चरणों में, सम्मान के लिए, क्षत्रियधर्म के अनुसार उन्होंने नव बाण मारे। द्रोणाचार्य भी अपने बाणों से अर्जुन के बाण काटकर प्रज्वलित अग्नि और विष के १०

सदृश भयानक बाणों से श्रीकृष्ण और अर्जुन दोनों को घायल करने लगे। उस समय अर्जुन ने अपने बाणों से गुरु का धनुष काट डालना चाहा। वे यह विचार कर ही रहे थे कि न घबरानेवाले द्रोणाचार्य ने इसी बीच में अपने बाणों से अर्जुन के धनुष की डोरी काट डाली और फिर उनके घोड़ों और सारथी को घायल करके उनकी ध्वजा में भी कई बाण मारे। अर्जुन के ऊपर द्रोणाचार्य बाण बरसा ही रहे थे कि अर्जुन ने अपने धनुष पर दूसरी डोरी चढ़ा ली। सब अस्त्रों के जाननेवालों में श्रेष्ठ अर्जुन ने आचार्य को अपनी फुर्ती दिखाने के लिए, और उनसे बढ़कर काम करने के लिए, एक साथ एक ही बाण की तरह छः सौ बाण लेकर छोड़े। फिर न लौटनेवाले अन्य सात सौ बाण, फिर हज़ार बाण और फिर दस हज़ार बाण छोड़े। वे बाण द्रोणाचार्य की सेना का संहार करने लगे। अर्जुन के बाणों से घायल और प्राणहीन होकर असंख्य मनुष्य, हाथी और घोड़े रणभूमि में गिरने लगे। अर्जुन के बाणप्रहार से रथी योद्धा एकाएक अस्त्र, ध्वजा, सारथी और घोड़े आदि से रहित होकर, अत्यन्त पीड़ित होकर, मर-मरकर रथों पर से गिरने लगे। उनके बाण लगने से बड़े-बड़े हाथी, वज्राघात से फटे हुए पर्वतशिखर की तरह, आँधी से छिन्न-भिन्न मेघमण्डल की तरह और आग से जले हुए मकान की तरह एकाएक पृथ्वी पर गिरने लगे। हिमालय के ऊपर से जलधारा के वेग से पीड़ित हंसों के झुण्ड की तरह हज़ारों घोड़े अर्जुन के बाणों से मरकर गिरने लगे। प्रलयकाल के सूर्य की किरणों के समान अर्जुन के अस्त्र और बाणों से मरे हुए असंख्य योद्धा, हाथी और घोड़े जलराशि के समान गिरने लगे।
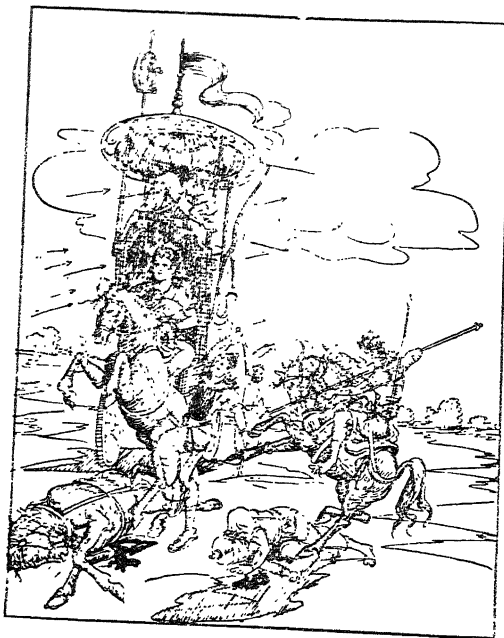
२०

तब बाणरूप किरणों के द्वारा युद्धभूमि में कौरवपक्ष की सेना को भस्म करते हुए सूर्य-सदृश अर्जुन को मेघतुल्य द्रोणाचार्य ने बाणवर्षा-रूप जलधारा से ढक लिया। मेघ जैसे सूर्य की किरणों को छिपा ले, वैसे ही द्रोणाचार्य ने अपने बाणों के बीच में अर्जुन के रथ को छिपा दिया। अब द्रोणाचार्य ने शत्रुओं के प्राण को हरनेवाला एक नाराच बाण अर्जुन की छाती ताककर बड़े वेग से चलाया। भूकम्प के समय पहाड़ जैसे काँप उठते हैं वैसे ही उस बाण के प्रहार से अर्जुन घबरा गये। उन्होंने धैर्य धरकर अपने को सँभाला और फिर द्रोणाचार्य

को अनेक तीक्ष्ण बाणों से घायल किया। तब महाबली द्रोणाचार्य ने पाँच बाणों से श्रीकृष्ण को और तिहत्तर बाणों से अर्जुन को घायल करके तीन बाणों से उनके रथ की ध्वजा काट डाली। हाथ की फुरती दिखाते हुए द्रोणाचार्य ने पल भर में अपने असंख्य तीक्ष्ण बाणों से अर्जुन को छिपा दिया। [सञ्जय कह रहे हैं कि] उस समय हम लोगों ने देखा कि द्रोणाचार्य के बाण चारों ओर लगातार गिर रहे हैं और उनका अद्भुत धनुष मण्डलाकार घूम रहा है। द्रोणाचार्य के चलाये हुए कङ्कपत्रशोभित वे बाण श्रीकृष्ण और अर्जुन के ऊपर बड़े वेग से जा रहे थे। [महाराज! उस समय हमने यह अद्भुत बात देखी कि नवयुवक होने पर भी वीर अर्जुन वृद्ध द्रोणाचार्य को किसी तरह परास्त नहीं कर सके, पराक्रम के द्वारा उन्हें हटाकर व्यूह के भीतर नहीं जा सके।]

द्रोणाचार्य के अतुल पराक्रम को देखकर श्रीकृष्ण ने कार्य-सिद्धि के लिए अर्जुन से कहा—पार्थ, पार्थ, हे महाबाहो! आचार्य से ही युद्ध में अटककर हमें अपना बहुत सा समय न नष्ट कर देना चाहिए। आओ, हम इन्हें छोड़कर आगे चलें। अर्जुन ने उनसे कहा—जैसी आपकी इच्छा। अब आचार्य को दाहनी ओर छोड़कर अर्जुन बाण-वर्षा करते हुए आगे बढ़ गये। उनको अन्यत्र जाते देखकर द्रोणाचार्य ने कहा—अर्जुन! इस समय तुम मुझसे लड़ना छोड़कर कहाँ जा रहे हो? तुम तो संग्राम में शत्रु को जीते बिना कभी हटते नहीं। इस समय यह क्या बात है? अर्जुन ने कहा—ब्रह्मन्! आप मेरे गुरुदेव हैं, शत्रु नहीं। मैं आपका पुत्रतुल्य शिष्य हूँ। ख़ासकर इस लोक में ऐसा कोई वीर पुरुष नहीं जो युद्ध में पराक्रम के द्वारा आपको परास्त कर सके। ३०

सञ्जय कहते हैं—जयद्रथ-वध के लिए उत्सुक अर्जुन यों कहते हुए फुरती के साथ आगे बढ़े और आपकी सेना को नष्ट करने लगे। पाञ्चालराजकुमार युधामन्यु और उत्तमौजा दोनों वीर भी, अर्जुन के रथ के पहियों की रक्षा करते हुए, उनके पीछे-पीछे आपकी सेना के व्यूह में घुसे। ३६

महाराज! पुत्रशोक से संतप्त, क्रुद्ध, मृत्यु के समान भयङ्कर, विचित्र युद्ध में निपुण, प्राणों का मोह छोड़कर युद्ध करते हुए, यूथपति गजराज के तुल्य पराक्रमी, महाधनुर्धर अर्जुन

जब इस तरह वेग से कौरव-सेना के भीतर घुसकर उसका संहार करने लगे, तब कौरवपक्ष के वीर जय, यादवश्रेष्ठ कृतवर्मा, काम्बोज और श्रुतायु ने उनका सामना किया। उस समय इन वीरों के अनुगामी दस हज़ार श्रेष्ठ रथी अर्जुन को रोकने चले। उनके साथ ही अभीषाह, शूरसेन, शिवि, वसाति, मावेल्लक, ललित्थ, केकय, मद्रक आदि देशों के वीर योद्धा, नारायणी सेना, गोपालगण और पहले कर्ण ने जिन्हें परास्त किया था वे, शूरश्रेष्ठ काम्बोज देश के वीर उत्साह के साथ प्रसन्नतापूर्वक द्रोणाचार्य को आगे करके अर्जुन को रोकने लगे। उस समय परस्पर युद्ध करने के लिए उद्यत कौरवपक्ष के उक्त योद्धा और अर्जुन घोर संग्राम करने लगे। रोग को जैसे औषध आदि उपचार रोकते हैं वैसे ही जयद्रथ को मारने के लिए आते हुए वीर
४४ अर्जुन को वे सब योद्धा मिलकर रोकने लगे।

बानवे अध्याय

श्रुतायुध और सुदक्षिण का मारा जाना

सञ्जय कहते हैं—राजन्! इस तरह जब कौरवपक्ष के वीरों ने पराक्रमी अर्जुन को घेर लिया और द्रोणाचार्य भी उनका पीछा करते हुए तेज़ी के साथ आगे बढ़े, तब अर्जुन उसी तरह सूर्य-किरण-तुल्य तीक्ष्ण बाणों से शत्रुओं को अत्यन्त सन्तप्त करने लगे जिस तरह व्याधियाँ देह को पीड़ा पहुँचाती हैं। अर्जुन के दारुण बाणप्रहार से कौरवपक्ष के घोड़े घायल होने लगे, रथ छिन्न-भिन्न होने लगे, सवारों सहित बड़े-बड़े हाथी पृथ्वी पर गिरने लगे, वीरों के सिर पर के छत्र कट-कटकर गिरने लगे और रथों के पहियों के टुकड़े-टुकड़े होने लगे। अर्जुन के बाणों से पीड़ित होकर सब सैनिक इधर-उधर प्राण लेकर भागने लगे। हे नरनाथ! महावीर अर्जुन जब घनघोर संग्राम करने लगे तब उनके बाणों के सिवा युद्धभूमि में और कुछ नहीं सूझ पड़ता था। उस समय वे अपनी प्रतिज्ञा को सत्य करने की इच्छा से सीधे जानेवाले तीक्ष्ण बाणों के द्वारा कौरव-सेना को कँपाते हुए प्रतापी द्रोणाचार्य की ओर चले। महावीर द्रोण ने अपने शिष्य अर्जुन के ऊपर मर्मभेदी और सीधे निशाने पर जानेवाले पचीस बाण छोड़े। अस्त्र-विद्या के जाननेवालों में मुख्य वीर अर्जुन ने बाणों के द्वारा आचार्य के बाणों का वेग रोक दिया। फिर वे तेज़ी से आगे बढ़े। उन्होंने ब्रह्मास्त्र का प्रयोग करते हुए सन्नतपर्व-युक्त भल्ल बाणों से द्रोणाचार्य के भल्ल बाणों को काट डाला। राजन्! उस समय हमने आचार्य की ऐसी अद्भुत शिक्षा
१० और कुशलता देखी कि युवा अर्जुन यत्न करके भी उनके शरीर में एक बाण तक नहीं छुआ सके। महामेघ जैसे असंख्य जलधाराएँ बरसाता है वैसे ही द्रोणरूप मेघ अर्जुनरूप पहाड़ पर बाणों की वर्षा करते ही दिखाई पड़ता था। पराक्रमी अर्जुन इससे तनिक भी विचलित नहीं हुए। उन्होंने

अपने बाणों से द्रोण के बाणों की वर्षा को रोक दिया। द्रोणाचार्य ने अर्जुन को पचीस और श्रीकृष्ण को, छाती तथा भुजाओं में, सत्तर बाण मारे। अर्जुन ने भी हँसते-हँसते बाणवर्षा करनेवाले आचार्य के प्रहारों को निष्फल कर दिया। प्रलयकाल के अग्नि के समान प्रज्वलित होकर दुर्द्धर्ष हो रहे द्रोणाचार्य के बाणों की चोट बचाकर अर्जुन भोज की सेना को नष्ट करने लगे। द्रोणाचार्य के धनुष से निकले हुए बाण असह्य थे, इसी कारण अर्जुन उन्हें बचा गये। मैनाक पर्वत के समान अटल द्रोणाचार्य से बचते हुए वे कृतवर्मा और काम्बोज-नरेश सुदक्षिण के सामने पहुँचे। वे इन दोनों के बीच में हो गये। तब कृतवर्मा ने निर्भय भाव से कङ्कपत्रयुक्त दस बाण अर्जुन को मारे। अर्जुन ने कृतवर्मा को पहले पैना एक बाण मारकर फिर तीन बाण मारे। अब मुसकुराते हुए कृतवर्मा ने श्रीकृष्ण और अर्जुन को पचीस पचीस बाण मारे। अर्जुन ने उसी दम कृतवर्मा का धनुष काट डाला और क्रोधित साँप के समान, अग्निशिखा के आकारवाले, इक्कीस बाण मारे। महारथी कृतवर्मा ने तुरन्त दूसरा धनुष लेकर, अर्जुन की छाती ताककर, पाँच बाण पहले और पाँच बाण उसके बाद मारे। महावीर अर्जुन ने भी कृतवर्मा की छाती में नव बाण मारे। ३०

श्रीकृष्ण ने अर्जुन को कृतवर्मा के साथ बहुत देर तक युद्ध करते देखकर सोचा कि हम लोगों को अब अधिक देर न करनी चाहिए। तब वे अर्जुन से बोले—हे पार्थ! कृतवर्मा के साथ दया का व्यवहार करने की आवश्यकता नहीं। सम्बन्ध का विचार छोड़कर शीघ्र इनको मारो। महाबाहु अर्जुन ने श्रीकृष्ण का कहा मानकर फुर्ती से बाण मारकर कृतवर्मा को मूर्च्छित कर दिया। अब वे काम्बोज-सेना के भीतर घुसे [कृतवर्मा तुरन्त ही होश में आ गये और] अर्जुन को काम्बोज-सेना के भीतर गये देखकर उन्होंने अर्जुन के चक्ररक्षक पाञ्चालदेशीय युधामन्यु और उत्तमौजा को आगे नहीं जाने दिया। उन्होंने युधामन्यु को तीन और उत्तमौजा को चार तीक्ष्ण बाण मारे। तब उन दोनों वीरों ने कृतवर्मा को दस-दस बाण मारे तथा वैसे ही तीन-तीन बाण और मारकर कृतवर्मा के रथ की ध्वजा और धनुष काट डाला। यह देखकर कृतवर्मा बहुत ही कुपित हुए और उन्होंने तुरन्त दूसरा धनुष लेकर उन दोनों वीरों के धनुष काट डाले और उन पर असंख्य बाणों की वर्षा की। वे दोनों वीर भी अन्य धनुष लेकर, उन पर डोरी चढ़ाकर, कृतवर्मा को तीक्ष्ण बाणों से मारने लगे। ३१

इसी बीच में महावीर अर्जुन शत्रु-सेना के भीतर घुस गये। युधामन्यु और उत्तमौजा ने कौरव-सेना के भीतर घुसने की बहुत-बहुत चेष्टा की, पर कृतवर्मा के बाणों की चोट से वे कृतकार्य नहीं हो सके। अर्जुन कौरव-सेना में प्रवेश करके फुरती के साथ उसे मारने लगे। कृतवर्मा को सामने पाकर भी उन्होंने जान से नहीं मारा। राजा श्रुतायुध ने जब अर्जुन को कौरव-सेना के भीतर जाते देखा तब वे क्रुद्ध होकर धनुष कँपाते हुए उसी दम उनके सामने पहुँचे। उन्होंने अर्जुन को तीन और श्रीकृष्ण को सत्तर बाण मारकर एक क्षुरप्र बाण से अर्जुन की ध्वजा

काट डाली। यह देखकर अर्जुन बहुत ही कुपित हुए और गजराज के ऊपर अंकुश-प्रहार की तरह श्रुतायुध के ऊपर उन्होंने झुकी हुई पोरवाले नव्वे बाण चलाये। अर्जुन का पराक्रम देखकर कुपित श्रुतायुध ने अर्जुन को सतहत्तर नाराच बाण मारे। अर्जुन ने क्रोध से विह्वल होकर श्रुतायुध का धनुष काट डाला और तरकसों के टुकड़े-टुकड़े कर दिये। फिर सात बाण
४० श्रुतायुध की छाती में मारे। अर्जुन का पराक्रम देखकर महावीर श्रुतायुध क्रोध के मारे अधीर हो उठे। उन्होंने उसी दम दूसरा धनुष लेकर नव बाण अर्जुन के हाथों में और छाती में मारे। इसी समय महाबली शत्रुदमन अर्जुन ने एक साथ हज़ारों बाणों की वर्षा करते-करते शत्रु के सारथी और रथ के घोड़ों को मार गिराया। अब अर्जुन ने श्रुतायुध को सतहत्तर बाण और मारे। सारथी और घोड़े न रहने पर राजा श्रुतायुध बहुत ही कुपित हुए। वे रथ से उतरकर, गदा हाथ में लेकर, अर्जुन के रथ के सामने दौड़े।

राजन् ! श्रुतायुध लोकपाल वरुण के पुत्र थे। ठण्ढे जलवाली महानदी पर्णाशा उनकी माता थीं। पर्णाशा ने वरुण से यह वर माँगा कि मेरा पुत्र किसी शत्रु के मारे न मरे। वरुण ने प्रसन्नतापूर्वक कहा—हे श्रेष्ठ नदी ! मैं यह दिव्य अस्त्र देता हूँ। इसके प्रभाव से तुम्हारा पुत्र समर में अवध्य होगा। भद्रे ! मनुष्य कदापि अवध्य या अमर नहीं हो सकता। पृथ्वी पर जन्म लेनेवाले को अवश्य ही काल के गाल में जाना पड़ता है। ख़ैर, मैं तुमको यह वर देता हूँ कि तुम्हारा पुत्र रणभूमि में अजेय होगा। तुम अपने मन से चिन्ता दूर करो। यह कहकर वरुण ने मन्त्र के साथ एक दिव्य गदा श्रुतायुध को दी। उसी गदा के प्रभाव से श्रुतायुध पृथ्वी पर
५० दुर्जय हो उठे। जिस समय वरुण ने श्रुतायुध को गदा दी थी उसी समय यह भी कह दिया था कि देखो, जो कोई युद्ध न करता हो उस पर इस गदा का वार न करना। अगर वार करोगे तो यह गदा उलटकर तुम्हारे ही ऊपर गिरेगी। समय पड़ते ही काल-मोहित होकर श्रुतायुध ने वरुण के वचनों की परवा नहीं की—वे उस वीर-घातिनी गदा को कृष्णचन्द्र के ऊपर चला बैठे। पराक्रमी भगवान् कृष्ण ने उस गदा का प्रहार अपने सुदृढ़ कन्धे पर रोका। विन्ध्याचल पर्वत जैसे प्रचण्ड आँधी से नहीं काँपता वैसे ही उस गदा के प्रहार से श्रीकृष्ण भी विचलित नहीं हुए। वह गदा दुष्प्रयोग-दूषित 'कृत्या' के समान बड़े वेग से पलट पड़ी; उसने महावीर श्रुतायुध को आकर चूर-चूर कर दिया। इस तरह वीर श्रुतायुध को मारकर वह गदा पृथ्वी में गिर पड़ी। गदा को विफल होकर लौटते और श्रुतायुध को मरते देखकर कौरव-सेना में हाहाकार मच गया। राजन् ! महा-वीर श्रुतायुध ने युद्ध न करनेवाले श्रीकृष्ण के ऊपर वह गदा चलाई थी इसी कारण, वरुण के कथनानुसार, उस गदा ने लौटकर उन्हीं के प्राण ले लिये। श्रुतायुध सब योद्धाओं के सामने ही आँधी से टूटे हुए कई शाखाओंवाले पुराने बड़े पेड़ की तरह पृथ्वी पर गिर पड़े। शत्रु-
६० दमन श्रुतायुध की मृत्यु देखकर सब सैनिक और प्रधान योद्धा भी भाग खड़े हुए।

उसने महावीर श्रुतायुध को आकर चूर चूर कर दिया।—पृ० २३६०
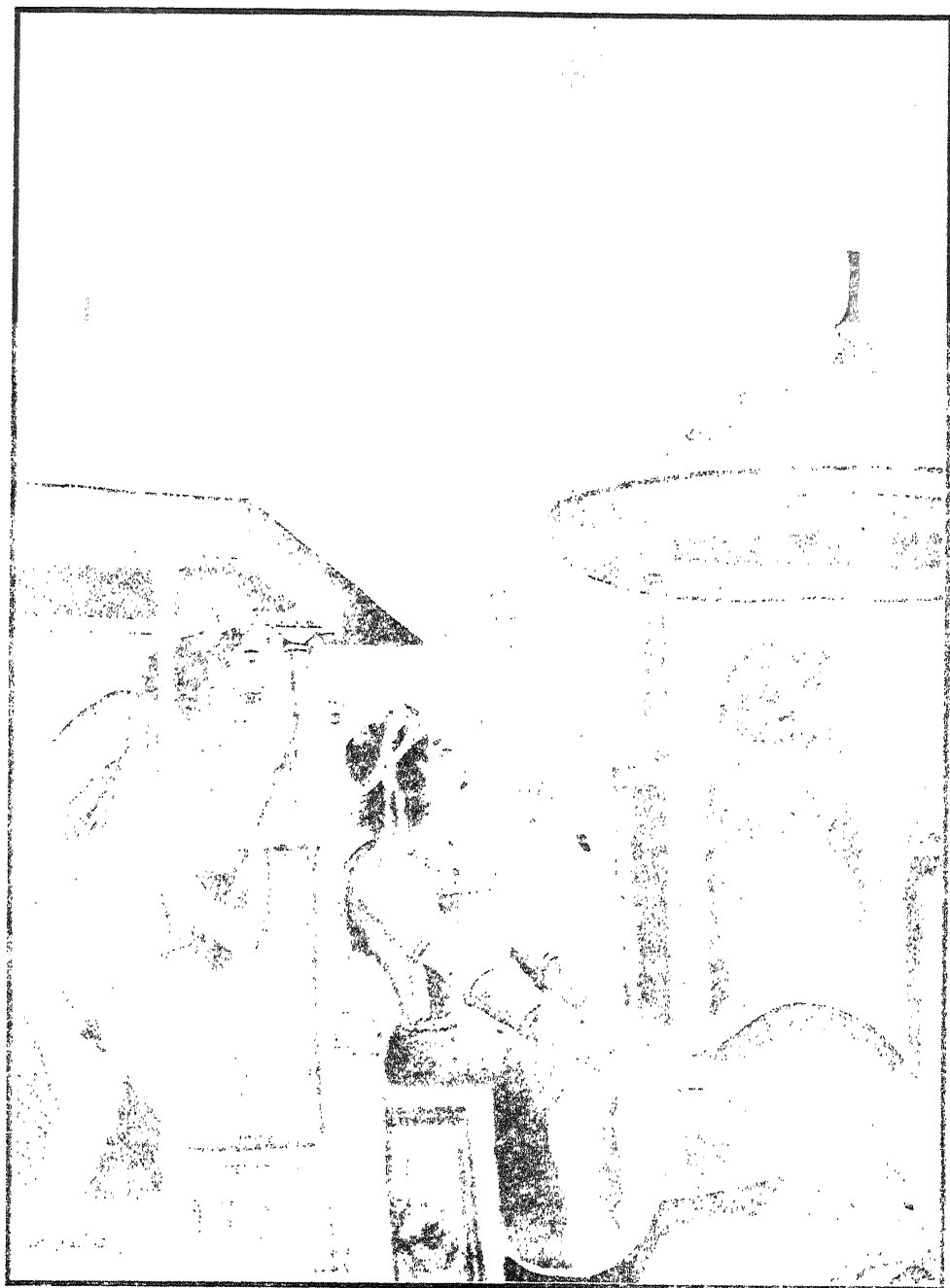
अब काम्बोजराज के पुत्र शूरवीर सुदक्षिण, तेज़ घोड़ों से युक्त रथ पर बैठकर, शत्रुओं का नाश करनेवाले अर्जुन की ओर दौड़े। अर्जुन ने उनको सात बाण मारे। वे बाण वीर सुदक्षिण के शरीर को भेदकर पृथ्वी में घुस गये। गाण्डीव धनुष से छूटे हुए तीक्ष्ण बाणों की गहरी चोट खाकर सुदक्षिण ने कङ्कपत्रयुक्त दस बाण अर्जुन को मारे। इसके बाद ही फिर श्रीकृष्ण को तीन और अर्जुन को पाँच बाण मारे। अर्जुन ने उनका धनुष काट डाला, ध्वजा काट गिराई और अत्यन्त तीक्ष्ण दो भल्ल बाण सुदक्षिण को मारे। वे भी अर्जुन को तीन बाण मारकर सिंहनाद करने लगे। शूर सुदक्षिण ने क्रुद्ध होकर लोहे की बनी हुई, कई घण्टों से शोभित, भयङ्कर शक्ति अर्जुन के ऊपर चलाई। उल्का के समान जलती हुई उस शक्ति से चिनगारियाँ निकल रही थीं। वह शक्ति आकर अर्जुन की छाती में लगी और घाव करके पृथ्वी पर गिर पड़ी। शक्ति की गहरी चोट खाकर अर्जुन मूर्च्छित हो गये; किन्तु वे तुरन्त ही सँभल गये और क्रोध के मारे ओठ चबाने लगे। उन्होंने कङ्कपत्रयुक्त चौदह नाराच बाण मारे जिनसे सुदक्षिण घायल हुए, उनका सारथी मरा, रथ के घोड़े नष्ट हुए तथा ध्वजा और धनुष कट गया। इसके बाद बहुत से बाण मारकर उन्होंने सुदक्षिण के रथ के टुकड़े-टुकड़े कर डाले। विचार और विक्रम जिनका निष्फल हो गया है, उन सुदक्षिण के हृदय में अर्जुन ने तीक्ष्ण धारवाला एक बाण बड़े ज़ोर से मारा। उस बाण के लगने से सुदक्षिण का हृदय ७० फट गया, दृढ़ कवच कटकर गिर पड़ा, प्राण निकल गये, सब अङ्ग ढीले पड़ गये, मुकुट और अङ्गद आदि गिर पड़े और वे यन्त्रयुक्त इन्द्रध्वज की तरह मुँह के बल रथ से पृथ्वी पर गिर पड़े। बड़ी-बड़ी शाखाओंवाला कर्णिकार का सुदृढ़ वृक्ष जैसे गर्मियों में आँधी से टूटकर पर्वत के शिखर पर से नीचे गिर पड़े, वैसे ही वीर सुदक्षिण गिर पड़े। काम्बोज देश के बने बहुमूल्य बिछौनों पर लेटने योग्य और बहुमूल्य गहने पहने हुए राजा सुदक्षिण मरकर रणशय्या पर शिखरयुक्त पर्वत के समान जान पड़ने लगे। सुन्दर रूप और आरक्त नेत्रोंवाले काम्बोजराज के पुत्र सुदक्षिण अर्जुन के कर्णी बाण से मरकर पृथ्वी पर गिर पड़े। सिर पर अग्नि के समान दमकती हुई सोने की माला पहने, पृथ्वी पर पड़े हुए, मृत महाबाहु सुदक्षिण बहुत ही शोभायमान हुए। राजन्! तब श्रुतायुध और काम्बोज-राजकुमार सुदक्षिण की मृत्यु देखकर आपके पुत्र की सेना भाग खड़ी हुई। ७६

तिरानवे अध्याय

श्रुतायु आदि का मारा जाना

सञ्जय कहते हैं—महाराज! महावीर श्रुतायुध और सुदक्षिण को मारे गये देखकर कौरव-पक्ष के सब सैनिक क्रोध से विह्वल हो उठे। उन्होंने क्रोधपूर्वक अर्जुन का सामना किया। अभी-

माह, शूरसेन, शिवि, वसाति देशों के वीरों के अनेक दल अर्जुन पर फुरती से असंख्य बाणों की वर्षा करने लगे। तब महावीर अर्जुन ने अपने तीक्ष्ण बाणों से उनमें के साठ सौ पुरुषों को मथ डाला। जैसे मृग बाघ से डरकर भागते हैं वैसे ही वे अर्जुन के बाणों की चोट से विह्वल होकर भागने लगे। वे फिर धैर्य धारण-पूर्वक पलट पड़े; उन्होंने चारों ओर से अर्जुन को घेर लिया। रण में शत्रुओं को मारकर जय प्राप्त करने की इच्छा रखनेवाले अर्जुन, गाण्डीव धनुष से छूटे हुए बाणों के द्वारा, शीघ्रता के साथ अपनी ओर आक्रमण करने को आते हुए उन लोगों के सिर और हाथ काट-काटकर गिराने लगे। उनके इतने सिर कटकर गिरे कि रणभूमि में लगातार सिर ही सिर दिखाई पड़ने लगे। हज़ारों कौओं और गिद्धों के दल उड़ने से ऐसा जान पड़ने लगा कि रण-भूमि पर बादल छाये हुए हैं। इस प्रकार जब वीर अर्जुन उन लोगों का संहार करने लगे तब महावीर श्रुतायु और अच्युतायु दोनों भाई अर्जुन से लड़ने आये। वे बली, स्पर्धाशील, वीर, कुलीन, महाबाहु और श्रेष्ठ योद्धा थे। दोनों वीर दाहनी ओर बाईं ओर से अर्जुन पर बाण बरसाने लगे। महान् यश पाने की इच्छा से आपके पुत्र के लिए अर्जुन को मारने के लिए उद्योगी वे दोनों धनुर्द्धर फुरती के साथ अर्जुन पर प्रहार करने लगे। जैसे किसी बड़े सरोवर को दो मेघ जलधाराओं से भर दें, वैसे ही उन्होंने तीक्ष्ण हज़ारों बाणों से अर्जुन को ढक दिया। इसी अवसर में कुपित होकर श्रुतायु ने अर्जुन को धारदार बहुत ही तीक्ष्ण तोमर मारा। बलवान् शत्रु ने बड़े वेग से प्रहार किया। उस प्रहार से अर्जुन को गहरी चोट आई। वे थोड़ी देर के लिए अचेत-से हो गये। यह देखकर कृष्णचन्द्र को बड़ी चिन्ता हुई। इसी अवसर में मौक़ा पाकर महारथी अच्युतायु ने भी अर्जुन को तीक्ष्ण शूल मारा। जैसे कोई कटे पर नमक छिड़के वैसे ही अच्युतायु ने एक प्रहार पर दूसरा प्रहार किया। बहुत गहरी चोट लगने से अर्जुन को बड़ा कष्ट हुआ। वे कुछ समय तक ध्वज-दण्ड के सहारे बैठे रहे। महाराज! उस समय आपके सब सैनिक
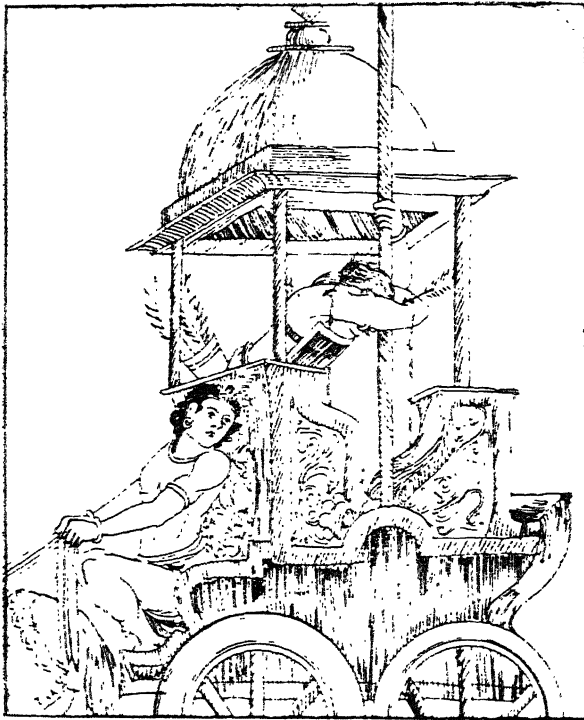
१०

अर्जुन को मरा हुआ जानकर ज़ोर से सिंहनाद करने लगे। उनको अचेत देखकर कृष्णचन्द्र को बड़ा खेद हुआ। वे मधुर वचनों से अर्जुन को ढाढ़स बँधाने लगे। मौक़ा पाकर वे दोनों श्रेष्ठ रथी अर्जुन और वासुदेव के ऊपर बाणों की वर्षा करने लगे। उस समय यह अद्भुत दृश्य देखने में आया कि उनके बाणों से अर्जुन का रथ पहिये-कूबर-घोड़े-ध्वजा-पताका-सहित अदृश्य हो गया।

महाराज! थोड़ी देर के बाद धीरे-धीरे अर्जुन को होश आया। वे मानों यमराज के घर से लौटकर आये। श्रीकृष्ण सहित अपने रथ को बाणों में छिप गया देखकर अर्जुन को बड़ा क्रोध हो आया। उन्होंने देखा कि दोनों शत्रु उनके सामने अग्नि के समान प्रज्वलित हो रहे हैं। तब महारथी अर्जुन इन्द्रास्त्र का प्रयोग करके बाण बरसाने लगे। उस समय अस्त्र २० के प्रभाव से अर्जुन के धनुष से हज़ारों बाण प्रकट होने लगे। गाण्डीव धनुष से छूटे हुए वे बाण आकाश में विचरने लगे। उन बाणों ने श्रुतायु और अच्युतायु के बाणों को व्यर्थ कर दिया। अर्जुन अपने बाणों के वेग से शत्रुओं के बाणों को विफल करके जहाँ-जहाँ महारथी योद्धा थे, वहाँ-वहाँ उनसे युद्ध करते हुए विचरने लगे। अर्जुन के असंख्य बाणों से उन दोनों के हाथ और सिर कट गये; वे आँधी से उखड़े हुए बड़े पेड़ों की तरह पृथ्वी पर गिर पड़े। समुद्र को सोख लेने के समान श्रुतायु और अच्युतायु की मृत्यु देखकर लोगों को बड़ा आश्चर्य हुआ। अर्जुन ने उन दोनों शत्रुओं के साथी पाँच सौ रथी योद्धाओं को भी मार डाला। इसके बाद शत्रुपक्ष के श्रेष्ठ वीरों को मारते हुए अर्जुन कौरव-सेना के भीतर घुस पड़े।

श्रुतायु और अच्युतायु की मृत्यु देखकर उनके पुत्र नियतायु और दीर्घायु, पितृशोक से व्यथित और कुपित होकर, विविध बाण बरसाते हुए अर्जुन के सामने आये। कुपित अर्जुन ने दम भर में तीक्ष्ण बाण मारकर उन दोनों को भी मार डाला। कमलवन को जैसे कोई गजराज रौंदे वैसे ही शत्रु-सेना को मथते हुए वीर अर्जुन को कौरवपक्ष के वीर आगे बढ़ने से नहीं रोक सके। उस समय हज़ारों सुशि- ३०

क्षित कुपित गजारोही अङ्ग देश के योद्धाओं ने अर्जुन को चारों ओर से घेर लिया। दुर्योधन की आज्ञा से प्राच्य, दाक्षिणात्य, कलिङ्ग आदि देशों के राजा लोग पर्वताकार हाथियों के द्वारा अर्जुन पर आक्रमण करने लगे। अर्जुन अपने गाण्डीव धनुष से छूटे हुए बाणों से उनके भूषणयुक्त बाहु और सिर काटने लगे। उन वीरों के कटे हुए अङ्गद-युक्त हाथों और सिरों से परिपूर्ण रणभूमि साँपों से घिरी हुई सुवर्णशिला के समान जान पड़ने लगी। बाणों से कटे हुए हाथ और सिर गिरते समय पेड़ों पर से गिरते हुए पक्षियों के समान दिखाई पड़ रहे थे। बाण लगने से हाथियों के शरीरों से रक्त बहने लगा और वे उन पहाड़ों के समान जान पड़ने लगे जिनसे वर्षाकाल में गेरू के झरने बह रहे हों। हाथियों पर बैठे हुए, विकृताकार, विविध विचित्र वेषधारी शस्त्रयुक्त म्लेच्छगण अर्जुन के विचित्र तीक्ष्ण बाणों से मरकर पृथ्वी पर गिरने लगे। वे सिर से पैर तक रक्त से नहाये हुए थे। जिनकी पीठ पर सवार और महावत बैठे हुए थे तथा आसपास चरण-रक्षक खड़े हुए थे, ऐसे हज़ारों हाथी अर्जुन के बाणों की चोट खाकर मुँह से रक्त उगलने लगे। बहुत से हाथियों के अङ्ग कट-फट गये। कुछ चिल्लाने, कुछ गिरने और कुछ इधर-उधर भागने-फिरने लगे। बहुत से हाथी घबराकर अपने ही पक्ष के ४० सैनिकों को कुचलने लगे। विषैले नागों के समान और विविध अस्त्र-शस्त्रों से सम्पन्न हज़ारों हाथियों की ऐसी ही दशा अर्जुन के बाणों ने कर डाली।

वे आसुरी मायाओं को जाननेवाले, घोररूप, घोर नेत्रोंवाले, कौए के से काले-कलूटे, दुराचारी, लम्पट, कलहप्रिय यवन, पारद, शक, बाह्लीक, मत्त हाथी के पराक्रमवाले द्रोविड़, नन्दिनी गऊ की योनि से उत्पन्न कालतुल्य अमोघ प्रहार करनेवाले म्लेच्छ, दार्वातिसार, दरद और हज़ारों पुण्ड्रदेशीय व्रात्य (पतित) क्षत्रिय मिलकर अर्जुन पर आक्रमण करने लगे। उन म्लेच्छों की संख्या बताना सम्भव नहीं। अनेक प्रकार के युद्धों में निपुण वे म्लेच्छ, अर्जुन के ऊपर, तीक्ष्ण बाणों की वर्षा करने लगे। तब उनका संहार करने के लिए अर्जुन ने शीघ्रता के साथ बाण-वर्षा करना शुरू कर दिया। अर्जुन के धनुष से टीड़ीदल के समान बाण निकलने लगे। उन्होंने अस्त्र के प्रभाव से इतने बाण बरसाये कि रणभूमि में उनसे बादलों की सी छाया दिखाई पड़ने लगी। पूरा सिर मुड़ाये, आधा सिर मुड़ाये, जटाधारी, अपवित्र, दाढ़ी-मूछों से भयानक मुखमण्डलवाले उन म्लेच्छों को अर्जुन ने अपने अस्त्र के प्रभाव से देखते ही देखते नष्ट कर दिया। पहाड़ी और पहाड़ों की कन्दराओं में रहनेवाले म्लेच्छगण अर्जुन के असंख्य बाणों से पीड़ित, नष्ट और भयविह्वल होकर इधर-उधर भागने लगे। अर्जुन के तीक्ष्ण बाणों से घायल होकर और मरकर पृथ्वी पर गिरे हुए हाथियों, घोड़ों और उनके सवारों के रक्त को बगले, ४९ कङ्क, वृक आदि पशु-पक्षी प्रसन्नतापूर्वक पीने लगे। अर्जुन ने उस समय रणभूमि में रक्त के प्रवाह और तरङ्ग से युक्त भयङ्कर नदी बहा दी, जो कि प्रलय-समय की काल-तुल्य नदी जान

पड़ती थी। वह नदी पैदल, घोड़े, रथ, हाथी आदि की सीढ़ियों से युक्त थी; असंख्य राजपुत्रों, हाथियों, घोड़ों, रथियों और पैदलों के शरीरों से निकले हुए रक्त से उत्पन्न हुई थी। बाण-वर्षा ही उसमें डोंगी-नाव आदि के समान थी। केश ही उसमें सेवार और घास की जगह देख पड़ते थे। कटी हुई उँगलियाँ उसमें छोटी मछलियों के समान जान पड़ती थीं। बड़े बड़े हाथियों के शरीर उसकी तटभूमि प्रतीत होते थे। जब मूसलाधार पानी बरसता है तब जैसे ऊँची-नीची सब भूमि एकाकार हो जाती है वैसे ही वह रणभूमि कौरव-सेना के रक्त से एकाकार दिखाई पड़ने लगी। अर्जुन ने उस समय युद्धभूमि में छः हज़ार घोड़ों और एक हज़ार वीर क्षत्रियों को मार डाला। सुसज्जित हाथी अर्जुन के बाणों से छिन्न-भिन्न होकर, वज्र के प्रहार से फटे हुए पर्वतों के समान, पृथ्वी पर गिरने लगे। मस्त गजराज जैसे नरकट के वन को रौंदता हुआ इधर-उधर विचरता है वैसे ही अर्जुन भी असंख्य हाथी, घोड़े, रथी आदि का संहार करते हुए रणभूमि में विचरने लगे। प्रचण्ड आग जैसे हवा की सहायता से असंख्य वृक्ष, लता, गुल्म, सूखी लकड़ी और घास-फूस से परिपूर्ण जङ्गल को जलाती है वैसे ही महावीर अर्जुन, श्रीकृष्ण की सहायता से, ज्वाला-तुल्य तीक्ष्ण बाणों के द्वारा असंख्य कौरव-सेना को मृत्यु के मुख में भेजने लगे। उन्होंने सब रथों को योद्धाओं से ख़ाली और पृथ्वी को मनुष्य आदि की लाशों से परिपूर्ण कर दिया। महावीर अर्जुन हाथ में गाण्डीव धनुष लिये हुए समरभूमि में इस फुरती से घूम रहे थे मानों नृत्य कर रहे हों।

इस तरह वज्रतुल्य बाणों की मार से युद्धभूमि को रक्त में मग्न करके कुपित अर्जुन आगे बढ़कर कौरव-सेना के भीतर घुसे। अम्बष्ठाधिपति श्रुतायु ने शत्रु-सेना में आते हुए अर्जुन को अपने पराक्रम से रोका। उस समय महाबली अर्जुन ने कङ्कपत्रयुक्त तीक्ष्ण बाणों से श्रुतायु के घोड़ों को मार गिराया और साथ ही धनुष भी काट डाला। अर्जुन के इस कार्य से अम्बष्ठराज श्रुतायु के क्रोध की सीमा न रही। वे एक भारी गदा लेकर श्रीकृष्ण और अर्जुन के पास पहुँचे। उन्होंने अर्जुन के रथ की गति रोककर श्रीकृष्ण पर गदा चलाई। श्रीकृष्ण को गदा लगते देखकर अर्जुन अत्यन्त कुपित हो उठे। मेघ जैसे उदय हो रहे सूर्य को छिपा लेते हैं, वैसे ही अर्जुन ने सुवर्णपुङ्खयुक्त बाणों की वर्षा से गदापाणि श्रुतायु को छिपा दिया और अन्य बाणों से उस गदा के टुकड़े-टुकड़े कर डाले। अर्जुन ने यह अद्भुत काम किया। महावीर अम्बष्ठराज ने अपनी गदा के टुकड़े हुए देखकर तुरन्त दूसरी गदा हाथ में ली। वे अत्यन्त कुपित होकर उस गदा से बारम्बार अर्जुन और श्रीकृष्ण को पीड़ित करने लगे। तब रणनिपुण अर्जुन ने दो क्षुरप्र बाणों से श्रुतायु के गदायुक्त इन्द्रध्वज-सदृश दोनों हाथ काट गिराये और वैसे ही अन्य एक बाण से उनका सिर भी काट डाला। महावीर अम्बष्ठराज इस तरह अर्जुन के बाण से मरकर पृथ्वी को शब्दपूर्ण करते हुए, यन्त्र से छूटकर गिरे हुए इन्द्रध्वज के समान, गिर

६०

पड़े। उस समय शत्रुनाशन वीर अर्जुन असंख्य रथ, हाथी, घोड़े आदि के बीच में घिरे होने
७० के कारण घनघटाओं से घिरे हुए सूर्य के समान दिखाई पड़ने लगे।

चौरानवे अध्याय

दुर्योधन का द्रोणाचार्य को उलहना देना और आचार्य का दुर्योधन को
अभेद्य कवच पहना देना

सञ्जय कहते हैं—राजन्! जयद्रथ को मारने की इच्छा से महावीर अर्जुन इस तरह दुर्भेद्य द्रोणाचार्य की सेना और भोजराज की सेना को छिन्न-भिन्न करते हुए व्यूह के भीतर घुस गये। काम्बोज-राजकुमार सुदक्षिण और पराक्रमी श्रुतायु मारे गये। यह देखकर आपके सब सैनिक प्राण लेकर चारों ओर भागने लगे। रथ पर सवार आपके पुत्र दुर्योधन यह देख शीघ्र ही आचार्य के पास जाकर कहने लगे—ब्रह्मन्! वीर अर्जुन इस सेना को नष्ट-भ्रष्ट करते हुए निकल गये। इस दारुण जनसंहार के अवसर पर आपको अर्जुन के मारने का उपाय करना चाहिए। भगवन्! आप अपनी बुद्धि से आगे का कर्तव्य सोचिए। ऐसा कीजिए कि पुरुषसिंह जयद्रथ को आज अर्जुन किसी तरह न मार सकें। आप ही हम लोगों के एकमात्र आश्रयस्थल हैं। देखिए, यह अर्जुन-रूप अग्नि क्रोध-रूप हवा की प्रेरणा से प्रचण्ड होकर हमारी सेना रूप सूखी घास के ढेर को वैसे ही भस्म कर रहा है, जैसे दावानल सूखे वन को जलाता है। सेना को चीरते हुए अर्जुन निकल गये, इस कारण जयद्रथ की रक्षा करनेवाले वीर लोग बड़े सङ्कट में पड़े हैं; क्योंकि उन्हें निश्चय था कि अर्जुन जीते जी द्रोणाचार्य को लाँघकर आगे नहीं बढ़ सकते। ब्रह्मन्! सो आप देखते रहे और आपके आगे से अर्जुन निकल गये! महात्मन्! मैं समझ रहा हूँ कि आज यह मेरी सब सेना किसी तरह जीती नहीं रह
१० सकती। हे महाभाग! मैं जानता हूँ कि आप पाण्डवों के हितचिन्तक हैं। इसी कारण मैं इस समय घबरा रहा हूँ कि मेरा काम कैसे सिद्ध होगा। ब्रह्मन्! मैं आपकी सेवा करता आया हूँ और यथाशक्ति आपको प्रसन्न करता रहा हूँ; किन्तु आपको मेरा ध्यान नहीं है। हे अमित-विक्रमी! हम लोग सदा आपके भक्त रहे हैं, फिर भी आप हमारा ख़याल नहीं करते, हमारे हित और अनुरोध पर ध्यान नहीं देते! बल्कि मैं देखता हूँ कि हमारे अप्रिय और अनिष्ट में तत्पर पाण्डवों पर ही आपका अधिक स्नेह है और आप सब तरह उन्हीं का हित सोचते और करते हैं। भगवन्! आप हमारे ही आश्रय में रहकर, हमारी दी हुई वृत्ति से निर्वाह करके, हमारी ही जड़ काटते हैं। मैं न जानता था कि आप उस छुरे के समान हैं जिसमें ऊपर से

शहद चुपड़ा हुआ हो। यदि पहले ही आप अर्जुन को रोकने का वादा न करते, तो मैं अपने घर जाने के लिए उद्यत सिन्धुराज जयद्रथ को कभी न रोक रखता। मैंने मूर्खतावश आपके द्वारा जयद्रथ की रक्षा की आशा की, जयद्रथ को दिलासा दिया और इस प्रकार उन्हें मृत्यु के मुँह में डाल दिया! यह निश्चित है कि यमराज की दाढ़ों के बीच में जाकर चाहे कोई मनुष्य छुटकारा पा भी जाय, किन्तु युद्ध में अर्जुन के हाथ में पड़ जाने पर जयद्रथ के प्राण नहीं बच सकते। हे गुरुवर! कृपा करके अब ऐसा कीजिए कि जयद्रथ अर्जुन के हाथों से जीते बच जायँ। मैं इस समय आर्त और मूढ़ सा हो रहा हूँ। मेरे इस प्रलाप पर आप ध्यान न दीजिए। यदि मेरे मुँह से कुछ कटु वचन निकल गये हों तो उनके लिए बुरा न मानिए।

राजा दुर्योधन के वचन सुनकर आचार्य ने कहा—राजन्! मैं तुम्हारी बातों का बुरा नहीं मानता; क्योंकि तुमको अपने पुत्र अश्वत्थामा के समान समझता हूँ। मैं तुमसे सच बात कहता हूँ, सुनो। फुरतीले घोड़ों और श्रीकृष्ण जैसे सारथी को पाकर अर्जुन बात की बात में आगे बढ़ जाते हैं। तुमने नहीं देखा कि अर्जुन जब मेरे आगे से जा रहे थे तब उनके घोड़े इतनी तेज़ी से दौड़ रहे थे कि मैंने जो बाण छोड़े थे वे अर्जुन के रथ से कोस भर पीछे रह गये थे। राजन्! अब मैं वृद्ध हो गया हूँ, इस कारण मुझमें वह फुर्ती नहीं है और मैं तेज़ी से चलने में असमर्थ हूँ। विशेष कर इस समय पाण्डवपक्ष की सेना और अन्य योद्धा हमारी सेना के सामने प्रवेश-द्वार पर पहुँच गये हैं। फिर मैं सब क्षत्रियों के बीच में यह प्रतिज्ञा कर चुका हूँ कि सब योद्धाओं के सामने ही युधिष्ठिर को जीवित पकड़ लूँगा। इस समय अर्जुन-रहित युधिष्ठिर भी मेरे सामने ही हैं। इन कारणों से मैं यह व्यूहमुख छोड़कर इस समय अर्जुन के पीछे न जाऊँगा। देखो, तुम इस पृथ्वी के राजा हो; तुम्हारे बहुत से सहायक हैं और तुम्हारा शत्रु इस समय तुम्हारे ही दल में अकेला है। तुम जाओ और जन्म-कर्म-पद में अपने तुल्य अकेले शत्रु से युद्ध करो, डरो नहीं। हे दुर्योधन! तुम राजा, शूर, सुशिक्षित, निपुण और वीर हो। [तुमने स्वयं पाण्डवों से वैर किया है।] इसलिए तुम ख़ुद वहाँ जाओ जहाँ अर्जुन हैं।

दुर्योधन ने कहा—हे आचार्य! जब सब शस्त्रधारी योद्धाओं में अग्रगण्य आपको भी लाँघकर अर्जुन आगे बढ़ गये तब भला मैं किस तरह उन्हें रोक सकूँगा? युद्ध में वज्रपाणि इन्द्र को चाहे कोई जीत भी ले; किन्तु शत्रुदमन अर्जुन को जीतना सर्वथा असम्भव है। जिन महावीर ने अस्त्रविद्या के बल से भोजराज कृतवर्मा और देवतुल्य आपको जीत लिया और सुदक्षिण, श्रुता-युध, श्रुतायु, अच्युतायु, अम्बष्ठराज तथा लाखों म्लेच्छों को देखते ही देखते मार गिराया, उन जगत् को जला रहे अग्नि के समान प्रचण्ड पाण्डव के साथ मैं कैसे युद्ध कर सकूँगा? अथवा यदि आप मुझे अर्जुन से भिड़ने में समर्थ समझते हैं, तो मैं तैयार हूँ। मैं तो सेवक के समान आपके अधीन हूँ। इसलिए आप कृपा करके मेरी लाज बचाइए।

द्रोणाचार्य ने कहा—हे कुरुकुलश्रेष्ठ ! तुम्हारा कहना सच है। अर्जुन अत्यन्त दुर्द्धर्ष और दुर्जय हैं; किन्तु मैं ऐसा उपाय किये देता हूँ कि तुम उनका सामना कर सकोगे, उनके प्रहारों को सह सकोगे। आज सब धनुर्द्धर योद्धा यह अद्भुत दृश्य देखेंगे कि श्रीकृष्ण के सामने ही अर्जुन तुम्हें लाँघकर आगे न जा सकेंगे। राजन् ! मैं तुम्हें इस तरह से यह अद्भुत सुनहरा कवच पहनाये देता हूँ कि कोई भी बाण या अस्त्र तुम्हारे शरीर में न लग सकेगा। यदि देवता, दैत्य, यक्ष, नाग, राक्षस और मनुष्य आदि त्रिलोकी के जीव मिलकर तुमसे युद्ध करेंगे तो भी तुम्हें कुछ डर नहीं है। श्रीकृष्ण, अर्जुन अथवा अन्य कोई शस्त्रधारी योद्धा तुम्हारे इस कवच को तोड़ नहीं सकता। अब तुम शीघ्र यह कवच पहन करके इस समय कुपित अर्जुन के सामने जाओ और निडर होकर उनसे युद्ध करो। अर्जुन कभी तुम्हें रण से नहीं हटा सकेंगे।

सञ्जय कहते हैं—राजन् ! ब्रह्मज्ञानियों में श्रेष्ठ द्रोणाचार्य ने अब अपनी अद्भुत विद्या के प्रभाव से उस भयावह समरभूमि में स्थित वीरों को विस्मित करने और दुर्योधन को विजयी बनाने के लिए शीघ्र जल का स्पर्श करके, यथाविधि मन्त्र पढ़कर, ४० दुर्योधन को एक अत्यन्त विचित्र तेजोमय कवच पहनाकर कहा—राजन् ! ब्रह्म, ब्रह्मा और सब ब्राह्मण तुम्हारा कल्याण करें। सब श्रेष्ठ सरीसृप, एकचरण, बहुचरण और चरण-हीन जीवों से तुम नित्य महायुद्ध में कल्याण प्राप्त करो। स्वाहा, स्वधा, शची, लक्ष्मी, अरुन्धती, असित, देवल, विश्वामित्र, अङ्गिरा, वशिष्ठ, कश्यप, लोकपाल, धाता, विधाता, सब दिशाएँ, दिक्पाल, कार्त्तिकेय, भगवान् भास्कर, चारों दिग्गज, पृथ्वी, आकाश, ग्रहगण, आदि तथा देवी, देवता, ऋषि, राजर्षि आदि सदा तुम्हारा कल्याण करें। जो पाताल में स्थित रहकर सदा धरा को धारण किये हुए हैं, वे नागराज अनन्त सदा तुम्हारा कल्याण करें।

महाराज ! पहले इन्द्र आदि देवता वृत्रासुर से युद्ध में हार गये थे, उनके अङ्ग क्षत-५० विक्षत हो गये थे। तब वे सब बलवीर्य-विहीन और भयातुर होकर ब्रह्माजी की शरण में गये।

द्रोणाचार्य ने दुर्योधन को कवच पहना कर कहा—"कोई भी बाण या अस्त्र तुम्हारे शरीर में न लग सकेगा। —पृ० २३६८

उन्होंने हाथ जोड़कर ब्रह्माजी से कहा—हे लोकनाथ ! वृत्रासुर के द्वारा पीड़ित हमारी गति आप ही हैं। इस महान् भय से आप हमारी रक्षा कीजिए। भगवान् ब्रह्मा ने अपने निकट-स्थित विष्णु और इन्द्र आदि देवताओं को उदास देखकर कहा—हे देवताओ ! तुम लोगों सहित इन्द्र और ब्राह्मणों की रक्षा करना अवश्य मेरा कर्तव्य है; किन्तु मैं इस समय वृत्रासुर का नाश करने में असमर्थ हूँ। त्वष्टा के अत्यन्त दुर्द्धर्ष दुर्जय तेज से वृत्रासुर की उत्पत्ति हुई है। पूर्व समय में त्वष्टा ने दस लाख वर्ष तक तप करके, महादेव को प्रसन्न करके, उनकी आज्ञा के अनुसार वृत्रासुर को उत्पन्न किया है। शङ्कर के प्रसाद से देव-शत्रु बली वृत्रासुर तुम सबको नष्ट कर सकता है। शङ्कर के पास गये बिना वृत्रासुर के वध का कोई उपाय नहीं हो सकता। मन्दराचल पर तपोयोनि, दक्षयज्ञ-विनाशन, पिनाकधारी, भग देवता के नेत्रों को निकालनेवाले, सब प्राणियों के ईश्वर रहते हैं। वहीं उनसे भेंट होगी। तुम लोग वहीं जाओ। राजन् ! तब सब देवता, इन्द्र और ब्रह्मा के साथ, मन्दर पर्वत पर गये। वहाँ उन्होंने देखा कि कोटि सूर्य के समान तेजोराशि महादेव विराजमान हैं। देवताओं को देखकर शङ्कर ने स्वागतपूर्वक कहा—देवगण, आओ। बताओ, मैं तुम्हारी किस इच्छा को पूर्ण करूँ ? मेरा दर्शन निष्फल नहीं होता, इसलिए तुम्हें अवश्य मुझसे अपना अभीष्ट वर प्राप्त होगा। यह सुनकर देवताओं ने कहा—हे देव-देव ! वृत्रासुर ने सब देवताओं का तेज हर लिया है। आप हम सबकी रक्षा का कोई उपाय कीजिए। हे देव ! हम लोगों के शरीर देखिए, उस दानव के दारुण प्रहारों से जर्जर हो रहे हैं। हे महेश्वर ! हम आपकी शरण में आये हैं। आप हमारी रक्षा कीजिए। यह सुनकर महादेव ने कहा—हे देवगण ! तुम लोग अच्छी तरह ६० जानते हो कि त्वष्टा ने अभिचार के अनुष्ठान से अपने तेज के द्वारा इस महाबली भयङ्कर असुर को उत्पन्न किया है। अजितेन्द्रिय साधारण प्राणी उसको नहीं जीत सकते; किन्तु मुझे देवताओं की सहायता अवश्य ही करनी है। हे इन्द्र ! लो, यह मेरे शरीर का तेजोमय कवच ग्रहण करो। असुर-श्रेष्ठ सुर-वैरी वृत्रासुर को मारने के लिए तुम मेरे बतलाये हुए मानस मन्त्र का पाठ करते हुए यह कवच अपने शरीर में बाँध लो।

द्रोणाचार्य कहते हैं—वरदानी महादेव ने इतना कहकर इन्द्र को, यह कवच और कवच के बाँधने का मन्त्र देकर, अजेय कर दिया। इस कवच के द्वारा रक्षित होकर इन्द्र वृत्रासुर की सेना से युद्ध करने चले। वृत्रासुर और उसकी सेना ने महारण में अनेक प्रकार के अस्त्र-शस्त्र इन्द्र के ऊपर चलाये; किन्तु किसी तरह उस कवच के बन्धन की सन्धि नहीं काटी जा सकी। उस कवच से रक्षित रहने के कारण इन्द्र निर्भय होकर देवशत्रु वृत्र से लड़े और उन्होंने मौक़ा पाकर उसे मार भी डाला। वह मन्त्रमय बन्धन से युक्त कवच इन्द्र ने अङ्गिरा को दिया। अङ्गिरा ने अपने पुत्र मन्त्रज्ञ बृहस्पति को वह कवच और मन्त्र

दिया। बृहस्पति ने अपने बुद्धिमान् शिष्य अग्निवेश्य को वह कवच दिया। उन्हीं महात्मा अग्निवेश्य ने वह कवच मुझे दिया था। इस समय तुम्हारे शरीर की रक्षा के लिए मैं वही श्रेष्ठ कवच मन्त्र के द्वारा तुम्हें पहनाता हूँ।

सञ्जय कहते हैं कि महाराज! दुर्योधन से यों कहकर आचार्य ने फिर धीरे से कहा—राजन्! मैं ब्रह्माजी के बतलाये हुए मन्त्र को पढ़कर ब्रह्मसूत्र के द्वारा यह दिव्य कवच तुम्हारे शरीर में बाँधता हूँ। पूर्वसमय में युद्ध छिड़ने पर हिरण्यगर्भ ब्रह्मा ने जैसे विष्णु को और फिर तारकामय-संग्राम में इन्द्र को दिव्य कवच बाँधा था, वैसे ही मैं इस समय यह दिव्य कवच
६९ तुम्हें पहनाता हूँ। राजन्! महात्मा द्रोणाचार्य ने यह कहकर विधि से मन्त्रपाठपूर्वक दुर्योधन के शरीर में कवच बाँधकर उन्हें उस भयानक संग्राम के लिए भेज दिया। इस तरह आचार्य के कवच बाँध देने पर महाबाहु दुर्योधन त्रिगर्त देश के हज़ार रथ, महाबली हज़ार हाथी, दस लाख घोड़े और अन्य अनेक महारथी साथ लेकर महाराज बलि के समान बड़े आडम्बर से अर्जुन के रथ की ओर चले। उनके साथ अनेक प्रकार के बाजे बज रहे थे। अगाध समुद्र
७९ के समान दुर्योधन के चलने पर आपकी सेना में बड़ा कोलाहल उठ खड़ा हुआ।

पञ्चानवे अध्याय

राजा लोगों के द्वन्द्व-युद्ध का वर्णन

सञ्जय कहते हैं—महाराज! श्रीकृष्ण सहित अर्जुन जब रणभूमि के बीच शत्रु-सेना के भीतर घुस गये और उनके पीछे पुरुषश्रेष्ठ दुर्योधन वेग से गये तब घोर सिंहनाद और कोलाहल करते हुए सोमकों सहित पाण्डवगण द्रोणाचार्य पर आक्रमण करने को दौड़े। उस समय दारुण युद्ध होने लगा। व्यूह के द्वारदेश पर कौरवों और पाण्डवों का अद्भुत लोमहर्षण युद्ध होने लगा। राजन्! उस समय जैसा घोर युद्ध हुआ वैसा युद्ध हमने कभी देखा और सुना नहीं। उस समय ठीक दोपहरी थी। असंख्य सेना साथ लिये हुए पाण्डवगण धृष्टद्युम्न को आगे करके द्रोणाचार्य पर बाणों की वर्षा करने लगे। हम लोग भी सब शस्त्रधारियों में श्रेष्ठ द्रोणाचार्य को आगे करके धृष्टद्युम्न सहित पाण्डवों पर बाणों की वर्षा करने लगे। शिशिर ऋतु में वायु-प्रेरित महामेघों के समान उमड़ी हुई दोनों ओर की प्रधान सेनाएँ बहुत ही शोभा को प्राप्त हुईं। दोनों ओर सुन्दर बड़े-बड़े रथों पर योद्धा लोग विराजमान थे। वे दोनों सेनाएँ परस्पर भिड़कर वर्षाऋतु में बढ़ी हुई महानदी गङ्गा और यमुना के समान बड़े वेग से आगे बढ़ने लगीं। पाण्डवों की सेना प्रचण्ड दावानल के समान आगे बढ़ रही थी और वह हाथी-घोड़े-रथ आदि से परिपूर्ण संग्रामरूप महामेघ बाणवर्षारूप जलधारा से उसे बुझा रहा

था। अनेक अस्त्र-शस्त्र ही उस मेघ के आगे चलनेवाली तेज़ हवा थे। गदारूप बिजलियाँ चमक-चमककर उसे महारौद्र बना रही थीं। द्रोणाचार्यरूप पवन उसका सञ्चालन कर रहा था। ग्रीष्म के अन्त में घोर तूफ़ान की हवा जैसे समुद्र में प्रवेश करके उसे क्षोभित करती है, वैसे ही महावीर घोररूप द्रोणाचार्य पाण्डवों की सेना में घुसकर हलचल मचाने लगे। ११ जैसे प्रबल जलराशि महासेतु को तोड़ने के लिए बारम्बार लहरों की थपेड़ें मारे, वैसे ही पाण्डवपक्ष के योद्धा भी व्यूह को तोड़ने के लिए सब ओर से सब तरह से द्रोणाचार्य के ऊपर ही आक्रमण करने लगे। किन्तु जैसे महापर्वत जलराशि को रोकता है वैसे द्रोणाचार्य भी युद्ध-भूमि में कुपित पाण्डव, पाञ्चाल और केकय-सेना को रोकने लगे। अन्य महाबली राजा लोग भी चारों ओर से पाञ्चालसेना को घेरने और आक्रमण करने लगे। उस समय नरश्रेष्ठ धृष्ट-द्युम्न शत्रुसेना का व्यूह तोड़ने की इच्छा से, पाण्डवों की सहायता से, महावीर आचार्य पर प्रहार करने लगे। जैसे द्रोणाचार्यजी धृष्टद्युम्न के ऊपर बाणों की वर्षा करते थे वैसे ही धृष्ट-द्युम्न भी आचार्य के ऊपर बाण बरसा रहे थे। महाराज! धृष्टद्युम्न उस समय युद्धभूमि में महामेघ के समान जान पड़ते थे। वे शक्ति, ऋष्टि, प्रास आदि अनेक शस्त्रों की वर्षा कर रहे थे। उनका खड्ग मेघघटा के आगे चलनेवाली हवा के समान, धनुष की डोरी बिजली के समान और धनुष का शब्द गर्जन के समान जान पड़ता था। उन महावीर ने चारों ओर शिला-खण्ड-सदृश बाण बरसाना शुरू कर दिया। उनके बाणों से असंख्य रथी और हाथी-घोड़े मरने लगे। धृष्टद्युम्नरूप मेघ ने अपने पराक्रम के प्रवाह में बहुत सी शत्रुसेना को बहा दिया। द्रोणाचार्य जिस-जिस ओर जाकर पाण्डवों के रथियों पर बाणवर्षा करते थे, उसी-उसी ओर धृष्ट-द्युम्न भी पहुँचते और उन्हें उधर से हटने के लिए लाचार करते थे।

हे भारत! द्रोणाचार्य यद्यपि इस तरह अपनी सेना को एकत्र रखने का महायत्न कर रहे थे तथापि वीर धृष्टद्युम्न ने बाणवर्षा के द्वारा उनकी सेना के तीन भाग कर दिये। कौरव-सेना २० का एक अंश भोजश्रेष्ठ कृतवर्मा का अनुगामी हुआ, एक अंश वीर जलसन्ध की शरण में गया और एक अंश [धृष्टद्युम्न के प्रहारों को न सह सकने के कारण] द्रोणाचार्य की शरण में आ गया। श्रेष्ठ महारथी द्रोणाचार्य जब-जब अपनी सेना को एकत्र करते थे तब-तब वीर-श्रेष्ठ धृष्टद्युम्न उसे छिन्न-भिन्न कर देते थे। वन में रक्षकहीन पशुओं का झुण्ड जैसे क्रूर मांसाहारी जीवों का शिकार बनता है, वैसे ही पाण्डव-सृञ्जयगण के हाथों से कौरवपक्ष के योद्धा मरने लगे। उस समय सभी लोगों को यह जान पड़ने लगा कि इस भयानक संग्राम में साक्षात् काल ही धृष्टद्युम्न के रूप से सबको मोहित और नष्ट कर रहा है। बुरे राजा के देश को दुर्भिक्ष, रोग, डाकू-चोर आदि जैसे उजाड़ देते हैं वैसे ही पाण्डवगण बाण-वर्षा करके आपकी सेना को मारने और भगाने लगे। शस्त्रों और कवचों के ऊपर सूर्य की किरणें पड़ने से जो चमक

पैदा होती थी, उससे आँखों में चकाचौंध पैदा हो जाती थी। धूल भी इतनी उड़ी कि किसी ओर कुछ भी अच्छी तरह नहीं सूझता था।

जब कौरव-सेना तीन भागों में बँट गई और पाण्डव लोग उसका संहार करने लगे तब अत्यन्त कुपित होकर द्रोणाचार्य भी तीक्ष्ण बाणों से पाञ्चालसेना का संहार करने लगे। पाञ्चालसेना को रौंदते और बाणों से नष्ट करते समय द्रोणाचार्य का रूप बहुत ही भयङ्कर देख पड़ने लगा। वे प्रचण्ड प्रज्वलित कालाग्नि के समान जान पड़ने लगे। महारथी द्रोणाचार्य एक-एक बाण से रथ, हाथी, घोड़े और पैदल आदि को छिन्न-भिन्न कर रहे थे। उस समय पाण्डवों की सेना में ऐसा कोई योद्धा नहीं देख पड़ता था, जो द्रोण के धनुष से छूटे हुए बाणों

३० के वेग को सह सकता। पाण्डवों की सेना एक साथ ही सूर्य की किरणों और आचार्य के बाणों से पीड़ित होकर इधर-उधर भागने लगी। इसी तरह कौरवों की सेना भी धृष्टद्युम्न के बाणों से पीड़ित होकर भागने लगी। सूखा वन जैसे आग लगने से जल उठता है वैसे ही कौरवों की सेना धृष्टद्युम्न के बाणों से भस्म होने लगी। इस तरह द्रोणाचार्य और धृष्टद्युम्न के बाणों से पीड़ित होकर भी दोनों पक्ष के वीर योद्धा, स्वर्ग पाने की इच्छा से प्राणों की ममता छोड़कर, घोर युद्ध करने लगे। उस समय दोनों पक्ष की सेना में ऐसा कोई वीर योद्धा न था जो प्राणों के भय से संग्राम छोड़कर भाग खड़ा हुआ हो।

राजन्! उस समय आपके पुत्र विविंशति, चित्रसेन और महारथी विकर्ण, ये तीनों भीमसेन को घेरकर उनसे युद्ध करने लगे। उन तीनों की सहायता करने के लिए अवन्ति-देशीय विन्द, अनुविन्द और पराक्रमी क्षेमधूर्ति, ये तीन वीर आगे बढ़े। श्रेष्ठ कुल में उत्पन्न महारथी तेजस्वी बाह्लीकराज ने अपनी सेना और मन्त्रियों के साथ द्रौपदी के पाँचों पुत्रों को रोका। शिवि के पुत्र राजा गोवासन, श्रेष्ठ हज़ार योद्धाओं के साथ, काशिराज अभिभू के पराक्रमी पुत्र से युद्ध करने लगे। प्रज्वलित अग्नि के समान तेजस्वी महाराज युधिष्ठिर से मद्र-राज शल्य युद्ध करने लगे। असहनशील क्रोधी शूर दुःशासन अपनी सेना को यथास्थान

४० स्थापित करके श्रेष्ठ रथी सात्यकि से युद्ध करने के लिए आगे बढ़े। मैं ख़ुद कवच पहनकर, सुसज्जित होकर, अपनी सेना और चार सौ महाधनुर्द्धर योद्धाओं को साथ लेकर चेकितान से युद्ध करने लगा। धनुष, शक्ति, खड्ग, प्रास आदि शस्त्र हाथ में लिये सात सौ गान्धारदेश के योद्धाओं को साथ लिये सेना सहित गान्धारराज शकुनि नकुल और सहदेव से युद्ध करने लगे। अवन्तिदेशीय विन्द और अनुविन्द नाम के दोनों भाई, प्राणों की ममता छोड़कर, मित्र के लिए शस्त्र उठाकर, मत्स्यराज विराट से युद्ध करने लगे। अपराजित वीर शिखण्डी पराक्रमपूर्वक आगे बढ़ रहे थे, उन्हें रोकने के लिए महाराज बाह्लीक आगे बढ़े और उनसे घोर युद्ध करने लगे। अवन्ति देश के राजा, क्रूर प्रभद्रकगण और सौवीर देश की सेना साथ लेकर, धृष्टद्युम्न से युद्ध

करने लगे। महावीर अलायुध, आगे बढ़नेवाले क्रुद्ध क्रूरकर्मा राक्षस घटोत्कच के सामने आये और उससे युद्ध करने लगे। महारथी कुन्तिभोज ने बड़ी सेना लेकर क्रोधी अलम्बुष को रोका। महाराज! जयद्रथ उस समय कृपाचार्य आदि महाधनुर्द्धरों के द्वारा सुरक्षित होकर सब सेना के पीछे थे। जयद्रथ के रथ के दाहने पहिये की रक्षा अश्वत्थामा और बायें पहिये की रक्षा वीर कर्ण कर रहे थे। सोमदत्त के पुत्र भूरिश्रवा आदि वीरगण जयद्रथ के पृष्ठभाग की रक्षा कर रहे थे। महाराज! समरनिपुण नीतिज्ञ महाधनुर्द्धर कृपाचार्य, वृषसेन, शल और शल्य आदि वीरगण इस तरह जयद्रथ की रक्षा का उपाय करके घोर युद्ध करने लगे। ५१

छियानवे अध्याय

द्वन्द्व-युद्ध का वर्णन

सञ्जय ने कहा—महाराज! कौरवों और पाण्डवों का घोरतर युद्ध जिस तरह हुआ, उसका वर्णन मैं करता हूँ, सुनिए। महावीर पाण्डवगण व्यूह के मुख में द्रोणाचार्य पर आक्रमण करके उनके सेनाव्यूह को छिन्न-भिन्न करने के लिए भयानक संग्राम करने लगे। आचार्य द्रोण भी महान् यश प्राप्त करने की इच्छा से, अपने व्यूह की रक्षा करते हुए, सैनिकों के साथ पाण्डवों से घोर युद्ध करने लगे। राजन्! इसी समय आपके पुत्र के हितचिन्तक विन्द और अनुविन्द ने अत्यन्त क्रुद्ध होकर विराट को दस बाण मारे। महाराज विराट भी पराक्रमपूर्वक अनुचरों सहित पराक्रमी उन दोनों भाइयों से घोर संग्राम करने लगे। जैसे वन में एक सिंह दो मत्त गजों से लड़े वैसे ही उन दोनों भाइयों से राजा विराट का घोर युद्ध होने लगा, जिसमें पानी की तरह रक्त बह चला। महापराक्रमी राजकुमार शिखण्डी मर्मभेदी तीक्ष्ण बाण छोड़कर महाराज बाह्लीक को पीड़ित करने लगे। उन्होंने भी क्रोधविह्वल होकर सुवर्ण-पुङ्खयुक्त, शिलाओं पर सान धरे हुए, सन्नतपर्व-शोभित नव बाण शिखण्डी को मारे। उनका वह युद्ध डरपोक पुरुषों के लिए भयावह और वीरों के लिए हर्षवर्धक हुआ। उनके बाणों से सब दिशाएँ और आकाशमण्डल व्याप्त हो गया। बाणों से ऐसा अँधेरा छा गया कि कुछ भी नहीं सूझता था। गजराज जैसे प्रतिद्वन्द्वी गजराज से युद्ध करे वैसे ही महाराज शैब्य गोवासन अपने प्रतिपक्षी काश्य के महारथी पुत्र से युद्ध करने लगे। मन जैसे पाँचों इन्द्रियों को वश में लाने का यत्न करे वैसे ही कुपित महाराज बाह्लीक द्रौपदी के पाँचों पुत्रों से युद्ध करने लगे। हे नरश्रेष्ठ! इन्द्रियाँ जैसे देह को दम नहीं लेने देतीं वैसे ही वे पाँचों वीर तीक्ष्ण बाण बरसाकर महाराज बाह्लीक के साथ घोर संग्राम करने लगे। १०

राजन् ! आपके पराक्रमी पुत्र दुःशासन ने यदुश्रेष्ठ सात्यकि को बहुत ही तीक्ष्ण नव बाण मारे। अत्यन्त बली दुःशासन के प्रबल प्रहार से सत्यपराक्रमी सात्यकि कुछ विह्वल और मूर्च्छित-से हो गये। कुछ सँभलने पर वीर सात्यकि ने आपके पुत्र महारथी दुःशासन को फुरती के साथ कङ्कपत्रयुक्त दस बाण मारे। इस तरह एक दूसरे के प्रहार से घायल होने पर दोनों वीर फूले हुए ढाक के पेड़ से शोभायमान हुए। राक्षस अलम्बुष ने महापराक्रमी कुन्ति-भोज के बाणों से पीड़ित और कुपित होकर उन्हें अनेक प्रकार के तीक्ष्ण बाणों से पीड़ित किया।
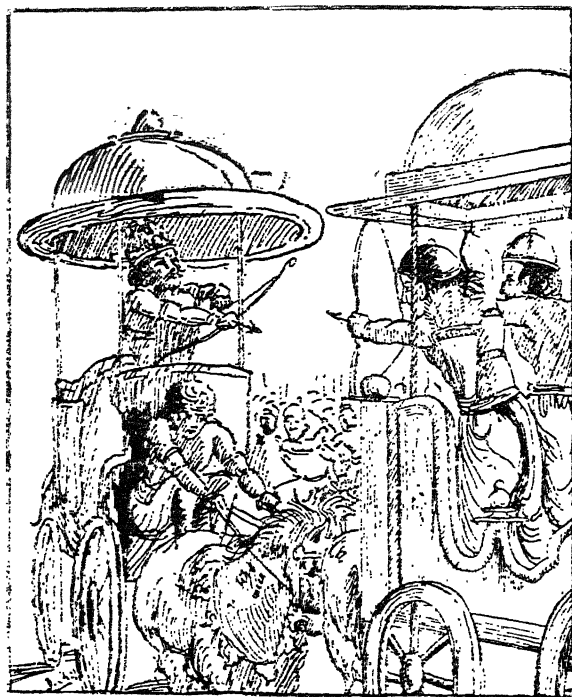
फूले हुए ढाक के पेड़ के समान शोभायमान वह राक्षस सेना के अग्रभाग में भयानक शब्द करने लगा। पहले जम्भासुर और इन्द्र से जैसा घोर युद्ध हुआ था वैसा ही संग्राम अलम्बुष और कुन्तिभोज का हुआ। सब सैनिक वह घोर युद्ध देखने लगे। माद्री के पुत्र नकुल और सहदेव अत्यन्त कुपित होकर पहले से ही वैर बढ़ानेवाले बली शकुनि के ऊपर बाण बरसाने लगे।

२०

महाराज! इस तरह युद्धभूमि में घोर जनसंहार होने लगा। पाण्डवों के क्रोध की आग आपकी दुर्नीति के प्रभाव से उत्पन्न हुई थी। कर्ण की बदौलत वह बढ़ी और आपके पुत्रों ने अपने व्यवहार से उसे अब तक बना रक्खा था। वह आग अब इस समग्र पृथ्वीमण्डल को भस्म करने के लिए तैयार है। [खैर, जो होना था, सो हो गया। अब युद्ध का वृत्तान्त सुनिए।] नकुल और सहदेव के बाणों की मार से महावीर शकुनि रण-विमुख हो गये। वे पराक्रम प्रकट करने में असमर्थ और किङ्कर्तव्य-विमूढ़ हो गये। महारथी नकुल और सहदेव शकुनि को युद्ध से विमुख देखकर बड़े वेग से, पर्वत पर जलधारा के समान, उन पर तीक्ष्ण बाण बरसाने लगे। उन दोनों वीरों के विकट बाणों से विह्वल होकर वीर शकुनि वेग से घोड़े हँकाकर द्रोणाचार्य की सेना के भीतर घुस गये। महावीर घटोत्कच बड़े वेग से आते हुए अलायुध राक्षस की ओर दौड़ा। पहले राम और रावण ने जैसा भयानक संग्राम किया था वैसा ही घोर युद्ध वे दोनों राक्षस करने लगे। राजा युधिष्ठिर

घोर युद्ध वे दोनों राक्षस करने लगे।—पृ० २२७४

शल्य को पहले पचास बाण और फिर तीक्ष्ण सात बाण मारे। शम्बरासुर और इन्द्र
ाल्य और राजा युधिष्ठिर का अद्भुत युद्ध होने लगा। राजन्! आपके पुत्र विविंशति,
ार विकर्ण भी बहुत सी सेना साथ लेकर घोरतर संग्राम करने लगे। ३१.

सत्तानवे अध्याय

द्रोणाचार्य्य और धृष्टद्युम्न का युद्ध

ञ्जय कहते हैं—राजन्! इस प्रकार महाघोर संग्राम के ज़ोर पकड़ने पर पाण्डवगण
में बँटी हुई उस कौरव-सेना पर प्राणपण से आक्रमण करने के लिए आगे बढ़ने लगे।
ीमसेन ने महाबाहु राजा जलसन्ध पर, असंख्य सेना सहित महाराज युधिष्ठिर ने
वर्मा पर और सूर्यसदृश तेजस्वी वीर धृष्टद्युम्न ने द्रोणाचार्य पर आक्रमण किया। ये
ूसरे के दल पर असंख्य बाणों की वर्षा करने लगे। संग्रामतत्पर, परम कुपित, धनु-
और पाण्डव लोग एक दूसरे से भिड़कर तुमुल युद्ध करने लगे। राजन्!
असंख्य प्राणियों का संहार होने लगा। दोनों ओर के योद्धा निर्भय होकर, प्राणों
छोड़कर, मरने-मारने लगे। बलवीर्यशाली द्रोणाचार्य भी पराक्रमी पाञ्चाल-राज-
द्युम्न से युद्ध करते हुए बाण बरसाने लगे। उनका पराक्रम और फुर्ती देखकर
ा आश्चर्य हुआ। द्रोणाचार्य और पराक्रमी धृष्टद्युम्न, दोनों पक्ष के, असंख्य सैनिकों
काट-काटकर चारों ओर गिराने लगे। ऐसा जान पड़ने लगा मानों चारों ओर
में खिले हुए कमलों का वन लगा हुआ है। उस समय रणस्थल में चारों ओर ढेर
ों के कपड़े, गहने, शस्त्र, ध्वजा, कवच और हथियार आदि गिरे हुए थे। वीरों के
ीगे हुए सोने के कवच बिजली से शोभित मेघों के समान जान पड़ने लगे। उस
ान्य वीर योद्धा भी ताल-प्रमाण बड़े-बड़े धनुष चढ़ाकर विकट बाणों की मार से
घोड़ों और मनुष्यों को मार-मारकर गिराने लगे। असंख्य वीरों के सिर, हाथ, १०
ार, धनुष और कवच आदि छिन्न-भिन्न होकर इधर-उधर बिखरने लगे।
जन्! उस समय रणभूमि में वीरों के कबन्ध उठ खड़े हुए। गिद्ध, कङ्क, बगले,
और गीदड़ आदि मांसाहारी जीव मरे और घायल हाथियों, घोड़ों और मनुष्यों
और मज्जा खाने, रक्त पीने, उनके केश नोचने तथा शरीर और मस्तक खींचने लगे।
रणनिपुण, अस्त्रविद्या में सुशिक्षित, समर की दीक्षा लिये हुए योद्धा लोग विजय की
अत्यन्त घोर युद्ध करने लगे। सैनिक पुरुष निर्भय होकर तलवारों के पैंतरे दिखाते
र्वक ऋष्टि, शक्ति, प्रास, शूल, तोमर, गदा, पट्टिश और परिघ आदि अस्त्र-शस्त्रों से

तथा मल्लयुद्ध के द्वारा एक दूसरे को मारने और पटकने लगे। रथी लोग रथी योद्धाओं के साथ, घुड़सवार घुड़सवारों के साथ, हाथियों के सवार हाथियों के सवारों के साथ और पैदल सिपाही पैदलों के साथ भिड़ गये। मदमत्त हाथी उन्मत्त की तरह २० चिल्लाते हुए एक दूसरे पर चोट करने लगे।

महाराज! महावीर धृष्टद्युम्न ने ऐसे भयानक युद्ध के अवसर पर अपना रथ द्रोणाचार्य के रथ से भिड़ा दिया। फुरतीले, लाल रङ्ग के और कबूतर के रङ्ग के दोनों वीरों के बढ़िया घोड़े एक जगह मिलकर बिजली सहित मेघमण्डल के समान शोभा को प्राप्त हुए। उस समय शत्रुदलदलन महावीर धृष्टद्युम्न आचार्य को अपने पास पाकर दुष्कर कर्म करने के लिए तैयार हुए। वे धनुष-बाण रखकर, ढाल-तलवार लेकर, अपने रथदण्ड के सहारे आचार्य के रथ पर पहुँच गये। वे कभी घोड़ों के ऊपर, कभी घोड़ों के पीछे और कभी रथ के 'युग' पर दिखाई पड़ने लगे। तलवार हाथ में लिये महासाहसी धृष्टद्युम्न, आचार्य के लाल घोड़ों पर, इस प्रकार भ्रमण करते हुए युद्ध करने लगे; किन्तु रणनिपुण आचार्य को तनिक भी ऐसा अवकाश नहीं मिला, जिसमें वे धृष्टद्युम्न पर वार करते। धृष्टद्युम्न का यह अद्भुत साहस और दुष्कर कर्म देखकर सब लोग उनकी प्रशंसा करने लगे। मांस की इच्छा से बाज़ जैसे शिकार पर झपटता है वैसे ही महावीर धृष्टद्युम्न आचार्य को मार डालने का मौक़ा ढूँढ़ते हुए उनके और अपने रथ पर विचरने लगे। दम भर के बाद आचार्य ने कुपित होकर सौ बाणों से धृष्टद्युम्न की ढाल और दस बाणों से तलवार काट डाली। इसके बाद ही चौंसठ बाणों से उनके घोड़ों को मार डाला, दो भल्ल बाणों से रथ की ध्वजा काट डाली, छत्र काट गिराया और पृष्ठरक्षक ३० सहित सारथी का सिर काट डाला। फिर आचार्य ने कान तक धनुष की डोरी खींचकर एक वज्रसदृश, प्राण हर लेनेवाला, भयानक बाण धृष्टद्युम्न के ऊपर छोड़ा। यह देखकर महावीर सात्यकि ने उसी घड़ी फुर्ती के साथ चौदह बाणों से आचार्य के उस दारुण बाण को काट डाला और इस तरह, सिंह के मुँह में पहुँचे हुए मृग के समान, धृष्टद्युम्न को आचार्य के प्रहार से बचा लिया। उस भयानक समर में सात्यकि को धृष्टद्युम्न की रक्षा करते देखकर पराक्रमी द्रोणाचार्य ने शीघ्रता के साथ उनको छब्बीस तीक्ष्ण बाण मारे। फिर वे सृञ्जयगण का संहार करने लगे। यह देखकर महावीर सात्यकि को भी क्रोध चढ़ आया। उन्होंने ताककर आचार्य की छाती में छब्बीस बाण मारे। तब विजयाभिलाषी पाञ्चालदेश के योद्धा लोग, सात्यकि ३६ को आचार्य के सामने देखकर, धृष्टद्युम्न को फुर्ती के साथ रणभूमि से हटा ले गये।

अट्ठानवे अध्याय

द्रोणाचार्य्य और सात्यकि का युद्ध

धृतराष्ट्र ने पूछा—हे सञ्जय! महारथी सात्यकि ने जब आचार्य के छोड़े हुए बाण को काटकर धृष्टद्युम्न की रक्षा की तब शस्त्रधारियों में श्रेष्ठ द्रोणाचार्य ने, सात्यकि के ऊपर कुपित होकर, कैसा संग्राम किया?

सञ्जय कहने लगे—राजन्! उस समय महारथी आचार्य कुपित होकर, धनुष लेकर, सुवर्णपुङ्खशोभित बाण और नाराच बाण बरसाने लगे। वे महानाग के समान लम्बी साँसें लेते हुए वेग के साथ सात्यकि की ओर झपटे। उनमें क्रोधरूपी विष था, धनुषरूपी फैलाया हुआ मुँह था, पैने बाण ही दाँत थे और नाराच बाण डाढ़ें थीं। द्रोणाचार्य के लाल घोड़े ऐसे वेग से जाने लगे कि जान पड़ता था मानों वे आकाशमार्ग में उड़े जा रहे हैं, या पर्वत के ऊपर चढ़ते जा रहे हैं। उस समय महावीर सात्यकि ने द्रोणरूप मेघ को देखा जो बाणरूपी वर्षा कर रहा था और रथ की ध्वनि-रूप गर्जना कर रहा था। धनुष का खींचना ही मूसलाधार वर्षा थी जिसमें नाराच बिजली की तरह चमक रहे थे। इस मेघ में शक्ति और खड्ग ही वज्र थे। यह मेघ क्रोध के वेग से उत्पन्न

और घोड़े रूप आँधी के ज़ोर से चल रहा था। तब सात्यकि ने हँसकर अपने सारथी से कहा—हे सूत! तुम शीघ्र इन स्वकर्म-च्युत, दुर्योधन के लिए आश्रयभूत, राजपुत्रों के गुरु, वीराभिमानी ब्राह्मण द्रोण के पास मेरा रथ ले चलो। सारथी ने उसी दम सात्यकि की आज्ञा के अनुसार, १० सफ़ेद और हवा के समान वेग से चलनेवाले, घोड़ों को आचार्य के सामने पहुँचा दिया।
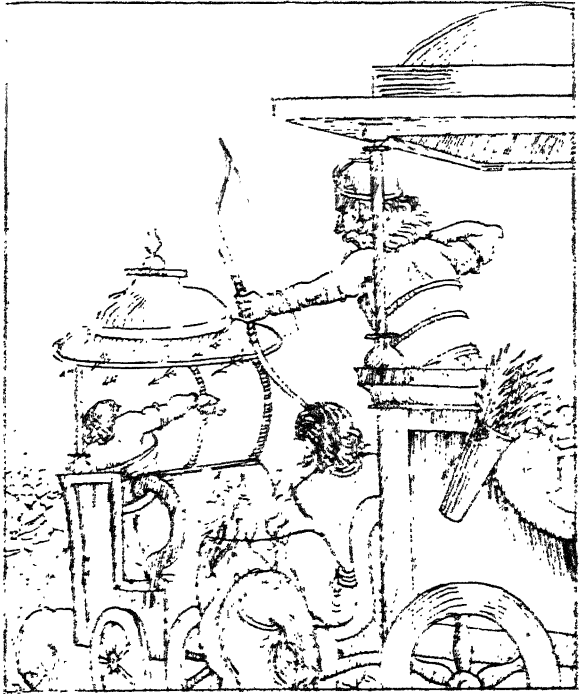
महाराज! अब शत्रुदलन आचार्य द्रोण और शिनि के वंश में उत्पन्न सात्यकि दोनों ही अत्यन्त घोर युद्ध में प्रवृत्त होकर परस्पर जलधारा के समान असंख्य बाण बरसाने लगे। उन

दोनों वीरों के बाण आकाशमण्डल भर में और सब दिशाओं में व्याप्त हो गये। उन्होंने सूर्य के प्रकाश को छिपा लिया और पवन की गति भी रोक ली। इस तरह दोनों की बाणवर्षा से समरभूमि आच्छन्न होने पर अन्यान्य वीरगण, कुछ न सूझ पड़ने के कारण, युद्ध न कर सके। शीघ्र अस्त्र चलाने में निपुण द्रोणाचार्य और सात्यकि ने इतने बाण बरसाये कि तिल भर भी ख़ाली जगह नहीं देख पड़ती थी। उन दोनों वीरों के बाणों के लगातार गिरने का शब्द इन्द्र के छोड़े वज्रों के गिरने की भयानक कड़क के समान सुनाई पड़ने लगा। नाराच बाणों से कटे और बिंधे हुए बाण विषैले नाग के डँसे हुए साँपों के समान दिखाई पड़ते थे। उन युद्धनिपुण वीरों की प्रत्यञ्चा और हथेली का शब्द ऐसा जान पड़ता था जैसे पर्वत के शिखरों पर लगातार वज्र गिर रहा हो। दोनों वीरों के रथ, घोड़े और सारथी—सुवर्णपुङ्खयुक्त बाणों से आच्छन्न होने के
२० कारण—विचित्र प्रतीत होने लगे। साफ़ और सीधे नाराच बाण केंचुल छोड़े हुए नाग के समान चारों ओर गिर रहे थे। दोनों के छत्र कट गये और ध्वजाएँ कटकर गिर पड़ीं। दोनों ही विजय की इच्छा से युद्ध कर रहे थे। दोनों के शरीरों से रक्त बह रहा था, जिससे वे मतवाले गजराजों के समान जान पड़ते थे। प्राणनाशक बाणों से दोनों एक दूसरे को घायल कर रहे थे।

उस समय युद्धभूमि में गर्जन, सिंहनाद, चिल्लाहट और शङ्ख-दुन्दुभि आदि के शब्द बन्द हो गये; कोई चूँ तक नहीं करता था। सैनिक लोग युद्ध करना छोड़कर चुपचाप कौतूहल के साथ उन दोनों का अद्भुत युद्ध देखने लगे। उन दोनों वीरों के आसपास खड़े हुए रथी, हाथियों के सवार, घुड़सवार और पैदल योद्धा एकटक उस युद्ध को देखने लगे। हाथियों, घोड़ों और रथों की सेनाएँ व्यूहरचनापूर्वक यथास्थान खड़ी थीं। मोती-मूँगे आदि से चित्र-विचित्र, सुवर्ण-मणिभूषित ध्वजाएँ, विचित्र गहने, रङ्गीन कम्बल, सूक्ष्म कम्बल, सुनहरे कवच,
३० साफ़ तीक्ष्ण शस्त्र, घोड़ों के सिर की कलँगी, हाथियों के मस्तकों पर पड़ी हुई सोने-चाँदी की माला, कुम्भ-माला, दन्तवेष्टन आदि की शोभा से वे सेनाएँ ऐसी जान पड़ती थीं जैसे वर्षाकाल आने पर बगलों की क़तार, जुगनू, इन्द्रधनुष और बिजली से युक्त भारी घन-घटाएँ उमड़ी हुई हों।

महाराज! हमारे और युधिष्ठिर के सभी सैनिक महात्मा द्रोणाचार्य और सात्यकि का दारुण युद्ध देखने लगे। विमानों पर बैठे हुए ब्रह्मा चन्द्रमा इन्द्र आदि देवता, सिद्ध, चारण, विद्याधर, नाग आदि के झुण्ड के झुण्ड आकाशमार्ग से वह युद्ध देख रहे थे। उन दोनों वीरों के आगे बढ़ने, पीछे हटने और विचित्र अस्त्रों के द्वारा दिव्य अस्त्रों को निष्फल करने का कौशल और फुर्ती देखकर सबको बड़ा आश्चर्य हुआ। अस्त्रप्रयोग में हाथों की फुर्ती दिखाते हुए महाबली द्रोण और सात्यकि एक दूसरे पर प्रहार कर रहे थे। इसी बीच में सात्यकि ने सुदृढ़ बाणों से द्रोणाचार्य के बाण निष्फल करके धनुष काट डाला। शत्रुदमन द्रोण ने दम भर में दूसरा धनुष लेकर उस पर डोरी चढ़ाई; किन्तु सात्यकि ने फुर्ती के साथ वह धनुष भी काट

द्रोणाचार्य्य ने और धनुष लेकर उस पर डोरी चढ़ाई। सात्यकि ने...धनुष भी काट डाला।—पृ० २३७६
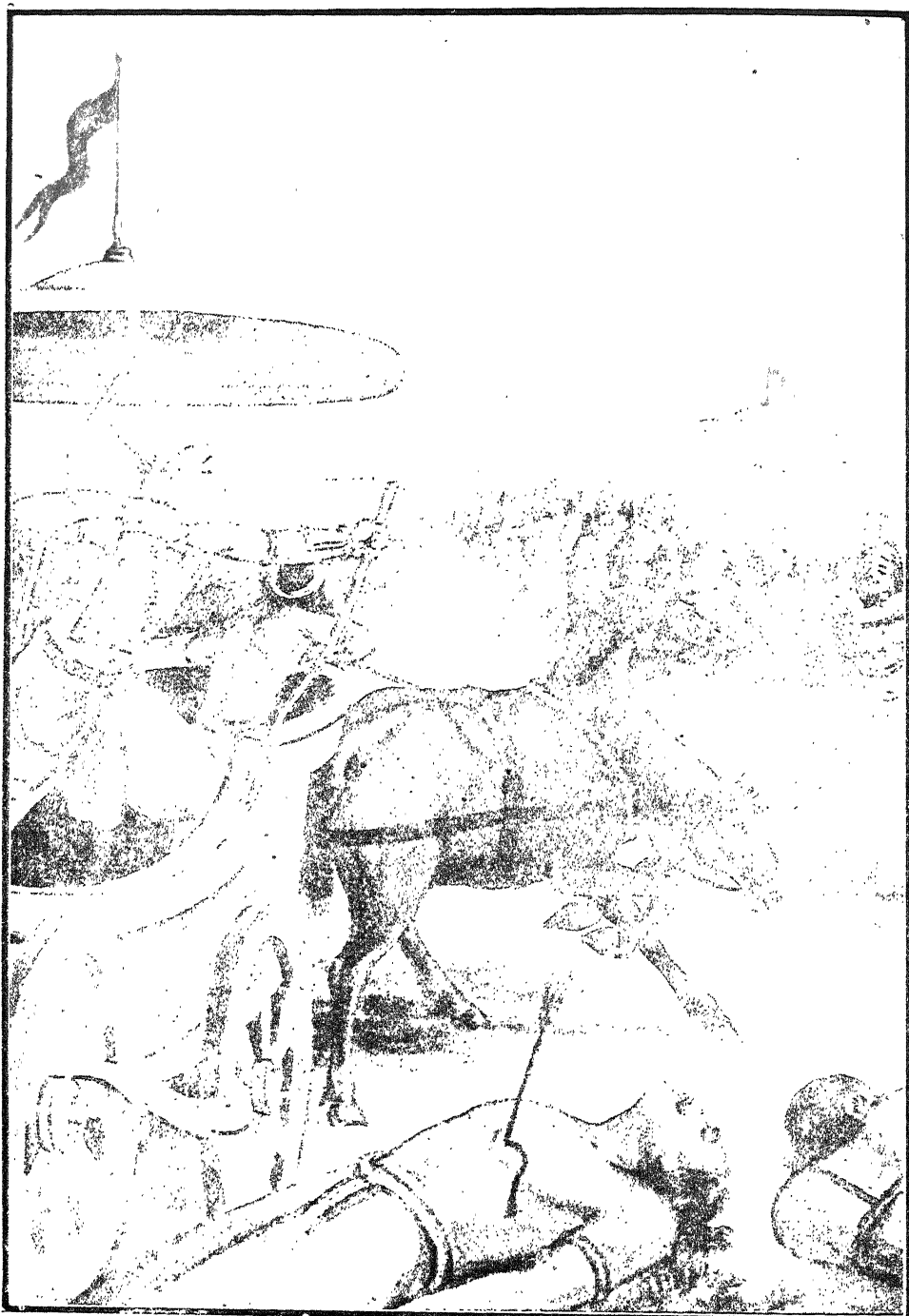
डाला। फिर द्रोणाचार्य ने और धनुष लेकर उस पर डोरी चढ़ाई। सात्यकि ने फुर्ती दिखाते हुए वह धनुष भी काट डाला। इस तरह जब-जब आचार्य धनुष लेते थे तब-तब उसे सात्यकि काट डालते थे। महाराज! दृढ़धनुर्द्धारी सात्यकि ने द्रोणाचार्य के एक सौ धनुष काट डाले। इस काम में सात्यकि ने इतनी फुर्ती दिखाई कि यह किसी को विदित न हो सका कि उन्होंने कब अपने धनुष पर बाण चढ़ाया और कब द्रोणाचार्य का धनुष उससे काट डाला। सात्यकि के उस अपूर्व काम को देखकर द्रोणाचार्यजी सोचने लगे कि परशुराम, कार्तवीर्य सहस्रबाहु अर्जुन, अर्जुन और भीष्म पितामह की सी फुर्ती और अस्त्रबल सात्यकि में देख पड़ रहा है। ४० इन्द्र के समान सात्यकि का पराक्रम, अस्त्रबल और फुर्ती देखकर द्विजश्रेष्ठ द्रोणाचार्य मन ही मन उनकी बड़ाई करने लगे। अस्त्रज्ञ पुरुषों में श्रेष्ठ द्रोणाचार्य सात्यकि के कर्म से सन्तुष्ट हुए। इन्द्र आदि देवता, गन्धर्व, सिद्ध, चारण सभी द्रोणाचार्य के अस्त्रबल और फुर्ती को तो जानते थे; लेकिन सात्यकि के अस्त्रबल और हस्तलाघव को नहीं जानते थे। इस समय उनके असाधारण कर्म को देखकर उन्हें भी सन्तोष और आश्चर्य हुआ।

इसके बाद अस्त्र-विद्या-विशारद शत्रुदमन द्रोणाचार्य और धनुष लेकर दिव्य अस्त्रों के द्वारा युद्ध करने लगे। सात्यकि भी बहुत शीघ्र अपने अस्त्रों के द्वारा उनके अस्त्रों को निष्फल करके उन पर तीक्ष्ण बाण बरसाने लगे। यह देखकर सबको बड़ा आश्चर्य हुआ। रणकौशल के ज्ञाता कौरवदल के वीरगण, सात्यकि के अलौकिक युद्धकौशल और अस्त्रबल को देखकर, उनकी प्रशंसा करने लगे। द्रोणाचार्य ने जो-जो अस्त्र छोड़े, उनका और उन्हें व्यर्थ करनेवाले अस्त्रों का प्रयोग महावीर सात्यकि ने भी किया। शत्रुतापन आचार्य धैर्य के साथ उनसे युद्ध करने लगे; किन्तु सात्यकि के अस्त्रकौशल से वे घबरा-से गये। तब धनुर्वेद के पारगामी आचार्य ने कुपित होकर, सात्यकि को मारने के लिए, महाघोर शत्रुनाशन दिव्य आग्नेय अस्त्र का प्रयोग किया। यह देखकर सात्यकि ने असाधारण वरुणास्त्र का प्रयोग किया। दोनों वीरों को दिव्य ५० अस्त्रों का प्रयोग करते देखकर चारों ओर हाहाकार होने लगा। उस समय आकाश से आकाशचारी जीव भी हट गये। दोनों वीरों ने बाणों को जिस समय दिव्य अस्त्रों से अभिमन्त्रित किया उस समय सूर्य बीच आकाश से पश्चिम की ओर हट चुके थे, दोपहरी ढल चुकी थी। दोनों अस्त्र एक दूसरे के प्रभाव से व्यर्थ हो गये।

उस समय राजा युधिष्ठिर, भीमसेन, नकुल और सहदेव सात्यकि की सहायता और रक्षा करने लगे। धृष्टद्युम्न आदि योद्धा, विराट, केकय, मत्स्य और शाल्व देश की सेनाएँ द्रोणाचार्य के ऊपर वेग से आक्रमण करने लगीं। इधर आचार्य को शत्रुओं से घिरे देखकर दुःशासन को आगे किये हुए हज़ारों राजकुमार आचार्य की रक्षा के लिए उनके पास आये। राजन्! उस समय उन योद्धाओं के साथ आपके दल का घोर युद्ध होने लगा। चारों ओर

धूल और बाणों का अँधेरा छा गया। कुछ न सूझ पड़ने के कारण सब लोग घबरा उठे। इस
५७ प्रकार धूल के मारे सब सेना के विह्वल होने पर मर्यादाहीन युद्ध होने लगा।

निन्नानवे अध्याय

अर्जुन का अस्त्रविद्या के प्रभाव से रणभूमि में जल निकालकर घोड़ों को पानी पिलाना

सञ्जय कहते हैं—राजन् ! सूर्यदेव अस्ताचल की ओर बढ़े। क्रमशः किरणों की तेज़ी घट चली और धूल का अँधेरा अधिकाधिक बढ़ने लगा। कौरव-सेना के योद्धा कभी सामने डटकर लड़ते थे, कभी भागते और कभी लौटकर फिर सामना करते थे। इस तरह विजय पाने का यत्न करते-करते धीरे-धीरे वह दिन बीत चला। इस प्रकार जय की इच्छा से सब सैनिक भिड़-कर युद्ध करने लगे। जयद्रथ के पास जाने के लिए अर्जुन और श्रीकृष्ण बराबर आगे ही बढ़ते जा रहे थे। अर्जुन अपने तीक्ष्ण बाणों के द्वारा रथ के जाने भर की राह करते जाते थे और श्रीकृष्ण उसी राह से रथ लिये जा रहे थे। अर्जुन का रथ जहाँ-जहाँ जाता था वहाँ-वहाँ आपके पक्ष की सेना [काई की तरह] फटती जाती थी। उस समय पराक्रमी केशव उत्तम, मध्यम और अधम, त्रिविध मण्डलों को दिखाते हुए अपनी रथ हाँकने की कला का परिचय दे रहे थे। अर्जुन के नाम से अङ्कित, काल और अग्नि के तुल्य, ताँत से बँधे हुए, सुन्दर गाँठों से शोभित, चौड़े, मोटे, दूर तक जानेवाले, बाँस और लोहे के बने अत्यन्त उग्र बाण विविध शत्रुओं के प्राण हरने और मांसाहारी पक्षियों के साथ उनका रक्त पीने लगे। कृष्णचन्द्र इस वेग से रथ हाँक रहे थे कि रथ पर बैठे हुए अर्जुन कोस भर आगे जिन बाणों को छोड़ते थे, वे बाण कोस भर आगे रथ निकल जाने पर शत्रुओं के प्राण हरते थे। गरुड़ और वायु के समान वेगगामी सुशिक्षित घोड़ों को हाँककर कृष्णचन्द्र इस कौशल और तेज़ी से रथ को लिये
१० जा रहे थे कि सब लोगों को देखकर बड़ा आश्चर्य हो रहा था। जितने वेग से अर्जुन का रथ जा रहा था उतने वेग से कभी पहले इन्द्र, रुद्र और कुबेर का भी रथ नहीं चला। मतलब यह कि मन और मनोरथ के समान शीघ्र जानेवाला अर्जुन का रथ जिस तरह जा रहा था उस तरह कभी किसी का रथ नहीं गया। राजन् ! शत्रुदलदलन केशव इस तरह रणभूमि में प्रवेश करके फुर्ती के साथ घोड़ों को शत्रुसेना के बीच चलाने लगे। अर्जुन के घोड़े शत्रुसेना के रथों के बीच में भूख-प्यास और थकन के मारे धीरे-धीरे चलने लगे। योद्धाओं के अनेक अस्त्र-शस्त्र लगने से उनके अङ्गों में बहुत से घाव हो चुके थे। उस व्यथा और थकन के मारे वे घोड़े धीमी चाल से विचित्र मण्डलाकार गतियों से चलने लगे। वे घोड़े मरे हुए पर्वताकार घोड़ों, हाथियों, मनुष्यों और टूटे-फूटे रथों के ऊपर से रथ को खींचते चले जा रहे थे।

राजन्! तब अवन्तिदेश के विन्द और अनुविन्द ने अर्जुन के घोड़ों को थका हुआ देखकर अपनी सेना के साथ उनका सामना किया। उन्होंने अर्जुन को चौंसठ, श्रीकृष्ण को सत्तर और घोड़ों को सौ बाणों से पीड़ित किया। तब महावीर अर्जुन ने अत्यन्त कुपित होकर उनको पैने नव बाण मारे। महाबलशाली विन्द और अनुविन्द ने अर्जुन के बाणों से अत्यन्त क्रुद्ध होकर घोर सिंहनाद किया और अर्जुन तथा श्रीकृष्ण को बाणों से ढक दिया। २० महावीर अर्जुन ने दो भल्ल बाणों से फुर्ती के साथ उनका विचित्र धनुष और सुवर्णमण्डित ध्वजाएँ काट डालीं। महाबली विन्द और अनुविन्द तुरन्त अन्य धनुष लेकर क्रोधपूर्वक अर्जुन के ऊपर बाण बरसाने लगे। यह देखकर अर्जुन ने क्रोध करके फिर दो बाणों से उनके धनुष काट डाले। फिर उनके सारथी, पृष्ठरक्षक, सहायक पैदल सिपाही और घोड़े भी मार डाले और एक विकट क्षुरप्र बाण से विन्द का सिर काट गिराया। अर्जुन के बाण से प्राणहीन होकर विन्द, आँधी से टूटे बड़े पेड़ की तरह, पृथ्वी पर गिर पड़े। बड़े भाई की मृत्यु देखकर महापराक्रमी अनुविन्द अत्यन्त क्रोध करके, वह बिना घोड़ों का रथ छोड़कर, गदा हाथ में लिये अर्जुन की ओर दौड़े। पास जाकर अनुविन्द ने श्रीकृष्ण के मस्तक में बड़े वेग से गदा मारी। अनुविन्द के गदा-प्रहार से श्रीकृष्ण तनिक भी विचलित न हुए। वे मैनाक पर्वत की तरह अचल-अटल खड़े रहे। तब अर्जुन ने कुपित होकर छः बाणों से अनुविन्द के दोनों हाथ, दोनों पैर, गर्दन और मस्तक काट डाला। इससे वे पहाड़ की तरह भरभराकर गिर पड़े।

इस तरह महाबली विन्द और अनुविन्द के मारे जाने पर उनके सैकड़ों साथी योद्धा क्रोधपूर्वक बाण बरसाते हुए अर्जुन की ओर दौड़ पड़े। अर्जुन ने फुर्ती के साथ तीक्ष्ण बाणों ३० से उन्हें भी मार डाला। उस समय विन्द-अनुविन्द की सेना को मुशकिल से मारकर, उनके बीच से निकलकर, वे गर्मियों में वन को जलानेवाले दावानल और मेघमुक्त सूर्यदेव के समान

शोभायमान हुए। उन्हें देखकर कौरवदल के लोग पहले डरे; लेकिन फिर जयद्रथ को दूर पर स्थित और अर्जुन को थका हुआ देखकर प्रसन्न हो उठे। सबने चारों ओर से अर्जुन को घेर लिया। वे सिंहनाद करके अर्जुन पर घोर आक्रमण करने लगे। उन्हें क्रोध के मारे बाण बरसाते आते देख मुसकुराते हुए अर्जुन ने धीरे से कहा—हे वासुदेव ! बाणों के प्रहार से मेरे घोड़े जर्जर हो रहे हैं, थक भी गये हैं और जयद्रथ भी अभी दूर है। आप सबसे अधिक बुद्धिमान् और हमारे नेता हैं। बताइए, इस समय क्या किया जाय ? पाण्डव लोग आपकी ही चतुराई से शत्रुओं को जीत सकेंगे। मेरी सलाह तो यह है कि आप यहाँ घोड़ों को रथ से खोलकर उनके अङ्गों के सब शल्य दूर कीजिए और वे कुछ सुस्ता भी लें। अर्जुन के वचन सुनकर श्रीकृष्ण ने कहा—हे पार्थ ! तुम्हारा कहना ठीक है। अब अर्जुन ने कहा—हे मित्र ! ४० आप यहीं पर ठहरकर अपना काम कर लीजिए। मैं पैदल ही सब शत्रुओं को रोके रहूँगा।

अब महावीर अर्जुन निःशङ्क भाव से अपनी अस्त्रविद्या दिखाने लगे। वे रथ से उतरकर, गाण्डीव धनुष लेकर, पर्वत के समान अटल भाव से खड़े हो गये। उस समय विजय की इच्छा रखनेवाले क्षत्रियगण अर्जुन को पृथ्वी पर खड़े देखकर, आक्रमण के योग्य यही अवसर जानकर, धनुष चढ़ाकर विचित्र अस्त्र-शस्त्र छोड़ते हुए, सिंह के सामने हाथियों के झुण्ड के समान अर्जुन की ओर झपट पड़े। असंख्य रथों के बीच में अर्जुन घिर गये। क्षत्रियों के बाणजाल के बीच में अर्जुन मेघों से छिपे हुए सूर्य के समान जान पड़ने लगे। उस समय युद्धभूमि में शत्रुनाशन अर्जुन अपना अद्भुत बाहुबल दिखाने लगे। उन्होंने अपने अस्त्र के प्रभाव से शत्रुपक्ष के सब अस्त्रों को बेकाम कर दिया। अर्जुन के बाणों से विह्वल होकर शत्रुपक्ष के सब योद्धा आगे बढ़ने में असमर्थ हो गये। बाणों के परस्पर रगड़ खाने से आकाश में आग सी जल उठी। असंख्य वीरगण विजय की इच्छा से क्रोधपूर्वक बहुत से रुधिरचर्चित मस्त ५० हाथियों और घोड़ों को साथ लेकर अकेले अर्जुन को हराने और मारने का पूरा उद्योग करने लगे। उनके रथों की क़तार देखने से जान पड़ता था कि मानों अपार महासागर भरा पड़ा है। उस समुद्र में बाण तरङ्गों के समान, ध्वजाएँ भँवर के समान, हाथी मगरों के समान, पैदल मछलियों के समान, पगड़ियाँ कछुओं के समान तथा छत्र और पताकाएँ फेन के समान देख पड़ती थीं। महावीर अर्जुन तटभूमि के समान उस अक्षोभ्य और हाथीरूप चट्टानों से घिरे रथ-सागर को बाणों से रोके हुए थे।

धृतराष्ट्र ने पूछा—अर्जुन जब रथ से उतर पड़े और श्रीकृष्ण ने घोड़ों को सँभाला तब, यह मौक़ा पाकर, अर्जुन को क्यों न मार डाला ? सञ्जय ने कहा—ज़मीन पर खड़े रहने पर भी अकेले अर्जुन ने रथों पर सवार राजाओं का बात की बात में इस तरह रोक दिया जिस तरह वेद-विरुद्ध वाक्य मनुष्य की प्रवृत्ति को रोक देता है या लोभ सब गुणों को खदेड़ देता है।

अर्जुन ने उसी समय अस्त्र के द्वारा पृथ्वी तल को फोड़ दिया। —२३८३

उस समय श्रीकृष्ण ने अर्जुन से कहा—हे पार्थ! तुम्हारे घोड़े प्यास के मारे व्याकुल हो रहे हैं। इस समय इन्हें पानी पिलाने की आवश्यकता है। यहाँ पर घोड़ों को पानी पिलाने लायक़ कुँआ आदि कोई जलाशय नहीं है। इन्हें नहलाने की उतनी ज़रूरत नहीं।

अर्जुन ने निश्चिन्त भाव से "यह जलाशय है" कहकर उसी समय अस्त्र के द्वारा पृथ्वी-तल को फोड़ दिया। अस्त्र के प्रभाव से वहाँ पर एक ऐसा विस्तृत सरोवर बन गया जिसके तट पर हंस, कारण्डव, चकवे आदि पक्षी बैठे थे, जल स्वच्छ था और उसके भीतर मछली-कछुए आदि जीव-जन्तु कलोलें कर रहे थे। उस ऋषि-सेवित, निर्मल जलयुक्त, प्रफुल्लित कमल-दलशोभित, तत्काल-निर्मित सरोवर को देखने के लिए देवर्षि नारद आ गये। विश्वकर्मा के समान अद्भुत काम करनेवाले अर्जुन ने वहाँ पर बाणों का ही एक अद्भुत घर बना दिया, जिसके बाँस (ठाठ), खम्भे, छप्पर आदि सब बाणों के ही थे। महात्मा कृष्णचन्द्र अर्जुन का यह अद्भुत कार्य देखकर हँसते हुए उन्हें बारम्बार साधुवाद देने लगे। ६१ ६३

सौ अध्याय

घोड़ों की सेवा-शुश्रूषा हो चुकने पर अर्जुन का फिर जयद्रथ की ओर बढ़ना

सञ्जय कहते हैं—महाराज! इस तरह वीर अर्जुन के प्रभाव से रणस्थल में जल निकल आया, बाणों का घर बन गया और शत्रुगण भी जहाँ के तहाँ रुक गये। तब महात्मा केशव ने रथ से उतरकर कङ्कपत्र-शोभित बाणों से घायल घोड़ों को रथ से खोल दिया। उस समय सिद्ध-चारणगण और सब सैनिक पुरुष अर्जुन के उस अभूतपूर्व कार्य को देखकर बारम्बार उनकी प्रशंसा करने लगे। कौरवपक्ष के योद्धा लोग किसी तरह अर्जुन को परास्त नहीं कर पाते थे, यह देखकर सभी को बड़ा आश्चर्य हो रहा था। महारथी योद्धा और राजा लोग लगातार अर्जुन के ऊपर बाण बरसाने लगे, परन्तु वीर अर्जुन उनके प्रहार से तनिक भी विचलित नहीं हुए। उन असंख्य हाथियों, घोड़ों और रथों के आक्रमण से महावीर अर्जुन घबराये नहीं; वे सबको परास्त करके, सबसे बढ़कर, अद्भुत कौशल के साथ संग्राम करने लगे। जैसे महासागर सब नदियों के वेग को सहज ही रोक लेता है, वैसे ही बली अर्जुन भी वीरों के चलाये हुए असंख्य बाण, गदा, प्रास आदि शस्त्रों के वार को झेलते रहे। कौरवगण उस समय अर्जुन और श्रीकृष्ण के अद्भुत पराक्रम की बहुत बड़ाई करने लगे कि अर्जुन और श्रीकृष्ण ने जो युद्ध के मैदान में शत्रुदल के बीच रथ के घोड़े खोल दिये, और उन्हें पानी पिलाकर विश्राम करा दिया, यह उनके लिए कुछ बड़ी बात नहीं थी। दोनों वीरों ने अपना उग्र और अद्भुत तेज दिखाकर हम लोगों को बहुत ही भयाकुल कर दिया है। १०

महाराज ! उस समय अश्वविद्या में निपुण कृष्णचन्द्र ने सारी शत्रुसेना के सामने ही उस अर्जुन-रचित बाणों के घर में घोड़ों को ले जाकर उनकी थकन मिटाई, अपने हाथों से उनके शरीर के शल्य निकाले और मालिश की, नहलाया, टहलाया और दाना-पानी खिलाया-पिलाया। जब घोड़े नहाकर और खा-पीकर विश्राम कर चुके तब श्रीकृष्ण ने उन्हें फिर उसी बढ़िया रथ में जोत दिया। अर्जुन सहित श्रीकृष्ण उस रथ पर बैठकर तेज़ी के साथ आगे बढ़े। कौरव-पक्ष के वीरों ने जब देखा कि महावीर अर्जुन के घोड़े पानी पीकर, थकन मिटाकर, फिर रथ को ले चले तब वे बहुत ही अनमने हो गये। जिसके ज़हरीले दाँत तोड़ दिये गये हों उस साँप के समान लम्बी साँसें ले रहे कौरवपक्ष के योद्धा लोग आपस में कहने लगे—हाय ! श्रीकृष्ण और १९ अर्जुन हमारे सामने से निकल गये और हम उनका कुछ नहीं कर सके ! हमें धिक्कार है ! एक ही रथ पर बैठे हुए, कवचधारी, शत्रुनाशन अर्जुन और श्रीकृष्ण क्रीड़ा-सी करते हुए अनायास शत्रुसेना का नाश करते चले जा रहे हैं। जैसे कोई लड़का खिलौनों से खेले वैसे ही अनायास अपना पराक्रम दिखाकर और हमारे बल को तुच्छ करके वे चले जा रहे हैं और हम चिल्ला ही रहे हैं। हम सब राजाओं ने लाख चेष्टा की, पर उन्हें रोक नहीं सके।

हे कुरुकुल-तिलक ! श्रीकृष्ण और अर्जुन को निकल गया देखकर अन्यान्य सैनिक चिल्लाकर कहने लगे—हे कौरवो ! वह देखो, कृष्णचन्द्र सब योद्धाओं के सामने ही रथ हाँके जयद्रथ के पास जा रहे हैं। इसलिए तुम लोग श्रीकृष्ण और अर्जुन को मारने का शीघ्र यत्न करो। महाराज! उस समय कोई-कोई राजा यह अद्भुत दृश्य देखकर कहने लगे—हाय ! दुर्योधन के दोष से ही आज महाराज धृतराष्ट्र, उनका वंश, सारी सेना और सब क्षत्रिय नष्ट-भ्रष्ट हो रहे हैं तथा इस प्रकार सम्पूर्ण पृथ्वी उजड़ी जा रही है; किन्तु राजा दुर्योधन यह नहीं समझते। किसी-किसी ने कहा—सिन्धुराज जयद्रथ अब किसी तरह नहीं बच सकते। अदूरदर्शी दुर्योधन को उनके लिए जो कुछ अन्तिम कर्तव्य हो सो कर लेना चाहिए।

इसी समय महावीर अर्जुन बिना थके घोड़ों से युक्त रथ पर सवार होकर बड़े वेग से जयद्रथ की ओर जाने लगे। उन शस्त्रधारियों में श्रेष्ठ और कराल काल के समान महावीर अर्जुन को कौरवपक्ष के वीरगण किसी तरह न रोक सके। शत्रुदमन अर्जुन जयद्रथ के पास पहुँचने के लिए, मृगों पर टूटकर उनका संहार करनेवाले सिंह की तरह, कौरवसेना को भगाने लगे। सैन्यसागर में घुसकर वासुदेव फुर्ती के साथ घोड़ों को हाँकने और पाञ्चजन्य शङ्ख की ध्वनि करने लगे। अर्जुन के रथ के घोड़े उस समय इतनी तेज़ी से जा रहे थे कि अर्जुन जिन बाणों को छोड़ते थे वे निशाने पर पीछे पहुँचते थे और रथ आगे बहुत दूर निकल जाता था। इसी समय फिर अनेक राजाओं और महारथियों ने, जयद्रथ-वध के लिए उत्सुक, अर्जुन को चारों ओर से घेर लिया। इस तरह सब सैनिकों ने अर्जुन का सामना किया। अर्जुन का रथ कुछ धीमी चाल से आगे बढ़ने लगा। इसी अवसर में महाराज दुर्योधन, [द्रोणाचार्य का बाँधा हुआ कवच पहनकर] फुर्ती के साथ युद्ध करने के लिए अर्जुन के सामने आये। परन्तु मेघ के सदृश गम्भीर शब्द से युक्त, हवा से फहरा रही और वानर से भूषित ध्वजा से युक्त अर्जुन का रथ देखकर कौरवपक्ष के सब रथी व्याकुल हो उठे। उस समय इतनी धूल उड़ी कि चारों ओर घना अँधेरा छा गया। उस अँधेरे में बाणों से पीड़ित योद्धा लोग श्रीकृष्ण और अर्जुन को अच्छी तरह देखने में असमर्थ हो गये। ३० ३७

एक सौ एक अध्याय

दुर्योधन का अर्जुन को रोकना

सञ्जय कहते हैं—महाराज! कौरवपक्ष के योद्धा और राजा लोग श्रीकृष्ण और अर्जुन को शत्रुदल के भीतर घुसते देखकर पहले तो डर के मारे भागने को तैयार हो गये; किन्तु उसके बाद अपने पराक्रम की प्रेरणा से लज्जित, क्षुब्ध और क्रुद्ध होकर, स्थिर होकर, अर्जुन की ओर बढ़े। जो राजा और योद्धा रोष के मारे अर्जुन के सामने युद्ध करने को गये वे, समुद्र में गिरी हुई नदियों के समान, फिर नहीं लौटे। तब कायर क्षत्रिय, वेदों की ओर से नास्तिक की तरह, युद्ध से भाग खड़े हुए। वे कायर अपने उस कार्य से पाप और नरक के भागी हुए। श्रीकृष्ण और अर्जुन उस समय द्रोणाचार्य की सेना को चीरकर और रथों के घेरे से निकलकर राहु के ग्रास से मुक्त सूर्य और चन्द्रमा के समान शोभायमान हो रहे थे। वे उन सेनाओं को विदीर्ण करने के बाद महाजाल को छिन्न-भिन्न करके उससे बाहर निकले दो महामत्स्यों के समान देख पड़े। दुर्भेद्य द्रोणाचार्य की सेना और उसके शस्त्रपात से छुटकारा पाकर वे प्रलयकाल में उदय हुए प्रचण्ड सूर्य के समान जान पड़ने लगे। मगर के मुँह से छूटे हुए महामत्स्यों के

समान श्रीकृष्ण और अर्जुन, उस अस्त्रजाल और रथसङ्कट से छुटकारा पाकर, शत्रुसेना को उसी तरह मथने लगे जैसे वड़े-वड़े मगर समुद्र को मथते हैं।

राजन्! जिस समय महावाहु अर्जुन और कृष्णचन्द्र द्रोणाचार्य की सेना से घिरे हुए १० थे उस समय आपके पुत्रों और उनके पक्ष के राजाओं ने समझा था कि वासुदेव और अर्जुन कभी द्रोणाचार्य के आगे जीते नहीं बच सकते। किन्तु जब वे द्रोणाचार्य की सेना को लाँघकर आगे निकल गये तव उन लोगों को निश्चय हो गया कि अब जयद्रथ के जीवन की आशा नहीं हो सकती। द्रोणाचार्य की सेना में अर्जुन और श्रीकृष्ण के अटकने पर कौरवों को जो प्रबल आशा हुई थी कि वे द्रोणाचार्य और कृतवर्मा के हाथ से छुटकारा न पा सकेंगे और इसी कारण जयद्रथ बच जायँगे, उस आशा को निष्फल करके वे द्रोणाचार्य और कृतवर्मा की दुस्तर सेना को लाँघ गये। सेनाओं से प्रज्वलित अग्नि के समान उन दोनों का निकल जाते देखकर सब लोग जयद्रथ के जीवन से निराश हो गये। उस समय शत्रुओं को विह्वल बनानेवाले निर्भय श्रीकृष्ण और अर्जुन आपस में जयद्रथ के मारने के बारे में बातचीत करने लगे कि कौरवपक्ष के छः महारथी जयद्रथ के चारों ओर रहकर उसकी रक्षा कर रहे हैं; किन्तु हमारी आँखों के आगे पड़ जाने पर वह कभी जीता नहीं बच सकता। युद्धभूमि में यदि देवताओं सहित इन्द्र भी जयद्रथ की रक्षा करेंगे तो भी आज हम उसे अवश्य मार डालेंगे। राजन्! महावाहु श्रीकृष्ण और अर्जुन जयद्रथ को खोजते हुए इस तरह आपस में बातचीत कर रहे थे। उधर आपके पुत्र चिल्ला-चिल्लाकर अपने सैनिकों को अर्जुन से लड़ने के लिए उत्साहित करने लगे। जिस तरह प्यासे दो गजराज मरुभूमि को लाँघकर जल पीकर आश्वस्त हों, उसी तरह श्रीकृष्ण और अर्जुन भी शत्रुसेना के उस पार जाकर परम प्रसन्न हुए। जैसे सिंह-व्याघ्र-गज आदि ख़ूनी जानवरों से परिपूर्ण पहाड़ों को लाँघकर व्यापारी प्रसन्न होते हैं वैसे ही अजर अमर श्रीकृष्ण और अर्जुन उस समय प्रसन्न देख पड़ते थे। महाराज! आपके पक्ष २१ के लोग उन्हें शत्रुसेना से निर्मुक्त देखकर ज़ोर से चिल्लाने लगे। विषैले साँप और प्रज्वलित अग्नि के समान द्रोणाचार्य से, अन्य राजाओं से और द्रोणाचार्य की अपार सेना से छुटकारा पाने पर सूर्य के समान तेजस्वी दोनों वीर वैसे ही प्रसन्न हुए जैसे लोग समुद्र के पार पहुँचकर ख़ुश होते हैं। द्रोणाचार्य और कृतवर्मा की सुरक्षित सेना और अस्त्रों से बचकर वे दोनों वीर रणभूमि में इन्द्र और अग्नि के समान शोभायमान हुए। द्रोणाचार्य के बाणों से घायल और रक्त से भीगे हुए श्रीकृष्ण और अर्जुन फूले हुए कनैर के पेड़ों से दो पहाड़ों के समान शोभित हो रहे थे। वे दोनों वीर उस समरकुण्ड से मुक्त हो गये, जिसमें द्रोणाचार्य ही भारी ग्राह थे, शक्तियाँ ही विषैले साँप के समान थीं, तीक्ष्ण बाण ही उग्र मगर थे और क्षत्रिय योद्धा ही जल के समान भरे हुए थे। द्रोणाचार्य के अस्त्र मेघ के समान थे, जिनमें

प्रत्यञ्चा का शब्द और तल-निर्घोष ही मेघगर्जन था तथा गदा और खड्ग बिजली के समान थे। उस समय वे अँधेरे से निकले हुए सूर्य और चन्द्रमा के समान शोभित हुए। प्रशस्त और लोकप्रसिद्ध श्रीकृष्ण तथा अर्जुन को द्रोणाचार्य की सेना और अस्त्रों का निवारण करके निकल जाते देखकर सब प्राणियों ने समझा कि वे मानों दुस्तर शतद्रु, विपाशा, इरावती, चन्द्रभागा, वितस्ता और सिन्धु को हाथों से ही पार कर गये। राजन्! दो सिंह जैसे किसी मृग का शिकार करने को उद्यत हों वैसे ही श्रीकृष्ण और अर्जुन दोनों वीर निकटवर्ती जयद्रथ को देखते हुए रथ पर शोभायमान हो रहे थे। उनके प्रसन्न मुखवर्ण को देखकर सब योद्धाओं को निश्चय हो गया कि अब जयद्रथ के प्राण गये। ३०

उस समय आरक्तनेत्र महाबाहु श्रीकृष्ण और अर्जुन जयद्रथ को देखकर प्रसन्नतापूर्वक सिंहनाद करने लगे। घोड़ों की रास हाथ में लिये कृष्णचन्द्र और धनुष-बाण हाथ में लिये अर्जुन, सूर्य और अग्नि के समान, प्रचण्ड प्रभापूर्ण देख पड़ने लगे। शत्रुनाशन वासुदेव और अर्जुन, आचार्य की सेना से निकलकर, जयद्रथ को निकटवर्ती देख बहुत आनन्दित हुए और मांस की इच्छा से झपटनेवाले बाज़ पक्षियों की तरह पराक्रम प्रकट करते हुए क्रोध के साथ जयद्रथ की ओर चले। उस समय द्रोणाचार्य के पहनाये कवच को पहने हुए, अश्वसंस्कार में निपुण, राजा दुर्योधन अकेले रथ पर बैठे हुए श्रीकृष्ण और अर्जुन की ओर चले। श्रीकृष्ण और अर्जुन को लाँघकर, उनके आगे पहुँचकर, दुर्योधन ने श्रीकृष्ण-सञ्चालित रथ को रोका। उस समय कौरव-सेना में शङ्ख आदि बहुत से बाजे बजने लगे और सिंहनाद सुनाई पड़ने लगे। अग्नि के समान तेजस्वी जो छः महारथी जयद्रथ की रक्षा कर रहे थे वे राजा दुर्योधन को, श्रीकृष्ण और अर्जुन के आगे, उपस्थित देखकर बहुत ही प्रसन्न हुए। अनुचरों सहित दुर्योधन को पीछे की ओर से आगे आकर राह रोकते देख श्रीकृष्ण अर्जुन से उस समय के उपयोगी वचन कहने लगे। ४२

एक सौ दो अध्याय

श्रीकृष्ण का अर्जुन को दुर्योधन के मारने के लिए उत्तेजित करना

वासुदेव ने कहा—हे अर्जुन! वह देखो, दुर्योधन हमें लाँघकर आगे आ गया है। मैं समझता हूँ कि आपत्ति में पड़कर इसने हमारे सामने इस तरह आने का साहस किया है। मेरी राय में इसके सदृश रथी योद्धा दूसरा नहीं है। यह महाधनुर्द्धर, अस्त्रविद्या में सुशिक्षित, युद्ध में दुर्जय, दृढ़मुष्टि, विचित्र युद्ध में निपुण और महाबली है। इसके बाण दूर तक जाते हैं। यह अत्यन्त सुख में पला है। महारथी योद्धा इसका सम्मान करते हैं। यह कर्मवीर है और सदा पाण्डवों से डाह रखता है। हे निष्पाप! मैं समझता हूँ कि इससे तुम्हारे युद्ध करने का

यही समय है। हमारी हार-जीत का जुआ इसी के ऊपर निर्भर है। हे पार्थ ! बहुत काल से सञ्चित क्रोधरूपी विष इस समय इसके ऊपर छोड़ो। वीर पाण्डवों के ऊपर होनेवाले सब अनर्थों की जड़ यही है। सो यह पापिष्ठ इस समय सौभाग्यवश तुम्हारे, बाणों का लक्ष्य बनकर, सामने आ गया है। अब तुम अपनी सफलता का उपाय देखकर इसे मारने का यत्न करो। अगर तुम्हें सफलता न मिलनेवाली होती तो यह राज्यलोलुप राजा तुमसे युद्ध करने को क्यों आ जाता ? हे अर्जुन ! तुम वही करो जिसमें इसका प्राणान्त हो। यह ऐश्वर्य के मद में मूढ़ हो रहा है। इसने कभी दुःख नहीं पाया। हे पुरुषश्रेष्ठ ! युद्ध में तुम्हारे पराक्रम को यह नहीं जानता। हे पार्थ ! त्रिलोक के निवासी सुर-असुर-मनुष्य आदि सब मिलकर तुमको जीतने की हिम्मत नहीं कर सकते, अकेला दुर्योधन क्या चीज़ है ? बड़े भाग्य की बात है कि वही शत्रु इस समय तुम्हारे रथ के पास उपस्थित है। हे महाबाहो ! वृत्रासुर को इन्द्र ने जैसे मारा था वैसे ही तुम इसे शीघ्र मारो। इसने सदा तुम सबके ऊपर अनर्थ लाने का उद्योग किया है। इसने धोखा देकर कपटद्यूत में धर्मराज को जीता है। इस पापमति ने इसी तरह अनेक क्रूर नीच व्यवहार तुम निष्पाप पाण्डवों के साथ किये हैं। हे पार्थ ! तुम किसी तरह का सोच-विचार किये बिना इस अनार्यप्रकृति, सदा क्रोधी, कामरूपी दुर्योधन को मारो। क्षत्रियों का श्रेष्ठ धर्म युद्ध ही है और उस युद्ध में शत्रु को अवश्य मारना चाहिए। छलपूर्वक राज्य-हरण, वनवास, द्रौपदी के क्लेश आदि का ख़याल करके इस समय पराक्रम प्रकट करो और दुर्योधन को मारो। यह तुम्हारा सौभाग्य है कि आज यह दुष्ट तुम्हारे कार्य में विघ्न डालने के लिए, युद्ध की इच्छा से, तुम्हारे बाणों के मार्ग में आ गया है। बड़ी बात जो यह तुम्हारे आगे आकर तुमको रोकने का यत्न कर रहा है। बड़ी बात जो यह युद्धभूमि में तुमसे लड़ना अपना कर्तव्य समझता है। आज सौभाग्यवश तुम्हारी अचिन्तित इच्छाएँ सफल होंगी। देवासुर-युद्ध में इन्द्र ने जैसे जम्भासुर को मारा था वैसे ही तुम इस अधम कुलाङ्गार को मारो। इसको मार डालने पर यह शत्रुसेना, अनाथ होकर, भाग खड़ी होगी। इस समय तुम सहज ही इन दुरात्माओं के वैर की जड़ काट सकते हो।

सञ्जय कहते हैं कि महाराज ! महामति वासुदेव के यों कहने पर, उनसे सहमत होकर, अर्जुन ने कहा—हे केशव ! आपने जो कहा वह मेरा आवश्यक कर्तव्य है। अतएव अन्यान्य कार्य छोड़कर जहाँ पर दुर्योधन है वहाँ मेरा रथ ले चलिए। हे गोविन्द ! जो पापिष्ठ बहुत समय से हमारे राज्य को निष्कण्टक होकर भोग रहा है, उसके सिर को क्या मैं आज पराक्रमपूर्वक काट सकूँगा ? क्लेश के अयोग्य द्रौपदी को केश पकड़कर खींचने से जो दुःख मिला था उसे क्या मैं, इसे मारकर, दूर कर सकूँगा ? राजन् ! वासुदेव और अर्जुन आपस में इस तरह बातें करते-करते दुर्योधन पर आक्रमण करने के लिए प्रसन्नतापूर्वक रणभूमि में आगे बढ़े।

श्रीकृष्ण ने अर्जुन के सफ़ेद घोड़े हाँक दिये। उधर राजा दुर्योधन उनके सामने निर्भय भाव से उपस्थित हुए। वे उस भयानक समर में आगे बढ़कर अर्जुन और श्रीकृष्ण को रोकने का यत्न करने लगे। यह देखकर योद्धा क्षत्रियगण उनकी प्रशंसा करने लगे। उस समय कौरवदल के लोग भयानक सिंहनाद करने लगे। इससे शत्रुनाशन वीर अर्जुन क्रोध से विह्वल हो उठे। दुर्योधन भी क्रोधान्ध होकर युद्ध कर रहे थे। दुर्योधन और अर्जुन को कुपित होकर भिड़ते देख भीमरूप राजा लोग उत्सुकता के साथ उनका युद्ध देखने लगे। राजा दुर्योधन कुपित वासुदेव और अर्जुन को देखकर हँसने और उन्हें युद्ध के लिए ललकारने लगे। यह देखकर वासुदेव और अर्जुन प्रसन्नतापूर्वक सिंहनाद और शङ्खनाद करने लगे। उन दोनों वीरों की प्रसन्नता और उत्साह देखकर सब कौरव लोग दुर्योधन के जीवन से निराश हो गये। वे दुर्योधन को प्रचण्ड अग्नि के मुख में पड़ा हुआ मानकर व्याकुल हो उठे। कौरवपक्ष के योद्धा लोग अत्यन्त शङ्कित और भयविह्वल होकर "राजा मारे गये! राजा मारे गये!" कहकर चिल्लाने लगे। अपने पक्ष के लोगों का आर्तनाद सुनकर दुर्योधन कहने लगे—हे वीरो! तुम डरो नहीं। मैं बहुत शीघ्र कृष्ण और अर्जुन को यमलोक भेजे देता हूँ। ३०

इस तरह अपने सैनिकों को ढाढ़स बँधाकर कुपित दुर्योधन ने अर्जुन से कहा—हे अर्जुन! अगर तुम सचमुच पाण्डु के बेटे हो, तो तुमने दिव्य और मानुष जितने अस्त्रों की शिक्षा प्राप्त की है वे सब मेरे ऊपर छोड़कर दिखाओ। और, केशव का जो कुछ बल है उसे वे भी दिखावें। मैं तुम दोनों के पौरुष को देखना चाहता हूँ। मैं सुनता हूँ कि मेरे पीछे तुमने बहुत से अद्भुत काम किये हैं, जिनके कारण लोग श्रेष्ठ वीर कहकर तुम्हारी प्रशंसा करते हैं। इस समय मेरे सामने वह अपनी प्रशंसनीय क्षमता और अद्भुत पराक्रम प्रकट करो। ३८

एक सौ तीन अध्याय

अर्जुन का दुर्योधन को हराना

सञ्जय कहते हैं—राजन्! इस तरह अर्जुन से कहकर दुर्योधन ने मर्मभेदी तीन बाण अर्जुन को, चार बाण उनके चारों घोड़ों को और दस बाण श्रीकृष्ण को मारकर एक भल्ल बाण से श्रीकृष्ण के हाथ की चाबुक काट डाली। तब अर्जुन ने क्रुद्ध होकर दुर्योधन के ऊपर अत्यन्त तीक्ष्ण चौदह बाण छोड़े। अर्जुन के वे बाण दुर्योधन के कवच में लगकर व्यर्थ होकर गिर पड़े। यह देखकर अर्जुन बहुत ही क्रुद्ध हुए। उन्होंने फिर चौदह बाण दुर्योधन को मारे। वे भी दुर्योधन के कवच से लगकर व्यर्थ हो गये। इस तरह दुर्योधन के ऊपर चलाये

गये अर्जुन के अट्ठाईस बाणों को व्यर्थ होते देखकर श्रीकृष्ण ने कहा—हे धनञ्जय! मैं आज अटल पहाड़ के चलने के समान यह अद्भुत बात देख रहा हूँ कि तुम्हारे छोड़े हुए बाण कुछ नहीं कर पाते। आज क्या गाण्डीव धनुष का वेग घट गया है, या तुम्हारे हाथों में और मुट्ठी में वह पहले का बल और दृढ़ता नहीं रह गई है? अथवा तुम्हारे इस शत्रु की मृत्यु का और इसके साथ तुम्हारी अन्तिम भेंट का समय ही नहीं आया? हे पार्थ! तुम्हारे इन बाणों को दुर्योधन पर व्यर्थ होकर गिरते देख मुझे बड़ा आश्चर्य हो रहा है। आज शत्रुओं के शरीर को छिन्न-भिन्न करनेवाले वज्र-तुल्य ये तुम्हारे बाण तुम्हारा प्रयोजन सिद्ध नहीं कर पाते, यह कैसी विडम्बना है! इसका कारण मुझे बतलाओ।
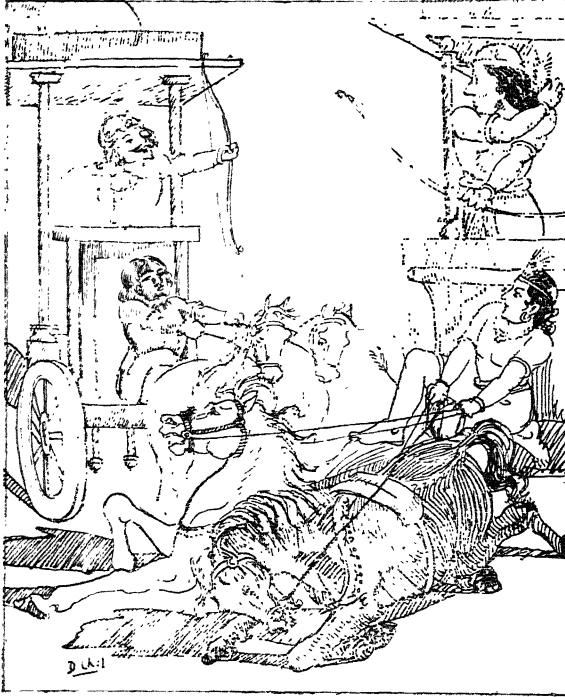
१०

अर्जुन ने कहा—हे कृष्णचन्द्र! महात्मा द्रोणाचार्य ने अवश्य ही इसे अभेद्य कवच पहनाकर युद्ध में भेजा है। यह दारुण कवच अस्त्र-शस्त्र से कट-फट नहीं सकता। त्रिभुवन में द्रोणाचार्य के और मेरे सिवा कोई इस कवच को नहीं जानता। मैंने भी उन्हीं द्रोणाचार्य से यह कवच पाया है। स्वयं इन्द्र भी अपने वज्र से इस कवच को नहीं तोड़ सकते। बाणों से तो यह कवच कभी टूट ही नहीं सकता। हे श्रीकृष्ण! आप सब हाल जानकर भी इस तरह पूछकर मुझे क्यों मोहित कर रहे हैं? त्रिलोक में त्रिकाल में होनेवाला सारा वृत्तान्त आप जानते हैं। इस कवच के बारे में आपकी ऐसी जानकारी और किसी को नहीं है। हे श्रीकृष्ण! यह दुर्योधन द्रोणाचार्य के पहनाये हुए कवच को पहने हुए मेरे सामने खड़ा है; किन्तु इस कवच को पहनकर जिस तरह युद्ध करना चाहिए सो कुछ भी नहीं जानता। एक स्त्री जैसे इस कवच को पहनकर युद्ध में आ जाय वैसे ही यह भी खड़ा है। जनार्दन! इस समय आप मेरे धनुष और हाथों के पराक्रम को देखिए। यह कहाँ जायगा, कवच से सुरक्षित रहने पर भी इसे मैं अवश्य परास्त करूँगा। यही कवच मैं भी पहने हुए हूँ। इस तेजोमय कवच को पहले देव-देव शङ्कर ने अङ्गिरा को दिया था। अङ्गिरा से बृहस्पति ने, बृहस्पति से इन्द्र ने

और इन्द्र से मैंने पाया। इन्द्र ने सन्तुष्ट होकर विधि-सहित यह कवच मुझे दिया था। यद्यपि इसका यह कवच देवनिर्मित अथवा स्वयं ब्रह्माजी के द्वारा विरचित है, तथापि मेरे बाण मारने पर इस कवच के द्वारा दुष्ट दुर्योधन की रक्षा नहीं हो सकती। २०

सञ्जय कहते हैं—अब अर्जुन ने मन्त्रों से अभिमन्त्रित बाण धनुष पर चढ़ाकर उसकी डोरी कान तक खींची। माननीय अर्जुन ने सब तरह के कवच आदि आवरणों को तोड़नेवाले मानवास्त्र का प्रयोग किया। किन्तु जिस समय वे धनुष पर चढ़ाकर उन बाणों को खींचने लगे उसी समय अश्वत्थामा ने सब अस्त्रों को नष्ट करनेवाले अस्त्र से फुर्ती के साथ वे बाण काट डाले। दूर से ही अश्वत्थामा ने जब उन बाणों को काट डाला तब अर्जुन ने विस्मित होकर कहा—श्रीकृष्ण ! मैं दो बार इस अस्त्र का प्रयोग नहीं कर सकता; क्योंकि दुबारा प्रयोग करने पर यह अस्त्र मुझे और मेरी सेना को ही नष्ट कर देगा। हे नरनाथ ! इसी बीच में दुर्योधन ने विषैले साँप के समान प्राणघातक नव-नव बाण श्रीकृष्ण और अर्जुन को मारे। इसके उपरान्त वे फिर श्रीकृष्ण और अर्जुन के ऊपर लगातार बाणों की वर्षा-सी करने लगे। यह देखकर कौरवपक्ष के सब योद्धा प्रसन्न होकर बाजे बजाने और सिंहनाद करने लगे। महातेजस्वी अर्जुन बहुत ही कुपित होकर ओठ चाटने लगे। उन्होंने देखा कि दुर्योधन का ऐसा कोई अङ्ग नहीं है जो उस दिव्य कवच से सुरक्षित न हो। तब उन्होंने तीक्ष्ण बाण मारकर दुर्योधन के रथ के घोड़े मार डाले, पार्श्वरक्षक और सारथी को भी मार गिराया। साथ ही फुर्ती के साथ दुर्योधन का धनुष और हस्तावाप (दस्ताने) भी काटकर वे रथ के टुकड़े-टुकड़े कर डालने का उद्योग करने लगे। रथ को काटकर अर्जुन ने दुर्योधन की हस्तावाप-हीन हथेलियों में दो सुतीक्ष्ण बाण मारे। मर्मस्थल में चोट मारने में चतुर अर्जुन के बाण उँगलियों के मांस और नाखूनों के बीच लगने से दुर्योधन भाग खड़े हुए। कौरवपक्ष के योद्धा लोग दुर्योधन को इस तरह कठिन सङ्कट में देखकर उनकी सहायता और रक्षा करने के लिए चारों ओर से दौड़ पड़े। हज़ारों रथ, सुसज्जित हाथी, घोड़े, पैदल आदि से अर्जुन को घेरकर सब योद्धा उन पर अस्त्र-शस्त्र बरसाने लगे। इतने अस्त्र-शस्त्र और बाण बरसाये गये कि अर्जुन, श्रीकृष्ण और उनका रथ छिप गया। तब अर्जुन, अपने अस्त्रबल से, उस सेना का संहार करने लगे। सैकड़ों रथी, हाथी और घोड़े अङ्गहीन, प्राणहीन हो-होकर गिरने लगे। मारी जाती हुई और मारी गई सेना ने एक कोस तक रथ की राह रोक ली। [उस सेना की दीवार-सी सामने दूर तक खड़ी होने के कारण अर्जुन के घोड़े रुक गये और रथ भी ठहर गया।] तब श्रीकृष्ण ने तुरन्त कहा—अर्जुन ! तुम बड़े ज़ोर से अपने धनुष का शब्द करो और मैं अपना शङ्ख बजाता हूँ। महाबली अर्जुन, श्रीकृष्ण के कथनानुसार, बड़े वेग से धनुष चढ़ाकर बाणवर्षा करके शत्रुओं को मारने लगे। बलवान् श्रीकृष्ण ने भी पूरे बल से पाञ्चजन्य शङ्ख बजाया। उस समय श्रीकृष्ण ३०

४० के मुखमण्डल और पलकों पर धूल ही धूल पड़ी हुई थी और पसीना निकल रहा था। श्रीकृष्ण के शङ्ख-शब्द और गाण्डीव धनुष के भयानक नाद को सुनकर कौरवपक्ष के सबल-दुर्बल अथवा सजीव-निर्जीव, सभी पृथ्वी पर गिर पड़े। इस प्रकार उस सेना के घेरे से अर्जुन का रथ निकल आया और वायु-सञ्चालित मेघ के समान वेग से आगे जाने लगा।

यह देखकर अनुचरों सहित जयद्रथ के रक्षक योद्धा लोग आगे बढ़े। एकाएक अर्जुन को निकटवर्ती देखकर जयद्रथ की रक्षा करनेवाले महारथी लोग अपने भयानक सिंहनाद से पृथ्वी को कँपाने लगे। वे लोग धनुष पर बाण चढ़ाने के शब्द, शङ्खनाद, उग्र सिंहनाद आदि करके अपना उत्साह प्रकट करने लगे। महाराज! आपके पक्ष की सेना में उठनेवाले घोर शब्द को सुनकर श्रीकृष्ण और अर्जुन भी अपना-अपना शङ्ख बजाने लगे। वह महाशब्द पर्वत, समुद्र, द्वीप और पाताल सहित सारी पृथ्वी में भर गया। हे भरतकुलश्रेष्ठ! वह शब्द दसों दिशाओं में व्याप्त हो जाने से उसकी प्रतिध्वनि कौरवों और पाण्डवों की सेना में गूँज उठी। आपके पक्ष के महारथी योद्धा श्रीकृष्ण और अर्जुन को वहाँ उपस्थित देखकर घबरा उठे और उन्हें रोकने के लिए शीघ्रता करने लगे। क्रोध से विह्वल आपके पक्ष के योद्धा लोग कवचधारी श्रीकृष्ण और अर्जुन को देखकर बड़े वेग से उनकी ओर बढ़ने लगे।
४९ उस समय अद्भुत दृश्य दिखाई पड़ने लगा।

एक सौ चार अध्याय

अर्जुन के साथ भूरिश्रवा आदि आठ महारथियों का युद्ध

सञ्जय कहते हैं—राजन्! श्रीकृष्ण और अर्जुन को देखकर आपके दल के लोग उन्हें मारने के लिए शीघ्रता करने लगे। अर्जुन भी शत्रुओं को मारने का उद्योग करने लगे। प्रज्वलित अग्नि के समान प्रभासम्पन्न, सुवर्णमण्डित, व्याघ्रचर्मशोभित और घोर शब्द करनेवाले बड़े-बड़े रथों पर बैठे हुए योद्धा लोग सब दिशाओं को प्रकाशित कर रहे थे। क्रुद्ध साँप के समान भयङ्कर, सुवर्ण से अलङ्कृत और आँखों में चकाचौंध पैदा कर देनेवाले धनुषों से घोर शब्द निकलने लगा। सुन्दर कवच पहने हुए भूरिश्रवा, शल, कर्ण, वृषसेन, जयद्रथ, कृपाचार्य, शल्य और अश्वत्थामा, ये आठों महारथी योद्धा श्रीकृष्ण और अर्जुन के मारने का उद्योग करने लगे। वे व्याघ्रचर्म और सुवर्णमय चन्द्रचिह्नों से शोभित, गरजते हुए मेघ के समान शब्द कर रहे रथों पर बैठकर अर्जुन के ऊपर बाणों की वर्षा करने लगे। अर्जुन के आसपास और ऊपर-नीचे बाण ही बाण दिखाई देने लगे। उन महारथियों के रथों में कुलूत देश के बढ़िया घोड़े जुते हुए थे। राजन्! आपके पुत्र की सहायता करनेवाले कुरुकुल के श्रेष्ठ योद्धा लोग अच्छी

नस्ल के, तेज़, अनेक देशों के, पहाड़ी, नदी-तट के देशोंवाले, सिन्धु देश के घोड़ों से युक्त श्रेष्ठ रथों पर बैठकर शीघ्रता के साथ अर्जुन के रथ की ओर चले। वे लोग बड़े-बड़े शङ्खों को बजा-कर सारी पृथ्वी और आकाश को उस शब्द से पूर्ण करने लगे। इधर श्रीकृष्ण ने पाञ्चजन्य शङ्ख १० और अर्जुन ने देवदत्त शङ्ख बजाया। इनका शङ्खनाद ऐसा हुआ कि शत्रुओं के शङ्खनाद और सिंहनाद उसमें छिप गये। अर्जुन के बजाये हुए देवदत्त शङ्ख का शब्द और श्रीकृष्ण के बजाये हुए पाञ्चजन्य शङ्ख का शब्द पृथ्वी, आकाश, अन्तरिक्ष और सब दिशाओं में भर गया।
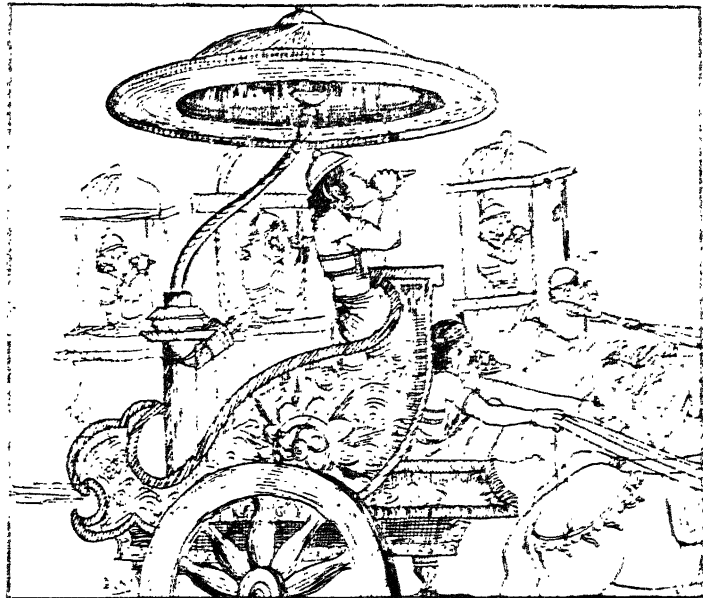
राजन्! कायरों के लिए भयङ्कर और शूरों के लिए हर्ष को बढ़ानेवाला दारुण शब्द रणभूमि में गूँज उठा। उसके साथ ही तुरही, मृदङ्ग, झाँझ, घड़ियाल, नगाड़े आदि बाजे भी बजने लगे। उस समय आपकी सेना के रक्षक और दुर्योधन के हितचिन्तक कर्ण आदि आठों महारथी, अनेक देशों के राजाओं के साथ, युद्ध के लिए आगे बढ़े और श्रीकृष्ण तथा अर्जुन के शङ्खनाद को सहन न कर सकने के कारण क्रोधपूर्वक अपने-अपने महाशङ्खों को बजाने लगे। वे लोग श्रीकृष्ण और अर्जुन के शङ्खनाद का जवाब देने के लिए अपने शङ्ख बजाने लगे। उस वज्राघात-सदृश शङ्खनाद से रथी, हाथी, घोड़े आदि सब घबराकर अस्वस्थ-से हो गये। सब दिशाएँ और आकाशमण्डल प्रतिध्वनित हो उठा। प्रलयकाल के से उस घोर शब्द से सारी सेना डर गई। तब दुर्योधन और वे आठों महारथी योद्धा, जयद्रथ की रक्षा २१ करने के लिए, अर्जुन को रोकने लगे। अश्वत्थामा ने श्रीकृष्ण को तिहत्तर और अर्जुन को तीन भल्ल बाण मारे। फिर अर्जुन की ध्वजा और घोड़ों को पाँच बाण मारे। जनार्दन को घायल देखकर अर्जुन ने अत्यन्त कुपित होकर अश्वत्थामा को छः सौ बाण मारे। इसके बाद कर्ण को दस और वृषसेन को तीन बाण मारकर शल्य के बाणयुक्त धनुष को मुट्ठी के पास से काट डाला। शल्य दूसरा धनुष लेकर अर्जुन के ऊपर बाण बरसाने लगे। भूरिश्रवा ने सुवर्ण-पुङ्खयुक्त

तीक्ष्ण तीन बाण, कर्ण ने बत्तीस बाण, वृषसेन ने सात बाण, जयद्रथ ने तिहत्तर बाण, कृपाचार्य ने दस बाण और मद्रराज शल्य ने दस बाण एक साथ अर्जुन को मारे। इसके बाद अश्वत्थामा ने अर्जुन को साठ और वासुदेव को बीस बाण मारकर फिर अर्जुन को पाँच बाण मारे। अर्जुन ने हँसते-हँसते, अपने हाथ की फुर्ती दिखाते हुए, उन सब वीरों को उनके प्रहारों का जवाब
३० दिया। उन्होंने कर्ण को बारह, वृषसेन को तीन, भूरिश्रवा को तीन, शल्य को दस, कृपाचार्य को पचीस और जयद्रथ को सौ बाण मारकर अश्वत्थामा को अग्निशिखा-सदृश आठ और फिर सत्तर बाण मारे। साथ ही मूठ की जगह पर शल्य के बाणयुक्त धनुष को काट डाला। भूरिश्रवा ने अत्यन्त क्रुद्ध होकर श्रीकृष्ण के हाथ की घोड़ों की रास काट डाली और अर्जुन को तिहत्तर तीक्ष्ण बाण मारे। महावीर अर्जुन अत्यन्त क्रोध करके उसी तरह अपने शत्रुओं को मारकर
३५ भगाने लगे जिस तरह प्रचण्ड आँधी मेघों को छिन्न-भिन्न करती है।

एक सौ पाँच अध्याय

रथों की ध्वजाओं का वर्णन

धृतराष्ट्र ने कहा—हे सञ्जय! पाण्डवपक्ष के और कौरवपक्ष के वीरों के रथों में अनेक प्रकार की ध्वजाएँ लगी हुई होंगी। इस समय तुम उन ध्वजाओं का वर्णन करो।

सञ्जय ने कहा—महाराज! सुनिए, वीरों के रथों में लगी हुई तरह-तरह की ध्वजाओं का रूप, रङ्ग और नाम मैं आपको सुनाता हूँ। रणभूमि में महारथी योद्धाओं के रथों पर सोने के गहनों और मालाओं से सजी हुई सुवर्णदण्डयुक्त ध्वजाएँ प्रज्वलित अग्नि के समान, अथवा सोने के पर्वत सुमेरु के सुनहरे शिखरों के समान शोभायमान हो रही थीं। उन ध्वजाओं के ऊपर अनेक रङ्गों की इन्द्रधनुष-सी विचित्र पताकाएँ वायुवेग से फहरा रही थीं, जिन्हें देखने से जान पड़ता था मानों रङ्गभूमि में वेश्याएँ नाच रही हैं।

अर्जुन की पताका के बीच में सिंह की सी पूँछ और उग्र मुख से युक्त भयानक वानर विराजमान था, जो कौरवपक्ष की सेना को डरवा रहा था। महावीर अश्वत्थामा की श्रेष्ठ ध्वजा
१० भी सिंहपुच्छयुक्त, बालसूर्य के समान चमकीली, सुवर्णमण्डित, हवा से फहरा रही, इन्द्रध्वज के समान बहुत ऊँची और कौरवों के हर्ष को बढ़ानेवाली थी। महारथी कर्ण की ध्वजा का चिह्न हाथी की सुवर्णमयी शृङ्खला था। वह इतनी ऊँची थी कि मानों आकाश को छू रही हो। वह पताका सुवर्णमाला आदि से शोभित थी। ऐसा जान पड़ता था कि वह हवा के द्वारा सञ्चालित होकर रथ पर नाच रही है। कौरवों के आचार्य तपस्वी ब्राह्मण कृपाचार्य की ध्वजा का चिह्न बैल था। उनकी वह स्वच्छ ध्वजा नन्दी के चिह्न से युक्त त्रिपुरारि शङ्कर के रथ की ध्वजा के समान शोभायमान थी। वृषसेन की ध्वजा पर मणिरत्नजटित सुवर्णनिर्मित मोर

शोभायमान था। वह मानों बोलना चाहता था। वह ध्वजा सेना के अगले भाग में थी। वृपसेन का रथ उस मोर से मयूरचिह्नयुक्त स्वामिकार्त्तिक के रथ के समान शोभायमान था। मद्रराज शल्य की ध्वजा के अग्रभाग में सब बीजों को उत्पन्न करनेवाली खेती की अधिष्ठात्री देवी के समान सुनहरा, अग्निशिखातुल्य, हल का चिह्न बना हुआ था। जयद्रथ के रथ में गुलाबी रङ्ग का सुवर्णमण्डित रजतनिर्मित वराह का चिह्न था। सिन्धुराज उस ध्वजा से देवासुर-युद्ध में आदित्य के समान शोभायमान थे। याज्ञिक बुद्धिमान् भूरिश्रवा के रथ की सूर्यसदृश ध्वजा में यूप (खम्भे) का चिह्न था। उस सुवर्णमय यूप में चन्द्रमा का चिह्न बना हुआ था। राजसूय यज्ञ के उन्नत यूप के समान वह यूप ध्वजा के ऊपर था। ऐरावत जैसे इन्द्र की सेना को शोभित करता है वैसे ही शल के रथ की ध्वजा में रजतनिर्मित हाथी का चिह्न देख पड़ता था। आपकी सेना को शोभायमान करनेवाली शल की ध्वजा में गजचिह्न के आस-पास सुवर्णमय मोर उसकी शोभा बढ़ा रहे थे। राजा दुर्योधन के श्रेष्ठ रथ की सुवर्णमण्डित ध्वजा में मणिमय नाग का चिह्न था। सैकड़ों सोने के घुँघरू या छोटी घण्टियाँ उसमें बज रही थीं। महाराज! उस ऊँची उत्तम ध्वजा से कुरुश्रेष्ठ दुर्योधन की बड़ी शोभा हो रही थी। ये ऊँची और प्रलयकाल के सूर्य के समान प्रकाशमान नव महारथियों की श्रेष्ठ ध्वजाएँ आपकी सेना को शोभायमान कर रही थीं। दसवें महारथी अकेले कपिध्वज अर्जुन थे, जो अग्नि से शोभित हिमालय पर्वत के समान शोभित हो रहे थे। २१

इसके उपरान्त शत्रुदलदलन वीर महारथी लोग अर्जुन को हराने के लिए विचित्र चमकीले बड़े-बड़े श्रेष्ठ धनुष लेकर लड़ने को प्रस्तुत हुए। शत्रुनाशन वीर अर्जुन ने भी अपना श्रेष्ठ दिव्य गाण्डीव धनुष चढ़ाया। महाराज! अनेक देशों से बुलाये और आये हुए असंख्य राजा लोग अपनी चतुरङ्गिणी सेना सहित आपकी ही अनीति के कारण मारे गये। गरजते हुए दुर्योधन आदि योद्धा और अर्जुन एक दूसरे पर प्रहार करने लगे। उस समय अकेले ही अर्जुन ने वहाँ निर्भय भाव से बहुतेरे महा- ३०

रथियों से युद्ध किया। उन महारथियों को जीतने और जयद्रथ को मारने के लिए उद्यत वीर अर्जुन गाण्डीव धनुष को घुमाते और बाण बरसाते समय बहुत ही शोभायमान हुए। शत्रुतापन अर्जुन ने असंख्य बाण बरसाकर कौरव पक्ष के योद्धाओं को अदृश्य कर दिया। उधर उन महारथियों ने भी चारों ओर से बाण बरसाकर अर्जुन को छिपा दिया। इस तरह पुरुषसिंह अर्जुन जब उन ३८ महारथियों के बाणों से छिप गये तब आपकी सेना में बड़ा भारी कोलाहल होने लगा।

एक सौ छः अध्याय

द्रोणाचार्य और युधिष्ठिर का युद्ध

धृतराष्ट्र ने पूछा—हे सञ्जय! अर्जुन जब इधर जयद्रथ के पास पहुँच गये तब उधर पाञ्चालों ने द्रोणाचार्य के द्वारा रक्षित कौरवों के साथ क्या किया?

सञ्जय बोले—राजन्! तीसरे पहर लोमहर्षण संग्राम होने लगा। पाञ्चाल और कौरव द्रोणाचार्य के प्राणों का जुआ खेलने लगे। उत्साहपूर्ण पाञ्चालगण द्रोणाचार्य को मारने का और कौरवगण उनको बचाने का प्रयत्न करते हुए बाण बरसाने लगे। उस समय कौरवों और पाञ्चालों का, देवासुर-युद्ध के समान, अद्भुत संग्राम होने लगा। पाण्डवों सहित सब पाञ्चालगण द्रोणाचार्य के रथ के पास पहुँचकर उनकी सेना को छिन्न-भिन्न करने के लिए अपने दिव्य अस्त्रों का प्रयोग करने लगे। द्रोण के रथ तक रथसवार रथी योद्धा देख पड़ते थे और वे रणभूमि को कँपाते हुए युद्ध कर रहे थे। केकय देश के महावीर राजा बृहत्क्षत्र, इन्द्र के वज्र के समान, तीक्ष्ण बाण बरसाते हुए द्रोणाचार्य की ओर चले। इधर से महायशस्वी महारथी क्षेमधूर्ति भी सैकड़ों-हज़ारों बाण छोड़ते हुए बृहत्क्षत्र को रोकने के लिए आगे बढ़े। यह देखकर महापराक्रमी धृष्टकेतु अत्यन्त कुपित हो उठे। शम्बरासुर पर आक्रमण करने के लिए जैसे इन्द्र चले थे वैसे ही वे फुर्ती के साथ द्रोणाचार्य की तरफ़ बढ़े। मुँह फैलाये मृत्यु के १० समान आते हुए चेदिराज धृष्टकेतु से लड़ने के लिए महाबाहु वीरधन्वा चले।

तब महावीर्यशाली द्रोणाचार्य विजय की इच्छा से सेना सहित सामने उपस्थित महाराज युधिष्ठिर को अपने बाणों से रोकने का प्रयत्न करने लगे। युद्धकुशल पराक्रमी नकुल को आते देखकर उनसे लड़ने के लिए आपके पराक्रमी पुत्र विकर्ण चले। सहदेव को आते देखकर शत्रुदमन दुर्मुख हज़ारों शीघ्रगामी बाण बरसाते हुए उनका सामना करने लगे। वीर सात्यकि को विचलित करते हुए व्याघ्रदत्त उनपर तीक्ष्ण भयानक बाण छोड़ने लगे। महावीर शल अपने ऊपर तीक्ष्ण बाण चला रहे कुपित द्रौपदी के पाँचों पुत्रों को रोकने लगे। महाबली भयानक ऋष्यशृङ्ग के पुत्र ने कुपित होकर आ रहे भीमसेन का सामना किया। उन दोनों, मनुष्य और राक्षस, में वैसा ही घोर युद्ध होने लगा जैसा पूर्वकाल में राम और रावण का हुआ था।

उस समय धर्मराज युधिष्ठिर ने तीक्ष्ण नव्वे बाण महावीर द्रोणाचार्य के मर्मस्थानों में मारे। आचार्य ने भी क्रोधविह्वल होकर उनकी छाती में पचीस बाण मारे। और, फिर सब योद्धाओं के सामने ही उनकी ध्वजा, सारथी और घोड़ों को बीस बाण मारे। तब धर्मात्मा युधिष्ठिर ने फुर्ती के साथ अपने बाणों से द्रोणाचार्य के सब बाण काट डाले। यह देखकर श्रेष्ठ धनुर्द्धर आचार्य ने कुपित होकर शीघ्र ही युधिष्ठिर का धनुष काट डाला और असंख्य बाण मारकर उनको घायल कर दिया। आचार्य के असंख्य बाणों में जब राजा युधिष्ठिर छिप गये तब समरभूमि में स्थित सभी लोग समझने लगे कि राजा मार डाले गये। किसी-किसी ने समझा कि आचार्य के बाणप्रहार से विह्वल होकर धर्मराज युद्धभूमि से भाग गये। उधर द्रोणाचार्य के बाणों से विपन्न युधिष्ठिर उस कटे धनुष को छोड़कर एक बढ़िया दृढ़ धनुष लेकर बाण-वर्षा करने लगे। उन्होंने दम भर में द्रोण के सब बाणों को काट गिराया। यह देखकर सबको बड़ा आश्चर्य हुआ। आचार्य के बाण काट डालने के बाद क्रोध से लाल आँखें करके राजा युधिष्ठिर ने पर्वतों को भी फाड़नेवाली, स्वर्णदण्डयुक्त, आठ घण्टों से शोभित, भयानक शक्ति हाथ में ली। उस शक्ति को उठाकर बली युधिष्ठिर ने सिंहनाद किया, जिससे सब प्राणी डर गये। युद्ध में युधिष्ठिर को शक्ति तानते देखकर सब लोग शङ्कित हो उठे और द्रोणाचार्य के लिए "स्वस्ति" कहने लगे। युधिष्ठिर के हाथ से छूटी हुई, महासर्प के समान, भयानक शक्ति दिशा-विदिशा और आकाश को प्रज्वलित करती हुई द्रोणाचार्य के पास आ पहुँची। अग्निमय मुख से भयानक नागिन के समान उस शक्ति को आते देखकर अस्त्र विद्या में निपुण महारथी द्रोण ने तत्काल ब्रह्मास्त्र का प्रयोग किया। वह अस्त्र उस घोर शक्ति को भस्म करके फुर्ती के साथ यशस्वी युधिष्ठिर के रथ पर पहुँचा।

राजा युधिष्ठिर ने द्रोणाचार्य के उस अस्त्र को ब्रह्मास्त्र के ही द्वारा शान्त कर दिया। फिर पाँच तीक्ष्ण बाण द्रोण के पैर में मार करके एक क्षुरप्र बाण से उनका धनुष काट डाला। धनुष कट

२०

३०

जाने पर आचार्य ने युधिष्ठिर पर एक भारी गदा चलाई। उस गदा को रोकने के लिए युधिष्ठिर ने अपनी सुदृढ़ गदा का प्रयोग किया। वीरों के हाथ से छूटी हुई दोनों गदाएँ, परस्पर टकराने से, चिनगारियाँ उगलती हुई टूटकर गिर पड़ीं।

४० महावीर द्रोणाचार्य ने अत्यन्त क्रोध करके चार बाणों से उनके घोड़े मार डाले, एक से धनुष और अन्य एक से इन्द्रध्वज के समान उन्नत ध्वजा काट डाली और उनको ताककर तीन बाण मारे। युधिष्ठिर तुरन्त रथ से उतर पड़े और शस्त्र फेंककर ऊपर को हाथ उठाकर खड़े हो गये। उन्हें रथ और शस्त्र से हीन देख द्रोणाचार्यजी बाण बरसाकर उनकी सेना को पीड़ित करने लगे। भयङ्कर सिंह जैसे मृगों को भगाता है वैसे ही द्रोणाचार्य पाण्डवों की सेना को मारकर भगाने लगे। इस प्रकार द्रोणाचार्य ने जब युधिष्ठिर को परास्त कर दिया तब पाण्डवपक्ष के सब योद्धा हाहाकार करके कहने लगे कि आचार्य ने राजा युधिष्ठिर को मार डाला। उस समय महाराज युधि-
४७ ष्ठिर, सहदेव के रथ पर बैठकर, तेज़ी से रथ हँकाते हुए आचार्य के सामने से हट गये।

एक सौ सात अध्याय

संकुल युद्ध का वर्णन

सञ्जय कहते हैं—राजन्! महारथी क्षेमधूर्ति ने रणभूमि में उपस्थित केकयदेश के योद्धा अतुल पराक्रमी बृहत्क्षत्र की छाती में असंख्य बाण मारे। राजा बृहत्क्षत्र ने भी आचार्य की सेना को छिन्न-भिन्न करने के लिए फुर्ती के साथ उनको सन्नतपर्ववाले नब्बे बाण मारे। तब क्षेमधूर्ति ने क्रुद्ध होकर धारदार भल्ल बाण से वीर बृहत्क्षत्र का धनुष काट डाला और उनको तीक्ष्ण बाणों से घायल कर दिया। बृहत्क्षत्र ने भी हँसते-हँसते दूसरा धनुष लेकर क्षेमधूर्ति के घोड़े, सारथी और रथ आदि के टुकड़े-टुकड़े कर डाले और फिर भयानक भल्ल बाण से उनका मणिकुण्डल-मण्डित सिर काटकर गिरा दिया। क्षेमधूर्ति का, घुँघराले बालों से शोभित, किरीटयुक्त कटा हुआ सिर एकाएक गिरकर आकाश से गिरी हुई उल्का के समान शोभा को प्राप्त हुआ। इस तरह वीर क्षेमधूर्ति को मारकर प्रसन्नचित्त बृहत्क्षत्र, पाण्डवों की सहायता करने के लिए, तेज़ी के साथ कौरव-सेना की ओर बढ़े।

महावीर धृष्टकेतु आचार्य पर आक्रमण करने के लिए उनके सामने चले। उनको महापराक्रमी वीरधन्वा ने रोका। दोनों पराक्रमी वीर हज़ारों बाणों से एक दूसरे को घायल
१० करते हुए दुर्गम जङ्गल में विचरनेवाले यूथपति मत्त दो गजराजों के समान, अथवा गुफा में स्थित दो सिंहों के समान, एक दूसरे को मारने की इच्छा से घोर समर करने लगे। सिद्धचारणगण आश्चर्यपूर्ण दृष्टि से उनका वह अद्भुत युद्ध देखने लगे। उस समय महावीर वीर-

धन्वा ने क्रोध और उत्साह से पूर्ण होकर भल्ल बाण से धृष्टकेतु का धनुष काट डाला। चेदि-राज धृष्टकेतु ने उसी दम वह धनुष फेंककर सुवर्णदण्ड-मण्डित एक लोहे की भयानक शक्ति हाथ में ली और ताककर वीरधन्वा के रथ पर फेंकी। उस वीर-घातिनी शक्ति के प्रहार से महावीर वीरधन्वा का हृदय फट गया और वे पृथ्वी पर गिरकर मर गये। राजन्! त्रिगर्तदेश के वीर वीरधन्वा के मर जाने पर पाण्डवपक्ष की सेना ने बड़े वेग से कौरव-सेना के ऊपर आक्रमण किया और उसका संहार शुरू कर दिया।

उधर सहदेव को साठ बाण मारकर परम प्रतापी वीर दुर्मुख तर्जन-गर्जन और सिंहनाद करने लगे। सहदेव उस तर्जन-गर्जन से क्रोधित होकर बाणों के प्रहार से उन्हें पीड़ित करने लगे। सहदेव की तेज़ी देखकर उनको दुर्मुख ने नव बाण मारे। अब सहदेव ने एक भल्ल बाण से दुर्मुख की ध्वजा काट डाली, चार बाणों से उनके चारों घोड़े मार डाले, एक तीक्ष्ण भल्ल बाण से सारथी का सिर काट डाला, एक तीक्ष्ण क्षुरप्र बाण से उनका धनुष काट डाला और फिर पाँच बाण मारकर उन्हें घायल कर दिया। बिना घोड़ों के रथ को छोड़कर दुर्मुख उदास भाव से निरमित्र के रथ पर चले गये। शत्रुनाशन सहदेव ने निरमित्र पर क्रुद्ध होकर एक भल्ल बाण मारा, जिससे वे मर गये। सहदेव का दारुण बाण लगने से त्रिगर्तराज के पुत्र निरमित्र मरकर फ़ौरन् रथ से गिर पड़े। यह देखकर कौरवपक्ष की सेना अत्यन्त व्यथित हुई और त्रिगर्त लोग हाहाकार करने लगे। हे नरनाथ! राक्षस खर को मारकर रामचन्द्र जैसे शोभायमान हुए थे वैसे ही, निरमित्र को मारकर, सहदेव शोभायमान हुए। २०

हे नरनाथ! महाबाहु नकुल ने आपके पुत्र विशाललोचन विकर्ण को दम भर में परास्त करके सब लोगों को विस्मित कर दिया। उधर महावीर व्याघ्रदत्त ने तीक्ष्ण बाण बरसाकर सेना के मध्य में स्थित घोड़े, सारथी, ध्वजा आदि सहित वीर सात्यकि को अदृश्य सा कर दिया। महावीर सात्यकि ने भी हाथों की फुर्ती दिखाते हुए व्याघ्रदत्त के बाणों को व्यर्थ कर दिया और उनके घोड़े, सारथी आदि को मारकर रथ की ध्वजा काट गिराई। साथ ही तीक्ष्ण बाण के प्रहार से व्याघ्रदत्त को मार गिराया। इस तरह मगधराज के पुत्र के मारे जाने पर मगधदेश के वीर क्रोधान्ध हो उठे। वे सात्यकि के सामने आकर उन पर असंख्य बाण, तोमर, भिन्दिपाल, प्रास, मुशल, मुद्गर आदि अस्त्र-शस्त्र बरसाने लगे। युद्धनिपुण सात्यकि ने हँसते-हँसते सहज ही उन सब वीरों को परास्त कर दिया। मरने से बचे हुए मगधदेश के योद्धा, प्राण बचाने के लिए, चारों ओर भागने लगे। राजन्! सात्यकि इस तरह धनुष कँपाते और आपके सैनिकों का संहार करते हुए समरभूमि में विचरने लगे। उनसे संग्राम करने का साहस कोई नहीं कर सका। तब महावीर द्रोणाचार्य क्रुद्ध होकर लाल-लाल आँखें करके सात्यकि की ओर चले। ३० ३९

एक सौ आठ अध्याय

शल का मारा जाना और अलम्बुष की हार

सञ्जय कहते हैं—राजन्! सोमदत्त के पुत्र महाधनुर्द्धर यशस्वी शल द्रौपदी के पुत्रों से युद्ध करने लगे। उन्होंने पहले पाँच-पाँच बाण पाँचों को मारकर फिर सात-सात बाणों से उन्हें पीड़ित किया। शल के बाण लगने से द्रौपदी के पाँचों पुत्र अचेत-से हो गये। वे कुछ निश्चय न कर सके कि अब उन्हें क्या करना चाहिए। इसके उपरान्त नकुल के पुत्र शतानीक, नरश्रेष्ठ शल को दो तीक्ष्ण बाणों से पीड़ित करके, सिंहनाद करने लगे। द्रौपदी के अन्य चारों पुत्रों ने भी शल को तीन-तीन बाण मारे। महावीर शल ने भी हर एक की छाती ताककर एक-एक बाण मारा। शल के प्रहार से पीड़ित पाँचों भाई चारों ओर से शल के ऊपर तीक्ष्ण बाण छोड़ने लगे। अर्जुन के पुत्र ने कुपित होकर तीक्ष्ण चार बाणों से शल के चारों घोड़े मार डाले। भीमसेन के पुत्र ने उनका धनुष काट डाला और सिंहनाद करके तीक्ष्ण बाणों से उन्हें घायल किया। युधिष्ठिर के पुत्र ने शल की ध्वजा काट डाली और नकुल के पुत्र ने फुर्ती के साथ उनके सारथी का सिर काट डाला। सहदेव के पुत्र ने अपने भाइयों के प्रहार से शल को शिथिल देखकर एक क्षुरप्र बाण से उनका सिर काट डाला। तरुण सूर्य के समान तेजस्वी, सोने के गहनों से अलङ्कृत, शल का सिर पृथ्वी पर गिरने से समरभूमि प्रकाशित हो उठी। उस समय शल की मृत्यु देखकर आपके सैनिक लोग डर के मारे इधर-उधर भागने लगे।

१०

राजन्! जैसे रावण के पुत्र इन्द्रजित् ने लक्ष्मण से घोर युद्ध किया था वैसे ही क्रुद्ध राक्षस अलम्बुष महापराक्रमी भीमसेन से युद्ध करने लगा। इन दोनों वीरों का भयङ्कर युद्ध देखकर सब लोग विस्मित और आह्लादित हुए। उस समय महावीर भीमसेन ने हँसकर क्रुद्ध राक्षसराज अलम्बुष

को तीक्ष्ण नव बाण मारे। ऋष्यशृङ्ग का पुत्र अलम्बुष उन बाणों से घायल होकर गरजता हुआ भीमसेन और उनके साथियों के सामने पहुँचा। उसने भीमसेन को पाँच बाण मारकर उनके साथी तीस रथी योद्धाओं को मार गिराया। फिर और चार सौ रथी योद्धाओं को मारकर भीमसेन को उसने तीक्ष्ण बाण मारे। राक्षस के बाणों से महावीर भीमसेन अत्यन्त विह्वल हो उठे। वे रथ के ऊपर मूर्च्छित हो गये। दम भर के बाद उनको होश आया। वे क्रोध से काँपने लगे। उन्होंने धनुष चढ़ाकर तीक्ष्ण बाणों के प्रहार से अलम्बुष को अत्यन्त पीड़ित किया। भीमसेन के बाणों से घायल होने पर काला-कलूटा निशाचर फूले हुए ढाक के पेड़ के समान जान पड़ने लगा। हे नरनाथ! उस समय अलम्बुष को अपने भाई के वध का स्मरण हो आया। उसने भयानक रूप धारण करके भीमसेन से कहा—रे नराधम! खड़ा रह, आज समरभूमि में तू मेरा पराक्रम देख। तू पहले मेरे भाई महावीर बक राक्षस को मार करके भाग्यवश जीता बच गया था। मैं उस समय वहाँ पर होता तो अवश्य ही तुझे जीता न छोड़ता। भीमसेन से इतना कहकर वीर अलम्बुष देखते ही देखते अन्तर्द्धान हो गया। राक्षस ने बाणवर्षा से भीमसेन को छिपा दिया। उन्होंने भी उसको सामने न पाकर तीक्ष्ण बाणों से आकाश को परिपूर्ण कर दिया। भीम के बाणों से पीड़ित राक्षस मायाबल से रथ सहित कभी पृथ्वी पर आ जाता और कभी आकाश में चला जाता था। कभी सूक्ष्म, कभी बड़ा और कभी स्थूल आकार धारण करके वह मेघ के समान गरजने, कटु वचन कहने और आकाशमार्ग में रहकर चारों ओर से बाण बरसाने लगा। राक्षस के चलाये हुए शक्ति, कणप, प्रास, शूल, पट्टिश, परिघ, तोमर, शतघ्नी, भिन्दिपाल, परशु, शिला, खड्ग, लगुड़, ऋष्टि, वज्र आदि अस्त्र-शस्त्र जलधारा की तरह गिरकर भीमसेन की असंख्य सेना का संहार करने लगे। बहुत से हाथी, घोड़े, रथी और पैदल कट-कटकर गिरने लगे। २० ३०

राजन्! [वीर अलम्बुष इस तरह पाण्डवपक्ष की सेना को मारकर अपना पराक्रम प्रकट करने लगा।] उसने राक्षसगण-सेवित रक्त की नदी बहा दी। रथ उस नदी के आवर्त-से, हाथी उसके ग्राह-से, छत्र उसमें हंस-से और कटे हुए हाथ साँप-से जान पड़ते थे। चेदि, पाञ्चाल और सृञ्जयगण उस नदी में बहने लगे। उस भयानक संग्राम में निशाचर का निर्भय होकर विचरना, लड़ना और अद्भुत पराक्रम देखकर पाण्डवगण बहुत ही उद्विग्न हो उठे। कौरव-सेना के लोग अत्यन्त हर्षित होकर बाजे बजाने और लोमहर्षण सिंहनाद करने लगे। साँप जैसे ताली पीटने के शब्द को नहीं सह सकता वैसे ही भीमसेन कौरवपक्ष के बाजों के शब्द और सिंहनाद को नहीं सह सके। वे क्रोध के मारे लाल आँखें करके शत्रुसेना की ओर देखने लगे। इसके बाद उन्होंने धनुष पर बाण चढ़ाकर त्वाष्ट्र अस्त्र का प्रयोग किया। तब चारों ओर से हज़ारों बाण प्रकट हुए जिससे कौरव-सेना में भगदड़ मच गई। कौरवों की

४० सेना डर के मारे घबराकर भागने लगी। उस समय भीमसेन के छोड़े हुए उस त्वाष्ट्र अस्त्र ने रणभूमि में राक्षस की माया को मिटा दिया। उस अस्त्र से राक्षस पीड़ित होने लगा। वह निशाचर पीड़ित होकर युद्ध छोड़कर आचार्य की सेना की ओर भागा।

राजन्! इस प्रकार राक्षस को जब भीमसेन ने परास्त कर दिया तब पाण्डवगण अतीव प्रसन्न होकर सिंहनाद और शङ्खनाद से दसों दिशाओं को परिपूर्ण करने लगे। प्रह्लाद के परास्त होने पर देवताओं ने इन्द्र की जैसे प्रशंसा की थी वैसे ही सब लोग भीमसेन की बड़ाई ४४ करते हुए उन्हें असंख्य धन्यवाद देने लगे।

एक सौ नव अध्याय

अलम्बुष का मारा जाना

सञ्जय कहते हैं—महाराज! महावीर अलम्बुष इस तरह भीमसेन के सामने से भागकर रणभूमि में दूसरी ओर जा निकला। तब घटोत्कच वेग के साथ उसके सामने आकर तीक्ष्ण बाणों से उसे पीड़ित करने लगा। [अलम्बुष भी अत्यन्त क्रुद्ध होकर घटोत्कच के ऊपर प्रहार करने लगा।] वे दोनों राक्षसश्रेष्ठ इस तरह परस्पर भिड़कर बहुत सी मायाएँ प्रकट करते हुए इन्द्र और शम्बरासुर के समान घोर संग्राम करने लगे। पहले राम और रावण ने जैसे घोर युद्ध किया था वैसे ही उस समय दोनों राक्षस घोरतर युद्ध करने लगे। बीस नाराच बाणों से अलम्बुप का हृदय भेदकर घटोत्कच बारम्बार सिंह की तरह गरजने लगा। अलम्बुष भी बारम्बार तीक्ष्ण बाणों से रणदुर्मद घटोत्कच को घायल करता हुआ सिंहनाद करने लगा। वे मायायुद्ध में निपुण महापराक्रमी दोनों राक्षस क्रोधान्ध होकर सैकड़ों माया प्रकट करके एक दूसरे को मोहित करते हुए मायायुद्ध करने लगे। घटोत्कच ने जो-जो माया प्रकट की, वह-वह माया अलम्बुष ने अपनी माया के प्रभाव से उसी दम नष्ट कर दी। इसी समय भीमसेन आदि पाण्डव मायायुद्धनिपुण अलम्बुष के ऊपर क्रुद्ध होकर, रथों पर १० बैठकर, चारों ओर से उसकी ओर चले और अपने दल के असंख्य रथों से उसे घेरकर उस पर बाण बरसाने लगे। उन वीरों के बाणों की चोट खाकर वह राक्षस जलती हुई लकड़ियों से मारे जा रहे हाथी के समान जान पड़ने लगा। अस्त्रमाया के प्रभाव से उन सब अस्त्र-शस्त्रों को नष्ट करता हुआ अलम्बुष, जले हुए वन से निकलते हुए हाथी के समान, रथों के घेरे से बाहर निकल आया। इन्द्र के वज्र के समान शब्द करते हुए भयानक धनुष को चढ़ाकर उसने भीमसेन को पचीस, घटोत्कच को पाँच, युधिष्ठिर को तीन, सहदेव को सात, नकुल को तिहत्तर और द्रौपदी के पाँचों पुत्रों को पाँच-पाँच बाण मारकर सिंहनाद किया। तब उधर से
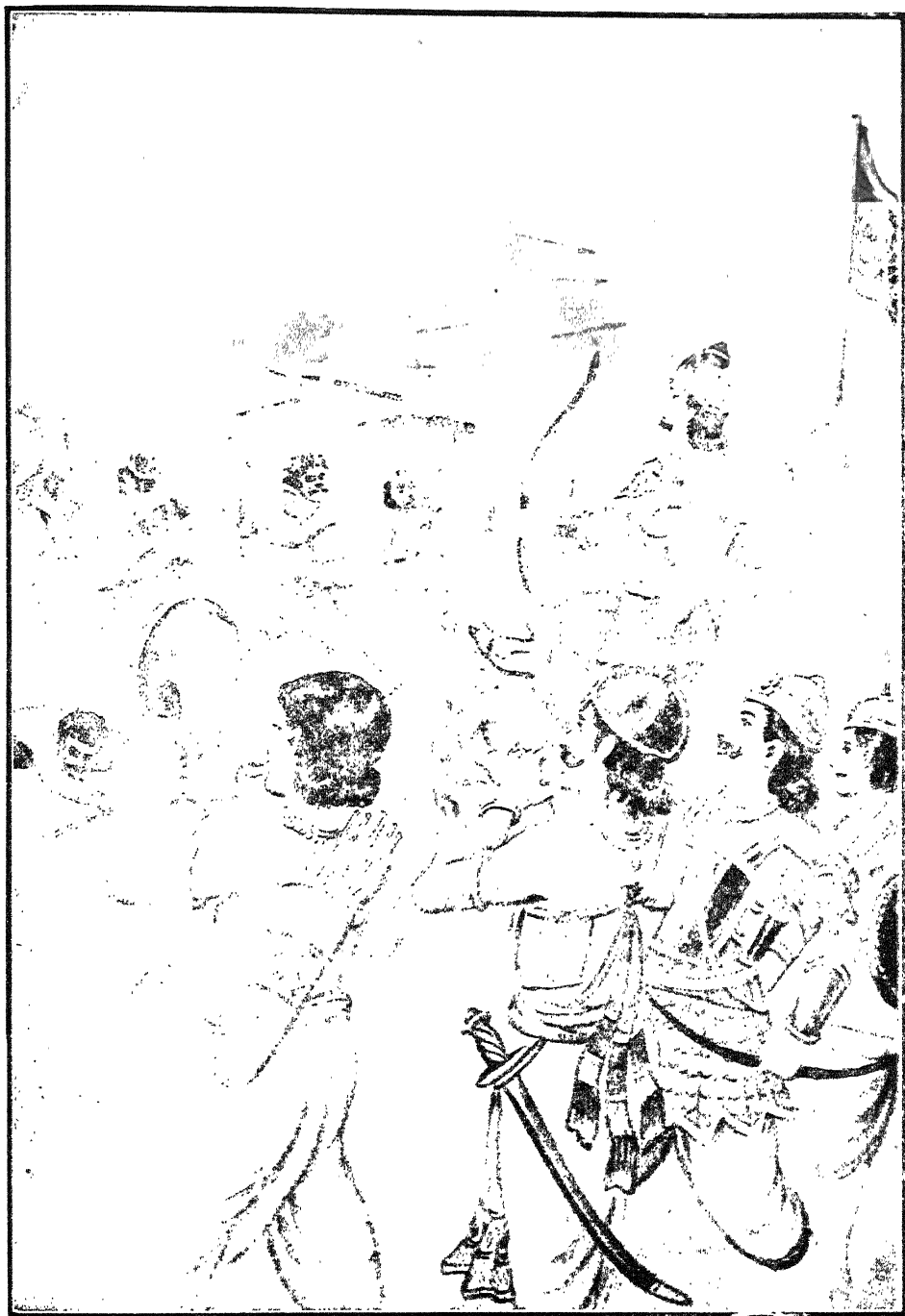
राक्षस को जब भीमसेन ने परास्त कर दिया... पाण्डवगण अतीव प्रसन्न होकर ..शंखनाद से दशों दिशाओं को परिपूर्ण करने लगे।—पृ० २४०२

भीमसेन ने नव, सहदेव ने पाँच, युधिष्ठिर ने सौ, नकुल ने चौंसठ और द्रौपदी के पुत्रों ने तीन-तीन बाण उस राक्षस को मारे। इसी समय महाबली घटोत्कच ने भी पहले उसे पचास और फिर सत्तर बाण मारकर सिंहनाद किया। उसके भयानक सिंहनाद से पर्वत, वन, जलाशय आदि सहित यह पृथ्वी काँप उठी।

राजन्! निशाचर अलम्बुष ने इस तरह इन महारथियों के तीक्ष्ण बाणों से अत्यन्त पीड़ित होकर सबको पाँच-पाँच बाण मारे। राक्षस घटोत्कच ने भी कुपित होकर फिर अलम्बुष को तीक्ष्ण सात बाण मारे। राक्षसेन्द्र अलम्बुष उन बाणों से पीड़ित होकर फुर्ती के साथ घटोत्कच के ऊपर सुवर्णपुङ्खयुक्त और तेज़ किये गये बाण बरसाने लगा। महाबली कुपित नाग जैसे तेज़ी के साथ पर्वत के शिखर में घुसते हैं वैसे ही वे बाण घटोत्कच के शरीर में प्रवेश कर गये। महाबली पाण्डवगण घटोत्कच के साथ मिलकर चारों ओर से अलम्बुष के ऊपर बाण बरसाने लगे। विजयाभिलाषी पाण्डवों के विकट बाणों से व्यथित अलम्बुष उस समय साधारण मनुष्यों की तरह शिथिल और कर्तव्य निश्चित करने में असमर्थ हो गया।

उसकी यह दशा देखकर उसे मार डालने के लिए युद्धनिपुण महाबली घटोत्कच बड़े वेग से अपने रथ से अलम्बुष के, जले हुए शैलशिखर अथवा अञ्जनराशि के तुल्य, रथ पर झपटा। गरुड़ जैसे साँप को पकड़ ले वैसे ही घटोत्कच ने अलम्बुष को पकड़कर ऊपर उठा लिया और कई बार ऊपर घुमाकर नीचे पटक दिया। पत्थर पर पटके गये घड़े की तरह अलम्बुष के अङ्ग चूर-चूर हो गये। बली, फुर्तीले, पराक्रमी, क्रुद्ध घटोत्कच ने रणभूमि में सब सैनिकों को डरवा दिया। इस तरह वीर घटोत्कच ने, शालकटंकट नाम से भी प्रसिद्ध, भयानक राक्षस अलम्बुष को पटककर मार डाला। उसका वध देखकर पाण्डवों की सेना में आनन्द-कोलाहल होने लगा। लोग सिंहनाद करके, कपड़े हिला-हिलाकर, हर्ष प्रकट करने लगे। कौरवदल के सैनिक और शूर योद्धा लोग राक्षसराज अलम्बुष को पर्वत के फटे हुए

शिखर की तरह रणस्थल में गिरते देखकर क्षोभ को प्राप्त हुए और हाहाकार करने लगे। युद्ध देखने के लिए आये हुए लोग कौतूहल के साथ उस युद्धभूमि में, आकाश से अपने आप गिरे हुए मङ्गल ग्रह की तरह, पड़े हुए राक्षस को देखने लगे।

महाराज ! महाबली घटोत्कच इस तरह महातेजस्वी अलम्बुष को, पके हुए अलम्बुष-फल की तरह, पृथ्वी पर गिराकर बहुत प्रसन्न हुआ। यह दुष्कर कर्म करके, बल दैत्य को मारने पर इन्द्र की तरह शोभायमान, घटोत्कच ज़ोर से सिंहनाद करने लगा। उसके पिता, चाचा और उनके बान्धवगण उसकी बड़ाई करते हुए साधुवाद देने लगे। पाण्डवों की सेना में अनेक प्रकार के बाण आदि अस्त्र-शस्त्रों का और शङ्खों का महान् शब्द होने लगा। इस प्रकार ३७ घोरतर नाद से तीनों लोक प्रतिध्वनित-से हो उठे।

एक सौ दस अध्याय

युधिष्ठिर का सात्यकि को अर्जुन की ख़बर लाने के लिए भेजना

धृतराष्ट्र ने कहा—हे सञ्जय ! युद्धनिपुण सात्यकि ने द्रोणाचार्य को युद्ध में किस तरह परास्त किया ? यह वृत्तान्त कहो। मुझे बड़ा कौतूहल हो रहा है।

सञ्जय ने कहा—हे महाप्राज्ञ महाराज ! सात्यकि आदि पाण्डवपक्ष के वीरों के साथ द्रोणाचार्य का जैसा घोर युद्ध हुआ, उसे सुनिए। महाबली द्रोणाचार्य सत्यविक्रमी सात्यकि को सेना का संहार करते देखकर स्वयं उनकी ओर बढ़े। महारथी आचार्य को, एकाएक अपने पास आते देखकर, सात्यकि ने पचीस क्षुद्रक बाण मारे। महावीर्यशाली द्रोण ने भी शीघ्रता के साथ सुवर्णपुङ्खयुक्त तीक्ष्ण पाँच बाणों से उन्हें घायल कर दिया। वे शत्रुओं के मांस को खानेवाले बाण सात्यकि के सुदृढ़ कवच को तोड़कर वैसे ही पृथ्वी में घुस गये जैसे फुफकार रहे साँप बाँबी में घुसें। तब महाबाहु सात्यकि ने अंकुशपीड़ित गजराज की तरह क्रुद्ध होकर अग्नितुल्य पचास नाराच बाण आचार्य को मारे। उन्होंने सात्यकि के प्रहार से घायल होकर बहुत से बाणों से उनको पीड़ित किया। द्रोणाचार्य को अपने ऊपर लगातार बाण बर-१० साते देखकर महावीर सात्यकि किङ्कर्तव्यविमूढ़ और उदास हो उठे। महाराज ! तब आपके पुत्र और सैनिक लोग सात्यकि की यह दशा देखकर प्रसन्नता के साथ बारम्बार सिंहनाद करने लगे। वह भयानक सिंहनाद सुनकर और सात्यकि को अत्यन्त पीड़ित देखकर धर्मपुत्र युधिष्ठिर अपने सैनिकों और योद्धाओं से कहने लगे—हे वीर योद्धाओ ! राहु जैसे सूर्य को ग्रसता है वैसे ही महारथी द्रोणाचार्य बाणवर्षा के द्वारा यादवश्रेष्ठ सात्यकि को अत्यन्त पीड़ित कर रहे हैं। अतएव तुम लोग शीघ्र वहाँ पर जाओ जहाँ द्रोणाचार्य के साथ सात्यकि संग्राम

महाबली घटोत्कच इस तरह महातेजस्वी अलम्बुष को........पृथ्वी पर गिरा कर बहुत प्रसन्न हुआ। —पृ० २४०४

कर रहे हैं; तुम उनकी सहायता करो। अपने सैनिकों और योद्धाओं को इस प्रकार आज्ञा देकर धर्मराज युधिष्ठिर पाञ्चालराज के पुत्र धृष्टद्युम्न से बोले—हे धृष्टद्युम्न! तुम इस समय भी निश्चिन्त क्या खड़े हो, शीघ्र द्रोणाचार्य के पास जाओ। आचार्य की ओर से हम लोगों पर विषम विपत्ति उपस्थित है। तुम्हें क्या उस घोर भय और विपत्ति का ख़याल नहीं है? धागे में बँधे हुए पक्षी से जैसे कोई बालक खेले वैसे ही महावीर द्रोणाचार्य सात्यकि के साथ खेल-सा कर रहे हैं। इसलिए तुम भीमसेन आदि वीरों को साथ लेकर शीघ्र सात्यकि के रथ के पास जाओ। मैं भी सेना लेकर तुम्हारे पीछे आता हूँ। हे पाञ्चालराजकुमार! इस समय तुम मृत्यु के मुँह में पड़े हुए सात्यकि को बचाओ।

अब सात्यकि की रक्षा और सहायता करने के लिए धर्मराज युधिष्ठिर, वीर योद्धाओं को साथ लेकर, आचार्य द्रोण के रथ की ओर शीघ्रता से चले। पाण्डव और सृञ्जयगण जब अकेले द्रोणाचार्य से युद्ध करने लगे तब रणभूमि में महाकोलाहल होने लगा। सब वीर एकत्र होकर आचार्य के ऊपर कङ्कपत्र और मयूरपङ्ख से शोभित अत्यन्त तीक्ष्ण बाण बरसाने लगे। लोग जैसे अतिथियों को जल, आसन आदि दे करके ग्रहण करते हैं वैसे ही द्रोणाचार्य भी हँसते हुए उन वीरों को ग्रहण करके असंख्य बाणों से उनका सत्कार करने लगे। द्रोणाचार्य के बाणों से वे धनुर्द्धर योद्धा वैसे ही तृप्त हो गये जैसे किसी अतिथि-सेवक मनुष्य के घर पर आये हुए अतिथि, सत्कार और भोजन आदि से, तृप्त होते हैं। दोपहर के सूर्य के समान तपते हुए द्रोणाचार्य को कोई अच्छी तरह देख भी न सकता था। सूर्य जैसे अपनी तीक्ष्ण किरणों से सब लोगों को तपाते हैं वैसे ही धनुर्द्धरश्रेष्ठ द्रोणाचार्य अपने असंख्य तीक्ष्ण बाणों के प्रहार से सब वीरों को पीड़ित करने लगे।

दलदल में फँसे हुए हाथी के समान निरुपाय होकर मारे जा रहे पाण्डवों और सृञ्जयों को उस समय अपनी रक्षा करनेवाला कोई नहीं देख पड़ता था। द्रोणाचार्य के बड़े-बड़े बाण चारों

और लोगों को तपाते हुए सूर्य की किरणों के समान फैलते दिखाई पड़ रहे थे। उस युद्ध में महारथी द्रोणाचार्य ने धृष्टद्युम्न के साथी पाञ्चाल देश के पचीस प्रधान-प्रधान वीरों को मार डाला। इस तरह पाण्डवों और पाञ्चालों की सेना के चुने हुए योद्धाओं को द्रोणाचार्य ढूँढ़-
३० ढूँढ़कर मारने लगे। केकयसेना के सौ वीरों को मारकर और अन्यान्य सब वीरों को भगाकर रणभूमि में, मुँह फैलाये हुए काल के समान, द्रोणाचार्य विचरने लगे। पाञ्चाल, सृञ्जय, मत्स्य और केकय देश के बहुत से वीर पुरुष द्रोणाचार्य के बाणों से छिन्न-भिन्न, पराजित और रणविमुख होकर—वन में दावानल से घिरे हुए वनवासी जीवों की तरह—चिल्लाने और आर्तनाद करने लगे। उस समय युद्ध देखने के लिए आये हुए देवता, गन्धर्व, पितर, सिद्ध, चारण आदि सब परस्पर कहने लगे कि वह देखो, पाञ्चाल और पाण्डव लोग अपनी-अपनी सेना के साथ भागे जा रहे हैं।

महाराज! महाप्रतापी द्रोणाचार्य जब शत्रुसंहार के लिए तैयार हुए तब न तो कोई उनके पास जा सकता था और न कोई उन्हें बाण आदि शस्त्रों से घायल करने का मौक़ा ही पाता था। द्रोणाचार्य के साथ पाण्डवों का ऐसा वीरविनाशन घोरतर युद्ध होने पर एकाएक धर्मराज युधिष्ठिर को कृष्णचन्द्र के पाञ्चजन्य का गंभीर शब्द सुन पड़ा। वह शङ्ख महात्मा वासुदेव के मुँह की हवा से परिपूर्ण होकर बड़े ज़ोर से बज रहा था। उस समय जयद्रथ के रक्षक महारथी वीर पुरुष वेग से बाण बरसाते हुए अर्जुन के रथ के समीप सिंहनाद कर रहे थे। इसी कारण उनके गाण्डीव धनुष का शब्द उस कोलाहल में छिप गया। तब श्रीकृष्ण के शङ्ख का शब्द सुनकर और गाण्डीव धनुष का शब्द न सुन पड़ने के साथ ही कौरवों का सिंहनाद सुन पड़ने से खिन्न होकर युधिष्ठिर सोचने लगे कि श्रीकृष्ण का शङ्खनाद और कौरवों का प्रसन्नता-सूचक सिंहनाद सुन पड़ रहा है। इसमें सन्देह नहीं कि अवश्य अर्जुन के विषय में कोई अमङ्गल दुर्घटना हुई है। व्याकुलहृदय धर्मराज इसी सोच में पड़ गये; बारम्बार मोहाभिभूत होकर वे
४० कर्तव्य का निश्चय न कर सके। उन्होंने अश्रुगद्गद स्वर में कहा—हे सात्यकि! पहले सज्जन लोग संग्राम के समय सुहृदों के कर्तव्य के बारे में जो कुछ कह गये हैं, उसी कर्तव्य के करने का यह समय उपस्थित है। महात्मन्! बहुत खोजने पर भी सब योद्धाओं में तुम्हारे समान प्रिय सुहृद् और हितकारी मुझे कोई नहीं देख पड़ता। हे यादवश्रेष्ठ! जो व्यक्ति सदा प्रफुल्लचित्त और अनुगत हो उसी को, मेरे मत में, संग्राम के काम में नियुक्त करना चाहिए। तुम वासुदेव के समान महाबली हो और उन्हीं की तरह सदा हम लोगों को आश्रय देते हो। अतएव इस समय जो भार मैं तुमको सौंपता हूँ उसे वहन करो। मेरी इच्छा और अनुरोध को अस्वीकार न करना। महावीर अर्जुन तुम्हारे भाई, सखा और गुरु हैं। इस कारण विपत्ति के समय तुम उनकी सहायता करो। तुम सत्यव्रत, बलवीर्यशाली, मित्रों के लिए प्रियदर्शन और अपने

आचरण के प्रभाव से सर्वसाधारण में सत्यवादी प्रसिद्ध हो। हे शिनिवंशी! जो व्यक्ति अपने मित्र के लिए युद्ध में लड़कर प्राण देता है और जो व्यक्ति सत्पात्र ब्राह्मणों को सम्पूर्ण पृथ्वी दान करता है, वे दोनों समान फल के भागी होते हैं। मैंने सुना है कि असंख्य राजा लोग यज्ञ करके, सारी पृथ्वी ब्राह्मणों को दान करके, स्वर्गलोक को गये हैं। इस समय तुम मित्र की सहायता करके पृथ्वी-दान के सदृश अथवा उससे भी अधिक फल प्राप्त करो। मैं हाथ जोड़कर तुमसे यह प्रार्थना करता हूँ। हे यदुकुल-तिलक! केवल महारथी केशव और तुम, ये दोनों जने मित्रों को अभय-दान करके जीवन से निरपेक्ष होकर युद्ध करते हैं। और देखो, महाबली वीर पुरुष ही यश के लाभ की इच्छा से वीर पुरुषों की सहायता करते हैं, साधारण पुरुष कभी ऐसा नहीं कर सकते। अतएव
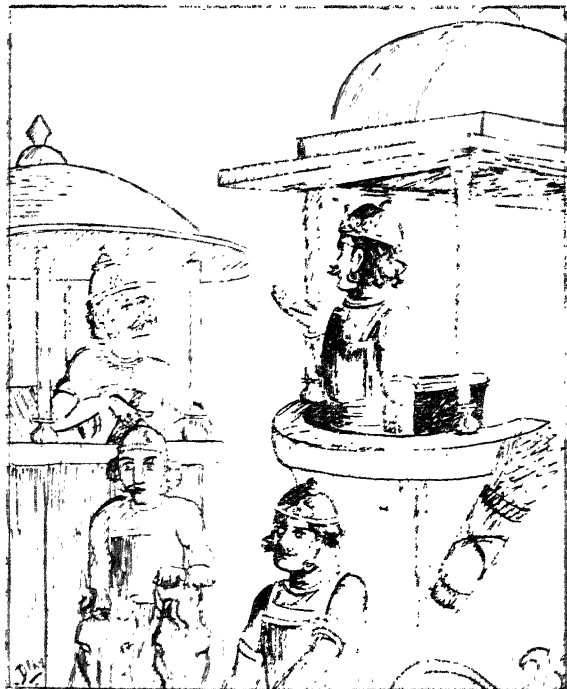
इस विपत्ति के समय में तुम्हारे सिवा और कोई मुझे अर्जुन का रक्षक या सहायक नहीं देख पड़ता। हे वीर! अर्जुन बारम्बार तुम्हारी प्रशंसा और तुम्हारे अद्भुत कार्यों का बखान करके मेरे हर्ष को बढ़ाया करते हैं। एक बार उन्होंने द्वैतवन में, सज्जन-समाज में, तुम्हारे पीछे तुम्हारे यथार्थ गुणों का वर्णन करते-करते कहा था—महाराज! सात्यकि महाबली, चित्रयुद्ध में निपुण, समझदार, सब अस्त्रों के प्रयोग में कुशल और महावीर हैं। वे कभी न तो युद्ध में घबराते ही हैं और न मोहित ही होते हैं। वे विशाल-लोचन, चौड़ी छाती और बैल के से ऊँचे पुष्ट कन्धोंवाले, महारथी, मेरे शिष्य और सखा हैं। मैं उनका प्रियपात्र हूँ और वे मुझे बहुत ही प्यारे हैं। वे मेरे सहायक होकर कौरवों को नष्ट करेंगे। यदि महावीर श्रीकृष्ण, बलदेव, अनिरुद्ध, प्रद्युम्न, गद, सारण, साम्ब और अन्यान्य वृष्णिवंश के वीर यादव युद्ध में मेरी सहायता करें, तो भी मैं नरश्रेष्ठ सात्यकि को अवश्य अपना सहायक बनाऊँगा। उनके समान योद्धा कोई नहीं है। हे प्रिय सात्यकि! अर्जुन इस तरह तुम्हारे गुणों का बखान किया करते हैं। इसलिए तुम उन अर्जुन के, भीमसेन के और मेरे उक्त विचार को निष्फल न करना।

तीर्थ-यात्रा के प्रसङ्ग में द्वारका में पहुँचकर मैंने अर्जुन के ऊपर तुम्हारी दृढ़ भक्ति देखी है। ख़ासकर हम लोगों की इस विपत्ति के समय तुम जैसी मित्रता और अनुगत भाव दिखा रहे हो, वैसा भाव मुझे और किसी में नहीं देख पड़ता। तुम कुलीन हो, एकान्त अनुगत हो, सत्यवादी और महावीर्यशाली हो। इसलिए इस समय अपने प्रिय सखा, विशेषकर आचार्य, अर्जुन के प्रति कृपा दिखाने के लिए अपने योग्य कार्य करने में प्रवृत्ति दिखाओ। दुर्योधन आचार्य के बाँधे हुए कवच को धारण करके अर्जुन के पास गया है और कौरवपक्ष के अन्यान्य महारथी पहले से ही वहाँ जुटे हुए हैं। वह देखो, अर्जुन के रथ के सामने बहुत ही कोलाहल हो रहा है। अतएव उस जगह चटपट पहुँचना तुम्हारा कर्तव्य है। यदि महाबली द्रोणाचार्य तुम पर आक्र-
७० मण करेंगे, तो हम महावीर भीमसेन को और असंख्य सेना को साथ लेकर उन्हें रोकेंगे। हे सात्यकि! वह देखो, कौरवपक्ष के सब सैनिक, पर्वकाल में वायु के वेग से क्षोभ को प्राप्त महासागर की तरह, अर्जुन के बाणों से छिन्न-भिन्न होकर, युद्ध छोड़कर, महाकोलाहल करते हुए भागे जा रहे हैं। वह देखो, मनुष्य, घोड़े और रथ जो दौड़ रहे हैं, उससे इतनी धूल उड़ी है कि चारों ओर अँधेरा ही अँधेरा छाया हुआ है, कुछ नहीं सूझ पड़ता। महापराक्रमी सिन्धु-सौवीरगण तोमर, प्रास आदि शस्त्र उठाये शत्रुनाशन अर्जुन को चारों ओर से घेर रहे हैं। उन्हें नष्ट किये बिना अर्जुन कभी जयद्रथ को नहीं मार सकेंगे। वे लोग जयद्रथ की रक्षा के लिए प्राणपण से युद्ध करेंगे। वह देखो, बाण, शक्ति, ध्वजा आदि से परिपूर्ण, हाथियों और घोड़ों से व्याप्त, अत्यन्त दुरधिगम्य कौरव-सेना समरभूमि में सामने डटी खड़ी है। दुन्दुभियों का शब्द, गम्भीर शङ्खध्वनि, सिंहनाद, रथों के पहियों की घरघराहट, हाथियों की चिग्घार, घोड़ों की हिनहिनाहट और भागते हुए पैदलों के पैरों की धमक सुनाई पड़ रही है। उनके चलने से पृथ्वीतल कम्पाय-मान हो रहा है। अगले भाग में सिन्धुदेश की सेना और पिछले भाग में द्रोणाचार्य मौजूद हैं। वे लोग संख्या में इतने अधिक हैं कि इन्द्र के भी छक्के छुड़ा सकते हैं। इसी असीम सेना के भीतर महातेजस्वी अर्जुन घुस गये हैं और इसी लिए उनके जीवननाश की आशङ्का है। अर्जुन अगर
८० समर में मारे गये तो फिर मैं किस तरह जीता रहूँगा? हे सात्यकि! तुम्हारे जीवित रहने पर भी क्या मुझे ऐसा कष्ट सहना पड़ेगा? प्रियदर्शन अर्जुन ने सूर्योदय के समय कौरवों की सेना में प्रवेश किया था। वह सेना समुद्र-सदृश है; उसके भीतर देवगण भी सहज में नहीं धँस सकते; किन्तु अर्जुन अकेले ही उसके भीतर गये हैं। उनके अमङ्गल की आशङ्का से मेरी बुद्धि किसी तरह युद्ध के विषय में प्रस्फुरित नहीं होती। वह देखो, महाबाहु द्रोणाचार्य युद्ध के लिए उत्सुक होकर तुम्हारे सामने ही मेरी सेना को पीड़ित कर रहे हैं। हे सात्यकि! हे शूरशिरोमणे! तुम जटिल कर्तव्य की उलझन को सुलझाने में निपुण हो। इसलिए इस समय जो अच्छा समझो, वही करो; किन्तु मेरी समझ में और सब काम छोड़कर अर्जुन की रक्षा और सहायता ही

करनी चाहिए। मुझे जगत्पति श्रीकृष्ण के लिए कुछ भी चिन्ता नहीं है। मैं तुमसे सच कहता हूँ कि इस कौरव-सेना की कौन कहे, अगर तीनों लोकों के योद्धा भी एकत्र होकर सामने जावें तो उनको भी वे परास्त कर सकते हैं! महापराक्रमी अर्जुन रणस्थल में असंख्य योद्धाओं के चलाये हुए बाणों से पीड़ित होकर कहीं जान न खो बैठें, इसी चिन्ता के मारे मैं मूढ़ सा हो रहा हूँ। ९० अतएव मेरे कहने से तुम अर्जुन के पीछे जाओ। मुझ-से पुरुष [के कहने से तुम-से पुरुष] का यही कर्तव्य है। हे वीर यादवश्रेष्ठ! वृष्णिवंश में तुम और प्रद्युम्न यही दो अतिरथी हैं। हे वीर! तुम अस्त्र-बल में श्रीकृष्ण के तुल्य, बाहुबल में संकर्षण के समान और पराक्रम तथा वीरता में महावीर अर्जुन के सदृश हो। सज्जन यह कहकर तुम्हारी प्रशंसा किया करते हैं कि सात्यकि के लिए समर में कोई काम असाध्य नहीं है, महावीर सात्यकि युद्धनिपुण और भीष्म-द्रोण से भी बढ़कर प्रतापी हैं। इसलिए तुम मेरे कहने के अनुसार कार्य करो। हे महाबली! अपने दल के सब लोगों की, मेरी और अर्जुन की धारणा को मिथ्या न करना। इस समय परम प्रिय प्राणों का मोह छोड़कर तुम वीरों की तरह समरभूमि में बेखटके विचरण करो। हे शिनि-नन्दन! यादवों की यही परिपाटी है कि वे रण में जाकर अपने जीवन का मोह नहीं करते। युद्धभूमि में प्रवेश करके युद्ध न करना, अस्थिर होना या संग्राम से भागना डरपोक असत् पुरुषों का काम है। यादवों को इन बातों का अभ्यास नहीं है। धर्मात्मा अर्जुन तुम्हारे गुरु हैं और कृष्णचन्द्र तुम्हारे और अर्जुन के भी गुरु हैं। इसी से सहायता के लिए अर्जुन के पास जाने को मैं तुमसे कहता हूँ। मैं तुम्हारे गुरु का गुरु हूँ; अतएव मेरी बात न मानना तुम्हारा कर्तव्य नहीं है। हे सात्यकि! यह मेरा कथन श्रीकृष्ण और अर्जुन के मत के अनुकूल है। यह मैं तुमसे सत्य कहता हूँ। अब तुम अर्जुन के पास शीघ्र जाओ। हे सत्यपराक्रमी! मेरे वचनों को मानकर तुम दुर्मति दुर्योधन की इस सेना में प्रवेश करो। युद्ध में महारथी वीरों का सामना करते हुए तुम अपने योग्य कर्म करके सबको दिखलाओ। १०३

(१०० after "तुम्हारा कर्तव्य")

एक सौ ग्यारह अध्याय

सात्यकि का उत्तर और युधिष्ठिर का प्रत्युत्तर

सञ्जय कहते हैं कि महाराज! धर्मराज युधिष्ठिर के प्रीतिप्रद, समय के लायक, न्यायानुकूल वाक्य सुनकर सात्यकि ने कहा—राजन्! आपने महावीर अर्जुन के लिए जो नीतिपूर्ण यशस्कर वाक्य कहे उन्हें मैंने सुना। ऐसे समय वीर अर्जुन को जैसे आप आज्ञा देते वैसे ही मुझे भी दे सकते हैं और आपकी दी हुई आज्ञा का पालन करना मेरा कर्तव्य है। मैं अर्जुन

की रक्षा के लिए प्राण भी देने को तैयार हूँ। ख़ासकर जब आप आज्ञा करते हैं तब संग्रामभूमि में चाहे जो कार्य हो, उसे करना ही मेरा कर्तव्य है। मैं आपकी अनुमति पाकर देवता, असुर, मनुष्य आदि सहित इस समग्र त्रिभुवन से संग्राम कर सकता हूँ; इस हीन-बल दुर्योधन की सेना के साथ संग्राम करना तो कोई बड़ी बात नहीं। मैं अवश्य ही समरभूमि में इस सम्पूर्ण कौरव-सेना को परास्त करूँगा। महाराज! मैं बिना किसी रोक-टोक और विघ्न के अर्जुन के पास जाऊँगा और दुरात्मा जयद्रथ के मारे जाने पर फिर आपसे आ मिलूँगा। किन्तु वासुदेव और अर्जुन जो कुछ मुझसे कह गये हैं वह आपसे निवेदन कर देना भी मेरे लिए अत्यन्त आवश्यक है। महावीर अर्जुन ने जाते समय सब सैनिकों के और महात्मा श्रीकृष्ण के

१० सामने बारम्बार मुझसे कहा था कि "हे सात्यकि! मैं जब तक जयद्रथ को मारकर नहीं लौट आता तब तक सावधान होकर धर्मराज युधिष्ठिर की रक्षा करना। मैं तुम्हें या प्रद्युम्न को धर्मराज की रक्षा का भार देकर ही निश्चिन्त होकर जयद्रथ को मारने के लिए जा सकता हूँ। तुम कौरवपक्ष के प्रधान योद्धा द्रोणाचार्य को अच्छी तरह जानते हो और उनकी प्रतिज्ञा भी सुन चुके हो। वे युधिष्ठिर को पकड़ने के लिए अत्यन्त यत्न कर रहे हैं और असल में अपनी प्रतिज्ञा को पूर्ण भी कर सकते हैं। इसलिए मैं इस समय धर्मात्मा युधिष्ठिर को तुम्हें सौंपकर जयद्रथ के मारने को जाता हूँ। उसे मारकर बहुत जल्द लौट आऊँगा। तुम यही यत्न करना कि महावीर द्रोणाचार्य धर्मराज को किसी तरह पकड़ न सकें। अगर द्रोणाचार्य उन्हें पकड़ ले गये तो मैं जयद्रथ के मारने में अकृतकार्य और अत्यन्त अप्रसन्न होऊँगा। सत्यव्रत युधिष्ठिर अगर युद्ध में पकड़ लिये गये तो अवश्य ही हम लोगों को फिर वन में जाकर रहना पड़ेगा और फिर हमारी जीत भी निष्फल हो जायगी। अतएव हे सात्यकि! आज तुम मेरा प्रिय करने के लिए, २० विजय और यश पाने के लिए, युधिष्ठिर की रक्षा करो।"

हे धर्मराज! द्रोणाचार्य की आशङ्का से महावीर अर्जुन आपको मेरे हाथ में सौंप गये हैं। इस समय यहाँ मुझे महावीर प्रद्युम्न के सिवा और कोई योद्धा ऐसा नहीं देख पड़ता, जो द्रोणाचार्य का सामना कर सके। कोई-कोई मुझे भी द्रोणाचार्य का सामना करने में समर्थ कहते हैं। सो मैं अपने ऊपर होनेवाले इस विश्वास अथवा आत्मोत्कर्ष और अपने गुरु अर्जुन की आज्ञा को कैसे व्यर्थ कर सकता हूँ! मैं ऐसी अवस्था में आपको छोड़कर कैसे जाऊँ? दुर्भेद्य कवच धारण किये हुए आचार्य का हस्तकौशल (फुर्ती) प्रसिद्ध है। वे युद्धभूमि में आपको पाकर, अपने वश में करके, वैसे ही खेल सा खेलेंगे जैसे कोई बालक किसी चिड़िया को लेकर क्रीड़ा करे। वासुदेव के पुत्र प्रद्युम्न अगर इस जगह होते तो मैं उनके हाथ में आपको सौंप जाता। वे महावीर अर्जुन की ही तरह आपकी रक्षा करते। [मैं अर्जुन के पास चला जाऊँगा तो ऐसा योद्धा कोई नहीं है जो आचार्य के सामने ठहरकर युद्ध करे और आपको बचावे।] इसलिए आप और सब ख़याल छोड़कर अपनी रक्षा कीजिए। मैं चला जाऊँगा तो आपकी रक्षा कौन करेगा? राजन्! महावीर अर्जुन किसी कार्य का भार उठाकर कभी हिम्मत नहीं हारते, इसलिए आप उनके बारे में किसी तरह का भय न कीजिए। ये सौवीर, सिन्धु, पुरु और उत्तर, दक्षिण आदि देशों के सब योद्धा और कर्ण आदि महारथी वीर कुपित अर्जुन के सोलहवें अंश के भी समान नहीं हैं। देवता, दैत्य, मनुष्य, राक्षस, किन्नर, महानाग आदि चराचर प्राणी युद्धभूमि में अर्जुन का सामना नहीं कर सकते। इस कारण आप उनके लिए कोई शङ्का न करें। जहाँ महाबली अर्जुन और वासुदेव एक साथ हैं, वहाँ कार्य में किसी तरह के विघ्न की सम्भावना नहीं है। महाराज! आप अपने भाई के दैवबल, अस्त्रशिक्षा, धनुर्विद्या के अभ्यास, अमर्ष, शूरता, कृतज्ञता, दया आदि गुणों पर विचार कीजिए। साथ ही यह भी ख़याल कीजिए कि आपका सहायक मैं अर्जुन के पास चला जाऊँगा तो द्रोणाचार्य न ज़ाने क्या-क्या करेंगे। महावीर द्रोणाचार्य, अपनी प्रतिज्ञा पूरी करने के लिए, आपको पकड़ने की बहुत चेष्टा कर रहे हैं। इसलिए इस समय आत्मरक्षा करना ही आपका कर्त्तव्य है। राजन्! इस समय अगर मैं चला जाऊँ तो ऐसा कौन है जिसे आपका रक्षक बनाकर आपको उसके हाथ में सौंपूँ? मैं सच कहता हूँ, आपको किसी को सौंपे बिना मैं अर्जुन के पास न जाऊँगा। अतएव सब बातों पर विचार करके आप जो श्रेयस्कर जान पड़े वह अनुमति कीजिए। ३१

अब युधिष्ठिर ने कहा—हे यादवश्रेष्ठ! तुमने जो कहा, उसमें मुझे कुछ भी सन्देह नहीं; किन्तु अर्जुन के अनिष्ट की आशङ्का लगातार मुझे उद्विग्न कर रही है। अतएव मैं स्वयं अपनी रक्षा का यत्न करूँगा। तुम मेरी अनुमति के अनुसार अर्जुन के पास जाओ। मैं अपनी रक्षा, और अर्जुन की रक्षा के लिए तुमको भेजना, इन दोनों बातों पर विचार करके यही ठीक समझता हूँ कि अर्जुन की रक्षा के लिए तुमको भेज दूँ। अतएव तुम तुरन्त अर्जुन के पास जाने ४०

का यत्न करो। महापराक्रमी भीमसेन, धृष्टद्युम्न, उनके भाई, द्रौपदी के पुत्र, केकय देश के राजकुमार पाँचों भाई, राक्षस घटोत्कच, राजा विराट, द्रुपद, महाबली शिखण्डी, पराक्रमी धृष्टकेतु, कुन्तिभोज, नकुल, सहदेव और पाञ्चाल-सृञ्जयगण तथा अन्यान्य राजा लोग सावधान होकर मेरी रक्षा करेंगे। इससे द्रोणाचार्य और कृतवर्मा दोनों न तो मुझे पकड़ सकेंगे और न मुझपर आक्रमण ही कर सकेंगे। जैसे तटभूमि महासमुद्र के वेग को रोके रहती है वैसे ही वीर्यशाली धृष्टद्युम्न भी बल प्रकट करके द्रोणाचार्य को रोकेंगे। जहाँ धृष्टद्युम्न रहेंगे वहाँ महाबली द्रोणाचार्य अपनी सेना साथ लेकर कभी आक्रमण न कर सकेंगे। द्रोणाचार्य को मारने के लिए ही महावीर धृष्टद्युम्न अग्नि से प्रकट हुए हैं। इस समय तुम विश्वासपूर्वक कवच पहनो, धनुष-बाण-खड्ग आदि शस्त्र लो और अर्जुन के पास जाओ। मेरे लिए तुम तनिक भी
५१ चिन्ता न करो। महावीर धृष्टद्युम्न ही कुपित द्रोणाचार्य को रोक सकेंगे।

एक सौ बारह अध्याय

सात्यकि का जाना

सञ्जय कहते हैं—हे नरनाथ! रण में दुर्द्धर्ष, शिनिवंशी सात्यकि धर्मराज युधिष्ठिर के वचन सुनकर मन में आशङ्का करने लगे कि इनको छोड़कर जाने से मैं अर्जुन की दृष्टि में अपराधी होऊँगा और लोग भी मुझे अर्जुन के पास जाते देखकर समझेंगे कि मैं आचार्य से डरकर भाग गया। महाबली सात्यकि बारम्बार इस तरह सोचकर धर्मराज से कहने लगे—हे नरनायक! अगर आप आत्मरक्षा के बारे में निश्चिन्त हो चुके हैं तो मैं आपकी आज्ञा से महाबाहु अर्जुन के पास जाता हूँ; आपका कल्याण हो। मैं सच कहता हूँ कि मुझे त्रिभुवन भर में महाबाहु अर्जुन से अधिक प्रिय कोई नहीं है। आपके हित के लिए मैं कुछ कसर नहीं रख सकता। अपने गुरुजन की आज्ञा की तरह आपकी आज्ञा का पालन करना मेरे लिए सर्वथा कर्तव्य है। आपके अन्य भाई, अर्जुन और श्रीकृष्ण, जिस तरह आपका प्रिय कार्य पूरा करने में तत्पर हैं उसी तरह मैं भी अर्जुन और श्रीकृष्ण का प्रिय करने में सावधान हूँ। इसलिए हे प्रभो! मैं आपकी आज्ञा मान करके महावीर अर्जुन के लिए, क्रुद्ध मत्स्य जैसे समुद्र में घुसकर उसको मथ डालता है वैसे ही, दुर्भेद्य द्रोणाचार्य की सेना को छिन्न-भिन्न करता हुआ उस स्थान को जाऊँगा जहाँ जयद्रथ अर्जुन के डर से विह्वल होकर अश्वत्थामा, कर्ण, कृपाचार्य आदि महारथियों के साथ असंख्य सेना के द्वारा सुरक्षित है। जयद्रथ-वध के लिए महावीर ११ अर्जुन जिस जगह पर हैं वह स्थान शायद यहाँ से तीन योजन के फ़ासले पर है। किन्तु मैं दावे के साथ कहता हूँ कि अर्जुन के तीन योजन दूर रहने पर भी उनके पास अवश्य जाऊँगा और उनके साथ जयद्रथ के मारे जाने के समय तक रहूँगा। राजन्! गुरुजन की आज्ञा बिना मिले कौन वीर पुरुष संग्राम में जायगा? और बड़ों की आज्ञा मिलने पर मुझ सरीखा कौन व्यक्ति संग्राम से विमुख होगा? महाराज! मुझको जिस जगह पर जाना होगा उसे मैं अच्छी तरह जानता हूँ। आज मैं असंख्य हल, शक्ति, गदा, प्रास, चर्म, खड्ग, ऋष्टि, तोमर आदि अस्त्र-शस्त्रों से परिपूर्ण इस अथाह सैन्य-सागर को मथ डालूँगा। ये जो रणप्रिय बहुत से म्लेच्छ वीरों से सुशोभित और जल बरसानेवाले मेघ के सदृश बड़े डील-डौल के हाथी महावतों के द्वारा सञ्चालित होकर आगे बढ़ रहे हैं, वे अब पीछे नहीं लौट सकेंगे। इनका संहार किये बिना मुझे जय नहीं मिल सकती। और, ये जो सुवर्ण-शोभित रथों पर विराजमान महावीर राजपुत्र दिखाई पड़ रहे हैं, ये सभी धनुर्वेदविशारद और रथ तथा हाथी की सवारी के युद्ध, अस्त्रयुद्ध, मुष्टियुद्ध, गदायुद्ध, मल्लयुद्ध तथा ढाल-तलवार के युद्ध में निपुण, शूर, कृतविद्य, २० परस्पर स्पर्धा रखकर समर में शत्रुओं को जीतनेवाले हैं। इन्हें रुक्मरथ कहते हैं। इन महा-

रथियों को कर्ण ने यहाँ पर व्यूहरक्षा के लिए नियुक्त कर रक्खा है। ये सब दुःशासन के अनुगत हैं। इनके पराक्रम की प्रशंसा श्रीकृष्ण भी करते हैं। ये कर्ण के वशवर्त्ती और उसका प्रिय करने में तत्पर हैं और कर्ण के ही कहने से अर्जुन से नहीं लड़े हैं। दृढ़ कवच और धनुष धारण किये हुए ये वीर, दुर्योधन की आज्ञा से, मुझे रोकने को खड़े हैं। ये कभी नहीं थकते। हे कुरुकुल-तिलक! मैं इस समय आपका हित करने के लिए इन वीरों को समर में मारकर अर्जुन के पास जाऊँगा। आप जो ये दिव्यभूषण-भूषित, कवचों से रक्षित, सात सौ हाथी देख रहे हैं, इन पर वीर दुर्द्धर्ष किरातगण बैठे हैं। पहले किरातों के राजा ने, अपने जीवन की रक्षा के लिए, महावीर अर्जुन को ये हाथी भेंट किये थे। ये सब पहले आपके ही कार्य में निरत रहते थे; किन्तु काल की गति कैसी विचित्र और अद्भुत है! इस समय ये आपके ही विरुद्ध युद्ध करने को तैयार हैं। इनके महावत और म्लेच्छ किरात योद्धा गजशिक्षा ३० में निपुण हैं। ये अग्नियोनि किरात पहले वीर अर्जुन से हारकर उनके अधीन हुए थे; किन्तु आज दुर्योधन के वशीभूत होकर आपके विरुद्ध मुझसे युद्ध करने को सामने खड़े हैं। मैं इस समय समर में दुर्द्धर्ष इन किरातों को अपने बाणों से मारकर अर्जुन के पास जाऊँगा।

महाराज! ये जो सुनहरे कवचों से सुरक्षित, वरुण के वाहन अञ्जन नामक दिग्गज के वंश में उत्पन्न, सुशिक्षित, कठिन शरीरवाले, ऐरावत-तुल्य मस्त गजराज दिखाई पड़ रहे हैं, इन पर उत्तरगिरि से आये हुए, बड़े कर्कश स्वभाव के, शूर दस्यु बैठे हैं। ये दस्यु गोयोनि, वानर-योनि, मनुष्ययोनि आदि अनेक योनियों से उत्पन्न हैं। इन हिमदुर्गनिवासी, पापाचारी म्लेच्छों के एकत्र होने से सेना का वह भाग धुएँ के रङ्ग का जान पड़ता है। महाराज! काल के द्वारा प्रेरित दुर्योधन इन राजाओं और योद्धाओं को तथा कृपाचार्य, भूरिश्रवा, महारथी द्रोण, सिन्धुराज जयद्रथ और कर्ण आदि को सहायक पाकर अपने को कृतार्थ समझता है और वीर ४० पाण्डवों को तुच्छ मानता है। किन्तु यदि ये वीर हवा के समान वेग से भागें तो भी इस समय मेरे नाराच बाणों के आगे से भागकर नहीं जा सकेंगे। पराये बल पर फूला न समानेवाला दुर्योधन सदा इन वीरों का सम्मान करता है; परन्तु आज ये सब अवश्य मेरे हाथ से मारे जायँगे। और, ये जो सुवर्णमण्डित ध्वजाओं से शोभित महारथी देख पड़ रहे हैं, ये काम्बोज देश के शूर योद्धा हैं। ये सभी कृतविद्य, धनुर्वेद की शिक्षा पाये हुए और रण-निपुण हैं। आपने इनके बल-विक्रम का वर्णन सुना ही होगा। ये एक दूसरे की सहायता और हित करने के लिए यहाँ आये हैं। ये सब योद्धा और कौरवों के द्वारा सुरक्षित दुर्योधन की कई अक्षौहिणी सेना कुपित होकर सावधानी के साथ मुझे रोकने के लिए खड़ी है। किन्तु आग जैसे फूस के ढेर को जला देती है वैसे ही मैं इन सबको मारूँगा। अतएव अब आप रथ सजानेवालों को शीघ्र आज्ञा दीजिए कि वे बाण-पूर्ण तरकस और अन्यान्य सब सामान मेरे रथ पर यथास्थान

रख दें। इस समर में बड़े-बड़े योद्धाओं का सामना करना पड़ेगा, इसलिए अनेक प्रकार के अस्त्र-शस्त्र ले जाना आवश्यक है। आचार्यों के उपदेश के अनुसार रथ पर पँचगुनी सामग्री रखनी चाहिए। विषैले साँप के समान वीर काम्बोज देश के योद्धा, अनेक अस्त्र-शस्त्र धारण किये अत्यन्त उग्र विष-तुल्य किरातगण, सदा दुर्योधन के द्वारा प्रतिपालित-सम्मानित और उनके हितचिन्तक पराक्रमी शक लोग तथा प्रज्वलित अग्नि के समान दुर्द्धर्ष दुर्जय कालतुल्य युद्धदुर्मद अन्यान्य अनेक देशों के असंख्य योद्धा मुझसे लड़ने को खड़े हैं। इस समय युद्धभूमि में मुझे उन सबसे भिड़ना होगा। रथ सजानेवाले नौकरों को आज्ञा दीजिए कि वे सम्पूर्ण सुलक्षणों से युक्त अच्छी नस्ल के प्रसिद्ध घोड़ों को पानी पिलाकर टहलाकर फिर मेरे रथ में जोतें। ५०

सञ्जय कहते हैं—महाराज! सात्यकि के यों कह चुकने पर युधिष्ठिर ने रथ सजाने-वाले नौकरों को आज्ञा दी कि वे चटपट तरकस, विविध शस्त्र-अस्त्र और अन्य सब सामग्री यथास्थान रखकर उनका रथ तैयार कर दें। तब उन लोगों ने सात्यकि के रथ में जुते हुए चारों घोड़ों को खोलकर मस्त करनेवाली मदिरा पिलाई, नहलाया, टहलाया, मला और उनके अङ्गों में लगे हुए शल्य निकाले। इसी समय सात्यकि के प्रिय सखा सारथी दारुक के छोटे भाई ने उन प्रसन्नचित्त, सुनहरे रङ्ग के, सुवर्ण की मालाओं से अलङ्कृत, बढ़िया घोड़ों को सात्यकि के रथ में जोता। वह रथ मणि-मोती-मूँगा आदि रत्नों और सफ़ेद पताकाओं से शोभित, ऊँचे छत्र के दण्ड से युक्त, सिंहचिह्नयुक्त ध्वजा और अन्यान्य बहुमूल्य सुवर्ण की सामग्री से अलङ्कृत था। उस रथ को सामने लाकर, इन्द्र से मातलि सारथी की तरह, उस सारथी ने सात्यकि से कहा—हे नरश्रेष्ठ! रथ तैयार है। तब श्रीमान् सात्यकि नहा-धोकर पवित्र हुए। उन्होंने उस समय हज़ार स्नातक ब्राह्मणों को सोने की मुद्राएँ दान कीं। ब्राह्मण लोग उन्हें ६०

आशीर्वाद देने लगे। अब किरात देश की तीव्र मदिरा पीने से श्रेष्ठ महारथी सात्यकि के नेत्र लाल हो गये। फिर उन्होंने प्रसन्नचित्त होकर, दर्पण देखकर, धनुष-बाण धारण किया। उनका

तेज दूना हो उठा; वे प्रज्वलित प्रचण्ड अग्नि के समान जान पड़ने लगे। ब्राह्मण लोग स्वस्त्ययन-पाठ करने लगे। तब कवच और आभूषणों से अलङ्कृत सात्यकि का कन्याओं ने अक्षत, चन्दन, माला आदि से अभिनन्दन किया। सात्यकि ने हाथ जोड़कर राजा युधिष्ठिर के पैर छुए। धर्मराज ने स्नेहपूर्वक उनका मस्तक सूँघा। अब सात्यकि अपने श्रेष्ठ रथ पर सवार हुए। हृष्ट-पुष्ट, तेज़, सिन्धु देश के बढ़िया घोड़े उन्हें लेकर चले। धर्मराज को प्रणाम करके और उनसे आशीर्वाद पाकर महाबली भीमसेन भी सात्यकि के साथ चले। राजन् ! उस समय द्रोणाचार्य आदि कौरवपक्ष के वीर योद्धा लोग उन दोनों वीरों को सेना के भीतर घुसते देखकर, सावधान होकर, अपने-अपने स्थान पर डट गये।

उधर कवचधारी वीर भीमसेन को अपने साथ आते देखकर, प्रणाम करके, महावीर ७० सात्यकि ने प्रसन्नतापूर्वक कहा—हे वीरवर! मेरी समझ में इस समय आपको महाराज युधिष्ठिर की ही रक्षा करनी चाहिए। मैं अकेला ही इस कौरव-सेना को छिन्न-भिन्न करके इसके भीतर जाऊँगा। आप तो मेरे पराक्रम को अच्छी तरह जानते हैं। इसलिए अगर आप मेरा प्रिय और हित करना चाहते हैं तो धर्मराज के पास जाकर उनकी रक्षा कीजिए। वर्तमान और भविष्य को देखते हुए राजा की रक्षा करना ही आपका कर्तव्य है।

यह सुनकर महावीर भीमसेन ने कहा—हे पुरुषश्रेष्ठ ! तुमने जो कहा वही मैं करूँगा। अब तुम झटपट अर्जुन के पास जाओ। तुम्हारा कार्य सिद्ध हो। तब सात्यकि ने कहा—हे भीमसेन ! आप धर्मराज की रक्षा के लिए तुरन्त जाइए। आप मेरे स्नेही, अनुरक्त और वशवर्ती हैं; इधर सब तरह के सुलक्षण और सगुन देख पड़ते हैं। इससे जान पड़ता है कि मुझे युद्ध में जय प्राप्त होगी। हे भीमसेन ! महात्मा अर्जुन के हाथ से पापी जयद्रथ की मृत्यु हो जाने पर मैं लौटकर फिर महाराज युधिष्ठिर के गले लगूँगा।

महावीर सात्यकि अब भीमसेन को बिदा करके, बाघ जैसे मृगों के झुण्ड की ओर ताकता है वैसे ही, कौरव-सेना की ओर देखने लगे। उनको प्रवेश करते देखकर कौरवों की सेना काँप उठी। सबके होश-हवास जाते रहे। सात्यकि भी धर्मराज की आज्ञा से अर्जुन ८० की ख़बर लाने के लिए कौरव-सेना के भीतर घुस गये।

एक सौ तेरह अध्याय

सात्यकि के साथ कृतवर्मा का युद्ध

सञ्जय कहते हैं—हे नरनाथ ! महारथी सात्यकि इस तरह हमारी सेना के सामने लड़ने को आये। उनके पीछे राजा युधिष्ठिर भी बहुत सी सेना साथ लेकर द्रोणाचार्य के रथ

के सामने चले। उस समय युद्धप्रिय दुर्द्धर्ष पाञ्चालराज द्रुपद के पुत्र और राजा वसुदान पाण्डव-सेना के बीच चिल्ला-चिल्लाकर कहने लगे—जल्द आओ, आगे बढ़ो, मारो-काटो, जिसमें प्रतापी सात्यकि सहज ही शत्रु-सेना के भीतर जा सकें। देखो, अनेक महारथी योद्धा उन्हें जीतने का यत्न करेंगे। यों कहते हुए पाण्डवपक्ष के महारथियों ने कौरव-सेना पर हमला किया। उधर से विजय की इच्छा रखनेवाले कौरवदल के योद्धा भी प्रत्याक्रमण करने लगे। सात्यकि के रथ के पास बड़ा कोलाहल होने लगा। दुर्योधन के सैनिक चारों ओर से सात्यकि पर टूट पड़े। महावीर सात्यकि ने पल भर में ही उन सबको बाण मारकर छिन्न-भिन्न कर दिया। उन्होंने सामने स्थित सात प्रसिद्ध धनुर्द्धर योद्धाओं को और अन्य अनेक राजाओं को मार गिराया। वे कभी एक बाण से सौ आदमियों को और कभी सौ बाणों से एक ही व्यक्ति को मारते थे। महारुद्र जैसे प्रलयकाल में प्राणियों का संहार करते हैं वैसे ही वे हाथियों, हाथियों के सवारों, घोड़ों और उनके सवारों, रथों और उनके सवारों को फुर्ती के साथ मारकर नष्ट करने लगे। उस समय कौरवपक्ष का कोई वीर उन बाण-वर्षा करनेवाले सात्यकि के सामने ठहरना कैसा, जा ही नहीं सकता था। सात्यकि के बाणों से विमर्दित, विमोहित और विह्वल होकर वे चारों ओर भागने लगे। उन्हें चारों ओर सात्यकि ही नज़र आते थे। टूटे-फूटे रथ, रथों के पहिये, छत्र, ध्वजा, अनुकर्ष, पताका, सुवर्णमय शिरस्त्राण, हाथी की सूँड़ के समान अङ्गदयुक्त चन्दन-चर्चित कटे हुए हाथ और साँप के आकार की जाँघें, कुण्डलमण्डित चन्द्र-सदृश सिर आदि अङ्ग समरभूमि में पड़े थे। पहाड़ ऐसे बड़े-बड़े हाथी पृथ्वी पर गिरने लगे, जिनसे वह समरभूमि पर्वतों से परिपूर्ण सी जान पड़ने लगी। मोतियों की माला, सोने के जोत और विचित्र आकार के कवच-जाल आदि से भूषित घोड़े सात्यकि के बाणों से मथित होकर, पृथ्वी पर गिर-गिरकर, एक अपूर्व शोभा को प्राप्त हुए। १०

महाराज! महावीर सात्यकि इस तरह आपकी सेना को मारते, गिराते और भगाते हुए उसके भीतर घुसे और जिस राह से अर्जुन गये थे उसी राह से जाने को उद्यत हुए। द्रोणाचार्य उनको रोकने लगे। यह देखकर महावीर सात्यकि लौटे नहीं; बल्कि यत्नपूर्वक द्रोणाचार्य के साथ अत्यन्त घोर संग्राम करने लगे और उमड़ा हुआ सागर जैसे तटभूमि को तोड़ने की चेष्टा करे वैसे द्रोण को हटाने का यत्न करने लगे। महावीर द्रोणाचार्य ने सात्यकि को मर्मभेदी अत्यन्त तीक्ष्ण पाँच बाण मारे। सात्यकि ने भी कङ्कपत्र-शोभित, शिला पर घिसकर तीक्ष्ण किये गये, सुवर्णपुङ्खयुक्त सात बाण आचार्य को मारे। आचार्य ने छः बाण मारकर उन्हें और उनके सारथी को पीड़ित किया। सात्यकि भी आचार्य के पराक्रम को न सह सकने के कारण क्रुद्ध होकर क्रमशः दस, छः और आठ बाणों से उन्हें घायल करके सिंहनाद करने लगे। फिर और दस बाण मारकर उनके घोड़ों को चार बाण मारे, ध्वजा में एक बाण और सारथी को एक २०

बाण मारा। तब महावीर द्रोणाचार्य ने एकदम टीड़ीदल के समान असंख्य बाणों से सात्यकि के रथ, घोड़े, ध्वजा और सारथी को ढक दिया। अब सात्यकि ने भी आचार्य को बहुत से बाण मारे। द्रोणाचार्य ने हँसकर सात्यकि से कहा—हे शिनिनन्दन! तुम्हारे गुरु अर्जुन आज ३० मुझसे युद्ध करते-करते कायर की तरह युद्ध छोड़कर चले गये हैं, वैसे ही अगर तुम भी मुझसे लड़ते-लड़ते भाग न गये तो मेरे आगे से जीते बचकर न जा सकोगे। सात्यकि ने कहा—ब्रह्मन्! आपका कल्याण हो। मैं धर्मराज की आज्ञा से अर्जुन के पास, उन्हीं की राह से, जाना चाहता हूँ। मैं अधिक विलम्ब नहीं कर सकता। गुरु जिस मार्ग पर चलते हैं उसी मार्ग पर शिष्य भी चला करते हैं। इसलिए मैं उसी राह से जाता हूँ, जिससे मेरे गुरु गये हैं। सञ्जय कहते हैं—राजन्! सात्यकि इतना कहकर द्रोणाचार्य को छोड़ उनके दक्षिण ओर से अकस्मात् अपना रथ निकाल ले गये। उन्होंने जाते समय सारथी से कहा—हे सारथी! आचार्य मुझे रोकने के लिए कुछ उठा न रक्खेंगे, इसलिए तुम सावधानी से निकल चलो। और यह जो अवन्ति-देश की प्रभावशालिनी अगम्य सेना देख पड़ रही है, इसके बाद दाक्षिणात्य शूरों की अपार सेना है; उसके पास ही वाह्लीक देश के योद्धाओं का भारी जमघट है। इन सेनाओं के समीप ही कर्ण की सेना देख पड़ती है। ये सब सेनाएँ भिन्न-भिन्न होने पर भी एक दूसरे की रक्षा कर रही हैं। ये जो प्रहार करने के लिए उद्यत वाह्लीकगण, दाक्षिणात्यगण, सूत-पुत्र कर्ण और अनेक देशों की पैदल और चतुरङ्गिणी सेना ४२ का दल देख पड़ता है इसके भीतर होकर तुम मेरा रथ ले चलो, आचार्य को छोड़ दो।

महावीर सात्यकि ने जब यह आज्ञा दी तब सारथी ने उसी दम वेग से रथ हाँक दिया। द्रोणाचार्य क्रोधविह्वल होकर बेधड़क जानेवाले सात्यकि के ऊपर असंख्य बाण बरसाते हुए उनके पीछे चले। अपने तीक्ष्ण बाणों से कर्ण की सेना को नष्ट-भ्रष्ट करके महावीर सात्यकि कौरव-सेना के भीतर जा घुसे। सात्यकि जब सेना के भीतर घुस गये और सेना तितर-बितर हो गई

तब असहनशील वीर कृतवर्मा उन्हें रोकने का यत्न करने लगे। महावीर सात्यकि ने कृतवर्मा को आते देखकर छः बाण मारे। चार बाणों से उनके चारों घोड़ों को भी मार गिराया, साथ ही अत्यन्त तीक्ष्ण सोलह बाण उनकी छाती में मारे। इस तरह सात्यकि के तीक्ष्ण बाणों से पीड़ित होने पर भी कृतवर्मा विह्वल नहीं हुए। उन्होंने उसी समय वायु के समान वेग से जानेवाला साँप-सदृश वत्सदन्त बाण कान तक तानकर सात्यकि की छाती में मारा। वह बाण सात्यकि के कवच और शरीर को भेदकर रक्त में भीगकर पृथ्वी में घुस गया। अस्त्रविद्या में निपुण कृतवर्मा ने अनेक बाणों से सात्यकि का धनुष काट डाला और फिर उनकी छाती में तीक्ष्ण दस बाण मारे। धनुष कटने पर सात्यकि ने एक शक्ति उठाकर कृतवर्मा के दाहने हाथ में मारी और फिर दूसरा धनुष लेकर उनके ऊपर हज़ारों बाण बरसाकर रथ सहित उन्हें अदृश्य कर दिया। राजन्! इस तरह कृतवर्मा को बाणों से व्याप्त करके उन्होंने एक भल्ल बाण से उनके सारथी का सिर काट डाला। उसके मर जाने पर, बिना सारथी के, घोड़े इधर-उधर रथ को लिये भागने लगे। भोजराज कृतवर्मा ने जल्दी से ख़ुद घोड़ों को सँभाला। धनुष हाथ में लिये हुए वे अपनी सेना को युद्ध के लिए उत्साहित करने लगे। दम भर में घोड़ों को सँभालकर वे फिर अपने घोर युद्ध से शत्रुओं के भय को बढ़ाने लगे। कृतवर्मा की सेना पर सात्यकि बड़े वेग से टूट पड़े। उस सेना के भीतर से निकलकर वे फुर्ती के साथ काम्बोज-सेना के भीतर जा घुसे। वहाँ महाबली वीरों ने उनको घेर लिया, उनके रथ की गति रुक गई; परन्तु वे तनिक भी विचलित नहीं हुए। इधर द्रोणाचार्य भी कृतवर्मा को अपनी सेना की रक्षा का काम सौंपकर सात्यकि से लड़ने के लिए आगे बढ़े। इस प्रकार द्रोणाचार्य को सात्यकि का पीछा करते देखकर पाण्डवों की सेना के योद्धा उन्हें रोकने का उद्योग करने लगे। भीमसेन और पाञ्चालगण कृतवर्मा के पास पहुँचकर उत्साहहीन हो गये। कृतवर्मा ने अपने पराक्रम से उन भीतर घुसने का यत्न करनेवाले पाञ्चालदेश के योद्धाओं को रोक दिया। वे अचेत-से हो गये और उनके वाहन भी थक गये। कृतवर्मा ने उस समय असंख्य बाण बरसाकर अपना अद्भुत रणकौशल दिखलाया। भीमसेन के बाहुबल से रक्षित पाञ्चालगण प्रधान रथी कृतवर्मा के पास जाकर आगे नहीं बढ़ सके। कृतवर्मा ने उन युद्ध की इच्छा से आगे बढ़नेवाले वीरों को बाणों से पीड़ित कर दिया; किन्तु वे सब वीर कृतवर्मा के बाणों से जर्जर हो जाने पर भी, यश पाने के लिए, सामने ही डटे रहे। वे लोग कृतवर्मा की सेना को परास्त करने के लिए अत्यन्त यत्न करने लगे।

५०

६०

६७

— —

हे सञ्जय ! श्रीकृष्ण सहित अर्जुन और सात्यकि को कौरव-सेना के भीतर घुसते सुनकर मैं घबरा रहा हूँ। महावीर सात्यकि जब कृतवर्मा की सेना को छिन्न-भिन्न करके कौरव-सेना के भीतर गये तब मेरी सेना के वीरों ने क्या किया ? द्रोणाचार्य के बाणों से पाण्डवों के अत्यन्त पीड़ित होने पर किस तरह युद्ध हुआ ? यह सब विस्तार के साथ मुझसे कहो। महावीर द्रोणाचार्य प्रधान बली, अस्त्रविद्या में निपुण, युद्धकला के आचार्य और परम पराक्रमी हैं। पाञ्चालों ने उनसे किस तरह युद्ध किया ? द्रोणाचार्य से पाञ्चालों का पुराना वैर है; वे सब तरह से अर्जुन की जय चाहते हैं। महारथी द्रोणाचार्य भी पाञ्चालों को अपना वैरी मानते हैं। हे सञ्जय ! अर्जुन ने जयद्रथ को मारने के लिए क्या किया ? तुम सब हाल अच्छी तरह जानते हो। इसलिए सब वृत्तान्त कहो।

सञ्जय ने कहा—राजन् ! आपके ही दोष से यह दारुण दुःख उपस्थित हुआ है। इस समय साधारण मनुष्य की तरह शोक करना आपके लिए उचित नहीं। अनुभवी विदुर आदि मित्रों ने पहले आपको मना किया था कि आप पाण्डवों को न निकालिए; किन्तु आपने उनकी बातों पर ध्यान नहीं दिया। जो मनुष्य हितैषियों की बातों पर ध्यान नहीं देता उसे आपकी ही तरह विपत्ति में फँसकर व्याकुल होना पड़ता है। पहले भी महात्मा वासुदेव मेल कराने के लिए आपके पास प्रार्थना करने आये थे; किन्तु आपने उनकी वह प्रार्थना नहीं पूरी ५० की। उन्होंने जब देखा कि आप निकम्मे हैं, पुत्रों का पक्ष लेते हैं, धर्म का ख़याल न करके दुरङ्गी बातें करते हैं और पाण्डवों के प्रति द्वेष तथा वक्रभाव आपके हृदय में है, तभी निराश होकर उन्होंने कौरवों को भस्म करनेवाली समर की आग जलाई है। महाराज ! आपके दोष से ही यह युद्ध छिड़ा है, जिसमें असंख्य प्राणियों का संहार हो रहा है। अब इसके लिए दुर्योधन को दोषी ठहराना उचित नहीं। पहले, बीच में या अन्त में कभी आपका कोई सत्कार्य नहीं देख पड़ता। वास्तव में देखा जाय तो आप ही इस घोर पराजय के मूल कारण हैं। इस-लिए इस समय स्थिर होकर, इस लोक की अनित्यता का विचार करके, इस देवासुर-युद्ध के समान अत्यन्त घोर युद्ध का वृत्तान्त ब्योरेवार सुनिए।

सत्यपराक्रमी सात्यकि जब सेना के भीतर घुस गये तब भीमसेन को आगे किये हुए पाण्डव लोग भी आपकी सेना के अगले भाग में घुसने लगे। उस समय महारथी कृतवर्मा अकेले ही क्रोधपूर्ण अनुचरों समेत पाण्डवों को, एकाएक आते देखकर, रोकने लगे। जैसे तटभूमि उमड़े हुए समुद्र को रोक रखती है वैसे ही महावीर कृतवर्मा ने पाण्डवसेना को आगे बढ़ने से रोक दिया। पाण्डवदल मिलकर भी उन्हें हटा नहीं सका। कृतवर्मा का यह पराक्रम देखकर ६० सबको बड़ा आश्चर्य हुआ। इसी बीच में भीमसेन ने कृतवर्मा को तीन बाणों से घायल करके पाण्डवों को प्रसन्न करनेवाला शङ्ख बजाया। तब सहदेव ने बीस, युधिष्ठिर ने पाँच, नकुल ने सौ,

भीमसेन ने सुवर्णदण्ड-शोभित लोहे की बनी.........उठाकर रथ के ऊपर फेंका।—पृ० २४२३

द्रौपदी के पाँचों पुत्रों ने तिहत्तर, घटोत्कच ने सात और धृष्टद्युम्न ने तीन बाण मारकर एक साथ कृतवर्मा को पीड़ित किया। इसके बाद राजा द्रुपद और विराट ने कृतवर्मा को पाँच-पाँच बाण मारे। शिखण्डी ने पहले पाँच बाण मारकर फिर हँसते-हँसते बीस बाण और मारे। महावीर कृतवर्मा ने हर एक को पाँच बाण मारकर भीमसेन को सात बाण मारे और उनका धनुष तथा ध्वजा काट डाली। फिर उन्होंने अत्यन्त कुपित होकर फुर्ती के साथ भीमसेन की छाती में तीक्ष्ण सत्तर बाण मारे। धनुष कट जाने के कारण भीमसेन कुछ न कर सके। कृतवर्मा के बाण लगने से महावीर भीमसेन भूकम्प के समय भारी पर्वत के समान काँप उठे। युधिष्ठिर आदि सब वीर योद्धा लोग भीमसेन की वह दशा देखकर, उनकी रक्षा के लिए, रथों द्वारा चारों ओर से कृतवर्मा को घेरकर तीक्ष्ण बाणों से पीड़ित करने लगे। ७०

उधर महापराक्रमी भीमसेन ने होश में आकर, सुवर्णदण्ड-शोभित लोहे की बनी शक्ति उठाकर, उसी समय कृतवर्मा के रथ के ऊपर फेंकी। केंचुल से निकले हुए साँप के समान भयानक वह भीम की भुजाओं से छूटी हुई उग्र शक्ति कृतवर्मा के आगे प्रज्वलित हो उठी। महावीर कृतवर्मा ने दो बाणों से उस प्रलयकाल की आग के समान, सुवर्णभूषित, शक्ति के दो टुकड़े कर दिये। उस समय कृतवर्मा के बाणों से कटी हुई वह शक्ति आकाशमण्डल से गिरी हुई उल्का के समान चारों ओर प्रकाश फैलाती हुई गिर पड़ी। अपनी शक्ति को निष्फल होते देखकर पराक्रमी भीमसेन बहुत ही कुपित हो उठे। उन्होंने दूसरा धनुष लेकर कृतवर्मा को रोकने के लिए उनकी छाती में पाँच बाण मारे। भीमसेन के बाणों से भोजराज कृतवर्मा के अङ्ग कट-फट गये और रक्त बहने लगा, जिससे वे लाल अशोक के फूल के समान शोभायमान हुए। क्रोध के मारे विकट हँसी हँसकर कृतवर्मा फिर युद्ध करने लगे। उन्होंने भीमसेन को तीन बाणों से घायल किया। साथ ही, रोकने के लिए चेष्टा करनेवाले, अन्य महारथियों को भी तीन-तीन बाण मारे। उन्होंने भी कृतवर्मा को सात-सात बाण मारे। महावीर कृतवर्मा ने क्रोध और अवज्ञा की हँसी हँसकर एक क्षुरप्र बाण से शिखण्डी का धनुष काट डाला। महावीर शिखण्डी ने अत्यन्त क्रुद्ध होकर खड्ग और सुवर्णालङ्कृत प्रकाशमान ढाल हाथ में ली। उन्होंने ढाल घुमाते हुए आगे बढ़कर कृतवर्मा के रथ पर खड्ग का वार किया। वह भयानक खड्ग लगने से कृतवर्मा का धनुष और बाण दोनों कट गये। आकाश से गिरे हुए तारे के समान वह खड्ग पृथ्वी पर गिर पड़ा। इसी अवसर में सब महारथी लोग तीक्ष्ण बाणों से कृतवर्मा पर गहरे वार करने लगे। ८०

महावीर कृतवर्मा ने वह कटा हुआ धनुष फेंककर दूसरा धनुष हाथ में लिया। उन्होंने तीन-तीन बाणों से पाण्डवों को और आठ बाणों से शिखण्डी को पीड़ित किया। महावीर शिखण्डी भी कृतवर्मा के बाणों से घायल होकर अत्यन्त कुपित हो उठे और उसी घड़ी दूसरा

धनुष लेकर कूर्म-नख बाणों के प्रहार से कृतवर्मा को पीड़ित करने लगे। यह देखकर वे अत्यन्त क्रुद्ध हुए। बाघ जैसे हाथी पर झपटता है वैसे ही कृतवर्मा भी महात्मा भीष्म को
९० गिरानेवाले महावीर शिखण्डी के प्रति बल दिखाते हुए वेग से दौड़े। दिग्गज-सदृश और प्रज्व-लित अग्नितुल्य वे दोनों वीर एक दूसरे के ऊपर अनन्त बाण बरसाने लगे। वे कभी धनुष बजाते, कभी बाण चढ़ाते और कभी सूर्यकिरण-सदृश असंख्य बाण चलाते थे। प्रलयकाल में प्रकट प्रचण्ड सूर्य के समान वे दोनों वीर इस तरह एक दूसरे को तीक्ष्ण बाणों से पीड़ित करने लगे। महावीर कृतवर्मा ने महाबाहु शिखण्डी को पहले तिहत्तर और फिर सात बाण मारे। कृतवर्मा के बाणों की गहरी चोट से शिखण्डी बहुत ही व्यथित हुए। उनके हाथ से धनुष-बाण छूट पड़ा और वे अचेत-से होकर रथ पर बैठ गये। उनको इस तरह पीड़ित देखकर कौरव-पक्ष के वीर कृतवर्मा की प्रशंसा करने और कपड़े हिलाकर आनन्द प्रकट करने लगे। शिखण्डी का सारथी अपने स्वामी की हालत बुरी देखकर उसी घड़ी समरभूमि से रथ को हटा ले गया।
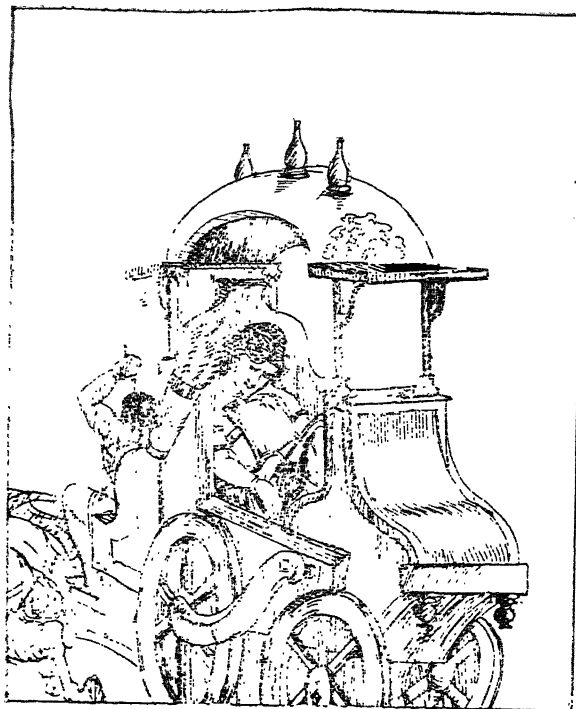
राजन्! पाण्डवों ने शिखण्डी को अत्यन्त पीड़ित और शिथिल देख-कर फुर्ती के साथ अनेक रथों के द्वारा चारों ओर से कृतवर्मा को घेर लिया। महावीर कृतवर्मा अकेले होने पर भी अद्भुत बल प्रकट करके पाण्डवों को और उनके साथी योद्धाओं को रोकने लगे। इसके बाद उन्हें हराकर चेदि, पाञ्चाल, सृञ्जय और केकयदेश के
१०० वीरों को जीत लिया। पाण्डवपक्ष के लोग कृतवर्मा के बाणों से अत्यन्त पीड़ित होकर इधर-उधर भागने लगे; वे किसी तरह जम-कर संग्राम न कर सके। भीमसेन आदि पाण्डवों और पाञ्चालों को परास्त करके महावीर कृतवर्मा धूमहीन प्रचण्ड आग के समान शोभायमान हुए। महाराज! इस तरह कृतवर्मा के
१०३ बाणों से अत्यन्त पीड़ित होकर पाण्डव-पक्ष के वीर युद्ध छोड़कर इधर-उधर भागने लगे।

———

एक सौ पन्द्रह अध्याय

जलसन्ध का मारा जाना

सञ्जय कहते हैं—महाराज! आपने जो हाल मुझसे पूछा था उसे एकाग्र होकर सुनिए। पाण्डवों की सेना जब यादवश्रेष्ठ कृतवर्मा के बाणों से पीड़ित होकर भाग खड़ी हुई और लज्जा के मारे वीरों के सिर झुक गये तब कौरवों को असीम आनन्द हुआ। अगाध सैन्यसागर में आश्रय पाने के लिए लालायित पाण्डवों को, टापू की तरह, उबारनेवाले महाबाहु सात्यकि ने कौरवों का भयङ्कर सिंहनाद सुनकर उसी समय कृतवर्मा पर आक्रमण किया। सात्यकि ने क्रुद्ध होकर सारथी से कहा—हे सूत, मेरे रथ को कृतवर्मा के पास ले चलो। वह क्रोध करके पाण्डवों की सेना का संहार कर रहा है। उसे जीतकर फिर अर्जुन के पास चलेंगे।

अब सारथी पल भर में रथ को कृतवर्मा के पास ले गया। महारथी कृतवर्मा भी सात्यकि के ऊपर असंख्य तीक्ष्ण बाण बरसाने लगे। सात्यकि ने अत्यन्त क्रुद्ध होकर चार बाणों से उनके चारों घोड़े मार डाले, एक तीक्ष्ण भल्ल बाण से धनुष काट डाला और उनके पृष्ठरक्षक तथा सारथी आदि को अनेक बाण मारे। महावीर सात्यकि ने कृतवर्मा को रथ-हीन करके तीक्ष्ण बाणों से उनकी सेना को नष्ट-भ्रष्ट करना शुरू कर दिया। सात्यकि के बाणों से पीड़ित होकर कृतवर्मा के सैनिक तितर-बितर होने लगे। महापराक्रमी सात्यकि अब वहाँ से चल दिये। राजन्! इसके बाद महावीर सात्यकि ने जो कुछ किया, सो सब आपसे कहता हूँ, सुनिए। वे द्रोणाचार्य की सेना को लाँघकर और कृतवर्मा को परास्त करके प्रसन्नतापूर्वक अपने सारथी से

१०
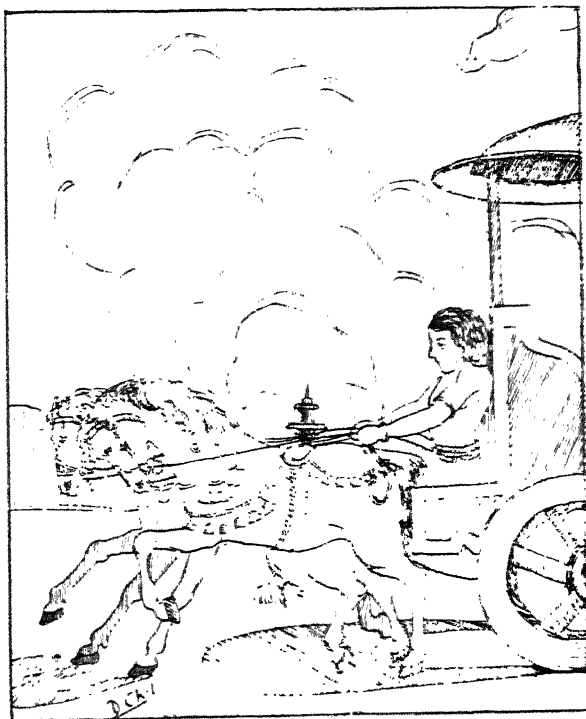
बोले—हे सूत! तुम निर्भय होकर धीरे-धीरे रथ हाँको। अब महाबाहु सात्यकि ने असंख्य रथ, हाथी, घोड़े, पैदल आदि से परिपूर्ण कौरवों की चतुरङ्गिणी सेना की ओर नज़र डालकर

कहा—हे सारथी ! यह जो आचार्य की सेना के बाँयें भाग में सुवर्णमय ध्वजाओं से भूषित महामेघतुल्य हाथियों पर सवार योद्धाओं की सेना दिखाई पड़ रही है, उसमें त्रिगर्तदेश के राजपुत्र, महापराक्रमी विचित्र योद्धा और महारथी लोग हैं। उन्हें हराना सहज काम नहीं है। ये लोग अपने प्रधान रुक्मरथ को आगे करके, दुर्योधन की आज्ञा के अनुसार, मुझसे प्राणपण से युद्ध करने को खड़े हैं। इसलिए तुम तुरन्त उनके आगे मेरा रथ ले चलो। मैं द्रोणाचार्य के सामने ही उन लोगों से युद्ध करूँगा।

अब सारथी ने सात्यकि की आज्ञा से धीरे-धीरे घोड़ों को उसी ओर हाँका। कुन्द-पुष्प, चन्द्रमा और चाँदी के समान सफ़ेद, वायुवेगगामी, सारथी के वशवर्ती, हिनहिना रहे वे २० घोड़े सात्यकि के रथ को ले चले। उस चमकीले रथ पर पताका फहरा रही थी। उस समय शत्रुपक्ष के फुर्तीले, लघुवेधी, महारथी योद्धा उन्हें आते देखकर अनेक प्रकार के तीक्ष्ण बाण बरसाते हुए आगे बढ़े। उन्होंने हाथियों के घेरे में सात्यकि को घेर लिया। वर्षा ऋतु आने पर प्रचण्ड मेघ जैसे पहाड़ पर पानी बरसाते हैं वैसे ही महापराक्रमी सात्यकि उस गज-सेना पर बाण बरसाने लगे। सात्यकि के चलाये हुए, वज्र के समान स्पर्शवाले, बाणों की चोट से पीड़ित होकर वे हाथी रणभूमि में इधर-उधर भागने लगे। किसी के दाँत टूट गये, किसी का मस्तक फट गया और उनके शरीर रक्त से नहा गये। किसी के कान कट गये, किसी की सूँड़ कट गई, किसी का महावत मारा गया, किसी की पताकाएँ कटकर गिर पड़ीं, किसी का चमड़ा छिन्न-भिन्न हो गया, किसी का घण्टा चूर्ण हो गया, किसी के ऊपर की ध्वजा का डण्डा टुकड़े-टुकड़े हो गया, किसी के ऊपर का योद्धा मर गया और किसी के हौदे से बहुमूल्य कम्बल गिर पड़ा। इस प्रकार मेघ की तरह गरजनेवाले हाथियों के झुण्ड सात्यकि के नाराच, वत्सदन्त, भल्ल, अञ्जलिक, क्षुरप्र और अर्धचन्द्र आदि बाणों से नष्ट होने लगे। उनके शरीर कटने-फटने लगे और वे आर्तस्वर से चिल्लाने, मल-मूत्र त्यागने और घबराकर चारों ओर भागने लगे। उनके शरीरों से रक्त के फुहारे छूट रहे थे। उनमें से कुछ इधर-उधर घूमने लगे, कुछ लड़खड़ाकर गिर पड़े, कुछ बाणों की चोट से विह्वल होकर गिर पड़े और कुछ अधमरे-से हो गये।

राजन् ! उस गज-सेना के इस तरह नष्ट होने पर महाबलशाली राजा जलसन्ध बड़े यत्न ३० से आगे बढ़कर सात्यकि के सामने अपना हाथी ले आये। वे सोने के कर्णाभरण और सुवर्ण-मणिमय अङ्गद आदि आभूषण पहने हुए थे। किरीट तथा कुण्डल पहने, लाल चन्दन लगाये वे महावीर मस्तक में सुवर्ण की माला और वक्षःस्थल में निष्क तथा कण्ठसूत्र आदि आभूषण धारण किये थे और हाथी पर सवार थे। उस समय महाधनुष बजाते हुए राजा जलसन्ध बिजली से युक्त बादल के समान शोभायमान होने लगे। उनके गजराज को एकाएक अपनी ओर आते देखकर सात्यकि ने झटपट उस हाथी को इस तरह रोका जैसे तटभूमि उमड़े हुए समुद्र

को रोकती है। महावीर जलसन्ध ने सात्यकि की बाण-वर्षा से विह्वल हाथी को भागते देखकर अत्यन्त क्रुद्ध हो तीक्ष्ण बाणों से उनको घायल करना शुरू किया। सात्यकि की छाती में कई बाण मारकर हँसते-हँसते उन्होंने एक भल्ल बाण से सात्यकि का धनुष काट डाला और पाँच बाण फिर मारे। जलसन्ध के बाण लगने से सात्यकि तनिक भी विचलित नहीं हुए। यह देखकर सबको बड़ा आश्चर्य हुआ। महावीर सात्यकि ने स्थिर चित्त से सोचा कि कौन और कैसा बाण जलसन्ध पर छोड़ना चाहिए। अपना कर्तव्य निश्चित करके अन्य धनुष लेकर "ठहर जा, ठहर जा!" कहते और हँसते हुए सात्यकि ने जलसन्ध की छाती में साठ बाण मारे, एक तीक्ष्ण क्षुरप्र बाण से उनके धनुष की मूठ काट डाली और फिर तीन बाण उनको ताककर मारे। ४०

महावीर जलसन्ध ने धनुष-बाण छोड़कर उस घड़ी सात्यकि के ऊपर एक तीक्ष्ण तोमर फेंका। जलसन्ध का चलाया हुआ वह तोमर सात्यकि के बायें बाहु को भेदकर फुफकारते हुए नाग के समान पृथ्वी में घुस गया। इस तरह उनके प्रहार से हाथ घायल होने पर भी सात्यकि विचलित नहीं हुए। उन्होंने जलसन्ध को तीस बाण मारे। अब खड्ग और शतचन्द्र-शोभित वृषचर्म की ढाल घुमाते हुए महाप्रतापी जलसन्ध झपटे। उन्होंने वह खड्ग सात्यकि पर चलाया। उस खड्ग के प्रहार से सात्यकि का धनुष कट गया और वह खड्ग भी पृथ्वी पर गिरकर अङ्गारचक्र के समान शोभा को प्राप्त हुआ। यह देखकर महाबली सात्यकि के क्रोध का ठिकाना न रहा। उन्होंने तुरन्त साखू की शाखा के समान बड़ा और वज्र की तरह घोर शब्द करने-वाला दूसरा धनुष लेकर जलसन्ध को बाण मारा और हँसते-हँसते दो तीक्ष्ण क्षुरप्र बाणों से उनके दोनों हाथ काट डाले। जलसन्ध के, बेलन के समान मोटे, दोनों हाथ पहाड़ से गिरे हुए पाँच-पाँच सिरोंवाले दो विषैले नागों की तरह हाथी की पीठ पर से नीचे गिर पड़े। इसके बाद पराक्रमी सात्यकि ने अन्य क्षुरप्र बाण से जलसन्ध का कुण्डल-भूषित और मनोहर दन्त-पंक्ति से शोभित सिर काट डाला। जलसन्ध के कबन्ध की रक्तधाराओं से हाथी नहा गया। रक्त से तर और घायल वह हाथी सात्यकि के बाणों से अत्यन्त पीड़ित होकर आर्तनाद करता हुआ, लटके हुए हौदे को लिये, अपनी ही सेना को रौंदता हुआ भागा। राजन्! यह देखकर आपकी सेना में हाहाकार मच गया। महावीर जलसन्ध की मृत्यु देखकर योद्धा लोग जयलाभ से निरुत्साह और युद्ध से विमुख होकर इधर-उधर भागने लगे। इसी समय महारथी द्रोणाचार्य ने बड़े वेग से रथ हाँककर सात्यकि का सामना किया। कौरव लोग भी सात्यकि को प्रचण्ड रूप से आक्रमण करते देखकर क्रोधपूर्वक आचार्य के साथ उन पर आक्रमण करने को चले। तब महात्मा द्रोणाचार्य और कौरवों के साथ सात्यकि का अत्यन्त घोर संग्राम होने लगा। ५० ६१

———

एक सौ सोलह अध्याय

दुर्योधन और कृतवर्मा की हार

सञ्जय कहते हैं—महाराज! युद्धनिपुण वीरगण इस तरह समर में प्रवृत्त होकर सात्यकि पर बाण बरसाने लगे। अब महापराक्रमी द्रोणाचार्य ने सतहत्तर, दुर्मर्षण ने बारह, दु:सह ने दस, विकर्ण ने तीस, दुर्मुख ने दस, दु:शासन ने आठ और चित्रसेन ने दो बाण एक साथ ही सात्यकि के बाँयें पार्श्व और छाती में मारे। दुर्योधन और अन्य अनेक वीर सात्यकि को असंख्य बाण मारने लगे। महाबली सात्यकि उन वीरों के बाणों से घायल होकर भी हटे नहीं। उन्होंने द्रोणाचार्य को तीन, दु:सह को नव, विकर्ण को पचीस, चित्रसेन को सात, दुर्मर्षण को बारह, विविंशति को आठ, सत्यव्रत को नव और विजय को दस बाण मारे। अब रुक्माङ्गद धनुष को बजाते हुए सात्यकि शीघ्र ही आपके पुत्र राजा दुर्योधन के सामने पहुँचे और असंख्य बाण १० मारकर उनको पीड़ित करने लगे। उस समय उन दोनों वीरों में घोर संग्राम होने लगा। तीक्ष्ण बाण बरसाकर उन्होंने एक दूसरे को छिपा दिया। दुर्योधन के बाणों से घायल सात्यकि का शरीर रक्त से भीग गया। उस समय वे लाल चन्दन के उस वृक्ष के समान जान पड़ने लगे जिससे रस बह रहा हो। राजा दुर्योधन भी सात्यकि के बाणों से घायल होकर सुवर्णमय शिरोभूषण-भूषित ऊँचे यज्ञयूप के समान शोभायमान हुए।

तब महापराक्रमी सात्यकि ने सहज ही एक क्षुरप्र बाण से राजा दुर्योधन का धनुष काटकर उन्हें असंख्य बाणों से ढक दिया। शत्रु के बाणों से राजा दुर्योधन अत्यन्त पीड़ित हो उठे और उनके विजय के लक्षण को न सह सके। सुवर्णमण्डित पीठवाला दूसरा धनुष लेकर दुर्योधन ने सात्यकि को सौ बाण मारे। महाबली सात्यकि भी दुर्योधन के बाण-प्रहार से अत्यन्त व्यथित और क्रुद्ध होकर उनको बड़े ज़ोर से बाण मारने लगे। आपके अन्य पुत्रों ने राजा दुर्योधन को पीड़ित और सङ्कट में पड़े देखकर सात्यकि पर इतने बाण बरसाये कि वे छिप से गये। इस तरह अपने को बाण-जाल में देखकर महावीर सात्यकि ने [पहले तो उन बाणों को काटकर टुकड़े-टुकड़े कर दिया और फिर] उनमें से हर एक को क्रमश: पाँच-पाँच और सात-सात बाण मारे। उन्होंने हँसते-हँसते फुर्ती के साथ वेग से जानेवाले तीक्ष्ण आठ बाणों से राजा दुर्योधन को विह्वल करके उनका धनुष और मणिमुक्तामण्डित नागचिह्नयुक्त बड़ी ध्वजा २१ काट डाली। फिर अन्य चार तीक्ष्ण बाणों से राजा के रथ के चारों घोड़े मार डाले, एक तीक्ष्ण क्षुरप्र बाण से सारथी को मार गिराया और अनेक मर्मभेदी तीक्ष्ण बाणों से उनके भारी रथ को ढक दिया। इस तरह आपके पुत्र दुर्योधन, सात्यकि के बाणों से पीड़ित और विह्वल होकर, युद्ध छोड़कर भाग खड़े हुए। उन्होंने धनुर्द्धर चित्रसेन के रथ में जाकर आश्रय लिया।

सात्यकि के बाणों के मारे सब लोग प्राण-सङ्कट में पड़ गये और छिपे हुए राजा दुर्योधन को राहुग्रस्त चन्द्रमा के समान देखकर हाहाकार करने लगे।

उस हाहाकार को सुनकर महारथी कृतवर्मा धनुष कँपाते हुए तेज़ी के साथ रथ हाँकने के लिए, तिरस्कारपूर्वक, सारथी से कहने लगे—हे सूत! बहुत जल्द रथ हाँको, आगे बढ़ो। कृतवर्मा को मुँह फैलाये हुए यमराज के समान आते देखकर महारथी सात्यकि ने सारथी से कहा—हे सारथी! वह देखो, रथ पर सवार कृतवर्मा अस्त्र-शस्त्र लिये युद्ध करने आ रहे हैं; तुम झटपट इनके सामने रथ ले चलो। सारथी ने उसी दम सात्यकि की आज्ञा के अनुसार, सुसज्जित घोड़ों को हाँककर, कृतवर्मा के सामने रथ पहुँचा दिया। प्रज्वलित अग्नि के

३०

समान तेजस्वी वे दोनों वीर, दो विकट क्रुद्ध शार्दूलों की तरह, आमने-सामने आ गये। वीर कृतवर्मा ने सोने से मढ़ी हुई पीठवाला धनुष चढ़ाकर पहले सात्यकि को छब्बीस, उनके सारथी को पाँच और चारों घोड़ों को चार बाण मारे। फिर वे सात्यकि पर सुवर्णपुङ्खयुक्त असंख्य बाण बरसाने लगे। अर्जुन के पास जाने की इच्छा से जल्दी करनेवाले यादवश्रेष्ठ सात्यकि ने, फुर्ती के साथ, कृतवर्मा को तीक्ष्ण अस्सी बाण मारे। बलवान शत्रु के बाणों की चोट से पीड़ित होकर महावीर कृतवर्मा, भूकम्प के समय भारी पहाड़ की तरह, काँपने लगे। इसी अवसर में सत्यपराक्रमी सात्यकि ने उनके चारों घोड़ों को तिरसठ बाण और सारथी को सात बाण मारे। इसके बाद उन्होंने क्रुद्ध विषैले साँप के समान भयङ्कर सुवर्णपुङ्ख बाण कृतवर्मा को मारा। वह यमदण्ड-सदृश बाण कृतवर्मा के सुवर्णमय विचित्र कवच को काटकर, शरीर भेदकर, ख़ून से तर हो पृथ्वी में घुस गया। उस भयानक बाण की चोट से महावीर कृतवर्मा अत्यन्त पीड़ित, ख़ून से तर और अचेत होकर रथ से गिर पड़े। उनके हाथ से छूटकर धनुष और बाण नीचे गिर पड़े।

४०

राजन् ! इस तरह सत्यपराक्रमी सात्यकि उन सहस्रबाहु अर्जुन के सदृश पराक्रमी और महासागर के समान अक्षोभ्य महारथी कृतवर्मा को परास्त करके फिर आगे बढ़े। इन्द्र जैसे असुरों की सेना को चीरकर निकल गये थे वैसे ही सात्यकि सब योद्धाओं के आगे ही उस खड्ग शक्ति धनुष आदि शस्त्रों से अगम्य, हाथी घोड़े रथ आदि से परिपूर्ण और ख़ून से तर कौरवसेना को लाँघकर आगे जाने लगे। इधर महाबली कृतवर्मा को जब होश आया तब वे अन्य धनुष लेकर रणक्षेत्र में पाण्डवों को रोकने लगे। ४६

एक सौ सत्रह अध्याय

सात्यकि के पराक्रम का वर्णन

सञ्जय कहते हैं—महाराज ! इस तरह जब सात्यकि ने आपकी सेना में भगदड़ मचा दी तब द्रोणाचार्य उनके ऊपर तीक्ष्ण बाण बरसाने लगे। पहले राजा बलि के साथ इन्द्र का जैसे घोर समर हुआ था वैसे ही उस समय सब सैनिकों के सामने सात्यकि और द्रोणाचार्य दारुण युद्ध करने लगे। महाबली द्रोण ने सात्यकि के मस्तक में विषैले साँप के आकार के तीन लोहमय बाण मारे। वे तीनों बाण सात्यकि के मस्तक में लगे, जिनसे वे त्रिशृङ्ग (तीन शिखर-वाले) पर्वत के समान शोभा को प्राप्त हुए। इसी अवसर में मौक़ा पाकर द्रोणाचार्य उनके ऊपर बाण बरसाने लगे। उन बाणों की गति से वज्र का सा घोर शब्द होता था। श्रेष्ठ अस्त्रों के ज्ञाता सात्यकि ने भी दो-दो बाणों से आचार्य के एक-एक बाण को काट डाला।

महावीर द्रोणाचार्य ने सात्यकि की ऐसी फुर्ती देखकर हँसकर उनसे अधिक फुर्ती दिखाने के लिए पहले तीस और फिर पचास तीक्ष्ण बाण उनके ऊपर छोड़े। क्रुद्ध साँप जैसे बाँबी से निकलते हैं वैसे ही द्रोणाचार्य के रथ से, शरीर को छिन्न-भिन्न करनेवाले, बाण निकलते दिखाई पड़ते थे। उसी दम सात्यकि के चलाये हुए सैकड़ों-हज़ारों बाणों ने द्रोणाचार्य के रथ को ढक दिया। इस तरह वे दोनों योद्धा समान भाव से युद्ध करने लगे। द्रोणाचार्य और सात्यकि दोनों की फुर्ती और पराक्रम समान दिखाई दे रहा था। कोई किसी से कम न था। १०

फिर सात्यकि ने द्रोणाचार्य को सन्नतपर्व तीक्ष्ण नव बाणों से घायल करके उनकी ध्वजा में असंख्य बाण मारे और सौ बाणों के प्रहार से उनके सारथी को भी विह्वल कर दिया। महावीर द्रोण ने सात्यकि की फुर्ती देखकर उनके सारथी को सत्तर बाण मारकर घोड़ों को तीन-तीन बाणों से पीड़ित किया और एक बाण से रथ की ध्वजा काट डाली। फिर सुवर्ण-पुङ्खशोभित भल्ल बाण से उनका धनुष भी काट डाला। उस समय क्रोध से अत्यन्त अधीर

सात्यकि ने धनुष छोड़कर भारी गदा उठाई और आचार्य को ताककर फेंकी। आती हुई उस सुवर्णपत्र-भूषित लोहे की गदा को आचार्य ने बहुत से विविध तीक्ष्ण बाणों से व्यर्थ कर दिया। तब सात्यकि ने क्रुद्ध होकर दूसरा धनुष लेकर सिल्ली पर तेज़ किये गये बाणों से आचार्य को पीड़ित करके घोर सिंहनाद किया। शस्त्रधारियों में श्रेष्ठ आचार्य उस सिंहनाद को न सह सके। उन्होंने सुवर्णदण्ड-मण्डित, लोहे की बनी, शक्ति उठाकर सात्यकि के रथ पर फेंकी। २० वह कालसदृश शक्ति सात्यकि के शरीर में तो नहीं छू गई, किन्तु उनके रथ को तोड़कर घोर शब्द करती हुई पृथ्वी में घुस गई। महावीर सात्यकि ने भी आचार्य के दाहने हाथ में बाण मारा। आचार्य ने एक अर्धचन्द्र बाण से सात्यकि का धनुष काट डाला और रथशक्ति के प्रहार से उनके सारथी को अचेत कर दिया। उस भयानक रथशक्ति के प्रहार से सारथी कुछ देर के लिए रथ पर अचेत हो गया। उस समय सात्यकि ने अद्भुत कार्य किया। वे घोड़ों की रास भी सँभाले हुए थे और द्रोणाचार्य से युद्ध भी कर रहे थे। यह देखकर सब लोग आश्चर्य के साथ उनकी प्रशंसा करने लगे। सात्यकि ने उत्साह के साथ आचार्य को सौ बाण मारे। द्रोणाचार्य ने भी सात्यकि को भयङ्कर पाँच बाण मारे। वे बाण उनके कवच को तोड़कर शरीर में घुसकर रक्त पीने लगे। आचार्य के बाणों से अत्यन्त पीड़ित और क्रुद्ध होकर सात्यकि उनके ऊपर असंख्य बाण बरसाने लगे। सात्यकि ने एक बाण से आचार्य के सारथी को मार डाला और अन्य अनेक बाण मारकर उनके घोड़ों को पीड़ा पहुँचाई। सात्यकि के बाणों से पीड़ित वे घोड़े इधर-उधर मण्डलाकार गति से भागने लगे। सूर्य के समान प्रकाशमान आचार्य का रथ इधर-उधर मारा-मारा फिरने लगा। यह देखकर कौरवपक्ष के सब राजा ३० और राजपुत्र यह कहकर चिल्लाने लगे कि "दौड़ो दौड़ो, आचार्य के घोड़ों को पकड़ो—सँभालो।" वे महारथी लोग रण में सात्यकि को छोड़कर तुरन्त द्रोणाचार्य के पास दौड़ गये। सात्यकि के बाणों से पीड़ित महावीरों को इस तरह भागते देखकर सब सेना डर गई और प्राण लेकर चारों तरफ़ भाग खड़ी हुई। सात्यकि के बाणों से पीड़ित होकर आचार्य के घोड़े हवा के समान वेग से उनके रथ को फिर व्यूह के द्वार पर ले गये। पाण्डवों और पाञ्चालों के प्रयत्न से व्यूह को टूटते देखकर पराक्रमी द्रोण व्यूह की ही रक्षा करने लगे; उन्होंने सात्यकि को रोकने की चेष्टा छोड़ दी। पाण्डवों और पाञ्चालों को भगाकर क्रोधरूपी ईंधन से प्रज्वलित अग्निरूप द्रोणाचार्य, मानों भस्म कर देंगे इस तरह, व्यूह के द्वार पर विराजमान हुए। उस समय वे कालसूर्य के समान प्रचण्ड हो उठे। ३६

एक सौ अठारह अध्याय

सुदर्शन नाम के राजा का मारा जाना

सञ्जय कहते हैं कि राजन् ! पुरुषश्रेष्ठ सात्यकि ने द्रोणाचार्य और कृतवर्मा आदि महारथियों को जीतकर हँसते-हँसते अपने सारथी से कहा—हे सूत ! महात्मा श्रीकृष्ण और अर्जुन पहले ही इन महारथियों और रथियों को प्राणहीन कर गये हैं। हम लोग तो इनके मारने में कारणमात्र हैं। अर्जुन के द्वारा पहले ही मारे गये इन योद्धाओं को मारने में हमारी विशेष प्रशंसा नहीं है। शत्रुनाशन सात्यकि अब बाण बरसाते हुए, मांसलोभी श्येन पक्षी की तरह, समरभूमि में विचरने लगे। उन इन्द्र के तुल्य प्रभावशाली, असह्य पराक्रमी, उत्साही, पुरुषश्रेष्ठ सात्यकि को चन्द्र और शङ्ख के सदृश सफ़ेद घोड़ों से शोभित रथ पर चढ़कर शरद-ऋतु के प्रचण्ड सूर्य की तरह युद्धस्थल में भ्रमण करते देखकर आपके पक्ष के वीर और दल मिलकर भी रोक नहीं सके। तब विचित्रयुद्ध-निपुण, अमर्षपूर्ण, सुवर्ण का कवच पहने, धनुष धारण किये राजा सुदर्शन सात्यकि को रोकने के लिए उनके सामने आये। उस समय उन दोनों महावीरों का घोर संग्राम होने लगा। पहले देवताओं ने इन्द्र और वृत्रासुर के रण की जैसे प्रशंसा की थी वैसे ही सात्यकि और सुदर्शन का युद्ध देखकर कौरवपक्ष के योद्धा और सोमकगण बारम्बार उनकी बड़ाई करने लगे। महावीर सुदर्शन बार-बार सात्यकि को अत्यन्त तीक्ष्ण बाण मारने लगे। वे बाण सात्यकि के शरीर में लगने भी नहीं पाये; सात्यकि ने उन्हें बीच में ही काट डाला। उधर इन्द्र-सदृश प्रभावशाली सात्यकि ने सुदर्शन के ऊपर जितने बाण छोड़े उन्हें महावीर सुदर्शन ने श्रेष्ठ बाणों से काट डाला।

सात्यकि के बाणों से अपने बाणों को निष्फल देखकर अत्यन्त क्रुद्ध हो महावीर सुदर्शन उनके ऊपर सुवर्ण-शोभित विचित्र बाण बरसाने लगे। सुदर्शन ने कानों तक धनुष की

डोरी खींचकर फिर उनको अग्नि-सदृश तीन बाण मारे। सुदर्शन के बाण सात्यकि के कवच को तोड़कर शरीर के भीतर घुस गये। सुदर्शन ने और अग्नि-सदृश प्रज्वलित चार बाण सात्यकि के घोड़ों को मारे। पराक्रमी सात्यकि ने तीक्ष्ण बाणों से सुदर्शन के घोड़ों को मार डाला और घोर सिंहनाद किया। फिर इन्द्र के वज्र के समान भयानक भल्ल बाण से सुदर्शन के सारथी का सिर काट डाला और साथ ही एक कालाग्नि-सदृश चुर बाण से सुदर्शन का कुण्डल-शोभित पूर्ण-चन्द्र-सदृश मस्तक काटकर गिरा दिया। पहले समय में वज्रपाणि इन्द्र जैसे महाबली बल नामक दानव का सिर काटकर सुशोभित हुए थे, वैसे ही सात्यकि भी सुदर्शन का सिर काटकर शोभायमान हुए। उत्तम घोड़ों से युक्त रथ पर बैठे हुए परम प्रसन्न सात्यकि बाण-वर्षा से कौरव-सेना को परास्त और अपने अद्भुत कार्य से लोगों को विस्मित करते हुए अर्जुन की ओर चले। वे बाणों के सामने पड़नेवाले शत्रुओं को आग की तरह भस्म करते जा रहे थे। रणभूमि में एकत्र सब योद्धा सात्यकि के उन आश्चर्यजनक श्रेष्ठ कर्मों की प्रशंसा करने लगे। १८

एक सौ उन्नीस अध्याय

सात्यकि के हाथों दुर्योधन की सेना का संहार

सञ्जय कहते हैं कि हे नरनाथ! इस तरह वीर सुदर्शन को मारकर वृष्णिवीर सात्यकि ने अपने सारथी से कहा—हे सूत! बाण-शक्तिरूप तरङ्ग, खड्गरूप मछली और गदारूप ग्राह से युक्त, असंख्य हाथी-घोड़े-रथ आदि से परिपूर्ण, अनेक प्रकार के शस्त्रों के परस्पर टकराने के शब्द और बाजों की ध्वनिरूप गर्जन से भयङ्कर, वीरों के लिए कठिन स्पर्श, जय की इच्छा रखनेवालों के लिए दुर्द्धर्ष, जलसन्ध की राक्षस-सदृश सेना से उमड़े हुए द्रोणसेनारूप महासागर के पार जब हम पहुँच गये हैं तब यह, मरने से बची हुई, सेना क्या है! यह तो क्षुद्र नदी सी जान पड़ती है। इसलिए अब तुम तुरन्त घोड़ों को हाँक दो। मैं इस स्वल्प सेना को फुर्ती से लाँघकर अर्जुन के पास पहुँचना चाहता हूँ। दुर्जय द्रोण और कृतवर्मा को जीत लिया तो अब मैं मानों अर्जुन के पास ही पहुँच गया। सामने की सेना को देखकर मुझे रत्ती भर डर नहीं मालूम पड़ता। ये सैनिक योद्धा, आग में सूखी घास की तरह, मेरे बाणों से भस्म हो रहे हैं। वह देखो, पाण्डवश्रेष्ठ अर्जुन जिस मार्ग से गये हैं उस मार्ग में असंख्य हाथियों, घोड़ों और मनुष्यों की लाशें तथा रथ नष्ट-भ्रष्ट हुए पड़े हैं। अर्जुन के वज्रसदृश बाणों से पीड़ित होकर कौरवदल के योद्धा रण छोड़कर भाग रहे हैं। हाथियों, घोड़ों और रथों के तेज़ी के साथ भागने से रेशमी कपड़े-सी लाल धूल उड़ रही है और महातेजस्वी अर्जुन के गाण्डीव धनुष का उग्र शब्द १० सुनाई पड़ रहा है। इससे जान पड़ता है कि महावीर अर्जुन यहाँ से निकट ही कहीं हैं।

हे सूत ! इस समय जो लक्षण और सगुन देख पड़ते हैं, उनसे जान पड़ता है कि दिन डूबने के पहले ही वीर अर्जुन जयद्रथ को मार लेंगे। अब तुम उस जगह पर मेरा रथ ले चलो, जहाँ शत्रु-सेना का जमघट है और जहाँ दुर्योधन आदि वीरगण, युद्धदुर्मद क्रूरकर्मा कवचधारी काम्बोजगण, धनुष-बाण लिये यवनगण और बहुत प्रकार के अस्त्र-शस्त्र धारण किये हुए शक, किरात, दरद, बर्बर, ताम्रलिप्तक आदि, और म्लेच्छगण मेरे साथ युद्ध करने के लिए जमा हैं। तुम यह समझ लो कि मैं इन सब वीरों को रथ, हाथी, घोड़े आदि वाहनों सहित नष्ट करके इस विषम सङ्कट से निकल गया हूँ।

यह सुनकर सारथी ने कहा—महात्मन् ! अगर यमदग्नि के पुत्र परशुराम, महारथी द्रोणाचार्य, कृपाचार्य अथवा मद्रराज शल्य कुपित होकर एक साथ आपके सामने आवें तो भी, आपके आश्रय में रहकर, मैं शङ्कित नहीं हो सकता। समर में रणदुर्मद [क्रूरकर्मा कवचधारी २० काम्बोजगण, धनुष-बाण धारण किये और प्रहार करने में निपुण यवनगण, विविध अस्त्र धारण करनेवाले किरात, दरद, बर्बर, शक और ताम्रलिप्तक आदि म्लेच्छ] लोगों को आज आपने हराया है। मैं पहले कभी बड़े युद्ध में भी नहीं डरा; फिर आज इस साधारण संग्राम में कैसे डरूँगा ? अब आप मुझे यह बतलाइए कि मैं आपको किस मार्ग से अर्जुन के पास ले चलूँ ? हे आयुष्मन् ! आप किन लोगों पर कुपित हुए हैं ? किनकी मौत आई है ? किन्होंने यमपुर जाने की इच्छा की है ? कौन लोग आपको यम की तरह आते देखकर रणभूमि से भागेंगे ? यमराज ने किनको याद किया है ? आज्ञा दीजिए, उन्हीं के सामने आपका रथ ले चलूँ।

सात्यकि ने कहा—हे सूत ! तुम झटपट रथ हाँककर ले चलो। इन्द्र ने जैसे दानवों का संहार किया था वैसे ही आज मैं इन मुण्डित-मस्तक काम्बोजगण का संहार करके प्रतिज्ञा-पालन, और वीर अर्जुन से भेंट, करूँगा। आज दुर्योधन आदि कौरव, इस सेना का विनाश देखकर, समर में मेरे पराक्रम का अनुभव करेंगे। मेरे बाणों से जिनके अङ्ग छिन्न-भिन्न हो गये होंगे, उन कौरवदल के सैनिकों का करुण विलाप सुनकर आज दुर्योधन को अवश्य ही पश्चात्ताप करना पड़ेगा। आज मैं पाण्डवश्रेष्ठ वीर अर्जुन का बताया हुआ युद्धकौशल समर ३० में दिखाऊँगा। मेरे बाणों से हज़ारों वीरों को मरते देखकर आज राजा दुर्योधन अवश्य ही पश्चात्ताप करेंगे। आज कौरवगण मेरी बाण चलाने की फुर्ती और मेरे धनुष का अलातचक्र की तरह घूमना देखेंगे। आज राजा दुर्योधन मेरे बाणों से घायल और रक्त से भीगे हुए अपने सैनिकों की दुर्दशा और संहार देखकर खेद करेंगे। वे संग्राम में मेरा भयानक रूप और कौरव-दल के चुने हुए वीरों का मारा जाना देखकर अवश्य ही सोचेंगे कि इस लोक में दूसरे अर्जुन का अवतार हुआ है। आज मैं कौरवपक्ष के हज़ारों नरपतियों का बध करूँगा जिससे

दुर्योधन पछतावेंगे और मैं पाण्डवों के प्रति अपनी भक्ति और स्नेह का परिचय दूँगा। आज कौरव लोग मेरे बल-वीर्य और कृतज्ञता को विशेष रूप से जानेंगे।

सञ्जय कहते हैं—राजन् ! सारथी ने सात्यकि के ये वचन सुनकर सफ़ेद सुशिक्षित घोड़ों को उधर ही हाँक दिया। हवा के समान वेग से घोड़े इस तरह चले मानों आकाश को पी लेंगे। सात्यकि शीघ्र ही यवनों के पास पहुँच गये। वे भी मिलकर फुर्ती दिखाते हुए आगे बढ़कर, सेना के अगले भाग में स्थित, सात्यकि पर असंख्य तीक्ष्ण बाणों की वर्षा करने लगे। ४० सात्यकि ने अपने सन्नतपर्व बाणों से उनके बाणों को बीच में ही काट डाला। वीर सात्यकि सुवर्णपुङ्खयुक्त, सीधे और दूर जानेवाले तीक्ष्ण बाणों से यवनों के सिर और हाथ काटने लगे। सात्यकि के सुदृढ़ बाण उनके लाल रङ्ग के लोहमय और कांस्यमय कवचों को तोड़कर शरीरों को फोड़ते हुए पृथ्वी में घुस जाते थे। इस प्रकार सात्यकि के बाणों के प्रहार से सैकड़ों यवन मरने और पृथ्वी पर गिरने लगे। वीर सात्यकि धनुष को खींचकर लगातार बाण बरसा रहे थे। वे एक-एक वार में पाँच-पाँच, छः-छः, सात-सात, आठ-आठ यवनों को मार रहे थे। सात्यकि के प्रहार से काम्बोज, शक, शबर, किरात, बर्बर आदि म्लेच्छगण हज़ारों की संख्या में मर-मरकर पृथ्वी पर गिर रहे थे। उनके मांस और रक्त की कीच से समरभूमि अगम्य हो गई। महाराज ! वीर सात्यकि इस तरह आपकी सेना को चौपट करने लगे। दस्युओं के शिरस्त्राण-शोभित सिर चारों ओर बिछ गये। उनके सिर के बाल कटे हुए [और दाढ़ी-मूछ के बाल बड़े-बड़े] थे। उनके कटे हुए सिर पङ्ख और पूँछ से रहित पक्षियों के समान जान पड़ते थे। रक्त से नहाये हुए कबन्धों से वह पृथ्वी लाल रङ्ग के मेघों से शोभित आकाश के समान जान पड़ने लगी। इस तरह सात्यकि के वज्रसमस्पर्श, सीधे जानेवाले, तीक्ष्ण बाणों से मारे गये शत्रुओं की लाशों से वह पृथ्वी व्याप्त हो गई। मरने से बचे हुए योद्धा भयविह्वल और अचेतनप्राय होकर घोड़ों को एड़ मारकर, ज़ोर-ज़ोर से कोड़े लगाकर, भगाते हुए भाग खड़े हुए। ५० राजन् ! इस तरह सत्यपराक्रमी सात्यकि ने दुर्जय काम्बोज, शक, यवन आदि की भारी सेना को मारकर भगा दिया और विजय प्राप्त करके सारथी से आगे रथ बढ़ाने के लिए कहा। महाराज ! अर्जुन की पृष्ठ-रक्षा करने के लिए अद्भुत पराक्रम और अलौकिक कार्य करके जाते हुए सात्यकि की गन्धर्व चारण आदि बारम्बार बड़ाई करने लगे। यहाँ तक कि कौरवदल के लोग भी उन्हें धन्य-धन्य कहने लगे। ५५

एक सौ बीस अध्याय

सात्यकि के पराक्रम का वर्णन

सञ्जय कहते हैं—महाराज! महारथी सात्यकि इस तरह यवन-काम्बोज आदि को जीतकर, कौरवसेना के मध्यभाग से होकर, अर्जुन के पास जाने लगे। सुन्दर दाँतोंवाले विचित्र कवच-ध्वज-धारी वीरश्रेष्ठ सात्यकि, मृगों पर बाघ की तरह, शत्रुसेना पर झपटकर उसे भय-विह्वल करने लगे। वे धनुष को घुमाते नज़र आते थे और उनका रथ विचित्र गति से जा रहा था। सोने के अङ्गद, शिरस्त्राण, कवच, ध्वजा और धनुष से शोभित शूर सात्यकि सुमेरु पर्वत के शिखर की तरह जान पड़ते थे। वे मण्डलाकार धनुषरूप मण्डल और बाणरूप तेजोमय किरणों से शरद ऋतु में उदय हुए सूर्य के समान शोभायमान हुए। साँड़ के से ऊँचे कन्धे और पराक्रम से शोभित, उसी की सी बड़ी-बड़ी आँखोंवाले वीर सात्यकि गउओं के झुण्ड में बड़े साँड़ की तरह आपकी सेना में थे। मस्त हाथी के समान पराक्रमी, उसी की सी चाल से चलनेवाले और सेनादल के बीच में मस्त हाथी के समान स्थित सात्यकि को मारने की इच्छा से व्याघ्र के समान आपके पक्ष के योद्धा चारों ओर से दौड़े। द्रोण की सेना, कृतवर्मा की दुस्तर सेना, समुद्र-सदृश जलसन्ध की सेना और काम्बोज आदि की सेना के पार पहुँचे हुए सात्यकि को कृतवर्मा रूप ग्राह के मुँह से उबरते और सैन्यसागर के पार जाते देखकर आपके पक्ष के अनेक योद्धा कुपित हो उठे; उन सबने मिलकर चारों ओर से सात्यकि को घेर लिया। दुर्योधन, चित्र-सेन, दुःशासन, विविंशति, शकुनि, दुःसह, युवा दुर्धर्षण, क्रथ और अन्य अनेक
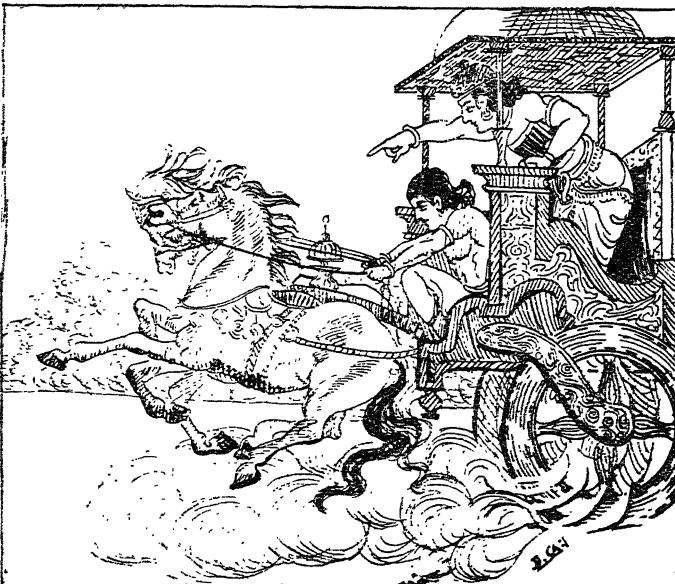
१०

शस्त्रधारी दुर्द्धर्ष क्रोधी योद्धा लोग सात्यकि के पीछे दौड़े। उस समय तूफ़ान की आँधी से उमड़े हुए समुद्र के समान आपकी सेना में बड़ा कोलाहल होने लगा। उन सबको वेग से अपनी

ओर आते देखकर सात्यकि ने हँसकर अपने सारथी से कहा—हे सूत ! रथ को धीरे-धीरे ले चलो। यह देखो, उमड़े हुए समुद्र के समान रथों की घरघराहट होती है और कोलाहल से सब दिशाओं, पृथ्वी, अन्तरिक्ष और सागरों को कँपाती और प्रतिध्वनित करती हुई दुर्योधन की सेना मेरी ओर झपटती आ रही है। पूर्णिमा के दिन उमड़े हुए समुद्र के समान इस सैन्यसागर को मैं अपने पराक्रम से, तटभूमि की तरह, रोकूँगा। आज इस महासमर में तुम इन्द्र के समान मेरा पराक्रम देखो। मैं अभी अपने तीक्ष्ण बाणों से शत्रुसेना का नाश करता हूँ। तुम देखना कि मेरे अग्नितुल्य बाणों से हज़ारों पैदल, हाथी, घोड़े और रथ छिन्न-भिन्न हो रहे हैं।

महाबली सात्यकि अपने सारथी से इस तरह कह ही रहे थे कि युद्ध की इच्छा रखने-वाले कौरवपक्ष के सैनिक "मारो, ठहरो, दौड़ो, देखो देखो" कहते हुए उनके पास आ गये। २० यह कहनेवाले शत्रुओं को सात्यकि अपने तीक्ष्ण बाणों से मारने लगे। उन्होंने देखते ही देखते तीन सौ घोड़ों, चार सौ हाथियों और असंख्य वीरों को मार डाला। उस समय सात्यकि के साथ कौरवपक्ष के योद्धाओं का ऐसा घोर युद्ध हुआ कि जान पड़ा फिर देवासुर-संग्राम हो रहा है। सात्यकि अपने विषैले साँप-सदृश बाणों से आपके पुत्र की सेना को छिन्न-भिन्न करने लगे। चारों ओर से सात्यकि के ऊपर बाणों की वर्षा हो रही थी, पर वे तनिक भी नहीं घबराये। उन्होंने आपकी सेना के बहुत से वीरों को मार डाला। हे राजेन्द्र ! उस समय मैंने यह बड़ा आश्चर्य देखा कि पराक्रमी सात्यकि का एक भी बाण निष्फल नहीं जाता था।

रथ-हाथी-घोड़े आदि के जल से पूर्ण और पैदल सेनारूप तरङ्गों से युक्त वह सैन्यसागर तटभूमि-सदृश सात्यकि के पास जाकर जहाँ का तहाँ रुक रहा। सात्यकि के बाणों से मारे जाते हुए आपकी सेना के मनुष्य, हाथी और घोड़े बारम्बार इधर से उधर ऐसे भटक रहे थे जैसे जाड़े से पीड़ित गउएँ इधर-उधर फिरती हैं। उस समय आपकी सेना में ऐसा कोई पैदल, रथ, हाथी, घोड़ा या घोड़े का सवार नहीं देख पड़ता था जिसको सात्यकि ने घायल न किया हो। वीर सात्यकि ने निडर होकर हाथों की फुर्ती और असाधारण रण-निपुणता दिखाकर जिस तरह आपकी सेना का नाश किया उस तरह अर्जुन ने भी नहीं किया था। मेरी समझ में तो सात्यकि ने उस समय युद्ध में अर्जुन से भी बढ़कर काम किया। ३०

इसी समय राजा दुर्योधन ने सात्यकि को पहले तीन और फिर आठ बाण मारे। उन्होंने सात्यकि के सारथी को भी तीन और घोड़ों को चार बाण मारे। दुःशासन ने सात्यकि को सोलह बाण मारे; साथ ही शकुनि ने पचीस, चित्रसेन ने पाँच और दुःसह ने पन्द्रह तीक्ष्ण बाण उनकी छाती में मारे। यादवश्रेष्ठ सात्यकि इस तरह शत्रुओं के बाणों की चोट खाकर भी विचलित नहीं हुए। उन्होंने हँसते-हँसते उन सबको तीन-तीन बाण मारे। अत्यन्त तीक्ष्ण बाणों से शत्रुओं को गहरी चोट पहुँचाकर वीरश्रेष्ठ सात्यकि, श्येन पक्षी की तरह, झपटते हुए चारों

और समरभूमि में विचरने लगे। उन्होंने फिर शकुनि का धनुष और हस्तावाप (दस्ताने) काटकर दुर्योधन की छाती में तीन, चित्रसेन को सौ, दुःसह को दस और दुःशासन को बीस बाण मारे। शकुनि ने दूसरा धनुष लेकर पहले आठ और फिर पाँच बाण मारकर सात्यकि को घायल किया। साथ ही दुःशासन ने दस, दुःसह ने तीन और दुर्मुख ने बारह बाण
४० उनको मारे। महाराज! दुर्योधन ने भी सात्यकि को तिहत्तर और उनके सारथी को तीक्ष्ण तीन बाण मारे। महावीर सात्यकि ने अत्यन्त क्रुद्ध होकर सबको पाँच-पाँच बाणों से घायल करके एक भयङ्कर भल्ल बाण से दुर्योधन के सारथी को मार गिराया। सात्यकि के बाणों से पीड़ित होकर दुर्योधन के घोड़े, सारथी न रहने पर, बड़े वेग से उनके रथ को ले भागे। उस समय अन्य सैकड़ों वीर योद्धा भी राजा दुर्योधन के रथ के साथ भाग खड़े हुए। वीर सात्यकि उस सेना को भागते देखकर उस पर सुवर्णपुङ्खयुक्त तीक्ष्ण बाण बरसाने लगे। इस तरह आपकी सेना के हज़ारों योद्धाओं को भगाकर महारथी सात्यकि, अर्जुन के पास जाने के लिए, आगे बढ़े। कौरवपक्ष के योद्धा सात्यकि को एक साथ बाण छोड़ते और
४७ सारथी की तथा अपनी रक्षा करते देखकर बहुत विस्मित हुए और उनकी प्रशंसा करने लगे।

एक सौ इक्कीस अध्याय

दुःशासन का पराजित होना

धृतराष्ट्र ने कहा—हे सञ्जय! महावीर सात्यकि जब कौरवसेना को नष्ट-भ्रष्ट करते हुए अर्जुन के पास जाने लगे तब मेरे निर्लज्ज पुत्रों ने क्या किया? अर्जुन के ही समान सात्यकि का पराक्रम देखकर मेरे मरणोन्मुख पुत्र किस तरह सात्यकि के सामने ठहरे? सेना के बीच में सात्यकि से हारकर वे क्षत्रियों के आगे क्या कहेंगे? महायशस्वी सात्यकि मेरे पुत्रों के जीते जी किस तरह उस सेना के पार पहुँचे? हे सञ्जय! सात्यकि अकेले ही शत्रुपक्ष के असंख्य महारथियों से युद्ध करके उनका संहार कर रहे हैं, यह अद्भुत बात तुमसे सुनकर मुझे स्पष्ट जान पड़ता है कि दैव ही मेरे पुत्रों के प्रतिकूल है। बड़े आश्चर्य की बात है! मेरी सेना, सब पाण्डवों की कौन कहे, अकेले सात्यकि का सामना भी नहीं कर सकती! इस समय मुझे साफ़ मालूम पड़ता है कि अकेले सात्यकि ही चित्रयुद्ध में निपुण महारथी द्रोणाचार्य को जीतकर, पशुओं को सिंह की तरह, मेरे पुत्रों को मार डालेंगे। जब कृतवर्मा आदि अनेक महारथी वीर मिलकर भी सात्यकि को नहीं मार सके तब वे अवश्य ही मेरे पुत्रों को परास्त करेंगे।
१० यशस्वी सात्यकि ने जैसा युद्ध किया वैसा युद्ध तो महापराक्रमी अर्जुन भी नहीं कर सके।

सञ्जय ने कहा—राजन् ! केवल आपकी कुमन्त्रणा और दुर्योधन की दुर्बुद्धि ही इस घोरतर नाश का कारण है। अब जो घटनाएँ हुई हैं उनका मैं वर्णन करता हूँ, आप सावधान होकर सुनिए। जो योद्धा भाग खड़े हुए थे वे, दुर्योधन के कहने से, फिर युद्ध की क्रूर बुद्धि करके प्राणपण से युद्ध करने की क़सम खाकर लौट पड़े। दुर्योधन के अनुगामी तीन हज़ार घुड़सवार योद्धा, शक, काम्बोज, वाह्लीक, यवन, पारद, कुलिन्द, तङ्गण, अम्बष्ठ, पैशाच, बर्बर और पत्थर हाथों में लिये कुपित पहाड़ी जातियों के लोग, आग में कूदने को तैयार पतङ्गदल की तरह, सात्यकि का सामना करने को आ गये। पत्थर हाथों में लिये पाँच सौ शूर पहाड़ी लोग भी सात्यकि पर आक्रमण करने को चले। उस समय हज़ार रथ, सौ महारथी, एक हज़ार हाथी, दो हज़ार घोड़े और असंख्य पैदल सेना बाणों की वर्षा करती हुई सात्यकि के सामने आई। उन सबको वीर दुःशासन यह कहकर उत्तेजित करते जाते थे कि "इसे मारो, डरो नहीं।" महाराज ! इस तरह बहुत सी सेना और महारथी योद्धाओं को लेकर दुःशासन ने सात्यकि पर आक्रमण किया। किन्तु कैसे आश्चर्य

की बात है ! हमने सात्यकि का अद्भुत पराक्रम देखा कि उन्होंने अकेले ही उन सबके साथ युद्ध किया और तनिक भी नहीं घबराये। वे उन महारथियों का सामना करते हुए अपने तीक्ष्ण बाणों से असंख्य हाथी, उनके सवार, घुड़सवार, रथ और दस्युगण आदि को नष्ट करने लगे। २० उनकी बाणवर्षा से टूटे-फूटे और कटे-फटे रथों के पहिये, ईषादण्ड, अक्ष, शस्त्र, हाथी, घोड़े, ध्वजा, कवच, माला, कपड़े, गहने, रथ के नीचे की लकड़ी इत्यादि के इधर-उधर बिखरने और ढेर होने से उस समय समरभूमि ग्रह-तारागण आदि से शोभित गगनमण्डल के समान शोभायमान हो रही थी। अञ्जन, वामन, सुप्रतीक, महापद्म और ऐरावत आदि महादिग्गजों के वंश में उत्पन्न पर्वताकार हाथी रणभूमि में उनके बाणों की चोट से गिर-गिरकर मर रहे थे। महावीर सात्यकि ने वनायु, काम्बोज, वाह्लीक आदि देशों के, और पहाड़ी, श्रेष्ठ घोड़ों

को मार डाला। उन्होंने अनेक देशों और बहुत सी जातियों के सैकड़ों-हज़ारों हाथियों, घोड़ों और मनुष्यों को मारकर बिछा दिया।

इस तरह मारे जाने पर मरने से बचे हुए सैनिक भागने लगे। उस समय दस्यु आदि को भागते देखकर दुःशासन कहने लगे—अरे क्षत्रियधर्म न जाननेवालो! लौट आओ, शत्रु से युद्ध करो। इस तरह भागने से क्या होगा? इस ढँग से उत्साहित किये जाने पर भी उन्हें न लौटते देखकर आपके पुत्र दुःशासन ने पत्थरों की वर्षा करनेवाले, पहाड़ी जाति के, शूर योद्धाओं को युद्ध के लिए प्रेरित करते हुए कहा—

३० हे वीरो! तुम पाषाणयुद्ध में बड़े निपुण हो; और सात्यकि इस शिलायुद्ध को बिलकुल नहीं जानते। इसलिए तुम लोग पाषाण-वर्षा करके इन्हें मारो। कौरवगण शिलायुद्ध में निपुण नहीं हैं [नहीं तो वे तुम्हारी सहायता करते]। तुम लोग आक्रमण करो। सात्यकि तुम्हारा सामना नहीं कर सकेंगे। महाराज! पाषाणयुद्ध में निपुण वे पहाड़ी योद्धा, राजा के पास मन्त्री की तरह, सात्यकि की ओर वेग से चले। वे पहाड़ी लोग हाथी के सिर के समान बड़े-बड़े पत्थर तानकर सात्यकि के सामने आये। क्षेपणीय यन्त्रों से शिलाएँ बरसाते हुए उन पहाड़ियों ने दुःशासन की आज्ञा से चारों ओर से सात्यकि को, मारने की इच्छा से, घेर लिया। यादवश्रेष्ठ सात्यकि ने उन्हें पत्थर बरसाते आते देखकर तीक्ष्ण बाण बरसाना शुरू किया। सात्यकि ने साँप-सदृश नाराच बाणों से उनकी फेंकी हुई शिलाओं को चूर-चूर कर डाला। जुगनुओं की तरह चमककर चारों ओर गिरते हुए उन पत्थरों के चूर्ण से सेना का संहार होने लगा और हाहाकार मच गया। शिलाएँ ताने प्रहार करने को उद्यत पाँच सौ शूर योद्धाओं के हाथ सात्यकि ने काट डाले। हाथ काट दिये जाने पर वे सब

४० मर गये। हज़ारों पहाड़ी लोग सात्यकि पर पत्थरों की घोर वर्षा कर रहे थे और सात्यकि फुर्ती के साथ उनके प्रहारों को निष्फल करते हुए उनका संहार करते जाते थे। मारने

का यत्न करनेवाले हज़ारों पाषाण-युद्ध-निपुण पहाड़ी वीरों को सात्यकि ने मार गिराया। उन्होंने यह बहुत ही अद्भुत कार्य किया।

तब फिर व्यात्तमुख (एक प्रकार के म्लेच्छ), अयोहस्त, शूलहस्त, दरद, खस, तङ्गण, लम्पाक, कुलिन्द आदि अनेक जातियों के योद्धा लोग बारम्बार सात्यकि पर शिलाओं की वर्षा करने लगे। किन्तु उपाय जाननेवाले चतुर सात्यकि ने नाराच बाणों से उन शिलाओं को व्यर्थ कर दिया। सात्यकि के तीक्ष्ण बाणों से टूटती हुई शिलाओं का शब्द चारों ओर फैल गया। वह भयानक शब्द सुनकर झुण्ड के झुण्ड रथी, हाथी, घोड़े और पैदल सिपाही डर के मारे भागने लगे। उस शिलाचूर्ण के गिरने से मनुष्य, हाथी और घोड़े वैसे ही व्याकुल हो उठे जैसे किसी को भिड़ें लिपटकर काटने लगें और वह तिलमिलाने लगे। उनके लिए समरभूमि में ठहरना असम्भव हो गया। उस समय मरने से बचे हुए, ख़ून में नहाये, भिन्न-मस्तक बड़े-बड़े हाथी सात्यकि के रथ के पास से दूर भागने लगे। पूर्णिमा के दिन उमड़े हुए समुद्र का शब्द जैसे सुनाई पड़े वैसा ही घोर कोलाहल सात्यकि के बाणों से पीड़ित कौरवों की सेना में सुनाई पड़ने लगा।

राजन्! उस समय महावीर द्रोणाचार्य ने वह तुमुल शब्द सुनकर अपने सारथी से कहा—हे सूत! महारथी सात्यकि क्रुद्ध होकर कौरवों की सेना को अनेक प्रकार से छिन्न-भिन्न करते हुए युद्धभूमि में मृत्यु की तरह विचर रहे हैं। जान पड़ता है, वे इस समय शिला बरसानेवाली जातियों के योद्धाओं से युद्ध कर रहे हैं, इसलिए तुम इसी दम वहीं पर मेरा रथ ले चलो। यह देखो, रथी योद्धाओं को लिये हुए घोड़े रणभूमि से भागे जा रहे हैं। शस्त्र और कवच आदि से हीन योद्धा घायल होकर गिर रहे हैं। सारथी लोग किसी तरह घोड़ों को सँभाल नहीं सकते। तब सारथी ने शस्त्रधारियों में श्रेष्ठ द्रोणाचार्य के वचन सुनकर कहा—हे आयुष्मन्! यह देखिए, कौरव पक्ष के योद्धा लोग संग्राम छोड़कर डर के मारे चारों ओर भाग रहे हैं। इधर महाबली पाञ्चाल और पाण्डव मिलकर आपको मारने की इच्छा से आ रहे हैं। उधर सात्यकि भी बहुत दूर निकल गये हैं। अतएव उनके पीछे जाना चाहिए, या यहीं ठहरकर पाण्डवों को रोकना चाहिए? इन दोनों बातों में जो ठीक हो सो आप निश्चय कीजिए। इधर द्रोणाचार्य और सारथी से इस तरह बातचीत हो रही थी, उधर महावीर सात्यकि बहुत से रथी योद्धाओं का नाश करते हुए दिखाई पड़े। रथी लोग सात्यकि के बाणों से पीड़ित होकर, उनके रथ का घेरा छोड़कर, द्रोणाचार्य की सेना की ओर भागने लगे। दुःशासन जिन रथी योद्धाओं को साथ लेकर सात्यकि पर आक्रमण करने गये थे वे डर के मारे द्रोणाचार्य के रथ की तरफ़ भाग खड़े हुए। ५० ५८

एक सौ बाईस अध्याय

द्रोणाचार्य्य और धृष्टद्युम्न का युद्ध

सञ्जय कहते हैं कि महाराज ! महावीर द्रोणाचार्य ने दु:शासन के रथ को अपने रथ के पास खड़ा देखकर कहा—हे दु:शासन ! ये सब रथी क्यों भाग खड़े हुए हैं ? राजा दुर्योधन तो कुशल से हैं ? सिन्धुराज जयद्रथ तो जीवित हैं ? तुम राजा के पुत्र, राजा के भाई, महारथी योद्धा और युवराज होकर भी क्यों युद्ध से इस तरह भाग रहे हो ? तुमने पहले द्यूत के समय द्रौपदी से कहा था कि "हे दासी, हमने तुझे जुए में जीत लिया है, इसलिए अब तू स्वेच्छाचारिणी होकर हमारे बड़े भाई राजा दुर्योधन के कपड़े लाकर दिया कर। तेरे पति सार-हीन तिलों के समान निकम्मे हैं। तू अब समझ ले कि तेरे पति हैं ही नहीं।" हे दु:शासन ! पहले द्रौपदी से ऐसे दुर्वचन कहकर और आप ही पाण्डवों तथा पाञ्चालों से वैर उत्पन्न करके

अब क्यों युद्ध से भाग रहे हो ? इस समय सात्यकि को ही युद्ध में उपस्थित देखकर क्यों डर के मारे व्याकुल हो रहे हो ? पहले द्यूत-क्रीड़ा में हाथ में पाँसे लेते समय तुमने क्या नहीं जाना था कि ये पाँसे ही विषैले साँप-सदृश बाणों का रूप धारण करेंगे ? तुमने पहले पाण्डवों को बहुत से कटु वचन सुनाये हैं और तुम्हारे ही कारण द्रौपदी को क्लेश सहने पड़े हैं। हे महारथी ! इस समय तुम्हारा वह अभिमान, वह बल और शेखी कहाँ है ? तुम विषैले साँप-सदृश पाण्डवों को छोड़कर अब कहाँ भाग रहे हो ? तुम दुर्योधन के साहसी भाई होकर अब युद्ध से भागोगे तो कहना पड़ेगा कि कुरुराज और कौरव पक्ष के वीरों की
१० अत्यन्त शोचनीय दशा उपस्थित है। हे वीर ! आज इन डरे हुए कौरवदल के सैनिकों की तुम्हें अपने बाहुबल से रक्षा करनी चाहिए। किन्तु तुम वह अपना कर्त्तव्य न करके, संग्राम छोड़-

कर, केवल शत्रु पक्ष के हृदय में हर्ष उत्पन्न कर रहे हो। हे शत्रुदमन युवराज! तुम सेनापति होकर, डर के मारे समर छोड़कर, इस तरह भागोगे तो और कौन व्यक्ति रणभूमि में ठहर सकेगा? हे कौरव! तुम आज अकेले सात्यकि से ही लड़कर उनके आगे से भाग रहे हो तो गाण्डीव-धनुषधारी अर्जुन, महाबली भीमसेन, वीर नकुल और सहदेव का सामना होने पर क्या करोगे? सात्यकि के बाण तो महावीर अर्जुन के, सूर्य और अग्नि के समान, भयङ्कर उग्र बाणों के तुल्य नहीं हैं। सो तुम सात्यकि के इन बाणों की चोट से ही डरकर भाग खड़े हुए! तुम झटपट गान्धारी के पेट में जा छिपो। दूसरी जगह तुम्हारे प्राण नहीं बच सकते। यदि भागने का निश्चय ही कर लिया हो तो जब तक महाबाहु अर्जुन के, केंचुल छोड़े हुए विषैले साँप के आकार के, नाराच बाण तुम्हारे शरीर में नहीं प्रवेश करते; जब तक महावीर पाण्डवगण तुम सौ भाइयों को मारकर अपना राज्य नहीं ले लेते; जब तक धर्मराज युधिष्ठिर और संग्रामविजयी वासुदेव क्रोध नहीं करते तथा जब तक महावीर भीमसेन इस विशाल सेना के भीतर घुसकर तुम्हारे भाइयों को गदा के प्रहार से यमपुर नहीं भेजते उसके पहले ही पाण्डवों से मेल करके धर्मराज युधिष्ठिर को उनका राज्य दे दो। पहले पितामह भीष्म ने तुम्हारे बड़े भाई राजा दुर्योधन से कहा था कि तुम समरभूमि में लड़कर किसी तरह पाण्डवों को परास्त नहीं कर सकोगे। इसलिए उनसे सन्धि कर लो। किन्तु मन्दमति दुर्योधन इस पर राज़ी नहीं हुए। अतएव इस समय तुम हिम्मत करके यत्नपूर्वक पाण्डवों के साथ युद्ध करो। मैंने सुना है कि भीमसेन तुम्हारा रक्त पियेंगे। उनकी बात टल नहीं सकती। हे मन्दमति, क्या तुम्हें भीमसेन के पराक्रम का पता नहीं है? जब तुम युद्ध से भागते हो तो भीमसेन से वैर क्यों मोल लिया था? जहाँ पर सात्यकि तुम्हारी सेना का नाश कर रहे हैं, वहाँ शीघ्र जाओ; नहीं तो तुम्हारी सब सेना भाग खड़ी होगी। २१

महाराज! द्रोणाचार्य के ये वचन सुनकर आपके पुत्र दुःशासन चुप हो रहे। आचार्य की बातें मानों सुनी ही नहीं ऐसा भाव दिखाकर वे, संग्राम से कभी न हटनेवाले, शूर म्लेच्छों की सेना साथ लेकर उधर ही चले जिधर सात्यकि गये थे। वहाँ पहुँचकर फिर वे सात्यकि के साथ संग्राम करने लगे। इधर वीरवर द्रोणाचार्य अत्यन्त कुपित होकर वेग से पाण्डवों और पाञ्चालों की सम्मिलित सेना की ओर चले। वे शत्रुओं की सेना में घुस पड़े और बाणों की वर्षा से असंख्य वीरों को भगाने लगे। महारथी आचार्य ऊँचे स्वर से अपना नाम सुनाकर पाण्डव, पाञ्चाल, मत्स्य आदि की सेना के वीरों को मारने लगे। तब तेजस्वी पाञ्चालराज-कुमार वीरकेतु ने समरविजयी द्रोणाचार्य को युद्ध के लिए ललकारा। वीरकेतु ने सन्नतपर्वयुक्त तीक्ष्ण पाँच बाण आचार्य को मारे, एक बाण उनकी ध्वजा में मारा और सात बाण उनके सारथी को भी मारे। महारथी द्रोणाचार्य अत्यन्त यत्न करके भी वीरकेतु को हटा नहीं सके। यह देखकर ३०

हमको बड़ा आश्चर्य हुआ। इसी समय युधिष्ठिर की विजय चाहनेवाले पाञ्चालगण रणभूमि में आचार्य को रुकते देखकर, चारों ओर से घेरकर, उन पर अग्नि-सदृश सुदृढ़ सैकड़ों तोमर और अन्य प्रकार के अस्त्र-शस्त्र बरसाने लगे। किन्तु उन लोगों के बाण और शस्त्र आचार्य के बाणों से राह में ही कट-कुट गये और हवा के वेग से टुकड़े-टुकड़े हो गये मेघों के समान आकाश में दिखाई पड़ने लगे। तब शत्रुनाशन आचार्य ने, सूर्य और अग्नि के समान प्रज्वलित, भयङ्कर बाण धनुष पर चढ़ाकर वीरकेतु के ऊपर छोड़ा। आचार्य के छोड़े हुए उस बाण ने वेग से आकर वीरकेतु ४० की देह को चीर डाला और फिर वह रक्त में नहाकर पृथ्वी में घुस गया। आँधी से उखड़ा हुआ चम्पे का पेड़ जैसे पहाड़ पर से नीचे गिर पड़े वैसे ही पाञ्चाल-राजकुमार वीरकेतु रथ पर से गिर पड़े। इस तरह धनुर्धर महाबली राजकुमार वीरकेतु के मारे जाने पर पाञ्चालों की सेना और भी कुपित होकर चारों ओर से आचार्य पर आक्रमण करने लगी। तब भाई की मृत्यु से शोकार्त होकर महावीर सुधन्वा, चित्रकेतु, चित्रवर्मा और चित्ररथ आचार्य से युद्ध करने के लिए सामने आये और वर्षाऋतु के मेघ जैसे जल बरसाते हैं वैसे ही आचार्य के ऊपर लगातार तीक्ष्ण बाण बरसाने लगे। ब्राह्मणश्रेष्ठ द्रोणाचार्य उन महावीर राजकुमारों के बाणों से अत्यन्त घायल होकर क्रोधित हो उठे और उन्हें मारने के लिए भयानक बाण छोड़ने लगे। कान तक खींच-कर छोड़े गये आचार्य के बाणों की चोट से पीड़ित राजकुमार घबरा गये और निश्चय न कर सके कि क्या करना चाहिए। महायशस्वी द्रोणाचार्य ने उन्हें घबराये हुए देखकर कुछ हँसकर पहले उनके रथ, सारथी और घोड़ों को नष्ट कर दिया और फिर पीछे से भल्ल बाणों से उनके कुण्डल-भूषित सिर काटकर पृथ्वी पर गिरा दिये। इस तरह आचार्य के बाणों से मरकर वे राजपुत्र, देवासुर-युद्ध में मरनेवाले दानवों की तरह, रथों से पृथ्वी पर गिर पड़े। राजन्! ५० उन्हें मारकर महापराक्रमी द्रोणाचार्य अपना सुवर्णमण्डित दुर्द्धर्ष धनुष नचाने लगे।

अपने वीर भाइयों की मृत्यु देखकर महावीर धृष्टद्युम्न बहुत ही शोकाकुल हुए। उनकी आँखों से आँसू गिरने लगे। इसके बाद वे क्रुद्ध होकर द्रोणाचार्य के सामने आये और उनके ऊपर तीक्ष्ण बाण बरसाने लगे। धृष्टद्युम्न के बाणों की वर्षा में आचार्य द्रोण छिप गये। यह देखकर युद्धभूमि में एकाएक हाहाकार मच गया। किन्तु महारथी द्रोणाचार्य धृष्टद्युम्न के बाणों के प्रहार से तनिक भी व्यथित नहीं हुए। वे कुछ मुसकाते हुए [उन बाणों को व्यर्थ करके] धृष्टद्युम्न के साथ युद्ध करने लगे। इसी समय महावीर धृष्टद्युम्न ने बहुत ही क्रोध करके आचार्य की छाती में बड़े विकट नब्बे बाण मारे। उन बाणों की गहरी चोट से महायशस्वी आचार्य मूर्च्छित हो गये। महारथी धृष्टद्युम्न ने आचार्य को, अचेत पाकर, मार डालने का इरादा किया। क्रोध के मारे उनकी आँखें लाल हो रही थीं। धृष्टद्युम्न धनुष रखकर, तलवार लेकर, उनका सिर काटने के लिए फुर्ती के साथ अपने रथ से उनके रथ पर कूद गये।

धृष्टद्युम्न धनुष रखकर अपने रथ से उनके रथ पर कूद गये।—पृ० २४४५

किन्तु उसी समय आचार्य सचेत हो गये। वध की इच्छा से आये हुए धृष्टद्युम्न को देखकर वे विचलित नहीं हुए। वे हाथ में धनुष लेकर, निकट युद्ध के लिए उपयोगी, बालिश्त भर के छोटे-छोटे बाण धृष्टद्युम्न को मारने लगे। महाबली धृष्टद्युम्न आचार्य के बाणों से घायल होकर फ़ौरन् उनके रथ से अपने रथ पर चले गये और धनुष लेकर फिर आचार्य पर बाण बरसाने लगे। द्रोणाचार्य भी उन पर प्रहार कर रहे थे। त्रैलोक्य के राज्य की इच्छा रखनेवाले इन्द्र और प्रह्लाद के समान वे दोनों महाघोर युद्ध करने लगे। दोनों रण-निपुण वीर विचित्र मण्डल और यमक आदि विविध गतियाँ दिखाकर चारों ओर विचरते हुए अनेक प्रकार के बाणों से एक दूसरे के अंगों को छिन्न-भिन्न करने लगे।

६०

वीरों को भी मोहित करनेवाला युद्ध करनेवाले उन दोनों महारथियों ने, वर्षा ऋतु के दो मेघों की जलधारा के समान, बाण बरसाकर एकदम पृथ्वीमण्डल, आकाशमण्डल और सब दिशाओं को बाणों से व्याप्त कर दिया। रणभूमि में उपस्थित सब सैनिक क्षत्रिय योद्धा बारम्बार धन्य-धन्य कहते हुए उस युद्ध की प्रशंसा करने लगे। इस अवसर में पाञ्चालगण यह कहकर चिल्लाने लगे कि जब आचार्य धृष्टद्युम्न के साथ युद्ध करने लगे हैं तब वे अवश्य ही हमारे वश में हो जायँगे; धृष्टद्युम्न अवश्य उन्हें परास्त करेंगे। उधर महाबाहु द्रोणाचार्य ने, वृक्ष से पके फल की तरह, धृष्टद्युम्न के सारथी का सिर काट गिराया। सारथी के न रहने से धृष्टद्युम्न के घोड़े रथ को लेकर इधर-उधर भागने लगे। तब मौक़ा पाकर द्रोणाचार्य पाञ्चालों और सृञ्जयों की सेना से युद्ध करने लगे। प्रबल प्रतापी शत्रुदमन द्रोणाचार्य इस तरह पाण्डवों और पाञ्चालों को परास्त करके फिर अपने व्यूह के द्वार पर डट गये। पाण्डवों और पाञ्चालों में से कोई उन्हें परास्त नहीं कर सका।

७०

७३

एक सौ तेईस अध्याय

दुःशासन की हार होना

सञ्जय कहते हैं—महाराज ! इधर वीर दुःशासन जलधारा बरसानेवाले मेघ के समान बाण बरसाते हुए सात्यकि के पास चले। उन्होंने सात्यकि को पहले साठ और फिर सोलह तीक्ष्ण बाण मारे; किन्तु महावीर सात्यकि उनके प्रहार से तनिक भी व्यथित न होकर मैनाक पर्वत की तरह अटल खड़े रहे। तब कुरुश्रेष्ठ दुःशासन ने अनेक देशों के वीर योद्धाओं के साथ बाण बरसाते हुए, मेघगर्जन-सदृश सिंहनाद से दसों दिशाओं को कँपाते हुए, वीर सात्यकि पर पूरे वेग से आक्रमण किया। यह देखकर सात्यकि ने क्रोध से आगे बढ़कर बाणों की वर्षा से दुःशासन आदि को अदृश्य सा कर दिया। दुःशासन के साथी अन्यान्य वीरगण सात्यकि के बाणों के डर से सेना के सामने ही भागने लगे। उस समय अकेले दुःशासन समरभूमि में ठहरकर सात्यकि को बाण मारने लगे। उन्होंने सात्यकि के घोड़ों को चार, सारथी को तीन और सात्यकि को सौ बाणों से घायल करके सिंहनाद किया। शत्रुनाशन सात्यकि क्रोध से प्रज्वलित हो उठे। उन्होंने इतने बाण छोड़े कि दुःशासन का रथ, सारथी और ध्वजा तक उनमें छिप गई। मकड़ा जैसे मक्खी को अपने जाल में फँसा लेता है वैसे
१० ही उन्होंने दुःशासन को बाणजाल में फँसा दिया।

राजन् ! राजा दुर्योधन ने दुःशासन को इस तरह बाणजाल में फँसते देखकर युद्ध-विशारद क्रूरकर्मा त्रिगर्त देश के तीन हज़ार वीरों को सात्यकि से लड़ने के लिए भेजा। उन्होंने दुर्योधन की आज्ञा से सात्यकि के सामने जाकर, तत्परता के साथ समर से न हटने का प्रण करके, चारों ओर से सात्यकि को रथों से घेरकर उनपर तीक्ष्ण बाण बरसाना शुरू किया। उस समय सात्यकि ने उन बाणवर्षा करनेवाले त्रिगर्त देश के योद्धाओं में से पाँच सौ प्रधान वीरों को मार डाला। वे हवा के वेग से उखड़े या टूटे हुए बड़े-बड़े वृक्षों की तरह गिरने लगे। सात्यकि के बाणों से कटे, रक्त से भीगे हुए, असंख्य हाथी, सोने के गहनों से भूषित घोड़े और ध्वजा आदि के गिरने से वह समरभूमि खिले हुए ढाक के पेड़ों से व्याप्त सी जान पड़ने लगी। सात्यकि के बाणों से घायल होकर कौरव पक्ष के सब योद्धा, दलदल में फँसे हाथियों के समान, सङ्कट में पड़कर निःसहाय हो गये। महानाग जैसे गरुड़ के डर से बिल के भीतर घुस जाते हैं वैसे ही वे कौरव पक्ष के सैनिक, सात्यकि के डर से विह्वल होकर, द्रोणाचार्य के पास भागकर पहुँचे।

इस तरह सात्यकि घोर विषैले साँप-सदृश तीक्ष्ण बाणों के द्वारा पाँच सौ योद्धाओं को
२१ मारकर धीरे-धीरे अर्जुन के पास जाने लगे। इसी अवसर में आपके पुत्र दुःशासन ने सन्नत-पर्वयुक्त नव बाण सात्यकि को मारे। महाधनुर्द्धर सात्यकि ने भी सुवर्णपुङ्खशोभित पाँच बाण

उनको मारे। दु:शासन ने हँसते-हँसते सात्यकि को पहले तीन और फिर पाँच बाण मारे। महाबली सात्यकि ने यह देखकर उनके ऊपर पाँच बाण छोड़ और फिर धनुष भी काट डाला। दु:शासन को यों अचम्भे में डालकर वे अर्जुन की ओर बढ़े। अब दु:शासन ने क्रुद्ध होकर उन्हें मार डालने के लिए लोहे की भयानक शक्ति फेंकी। वीर सात्यकि ने फुर्ती के साथ कङ्क-पत्र-शोभित तीक्ष्ण बाणों से उस शक्ति के सैकड़ों टुकड़े कर डाले। महातेजस्वी दु:शासन ने दूसरा धनुष लेकर सात्यकि को बाणों से घायल किया और सिंह की तरह गर्जना की। वह सिंहनाद सुनकर पराक्रमी सात्यकि क्रोध से अधीर हो उठे। उन्होंने दु:शासन को घबराहट में डालकर, उनकी छाती में अग्निशिखा के समान बहुत से बाण मारकर, तीन और फिर बड़े भयानक आठ बाण मारे। वीर दु:शासन ने सात्यकि को बीस बाण मारे। तब अस्त्र जाननेवालों ३० में प्रधान सात्यकि ने दु:शासन की छाती में तीन सन्नतपर्व बाण मारे और फिर बहुत ही उग्र कई बाणों से उनके सारथी और घोड़ों को मार डाला। एक भल्ल बाण से दु:शासन का धनुष, पाँच भल्लों से दस्ताना, दो भल्लों से ध्वजा और रथशक्ति को काटकर अन्य तीक्ष्ण बाणों से उनके दोनों पृष्ठरक्षकों को मार डाला। त्रिगर्तसेना के सेनापति ने जब देखा कि दु:शासन का धनुष कट गया, घोड़े और सारथी मर गये तथा रथ भी नष्ट हो गया तब उसने फुर्ती के साथ उनको अपने रथ पर बिठा लिया। वह उन्हें युद्धस्थल से हटा ले गया। महावीर सात्यकि ने दु:शासन को मार डालने के लिए दम भर उसका पीछा किया; किन्तु फिर यह स्मरण करके कि भीमकर्मा भीमसेन ने सभा में सबके सामने आपके सब पुत्रों को मारने की प्रतिज्ञा कर रक्खी है, फिर दु:शासन पर प्रहार नहीं किया। राजन्! शिनिवंशी सत्यपराक्रमी सात्यकि, दु:शासन को परास्त करके, उसी मार्ग से आगे बढ़ने लगे जिस मार्ग से अर्जुन गये थे। ३७

एक सौ चौबीस अध्याय

दुर्योधन के युद्ध का वर्णन

धृतराष्ट्र ने कहा—हे सञ्जय! मेरी सेना में क्या कोई ऐसे महारथी योद्धा नहीं थे, जो अर्जुन के पास अकेले जाते हुए सात्यकि को रोक लेते? इन्द्र के समान पराक्रमी, सत्यविक्रमी सात्यकि ने दानव-नाशन इन्द्र की तरह अकेले ही समरभूमि में इतना बड़ा कार्य कर दिखाया। सात्यकि क्या सारी कौरव-सेना को मारकर, राह को बिलकुल ख़ाली करके, उधर से गये थे अथवा उधर बहुत से वीर मर चुके थे जिधर से सात्यकि गये? हे सञ्जय! तुम सात्यकि के द्वारा रण में जिस अद्भुत कर्म का होना बताते हो उसे स्वयं इन्द्र भी तो नहीं कर सकते! यादवश्रेष्ठ सात्यकि के

अश्रद्धेय अचिन्त्य अद्भुत पराक्रम का हाल सुनकर मैं बहुत ही व्यथित हो रहा हूँ। हे सञ्जय! तुम जैसा वर्णन कर रहे हो उससे तो यही जान पड़ता है कि मेरे पुत्र किसी तरह बच नहीं सकते। सात्यकि ने अकेले ही बहुत सी सेना का संहार कर डाला। अब तुम यह हाल मुझे सुनाओ कि अकेले सात्यकि बहुत सी सेना को लाँघकर किस तरह अर्जुन के पास गये।

सञ्जय ने कहा—महाराज! आपकी सेना में असंख्य रथ, हाथी, घोड़े और पैदल योद्धा थे। आपकी सेना का उद्योग अपूर्व था। उतनी सेना कभी किसी युद्ध में एकत्र न हुई होगी। ऐसा जान पड़ता था कि यह सेना प्रलय कर देगी। आपकी सेनाओं में इतने देशों के शूर योद्धा आये थे कि उनकी गिनती नहीं की जा सकती। देखने के लिए आये हुए देवता और सिद्ध-चारण आदि आपस में कह रहे थे कि संसार में इससे अधिक सेना एकत्र न हो सकेगी। राजन्! जयद्रथ-वध की प्रतिज्ञा सुनकर द्रोणाचार्य ने जैसा व्यूह बनाया था वैसा व्यूह और नहीं हो सकता। दोनों ओर से आक्रमण के लिए दौड़नेवाले सेना के झुण्डों में ऐसा कोलाहल हो रहा था मानों तूफ़ान से उमड़े हुए सागरों का घोर गर्जन सुनाई पड़ रहा हो। आपके और पाण्डवों के दल में हज़ारों राजा लोग अपनी-अपनी सेना लेकर सम्मिलित हुए थे। समर में प्रशंसनीय कर्म करनेवाले कुपित वीरों का लोमहर्षण शब्द सुनाई पड़ रहा था।

उस समय महावली भीमसेन, धृष्टद्युम्न, नकुल, सहदेव और धर्मराज युधिष्ठिर अपने सैनिकों से पुकार-पुकारकर कहने लगे—तुम लोग शीघ्र आओ, दौड़ो, प्रहार करो। महा-तेजस्वी अर्जुन और सात्यकि शत्रुसेना के भीतर गये हैं। इस समय ऐसा यत्न करो, जिसमें वे शीघ्र ही सहज में जयद्रथ के पास पहुँचकर उसको मार सकें। आज अगर महावीर अर्जुन और सात्यकि मारे गये तो कौरवगण कृतार्थ और हम परास्त होंगे। अतएव तुम सब मिल-कर यत्नपूर्वक उसी तरह कौरवसेना को मथ डालो जिस तरह तूफ़ान महासागर को मथ डालता है। इस तरह धर्मराज आदि की आज्ञा सुनकर महातेजस्वी योद्धा लोग, जीवन का मोह छोड़कर, कौरवों पर टूट पड़े। वे लोग अपने सुहृद पाण्डवों के हित के लिए शस्त्रप्रहार से निहत होकर स्वर्ग जाने में तनिक भी शङ्कित नहीं हुए। कौरवदल के योद्धा भी यश पाने के लिए उत्सुक होकर घोर युद्ध करते हुए आगे वढ़ने लगे।

राजन्! उस लोमहर्षण युद्ध में वीर सात्यकि सारी कौरवसेना को जीतते हुए अर्जुन की ओर बढ़ते ही जा रहे थे। कवचों पर सूर्य की किरणें पड़ने से जो चमक पैदा होती थी उससे सैनिकों की आँखों में चकाचौंध लगती थी। महाराज! उस समय वीर और मानी राजा दुर्योधन ने शूर पाण्डवों को व्यूह तोड़ने का प्रयत्न करते देखकर उनकी भारी सेना के भीतर प्रवेश किया। तब पाण्डवों की सेना के साथ दुर्योधन का महाभयङ्कर और जनसंहारकारी युद्ध होने लगा।

धृतराष्ट्र ने कहा—हे सञ्जय ! मेरे पुत्र राजा दुर्योधन ने शत्रुसेना में घुस करके और सङ्कट में पड़कर युद्ध में पीठ तो नहीं दिखाई ? एक तो अकेले बहुत लोगों से लड़ना, उस पर स्वयं राजा का ऐसा करना, मुझे बहुत ही विषम जान पड़ता है। दुर्योधन सदा सुख में पला है ; वह लक्ष्मी और प्रजा का स्वामी है। वह अकेला ही बहुत लोगों से युद्ध करने जाकर विषम विपत्ति देख रण से भाग तो नहीं खड़ा हुआ ?

सञ्जय ने कहा—राजन् ! आपके पुत्र दुर्योधन ने अकेले ही अनेक लोगों के साथ बड़ा अद्भुत युद्ध किया। मैं सब हाल कहता हूँ, सुनिए। जैसे मस्त हाथी कमल के वन को रौंदता है वैसे ही महावीर दुर्योधन पाण्डवों की सेना को रौंदने लगे। महावीर भीमसेन और पाञ्चालगण अपनी सेना को नष्ट होते देखकर दुर्योधन की ओर वेग से दौड़ पड़े। तब वीर दुर्योधन ने ३१ भीमसेन को दस, नकुल को तीन, सहदेव को तीन, युधिष्ठिर को सात, विराट और द्रुपद को छः, शिखण्डी को सौ, धृष्टद्युम्न को बीस और द्रौपदी के पाँचों पुत्रों को तीन-तीन तीक्ष्ण बाण मारे। क्रुद्ध काल जैसे प्रजा का संहार करता है वैसे ही राजा दुर्योधन सैकड़ों अन्य योद्धाओं, रथों और हाथियों को बाणों से काट-काटकर गिराने लगे। वे कब बाण निकालते, कब धनुष पर चढ़ाते और कब छोड़ते थे, यह नहीं देख पड़ता था। यही देख पड़ता था कि वे शिक्षा और अस्त्र-बल के प्रभाव से शत्रुओं को नष्ट कर रहे हैं और उनका सुवर्णपृष्ठ धनुष मण्डलाकार घूम रहा है। तब राजा युधिष्ठिर ने दो भल्ल बाणों से दुर्योधन का वह सुदृढ़ भारी धनुष काटकर उनको तीक्ष्ण दस बाण मारे। वे बाण दुर्योधन के कवच को तोड़कर पृथ्वी में घुस गये। देवताओं ने वृत्रासुर-वध के समय जैसे इन्द्र को घेर लिया था वैसे ही पाण्डवपक्ष के सब योद्धा युधिष्ठिर को चारों ओर से घेरकर उनकी रक्षा करने लगे। अब पराक्रमी दुर्योधन ने दूसरा धनुष लेकर ४० "ठहर जाओ, ठहर जाओ" कहकर धर्मराज पर आक्रमण किया। विजयाभिलाषी पाण्डवगण दुर्योधन को आते देख प्रसन्न होकर उनकी ओर दौड़े। इधर [दुर्योधन की रक्षा करने के लिए] द्रोणाचार्य भी आ पहुँचे और प्रचण्ड आँधी के झोंकों से सञ्चालित मेघों को जैसे महापर्वत रोकता है वैसे ही सब पाञ्चाल-सेना को रोकने लगे। राजन् ! उस समय कौरवों और पाण्डवों का लोमहर्षण संग्राम होने लगा। समरभूमि लाशों से, महाश्मशान के समान, भयङ्कर दिखाई पड़ने लगी। उसी समय जिधर महाबाहु अर्जुन थे उधर रोमाञ्चकारी महा-कोलाहल सुनाई पड़ा। महावीर अर्जुन और सात्यकि कौरवपक्ष की सेना से और व्यूह के द्वार पर स्थित द्रोणाचार्य पाण्डवों की सेना से घोर युद्ध करने लगे। इन वीरों के क्रुद्ध होकर युद्ध करने से भयङ्कर संहार हुआ। ४७

एक सौ पचीस अध्याय

द्रोणाचार्य्य के पराक्रम का वर्णन

सञ्जय कहते हैं—हे नर-नायक! इसके बाद तीसरा पहर होने पर फिर सोमकों के साथ आचार्य भयङ्कर युद्ध करने लगे। आपके हितचिन्तक, महाधनुर्द्धर, वीरवरों में अग्रगण्य द्रोणाचार्य लाल रङ्ग के घोड़ों से शोभित रथ पर बैठे हुए धीमी चाल से पाण्डव-सेना की ओर बढ़ने लगे। वे विचित्र पुङ्खयुक्त तीक्ष्ण बाणों से प्रधान-प्रधान योद्धाओं को मारते हुए समरभूमि में विचर रहे थे। उस समय केकय देश के राजकुमार पाँचों भाइयों में सबसे बड़े युद्धनिपुण महावीर बृहत्क्षत्र महामेघ जैसे गन्धमादन पर्वत पर लगातार जल बरसावें वैसे अत्यन्त तीक्ष्ण बाण बरसाकर आचार्य को पीड़ित करने लगे। बाणों की मार से कुपित होकर आचार्य ने उनको क्रुद्ध साँप-सदृश सुवर्णपुङ्ख-शोभित पन्द्रह बाण मारे। महाबाहु बृहत्क्षत्र ने आचार्य के हर एक बाण को पाँच-पाँच बाणों से काट करके व्यर्थ कर दिया। आचार्य ने उनकी फुर्ती देखकर हँसकर उन पर फिर सन्नतपर्वयुक्त आठ उग्र बाण चलाये। बृहत्क्षत्र ने आचार्य के १० बाणों को आते देखकर अपने उतने ही तीक्ष्ण बाणों से काट डाला। बृहत्क्षत्र का यह दुष्कर कार्य देखकर कौरवदल के सैनिक बहुत विस्मित हुए। तब बृहत्क्षत्र की प्रशंसा करते हुए द्रोणाचार्य ने उनके ऊपर दिव्य ब्रह्मास्त्र छोड़ा। महाबाहु बृहत्क्षत्र ने भी फुर्ती के साथ दुर्जय ब्रह्मास्त्र को ब्रह्मास्त्र से ही शान्त कर दिया। उन्होंने फिर द्रोणाचार्य को सुवर्णपुङ्खयुक्त पैने साठ बाण मारे। तब वीरवर द्रोण ने बृहत्क्षत्र को घोर नाराच बाण मारा। वह बाण बृहत्क्षत्र के कवच को छिन्न-भिन्न करता हुआ वैसे ही पृथ्वी में घुस गया जैसे कोई काला नाग बिल में प्रवेश करे। आचार्य के बाणों की गहरी चोट खाने पर वीर बृहत्क्षत्र की आँखें क्रोध से लाल हो आईं। उन्होंने सत्तर तीक्ष्ण बाण आचार्य को और एक भयङ्कर बाण उनके सारथी को मर्मस्थल में मारा। बृहत्क्षत्र के बाणों से महारथी द्रोणाचार्य बहुत पीड़ित हुए। उन्होंने भी अनेक तीक्ष्ण बाण मारकर बृहत्क्षत्र को व्याकुल कर दिया। फिर चार बाणों से उनके चारों घोड़ों को और एक बाण २० से सारथी को रथ से गिरा दिया, अन्य दो बाणों से छत्र और ध्वजा काट डाली और एक भयानक नाराच बाण से बृहत्क्षत्र का हृदय फाड़ करके उन्हें रथ से गिरा दिया।

केकयराज वीर बृहत्क्षत्र के मारे जाने पर शिशुपाल के पुत्र धृष्टकेतु अत्यन्त कुपित होकर सारथी से बोले—हे सूत! सुदृढ़ कवचधारी आचार्य द्रोण जहाँ पर सारी केकय और पाञ्चाल-सेना का नाश कर रहे हैं वहाँ मेरा रथ ले चलो। यह सुनकर उनका सारथी काम्बोज देश के वेगगामी घोड़ों को हाँककर द्रोणाचार्य के पास रथ ले गया। महाबली चेदिराज धृष्टकेतु, आग में कूदने को तैयार पतङ्ग की तरह, मरने के लिए आचार्य के सामने पहुँचे। उन्होंने

आचार्य के रथ, ध्वजा और घोड़ों को ताककर साठ बाण मारे और आचार्य के ऊपर भी असंख्य तीक्ष्ण बाणों की वर्षा की। सोता हुआ बाघ जैसे छेड़ने से कुपित होता है वैसे ही महावीर द्रोण भी धृष्टकेतु के बाण-प्रहार से कुपित हो उठे। उन्होंने एक क्षुरप्र बाण से धृष्टकेतु के धनुष के दो टुकड़े कर डाले। तब धृष्टकेतु ने जल्दी से दूसरा धनुप लेकर कङ्कपत्रयुक्त बाण आचार्य को मारे। महावीर द्रोण ने चार बाणों से धृष्टकेतु के चारों घोड़े मारकर हँसते-हँसते उनके सारथी का सिर काट डाला। फिर धृष्टकेतु को तीक्ष्ण पचीस बाण मारे। तब महावीर धृष्टकेतु पत्थर की बहुत भारी सुवर्ण-भूषित भयानक गदा लेकर रथ से कूद पड़े। उन्होंने वह भयानक गदा आचार्य के ऊपर चलाई। वीर द्रोणाचार्य ने कुपित काली नागिन या कालरात्रि के समान उस गदा को, आते देख, बहुत से बाण मारकर फुर्ती के साथ काट डाला। द्रोणाचार्य के बाणों से टुकड़े-टुकड़े होकर उस गदा के पृथ्वी पर गिरने से बड़ा भारी शब्द हुआ। तब क्रोधविह्वल महावीर धृष्टकेतु ने उस गदा को व्यर्थ होते देख द्रोणाचार्य के ऊपर तीक्ष्ण तोमर और सुवर्णभूपित भयानक शक्ति फेंकी। द्रोणाचार्य ने पाँच-पाँच बाणों से तोमर और शक्ति को भी काट डाला। गरुड़ के काटे हुए साँपों के समान दोनों शस्त्र कटकर पृथ्वी पर गिर पड़े। इसके बाद प्रबल प्रतापी आचार्य ने धृष्टकेतु को मारने के लिए एक अत्यन्त तीक्ष्ण बाण छोड़ा। द्रोणाचार्य के उस बाण ने धृष्टकेतु का कवच तोड़कर हृदय विदीर्ण कर डाला। इस तरह धृष्टकेतु को मार करके वह बाण, कमलवन में घुसनेवाले हंस की तरह, पृथ्वी में घुस गया। भूखा नीलकण्ठ पक्षी जैसे क्षुद्र पतङ्ग को ग्रस लेता है वैसे ही महारण में शूर द्रोणाचार्य ने धृष्टकेतु को मार डाला। ३०

हे राजेन्द्र! चेदिराज धृष्टकेतु के मारे जाने पर उनके पुत्र ने कुपित होकर द्रोणाचार्य का सामना किया। वह भी शूर और श्रेष्ठ अस्त्रों का जानकार था; किन्तु बली व्याघ्र जैसे हिरन के बच्चे को मार डालता है वैसे ही आचार्य ने हँसते-हँसते उसे भी मार डाला। हे कुरुराज! ४०

इस प्रकार पाण्डव-सेना को नष्ट होते देखकर महावीर जरासन्ध के पुत्र द्रोणाचार्य के सामने आये और मेघ जैसे सूर्य को छिपा लेते हैं वैसे ही उन्होंने बाणवर्षा से आचार्य को अदृश्य सा कर दिया। क्षत्रियमर्दन द्रोणाचार्य ने उसकी फुर्ती देखकर उस पर सैकड़ों-हज़ारों बाण बरसाये और सब धनुर्द्धर योद्धाओं के सामने ही जरासन्ध के पुत्र को मार डाला। हे नरनाथ! उस समय रणभूमि में जो-जो वीर योद्धा उन यम-सदृश द्रोणाचार्य से लड़ने के लिए सामने आते थे, उन सबको वे देखते ही देखते मार डालते थे। महाराज! इसके बाद वीर द्रोणाचार्य समरभूमि में अपना नाम सुनाकर हज़ारों-लाखों बाणों से पाण्डव-सेना को पीड़ित करने लगे। सिल्ली पर घिसकर तेज़ किये गये और द्रोणाचार्य के नाम से शोभित वे बाण सैकड़ों मनुष्यों, हाथियों और घोड़ों के प्राण हरने लगे। इन्द्र के हाथों से मारे जा रहे असुरों के समान आचार्य के हाथों मारे जाते हुए पाञ्चालसेना के वीरगण शीत से पीड़ित गायों की तरह डर से काँपने लगे।

हे भरतवंशावतंस! इस तरह आचार्य के बाणों से सब सेना का संहार होने पर पाण्डव-पक्ष में कोलाहल सुन पड़ने लगा। एक तो सामने सूर्य का असह्य तेज, दूसरे द्रोणाचार्य के तीक्ष्ण बाणों की असह्य चोट का सामना था! पाञ्चालसेना के लोग बहुत ही व्याकुल और भय से विह्वल हो उठे। द्रोण के बाणों की वर्षा से पाञ्चालसेना के वीर महारथी ऐसे मोहित हो गये जैसे किसी ने उनके पैर पकड़ लिये हों। इसी समय चेदि, सृञ्जय, काशी और कोशल आदि देशों की सेनाओं के वीरगण द्रोणाचार्य से युद्ध करने के लिए आगे बढ़े। चेदि, पाञ्चाल, सृञ्जय आदि सब "द्रोण को मारो, द्रोण को मारो" कहते हुए आचार्य पर आक्रमण करने चले। वे सब वीर एकत्र होकर अपनी पूरी शक्ति से महातेजस्वी द्रोणाचार्य को मार डालने का यत्न करने लगे। उन्हें इस तरह अपने वध के लिए विशेष यत्न करते देखकर द्रोणाचार्य ने बाण बरसाना शुरू किया। उन्होंने दम भर में चेदि आदि वीरों को विनष्ट कर दिया। चेदिगण जिनमें प्रधान थे, उन वीरों का समूह क्षीण होने पर द्रोणाचार्य के बाणों से पीड़ित पाञ्चालगण डर से काँपने लगे। द्रोणाचार्य का उग्र रूप और भयानक कर्म देखकर सब सेना अपनी रक्षा के लिए महाबली भीमसेन और धृष्टद्युम्न को चिल्ला-चिल्लाकर पुकारने लगी। उस समय भीमसेन आप ही आप कहने लगे कि इन ब्राह्मण द्रोण ने अवश्य ही दुष्कर तप किया है तभी तो उसके प्रभाव से ये युद्ध में क्रुद्ध होकर हमारे पक्ष के श्रेष्ठ-श्रेष्ठ क्षत्रियों को मार रहे हैं। क्षत्रिय का धर्म युद्ध है और ब्राह्मणों का परम धर्म तपस्या। तपस्वी और कृत-विद्य ब्राह्मण केवल दृष्टिपात से भस्म कर सकता है। अग्नि के समान तेजस्वी द्रोणाचार्य के अस्त्रों की आग में बहुत से प्रधान-प्रधान क्षत्रिय भस्म हो गये हैं। ये महातेजस्वी महारथी द्रोणाचार्य अपने बल, उत्साह और शक्ति के अनुसार सब प्राणियों को मोहित करते हुए हमारी सेना का संहार कर रहे हैं।

तब महाबली चेकितान ने आचार्य पर आक्रमण किया। —पृ० २४९३

राजन्! भीमसेन के ये वचन सुनकर धृष्टद्युम्न के पुत्र महापराक्रमी महावीर क्षत्रधर्मा क्रोधान्ध द्रोणाचार्य के सामने पहुँचे। उन्होंने अर्धचन्द्र बाण से आचार्य का बाणयुक्त धनुष काट डाला। क्षत्रियदल-दलन द्रोणाचार्य ने और अधिक क्रोधित होकर दूसरा सुदृढ़ धनुष हाथ में लिया। बलवान् आचार्य ने शत्रुसेना को नष्ट करनेवाला एक बाण धनुष पर चढ़ाकर, कान तक खींचकर, क्षत्रधर्मा को मारा। वह बाण क्षत्रधर्मा के प्राण लेकर पृथ्वी में घुस गया। क्षत्रधर्मा का हृदय फट गया और वे मरकर पृथ्वी पर गिर पड़े। धृष्टद्युम्न के पुत्र की मृत्यु देखकर पाञ्चालसेना डर के मारे काँपने लगी। तब महाबली चेकितान ने आचार्य पर आक्रमण किया। उन्होंने आचार्य की छाती में तीव्र दस बाण मारे। फिर आचार्य के सारथी को चार और घोड़ों को भी चार बाण मारे। आचार्य ने भी उनकी छाती और हाथों में तीन तीव्र बाण मारकर सात बाणों से ध्वजा काट डाली। फिर तीन बाणों से सारथी को मार गिराया। सारथी के मरने पर चेकितान के घोड़े रथ को ले भागे। द्रोणाचार्य ने बाण मारकर घोड़ों को व्याकुल कर दिया। चेकितान को घोड़े-रथ-सारथी से हीन देख द्रोणाचार्य ने शूर चेदि, पाञ्चाल, सृञ्जय आदि को मारना और भगाना शुरू किया। उस समय साँवले वृद्ध द्रोणाचार्य—जिनकी अवस्था चार सौ वर्ष की थी और जिनके कानों तक के बाल पक गये थे—सोलह वर्ष के युवा की तरह फुर्ती और उत्साह के साथ युद्ध कर रहे थे। निर्भय भाव से समरभूमि में विचरते हुए द्रोणाचार्य को उनके शत्रु इन्द्र समझ रहे थे। ६०

महाराज! तब महाबाहु बुद्धिमान् द्रुपद राजा ने कहा—बाघ जैसे क्षुद्र मृगों को मारता है वैसे ही ये, लोभ के मारे दुर्योधन का पक्ष लेनेवाले, द्रोणाचार्य क्षत्रियों को मार रहे हैं। दुर्मति दुर्योधन मरकर नरक में घोर यातना भोगेगा; क्योंकि उसी के लोभ के कारण अकारण समर में वीर क्षत्रिय मारे जा रहे हैं। कटे हुए बैलों की तरह ये सब क्षत्रिय रक्त में नहाये हुए पृथ्वी पर पड़े हैं; कुत्ते और गीदड़ इन्हें खा रहे हैं। राजन्! अक्षौहिणीपति राजा द्रुपद यों कहकर, पाण्डवों को आगे करके, तेज़ी के साथ द्रोणाचार्य पर आक्रमण करने चले। ६८

एक सौ छब्बीस अध्याय

युधिष्ठिर का घबराकर अर्जुन और सात्यकि का हाल जानने के
लिए उनके पास भीमसेन को भेजना

सञ्जय कहते हैं—महाराज! पाण्डवों के व्यूहों को द्रोणाचार्य ने इस तरह विमर्दित किया कि पाञ्चाल और सोमक लोग उनसे बहुत दूर चले गये। प्रलयकाल-तुल्य जगत् का नाश

करनेवाला लोमहर्षण युद्ध होने लगा। पराक्रमी आचार्य युद्धभूमि में बारम्बार सिंहनाद कर रहे थे। पाञ्चालों की सेना कम हो चली और पाण्डवों की सेना बहुत ही पीड़ित हुई। उस समय धर्मराज युधिष्ठिर को ऐसा कोई वीर न देख पड़ा, जो उनकी सेना की रक्षा करता। हे राजेन्द्र! वे बारम्बार यह सोचकर भी कुछ निश्चय न कर सके कि किस तरह उनकी सेना की रक्षा हो। इसके बाद अर्जुन को देखने के लिए व्याकुल होकर वे चारों ओर देखने लगे; किन्तु अर्जुन या श्रीकृष्ण न देख पड़े। केवल अर्जुन के रथ की वानरचिह्नयुक्त ऊँची ध्वजा देख पड़ी और गाण्डीव धनुष का भयानक शब्द सुनाई पड़ा। व्यथित युधिष्ठिर को महारथी सात्यकि भी नहीं देख पड़े। सात्यकि, अर्जुन और वासुदेव को न देखकर धर्मराज युधिष्ठिर बहुत ही चिन्तित हुए; उन्हें किसी तरह शान्ति नहीं मिलती थी। लोकापवाद से डरकर धर्मराज, सात्यकि के रथ की ओर देखते हुए, सोचने लगे कि मैंने मित्रों को अभय देनेवाले सत्यपराक्रमी सात्यकि को अर्जुन की ख़बर लाने के लिए भेज दिया है। पहले मुझे एक अर्जुन के लिए
१० ही चिन्ता थी, पर अब मुझे सात्यकि और अर्जुन दोनों के लिए चिन्ता हो रही है। सात्यकि और अर्जुन दोनों के कुशल-समाचार मालूम होने चाहिएँ। अर्जुन की ख़बर लाने के लिए तो सात्यकि को भेजा था; अब सात्यकि की ख़बर लाने के लिए किसको भेजूँ? अगर मैं सात्यकि के कुशल-समाचार पाने का यत्न न करके अपने भाई अर्जुन की ही खोज करूँगा तो लोग मेरी निन्दा करेंगे। सो लोकापवाद के डर से मैं इस समय महाबली भीमसेन को सात्यकि का पता लगाने के लिए भेजूँगा। ऐसा न करने से लोग कहेंगे कि धर्मराज ने भाई की ख़बर लाने के लिए सात्यकि को तो भेज दिया, लेकिन उनकी ख़बर न ली। शत्रुनाशन अर्जुन मुझे जितने प्यारे हैं, उतने ही प्रिय वृष्णिवीर सात्यकि भी हैं। मैंने महावीर सात्यकि को बड़ा भारी काम सौंपकर भेजा है। वे भी मित्र के अनुरोध और अपने गौरव-लाभ का विचार करके, महासागर में मगर की तरह, शत्रुओं की भारी सेना के भीतर घुस गये हैं। महारथी सात्यकि के साथ ऐसे सैनिक युद्ध कर रहे हैं जो समर से पीछे नहीं हटते। यह उन्हीं का घोर कोलाहल सुन पड़ रहा है। अतएव मैं इस समय अवसर के अनुरूप कर्तव्य का निश्चय करके अर्जुन और सात्यकि के पास भीमसेन को भेजना ही ठीक समझता हूँ। इस लोक में ऐसा
२० कोई कार्य नहीं जिसे महाबली भीमसेन न कर सकते हों। वे अकेले ही अपने बाहुबल के प्रभाव से पृथ्वी के सब वीरों से युद्ध कर सकते हैं। हम उन्हीं के बाहुबल के भरोसे वनवास के कष्टों से उबरकर लौटे हैं और अपराजित समझे जाते हैं। वही महाबली भीमसेन, अर्जुन और सात्यकि के पास जाकर, अवश्य उनकी सहायता कर सकेंगे। सात्यकि और अर्जुन दोनों ही सब प्रकार के अस्त्रों के ज्ञान में निपुण हैं; ख़ासकर श्रीकृष्ण उनके रक्षक हैं। उनके लिए तो किसी तरह चिन्ता करना उचित नहीं; किन्तु फिर भी मेरा मन उनकी कुशल जानने के लिए

बहुत उत्कण्ठित हो रहा है। अतएव सात्यकि की खबर लाने के लिए मैं इस समय भीमसेन को भेजूँगा। ऐसा करने से ही मैं सात्यकि के प्रति अपने कर्तव्य का पालन कर सकूँगा।

धर्मपुत्र युधिष्ठिर ने मन में अपने कर्तव्य का निश्चय कर लिया और फिर सारथी से कहा—हे सूत! तुम इसी समय मेरे रथ को भीमसेन के रथ के पास ले चलो। अश्वविद्या-विशारद सारथी ने युधिष्ठिर के रथ को भीमसेन के पास पहुँचा दिया। घबराये हुए राजा युधिष्ठिर ने वहाँ पहुँचकर, ठीक अवसर जानकर, भीमसेन से कहा—"भाई! केवल एक रथ से जिन महावीर ने देवता, गन्धर्व, दैत्य आदि को जीत लिया था उन्हीं तुम्हारे भाई अर्जुन का कोई चिह्न नहीं देख पड़ता।" इतना कहकर शोक से व्याकुल राजा युधिष्ठिर अचेत-से हो गये। उनकी यह दशा देखकर भीमसेन ने कहा—हे धर्मराज! आपको इस तरह व्याकुल होते या घबराते मैंने कभी देखा या सुना नहीं। पहले वनवास आदि के समय, अत्यन्त दुःख के अवसरों पर, आप हमें समझाते और धैर्य देते थे। महात्मन्! उठिए उठिए, शोक करना छोड़िए। राजेन्द्र! आज्ञा कीजिए, मैं क्या करूँ? हे कुरुश्रेष्ठ! शोक न कीजिए। कहिए, क्या आज्ञा है? इस लोक में ऐसा कोई कार्य नहीं जिसे मैं आपके लिए न कर सकूँ।

३०

[सञ्जय कहते हैं कि महाराज!] काले नाग की तरह साँसें लेते हुए युधिष्ठिर आँखों में आँसू भरकर मलिन मुख हो भीमसेन से कहने लगे—हे भीम! यशस्वी श्रीकृष्ण कुपित होकर शङ्ख बजा रहे हैं। उनके शङ्ख का जैसा शब्द सुन पड़ रहा है उससे मुझे जान पड़ता है कि तुम्हारे भाई अर्जुन संग्राम में मारे गये हैं। और, उनके मरने से क्रुद्ध होकर, स्वयं कृष्णचन्द्र शत्रुसेना से युद्ध कर रहे हैं। पाण्डवगण जिनके बल-वीर्य के भरोसे जीते हैं, जो वीर विपत्ति के समय हम लोगों का प्रधान सहारा हैं, उन पराक्रमी, मस्त हाथी के समान बलशाली, प्रियदर्शन अर्जुन को जयद्रथ-वध के लिए कौरवों की भारी सेना के भीतर प्रवेश किये बड़ी देर हुई;

परन्तु वे अभी तक नहीं लौटे। उनकी कुछ ख़बर भी नहीं मिली। यही मेरे शोक का कारण
४० है। महाबाहु अर्जुन और सात्यकि के लिए मेरा शोक, घी की आहुति पड़ने से आग के समान, बढ़ता जा रहा है। मुझे अर्जुन की ध्वजा नहीं देख पड़ती। इससे मैं शोकाभिभूत हो रहा हूँ। मुझे जान पड़ता है कि अर्जुन को निहत देखकर युद्धनिपुण श्रीकृष्ण स्वयं युद्ध कर रहे हैं। महारथी सात्यकि भी अकेले ही तुम्हारे भाई अर्जुन की ख़बर लेने गये हैं। उनके लिए भी मैं मोहित सा हो रहा हूँ। हे भीमसेन! मैं तुम्हारा बड़ा भाई हूँ। अगर मेरी आज्ञा का पालन करना तुम अपना कर्तव्य समझते हो, अगर मेरे प्रति तुम्हें श्रद्धा-भक्ति है, तो जहाँ अर्जुन और सात्यकि हैं वहाँ के लिए चल दो। सात्यकि को तुम अर्जुन से भी प्रिय समझो। वे महावीर मेरे हित के लिए अत्यन्त दुर्गम, साधारण लोगों के लिए अगम्य, बहुत ही भयानक मार्ग से अकेले ही अर्जुन के पास गये हैं। हे वीरश्रेष्ठ! तुम अभी जाओ। यदि वासुदेव, अर्जुन और सात्यकि कुशल से हों तो ज़ोर से सिंहनाद करके उसकी सूचना
४९ मुझको देना। [तुम्हारा सिंहनाद ही उसका इशारा होगा।]

एक सौ सत्ताईस अध्याय

धृतराष्ट्र के कई पुत्रों को मारकर भीमसेन का द्रोणाचार्य्य का रथ तोड़ डालना

भीमसेन ने कहा—हे धर्मराज! महावीर अर्जुन और श्रीकृष्ण जिस बढ़िया रथ पर बैठकर गये हैं उस पर पहले समय में ब्रह्मा, महेश्वर, इन्द्र और वरुण बैठते थे। इस कारण श्रीकृष्ण और अर्जुन के लिए रत्ती भर भी खटका नहीं है, तथापि मैं आपकी आज्ञा को मानकर उनके पास जाता हूँ। आप शोक न करें, मैं अभी उनके पास पहुँचकर उनके कुशल-समाचार दूँगा।

सञ्जय कहते हैं कि महाराज! युधिष्ठिर से यों कहकर और धृष्टद्युम्न तथा अन्य मित्रों को युधिष्ठिर की रक्षा का भार सौंप करके महाबली भीमसेन शत्रुसेना की ओर बढ़े। उन्होंने परम प्रतापी धृष्टद्युम्न को सम्बोधन करके कहा—हे महाबाहो! तुम अच्छी तरह जानते ही हो कि महारथी द्रोणाचार्य धर्मराज को पकड़ने के लिए पूरा यत्न कर रहे हैं। इस समय उनकी रक्षा करना ही मेरा मुख्य काम है। अर्जुन के पास मेरे जाने की उतनी आवश्यकता नहीं; किन्तु धर्मराज मुझसे जाने के लिए कह रहे हैं। मैं उनकी आज्ञा को टाल नहीं सकता। बेखटके धर्म-राज की आज्ञा मानना ही मेरा कर्तव्य है। इस कारण मैं अर्जुन और सात्यकि की ख़बर लेने जाता हूँ। अब तुम सावधान होकर रणभूमि में युधिष्ठिर की रक्षा करो; मैं वहाँ जाता हूँ जहाँ मरनेवाला जयद्रथ छिपा हुआ है। धर्मराज की रक्षा करना ही हम लोगों का आवश्यक कर्तव्य है।
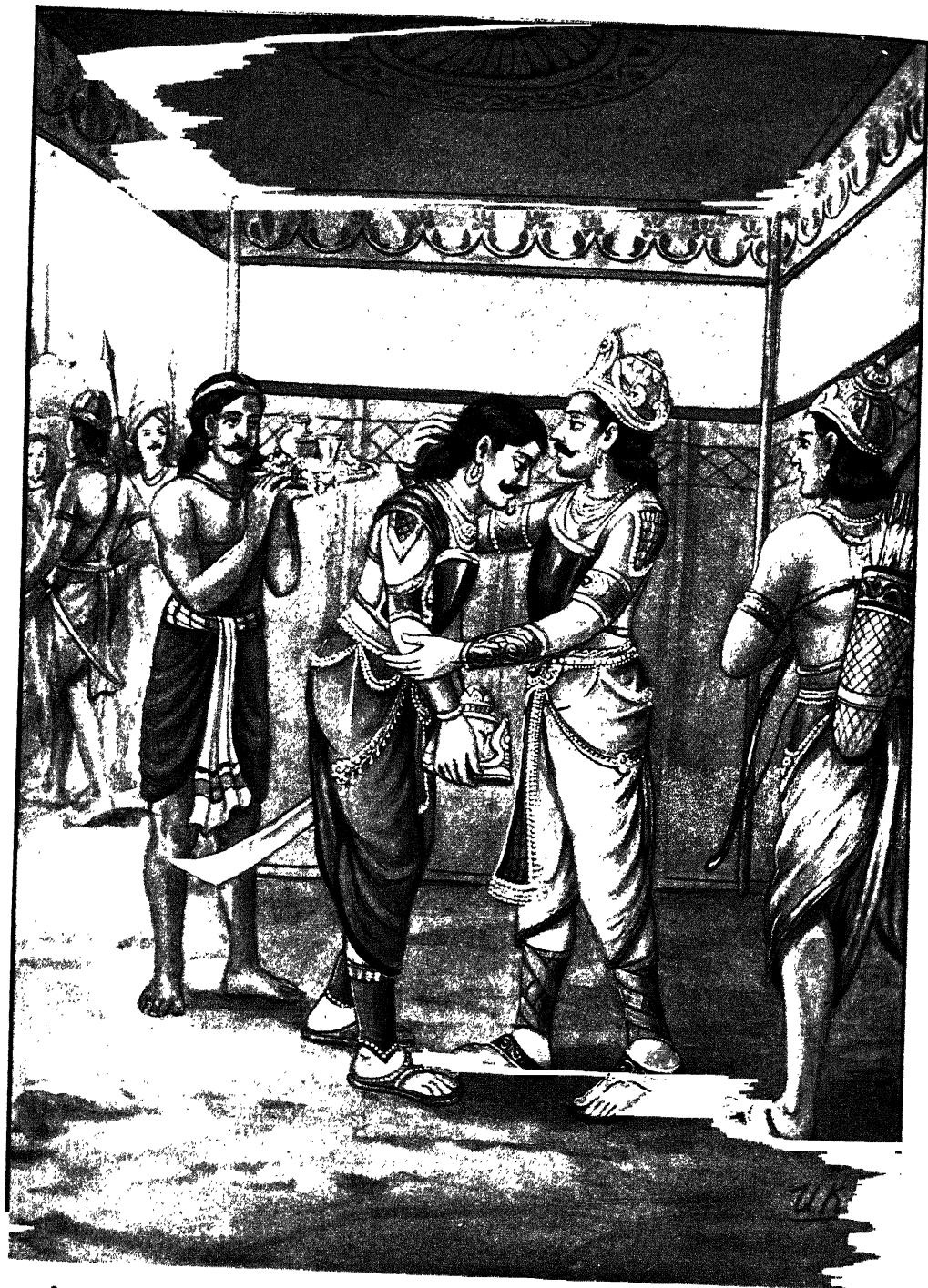
धर्मराज ने उन्हे गले से लगाकर उनका मस्तक सूँघा और आशीर्वाद दिया—पृ० २४५७

राजन् ! महावीर धृष्टद्युम्न ने भीमसेन के वचन सुनकर कहा—हे पार्थ ! तुम कुछ सोच-विचार न करो। जाओ, मैं तुम्हारी इच्छा के अनुसार धर्मराज की रक्षा करूँगा। मैं सच कहता हूँ, मेरे जीते जी द्रोणाचार्य किसी तरह धर्मराज को नहीं पकड़ सकेंगे। १०

कुण्डल, अङ्गद आदि गहनों से शोभित और ढाल-तलवार बाँधे हुए भीमसेन इस तरह धृष्टद्युम्न को युधिष्ठिर की रक्षा का काम सौंपकर, उनके चरणों में प्रणाम करके, जाने को तैयार हुए। धर्मराज ने उन्हें गले से लगाकर उनका मस्तक सूँघा और आशीर्वाद दिये। पूजित सम्मानित प्रसन्नचित्त ब्राह्मणों की प्रदक्षिणा करके आठ प्रकार के माङ्गलिक पदार्थों (अग्नि, गाय, सुवर्ण, दूब, गोरोचन, अमृत अर्थात् घी, अक्षत और दही) को छूकर भीमसेन ने कैरातक तीव्र मदिरा पी। उनकी आँखें लाल हो आईं और तेज दूना हो उठा। हवा उनके अनुकूल चलकर विजय की सूचना देने लगी। ब्राह्मणों ने विजय के लिए उनका स्वस्त्ययन किया। वे मन ही मन अपने को विजयी समझकर आनन्दित हो उठे। उनके अङ्ग में स्वर्णखचित मणि-मुक्तामण्डित महामूल्य लोहमय कवच होने से वे विद्युद्दाममण्डित मेघजाल के समान शोभा को प्राप्त हुए। पीले, लाल, सफ़ेद, काले आदि रङ्गों के चित्र-विचित्र कपड़े और कण्ठत्राण पहनने से वे इन्द्रधनुष से शोभित मेघ के समान जान पड़ने लगे।

इसी समय फिर पाञ्चजन्य शङ्ख का शब्द सुन पड़ा। धर्मराज युधिष्ठिर उस त्रिभुवन को डरा देनेवाले शङ्खनाद को सुनकर भीमसेन से कहने लगे—हे भीमसेन ! यह देखो, महात्मा वासुदेव का श्रेष्ठ शङ्ख पाञ्चजन्य पृथ्वी और अन्तरिक्ष को प्रतिध्वनित कर रहा है। अवश्य ही अर्जुन महाविपत्ति में पड़ गये हैं और श्रीकृष्ण कौरवों से युद्ध कर रहे हैं। आज अवश्य ही आर्या कुन्ती, द्रौपदी और सुभद्रा बन्धु-बान्धवों सहित ऐसी कठिन आपत्ति को, असगुनों के रूप में, देख रही होंगी। अतएव तुम चटपट यहाँ से जाओ। महावीर सात्यकि और अर्जुन को न देख पाने से मुझे सब ओर अँधेरा ही देख पड़ रहा है। २०

महाराज ! भाइयों के हितचिन्तक प्रतापी महावीर भीमसेन, इस तरह बड़े भाई के बार-बार व्याकुल होकर अनुरोध करने से, उसी समय गोह के चमड़े के अंगुलित्राण उँगलियों में पहनकर धनुष-बाण लेकर धनुष को बारम्बार बजाने लगे। उस समय भीमसेन ने दुन्दुभि और शङ्ख बजाकर सिंहनाद किया। इससे वीरों के भी हृदय दहल गये। भीमसेन अब युद्ध के लिए अपनी सेना से निकले। विशोक सारथी के द्वारा रथ में जोते गये, उत्साहपूर्ण, मन और हवा के सदृश वेग से जानेवाले घोड़े उनके रथ को ले चले। महावीर भीमसेन धनुष की डोरी खींचकर बाण बरसाकर शत्रुपक्ष की सेना को मारते-भगाते और शस्त्रों के प्रहार से छिन्न-भिन्न करते हुए आगे बढ़ने लगे। इन्द्र के पीछे जानेवाले देवताओं के समान पाञ्चालगण और सोमक-गण भीमसेन के पीछे-पीछे जाने लगे। राजन् ! उस समय दुःशल, चित्रसेन, कुण्डभेदी, विवि- ३०

शति, दुर्मुख, दु:सह, विकर्ण, शल, विन्द, अनुविन्द, सुमुख, दीर्घबाहु, सुदर्शन, वृन्दारक, सुहस्त, सुषेण, दीर्घलोचन, अभय, रौद्रकर्मा, सुवर्मा और दुर्विमोचन, ये सब आपके पुत्र असंख्य सेना और पैदल योद्धाओं को साथ लेकर भीमसेन की ओर दौड़े और उन्हें आगे न बढ़ने देने का प्रयत्न करने लगे। उन वीर राजकुमारों से घिरे हुए भीमसेन ने क्रोध-पूर्ण दृष्टि से उनकी ओर देखा और कुपित सिंह जैसे मृगों के झुंड पर झपटता है वैसे ही उन पर आक्रमण किया। मेघ जैसे सूर्यमण्डल को ढक लेते हैं वैसे ही उन वीरों ने दिव्य अस्त्र-शस्त्र बरसाकर भीमसेन को ढक दिया। महापराक्रमी भीमसेन बड़े वेग से उन्हें लाँघकर द्रोणाचार्य की सेना के सामने पहुँचे। अपने सामने की गज-सेना के ऊपर वे तीक्ष्ण बाण बरसाने लगे। उनके बाणों से छिन्न-भिन्न ४० हाथियों के दल चारों ओर भागने लगे। वन में शरभ (सिंह से भी बढ़कर जीवधारी) के गरजने से मृगों के झुण्ड जैसे डर जाते हैं वैसे ही भीमसेन के सिंहनाद और बाण-प्रहार से वे हाथी बहुत ही डर गये और भयानक शब्द करते हुए इधर-उधर भागने लगे।

महावीर भीमसेन इस तरह गज-सेना को लाँघकर बड़े वेग से द्रोणाचार्य की सेना के सामने दौड़े। तटभूमि जैसे महासमुद्र के वेग को रोकती है वैसे ही आचार्य ने भीमसेन को रोका और हँसकर उनके मस्तक में एक बाण मारा। मस्तक में आचार्य का बाण लगने से भीमसेन उस समय उद्र्ध्वरश्मि सूर्य के समान शोभायमान हुए।

द्रोणाचार्य ने, यह समझकर कि अर्जुन की तरह भीमसेन भी मेरा सम्मान करेंगे, उनसे कहा—हे भीमसेन! मैं तुम्हारा शत्रु हूँ। इस समय मुझे परास्त किये बिना तुम शत्रु-सेना के भीतर नहीं जा सकते। श्रीकृष्ण सहित अर्जुन मेरी अनुमति से इस व्यूह के भीतर गये हैं, किन्तु तुम किसी तरह नहीं जा सकते।

क्रोध से लाल आँखें किये और बारम्बार साँसें ले रहे भीमसेन ने गुरु द्रोणाचार्य के ये वचन सुनकर कहा—हे ब्राह्मण! अर्जुन तुम्हारी अनुमति से इस व्यूह के भीतर नहीं गये हैं। महापराक्रमी दुर्द्धर्ष अर्जुन इन्द्र की सेना के भीतर भी अपने बाहुबल से जा सकते हैं। और, जो उन्होंने तुम्हारी पूजा और सम्मान किया भी हो तो मैं वैसा नहीं कर सकता। मैं दयालु अर्जुन नहीं, तुम्हारा शत्रु भीमसेन हूँ। हे आचार्य! जब तुम हमारे पिता, गुरु और ५० हितैषी थे तब हम भी तुम्हारे पुत्र थे। उस समय हम प्रणत होकर तुम्हारा सम्मान करते थे; किन्तु अब तुम उसके विपरीत आचरण कर रहे हो और अपने को हमारा शत्रु बता रहे हो, इसलिए अब वह सम्बन्ध नहीं रहा। यदि तुम अपने को पाण्डवों का शत्रु मानते हो तो वही सही। यह देखो, भीमसेन तुम्हारे साथ शत्रु के योग्य कार्य ही करके दिखाता है। अब उन्होंने वैसे ही गदा घुमाकर द्रोणाचार्य के ऊपर फेंकी जैसे यमराज कालदण्ड को घुमावें। द्रोणाचार्य चटपट रथ से कूद पड़े। उस गदा के प्रहार से द्रोणाचार्य का रथ, ध्वजा, घोड़े

और सारथी सब चूर-चूर हो गया। महाराज! महाबली भीमसेन इस तरह आचार्य को रथ-हीन करके आपकी सेना को नष्ट करने लगे। प्रचण्ड आँधी जैसे वृक्षों को तोड़ती और गिराती है वैसे ही वायु के तुल्य पराक्रमी भीमसेन वेग से आपकी सेना को रौंदने और मारने लगे। तब अस्त्रधारियों में श्रेष्ठ आचार्य दूसरे रथ पर बैठकर व्यूह के द्वार की रक्षा करने लगे।

राजन्! उस समय आपके पुत्रों ने फिर भीमसेन को घेर लिया। महापराक्रमी भीमसेन क्रुद्ध होकर, सामने स्थित रथसेना को लक्ष्य करके, तीक्ष्ण बाण बरसाने लगे। आपके वीर पुत्रगण भीमसेन के बाणों से पीड़ित होकर भी जय की इच्छा से मैदान में जमे रहे और भीमसेन से भिड़कर घोर संग्राम करने लगे। तब दुःशासन ने कुपित होकर भीमसेन को मार डालने की इच्छा से उन पर, यमदण्ड के तुल्य, लोहे की उग्र रथशक्ति चलाई। महावीर भीम ने दुःशासन की फेंकी हुई शक्ति को आते देखकर उसके दो टुकड़े कर डाले। उन्होंने यह बहुत ही अद्भुत कार्य किया। भीमसेन ने क्रुद्ध होकर तीन तीव्र बाणों से कुण्डभेदी, सुषेण और दीर्घलोचन को मार डाला। फिर कुरुकुल की कीर्ति बढ़ानेवाले वीर वृन्दारक को मार गिराया। इसके बाद उन्होंने तीन बाणों से अभय, रौद्रकर्मा और दुर्विमोचन नाम के आपके तीन पुत्रों को यमपुर भेज दिया। महाबली भीमसेन के हाथों मारे जा रहे आपके पुत्र भी भीमसेन को चारों ओर से घेरकर उन पर उसी तरह तीक्ष्ण बाण बरसाने लगे जिस तरह बरसात में मेघ पर्वतों पर जलधारा छोड़ते हैं। पर्वत की तरह अटल होकर पराक्रमी भीमसेन उस शिलावर्षा के तुल्य बाणवर्षा को सहने लगे। उन्हें उससे तनिक भी व्यथा नहीं हुई। इसके बाद भीमसेन ने हँसते-हँसते तीक्ष्ण बाणों से सुवर्मा, विन्द और अनुविन्द को मार डाला; फिर आपके पुत्र वीर सुदर्शन को भी उन्होंने तीक्ष्ण बाणों से मार गिराया। महापराक्रमी भीमसेन ने बहुत जल्द उस रथसेना को तीव्र बाणों से नष्ट कर दिया। कुछ योद्धा मर गये और कुछ भाग गये। तब भीमसेन के रथ के शब्द और सिंहनाद से डरकर बाणवर्षा से पीड़ित आपके पुत्र, सिंह के आगे से मृगों के समान, भागने लगे। भीमसेन ने कौरवों की उस विशाल सेना का पीछा किया और चारों ओर से कौरवों को बाणों से घायल करना शुरू कर दिया। उनके हाथों मारे जा रहे आपकी सेना के वीर योद्धा, उन्हें छोड़कर, वेग से अपने वाहनों को हाँकते हुए समरभूमि से भागने लगे। महाराज! महाबली भीमसेन इस तरह उन सबको जीतकर सिंह की तरह गरजने और ताल ठोंकने लगे। उस रथसेना को परास्त करके, वीरों को मार-कर और रथियों को लाँघकर भीमसेन फिर द्रोणाचार्य की सेना की ओर वेग से चले।

(हाशिये पर श्लोक-संख्या: ६०, ८०, ८४)

एक सौ अट्ठाईस अध्याय

अर्जुन को देखकर भीमसेन का सिंहनाद करना और उसे सुनकर
युधिष्ठिर का प्रसन्न होना

सञ्जय कहते हैं—राजन्! द्रोणाचार्य ने भीमसेन को जब विशाल रथसेना लाँघकर आगे बढ़ते देखा तब उन्हें रोकने के लिए वे बाणों की वर्षा करने लगे। द्रोणाचार्य के धनुष से छूटे हुए बाणों को भीमसेन मानों पीते जाते थे। वे अपना बल प्रकट करके आपके पुत्रों को मोहित करते हुए उनकी ओर वेग से चले। तब राजा लोग बड़े-बड़े धनुष लेकर, आपके पुत्रों की प्रेरणा से, भीमसेन की तरफ़ बढ़े और घेरकर उन पर प्रहार करने लगे। उनसे घिरे हुए भीम, मुसकुराते हुए, गदा तानकर भयानक सिंहनाद करने लगे। शत्रुपक्ष को नष्ट करनेवाली गदा घुमाकर भीमसेन ने उन पर आक्रमण किया। भीमसेन की चलाई हुई, इन्द्र के वज्र के समान, भयङ्कर गदा रणभूमि में आपके सैनिकों को नष्ट करने लगी। महाशब्द से पृथ्वी को परिपूर्ण करती और तेज से प्रज्व-लित वह गदा आपके पुत्रों को भयविह्वल करने लगी। आपके पक्ष के सब वीर योद्धा उस तेजोराशि गदा को अपने ऊपर गिरते देखकर आर्तनाद करते हुए चारों ओर भागने लगे। गदा का असह्य शब्द सुनकर रथी लोग इतने डर गये कि रथों पर से नीचे गिरने लगे। भीम-सेन की गदा से मारे जा रहे आपके पक्ष के सैनिक,

सिंह को देखकर भागनेवाले मृगों के समान, डरकर भागने लगे। महापराक्रमी भीमसेन इस
१० तरह दुर्जय दुर्द्धर्ष शत्रुओं को भगाकर गरुड़ के समान वेग से उस सेना को लाँघ गये।

महावीर द्रोणाचार्य महान् महारथी भीमसेन को इस तरह सेना का संहार करते देख-कर उनके सामने आये। बाण-वर्षा से भीमसेन को रोककर उन्होंने एकाएक पाण्डवों को

भय-विह्वल कर देनेवाला सिंहनाद किया। उस समय देवासुर-युद्ध के तुल्य द्रोणाचार्य और भीमसेन का घोर युद्ध होने लगा। आचार्य सुतीक्ष्ण बाणों से हज़ारों वीरों को मारने और गिराने लगे। तब भीमसेन अपने रथ से कूद पड़े और आँखें मूँदकर बड़े वेग से पैदल ही द्रोणाचार्य की ओर दौड़े। बड़ा भारी साँड़ जैसे सहज ही जल की वर्षा को सह लेता है वैसे ही द्रोणाचार्य के बाणों की कुछ परवा न करके भीमसेन आचार्य के पास पहुँच गये। कन्धे में सिर और छाती में दोनों हाथ रखकर मन, वायु और गरुड़ के समान वेग से दौड़कर भीमसेन ने द्रोणाचार्य के रथ का धुरा पकड़कर उसे उठाया और पटक दिया। उस रथ से आचार्य चटपट कूद पड़े। [रथ चूर्ण हो गया।] अब दूसरे रथ पर बैठकर आचार्य व्यूह के द्वार पर आ गये। भीमसेन ने गुरु को उत्साह-हीन भाव से आते देखकर फिर वही काम किया; अर्थात् अत्यन्त कुपित भीमसेन ने धुरा पकड़कर उस रथ को भी पटक दिया। महाराज ! इस तरह महाबली भीमसेन ने, जैसे कोई बालक खेल करे वैसे, द्रोणाचार्य के आठ रथ चूर-चूर कर डाले; किन्तु द्रोणाचार्य फिर दम भर में अन्य रथ पर बैठकर आ जाते थे। आपके पक्ष के योद्धा लोग आश्चर्यपूर्ण दृष्टि से भीमसेन का यह अद्भुत काम देख रहे थे। इसी समय भीमसेन का सारथी फुर्ती के साथ घोड़ों को हाँककर उनके पास रथ ले आया। महाबली भीमसेन अपने रथ पर बैठकर बड़े वेग से आपके पुत्र की सेना को मारते हुए आगे चले। प्रचण्ड आँधी जैसे वृक्षों को तोड़ती और गिराती है वैसे ही युद्धभूमि में क्षत्रियों को मारते और सिन्धु का वेग जैसे वृक्षों की रुकावट को नहीं मानता वैसे ही शत्रुसेना को चीरते-फाड़ते महाबली भीमसेन आगे बढ़ने लगे। फिर कृतवर्मा के द्वारा सुरक्षित भोज-सेना के पास जाकर उसे भी उन्मथित करते हुए वे और आगे निकल गये। तल-शब्द से सब सेनाओं को डराते हुए महाबली भीमसेन ने वैसे ही सबको परास्त कर दिया जैसे बैलों के झुण्ड को सिंह मार भगाता है। भोज-सेना को लाँघकर काम्बोजों, दरदों तथा अन्य बहुत से युद्धनिपुण म्लेच्छों की सेना को मारते और लाँघते हुए भीमसेन ऐसे स्थान पर पहुँचे जहाँ से उन्हें युद्ध कर रहे महारथी सात्यकि देख पड़े। महाबली भीमसेन वेग से रथ हाँककर आगे बढ़ने लगे। महाराज ! अर्जुन को देखने के लिए उत्कण्ठित भीमसेन इस तरह आपके सब योद्धाओं को हराते और लाँघते हुए अर्जुन के पास पहुँच गये। उन्होंने देखा कि पराक्रमी अर्जुन, जयद्रथ को मारने के लिए, यत्नपूर्वक घोर युद्ध कर रहे हैं। वर्षाकाल के मेघ जैसे ज़ोर से गरजते हैं वैसे ही, अर्जुन को देखकर, भीमसेन भयानक सिंहनाद करने लगे। उस समय तेजस्वी भीमसेन का भयङ्कर सिंहनाद सुनकर, उन्हें देखने की इच्छा से, महावीर अर्जुन और श्रीकृष्ण बारम्बार गरजते हुए दो बली साँड़ों की तरह आगे बढ़ने लगे।

महाराज ! भीमसेन और अर्जुन का सिंहनाद सुनकर इधर धर्मराज युधिष्ठिर बहुत ही प्रसन्न हुए और समर में अर्जुन की विजय की आशा करने लगे। मद-मत्त गजराज की तरह

भीमसेन का गरजना सुनकर धर्मात्मा युधिष्ठिर हँसकर मन में कहने लगे कि हे भीमसेन ! तुमने गुरुजन की आज्ञा का पालन करके अर्जुन के कुशल-समाचार को मुझ तक पहुँचा दिया, इससे मेरी चिन्ता दूर हो गई। हे पाण्डव ! जिनसे तुम शत्रुता रखते हो वे कभी युद्ध में विजय
४० नहीं पा सकते। बड़ी बात जो अर्जुन जीवित हैं। यह भी सौभाग्य की बात है कि सत्य-पराक्रमी सात्यकि कुशल से हैं। बड़ी बात जो मैं रणभूमि में श्रीकृष्ण और अर्जुन के गरजने का शब्द सुन रहा हूँ। इन्द्र को रण में जीतकर अग्नि को तृप्त करनेवाले और शत्रुओं का नाश करनेवाले अर्जुन रणभूमि में जीवित हैं, यह बड़े भाग्य की बात है। जिनके बाहु-बल के भरोसे हम लोग जीवित हैं वे रण में शत्रुसेना का नाश करनेवाले अर्जुन जीवित हैं, यह बड़े भाग्य की बात है। देवताओं के लिए दुर्जय निवातकवच दानवों को एक धनुष से जीतनेवाले अर्जुन जीवित हैं, यह बड़े भाग्य की बात है। विराट नगर में गोहरण के लिए आये हुए सब कौरवों को परास्त करनेवाले, चौदह हज़ार दुर्द्धर्ष कालकेय दानवों को महारण में बाहु-बल से मारनेवाले, दुर्योधन को छुड़ाने के लिए बली गन्धर्वराज को अस्त्रबल से जीतनेवाले, किरीटमाली, बलवान्, श्रीकृष्ण को अपना सारथी बनानेवाले, मेरे परम प्रिय अर्जुन जीवित हैं, यह बड़े सौभाग्य की बात है। पुत्र के मारे जाने के शोक से पीड़ित होकर महावीर अर्जुन ने दुष्कर कर्म करने की इच्छा से जयद्रथ के वध की प्रतिज्ञा की है। उनकी वह प्रतिज्ञा क्या सफल होगी ? क्या वे युद्ध में जयद्रथ को मार सकेंगे ? श्रीकृष्ण के द्वारा सुरक्षित अर्जुन सूर्य के अस्त होने से
५० पहले ही जयद्रथ को मारकर, प्रतिज्ञा पूर्णकर, क्या मुझसे आकर मिलेंगे ? दुर्योधन का हितैषी राजा जयद्रथ अर्जुन के हाथों से मरकर अपने शत्रु पाण्डवों को क्या प्रसन्न करेगा ? अर्जुन के बाणों से जयद्रथ को मरते देखकर राजा दुर्योधन क्या हम लोगों से सन्धि कर लेंगे ? भीमसेन के हाथों अपने भाइयों को मरते देखकर मन्दमति दुर्योधन क्या हम लोगों से सन्धि करेंगे ? अन्य बड़े-बड़े वीर योद्धाओं को मरकर पृथ्वी पर गिरते देख क्या मन्दमति दुर्योधन को पश्चात्ताप होगा ? क्या केवल भीष्म पितामह की मृत्यु से हम लोगों का वैर शान्त हो जायगा ? क्या बचे हुए वीरों की रक्षा करने के लिए दुर्योधन हमसे सन्धि कर लेंगे ? महाराज ! दयालु राजा युधिष्ठिर इधर इस तरह अनेक बातें सोच रहे थे और
५६ उधर कौरव और पाण्डव घोर संग्राम कर रहे थे।

एक सौ उन्तीस अध्याय

कर्ण का हारना और दुःशल का मारा जाना

धृतराष्ट्र ने कहा—हे सञ्जय ! महावीर भीमसेन जब इस तरह मेघ-गर्जन के समान घोर सिंहनाद करने लगे तब किन शूरों ने उन्हें रोकने की चेष्टा की ? काल की तरह युद्ध के लिए

गदा उठाकर खड़े हुए कुपित भीमसेन के आगे युद्धभूमि में खड़ा होनेवाला मुझे तो त्रिभुवन में कोई नहीं देख पड़ता। जो बाहुबलशाली भीमसेन रथ से रथ को और हाथी से हाथी को मार डालते हैं उनके आगे कौन ठहरेगा? साक्षात् इन्द्र भी तो उनके आगे ठहरने का साहस नहीं कर सकते। बतलाओ, साक्षात् काल के समान महावीर भीमसेन कुपित होकर जब, वन को जलाते हुए दावानल के समान, मेरे पुत्रों का संहार करने लगे तब दुर्योधन के हितचिन्तक किस-किस वीर ने सामने जाकर उन्हें रोकने का यत्न किया? हे सञ्जय! महावीर भीमसेन के बाहुबल से मैं जितना डरता हूँ उतना अर्जुन, श्रीकृष्ण, सात्यकि, धृष्टद्युम्न आदि से नहीं डरता। हे सञ्जय! मेरे पुत्रों को भस्म करने के लिए जलती हुई आग के समान क्रोध से प्रचण्ड भीमसेन को किन-किन योद्धाओं ने रोका? यह विस्तारपूर्वक मुझसे कहो।

सञ्जय ने कहा—राजन्! महाबली भीमसेन को सिंहनाद करते देखकर महारथी कर्ण घोर सिंहनाद करते हुए उनके सामने आये। उनसे युद्ध करने और रण में अपना बल-विक्रम दिखाने की इच्छा से कुपित होकर, बहुत बड़ा धनुष खींचकर, कर्ण ने भीमसेन की राह रोक ली। जैसे कोई बड़ा पेड़ हवा को रोकना चाहे वैसे ही कर्ण भी भीमसेन को रोकने की चेष्टा करने लगे। पराक्रमी भीमसेन वेग से आकर सामने कर्ण को देख बहुत कुपित हुए और उन पर तीक्ष्ण बाण बरसाने लगे। महावीर कर्ण भी अपने तीव्र बाणों से उनके बाणों को व्यर्थ, और उन्हें पीड़ित, करने की चेष्टा करने लगे। वहाँ रथों और घोड़ों पर सवार जितने वीर योद्धा कर्ण और भीमसेन का युद्ध देख रहे थे वे उनकी तलध्वनि और सिंहनाद सुनकर काँपने लगे। भीमसेन का भयानक सिंहनाद सुनकर क्षत्रियों को मालूम पड़ा कि आकाश और पृथ्वीमण्डल उस सिंहनाद से परिपूर्ण हो रहा है। अब महापराक्रमी भीमसेन ने ऐसा घोर सिंहनाद किया कि सब योद्धाओं के हाथों से धनुष और शस्त्र गिर पड़े। कोई-कोई मर गये। डर के मारे बहुतों का मल-मूत्र निकल पड़ा। सब वाहन उदास हो गये। उस समय बहुत से घोर असगुन और उत्पात दिखाई पड़ने लगे। अन्तरिक्ष में गिद्धों और कङ्क पक्षियों के झुण्ड मँडराने लगे। १०

तब महाबली कर्ण ने बीस बाण भीमसेन को और पाँच बाण उनके सारथी को मारे। २० यह देखकर हँसते हुए भीमसेन ने कर्ण को चौंसठ बाण मारे। महावीर कर्ण ने फिर चार बाण मारे। महाप्रतापी भीमसेन ने ऐसी फुर्ती दिखाई कि अपने सन्नतपर्व बाणों से उन बाणों को राह में ही काट डाला। तब महावीर कर्ण ने असंख्य बाण बरसाकर भीमसेन को अदृश्य कर दिया। महाबली भीमसेन ने कर्ण की बाण-वर्षा में बारम्बार अपने को छिपते देखकर अत्यन्त कुपित हो उनके धनुष को काट डाला और फिर तीव्र बाण मारे। वीर कर्ण दूसरा धनुष लेकर, उस पर डोरी चढ़ाकर, फिर तीक्ष्ण बाणों से भीमसेन को पीड़ित करने लगे। कर्ण के बाणों की चोट से अत्यन्त क्रुद्ध होकर भीमसेन ने उनकी छाती में बड़े विकट तीन बाण मारे। छाती

में लगे हुए उन तीन बाणों से वीर कर्ण बड़े ऊँचे शिखरवाले त्रिशृङ्ग पर्वत के समान शोभायमान हुए। धातु की धाराएँ बहानेवाले पहाड़ से जैसे गेरू बहती है वैसे ही कर्ण के हृदय से रक्त वह चला। महापराक्रमी कर्ण ने इस तरह भीमसेन के भयानक प्रहार से अत्यन्त पीड़ित और

३० कुछ विचलित होकर, धनुष पर बाण चढ़ाकर, उन पर लगातार हज़ारों बाण बरसाये। कर्ण के बाणों से पीड़ित भीमसेन ने, क्रोध और गर्व के साथ, क्षुर बाण से कर्ण के धनुष की डोरी काटकर उनके सारथी को भल्ल बाण से मारा और रथ के घोड़ों को भी मार गिराया। बिना घोड़ों के रथ से कर्ण चटपट उतरकर वृषसेन के रथ पर चले गये।

महाराज! पराक्रमी भीमसेन इस तरह वीर कर्ण को हराकर मेघगर्जन के समान दारुण सिंहनाद करने लगे। धर्मराज युधिष्ठिर वह सिंहनाद सुनकर, कर्ण को परास्त समझ, बहुत ही प्रसन्न हुए। पाण्डवों की सेना में चारों ओर शङ्ख बजने लगे। कौरवदल के वीर भी शत्रुपक्ष का शङ्खनाद और कोलाहल सुनकर, उसके उत्तर में, सिंहनाद करने लगे। प्रबलप्रतापी वीर अर्जुन भी गाण्डीव धनुष की डोरी बजाने लगे और वासुदेव पाञ्चजन्य शङ्ख के शब्द से शत्रुओं के हृदय दहलाने लगे। किन्तु महावीर भीमसेन का भीषण सिंहनाद उन सब शब्दों को दबाकर योद्धाओं के कानों में प्रवेश करने लगा। इस समय कर्ण कुछ सुस्ती से और भीमसेन दृढ़ता

३९ से एक दूसरे पर फिर बाण बरसाने लगे।

एक सौ तीस अध्याय

द्रोणाचार्य्य और दुर्योधन का संवाद और दुर्योधन का युद्ध करना

सञ्जय कहते हैं—महाराज! इस तरह सब सेना के भागने पर जयद्रथ की ओर अर्जुन को और उनके पीछे सात्यकि तथा भीमसेन को जाते देखकर आपके पुत्र दुर्योधन कर्त्तव्य के बारे में बहुत कुछ सोचते-विचारते हुए द्रोणाचार्य के पास गये। दुर्योधन का रथ बड़ी तेज़ी के साथ आचार्य के पास पहुँचा। दुर्योधन ने क्रोध-पूर्ण स्वर में घबराहट के साथ कहा—हे गुरुवर! अर्जुन, सात्यकि और भीमसेन हमारी सब सेना को मथकर और महारथियों को जीतकर सिन्धुराज जयद्रथ के पास पहुँच गये हैं। उन्हें कोई नहीं रोक सका। वे अपराजित होकर युद्ध कर रहे हैं और हमारी सेना का संहार किये डालते हैं। मान लीजिए कि महारथी अर्जुन आपके आगे से निकल गये और आप उन्हें रोक नहीं सके। किन्तु सात्यकि और भीमसेन किस तरह आपको लाँघकर व्यूह के भीतर चले गये? समुद्र के सूख जाने के समान इस असम्भव को सम्भव होते देख सब लोगों को बड़ा आश्चर्य हो रहा है। अर्जुन, सात्यकि और भीमसेन से आपके हारने का दृश्य देखकर लोग आपकी निन्दा कर रहे हैं। सबका कहना

दुर्योधन ने क्रोध-पूर्ण स्वर में घबराहट के साथ कहा। —पृ० २४६४

है कि धनुर्वेद के पूरे पण्डित द्रोणाचार्य को युद्ध में इन लोगों ने कैसे परास्त कर दिया ? इनमें आचार्य के हारने की वास्तविकता में सबको सन्देह है। मैं सचमुच बड़ा अभागा हूँ। ये तीनों महारथी जब आप जैसे वीर को लाँघकर व्यूह के भीतर चले गये हैं तब अवश्य ही इस संग्राम में मेरा विनाश होगा। जो होना था सो तो हो गया। अब सोचिए, आगे के लिए क्या प्रबन्ध हो। इस समय अच्छी तरह सोचकर सिन्धुराज की रक्षा का कोई उपाय कीजिए। १०

द्रोणाचार्य ने कहा—हे दुर्योधन ! सोचने को तो बहुत कुछ सोचा जा सकता है, किन्तु इस समय जो करना चाहिए सो सुनो। पाण्डवपक्ष के तीन महारथी हमारी सेना को लाँघकर आगे निकल गये हैं। पीछे उनका जैसा डर है, वैसा ही आगे भी भय है। किन्तु जहाँ पर अर्जुन और श्रीकृष्ण हैं वहीं अधिकतर भय की आशङ्का है। कौरवों की सेना को इस समय आगे से भी और पीछे से भी शत्रुओं ने घेर लिया है। मेरी राय में इस समय सब तरह से जयद्रथ की रक्षा करना सबसे आवश्यक है। हे तात ! क्रुद्ध अर्जुन से ही हमें हर तरह जयद्रथ की रक्षा करनी चाहिए। कठिनता यह है कि सात्यकि और भीमसेन भी अर्जुन की सहायता करने को जयद्रथ की ओर गये हैं। राजन् ! पहले शकुनि की सलाह मानकर तुमने सभा में जो द्यूतक्रीड़ा की थी उसी का यह फल अब प्राप्त हुआ है। उस समय सभा में हार-जीत कुछ नहीं हुई थी। इस समय हम लोग प्राणों की बाज़ी लगाकर जो जुआ खेल रहे हैं, इसी में असली हार-जीत होगी। पहले कुरु-सभा में शकुनि ने जिन पाँसों को लेकर खेल खेला था उन्हें वह पाँसे समझता था; किन्तु असल में वे पाँसे नहीं, दुर्द्धर्ष तीव्र बाण थे, जो इस समय बड़े-बड़े वीरों का नाश कर रहे हैं। महाराज ! उस समय जुआ नहीं हुआ था, असली जुआ इसी समय हो रहा है। कौरवों और पाण्डवों में बाज़ी लगी हुई है। सेना को गोटें, बाणों को पाँसे और जयद्रथ के जीवन को बाज़ी अर्थात् दाँव समझो। आज ही जुए की हार-जीत का फ़ैसला होगा। आज जयद्रथ के जीवन की बाज़ी लगाकर शत्रुओं के साथ जो जुआ खेला जा रहा है इसी पर तुम्हारी जीत या हार निर्भर है। महाराज ! हम लोग अपने जीवन का मोह छोड़कर रणभूमि में विधिपूर्वक जयद्रथ की रक्षा करेंगे। उनकी रक्षा में हमारी जय है और उनकी मृत्यु में हमारी हार। जहाँ पर महारथी लोग यत्नपूर्वक जयद्रथ की रक्षा कर रहे हैं वहाँ तुम भी झटपट जाओ और जयद्रथ की रक्षा करनेवालों की रक्षा करो। मैं इसी जगह रहकर पाञ्चाल, पाण्डव, सृञ्जय आदि की सेना को रोकूँगा और तुम लोगों की सहायता के लिए कुमक भेजूँगा। २०

महाराज ! द्रोणाचार्य की आज्ञा से राजा दुर्योधन उग्र कर्म करने के लिए उद्यत होकर, अपने अनुचरों के साथ, जयद्रथ के पास जाने के लिए शीघ्र आगे बढ़े। उसी समय अर्जुन के चक्ररक्षक पाञ्चाल-राजकुमार युधामन्यु और उत्तमौजा, सेना के बाहरी भाग को भेदकर, अर्जुन के पास जाने को बढ़े। अर्जुन जब आपकी सेना के भीतर घुसे थे तब वीर कृतवर्मा

ने इन चक्ररक्षकों को भीतर जाने नहीं दिया था। युधामन्यु और उत्तमौजा ने जब उधर जाने की राह न पाई तब बीच से जाने का इरादा छोड़कर, सेना के पार्श्वभाग को छिन्न-भिन्न करके, वे आपकी सेना के भीतर गये। दुर्योधन ने उन्हें पार्श्वभाग से अर्जुन के पास जाने के लिए तैयार देखकर रोका। बली दुर्योधन और उनके भाई शीघ्रता के साथ उन दोनों वीरों से घोर युद्ध करने लगे। महारथी क्षत्रिय-श्रेष्ठ युधामन्यु और उत्त-मौजा ने भी धनुष तानकर दुर्योधन आदि का सामना किया। युधामन्यु ने कङ्क-पत्रशोभित तीस बाण दुर्यो-

३०

धन को मारे। साथ ही बीस बाण उनके सारथी को और चार बाण घोड़ों को मारे। वीर दुर्योधन ने कुपित होकर एक बाण से युधामन्यु की ध्वजा काट डाली, एक बाण से धनुष काट डाला, एक भल्ल बाण से सारथी को मार गिराया और चार तीक्ष्ण बाण मारकर उनके रथ के चारों घोड़ों को विह्वल कर दिया। तब महावीर युधामन्यु ने क्रुद्ध होकर फुर्ती के साथ दुर्यो-धन की छाती में तीस बाण मारे। उत्तमौजा ने भी क्रोध करके सुवर्णभूषित बाणों से दुर्योधन के सारथी को मारकर गिरा दिया। वीर दुर्योधन ने कुपित होकर उत्तमौजा के दोनों पार्श्व-रक्षकों, सारथी और चारों घोड़ों को मार डाला। इस तरह सारथी और घोड़ों के मरने पर महावीर उत्तमौजा फुर्ती के साथ अपने भाई युधामन्यु के रथ पर चले गये और बाणों की वर्षा करके दुर्योधन के घोड़ों को भगाने लगे। वे घोड़े उत्तमौजा के बाणों से पीड़ित होकर पृथ्वी पर गिर पड़े और मर गये। उस समय युधामन्यु ने तीक्ष्ण बाण से दुर्योधन के तरकस और धनुष को काट डाला। तब पराक्रमी राजा दुर्योधन सारथी और घोड़ों से रहित रथ

४० छोड़कर, गदा हाथ में लेकर, पाञ्चाल देश के दोनों वीरों पर झपटे। वे शत्रुविजयी क्रुद्ध दुर्योधन को गदा मारने के लिए आते देखकर चटपट रथ से उतर पड़े। दुर्योधन ने गदा के प्रहार से उनके सुवर्ण-मण्डित रथ को घोड़े, सारथी, ध्वजा आदि समेत चूर्ण कर डाला।

अब दुर्योधन मद्रराज शल्य के रथ पर चले गये। पाञ्चालदेश के दोनों राजकुमार भी अन्य रथों पर बैठकर अर्जुन के पास जाने के लिए आगे बढ़े। ४४

एक सौ इकतीस अध्याय

भीमसेन का कर्ण को परास्त करना

सञ्जय ने कहा—राजन्! इस तरह लोमहर्षण संग्राम छिड़ जाने पर सब सेना को व्याकुल देखकर महारथी कर्ण ने भीमसेन का सामना किया। जैसे वन में मस्त हाथी मस्त हाथी से भिड़ता है वैसे ही महावीर कर्ण भीमसेन से युद्ध करने के लिए उनकी ओर झपटे।

धृतराष्ट्र ने कहा—सञ्जय! अर्जुन के रथ के समीपवर्ती स्थान में महाबली भीमसेन और कर्ण से कैसा संग्राम हुआ? वीर कर्ण पहले भीमसेन से परास्त होकर भी फिर कैसे उनसे युद्ध करने गये? और भीमसेन को ही पृथ्वी में प्रसिद्ध महारथी कर्ण से लड़ने के लिए कैसे साहस हुआ? भीष्म और द्रोण के सिवा अगर धर्मराज युधिष्ठिर को किसी से डर है, तो महारथी कर्ण से ही। वे नित्य महारथी कर्ण के पराक्रम का खयाल करके उनके डर से बरसों नींद भर सोये तक नहीं। उन्हीं ब्रह्मण्य, पराक्रमी, समर से विमुख न होनेवाले श्रेष्ठ योद्धा कर्ण से भीमसेन ने निडर होकर कैसे युद्ध किया? महाबली कर्ण और भीमसेन ने परस्पर भिड़कर किस तरह कैसा युद्ध किया? पहले कुन्ती से कर्ण ने प्रतिज्ञा की थी कि मैं अर्जुन के सिवा और किसी पाण्डव को नहीं मारूँगा और कर्ण को यह भी मालूम हो गया था कि पाण्डव उनके भाई हैं। फिर दयालु कर्ण ने भीमसेन से कैसे युद्ध किया? शूर भीमसेन ने १० ही कर्ण से होनेवाले अपने पहले के वैर को स्मरण करके किस तरह उनसे युद्ध करने का साहस किया? हे सञ्जय! मेरा पुत्र दुर्योधन सदा आशा किया करता था कि कर्ण अकेले ही सब पाण्डवों को संग्राम में परास्त कर देगा। मेरे मन्दमति पुत्र की जय की आशा कर्ण पर निर्भर है; मेरे पुत्रों ने कर्ण का ही भरोसा करके महारथी पाण्डवों से वैर किया था; उसी कर्ण से भीमसेन ने कैसा युद्ध किया? कर्ण के कारण होनेवाले अपने अनेक अपकारों का स्मरण करके भीमसेन ने उससे कैसा युद्ध किया? जिस पराक्रमी ने एक रथ से पृथ्वी को जीत लिया था और जिसने कवच और कुण्डल पहने हुए ही जन्म लिया था उसी कर्ण से भीमसेन ने किस तरह युद्ध किया? हे सञ्जय! उन दोनों ने किस तरह युद्ध किया और उनमें कौन विजयी हुआ, यह वृत्तान्त विस्तार के साथ मुझसे कहो।

सञ्जय कहते हैं—महाराज! भीमसेन कर्ण को छोड़कर अर्जुन और श्रीकृष्ण के पास जाने के लिए तैयार हुए। यह देखकर अत्यन्त क्रुद्ध होकर वीर कर्ण ने उनका पीछा किया।

बादल जैसे पहाड़ पर पानी बरसाते हैं वैसे ही वीर कर्ण भीमसेन के ऊपर कङ्कपत्रयुक्त तीक्ष्ण
२० बाण बरसाने लगे। कर्ण ने ज़ोर से हँसकर, लड़ने के लिए ललकारकर, भीमसेन से कहा—हे भीम! स्वप्न में भी सोचा नहीं जा सकता कि तुम शत्रुओं को पीठ दिखाओगे। फिर तुम अर्जुन को देखने की इच्छा से मेरे सामने से क्यों भागे जाते हो? हे वीर! यह कार्य कुन्ती के पुत्र के योग्य कदापि नहीं है। इसलिए मेरे सामने डटकर मुझ पर बाण चलाओ।

कर्ण की इस ललकार को महावीर भीमसेन न सह सके। वे अर्धमण्डल गति से घूम-कर कर्ण से युद्ध करने लगे। महायशस्वी भीमसेन सब शस्त्रों के चलाने में निपुण, कवचधारी, द्वन्द्वयुद्ध करने को तैयार कर्ण के ऊपर सीधे जानेवाले बाणों की वर्षा करने लगे। कलह का अन्त करने की इच्छा से कर्ण को पहले मारकर औरों को भी मारने के लिए महाबली भीमसेन कर्ण के ऊपर उग्र बाण बरसाने लगे। श्रेष्ठ अस्त्रज्ञ कर्ण ने मस्त हाथी की तरह चलनेवाले भीमसेन की उस बाण-वर्षा को अपने अस्त्रों से रोक दिया। महाबाहु, अस्त्रविद्या में निपुण, आचार्य के समान धनुर्द्धर कर्ण बली भीमसेन से घोर युद्ध करने लगे। राजन्! अनादर की हँसी हँसकर कर्ण
३० ने क्रोध से विह्वल होकर युद्ध करते हुए भीमसेन का तिरस्कार किया। उस उपहास को भीम-सेन न सह सके। उन्होंने अत्यन्त कुपित होकर सब वीरों के सामने ही, महागजराज के ऊपर अंकुश-प्रहार की तरह, कर्ण की छाती में पहले कई वत्सदन्त बाण मारकर फिर अत्यन्त तीक्ष्ण इक्कीस बाण मारे। तब महावीर कर्ण ने भीमसेन के स्वर्णजालभूषित, वायु के समान वेगगामी घोड़ों को पाँच-पाँच बाणों से घायल करके असंख्य बाणों से दम भर में भीमसेन के सारथी, रथ और ध्वजा को अदृश्य सा कर दिया। फिर चौंसठ बाणों से भीमसेन का सुदृढ़ कवच तोड़कर उनको मर्मभेदी बाण मारे। महाबाहु भीमसेन कर्ण के धनुष से छूटे हुए तीक्ष्ण बाणों के प्रहार का कुछ ख़याल न करके, बेधड़क होकर, कर्ण के बिलकुल पास पहुँच गये। उनके साँप-तुल्य उग्र बाण भीमसेन को तनिक भी व्यथा नहीं पहुँचा सके। अन्त को उन्होंने तीक्ष्ण
४० बत्तीस भल्ल बाण कर्ण के मर्मस्थलों में मारे। कर्ण ने भी क्रीड़ा करते-करते जयद्रथ-वध में सहायता पहुँचानेवाले भीमसेन को बाणजाल से छिपा दिया। कर्ण तो भीमसेन पर कोमल प्रहार करते थे, किन्तु भीमसेन पहले का वैर याद करके कर्ण पर कसकर प्रहार करते थे। कर्ण ने लापर्वाही दिखाकर भीमसेन का जो अपमान किया उसे वे नहीं सह सके। वे फुर्ती के साथ कर्ण के ऊपर असंख्य बाणों की वर्षा सी करने लगे। भीमसेन के छोड़े हुए वे बाण बोलनेवाले पक्षियों के समान चारों ओर से वीर कर्ण के ऊपर गिरने लगे। पतङ्ग जैसे आग के ऊपर छा जाते हैं वैसे ही भीमसेन के धनुष से निकले हुए उन सुवर्णपुङ्खयुक्त महावेगशाली बाणों ने चारों ओर से कर्ण को छा लिया। तब महारथी कर्ण ने भी उन बाणों को नष्ट करने के लिए असंख्य बाण बरसाये। महावीर भीमसेन ने विविध भल्ल बाणों के द्वारा कर्ण के

तीक्ष्ण बाणों को राह में ही काट डाला। कर्ण ने फिर असंख्य बाणों से भीमसेन को ढक दिया। उन बाणों से सब शरीर छिद जाने के कारण महावीर भीमसेन रणभूमि में काँटेदार श्याही (एक पशु) के समान जान पड़ने लगे। सूर्यदेव जैसे सहज में अपनी किरणों को धारण करते हैं वैसे ही भीमसेन को भी कर्ण के तेज़ बाण धारण करने में कुछ क्लेश नहीं हुआ। ५० कर्ण के धनुष से छूटे हुए, सुवर्णपुङ्खयुक्त, सिल्ली पर रगड़कर तीक्ष्ण बनाये गये, बाण लगने से भीमसेन का शरीर रक्त से लथपथ हो गया और वे फूले हुए अशोक वृक्ष के समान शोभा को प्राप्त हुए। कर्ण का इस तरह लीलापूर्वक समर में विचरना भीमसेन से नहीं सहा गया। वे क्रोध से लाल आँखें करके गरजने लगे।

उन्होंने कर्ण को ताककर पचीस बाण मारे। शरीर में भीमसेन के बाण लगने से महावीर कर्ण तीव्र विषवाले नागों से घिरे हुए सफ़ेद पर्वत के समान शोभा को प्राप्त हुए। अब महावीर भीम ने कर्ण के मर्मस्थल में और चौदह बाण मारे। फिर उनका धनुष काटकर सारथी और घोड़ों को भी मार डाला। उन्होंने सूर्य के समान प्रभासम्पन्न तीक्ष्ण बाण कर्ण की छाती में भी मारे। सूर्य की किरणें जैसे मेघों को फाड़कर पृथ्वी पर गिरती हैं वैसे ही भीमसेन के चलाये हुए बाण कर्ण के शरीर को भेदकर गिर पड़े। राजन्! वीरता की डींग मारनेवाले महावीर कर्ण इस तरह भीमसेन के बाणों से घायल तथा धनुष और रथ से हीन हो जाने पर फुर्ती के साथ, दूसरे रथ की खोज में, उनके आगे से हट गये। ५८

एक सौ बत्तीस अध्याय

कर्ण और भीमसेन का फिर युद्ध

धृतराष्ट्र ने कहा—हे सञ्जय! साक्षात् शङ्कर के शिष्य परशुराम हैं; उनका शिष्य कर्ण अस्त्रविद्या में उनके तुल्य या उनसे अच्छा होने पर भी सहज ही भीमसेन से हार गया। जिसके

बल पर मेरे पुत्रों को जय की आशा थी उसी कर्ण को भीमसेन के आगे रण से भागते देखकर दुर्योधन ने क्या कहा ? महाबली भीमसेन ने इसके उपरान्त किस तरह युद्ध किया ? और रण-भूमि में भीमसेन को प्रज्वलित अग्नि के समान प्रचण्ड होते देखकर कर्ण ने ही क्या किया ?

सञ्जय बोले—महाराज ! महारथी कर्ण फिर विधिपूर्वक सुसज्जित अन्य रथ पर बैठकर, प्रचण्ड आँधी से उमड़े हुए महासागर की तरह, वेग से भीमसेन की ओर चले। उस समय कर्ण को कुपित देखकर आपके पुत्रों ने समझा कि भीमसेन अब आग में गिरे मनुष्य की तरह जीवित नहीं बच सकते। पराक्रमी कर्ण ने धनुष की डोरी बजाकर ताल ठोंके। अब वे भीमसेन के रथ की ओर चले। कर्ण और भीमसेन का घोर संग्राम होने लगा। एक दूसरे को मार डालने की इच्छा रखनेवाले दोनों वीर क्रोध से लाल आँखें करके परस्पर देख रहे थे। दोनों ही कुपित विषैले साँप की तरह साँसें ले रहे थे। परस्पर प्रहार करने से दोनों १० के शरीर छिन्न-भिन्न हो गये। वे दो कुपित व्याघ्रों की तरह, दो झपट रहे बाज़ों की तरह और दो क्रोधान्ध शरभों की तरह संग्राम करने लगे।

राजन् ! पहले द्यूतक्रीड़ा के समय, वनवास में, विराट नगर में रहते समय, और बहुरत्नपूर्ण राज्य हर लेने के कारण, पाण्डवों को क्लेश भोगने पड़े हैं; आपने अपने पुत्रों की सलाह से पुत्रों सहित तपस्विनी कुन्ती को लाक्षाभवन में जलाने का उद्योग किया था; आपने पाण्डवों को अनेक प्रकार के दुःख दिये हैं; आपके दुर्मति पुत्रों ने सभा में द्रौपदी को लाकर क्लेश दिये थे; दुःशासन ने भरी सभा में केश पकड़कर द्रौपदी का अपमान किया था; आपके सामने ही आपके पुत्रों ने द्रौपदी से यह कहकर कि "हे द्रौपदी, तुम अपना और पति चुन लो, समझ लो कि तुम्हारे पति हैं ही नहीं; खोखले तिल के तुल्य निकम्मे तुम्हारे पति पाण्डव नरकगामी (दुर्दशाग्रस्त) हो गये हैं !" उनका अपमान किया था; आपके पुत्रों ने द्रौपदी को दासीभाव से भोग करने की भी इच्छा की थी; मृगछाला धारण करके वन को जाते हुए पाण्डवों से भरी सभा में, आपके सामने ही, कर्ण ने असह्य दुर्वचन कहे थे; और आपके पुत्र दुर्योधन ने ख़ुद अच्छी स्थिति में रहकर, हीन दशा को प्राप्त पाण्डवों को तृणतुल्य समझकर, क्रोध के वश होकर उछल-कूद की थी; सो ये सब बातें उस समय भीमसेन को स्मरण हो आईं। लड़कपन से अब तक मिले हुए दुःखों और २० क्लेशों का ख़याल करके शत्रुदमन धर्मात्मा भीमसेन मानों अपने जीवन से ऊब गये। वे सुवर्ण-पृष्ठ-शोभित भारी धनुष चढ़ाकर, जान पर खेलकर, कर्ण के सामने पहुँचे। कर्ण के रथ पर सुतीक्ष्ण असंख्य बाण बरसाकर भीमसेन प्राणपण से युद्ध करने लगे। उनकी बाण-वर्षा से सूर्य का प्रकाश छिप गया, अँधेरा सा छा गया। महारथी, महाबाहु, महाबली कर्ण ने हँसकर फुर्ती के साथ अपने तीक्ष्ण बाणों से भीमसेन के सब बाण काट डाले और फिर भीमसेन को नव उग्र

वाणों से घायल किया। अंकुश से लौटाये जा रहे गजराज की तरह कर्ण के वाणों से पीड़ित होकर भी भीमसेन न तो लौटे और न घबराये हो। उन्होंने दूने वेग से कर्ण पर आक्रमण किया। मस्त हाथी जैसे महावाहु कर्ण ने समर के लिए अत्यन्त उत्सुक और मस्त हाथी के समान पराक्रमी भीमसेन को वेग से आते देखकर, उत्साह के साथ उनकी ओर वढ़कर, सैकड़ों नगाड़ों के समान गम्भीर शब्द उत्पन्न करनेवाला अपना श्रेष्ठ शङ्ख ज़ोर से वजाया। उस शब्द को सुनकर सेना प्रसन्नता प्रकट करने लगी। महावीर भीमसेन ने असंख्य हाथियों, घोड़ों, रथों और पैदलों से परिपूर्ण सेना में हलचल होते देखकर कर्ण को असंख्य वाणों से छा दिया। महावीर कर्ण ने भी भीमसेन को अपने वाणों से पीड़ित करके उनके सफ़ेद घोड़ों से अपने काले घोड़े मिला दिये। इस तरह कर्ण के रथ को भीमसेन के रथ के पास देखकर आपके पुत्र हाहाकार करने लगे। उन दोनों वीरों के, हवा के समान वेग से चलनेवाले, सफ़ेद और काले घोड़े परस्पर मिलकर आकाशमण्डल में स्थित सफ़ेद और काले वादलों के समान शोभायमान हुए। ३०

महाराज! तव कौरवदल के महारथी लोग भीमसेन और कर्ण को अत्यन्त कुपित देख-कर मारे डर के काँपने लगे। यमपुरी के समान भयानक रणभूमि की ओर देखा नहीं जाता था। देखनेवाले महारथी योद्धा उन दोनों वीरों में से किसी की जय या पराजय का निश्चय नहीं कर सकते थे; वे लोग खेल की तरह टकटकी लगाकर यही देख रहे थे कि वे दोनों महायोद्धा परस्पर निकटवर्ती होकर किस तरह अस्त्रयुद्ध कर रहे हैं। राजन! यह आपकी और आपके पुत्र की कुमन्त्रणा का फल है। उस समय शत्रुदल-दलन वे दोनों वीर परस्पर वध की इच्छा से जल वरसानेवाले मेघों के समान एक दूसरे पर वाण वरसाकर उनसे आकाशमण्डल को परिपूर्ण कर रहे थे। उनके सुवर्णपुङ्खयुक्त वाणों से जान पड़ता था कि आकाशमण्डल भयङ्कर उल्काओं से व्याप्त हो रहा है अथवा शरदृऋतु में उड़नेवाले सारस गगनमण्डल की शोभा को वढ़ा रहे हैं। महावली भीमसेन को इस तरह महारथी कर्ण से युद्ध करते देखकर श्रीकृष्ण और अर्जुन सोचने लगे कि भीमसेन पर यह भारी बोझ आ पड़ा है। कर्ण और भीमसेन ४० के छोड़े हुए वाणों के दृढ़ प्रहार से मरे हुए घोड़े, हाथी और मनुष्य दूर-दूर पर जाकर गिर रहे थे। महाराज! गिरे हुए, गिरते हुए और मर रहे असंख्य मनुष्यों के नष्ट होने से आपकी सेना वहुत कम हो गई। हे भरतकुल-तिलक! क्षण भर में मरे हुए मनुष्यों, घोड़ों ४८ और हाथियों की लाशों के ढेर से रणभूमि पट गई।

एक सौ तेंतीस अध्याय

कर्ण के सहकारी दुर्जय का मारा जाना

धृतराष्ट्र ने कहा—हे सञ्जय ! फुर्तीले महायोद्धा कर्ण से भीमसेन इस तरह युद्ध कर सके, यह सुनकर मुझे बड़ा आश्चर्य हो रहा है। जो सम्पूर्ण शस्त्र धारण किये यक्ष, असुर, मनुष्यगण सहित देवताओं को भी समर में परास्त कर सकता है, अकेले ही उनका सामना कर सकता है, वही कर्ण भीमसेन को नहीं हरा सका ! हे सञ्जय, इसका क्या कारण है ? ख़ैर, अब तुम यह बताओ कि इन दोनों वीरों ने परस्पर प्राण-संशय उपस्थित करनेवाला घोर युद्ध कैसे किया ? मैं समझता हूँ कि इसी युद्ध के ऊपर दोनों पक्षों की हार-जीत निर्भर है। हे सञ्जय ! मेरा पुत्र दुर्योधन केवल कर्ण की सहायता के भरोसे पर ही श्रीकृष्ण और सात्यकि सहित सब पाण्डवों को जीतने का हौसला रखता है। किन्तु इस समय बारम्बार कर्ण को समर में भीमसेन से हारते सुनकर मैं निराशा से घबरा रहा हूँ। दुर्योधन के अन्याय से ही मेरे पक्ष का नाश होगा, यह स्पष्ट जान पड़ रहा है। हे सञ्जय ! वीर पाण्डवों को कर्ण कभी नहीं जीत सकेगा। कर्ण ने पाण्डवों से जब युद्ध किया है तभी उसने नीचा देखा है। इन्द्र सहित सब देवता भी पाण्डवों को नहीं जीत सकते; किन्तु मेरा मन्दमति पुत्र दुर्योधन यह बात नहीं समझता ! शहद उतारनेवाला मूर्ख जैसे ऊपर चढ़कर अपने नीचे गिरने की सम्भावना पर ध्यान नहीं देता, वैसे ही कुवेर-सदृश धर्मराज के धन (राज्य) को हरकर उससे होनेवाले अपने विनाश को दुर्योधन नहीं देख पाता। कपटनिपुण दुर्योधन कपट के द्वारा पाण्डवों का राज्य हरकर यह समझता है कि वह विजयी है। यही समझकर वह पाण्डवों का अपमान करता है। स्थिर बुद्धि न रहने से मैंने भी, पुत्रस्नेह के वश होकर, धर्म पर चलनेवाले पाण्डवों से छल किया। दूरदर्शी युधिष्ठिर ने कुलक्षय के डर से ही पहले मेल कर लेना चाहा था; किन्तु मेरे पुत्रों ने उन्हें युद्ध करने में अशक्त समझकर उनकी बात नहीं मानी। पहले के अन्यायों और दुःखों को याद करके भीमसेन ने कर्ण से घोर युद्ध किया होगा। इसलिए हे सञ्जय ! तुम मुझसे कहो कि परस्पर वध करने के लिए उद्यत, श्रेष्ठ योद्धा, महाबली कर्ण और भीमसेन ने किस तरह कठिन संग्राम किया। १०

सञ्जय ने कहा—राजन् ! वन में भिड़नेवाले दो मस्त हाथियों की तरह परस्पर वध के लिए उद्यत महारथी कर्ण और महाबली भीमसेन ने जिस तरह युद्ध किया, सो सुनिए। महा-पराक्रमी कर्ण ने अत्यन्त क्रुद्ध होकर, पराक्रम प्रकट करके, क्रोधान्ध भीमसेन को तीस बाण मारे। भीमसेन ने भी पैने बाणों से कर्ण का धनुष काटकर एक भल्ल बाण से उनके सारथी को मार डाला। सारथी मरकर रथ से नीचे गिर पड़ा। तब क्रोधान्ध होकर कर्ण ने कनक-वैदूर्यसमलङ्कृत, सुवर्णदण्ड से शोभित, कालदण्ड के समान प्राण हरनेवाली महाशक्ति हाथ में

ली। उन्होंने वज्र के समान भयानक वह शक्ति तानकर भीमसेन को मारी और घोर सिंह-नाद किया। वह सिंहनाद सुनकर दुर्योधन आदि आपके सब पुत्र बहुत प्रसन्न हुए। तब महावीर भीमसेन ने प्राणों की खोज सी कर रही, अग्नि और सूर्य के समान प्रभापूर्ण, बिना केंचुल के भुजङ्ग के समान भीषण, वह कर्ण की छोड़ी हुई शक्ति आते देखकर उसे आकाश में ही सात बाणों से काट डाला। वे कुपित होकर कर्ण के ऊपर मयूर-पत्र-शोभित, स्वर्णपुङ्ख-युक्त, सिल्ली पर रगड़कर तेज़ किये गये यमदण्ड-तुल्य असंख्य बाण बरसाने लगे। कर्ण भी सुवर्णपृष्ठयुक्त दूसरा धनुष लेकर, उस पर डोरी चढ़ाकर, भीमसेन को बाणवर्षा से पीड़ित करने लगे। उन्होंने नव तीक्ष्ण बाणों से कर्ण के सब बाण काटकर घोर सिंहनाद किया। २१

महाराज! इसी तरह वे दोनों वीर कभी गाय के लिए लड़नेवाले दो साँड़ों की तरह चिल्लाते थे और कभी मांस के लिए झगड़नेवाले दो सिंहों की तरह तर्जन-गर्जन करते थे। कभी एक दूसरे पर प्रहार करने को उद्यत होता था, कभी एक दूसरे पर वार करने का अवसर ढूँढ़ता था और कभी गोशाला में स्थित बड़े दो साँड़ों की तरह एक दूसरे की ओर ताकता था। दो मस्त हाथी जैसे भिड़कर एक दूसरे पर दाँत का प्रहार करते हैं वैसे ही लाल-लाल आँखें किये हुए वे दोनों योद्धा एक दूसरे पर बाणों की वर्षा करने लगे। राजन्! इसी तरह उन दोनों का घोर संग्राम होने लगा। वे दोनों वीर कभी हँसते, कभी झिड़कते और कभी शङ्ख बजाते थे। इसी बीच में महावीर भीमसेन ने कर्ण के धनुष की मूठ काट डाली। फिर उनके घोड़ों को भी नष्ट करके उनके सारथी को मारकर गिरा दिया। इस तरह भीमसेन के बाणों से धनुष कटने और सारथी तथा घोड़ों के मरने से महावीर कर्ण चिन्ता-सागर में मग्न हो गये। उनसे कुछ करते-धरते न बन पड़ा। ३०

महाराज! राजा दुर्योधन ने कर्ण को अत्यन्त सङ्कट में पड़े देखकर, क्रोधान्ध होकर, दुर्जय से कहा—भाई! देखते क्या हो? वीर कर्ण भीमसेन की बाण-वर्षा से अत्यन्त पीड़ित

हो रहे हैं। इसलिए तुम कर्ण की सहायता करने को तुरन्त जाओ और इस बिना दाढ़ी-मूँछ के भीमसेन को मारो। हे नरनाथ ! तब आपके पुत्र दुर्जय, बड़े भाई की आज्ञा मानकर,
४० बाण बरसाते हुए वेग से भीमसेन की ओर चले। दुर्जय ने भीमसेन को नव, घोड़ों को आठ और सारथी को छः बाण मारे। इस तरह भीमसेन को पीड़ित करके उनके रथ की ध्वजा में तीन बाण मारकर फिर तीक्ष्ण सात बाणों से भीमसेन को पीड़ित किया। इससे वे अत्यन्त कुपित हो उठे। उन्होंने पहले दुर्जय के सारथी, घोड़े और फिर दुर्जय को भी यमपुर भेज दिया। दुर्जय की मृत्यु से महावीर कर्ण बहुत दुःखित हुए। उनकी आँखों से आँसू बहने लगे। वे दिव्य आभूषणों से शोभित और पृथ्वी पर गिरकर साँप की तरह तड़प रहे दुर्जय के चारों ओर घूमने और शोक प्रकट करने लगे। अपने घोर वैरी कर्ण को रथ-हीन करके मुसकाते हुए महाबली भीमसेन तीक्ष्ण बाण, शतघ्नी और शङ्कु आदि से बेतरह घायल करने लगे। शत्रुदमन
४५ महावीर कर्ण इस तरह कुपित भीमसेन के बाणों से पीड़ित होने पर भी युद्ध से नहीं हटे।

एक सौ चौंतीस अध्याय

भीमसेन के आगे से कर्ण का भागना

सञ्जय कहते हैं—राजन् ! भीमसेन के बाणों से रथ-हीन और परास्त होने पर महावीर कर्ण तुरन्त दूसरे रथ पर बैठकर भीमसेन के सामने आये और उन्हें बाणों से पीड़ित करने लगे। दो मस्त हाथी जैसे भिड़कर एक दूसरे पर दाँतों का प्रहार करें वैसे ही वे दोनों वीर कानों तक तान-तानकर एक दूसरे को बाण मारने लगे। कर्ण ने भीमसेन के ऊपर बाण बरसाकर घोर सिंहनाद किया और फिर उनकी छाती में बाण मारे। भीमसेन ने भी कर्ण को पहले दस और फिर सत्तर तीक्ष्ण बाण मारे। महाप्रतापी कर्ण ने भीमसेन की छाती में नव बाण मारे और ध्वजा में एक बाण मारा। जैसे कोई हाथी को अङ्कुश या घोड़े को चाबुक मारे वैसे ही भीमसेन ने कर्ण को तिरसठ बाण मारे।

इस तरह भीमसेन के बाणों की गहरी चोट खाने से कर्ण की आँखें लाल हो आईं। क्रोध के मारे ओठ चाटते हुए कर्ण ने भीमसेन को मार डालने के लिए, इन्द्र के छोड़े वज्र के समान, शरीर को विदीर्ण करनेवाला एक भयानक बाण मारा। वह विचित्र पुङ्खयुक्त बाण कर्ण के धनुष से छूटकर भीमसेन के शरीर को भेदकर पृथ्वी में घुस गया। तब महापराक्रमी भीमसेन ने अत्यन्त क्रुद्ध होकर, कुछ भी विचलित हुए बिना, एक वज्रतुल्य, चार हाथ की, छः पहलू-
११ वाली, लोहे की, सुवर्णशोभित भारी गदा लेकर कर्ण के ऊपर चलाई। इन्द्र ने जैसे वज्र से असुरों को मारा था वैसे ही कुपित भीमसेन ने उस गदा से कर्ण के बढ़िया घोड़ों को मार डाला। फिर महाबाहु भीमसेन ने दो क्षुर बाणों से कर्ण की ध्वजा काटकर बाणों से सारथी

को भी मार गिराया। कर्ण कुछ उदास होकर घोड़े-सारथी-ध्वजा से हीन रथ छोड़कर, पैदल ही खड़े होकर, धनुष चढ़ाने और बाण छोड़ने लगे। उस समय हमने कर्ण का अद्भुत पराक्रम देखा। उन्होंने रथहीन होकर भी रथ पर से लड़नेवाले शत्रु का सामना किया।

उस समय कुरुराज दुर्योधन ने कर्ण को रथहीन देखकर दुर्मुख से कहा—भाई, देखो, भीमसेन ने कर्ण का रथ नष्ट कर दिया है। इसलिए तुम झटपट जाकर कर्ण की सहायता करो, जिसमें वे मौका पाकर अन्य रथ पर बैठ सकें। दुर्योधन की आज्ञा पाकर दुर्मुख शीघ्र कर्ण के पास पहुँचकर भीमसेन के ऊपर बाण बरसाने लगे। महाबली भीम ने दुर्मुख को कर्ण की सहायता करते देखकर प्रसन्नता प्रकट की। क्रोध के मारे ओंठ चाटते हुए भीमसेन ने शिलीमुख बाणों से कर्ण को पीड़ित करके फुर्ती के साथ दुर्मुख के पास अपना रथ बढ़ाया। उन्होंने देखते ही देखते तीक्ष्ण नव बाणों से दुर्मुख को मार डाला। दुर्मुख के मरने पर कर्ण उन्हीं के रथ पर बैठकर प्रकाशमान सूर्य के समान शोभा को प्राप्त हुए। रक्त से भीगे, पृथ्वी पर मरे पड़े दुर्मुख की दशा देखकर कर्ण को बड़ा दुःख हुआ और क्षण भर तक आँखों में आँसू भरकर वे शोक करते रहे। मृत दुर्मुख की प्रदक्षिणा करके आगे बढ़े हुए कर्ण लम्बी गर्म साँसें लेने लगे। उस समय उनसे कुछ करते-धरते नहीं बन पड़ा। उसी अवसर में भीमसेन ने गृध्रपक्षयुक्त चौदह तीक्ष्ण नाराच बाण कर्ण को मारे। वे सुवर्णपुङ्खयुक्त बाण कर्ण के सुवर्ण-शोभित कवच को तोड़कर उनके शरीर में घुस गये। वे बाण कर्ण का रक्त पीकर, कालप्रेरित क्रुद्ध सर्पों की तरह, पृथ्वी में घुस गये और बिल के भीतर आधे घुसे हुए साँपों के समान शोभा को प्राप्त हुए। कर्ण ने भी क्रुद्ध होकर, कुछ विचार न करके, भीमसेन को चौदह सुवर्णभूषित तीक्ष्ण नाराच मारे। भीमसेन के बाँये

हाथ को घायल करके वे भयानक बाण, क्रौञ्च पर्वत के छेद में पक्षियों की तरह, पृथ्वी में घुस गये। वे अत्यन्त उग्र बाण पृथ्वी में घुसते समय अस्त हो रहे सूर्य की प्रकाशमान किरणों के

३० समान शोभा को प्राप्त हुए। मर्मभेदी नाराचों से अत्यन्त घायल भीमसेन के शरीर से, पहाड़ से झरने की तरह, बहुत सा रक्त बहा। तब भीमसेन ने क्रोधान्ध होकर, गरुड़ के समान वेग-शाली, तीन उग्र बाण कर्ण को मारे और सात बाणों से उनके सारथी को घायल कर दिया। भीमसेन के बाणों की चोट से अत्यन्त विह्वल और भयभीत होकर महायशस्वी कर्ण तेज़ी के साथ घोड़ों को हँकाकर रणभूमि से भाग गये। सुवर्णशोभित धनुष चढ़ाकर भीमसेन प्रज्वलित अग्नि

३५ के समान रणभूमि में विचरने लगे। कोई महारथी उनका सामना न कर सका।

एक सौ तीस अध्याय

दुर्मर्षण आदि दुर्योधन के पाँच भाइयों का भीमसेन के हाथ से मारा जाना

धृतराष्ट्र ने कहा—हे सञ्जय! उस पौरुष को धिक्कार है जो किसी काम में नहीं आता! मुझे तो दैव (भाग्य) ही सबसे प्रबल जान पड़ता है; क्योंकि कर्ण जैसा महारथी योद्धा अकेले भीमसेन को नहीं परास्त कर सका! दुर्योधन के मुँह से बारम्बार मैंने सुना है कि कर्ण अकेले ही श्रीकृष्ण सहित सब पाण्डवों को हरा सकता है; कर्ण के समान दूसरा योद्धा पृथ्वी में मुझे नहीं देख पड़ता। मन्दमति दुर्योधन पहले मुझसे कहा करता था कि कर्ण बलवान्, शूर, दृढ़-धनुर्द्धर और युद्ध में कभी न थकनेवाला महारथी योद्धा है। वही कर्ण मेरा सहायक है। जिस समय कर्ण मेरा सहायक हो उस समय सब देवता भी मेरा सामना नहीं कर सकते, दीन पाण्डवों की तो कुछ बात ही नहीं। अब उसी कर्ण को भीमसेन से हारकर विषहीन साँप के समान युद्धभूमि से भागते देख दुर्योधन ने क्या कहा? अहो, दुर्योधन ऐसा मोहित हो गया कि उसने युद्धविद्या में कच्चे दुर्मुख को अकेले ही, अग्नि के मुँह में पतङ्ग की तरह, भीम-सेन के आगे लड़ने को भेज दिया! अश्वत्थामा, शल्य, कृपाचार्य और कर्ण, ये सब मिलकर भी पराक्रमी कुपित भीमसेन का सामना नहीं कर सकते! वे भी भीमसेन के दस हज़ार हाथियों के बल, महाघोर प्रकृति और उग्र निश्चय को जानने के कारण उनका सामना न करेंगे। क्रूर-कर्मा और अन्तक के तुल्य भीमसेन के क्रोध और बल-वीर्य को जाननेवाले अश्वत्थामा आदि वीरगण क्यों भीमसेन के क्रोध की आग भड़कावेंगे? एक महाबाहु कर्ण को ही अपने बल-

१० वीर्य का ऐसा अभिमान था कि उसने भीमसेन को तुच्छ समझा और उनसे युद्ध किया। इन्द्र जैसे असुरों को जीतते हैं वैसे ही सेना सहित कर्ण को जिन भीमसेन ने बारम्बार परास्त कर दिया, उन्हें युद्ध में कोई नहीं जीत सकता। जो भीमसेन अर्जुन के पास जाने के लिए, द्रोणाचार्य ऐसे महारथी योद्धा को विमुख करके, मेरी सेना के व्यूह में घुस गये उनका सामना

करके कौन जीता बच सकता है? या जीवन की इच्छा रखनेवाला कौन व्यक्ति उनका सामना कर सकता है? वज्रपाणि इन्द्र के सामने दानवों के समान कौन शस्त्रधारी भीमसेन के आगे ठहर सकता है? यमपुर में जाकर चाहे कोई मनुष्य लौट भी आवे, लेकिन कुपित भीमसेन के आगे जाकर कोई जीता नहीं लौट सकता। जो नासमझ लोग विमोहित होकर क्रुद्ध भीमसेन के ऊपर आक्रमण करने को गये वे, पतङ्ग जैसे आग में मरने के लिए कूदते हैं वैसे ही, मृत्यु के मुख में चले गये। उग्रप्रकृति भीमसेन ने कौरव-सभा में कुपित होकर मेरे सौ पुत्रों के मारने की जो प्रतिज्ञा की थी उसी का ख़याल करके, और कर्ण को परास्त देखकर, डर के मारे दुःशासन और दुर्योधन ने उस समय भीमसेन का सामना नहीं किया।

हे सञ्जय! दुर्बुद्धि दुर्योधन ने कौरवसभा में गर्व के साथ बारम्बार कहा था कि मैं, कर्ण और दुःशासन, तीनों जने युद्ध में पाण्डवों को जीत लेंगे। किन्तु इस समय कर्ण को रथ-हीन और भीमसेन से परास्त देखकर, सन्धि का प्रस्ताव लेकर आये हुए श्रीकृष्ण को लौटा देने का ख़याल करके, उसे बड़ा पश्चात्ताप हो रहा होगा। अपने ही अपराध से युद्ध में भीमसेन के हाथों कवचधारी भाइयों की मृत्यु देखकर मेरा पुत्र मूढ़ दुर्योधन अवश्य पछता रहा होगा। २० जीवन की इच्छा रखनेवाला कौन पुरुष भीमशस्त्रधारी, साक्षात् काल के समान युद्धभूमि में खड़े हुए, क्रुद्ध भीमसेन के साथ भिड़ने जायगा? मेरी समझ में तो यह आता है कि बाड़वानल के भीतर से चाहे कोई जीता निकल आवे, लेकिन भीमसेन के हाथ में पड़कर किसी तरह नहीं जीता बच सकता। पाण्डवगण, पाञ्चालगण, कृष्णचन्द्र और सात्यकि, ये लोग कुपित होकर जब युद्धभूमि में उपस्थित होते हैं तब प्राणों का मोह छोड़कर लड़ते हैं। अहो, सञ्जय! इस समय मेरे पुत्रों के लिए जीवनसङ्कट उपस्थित है।

सञ्जय ने कहा—राजन्! अब महाभय और लोकक्षय उपस्थित होने पर आप इस तरह शोक कर रहे हैं, किन्तु वास्तव में इस घोर अनर्थ की जड़ आप ही हैं। आपने ही पुत्रों का कहा मानकर यह युद्ध की प्रचण्ड आग सुलगाई है। जैसे मरनेवाला मनुष्य हितकर औषध को नहीं लेता वैसे ही उस समय आपके हितचिन्तकों ने जो उचित उपदेश दिये, उन्हें आपने स्वीकार नहीं किया। हे नरोत्तम! न पचनेवाला कालकूट विष पहले आपने पिया है; अब उसका फल भोगिए। महाबली योद्धा लोग तो प्राणपण से युद्ध कर रहे हैं और आप उनकी व्यर्थ निन्दा कर रहे हैं। अब ध्यान देकर युद्ध का वृत्तान्त सुनिए, मैं वर्णन करता हूँ।

महाराज! कर्ण को परास्त देखकर दुर्मर्षण, दुःसह, दुर्मद, दुर्धर और जय, ये पाँचों आपके पुत्र अत्यन्त कुपित हो उठे। पाँचों भाइयों ने वेग से जाकर चारों ओर से भीमसेन को घेर लिया। वे भीमसेन पर टीड़ीदल के समान असंख्य तीक्ष्ण बाण बरसाने लगे। उन देव- ३१ तुल्य सुन्दर सुकुमार राजकुमारों के बाणों की चोट को हँसते-हँसते भीमसेन ने सह लिया।

दुर्मर्षण आदि आपके पुत्रों को महाबली भीमसेन के सामने उपस्थित देखकर कर्ण फिर भीमसेन के सामने आये और उनके ऊपर सुवर्णपुङ्खयुक्त तीक्ष्ण बाण बरसाने लगे। महाराज! आपके पाँचों पुत्र भीमसेन को रोक रहे थे तथापि वे उनकी परवा न करके अपने प्रतिद्वन्द्वी कर्ण की ओर चले। तब आपके सब पुत्र कर्ण की रक्षा के लिए उन्हें चारों ओर से घेरकर भीमसेन के ऊपर सन्नतपर्वयुक्त तीक्ष्ण बाणों की वर्षा करने लगे। यह देखकर भीमसेन क्रोध से विह्वल हो उठे। उन्होंने पचीस तीक्ष्ण बाणों से आपके पाँचों पुत्रों को, घोड़े और सारथी सहित, मारकर गिराया। सारथियों सहित पाँचों राजकुमार आँधी से टूटे हुए विचित्र पुष्पयुक्त वृक्षों की तरह रथों पर से गिर पड़े। उस समय हम लोगों ने भीमसेन का अद्भुत पराक्रम देखा। उन्होंने बाणों से कर्ण को भी रोका और आपके पुत्रों को भी मार डाला। भीमसेन के तीक्ष्ण बाणों से विह्वल कर्ण ने अत्यन्त क्रोध की दृष्टि से उनको देखा। भीमसेन भी क्रोध से लाल आँखें करके, धनुष चढ़ाकर, बारम्बार कर्ण की ओर देखने लगे। ४०
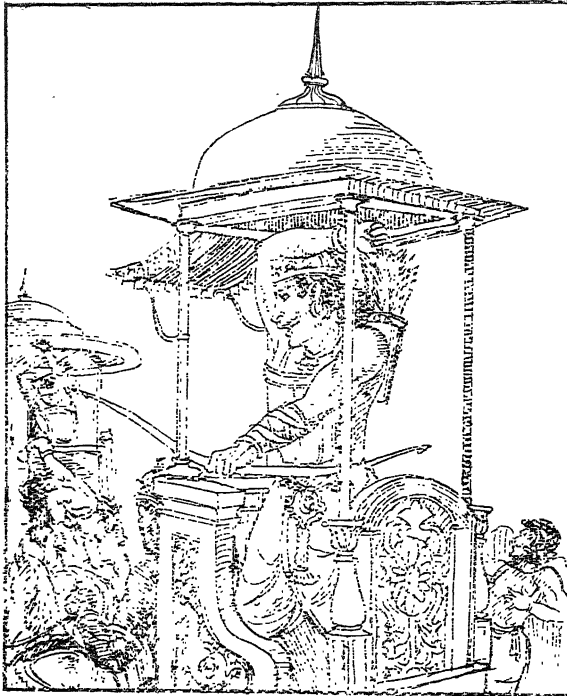
एक सौ छत्तीस अध्याय

भीमसेन के हाथ से दुर्योधन के अन्य भाइयों का मारा जाना

सञ्जय ने कहा—राजन्! भीमसेन के बाणों से आपके पुत्रों को मारे जाते देखकर महारथी कर्ण बहुत ही कुपित हो उठे। उन्हें अपना जीवन भारी सा जँचने लगा। अपने ही सामने आपके पुत्रों का नाश होते देखकर इसके लिए वे अपने को ही अपराधी सा मानने लगे। उस समय महावीर भीमसेन पुराने वैर को स्मरण करके, क्रोधान्ध होकर, कर्ण के ऊपर

पूरा ज़ोर लगाकर तीक्ष्ण बाण बरसाने लगे। कर्ण ने पहले पाँच बाण और फिर हँसते-हँसते सुवर्णपुङ्खशोभित तीक्ष्ण सत्तर बाण मारकर भीमसेन को पीड़ित किया। भीमसेन ने कर्ण के उन बाणों का कुछ भी ख़याल न करके उनको आनतपर्वयुक्त तीक्ष्ण सौ बाण मारे। फिर बहुत ही उग्र पाँच बाणों से कर्ण के मर्मस्थल में आघात करके एक भल्ल बाण से उनका धनुष काट डाला। इससे कर्ण बहुत ही उदास हो गये। वे अन्य धनुष लेकर असंख्य बाणों से भीमसेन को पीड़ित करने लगे। कर्ण के बाणों में भीमसेन छिप से गये। अब उन्होंने क्रुद्ध होकर कर्ण के सारथी और घोड़ों को मार डाला। फिर हँसते-हँसते बाणों से उनके सुवर्णमण्डित उस धनुष को भी काट डाला। महारथी कर्ण क्रोध से अधीर होकर रथ से उतर पड़े। उन्होंने भीमसेन के ऊपर एक गदा फेंकी। कर्ण की उस गदा को आते देखकर महाबली भीमसेन ने सब सैनिकों के सामने ही अविचलित भाव से बाण मारकर उस प्रहार को व्यर्थ कर दिया। फिर वे कर्ण को मारने के लिए उन पर लगातार हज़ारों बाण छोड़ने लगे। महापराक्रमी कर्ण ने अपने तीक्ष्ण बाणों से भीमसेन के सब बाणों को निष्फल कर दिया और फिर अपने उग्र बाणों से उनका सुवर्णशोभित सुदृढ़ कवच काट डाला। फिर सब योद्धाओं के सामने ही ताककर उनको पचीस बाण मारे। कर्ण की यह फुर्ती और धैर्य देखकर सबको बड़ा आश्चर्य हुआ। १०

अब महावीर भीमसेन ने क्रोध से विह्वल होकर कर्ण को बहुत ही उग्र नव बाण मारे। वे बाण कर्ण के कवच को तोड़कर, दाहनी भुजा को भेदकर, वैसे ही पृथ्वी में घुस गये जैसे कुपित साँप बिल में घुस जाते हैं। इस तरह भीमसेन के बाणों से पीड़ित होकर महारथी कर्ण फिर समर से हट गये। यह देखकर राजा दुर्योधन ने अपने भाइयों से कहा—हे वीरो! तुम लोग झटपट यत्नपूर्वक कर्ण के रथ के पास जाकर उनकी सहायता करो। महाराज! तब आपके पुत्र चित्र, उपचित्र, चित्राक्ष, चारुचित्र, चित्रायुध और चित्रवर्मा, ये बड़े भाई की आज्ञा से, बाण बरसाते हुए भीमसेन की ओर दौड़े। महावीर भीमसेन ने उनके पहुँचने के पहले ही एक-एक बाण से उन सबको मार डाला। वे लोग उसी समय, आँधी से टूटे पेड़ों की तरह, पृथ्वी पर मरकर गिर पड़े। आपके महारथी पुत्रों का विनाश होते देखकर महावीर कर्ण आँखों में आँसू भरकर विदुर के वचनों को स्मरण करने लगे। इसके बाद विधिपूर्वक सुसज्जित अन्य रथ पर बैठकर वे तुरन्त युद्ध करने को भीमसेन के सामने आये। उस समय वे दोनों महावीर सुवर्णपुङ्ख, सुशाणित, उग्र बाणों से एक दूसरे को पीड़ित करने लगे। दोनों ही सूर्य की किरणों से युक्त दो मेघों के समान शोभा को प्राप्त हुए। इसके बाद महाबली भीमसेन ने क्रोधित होकर महातीक्ष्ण छत्तीस भल्ल बाणों से कर्ण का कवच काट डाला। महारथी कर्ण ने भी उनको अत्यन्त तीव्र पचास बाण मारे। तब वे रक्तचन्दन-चर्चित दोनों वीर बाणों के घावों से बहुत ही शोभित हुए। उस समय वे उदय को प्राप्त २०

चन्द्रमा और सूर्य के समान जान पड़ने लगे। उस समय उनके कवच छिन्न-भिन्न और शरीर रक्त से लिप्त होने के कारण वे केंचुल छोड़े हुए दो महानागों के समान जान पड़ने लगे।

अब वे दोनों वीर दाँतों से काटने के लिए उद्यत दो व्याघ्रों की तरह और जलधारा बर-
३० सानेवाले दो मेघों की तरह परस्पर बाणवर्षा करने लगे। जिस तरह दो गजराज भिड़कर एक दूसरे के शरीर को दाँतों से चीर-फाड़ डालते हैं, वैसे ही वे बाणों के प्रहार से एक दूसरे के शरीर को छिन्न-भिन्न करने लगे। वे कभी सिंहनाद, कभी बाणों की वर्षा, कभी क्रीड़ापूर्वक युद्ध, कभी क्रोधपूर्ण दृष्टिपात और कभी मण्डलाकार गति से रथ घुमाते हुए घूम रहे थे। सिंह-सदृश पराक्रमी वे दोनों महावीर गाय के लिए उत्सुक दो साँड़ों की तरह ज़ोर से गरजते तथा इन्द्र और राजा बलि की तरह घोरतर संग्राम करते थे। महावीर भीमसेन भयानक धनुष खींचकर बिजली से शोभित मेघ के समान समरभूमि में शोभा को प्राप्त हुए। उन्होंने जलधारा के समान सुवर्णपुङ्खयुक्त बाणों की लगातार वर्षा से पर्वत-सदृश कर्ण को ढक दिया। उनके धनुष का शब्द वज्र की कड़क के समान सुनाई पड़ने लगा। राजन्! उस समय आपके पुत्रगण आश्चर्य के साथ भीमसेन के अद्भुत बलवीर्य को देखने लगे। महावीर भीमसेन अर्जुन, श्रीकृष्ण, सात्यकि और चक्ररक्षक युधामन्यु तथा उत्तमौजा को आनन्दित करते हुए कर्ण के साथ भयानक युद्ध करने लगे। राजन्! भीमसेन के असाधारण पराक्रम, बाहुबल और धैर्य को
४० देखकर आपके पुत्र बहुत ही उदास हो गये।

एक सौ सैंतीस अध्याय

दुर्योधन के अन्य भाइयों का भीमसेन के हाथों मारा जाना

सञ्जय ने कहा—राजन्! मस्त हाथी जैसे अपने प्रतिद्वन्द्वी गजराज के गर्जन को सह नहीं सकता वैसे ही कर्ण भी भीमसेन की प्रत्यञ्चा के शब्द को सह नहीं सके। वे क्षण भर भीमसेन के पास से हटकर, उनके बाणों से मरे हुए आपके पुत्रों को देखकर, अत्यन्त खिन्न हो गये। इसके बाद वे फिर भीमसेन से भयानक युद्ध करने लगे। उनकी आँखें क्रोध से लाल हो आईं। वे फुफकार मारनेवाले विषैले नाग की तरह गरम साँसें लेने और बाणों की वर्षा करने लगे। उस समय उनकी शोभा किरणें फैला रहे सूर्य के समान हुई। महावीर भीमसेन भी सूर्य की किरणों के समान बाण बरसाकर कर्ण को इस तरह व्याप्त करने लगे जिस तरह पहाड़ को सूर्य किरणों से ढक लेते हैं। पक्षी जैसे वृक्ष के कोटर में घुसते हैं वैसे ही मयूरपुच्छशोभित कर्ण के छोड़े हुए बाण भीमसेन के अङ्गों में धँसने लगे। उस समय कर्ण के धनुष से छूटे हुए सुवर्णपुङ्खयुक्त बाण लगातार चारों ओर से गिरकर क़तार बाँधे हुए

हंसों के समान दिखाई पड़ने लगे। ऐसा जान पड़ने लगा कि कर्ण के बाण केवल धनुष से ही नहीं, बल्कि उनके ध्वज, छत्र, ईषामुख और रथ के अन्यान्य सामानों से लगातार निकल रहे हैं। इस तरह महावीर कर्ण ने, जीवन का मोह छोड़कर, वेगशाली सुवर्णमय बाण बरसाकर आकाशमण्डल को व्याप्त कर दिया। तब महाबली भीमसेन ने अपने बाणों से कर्ण के चलाये हुए बाणों को छिन्न-भिन्न कर दिया और कर्ण को तीक्ष्ण बीस बाण मारे। कर्ण ने पहले भीमसेन को जैसे बाणों से ढक दिया था वैसे ही भीमसेन ने कर्ण को बाणों से छिपा दिया। राजन्! तब आपके पक्ष के वीर और चारणगण भीमसेन का पराक्रम देखकर, परम सन्तुष्ट हो, उन्हें धन्यवाद देने लगे। उस समय कौरवपक्ष के भूरिश्रवा, कृपाचार्य, अश्वत्थामा, शल्य, जयद्रथ और पाण्डवपक्ष के युधामन्यु, उत्तमौजा, सात्यकि, श्रीकृष्ण और अर्जुन, ये दस महारथी भीमसेन को धन्य-धन्य कहकर सिंहनाद करने लगे। रणभूमि में चारों ओर लोमहर्षण कोलाहल सुनाई पड़ने लगा। ९

हे कुरुराज! तब आपके पुत्र राजा दुर्योधन ने फुर्ती के साथ अपने भाइयों से कहा—भाइयो! तुम्हारा भला हो। तुम तुरन्त कर्ण की सहायता करने का यत्न करो। उनके पास जाओ और कुपित भीमसेन से उनकी रक्षा करो। तुम सहायता नहीं करोगे तो अवश्य ही भीमसेन के तीव्र बाणों से कर्ण का प्राणान्त हो जायगा। महाराज! तब आपके सात पुत्र, बड़े भाई दुर्योधन की आज्ञा से, कुपित होकर, भीमसेन की ओर वेग से चले और बाणवर्षा से उन्हें रोकने की चेष्टा करने लगे। वर्षा ऋतु में मेघ जैसे जलधाराओं से पर्वत को ढक लेते हैं २० वैसे ही उन्होंने बाणवर्षा से भीमसेन को अदृश्य सा कर दिया। प्रलयकाल में सात ग्रह जैसे चन्द्रमा को पीड़ित करते हैं वैसे ही वे सातों महारथी भाई वीर भीमसेन को पीड़ित करने लगे। महावीर भीमसेन को पिछले वैर का स्मरण हो आया। उन्होंने क्रोधान्ध होकर दृढ़ मुष्टि से शोभित धनुष को खींचा और सूर्यकिरण-सदृश सात उग्र बाण छोड़े। जिस समय भीमसेन ने धनुष पर बाणों को चढ़ाकर खींचा उस समय ऐसा जान पड़ा मानो वे आपके पुत्रों के प्राणों को खींच रहे हैं। भीमसेन के छोड़े हुए वे सुवर्णपुङ्खयुक्त पैने बाण सातों भाइयों के शरीरों को चीरकर, उन्हें प्राणहीन करके, रक्त-पान करके आकाश में गरुड़ पक्षियों के समान शोभायमान हुए। रक्त से भीगे हुए पङ्खवाले उन बाणों के प्रहार से हृदय फट जाने के कारण मरकर आपके सातों पुत्र पृथ्वी पर गिर पड़े। उनके गिरते समय ऐसा जान पड़ा मानो पर्वत के शिखर पर उत्पन्न बड़े-बड़े वृक्षों को किसी हाथी ने तोड़कर गिरा दिया हो। राजन्! इस तरह शत्रुञ्जय, शत्रुसह, चित्र, चित्रायुध, दृढ़, चित्रसेन और विकर्ण, ये आपके सात पुत्र मारे गये। उनमें से विकर्ण पाण्डवों को बहुत प्रिय थे। विकर्ण के शोक से अत्यन्त व्याकुल ३० होकर भीमसेन कहने लगे—भाई विकर्ण! मैंने युद्ध में तुम सो भाइयों को मारने की प्रतिज्ञा

की थी। उसी प्रतिज्ञा की रक्षा करने के लिए आज, अप्रिय होने पर भी, मुझे तुम्हारा वध करना पड़ा। तुम क्षत्रिय-धर्म के अनुसार युद्ध करने आये और इसी कारण मारे गये। हा! युद्ध का धर्म बड़ा ही निष्ठुर है। हम पाण्डवों के, विशेष कर राजा युधिष्ठिर के, तुम हित-चिन्तक थे। न्याय से हो या अन्याय से, चाहे जिस तरह, तुम्हारा वध मुझे करना ही पड़ा। बृहस्पति के तुल्य अगाध बुद्धिवाले परम पूज्य पितामह भीष्म भी मारे जाकर पृथ्वी पर पड़े हैं। इसी से कहना पड़ता है कि युद्ध बड़ा ही निष्ठुर काम है।

सञ्जय कहते हैं—महाराज! कर्ण के सामने ही इस तरह आपके सात पुत्रों को मार-कर भीमसेन घोर सिंहनाद करने लगे। उनका सिंहनाद सुनने से धर्मराज युधिष्ठिर को पता लग गया कि हमारी विजय हो रही है। इससे उन्हें परम आनन्द हुआ। पाण्डवपक्ष में बाजे बजाकर भीमसेन के सिंहनाद का उत्तर दिया गया। धर्मराज युधिष्ठिर इस तरह महा-वीर भीमसेन का इशारा पाकर प्रसन्नतापूर्वक शस्त्रधारियों में श्रेष्ठ आचार्य की ओर आक्रमण ४० करने के लिए चले। इधर राजा दुर्योधन अपने इकतीस भाइयों की मृत्यु देखकर, शोकाकुल होकर, सोचने लगे कि महामति विदुर ने ठीक ही कहा था। इस तरह सोच-विचार में पड़-कर राजा दुर्योधन किङ्कर्त्तव्यविमूढ़ से हो गये।

राजन्! आपके पुत्र दुर्मति दुर्योधन और दुरात्मा कर्ण ने द्यूतक्रीड़ा के समय भरी सभा में द्रौपदी को लाकर, उनको सम्बोधन करके आपके, सब पाण्डवों के और कौरवों के सामने कहा था कि "हे द्रौपदी! पाण्डवों को तुम मरा हुआ समझो; वे सदा के लिए नरकगामी हो गये हैं। इसलिए अब तुम किसी और को अपना पति पसन्द कर लो।" महाराज! अब उन कठोर वचनों के फल को भोगने का समय उपस्थित हुआ है। आपके पुत्रों ने वीर पाण्डवों को खोखले तिल, निःसार आदि कटु वचन कहकर उनके हृदय में जो क्रोध की आग भड़काई थी, उस क्रोधाग्नि को तेरह बरस बाद प्रचण्ड करके भीमसेन आपके पुत्रों के प्राण ले रहे हैं। महामति विदुर बहुत कुछ समझा-बुझाकर, विलाप करके भी, आपको शान्ति के पक्ष में नहीं ला सके। इस समय आप अपने पुत्रों के साथ विदुर की बात न मानने का फल भोगिए। आपने स्वयं वृद्ध, धीर, विचक्षण और तत्त्वदर्शी होकर भी दैवविडम्बना-वश अपने हितचिन्तकों के हितवचन नहीं सुने। अब शोक करना वृथा है। मुझे जान पड़ता है कि अपनी दुर्नीति के ५० कारण आप अपने पुत्रों के विनाश का कारण बने हैं। हे कुरुनायक! महावीर विकर्ण और चित्रसेन आदि आपके जो महाबली पुत्र भीमसेन के आगे पड़े वे यमपुर को चले गये। आपके ५३ ही कारण मुझे, भीमसेन और कर्ण के बाणों से, हज़ारों वीर सैनिकों का संहार देखना पड़ा।

---

२१ हिन्दी महाभारत १०